KC
16100
NEDL TRANSFER
HN 5Z5P 0
Digitized by Google

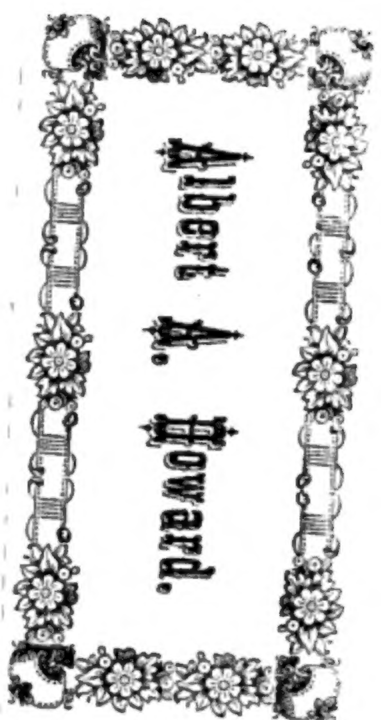
Albert A. Howard.

STRABONIS
GEOGRAPHICA

RECOGNOVIT

AUGUSTUS MEINEKE

VOLUMEN SECUNDUM

LIPSIAE
SUMPTIBUS ET TYPIS B. G. TEUBNERI
MDCCCLIIJ

PRAEFATIO

Nostrae lectionis a Krameriana in iis, quos secundum volumen Strabonis complectitur, libris haec est discrepantia:

397, 28. *λέγομεν* **398**, 8. 9. *διὸ δίκαιά μοι* 31. *μέρη* **399**, 8. *Λουίους* 9. *Σιβινούς* 26. *Γαμαβρίουοι* **400**, 17. *διεῖχον* 29. *Οὔαρον* **401**, 1. 2. *Οὐκρομίρου* 9. *Καθύλκων καὶ Ἀμψάνων* 22. † *τριακοσίων* **402**, 2. *Οὐινδολικοὶ* † *καὶ ἡ Βοΐων* 5. *Ἀλπίων* 8. *ἐπὶ τάδε*] Rectius *ἐπίταδε* 15. *ἐξελασθεῖεν* 31. 32. *τοσαύτας* **403**, 13. *Ταῦτα δὲ δικαίως* 16. *καὶ ἡ* 19. *Βοίους*] Ita ubique scripsi vel scribere volui pro *Βοΐους* **404**, 7. *ἀναβᾶσα ὑπερπετής* 16. *παρήκουσι* 21. *οὐδένα* 21. 22. *πεποιημένον* **405**, 28. *Φοίβου τε παλαιόν* 30. *Σωκράτης*] Fort. add. *ἐᾷ* **406**, 11. [*δὲ*] *ὀρθῶς* 19. *Τρωάδι* 25. *τοὺς* † *μὴ ὄπισθεν* **407**, 25. 26. *χρημάτων* † *ἐκτίμησιν* **410**, 10. *ἄποθεν* **411**, 10. *Παγχαίαν* 11. *ἄμμον, ἐκ δὲ* 15. *εἰ γάρ, αὖ χρῆναι* **412**, 7. *τὰ ὑπὸ*] *τὰ* delet Spengelius 23. *πρότερον* 28. *πλὴν ἢ φόρτον* **413**, 15. 16. *κακοτεχνίας εἰς πλεονεξίας* **414**, 9. *ἐς* 20. *οὐδένα* **415**, 28. *γενεᾷ* 19. [*δὲ*] *ἐν* 27. *ἣν ἔζευξε Δαρεῖος*] Haec suspectat Kramerus, fort. recte **416**, 3. *καὶ ἑπτὰ σοφῶν ἕνα τελείᾳ* 4. *εὑρέματα* 7. *οὔτε ἀληθέστατα* 8. *εὕρεμα* 11. *ὕστερον* 17. *πλάσματα* **417**, 27. *τέσσαρας* **418**, 4. *Δάοι* 24. *Μυσοῖς* 27. *ἐς* **419**, 2. *εἴκοσι μυριάδας ἐκπέμπειν* † *στρατείας* 24. *εἴκοσι* **420**, 2. *ἐννακόσιοι* 7. *τεσσαράκοντα* **422**, 3. *Φαναγορίαν* 4. *καὶ* † *πηλὸν εἶναι* 4. *Νεοπτόλεμον* — 7. *ἱππομαχία* post *τὸ μέγεθος* 10. 25. *τεσσάρων* **423**, 1. *τοῦ μυχοῦ·* † *καλοῦνται* 4. 5. *σταδίων τεσσαράκοντα* 16. *καὶ ἄλλος λιμὴν*] Pro *ἄλλος* fort. *ἅμα* **424**, 2. *αὐτῇ* 15. *Παρισάδου*, et sic etiam in sqq. **425**, 11. *εὔγαιον* 14. *εὔγαιος* 17. *στάδιοι περὶ πεντακόσιοι* 19. *Νυμφαῖον* 31. *ὃς* om. **426**, 9. *Φαναγορίαν* 29. *ἐννακισχιλίων* **427**, 15. 16. † *τριάκοντα γοῦν ἀποδίδωσι* **428**, 11. *καθίσταιντο* Spengelius 12. *στάδιον δέκα* 22. *Διοφάντου, Μιθριδάτου στρατηγοῦντα* **430**, 14. 15. *ἐφ' ἑκάτερα δ' αὐτῆς, ἐπὶ μὲν τὰ Θράκια ἡ Ῥοδόπη, ὅμορον ὑψηλὸν ὄρος* 21. *Ῥαιτοὺς καὶ Τοινίους* **431**, 6. *πολὺν*] Recte Coraes *πολλοὶ* 8. *ὑπερθεῖσι* 18. *Σαύον* 20. *Νόαρος πλήθει* **433**, 4. *Φάριος. καὶ ἡ τῶν* 8. *Πριάμωνα* 10. *Δάλμιον* 17. *μέσον* 29. *τὸ ἔθνος* om. **434**, 1. *Αὐταριάται* et hic et in sqq. 6. *ὁ* † *Ῥιζαίων κόλπος* 13. 14. *Θουνάται*] Rectius

fort. *Θουνᾶται* **435**, 29. *τὰ πελάγη ἀπὸ*] Indicavi lacunam ante *ἀπό*. excidisse videtur *τεκμαιρόμενος* vel simile verbum **436**, 11. *εἴ πού τι* **437**, 23. 24. *περὶ τὸν Αἷμον καὶ οἱ ὑπ' αὐτοῦ* 26. *δὲ ὑπὲρ* **438**, 2. *Τβριᾶνες* 26. *ὅπου* om. **439**, 5. 6. *Σηλυβρία* 6. *Πολτυοβρία* 8. *ἡ* add. post *αὐτὴ* ib. *ἐστὶ καὶ ἡ* 30. *προσεχὲς* **440**, 10. *Φαρνακίας* ib. *πρότερον* 29. *πρότερον πλεύσαντες* [*εἰς*] *τοὺς* **441**, 10. *ὄρεσι Ἰλλυρικοῖς* 12. *ἀρξαμένων* **442**, 2. *Αἶκλος* 15. *Λελέγια* **443**, 4. *γαίης* † *ἀλέους* 21. *δ' οὖν* **444**, 16. *Ἐόρδων* **449**, 9. 10. *Δαμαστίῳ, Περισάδυές τε συνεστήσαντο* 10. *καὶ* † *Ἐγχελέους καὶ* 11. *Λυγκησταί* 12. *τριπολῖτις Πελαγονία καὶ Ἔορδοι* 14. *Ἐγχελίοις* 17. *Λυγκησταὶ* 19. *Ἴρρα* 21. *Νεοπτολέμῳ*] De Pyrrho Neoptolemi filio v. Vindic. p. 89. ubi adde schol. ad Euripidis Androm. 24. 26. *Λυγκηστὸν* 28. *Κερκύρας* **450**, 1. *Ῥωμαίοις* 10. *τριπολῖτις* 13. *Στύμβαρα· Κύδριαι* **451**, 22. 23. *Σελλήεντος .... ἐν δὲ Θεσπρωτοῖς* **452**, 1. *τε* 15. *ἐπιτετμημένως* † *τμάρους οἷον* 17. *καταχρηστικῶς* [*ὡς*] *καὶ* 25. *μὲν τοῖς* 28. *Πελασγίας*] Malim *Θετταλίας* 29. *Θεσσαλίας*] Hoc fort. del. ib. *δὲ* **453**, 8. *Σκότουσσαν* 28. *κρατοῦντα*] Spengelius *κροτοῦντα*. recte *κρατοῦντα* i. e. *manu tenentem* 26. 27. 31. *χαλκεῖον* **454**, 6. *ὑπέρκειται*] Rectius esset *κεῖται* 7. *ἐπὶ τὰ πρὸς*] Quae sequitur decem literarum lacuna, in ea *στενὰ* scriptum fuisse, nescio a quo notatum memini 27. *γελᾶται*] *λέγεται*? 30. 31. *τινῶν*] Spengelius *δεινῶν* **455**, 24. *ἰούσῃ* 26. *παραλληλογράμμου* **456**, 7. *Ἤδωνες*] *Ὤδονες*? 9. *δὲ*] Spengelius *γὰρ* **457**, 16. *ἐν δὲ δεξιᾷ τὴν Ὄσσαν, ἐγγὺς* om. 22. *Θράκης* **458**, 12. 13. om. 20. *φασι* 23. *μείζονα* **459**, 1. *τῆς* † *Πελλαίας* 8. *ὀνομάζουσι* **460**, 2. *Αἰνέα* **461**, 5. *κάλλιστον* † *τῆς γῆς τῇ ὄψει κίδναται ἀλλὰ τὸ τῆς πηγῆς τῷ Ἀξιῷ*] Spengelius *κάλλιστον τῇ ὄψει ἐπικίδναται, ἀλλὰ τὸ τῆς Αἴης τῷ Ἀξιῷ* 24. *Αἰνέαν* **462**, 27. *Μηκύβερνα* 31. *πέριξ τῆς* **464**, 11. *ἀγαθίδες* 14. *χρύσεια* 15. *ἀργύρεια* **465**, 25. *ἀγαθίδας* **466**, 25. *καὶ* [*γὰρ*] *αὐτοὺς* Spengelius **466**, 32. *Πελαγόνες* **467**, 28. *Ἰσμάρα*] Imo *Ἴσμαρα* **468**, 11. *εἴκοσι* 15. *Ὀρθαγορία* 17. *χαράκωμα* 18. *ἄποθεν* 19. *χαρακώματος* **469**, 25. *εὐρόνοτον*] *λιβόνοτον*? **470**, 9. *Ἐλεοῦς* 19. *βάλλει*] Corrige operarum errorem *ἐκ βάλλει* pro *ἐκβάλλει* 22. 23. *Λυσιμαχία* 24. *Ἐλεοῦς* 26. *Ἐλεοῦντα* **472**, 17. *μέμηλε* 26—32 om. **473**, 5. *πάντα*] *πάντα τὰ* Spengelius 6. *μέρος* † *τῆς Μακεδονίας ἀποδώσομεν* **474**, 3. [*Τῆς*] *Ἑλλάδος μὲν οὖν* 5. *τεσσάρων* 7. *Ιωνες*] Corr. *Ἴωνες* 17. *μὲν εἶναι*] *μεῖναι*? 18. *φησὶν ὁ Θουκυδίδης*] Haec fort. delenda 21. *ἑτεροεθνοῦς* 29. *Αἰολικοῦ ἔθνους*] V. Heyne Op. Ac. 2 p. 7. **475**, 9. *δ' ἔτι* 11. *τοιαῦτα* 12. 13. *δὴ ἰδίᾳ λαβόντες* 18. *γῆν ἀρχὴν* ib. *θάλασσαν* 26. *δὲ ταῦτα δύο* 28. *ἐκτὸς* † *Πυλῶν μέχρι τῆς ἐκβολῆς τοῦ Πηνειοῦ· καὶ τοῦτο δ' ἐστὶ τὸ Θετταλικόν· ἔστι δὲ* **476**, 14. *δ'* om. 16. *τὴν μὲν Βοιωτίαν*] *τὴν μὲν* [*Ἀττικὴν καὶ*] *Βοιωτίαν*? Vidit etiam Spengelius. cf. Vindic. p. XII.

477, 16. αἱ om. 30. ἢ om. 478, 12. καὶ om. 16. τέρμοσιν 479, 7. † πόλιν ib. * τὴν δὲ παρ' 20. σχεδὸν δὲ] Add. videtur τι 23. ὀνομάζει ib. δεῖ om. 31. προσκτισ[θεισῶν] 481, 14. τῇ † ἐπιθαλασσίωνα 15. Βοιωνώᾳ 19. 20. ἐκεῖ — στρατεῖαι ante τὴν ἄγετ' ἐξ 21. δὲ 24. ἡ Ἀθηνᾶ om. 31. ἄνδρα, φήσας, * ἄνδρα Μούλιον 482, 4. καὶ add. ante Κραννώνιοι 20. καὶ περὶ] καὶ τὸ περί? 21. οὖν] Fort. delendum 25. ἀοιδῆς· φησὶ γὰρ Οἰχαλίηθεν ἰόντα παρ' Εὐρύτου Οἰχαλιῆος. εἰ μὲν γὰρ ἦν Θετταλική 483, 1. δὲ τῆς τοῦ Πηνειοῦ καὶ τοῦ Σελλήεντος] Correxit Ernestus Curtius, nisi quod καὶ τῆς τοῦ Σ. scripsit. quod sequitur ἐκβολῆς, idem recte scripsit ἐμβολῆς 32. corr. ἐφ' 484, 6. 13. τέσσαρα et τέσσαρας 485, 2. Αἰσχύλος] Ἀρχίλοχος? 17. ἐνέμοντο πολιτείαν 486, 4. ἐχόμενον — Λαμπείας] Haec recte delere videtur Curtius 487, 4. Πώροιο] Scribendum videtur Πιέροιο 10. Λέπρεον ut in sqq. 21. τῷ ἐγγυτάτῳ 22. ἐστὶ 488, 12. Γυθίου 13. τόν τε Κελάδοντα 18 et 26. Ἀλφειονίας] Scripsi Ἀλφειωνίας. praestat fortasse Ἀλφειῴας 24. ἀνθέων ὡς τὸ 489, 7. Φέλλωνα 10. ὁ om. 12. ἐκ τῶν ἐπῶν τῶν Ὁμήρου τεκμαίροιτο 14. καὶ Ἀρκαδικὸς] Haec fort. transponenda 10. post Λεπρεατικός 21. ἀπατηθεῖσαν 490, 1. πολείδια] Quod revocandum 24. * δ' * et hypostigma post διήγησιν. delenda potius verba τὸ δ' ἀπέχεσθαι προσῆκε μᾶλλον 491, 30. μὲν] Delendum videtur ib. Σωτάδῃ 492, 2. πορεύεσθαι 29. lacunam om. 493, 22. Μινυήιον] Ἐλινυήιον? 30. Ὑπαισίᾳ 494, 4. ἐπέδειξαν 7. καὶ τάφος· καὶ Ἀχαιαὶ εἰσὶ δὲ] καὶ τάφος καὶ αἱ Χααί· εἰσὶ δέ? 17. Ῥαδινὴ 19. λιγεῖ ib. ἀοιδᾶς, ἐρατῶν ὕμνους 21. Ῥαδινὴν 495, 11. Κελάδοντι 23. Κυπαρισσεῦσι 496, 1. Ἔρανα] Rectius videtur Ἔραννα 2. καὶ ἡ ἄκρα om. 30. μὲν] Delendum videtur 497, 3. φυσικῶς] Hoc abesse malim 17. 18. ὁμωνύμως μὲν οὖν 24. 25. Πτελεάσιμον 28. Ἠλείας 30. οἱ δὲ πολίδιον (sive potius πολείδιον) om. 498, 22. δύσετό 501, 17. ὑπῆρχε 504, 9. εὗρεμα] Quod fortasse revocandum 22. οὔτε 505, 16. Λέπρεον 19. ὅσας θ' 27. διὰ om. 30. πολλὰ † καὶ νομίζουσιν 506, 7. Πίσαν et sic in sqq. 9. ὁρῶν 25. post φησὶ verba in margine posita 26. τεσσαράκοντα 31. Ἐνισέα] Scripsi Ἐλισέα, at debebam Ἐλιπέα. Hesychius: Ἐλιπεύς· ὁ Ἐνιπεὺς ποταμός. Quod confirmat titulus Thessalicus editus ab Ussingo Inscr. gr. 2, 7. ἐκ τοῦ Εὐρωποῦ ἐν τὸν Ἐλιπῆ, ἀπὸ τοῦ Ἐλιπέος ἐν τὸ νέμος. Itaque Ἐλιπεὺς pro Ἐνιπεὺς dicebatur, ut λίτρον pro νίτρον, et alia. Hinc corrigenda quae dixi in Vind. Strab. p. 111 sq. 507, 3. Φηραίαν ib. post ἰόντων verba in margine posita, quorum partem (inde ab ὑπέρκειται) suspectavit Kramerus in notis 5. ἐξηλείφθη 508, 10. † Ἀχαιοί 510, 8. καὶ ἡ Κυπαρισσία add. post Κορυφάσιον 14. καὶ pro ἐπὶ 16. προσκειμένη 511, 8. Κιναίδιον 10. Βαίτυλος 18. Θαλάμους 20. ἀγόμενος 22. τῆς add. ante Ἀθηνᾶς 23. καὶ et 25. Τράγιον sine asteriscis; non videntur haec Strabonis esse 512, 19. Ἔρανα] Malim

Ἔραννα **513**, 17. *ἀμφοῖν* pro *κρατῶν* **514**, 11. 12. *ἐλθὼν ἐξ Ἐρινεοῦ* om. **515**, 31. *κατὰ τούτου*] Volebam *καὶ τούτου* cum Corae **516**, 8. *Ἀμαθοῦς* 9. *Γύθιον* ut in seqq. 26. *τὸν* [*Θρᾷ*]*κα*. Scribendum videtur *κατὰ τὸν* [*Θόρνα*]*κα* 28 — **517**, 7. non videntur Strabonis esse **517**, 13. post *προσηγορεύθησαν* sequuntur ea quae ego in margine posui 24. 25. *πολε ..... γὰρ* 25. *Φεραίᾳ δ' ...... ἀπὸ ἐντὸς*] Volebam *ἐκτός*. V. Vind. Strab. p. 115. ubi recte probavi *Φαραίᾳ*, pro quo per errorem *Φάριδι* editum est. ibidem *πολεμίους* conieci, non *πολέμους* **520**, 3. *ἀποδίδοται* 6. *ἐκβαλλούσης* 19. *γαίης* 29. *πρόσω* sine aster. 29. 30. *κάθηται* **521**, 4. *τῶν* [*Λεπρεα*]*ῶν*? ib. *Μεσσαίων*] *Μακιστίων*? 8. *τῶν τε* **522**, 12. *δοκεῖ ..... πίπτειν* **523**, 9. *τεσσαράκοντα* 27. *Ἀσίνης* sine ast. **524**, 2. *Σαρωνικόν. καλεῖται δὲ πᾶς* 11. *ἀλλὰ νῦν τὰ μὲν* 15. *Ἀχαϊκὸν* 25. *Ἀχαιικὸν* om. **525**, 25. 26. *Ἄργος ἄνυδρον θεοὶ δ' αὖ θέσαν Ἄργος ἄνυδρον*] Pro *θεοὶ δ' αὖ* scripsi ut par erat *ἐὸν Δανααί*. at Strabo nonnisi priora *Ἄργος ἄνυδρον* apposuisse videtur. *Δαναοὶ* error est typographicus 29. *δὴ* **526**, 8. *δέχονται κατὰ τὴν συναλοιφὴν* 9. *ἐλέγχιστον*] Fort. errore operarum, quamquam fuerunt qui ita scriberent 16. *ὄρνις* 28. *χωρίῳ μὲν κεῖσθαι* 29. om. parentheseos signa, quibus quae inclusi verba fortasse ne sunt quidem Strabonis **527**, 1. *εἰπεῖν*] Fort. *ἐκπεσεῖν* 4. † *ἐν εὐπορίᾳ* 11. *Πάλινθος* 29. *ἡγεμονίδας οὔσας* **528**, 9. *Λακωνικὴν* 15. *συνέβη* om. **529**, 4. *τῆς Ναυπλίας* 7. *Μίδεα* pro *Μίδεια* 8. *Πρόσυμνα* [*καὶ*] *αὕτη* 11. *οἱ δὲ ἐ*[*ξ Ἑρμιόνης*] *εἰς* 12. *ἔστιν αὕτη* 14. *ὅπου* om. 23. *οὐδ'*? 25. *καὶ* sine ast. 32. *Νισαίαν* **530**, 6. *αὐτὴ* **531**, 2. ..... *ον*] Fort. [*πλατύτερ*]*ον* 3. *ἡ* ante *Ἐπίδαυρος* abesse malim ib. *φησὶ γὰρ* 23. *Τροιζῆνι* 25. *τοῦ* om. **532**, 4. *ὑπ' αὐτὸν* **534**, 5. *γραΐδίου* 26. *Τρικορύθῳ* **535**, 18. *ὧν* om. 20. lacunae signa om. 27. *τὸν ἐπὶ* 27. *εἰς Κόρινθον* add. post *πλοῦν* 28. *τὸν φόρτον· αὐτόθι καὶ πεζῇ* † *τε τῶν ἐκκομιζομένων* **536**, 11. *Διός* om. **537**, 23. 24. *φρέατα* sine ast. An *φλεβία*? 31. *ὑποπεσοῦσαν*] Scripsi *ὑποῦσαν* cum Plethone, nisi praestat *ὑποπεπτῶσαν* 32. *λευκῷ λίθῳ*] Fort. *λευκοῦ λίθου* **538**, 5. *Βοιωτίδος* 17. *τῆς περὶ τὸ* **539**, 15. *λώιον* 30. *ἐγένοντο* ib. *ἐν ἄλλοις*] Fort. *εἰς ἄλλους* **540**, 14. *ἀφῖκται* Spengelius **541**, 3. 4. *κατορθουμένων* 11. *πάντες*] An *πα*[*ίζο*]*ντες*? 15. *Εὐφρόνιος* 24. *Σικυωνίαν* 26. *Τανάγραν* **542**, 2. *Αἰγιαλοὺς* ib. *ἀνῳκίσθαι* 3. *σταδίους* 4. *Δήμητρος* 27. *Τρικόρυθον* **543**, 1. *φυλὰς*] Fort. *βίους* 2. *βίους*] Fort. *φυλὰς* **544**, 4. *συνοῦσαι* 6. *οὐ συνελθούσης*] Curtius Pelop. I p. 451. *οὐ συνεστώσης*, quo sensu *οὐκ ἔτι συνεστώσης* requirerem. nil mutandum videtur 9. *ὃ* 30. *ἑστήκει*] Fort. *ἕστηκεν* vel *ἑστήκοι* **545**, 1. *θαλάσσης* 12. 13. *Ἡσίοδος — Θετταλικῆς* in marginem reicienda videntur **546**, 2. post *βουλομένων* add. quae in margine posui 10. *παρ' ὃν* [*Πεῖρος*] *ποταμὸς* ib. *μέγας* * *Μέλας*] *Μέλας* Curtius Pelop. I p. 450. **547**, 22.

πόλιν pro *χώραν* **548**, 7. post *Φαριεῖς* quae in marginem reieci, in quibus *Βοῦραν* [*κα*]*θ'* scribendum videtur **549**, 3. *Φαρᾶται* 7. *τριάκοντα* om. 30. *αὐτὴ* **550**, 17. *πεντήκοντα*] *πέντε* Müllerus Dor. II p. 439. 32. *περὶ Στύμφαλον* **551**, 13. *εἰς Θαυμακοὺς* om. 14. *καὶ τὸν Πηνειὸν* om. **552**, 7. 8. *ὥστε — Κορινθίων* post *Λοκρῶν* 10. 11. *λεκτέον* om. 13. *ἐπὶ*] Fort. *καὶ* 18. *σφόδρα* pro *οὕτως* 21. *ποιοῦντα τὸν κόλπον τὸν* om. 22. *οὐδ' ἂν* om. 25. *ὅπου τὸ* pro *εἰ μὴ τὸ* 26. *ἐποίει* om. 27. *τὰ περὶ . . . . . τὸν μυχὸν* **553**, 9. *δὲ* om. 11. *ἡ Ἀττικὴ* om. 28. lacuna pro *πάλιν ἀπὸ τῆς* 30. *Ἀττικῆς*] Fort. *ἀκτῆς* **554**, 4. *ὃν* recte post *ὑψηλὸν* add. Coraes 5. *ληιζομένων* 9. *Μινώα* et sic constanter 10. *Νισαία* **555**, 3. *τεσσάρων* 3. *Νίσος* 12. *νείμας . . . α* 13. *νέμων* 26. *παροξυνάντων* 32. ante *ἐποίησαν* fort. excidit *καλεῖσθαι*, quod in similibus locis addere solet Strabo **556**, 15. *Νισαίαν* 21. 22. *καθάπερ — πνοάς* non videntur Strabonis esse 25. 26. *Κυχρεία* 31. *Δήμητραν* **557**, 8. 9. *Βώκαρος — καλούμενος* non videntur Strabonis esse. postrema *ὁ νῦν — καλούμενος* suspectavit etiam Kramerus in addendis **558**, 15. *Ἐλευσὶν* 30. *Ψυτταλία* **559**, 1. *Ψυτταλίᾳ* 6. *στομίῳ*] *ἰσθμίῳ*? 16. *τὸ*] *τό τε*? **560**, 1. 2. *περὶ τῆς* 2. *ἐκεῖ τι* 5. *αὐτοῖς* [*ἵδρυσιν*] *καταλαβόντων*? 6. *ἡρώων* [*ἐστὶν ἱερόν*]? 26. *καὶ εἰς τὸ* 27. *Θησεῖον . . . . υς ἔχει* 27. 28. *καὶ τὸ Διονυσιακόν*, [*καὶ δὴ καὶ τ*]*ὸ Ὀλύμπιον*? 31. *πλεῖστα* om. **561**, 4. *Ἀκτικὴν* 12. *φιλότιμον*] Libri *φιλόδημον*. an *φιλείδημον*? 18. [*ἀλλ'*] *εἰσί*? 28. *προσθήσειν*, *ὅτι* **562**, 5. *οἱ* om. **563**, 8. *Θορεῖς* 12. *Θορέας* 13. *Φάβρα*] an *Φάγρα*? ib. *Ἐλεοῦσσα* 19. *φρίξουσι* 24. 25. *Πρασία* **564**, 5. *τετραορίστῳ* **565**, 6. *Κηφισσὸς*] Debebam *Κηφισὸς* 22. [*κείμενα . . .*]*η πρὸς* 24. *ἡ Ἀττικὴ σὺν τῇ* om. 27. 28. *Πηγὰς* 28. *ὅρων* pro *τόπων* 29. *ἀπὸ τοῦ* pro *τὴν ἀπὸ* **566**, 20. *χρησαμένους ἐπι*[*μελεῖ*] *μηδὲ*? 21. *τί* om. **569**, 14. *αἱ* om. ib. *ἀνάλογον*] Hoc revocandum **570**, 9. *σύριγξ* 20. *θαλάσσης* 25. *Σιγηλοῦ*] Imo *Σιγήλου* 30. *Ἀμφιάρειον* **571**, 1. *τὴν ἐκ* om. ib. post *Χαλκίδα* add. *καλοῦσι δὲ Βοιωτιακῶς Μυκαλησσόν*, quod *Μουκαλησσὸν* scribendum 3. *Μυκαλησσόν* 23. *ἀπιόντι* 24. *Τάναγρα κ*[*ώμη· ἡ δὲ Φαραὶ κώμη*] *ἐν δεξιᾷ*? **572**, 14—17. *δίαρμα — πολὺ ἐλάττους*] Haec fortasse post *Ὀρόβιαι* transponenda, aut quae sequuntur 17. *κεῖται —Ὀρόβιαι* delenda 32. *ἦν γὰρ ὁ*[*μώνυμος πόλις τῇ*] *Μεγαρικῇ*? **573**, 1. *πρόσχωρος τοῦ* om. **575**, 10. *ὑπῆρξε* **576**, 10. *οὔτε* 24. 25. *τόπω*[*ν σημήναιντ' ἂν ὥστε τῷ*] *λόγῳ* 27. *ἀξί*[*ων μνήμης καὶ τῶν μή·*] *χαλεπὸν* [*δ'*] *ἐν* **577**, 2. *πειρώμ*[*εθα τὰς ἀρχὰς λαβεῖν·*] *ἐνταῦθα* 4. 5. *χρήσιμον ἢ* [*ληφθὲν ἐξ ἄλλω*]*ν ἡμῖν* 20. post *ῥεῖ* add. *εἰσὶ* [*δὲ*] *καὶ — τούτῳ*, quae in margine posui **578**, 19. *αὐτὸς ἐ . . . . . . τοῦ πατρὸς* 20. *μ . . . . τερον* **579**, 1. *εἴκοσι* 21. *θέαν* **580**, 5. [*ὑφ' ἑτέρ*]*ων* 6 et 10. *Ὠκάλαι* **581**, 10. *Κορωνείας*] Libri *Κορωνίας*. Fort. *Κορωνῆας* ib. *ἐπιλαΐω*] Operarum error pro *ἐπὶ λαΐω*. *λάϊον* loci nomen fuisse

videtur prope Coroneam. Cf. Hippocrates Epid. III p. 134 et 142 ed. Littr. ἐπὶ τοῦ Δηΐου, de quo dixi nuper in Commentatione de Hippocratis Epidemiis in Relatt. menstr. Acad. Berol. 1852. 25. Βοιωτίας pro Μεγαρίδος ib. pro αἵ lacuna **582**, 8. πολείδιον] Hoc revocandum 23. [κι]νηθεὶς **583**, 2. 6. Πτῶον 4. Πτώου 17. οὔτε 21. τέκτονος **585**, 12. 13. πολυχρηματίσαντας 27. οὔτε μὴ om. **586**, 3. ὧν pro ὃν 26. καὶ διάγωσιν 29. πλείστην om. **587**, 12. καθήκειν 15. Ἀντίκυρα **588**, 5. πᾶσα om. **589**, 12. Πηληιαδέω ἄνακτος **590**, 7. ὁ per errorem irrepsit ib. Κίρφι **591**, 1. ἐτιμήθη om. **592**, 31. ἱερόν· χρημάτων δὲ χάριν τῶν ἀναθημάτων **593**, 22. κατωρύχθαι **594**, 16. ἀνάκρουσιν 19. ἐπιπαιωνισμὸν 21. ὡς καὶ τὸ ἰαμβίζειν add. post κακισμοῖς 23. εἰς add. ante ἐσχάτους **595**, 27. παιωνισμὸν **596**, 11. Ἀλκμαίωνος 13. Ἐξ ἀρχῆς γὰρ 14. ὄπισθεν ὁ Μάραθος 23. Θουκυδίδης δ' ἐν Μεγάροις φησὶ add. post μυθεύουσι **597**, 7. οἱ δ' ἐνοικοῦντες Τραχίνιοι λέγονται] Haec fort. delenda 21. ἐκείνης **598**, 11. Πανόπην Γλήχωνα 18. post Σκύρῳ add. quae nos in margine posuimus **599**, 13. κατέληξεν 18. τούσδε ποτὲ φθ. 19. 20. Λοκρῶν κεύθει ὁμῶς Ὀπόεις **600**, 16. εἴκοσι **601**, 7. οἰκεῖται, [ἀλλὰ νῦν εὐήροτόν] τι πεδίον 8. καλοῦσιν οὕτως 9. 10. [αἵ Αὐγειαί, ὧν τὴν χώ]ραν 11. 16. σῖγμα 14. ἀγνοῶν .... Λάπην] Excidisse videtur οὐκ εὖ. Ceterum vide ne iniuria erroris accuset Strabo (si tamen haec Strabonis sunt) Hellanicum; Λάπη enim dici potuit quae aliis Νάπη, ut Ἐλιπεὺς dicebatur Thessalis, qui aliis Ἐνιπεύς. vide supra p. V. 27. ἀλλ' οὔποτε ἄλλων **604**, 10. Ἀντίκυραν 29. ἅπαντα τελευτᾷ πᾶσι **605**, 32. ἑῷα **607**, 5. καὶ οἱ [Θετταλιῶται] ἐφεξῆς Buttmannus Mythol. vol. 2 p. 277. **608**, 4. post στρατείας add. ναῖον δ' ἐσχατιὴν Δολόπεσσιν ἀνάσσων 5. αὐτῷ om. 6. post μόνον add. ὀλίγων ἐστὶν 12. γὰρ om. οἱ μὲν om. nec necessaria sunt 22. ὅταν οὕτως om. 29. Θετίδιον 30. Θετιδίου **610**, 17. ἐντεῦθεν δὲ 21. συνῴκισαν Φαρσάλιοι] Ita haec suppleverunt critici; non minus recte possis συνῴκισεν Φίλιππος **611**, 2. Τραχῖνα] Τραχινίαν? 13. Λαμίαν **613**, 3. πρὸς ἕω δὲ om. 18. τὴν Οἰταίαν om. 22. θαλάσσης 25. μεσογείῳ **614**, 25. Φυλλαίου **615**, 8. ἐννενήκοντα 9. εἴκοσι 18. Νηλίας et 20. Νηλίαν **616**, 10. Μεθώνη **617**, 2. καὶ τῆς Δευκαλλίας] Haec delenda videntur 3. Ἱεραπολιτικῆς] Hoc delendum videtur 5. λιθίας, ὑφ' ἧς **618**, 6. μυθεῖσθαι sine ast. 10. 11. ὀνούριον 21. ἄλλοι om. **619**, 4. εἴκοσιν 10. Κερκάφου **620**, 5. λευκόγαιον 14. post ἐκείνους add. εἰς τὴν ἐν τῇ μεσογαίᾳ ποταμίαν **621**, 13. πεδίον νῦν] Cod. A πεδίον ἐστὶν ὁ νῦν. Fort. igitur πεδίον ἔτι νῦν 18. 19. καὶ [ἡ] ἐν Συρίᾳ 21. καὶ — Λάρισα] Haec fort. delenda 29. καὶ Ὀδησσοῦ om. 30. Ὀλοοσσὼν **622**, 10. ἐπειληφότας] Fort. ἐπειληχότας 11. ὑπὸ] Fort. [οἱ] ὑπὸ 11. 12. Περραιβικαὶ] Fort. Περραιβικοὶ **623**, 11. τοιοῦτον **624**, 5. δὲ ἰδίοις] Fort. Διδύμοις 7. κολωνοὺς] Fort. Κόρωνις 29. καὶ om. **626**, 13. Ἐπειδὴ

ἡ Εὔβοια 627, 15. τὸν om. 20. Αἴκλου 24. Περιάδα 25. ἐν ᾧ] Fort. ἔνθα 26. καὶ add. ante τοῦ 628, 24. πλησίον om. 28. πολείδιον] Quod revocandum 629, 6. τὸν πίνον 8. Μαλιακῷ 24. Αἰκλὸς 630, 16. 17. ὥσπερ — τἀργυρεῖα om. 23. Εὐβοΐδα] Imo Εὐβοΐδα ib. καμπὴν] Fort. κάμπτων 631, 1. post Ἐρέτρια add. ἐν δὲ τῇ Ἐρετρικῇ πόλει ἦν Ταμύναι, quae cum πλησίον τοῦ πορθμοῦ coniuncta (in libris haec leguntur post αὐτὸν 3.) post κεκωμῴδηνται 19. transponenda esse vidit Kr. in notis 3. αὐτὸν] Fort. ἐνιαυτὸν 19—21. ἐν δὲ — πορθμοῦ] De his vide ad 1. 632, 1. ὅς γε καὶ 4 et 5. lacunas om. 5. ὥστε τῷ 6. δρᾶν] Corrige δρᾶν 27. οὐδὲν 32. lacuna om. 633, 10. Ἄβαντες pro ἀποβαίνοντες 634, 10. Λαμίαν 21. Παλαιρός 636, 31. Γαργάσου 637, 13. τηλεφανοῦς· ἀλλὰ κατ' 24. Ἀλκμαιωνίδα 638, 26. ποιεῖσθαι 642, 1. Ταφιοῦς 10. Κεφαλλῆνες, καὶ [οἱ μὲν] ὑπ' Ὀδυσσεῖ 26. Αἶνος add. post αὐτῇ 644, 5—7. μέμνηται — ἐθέλων] Haec fort. ex lib. 12 p. 549 addita sunt 11. ἐστιν ὁ κύκλος 15. τριακόσιοι 22. πλείους εἰσὶ 23. καὶ add. ante πρὸ 645, 9. βούπρωρος 30. Ταφιοὺς 646, 14. 15. Κριθωτὴ 15. αἱ om. 16. ἑνικῶς λεγομένη add. post κόλπον 647, 4. οὐχ ante οὕτω om. 21. Λυσιμαχία, ut in sqq. 649, 15. ἐπιμεῖναι 25. Ἀλκμαίωνα hic et in sqq. 653, 16. † λέγων post Ἐπειῶν 19. πιστὸν om. 24. ἀπελθόντος 654, 12. lac. signa om. Excidit fort. νέμειν 656, 25. καὶ — ἐμπλέκεσθαι om. 658, 3. γένηται 659, 22. Ἄγδιστιν] Ἄγγδιστιν C. Keilius 24. Σιπυλήνην 24. 25. καὶ Κυβήβην om. 660, 10. διά τε Ὅμηρον 11—13 ἃς ἐκ — μητρὸς om. 13. pro μητρὸς pone μητρὸς] 14. post εὑρήματα dele parentheseos notam 29. Παλημήδῃ 30. οὐ σὺν] Fort. θύσων ib. κωμᾶν, ὅς] Fort. κοιλὰν ὅς 661, 24. 25. Κοτύτια 28 σεμνὰ Κότυς] V. Hermannum Aeschyl. 31. δακτυλόδεικτον 662, 22. ῥάσσων] Fort. ἀράσσων, ut sit paroemiacus 663, 4. εὗροι om. 9. ὄρειαι ib. ἐγένοντο 665, 4. Κορυβάντιον 10. ἤϊθεοι 667, 4. αὐτὴ 25. ὑπὸ τὸ μέγεθος] Fort. ὑ ὅπου 'στὶ μέγιστον 668, 5. Λυκτίων 669, 9. Βοῖον 23. 27. 30. Λύκτον 670, 5. ὁμώνυμος] Malim ὁμωνύμως 671, 2. Ζεὺς om. 673, 14. λόγῳ· † ἄθλων 15. φησὶν 674, 21. 22. καὶ Ὀλίσσην 675, 14. ποιητὴς] Fort. Νέστωρ 21. [οὔτε] κατὰ τὴν στρατείαν — ἐκεῖθεν add. post αὐτῷ 676, 7. † ἐν 8. ἀνδρεῖα συσσίτια, ὅπως 677, 8. Κρῆς 19. malim Κισσοῦ 680, 11. lac. signa om. 26. αἰσχρὸν post τυχεῖν 681, 18. Θήρᾳ 682, 18. ἐπιβαίνειν 27. δ' οὖν πεντεκαίδεκα om. 683, 6. κώμιον] Quod revocandum 14. ἥ με] Fort. οὔ με 15. δειλὴ ἥ] Fort. ἡ δειλῇ 30. 31. Ῥήναια] Imo Ῥήνεια, ut monuit Lobeckius ib. τέτρασι] Quod fortasse cupidius reieci quam debebam 684, 6. 7. Κορησσία hic et in sqq. 685, 3. μηκύνουσι — συλλαβὴν in parenth. 686, 2. Λερία 12. post Λέρος add. quae nos in margine posuimus 689, 12. πλησιάζοντα] Fort. ἐπιπολάζοντα 690, 16. ἐς 691, 2. καὶ om. 25. ὑπέρκεινται

693, 12. ἐλάσσων **694**, 20. ᾧ ante ὄνομα add. ib. Ἄκρα **695**, 2. Φαγαγορία et sic constanter 24. Τορεάται **696**, 17. Ῥέκας **697**, 13. Ζυγίων 24. τοῦ] Malim τῷ, vel τῷ τοῦ 29. μέγαν] λιμένα? **699**, 6. οὕτω δεῖ δέξασθαι post δρόμος 7. **700**, 3. πολλήν τε 6. 7. ἐπεκόμιζον 14. 15. κακωθείσης — Εὐριπίδης] Haec fort. delenda **701**, 4. περὶ δὲ τὴν Διοσκουριάδα ῥεῖ ὁ Χάρης ποταμὸς add. post Κολχίδος 14. δὲ om. 21. 22. θαυμαστοῖς, [ἃ] καὶ τοὺς φαρμάκοις τετρωμένους 26. μὲν om. nec necessarium est 29. καὶ δὴ καὶ ἥ γε] Corrige operarum errorem δὴ καὶ ib. δή κ' ἥ γε operarum error pro δὴ ἥ γε ib. Ἰβηρία * καὶ * οἰκεῖται **702**, 10. Ἀράγωνα 14. ἄλλους om. 29. γενόμενος **703**, 4. ἐπ' αὐτῷ 24. ἀγχιστείαν] Fort. add. ἀεὶ **704**, 16. προπίπτουσα? 22. ἐπιγελῶντα] Fort. ἐπίπεδα ὄντα **705**, 2. ἀλλὰ τἀγαθὰ ἄσπαρτα 3. ἅπαντα 5. γοῦν 11. ἐκείνῳ 12. δὲ pro δ' αἱ 13. δὲ om. 27. στρατιᾶς 28. δισμυρίους **706**, 13. εἴκοσι **707**, 4. καὶ add. ante τὸ **708**, 28. τῷ om. **710**, 1. 2. θρυληθέντα † κἂν ὡμολόγηται 5. ἐῷαν 7. καὶ ast. incl. **711**, 12. Χαιανοῖται 18. lac. om. 21. ἔστειλε **712**, 24. προσβόρους 26. πρότερον] πορρωτέρω Hermannus ad Aeschylum vol. II p. 163. 30. ἀκριβῶς **713**, 8. μήτε om. 8. 9. παρά γε εἰδότων, † σκοποῦντες δ' αὐτὸ δὲ μόνον τοῦτο, ὅτι **714**, 22. τετρακοσίους. καὶ † διὰ τὸ μὲν εἶδος τῆς εὐδαιμονίας σημεῖα ἡγοῦνται ἡ μὲν γὰρ **715**, 5. καὶ pro ἀλλ', quod nunc revocaverim, deleta cum Corae particula μὲν **716**, 1. οὖν add. ante συνῆγον 6. προσφέρεται 14. προσέθεσαν * καὶ * τούτῳ **717**, 6. 7. ἡλιαζόμενοι· ἄλλως δ' ἄλλοι 13. ἀρξάμενον **718**, 2. Δάαι **720**, 2. ἅμα τε] Malim aut ἅμα sine τε aut τε ἅμα 4. ὧν **721**, 8. ἡ add. ante δίαιτα 10. 11. σκαιὸς δὲ **722**, 8. 9. δισχίλιοι δισμύριοι] Transposuit etiam Spengelius **723**, 14. † ἀλλήλοις **724**, 20. διαρρεῖται· ποτίζουσι δ' αὐτὰ] Scribendum διαρρεῖται ποτίζουσιν αὐτὰ **725**, 1. Ἀχαῖα] Corruptum videtur 19. Ἰσάμου 21. Πατταληνὴν 28. 29. ἐκβάλλων] Corrigunt ἐμβάλλων. malim εἰσβάλλων 29. Δάραψα 30. Εὐκρατιδία **726**, 2. 3. Τοριούαν 10. ἤθεσι 26. ποιεῖν] Thyrwhittus νοεῖν. malim ὑπονοεῖν, quamquam etiam alia hic miserrime corrupta sunt **727**, 8. Ὄξον 22. om. lacunae signa 23. τοὔνομα om. **728**, 20. ἔξω **729**, 1. 9. Ἰμάϊον 5. μείουρον et hic et in sqq. **730**, 26. δύνανται 31. Ταπυρίων] Hoc fortasse ex Ταπύρων δ' ἴδιον corruptum est **731**, 11. οὖν om. 27. ἐκτεινόμενος **732**, 14. 15. προσβόρῳ **733**, 13. πρόσβορα 21. αἱ add. ante τοῦ **734**, 21. Τίγρι **735**, 19. χειμερινὸν δὲ om. ib. Οὔερα **736**, 8. εἰκὸς 22. χειμάδιον] Fort. χρηματιστήριον **737**, 15. Ῥάγαις] An Ῥάγα? 16. Ἡράκλεια om. **738**, 8. Μηδικὴν 17. πλάτος **740**, 3. νέμειν] Fort. νέμ[οντας ἔχ]ειν, viam monstrante Kramero qui coni. ἔχοντας νέμειν **742**, 3. θάλασσαν 10. προσβορώτατοί 15. ἃς om. 19. περιεχούσας] De his v. Vindic. p. 190.

743, 15. ἔχουσα om. 20. Ἀρτάγηρας 21. Ἄδωρ **744**, 19. Ὑσπιράτιδι 21. ἀπήχθη **749**, 10. lacunae signa om. ib. δ' om. **752**, 9. ὃ pro ἦν **753**, 2. † ἁπλώτῳ 16. ὀχετοῦ πλάτει] Recte, ut videtur, Kramerus in notis ὀχετῷ οὐ πλατεῖ 24. εὐρυοδίνης 30. post Αἰγύπτῳ add. τρίτη — φανεράν, quae **754**, 24. post ἐκεῖνον transponenda esse Kr. vidit in notis **754**, 17. δ' om. 22. δ' om. 24. 25. Διὸς Δακίη οὐ λειπομένη 31. Δύο δὲ ἔχουσι μόνον στρατηγίαι πόλεις **755**, 31. καὶ ἐμβελεῖς] Fort. κἀνεμβελεῖς vel καὶ ἐκβελεῖς **756**, 25. λιθίαν **757**, 18. αὐτῶν 19. ἐκ pro καὶ ib. τῶν add. ante ἐν 24. Κυρίνου **758**, 7. καὶ add. ante καρποῖς 9. Βαγαδαονία 24. ἄλλος δ' [εἰς] τὰς διόπτρας **759**, 30. μὲν] Fort. μέντοι, vel μὲν δὴ **760**, 2. τε **761**, 9. οὐδὲν **764**, 4. μεσημβρίας 5. ἐξίησι ib. εἰς 13. διεῖπον **765**, 16. ἑκατὸν] Hoc corruptum **767**, 27. ἡ om. 32. Γαδιλωνῖτις **768**, 13. Γαδιλῶνα 14. ἐννακοσίους 27. 28. Σιδηνὴν ut in sqq. **769**, 29. εὐφορίαν **770**, 4. 5. τῷ † Ἴκενι γεωμέτρῃ 15. εἶτα † Κύτωρος 26. Ἀπαιτεῖται **771**, 28. προαλέστερον· δελεαζομένους μόνοι οὗτοι] V. Vindic. p. 193. **772**, 14. Βρύγοι 22. οὖν om. **773**, 2. ὧν om. 17. καὶ πῶς] Delendum videtur καὶ 22. Ἀλαζία] Malim Ἀλαζίῃ 23 et 26. Ὀδρύσσης **774**, 1. 2. Ἀμαζόνων 2. δ' ἐν pro δὲ **775**, 4. οὐθ' 7. Ἐνέαν 27. πολεμήσαντας 30. συμμαχήσαντας 32 et sqq. Φρυξίν. οἵ ῥα τότ' ἦλθον Ἀμαζόνες **776**, 3. οὐδ' 5. οὐδ' 20. Βαμωνίτιδι 21. Πιμολίτιδι καὶ τῇ Γαζαλουίτιδι 31. καίπερ **777**, 12. ἂν add. ante διὰ 15. ἂν om. **778**, 2. τούτων καὶ om. 18. καὶ Σάμον add. post λέγων **779**, 9. δεικνύηται **780**, 16. Φαρνακίας] Rectius fuerit Φαρνακείας **781**, 24. περί τε **786**, 6. καὶ ἡ τοῦ 28. πόλιν om. **787**, 1. Γαζηλωτὸς 30. 31. πόλεως ἅμα τε καὶ **788**, 24. Ξιμηνῆς 27. Τρόκμων 28. Ξιμηνῇ **789**, 11. οὐδ' 16. et 20. Σανδαρακούργιον **792**, 19. τὸ add. ante φῦλον 20. τε 31. τι om. **794**, 10. οἴεται pro οἷ' ἔστι 19 Ἀντιγονίαν **795**, 14 — 16. Κλεοφάνης τε ῥήτωρ, ὁ Μυρλεανός, Ἀσκληπιάδης τε ἰατρός, ὁ Προυσιεὺς] Correxit et supplevit Lehrsius **796**, 19. Τρόκμοι, quod ubique correxi 24. * Βογοδιατάρῳ] Βρογιτάρῳ C. Keilius 25. δέ πως Δανάλα] C πω pro πως. Fort. δὲ Πωδανάλα **797**, 7. Ἄγδιστιν] Ἄγγδιστιν C. Keilius 23. Σαωκονδαρίου **798**, 7. Πιτνισὸν 11. † Γορσαβόρων 24. † Γαρεαθύρων 28. τὰ Ἴσαυρα] Fort. τὰ Ἰσαύρα numero duali 29. [τὴν δὲ] Εὐερκῆ **799**, 10. Ἰσαυρίαν] Praestat fort. Ἰσαύραν pro eo quod posui Ἴσαυραν 19. καὶ † Κιλίκων add. post οὖσαν **800**, 29. προσβόροις **801**, 20. ὀρθηλὸν] Ex ὀρθόκαυλον corruptum esse suspicatur Lobeckius **803**, 14. post ἀλλήλους add. πρὸς μὲν ἀλλήλους **805**, 26. αἱ ante Κιμμερίων fort. delendum 27. τε om. **809**, 24. Δορυλάϊον **810**, 29. μικρὰς **811**, 10. κατωφερεῖ 13. γενόμενος [μέγας] Μαίανδρος 24. ἀπέδειξεν? 30. ὑπολείβεσθαι **812**, 22. † συνέπεσεν

813. 12. μεσόγαιαν 18. ὁμώνυμον 29. διὰ τὸν λίθον καὶ τὴν ἀπὸ **814**, 13. ὑπόνομον 20. συνέστηκε 24. τι συμβαίνει 36. βρυχήμασιν ἕρπουσι πᾶν δ' ἐρεχθεῖ] πᾶν τ' Ἐρέχθειον πέδον? an πᾶν δ' ἐρέχθεται πέδον?

Berolini d. XXVI. m. Ianuarii a. MDCCCLIII.

Augustus Meineke.

— Z —

Εἰρηκόσι δ' ἡμῖν περὶ τῆς Ἰβηρίας καὶ τῶν Κελ- C.289 1 τικῶν ἐθνῶν καὶ τῶν Ἰταλικῶν σὺν ταῖς πλησίον νήσοις ἐφεξῆς ἂν εἴη λέγειν τὰ λειπόμενα τῆς Εὐρώπης μέρη, διελοῦσι τὸν ἐνδεχόμενον τρόπον. λείπεται δὲ τὰ πρὸς ἕω * μὲν τὰ πέραν τοῦ Ῥήνου μέχρι τοῦ Ταναΐδος καὶ τοῦ στόματος τῆς Μαιώτιδος λίμνης, καὶ ὅσα μεταξὺ τοῦ Ἀδρίου καὶ τῶν ἀριστερῶν τῆς Ποντικῆς θαλάττης μερῶν ἀπολαμβάνει πρὸς νότον μέχρι τῆς Ἑλλάδος καὶ τῆς Προποντίδος ὁ Ἴστρος· διαιρεῖ γὰρ οὗτος ἅπασαν ὡς ἐγγυτάτω δίχα τὴν λεχθεῖσαν γῆν, μέγιστος τῶν κατὰ τὴν Εὐρώπην ποταμῶν, ῥέων πρὸς νότον κατ' ἀρχάς, εἶτ' ἐπιστρέφων εὐθὺς ἀπὸ τῆς δύσεως ἐπὶ τὴν ἀνατολὴν καὶ τὸν Πόντον. ἄρχεται μὲν οὖν ἀπὸ τῶν Γερμανικῶν ἄκρων τῶν ἑσπερίων, πλησίον δὲ καὶ τοῦ μυχοῦ τοῦ Ἀδριατικοῦ, διέχων αὐτοῦ περὶ χιλίους σταδίους· τελευτᾷ δ' εἰς τὸν Πόντον οὐ πολὺ ἄπωθεν τῶν τοῦ Τύρα καὶ τοῦ Βορυσθένους ἐκβολῶν, ἐκκλίνων πως πρὸς ἄρκτους. προσάρκτια μὲν οὖν ἐστι τῷ Ἴστρῳ τὰ πέραν τοῦ Ῥήνου καὶ τῆς Κελτικῆς· ταῦτα δ' ἐστὶ τά τε Γαλατικὰ ἔθνη καὶ τὰ Γερμανικὰ μέχρι Βασταρνῶν καὶ Τυρεγετῶν καὶ τοῦ ποταμοῦ τοῦ Βορυσθένους, καὶ ὅσα μεταξὺ τούτου καὶ Ταναΐδος καὶ τοῦ στόματος τῆς Μαιώτιδος εἴς τε τὴν μεσόγαιαν ἀνατείνει μέχρι τοῦ ὠκεανοῦ καὶ τῇ Ποντικῇ κλύζεται θαλάττῃ· μεσημβρινὰ δὲ τά τε Ἰλλυρικὰ καὶ τὰ Θρᾴκια καὶ ὅσα τούτοις ἀναμέμικται τῶν Κελτικῶν ἤ τινων ἄλλων, μέχρι τῆς Ἑλλάδος. λέγωμεν

δὲ πρῶτον περὶ τῶν ἐκτὸς τοῦ Ἴστρου· πολὺ γὰρ ἁπλούστερα τῶν ἐπὶ θάτερα μερῶν ἐστιν.

C.290 2 Εὐθὺς τοίνυν τὰ πέραν τοῦ Ῥήνου μετὰ τοὺς Κελτοὺς πρὸς τὴν ἕω κεκλιμένα Γερμανοὶ νέμονται, μικρὸν ἐξαλλάττοντες τοῦ Κελτικοῦ φύλου τῷ τε πλεονασμῷ τῆς ἀγριότητος καὶ τοῦ μεγέθους καὶ τῆς ξανθότητος, τἆλλα δὲ παραπλήσιοι καὶ μορφαῖς καὶ ἤθεσι καὶ βίοις ὄντες, οἵους εἰρήκαμεν τοὺς Κελτούς. διὸ δὴ καί μοι δοκοῦσι Ῥωμαῖοι τοῦτο αὐτοῖς θέσθαι τοὔνομα ὡς ἂν γνησίους Γαλάτας φράζειν βουλόμενοι· γνήσιοι γὰρ οἱ Γερμανοὶ κατὰ τὴν Ῥωμαίων διάλεκτον.

3 Ἔστι δὲ τὰ μὲν πρῶτα μέρη τῆς χώρας ταύτης τὰ πρὸς τῷ Ῥήνῳ μέχρι τῶν ἐκβολῶν ἀπὸ τῆς πηγῆς ἀρξαμένοις· σχεδὸν δέ τι καὶ τοῦτ᾽ ἔστι τὸ ἑσπέριον τῆς χώρας πλάτος, ἡ ποταμία πᾶσα. ταύτης δὲ τὰ μὲν εἰς τὴν Κελτικὴν μετήγαγον Ῥωμαῖοι, τὰ δ᾽ ἔφθη μεταστάντα εἰς τὴν ἐν βάθει χώραν, καθάπερ Μαρσοί· λοιποὶ δ᾽ εἰσὶν ὀλίγοι καὶ τῶν Σουγάμβρων μέρος. μετὰ δὲ τοὺς παραποταμίους τἆλλά ἐστιν ἔθνη τὰ μεταξὺ τοῦ Ῥήνου καὶ τοῦ Ἄλβιος ποταμοῦ, ὃς παράλληλός πως ἐκείνῳ ῥεῖ πρὸς τὸν ὠκεανόν, οὐκ ἐλάττω χώραν διεξιὼν ἤπερ ἐκεῖνος. εἰσὶ δὲ μεταξὺ καὶ ἄλλοι ποταμοὶ πλωτοὶ (ὧν ἐν τῷ Ἀμασίᾳ Δροῦσος Βρουκτέρους κατεναυμάχησε), ῥέοντες ὡσαύτως ἀπὸ νότου πρὸς βορρᾶν καὶ τὸν ὠκεανόν. ἐξῆρται γὰρ ἡ χώρα πρὸς νότον καὶ συνεχῆ ταῖς Ἄλπεσι ποιεῖ ῥάχιν τινὰ πρὸς ἕω τεταμένην, ὡς ἂν μέρος οὖσαν τῶν Ἄλπεων· καὶ δὴ καὶ ἀπεφήναντό τινες οὕτως διά τε τὴν λεχθεῖσαν θέσιν καὶ διὰ τὸ τὴν αὐτὴν ὕλην ἐκφέρειν· οὐ μὴν ἐπὶ τοσοῦτό γε ὕψος ἀνίσχει τὰ ταύτῃ ὄρη. ἐνταῦθα δ᾽ ἐστὶν ὁ Ἑρκύνιος δρυμὸς καὶ τὰ τῶν Σοήβων ἔθνη,

τὰ μὲν οἰκοῦντα ἐντὸς τοῦ δρυμοῦ, ἐν οἷς ἐστι καὶ τὸ Βουίαιμον τὸ τοῦ Μαροβόδου βασίλειον, εἰς ὃν ἐκεῖνος τόπον ἄλλους τε μετανέστησε πλείους καὶ δὴ καὶ τοὺς ὁμοεθνεῖς ἑαυτῷ Μαρκομμάνους. ἐπέστη γὰρ τοῖς πράγμασιν οὗτος ἐξ ἰδιώτου μετὰ τὴν ἐκ Ῥώμης ἐπάνοδον· νέος γὰρ ἦν ἐνθάδε καὶ εὐεργετεῖτο ὑπὸ τοῦ Σεβαστοῦ, ἐπανελθὼν δὲ ἐδυνάστευσε καὶ κατεκτήσατο πρὸς οἷς εἶπον Λουγίους τε, μέγα ἔθνος, καὶ Ζούμους καὶ Γούτωνας καὶ Μουγίλωνας καὶ Σιβίνους καὶ τῶν Σοήβων αὐτῶν μέγα ἔθνος, Σέμνωνας. πλὴν τά γε τῶν Σοήβων, ὡς ἔφην, ἔθνη τὰ μὲν ἐντὸς οἰκεῖ, τὰ δὲ ἐκτὸς τοῦ δρυμοῦ, ὅμορα τοῖς Γέταις. μέγιστον μὲν οὖν τὸ τῶν Σοήβων ἔθνος· διήκει γὰρ ἀπὸ τοῦ Ῥήνου μέχρι τοῦ Ἄλβιος· μέρος δέ τι αὐτῶν καὶ πέραν τοῦ Ἄλβιος νέμεται, καθάπερ Ἑρμόνδοροι καὶ Λαγκόβαρδοι· νυνὶ δὲ καὶ τελέως εἰς τὴν περαίαν οὗτοί γε C.291 ἐκπεπτώκασι φεύγοντες. κοινὸν δ᾽ ἐστὶν ἅπασι τοῖς ταύτῃ τὸ περὶ τὰς μεταναστάσεις εὐμαρὲς διὰ τὴν λιτότητα τοῦ βίου καὶ διὰ τὸ μὴ γεωργεῖν μηδὲ θησαυρίζειν, ἀλλ᾽ ἐν καλυβίοις οἰκεῖν ἐφήμερον ἔχουσι παρασκευήν· τροφὴ δ᾽ ἀπὸ τῶν θρεμμάτων ἡ πλείστη καθάπερ τοῖς νομάσιν, ὥστ᾽ ἐκείνους μιμούμενοι τὰ οἰκεῖα ταῖς ἁρμαμάξαις ἐπάραντες ὅπῃ ἂν δόξῃ τρέπονται μετὰ τῶν βοσκημάτων. ἄλλα δ᾽ ἐνδεέστερά ἐστιν ἔθνη Γερμανικὰ Χηροῦσκοί τε καὶ Χάττοι καὶ Γαμαβρίουιοι καὶ Χαττουάριοι· πρὸς δὲ τῷ ὠκεανῷ Σούγαμβροί τε καὶ Χαῦβοι καὶ Βρούκτεροι καὶ Κίμβροι Καῦκοί τε καὶ Καοῦλκοι καὶ Καμψιανοὶ καὶ ἄλλοι πλείους. ἐπὶ ταὐτὰ δὲ τῷ Ἀμασίᾳ φέρονται Βισουργίς τε καὶ Λουπίας ποταμός, διέχων Ῥήνου περὶ

1. post δρυμοῦ: καθάπερ τὰ τῶν κολδούων (Κοαδούων)

ἑξακοσίους σταδίους, ῥέων διὰ Βρουκτέρων τῶν ἐλαττόνων. ἔστι δὲ καὶ Σάλας ποταμός, οὗ μεταξὺ καὶ τοῦ Ῥήνου πολεμῶν καὶ κατορθῶν Δροῦσος ἐτελεύτησεν ὁ Γερμανικός. ἐχειρώσατο δ' οὐ μόνον τῶν ἐθνῶν τὰ πλεῖστα, ἀλλὰ καὶ τὰς ἐν τῷ παράπλῳ νήσους, ὧν ἐστι καὶ ἡ Βυρχανίς, ἣν ἐκ πολιορκίας εἷλε.

4 Γνώριμα δὲ ταῦτα κατέστη τὰ ἔθνη πολεμοῦντα πρὸς Ῥωμαίους, εἶτ' ἐνδιδόντα καὶ πάλιν ἀφιστάμενα ἢ καὶ καταλείποντα τὰς κατοικίας· κἂν πλείω δὲ γνώριμα ὑπῆρξεν, εἰ ἐπέτρεπε τοῖς στρατηγοῖς ὁ Σεβαστὸς διαβαίνειν τὸν Ἄλβιν μετιοῦσι τοὺς ἐκεῖσε ἀπανισταμένους. νυνὶ δ' εὐπορώτερον ὑπέλαβε στρατηγεῖν τὸν ἐν χερσὶ πόλεμον, εἰ τῶν ἔξω τοῦ Ἄλβιος καθ' ἡσυχίαν ὄντων ἀπέχοιτο καὶ μὴ παροξύνοι πρὸς τὴν κοινωνίαν τῆς ἔχθρας. ἤρξαντο δὲ τοῦ πολέμου Σούγαμβροι πλησίον οἰκοῦντες τοῦ Ῥήνου, Μέλωνα ἔχοντες ἡγεμόνα· κἀκεῖθεν ἤδη διεδέχοντο ἄλλοτ' ἄλλοι δυναστεύοντες καὶ καταλυόμενοι, πάλιν δ' ἀφιστάμενοι, προδιδόντες καὶ τὰ ὅμηρα καὶ τὰς πίστεις. πρὸς οὓς ἡ μὲν ἀπιστία μέγα ὄφελος, οἱ δὲ πιστευθέντες τὰ μέγιστα κατέβλαψαν, καθάπερ οἱ Χηροῦσκοι καὶ οἱ τούτοις ὑπήκοοι, παρ' οἷς τρία τάγματα Ῥωμαίων μετὰ τοῦ στρατηγοῦ Οὐάρου Κουιντιλλίου παρασπονδηθέντα ἀπώλετο ἐξ ἐνέδρας. ἔτισαν δὲ δίκας ἅπαντες καὶ παρέσχον τῷ νεωτέρῳ Γερμανικῷ λαμπρότατον θρίαμβον, ἐν ᾧ ἐθριαμβεύθη τῶν ἐπιφανεστάτων ἀνδρῶν σώματα καὶ γυναικῶν, Σεγιμοῦντός τε Σεγέστου υἱός, Χηρούσκων ἡγεμών, καὶ ἀδελφὴ αὐτοῦ, γυνὴ δ' Ἀρμενίου τοῦ πολεμαρχήσαντος ἐν τοῖς Χηρούσκοις ἐν τῇ πρὸς Οὐᾶρον
C.292 Κουιντίλλιον παρασπονδήσει καὶ νῦν ἔτι συνέχοντος τὸν πόλεμον, ὄνομα Θουσνέλδα, καὶ υἱὸς τριετὴς Θουμέλικος· ἔτι δὲ Σεσίθακος, Σεγιμήρου υἱὸς τῶν Χη-

ρούσκων ἡγεμόνος, καὶ γυνὴ τούτου Ῥαμίς, Οὐκρομήρου θυγάτηρ ἡγεμόνος Χάττων, καὶ Δευδόριξ, Βαιτόριγος τοῦ Μέλωνος ἀδελφοῦ υἱός, Σούγαμβρος. Σεγέστης δὲ ὁ πενθερὸς τοῦ Ἀρμενίου καὶ ἐξ ἀρχῆς διέστη πρὸς τὴν γνώμην αὐτοῦ καὶ λαβὼν καιρὸν ηὐτομόλησε καὶ τῷ θριάμβῳ παρῆν τῶν φιλτάτων, ἐν τιμῇ ἀγόμενος. ἐπόμπευσε δὲ καὶ Λίβης τῶν Χάττων ἱερεύς, καὶ ἄλλα δὲ σώματα ἐπομπεύθη ἐκ τῶν πεπορθημένων ἐθνῶν, Καούλκων Καμψανῶν Βρουκτέρων Οὐσίπων Χηρούσκων Χάττων Χαττουαρίων Λανδῶν Τουβαττίων. διέχει δὲ τοῦ Ἄλβιος ὁ Ῥῆνος περὶ τρισχιλίους σταδίους, εἴ τις εὐθυπορούσας ἔχοι τὰς ὁδούς· νυνὶ δὲ διὰ σκολιᾶς καὶ ἑλώδους καὶ δρυμῶν κυκλοπορεῖν ἀνάγκη.

5 Ὁ δὲ Ἑρκύνιος δρυμὸς πυκνότερός τέ ἐστι καὶ μεγαλόδενδρος ἐν χωρίοις ἐρυμνοῖς κύκλον περιλαμβάνων μέγαν, ἐν μέσῳ δὲ ἵδρυται χώρα καλῶς οἰκεῖσθαι δυναμένη, περὶ ἧς εἰρήκαμεν. ἔστι δὲ πλησίον αὐτῆς ἥ τε τοῦ Ἴστρου πηγὴ καὶ ἡ τοῦ Ῥήνου καὶ ἡ μεταξὺ ἀμφοῖν λίμνη καὶ τὰ ἕλη τὰ ἐκ τοῦ Ῥήνου διαχεόμενα. ἔστι δ' ἡ λίμνη τὴν μὲν περίμετρον σταδίων πλειόνων ἢ πεντακοσίων, δίαρμα δὲ ἐγγὺς διακοσίων. ἔχει δὲ καὶ νῆσον, ᾗ ἐχρήσατο ὁρμητηρίῳ Τιβέριος ναυμαχῶν πρὸς Οὐινδολικούς. νοτιωτέρα δ' ἐστὶ τῶν τοῦ Ἴστρου πηγῶν καὶ αὕτη, ὥστ' ἀνάγκη τῷ ἐκ τῆς Κελτικῆς ἐπὶ τὸν Ἑρκύνιον δρυμὸν ἰόντι πρῶτον μὲν διαπερᾶσαι τὴν λίμνην, ἔπειτα τὸν Ἴστρον, εἶτ' ἤδη δι' εὐπετεστέρων χωρίων ἐπὶ τὸν δρυμὸν τὰς προβάσεις ποιεῖσθαι δι' ὀροπεδίων. ἡμερήσιον δ' ἀπὸ τῆς λίμνης προελθὼν ὁδὸν Τιβέριος εἶδε τὰς τοῦ Ἴστρου πηγάς. προσάπτου-

---

25. post αὕτη: καὶ ὁ Ἑρκύνιος δρυμός

ται δὲ τῆς λίμνης ἐπ' ὀλίγον μὲν οἱ Ῥαιτοί, τὸ δὲ πλέον Ἐλουήττιοι καὶ Οὐινδολικοί ... καὶ ἡ Βοίων ἐρημία. μέχρι Παννονίων πάντες, τὸ πλέον δ' Ἐλουήττιοι καὶ Οὐινδολικοί, οἰκοῦσιν ὀροπέδια. Ῥαιτοὶ δὲ καὶ Νωρικοὶ μέχρι τῶν Ἀλπείων ὑπερβολῶν ἀνίσχουσι καὶ πρὸς τὴν Ἰταλίαν περινεύουσιν, οἱ μὲν Ἰνσούβροις συνάπτοντες οἱ δὲ Κάρνοις καὶ τοῖς περὶ τὴν Ἀκυληίαν χωρίοις. ἔστι δὲ καὶ ἄλλη ὕλη μεγάλη Γαβρῆτα ἐπὶ τάδε τῶν Σοήβων, ἐπέκεινα δ' ὁ Ἑρκύνιος δρυμός· ἔχεται δὲ κἀκεῖνος ὑπ' αὐτῶν.

2 Περὶ δὲ Κίμβρων τὰ μὲν οὐκ εὖ λέγεται, τὰ δ' ἔχει πιθανότητας οὐ μετρίας. οὔτε γὰρ τὴν τοιαύτην αἰτίαν τοῦ πλάνητας γενέσθαι καὶ λῃστρικοὺς ἀποδέξαιτ' ἄν τις, ὅτι χερρόνησον οἰκοῦντες μεγάλῃ πλημμυρίδι ἐξελαθεῖεν ἐκ τῶν τόπων· καὶ γὰρ νῦν ἔχουσι
C.293 τὴν χώραν ἣν εἶχον πρότερον, καὶ ἔπεμψαν τῷ Σεβαστῷ δῶρον τὸν ἱερώτατον παρ' αὐτοῖς λέβητα, αἰτούμενοι φιλίαν καὶ ἀμνηστίαν τῶν ὑπηργμένων, τυχόντες δὲ ὧν ἠξίουν ἀπῆραν· γελοῖον δὲ τῷ φυσικῷ καὶ αἰωνίῳ πάθει δὶς ἑκάστης ἡμέρας συμβαίνοντι προσοργισθέντας ἀπελθεῖν ἐκ τοῦ τόπου. ἔοικε δὲ πλάσματι τὸ συμβῆναί ποτε ὑπερβάλλουσαν πλημμυρίδα· ἐπιτάσεις μὲν γὰρ καὶ ἀνέσεις δέχεται, τεταγμένας δὲ καὶ περιοδιζούσας, ὁ ὠκεανὸς ἐν τοῖς τοιούτοις πάθεσιν. οὐκ εὖ δ' οὐδὲ ὁ φήσας ὅπλα αἴρεσθαι πρὸς τὰς πλημμυρίδας τοὺς Κίμβρους, οὐδ' ὅτι ἀφοβίαν οἱ Κελτοὶ ἀσκοῦντες κατακλύζεσθαι τὰς οἰκίας ὑπομένουσιν, εἶτ' ἀνοικοδομοῦσι, καὶ ὅτι πλείων αὐτοῖς συμβαίνει φθόρος ἐξ ὕδατος ἢ πολέμου, ὅπερ Ἔφορός φησιν. ἡ γὰρ τάξις ἡ τῶν πλημμυρίδων καὶ τὸ τὴν ἐπικλυζομένην χώραν εἶναι γνώριμον οὐκ ἔμελλε τοιαύτας τὰς ἀτοπίας παρέξειν. δὶς γὰρ ἑκάστης ἡμέρας

τούτου συμβαίνοντος τὸ μηδ' ἅπαξ αἰσθάνεσθαι φυσικὴν οὖσαν τὴν παλίρροιαν καὶ ἀβλαβῆ, καὶ οὐ μόνοις τούτοις συμβαίνουσαν ἀλλὰ τοῖς παρωκεανίταις πᾶσι, πῶς οὐκ ἀπίθανον; οὐδὲ Κλείταρχος εὖ· φησὶ γὰρ τοὺς ἱππέας ἰδόντας τὴν ἔφοδον τοῦ πελάγους ἀφιππάσασθαι καὶ φεύγοντας ἐγγὺς γενέσθαι τοῦ περικαταληφθῆναι. οὔτε δὲ τοσούτῳ τάχει τὴν ἐπίβασιν ὁρμωμένην ἱστοροῦμεν, ἀλλὰ λεληθότως προσιοῦσαν τὴν θάλατταν· οὔτε τὸ καθ' ἡμέραν γινόμενον καὶ πᾶσιν ἔναυλον ἤδη ὂν τοῖς πλησιάζειν μέλλουσι πρὶν ἢ θεάσασθαι, τοσοῦτον ἔμελλε παρέξεσθαι φόβον ὥστε φεύγειν, ὡς ἂν εἰ ἐξ ἀδοκήτου προσέπεσε.

Ταῦτά τε δὴ δικαίως ἐπιτιμᾷ τοῖς συγγραφεῦσι 2
Ποσειδώνιος καὶ οὐ κακῶς εἰκάζει, διότι λῃστρικοὶ ὄντες καὶ πλάνητες οἱ Κίμβροι καὶ μέχρι τῶν περὶ τὴν Μαιῶτιν ποιήσαιντο στρατείαν, ἀπ' ἐκείνων δὲ καὶ ὁ Κιμμέριος κληθείη Βόσπορος, οἷον Κιμβρικός, Κιμμερίους τοὺς Κίμβρους ὀνομασάντων τῶν Ἑλλήνων. φησὶ δὲ καὶ Βοίους τὸν Ἑρκύνιον δρυμὸν οἰκεῖν πρότερον, τοὺς δὲ Κίμβρους ὁρμήσαντας ἐπὶ τὸν τόπον τοῦτον, ἀποκρουσθέντας ὑπὸ τῶν Βοίων ἐπὶ τὸν Ἴστρον καὶ τοὺς Σκορδίσκους Γαλάτας καταβῆναι, εἶτ' ἐπὶ Τευρίστας καὶ Ταυρίσκους, καὶ τούτους Γαλάτας, εἶτ' ἐπὶ Ἑλουηττίους, πολυχρύσους μὲν ἄνδρας εἰρηναίους δέ· ὁρῶντας δὲ τὸν ἐκ τῶν λῃστηρίων πλοῦτον ὑπερβάλλοντα τοῦ παρ' ἑαυτοῖς τοὺς Ἑλουηττίους ἐπαρθῆναι, μάλιστα δ' αὐτῶν Τιγυρίνους τε καὶ Τωυγένους, ὥστε καὶ συνεξορμῆσαι. πάντες μέντοι κατε- C.294
λύθησαν ὑπὸ τῶν Ῥωμαίων αὐτοί τε οἱ Κίμβροι καὶ οἱ συναράμενοι τούτοις, οἱ μὲν ὑπερβαλόντες τὰς Ἄλπεις εἰς τὴν Ἰταλίαν οἱ δ' ἔξω τῶν Ἄλπεων.

Ἔθος δέ τι τῶν Κίμβρων διηγοῦνται τοιοῦτον, 3

ὅτι ταῖς γυναιξὶν αὐτῶν συστρατευούσαις παρηκολούθουν προμάντεις ἱέρειαι πολιότριχες, λευχείμονες, καρπασίνας ἐφαπτίδας ἐπιπεπορπημέναι, ζῶσμα χαλκοῦν ἔχουσαι, γυμνόποδες· τοῖς οὖν αἰχμαλώτοις διὰ τοῦ στρατοπέδου συνήντων ξιφήρεις, καταστέψασαι δ' αὐτοὺς ἦγον ἐπὶ κρατῆρα χαλκοῦν ὅσον ἀμφορέων εἴκοσιν· εἶχον δὲ ἀναβάθραν, ἣν ἀναβᾶσα .... ὑπερπετὴς τοῦ λέβητος ἐλαιμοτόμει ἕκαστον μετεωρισθέντα· ἐκ δὲ τοῦ προχεομένου αἵματος εἰς τὸν κρατῆρα μαντείαν τινὰ ἐποιοῦντο, ἄλλαι δὲ διασχίσασαι ἐσπλάγχνευον ἀναφθεγγόμεναι νίκην τοῖς οἰκείοις. ἐν δὲ τοῖς ἀγῶσιν ἔτυπτον τὰς βύρσας τὰς περιτεταμένας τοῖς γέρροις τῶν ἁρμαμαξῶν, ὥστ' ἀποτελεῖσθαι ψόφον ἐξαίσιον.

4 Τῶν δὲ Γερμανῶν, ὡς εἶπον, οἱ μὲν προσάρκτιοι παροικοῦσι τῷ ὠκεανῷ, γνωρίζονται δ' ἀπὸ τῶν ἐκβολῶν τοῦ Ῥήνου λαβόντες τὴν ἀρχὴν μέχρι τοῦ Ἄλβιος. τούτων δ' εἰσὶ γνωριμώτατοι Σούγαμβροί τε καὶ Κίμβροι. τὰ δὲ πέραν τοῦ Ἄλβιος τὰ πρὸς τῷ ὠκεανῷ παντάπασιν ἄγνωστα ἡμῖν ἐστιν. οὔτε γὰρ τῶν προτέρων οὐδένας ἴσμεν τὸν παράπλουν τοῦτον πεποιημένους πρὸς τὰ ἑωθινὰ μέρη τὰ μέχρι τοῦ στόματος τῆς Κασπίας θαλάττης, οὔθ' οἱ Ῥωμαῖοί πω προῆλθον εἰς τὰ περαιτέρω τοῦ Ἄλβιος· ὡς δ' αὔτως οὐδὲ πεζῇ παρωδεύκασιν οὐδένες. ἀλλ' ὅτι μὲν κατὰ μῆκος ἰοῦσιν ἐπὶ τὴν ἕω τὰ κατὰ τὸν Βορυσθένη καὶ τὰ πρὸς βορρᾶν τοῦ Πόντου χωρία ἀπαντᾷ, δῆλον ἐκ τῶν κλιμάτων καὶ τῶν παραλλήλων διαστημάτων. τί δ' ἐστὶ πέραν τῆς Γερμανίας καὶ τί τῶν ἄλλων τῶν ἑξῆς, εἴτε Βαστάρνας χρὴ λέγειν, ὡς οἱ πλείους ὑπονοοῦσιν, εἴτ'

---

27. post βορρᾶν: μέρη

ἄλλους μεταξὺ ἢ Ἰάζυγας ἢ Ῥωξολανοὺς ἤ τινας ἄλλους τῶν ἁμαξοίκων οὐ ῥᾴδιον εἰπεῖν, οὐδ' εἰ μέχρι τοῦ ὠκεανοῦ παρήκουσι παρὰ πᾶν τὸ μῆκος, ἢ ἔστι τι ἀοίκητον ὑπὸ ψύχους ἢ ἄλλης αἰτίας, ἢ εἰ καὶ γένος ἀνθρώπων ἄλλο διαδέχεται μεταξὺ τῆς θαλάττης καὶ τῶν ἑῴων Γερμανῶν ἱδρυμένον. τοῦτο δὲ τὸ αὐτὸ ἀγνόημα καὶ περὶ τῶν ἄλλων τῶν ἐφεξῆς προσαρκτίων ἐπέχει. οὔτε γὰρ τοὺς Βαστάρνας οὔτε τοὺς Σαυρομάτας καὶ ἁπλῶς τοὺς ὑπὲρ τοῦ Πόντου οἰκοῦντας ἴσμεν, οὔθ' ὁπόσον ἀπέχουσι τῆς Ἀτλαντικῆς θαλάττης, οὔτ' εἰ συνάπτουσιν αὐτῇ.

Τὸ δὲ νότιον μέρος τῆς Γερμανίας τὸ πέραν τοῦ 3
Ἄλβιος τὸ μὲν συνεχὲς ἀκμὴν ὑπὸ τῶν Σοήβων κατέχεται· εἶτ' εὐθὺς ἡ τῶν Γετῶν συνάπτει γῆ, κατ' ἀρ- C.295
χὰς μὲν στενή, παρατεταμένη τῷ Ἴστρῳ κατὰ τὸ νότιον μέρος, κατὰ δὲ τοὐναντίον τῇ παρωρείᾳ τοῦ Ἑρκυνίου δρυμοῦ, μέρος τι τῶν ὀρῶν καὶ αὐτὴ κατέχουσα, εἶτα πλατύνεται πρὸς τὰς ἄρκτους μέχρι Τυρεγετῶν· τοὺς δὲ ἀκριβεῖς ὅρους οὐκ ἔχομεν φράζειν. διὰ δὲ τὴν ἄγνοιαν τῶν τόπων τούτων οἱ τὰ Ῥιπαῖα ὄρη καὶ τοὺς Ὑπερβορείους μυθοποιοῦντες λόγου ἠξίωνται, καὶ ἃ Πυθέας ὁ Μασσαλιώτης κατεψεύσατο * ταῦτα τῆς παρωκεανίτιδος, προσχήματι χρώμενος τῇ περὶ τὰ οὐράνια καὶ τὰ μαθηματικὰ ἱστορίᾳ. ἐκεῖνοι μὲν οὖν ἐάσθωσαν· οὐδὲ γὰρ εἴ τινα Σοφοκλῆς τραγῳδεῖ περὶ τῆς Ὠρειθυίας λέγων ὡς ἀναρπαγεῖσα ὑπὸ Βορέου κομισθείη „ὑπέρ τε πόντον πάντ' ἐπ' ἔσχατα χθονὸς „νυκτός τε πηγὰς οὐρανοῦ τ' ἀναπτυχάς, Φοίβου πα„λαιὸν κῆπον," οὐδὲν ἂν εἴη πρὸς τὰ νῦν, ἀλλ' ἐατέον, ὥσπερ καὶ ἐν τῷ Φαίδρῳ ὁ Σωκράτης. ἃ δὲ ἔκ τε τῆς παλαιᾶς ἱστορίας καὶ τῆς νῦν παρειλήφαμεν, ταῦτα λέγωμεν.

2 Οἱ τοίνυν Ἕλληνες τοὺς Γέτας Θρᾷκας ὑπελάμβανον· ᾤκουν δ' ἐφ' ἑκάτερα τοῦ Ἴστρου καὶ οὗτοι καὶ οἱ Μυσοὶ Θρᾷκες ὄντες καὶ αὐτοὶ καὶ οὓς νῦν Μοισοὺς καλοῦσιν, ἀφ' ὧν ὡρμήθησαν καὶ οἱ νῦν μεταξὺ Λυδῶν καὶ Φρυγῶν καὶ Τρώων οἰκοῦντες Μυσοί. καὶ αὐτοὶ δ' οἱ Φρύγες Βρίγες εἰσί, Θρᾴκιόν τι ἔθνος, καθάπερ καὶ Μυγδόνες καὶ Βέβρυκες καὶ Μαιδοβιθυνοὶ καὶ Βιθυνοὶ καὶ Θυνοί, δοκῶ δὲ καὶ τοὺς Μαριανδυνούς. οὗτοι μὲν οὖν τελέως ἐκλελοίπασι πάντες τὴν Εὐρώπην, οἱ δὲ Μυσοὶ συνέμειναν. καὶ Ὅμηρον δ' ὀρθῶς εἰκάζειν μοι δοκεῖ Ποσειδώνιος τοὺς ἐν τῇ Εὐρώπῃ Μυσοὺς κατονομάζειν (λέγω δὲ τοὺς ἐν τῇ Θρᾴκῃ) ὅταν φῇ „αὐτὸς δὲ πάλιν τρέπεν ὄσσε φαεινώ, „νόσφιν ἐφ' ἱπποπόλων Θρῃκῶν καθορώμενος αἶαν „Μυσῶν τ' ἀγχεμάχων." ἐπεὶ εἴ γε τοὺς κατὰ τὴν Ἀσίαν Μυσοὺς δέχοιτό τις, ἀπηρτημένος ἂν εἴη ὁ λόγος. τὸ γὰρ ἀπὸ τῶν Τρώων τρέψαντα τὴν ὅρασιν ἐπὶ τὴν Θρᾳκῶν γῆν συγκαταλέγειν ταύτῃ τὴν τῶν Μυσῶν, τῶν οὐ νόσφιν ὄντων ἀλλ' ὁμόρων τῇ Τρῳάδι καὶ ὄπισθεν αὐτῆς ἱδρυμένων καὶ ἑκατέρωθεν, διειργομένων δ' ἀπὸ τῆς Θρᾴκης πλατεῖ Ἑλλησπόντῳ, συγχέοντος ἂν εἴη τὰς ἠπείρους καὶ ἅμα τῆς φράσεως οὐκ ἀκούοντος. τὸ γὰρ „πάλιν τρέπεν" μάλιστα μέν ἐστιν εἰς τοὐπίσω· ὁ δ' ἀπὸ τῶν Τρώων μεταφέρων τὴν ὄψιν ἐπὶ τοὺς μὴ ὄπισθεν αὐτῶν ἢ ἐκ πλαγίων ὄντας προσωτέρω μὲν μεταφέρει, εἰς τοὐπίσω δ' οὐ πάνυ.
C.296 καὶ τὸ ἐπιφερόμενον δ' αὐτοῦ τούτου μαρτύριον, ὅτι τοὺς ἱππημολγοὺς καὶ γαλακτοφάγους καὶ ἀβίους συνῆψεν αὐτοῖς, οἵπερ εἰσὶν οἱ ἁμάξοικοι Σκύθαι καὶ Σαρμάται. καὶ γὰρ νῦν ἀναμέμικται ταῦτα τὰ ἔθνη τοῖς Θρᾳξὶ καὶ τὰ Βασταρνικά, μᾶλλον μὲν τοῖς ἐκτὸς Ἴστρου, ἀλλὰ καὶ τοῖς ἐντός. τούτοις δὲ καὶ τὰ Κελ-

τικά, οἵ τε Βόιοι καὶ Σκορδίσκοι καὶ Ταυρίσκοι. τοὺς δὲ Σκορδίσκους ἔνιοι Σκορδίστας καλοῦσι· καὶ τοὺς Ταυρίσκους δὲ Τευρίσκους καὶ Ταυρίστας φασί.

Λέγει δὲ τοὺς Μυσοὺς ὁ Ποσειδώνιος καὶ ἐμψύ- 3
χων ἀπέχεσθαι κατ᾽ εὐσέβειαν, διὰ δὲ τοῦτο καὶ θρεμμάτων· μέλιτι δὲ χρῆσθαι καὶ γάλακτι καὶ τυρῷ ζῶντας καθ᾽ ἡσυχίαν, διὰ δὲ τοῦτο καλεῖσθαι θεοσεβεῖς τε καὶ καπνοβάτας· εἶναι δέ τινας τῶν Θρᾳκῶν οἳ χωρὶς γυναικὸς ζῶσιν, οὓς κτίστας καλεῖσθαι, ἀνιερῶσθαί τε διὰ τιμὴν καὶ μετὰ ἀδείας ζῆν· τούτους δὴ συλλήβδην ἅπαντας τὸν ποιητὴν εἰπεῖν ἀγαυοὺς ἱππημολγοὺς γλακτοφάγους ἀβίους τε, δικαιοτάτους ἀνθρώπους. ἀβίους δὲ προσαγορεύειν μάλιστα ὅτι χωρὶς γυναικῶν, ἡγούμενον ἡμιτελῆ τινα βίον τὸν χῆρον, καθάπερ καὶ τὸν οἶκον ἡμιτελῆ τὸν Πρωτεσιλάου διότι χῆρος· ἀγχεμάχους δὲ τοὺς Μυσούς, ὅτι ἀπόρθητοι, καθὰ οἱ ἀγαθοὶ πολεμισταί· δεῖν δὲ ἐν τῷ τρισκαιδεκάτῳ γράφειν ἀντὶ τοῦ „Μυσῶν τ᾽ ἀγχεμάχων" „Μοισῶν τ᾽ ἀγχεμάχων."

Τὸ μὲν οὖν τὴν γραφὴν κινεῖν ἐκ τοσούτων ἐτῶν 4
εὐδοκιμήσασαν περιττὸν ἴσως· πολὺ γὰρ πιθανώτερον ὠνομάσθαι μὲν ἐξ ἀρχῆς Μυσούς, μετωνομάσθαι δὲ ὡς νῦν. τοὺς ἀβίους δὲ τοὺς χήρους οὐ μᾶλλον ἢ τοὺς ἀνεστίους καὶ τοὺς ἁμαξοίκους δέξαιτ᾽ ἄν τις· μάλιστα γὰρ περὶ τὰ συμβόλαια καὶ τὴν τῶν χρημάτων κτῆσιν συνισταμένων τῶν ἀδικημάτων, τοὺς οὕτως ἀπ᾽ ὀλίγων εὐτελῶς ζῶντας δικαιοτάτους εὔλογον κληθῆναι· ἐπεὶ καὶ οἱ φιλόσοφοι τῇ σωφροσύνῃ τὴν δικαιοσύνην ἐγγυτάτω τιθέντες τὸ αὔταρκες καὶ τὸ λιτὸν ἐν τοῖς πρώτοις ἐζήλωσαν· ἀφ᾽ οὗ καὶ προεκπτώσεις τινὰς αὐτῶν παρέωσαν ἐπὶ τὸν κυνισμόν. τὸ δὲ χήρους γυναικῶν οἰκεῖν οὐδεμίαν τοιαύτην ἔμφασιν ὑπογρά-

φει, καὶ μάλιστα παρὰ τοῖς Θρᾳξὶ καὶ τούτων τοῖς Γέταις. ὅρα δ' ἃ λέγει Μένανδρος περὶ αὐτῶν οὐ C.297 πλάσας, ὡς εἰκός, ἀλλ' ἐξ ἱστορίας λαβὼν „πάντες „μὲν οἱ Θρᾷκες, μάλιστα δ' οἱ Γέται ἡμεῖς ἁπάντων (καὶ „γὰρ αὐτὸς εὔχομαι ἐκεῖθεν εἶναι τὸ γένος) οὐ σφόδρ' „ἐγκρατεῖς ἐσμέν." καὶ ὑποβὰς μικρὸν τῆς περὶ τὰς γυναῖκας ἀκρασίας τίθησι τὰ παραδείγματα „γαμεῖ „γὰρ ἡμῶν οὐδὲ εἷς, εἰ μὴ δέκ' ἢ ἕνδεκα γυναῖκας δώ„δεκά τ' ἢ πλείους τινάς. ἂν τέτταρας δ' ἢ πέντε γε„γαμηκὼς τύχῃ καταστροφῆς τις, ἀνυμέναιος ἄθλιος „ἄνυμφος οὗτος ἐπικαλεῖτ' ἐν τοῖς ἐκεῖ." ταῦτα γὰρ ὁμολογεῖται μὲν καὶ παρὰ τῶν ἄλλων, οὐκ εἰκὸς δὲ τοὺς αὐτοὺς ἅμα μὲν ἄθλιον νομίζειν βίον τὸν μὴ μετὰ πολλῶν γυναικῶν, ἅμα δὲ σπουδαῖον καὶ δίκαιον τὸν τῶν γυναικῶν χῆρον. τὸ δὲ δὴ καὶ θεοσεβεῖς νομίζειν καὶ καπνοβάτας τοὺς ἐρήμους γυναικῶν σφόδρα ἐναντιοῦται ταῖς κοιναῖς ὑπολήψεσιν. ἅπαντες γὰρ τῆς δεισιδαιμονίας ἀρχηγοὺς οἴονται τὰς γυναῖκας· αὗται δὲ καὶ τοὺς ἄνδρας προκαλοῦνται πρὸς τὰς ἐπὶ πλέον θεραπείας τῶν θεῶν καὶ ἑορτὰς καὶ ποτνιασμούς· σπάνιον δ' εἴ τις ἀνὴρ καθ' αὑτὸν ζῶν εὑρίσκεται τοιοῦτος. ὅρα δὲ πάλιν τὸν αὐτὸν ποιητὴν ἃ λέγει εἰσάγων τὸν ἀχθόμενον ταῖς περὶ τὰς θυσίας τῶν γυναικῶν δαπάναις καὶ λέγοντα „ἐπιτρίβουσι δ' ἡμᾶς „οἱ θεοὶ μάλιστα τοὺς γήμαντας· ἀεὶ γάρ τινα ἄγειν „ἑορτήν ἐστ' ἀνάγκη." τὸν δὲ μισογύνην αὐτὰ ταῦτα αἰτιώμενον „ἐθύομεν δὲ πεντάκις τῆς ἡμέρας, ἐκυμ„βάλιζον δ' ἑπτὰ θεράπαιναι κύκλῳ, αἱ δ' ὠλόλυ„ζον." τὸ μὲν οὖν ἰδίως τοὺς ἀγύνους τῶν Γετῶν εὐσεβεῖς νομίζεσθαι παράλογόν τι ἐμφαίνει· τὸ δ' ἰσχύειν ἐν τῷ ἔθνει τούτῳ τὴν περὶ τὸ θεῖον σπουδὴν

ἔκ τε ὧν εἶπε Ποσειδώνιος οὐκ ἀπιστητέον καὶ ἐκ τῆς ἄλλης ἱστορίας.

Λέγεται γάρ τινα τῶν Γετῶν ὄνομα Ζάμολξιν δου- 5
λεῦσαι Πυθαγόρᾳ καί τινα τῶν οὐρανίων παρ' ἐκεί-
νου μαθεῖν, τὰ δὲ καὶ παρ' Αἰγυπτίων πλανηθέντα
καὶ μέχρι δεῦρο· ἐπανελθόντα δ' εἰς τὴν οἰκείαν σπου-
δασθῆναι παρὰ τοῖς ἡγεμόσι καὶ τῷ ἔθνει προλέγοντα
τὰς ἐπισημασίας, τελευτῶντα δὲ πεῖσαι τὸν βασιλέα
κοινωνὸν τῆς ἀρχῆς αὐτὸν λαβεῖν ὡς τὰ παρὰ τῶν
θεῶν ἐξαγγέλλειν ἱκανόν· καὶ κατ' ἀρχὰς μὲν ἱερέα
κατασταθῆναι τοῦ μάλιστα τιμωμένου παρ' αὐτοῖς
θεοῦ, μετὰ ταῦτα δὲ καὶ θεὸν προσαγορευθῆναι, καὶ C.298
καταλαβόντα ἀντρῶδές τι χωρίον ἄβατον τοῖς ἄλ-
λοις ἐνταῦθα διαιτᾶσθαι, σπάνιον ἐντυγχάνοντα τοῖς
ἐκτὸς πλὴν τοῦ βασιλέως καὶ τῶν θεραπόντων· συμ-
πράττειν δὲ τὸν βασιλέα ὁρῶντα τοὺς ἀνθρώπους
προσέχοντας ἑαυτῷ πολὺ πλέον ἢ πρότερον, ὡς ἐκφέ-
ροντι τὰ προστάγματα κατὰ συμβουλὴν θεῶν. τουτὶ
δὲ τὸ ἔθος διέτεινεν ἄχρι καὶ εἰς ἡμᾶς, ἀεί τινος εὑρι-
σκομένου τοιούτου τὸ ἦθος, ὃς τῷ μὲν βασιλεῖ σύμ-
βουλος ὑπῆρχε, παρὰ δὲ τοῖς Γέταις ὠνομάζετο θεός·
καὶ τὸ ὄρος ὑπελήφθη ἱερόν, καὶ προσαγορεύουσιν
οὕτως· ὄνομα δ' αὐτῷ Κωγαίονον ὁμώνυμον τῷ πα-
ραρρέοντι ποταμῷ· καὶ δὴ ὅτε Βυρεβίστας ἦρχε τῶν
Γετῶν, ἐφ' ὃν ἤδη παρεσκευάσατο Καῖσαρ ὁ θεὸς στρα-
τεύειν, Δεκαίνεος εἶχε ταύτην τὴν τιμήν, καί πως τὸ
τῶν ἐμψύχων ἀπέχεσθαι Πυθαγόρειον τοῦ Ζαμόλξιος
ἔμεινε παραδοθέν.

Τοιαῦτα μὲν οὖν [οὐ] κακῶς ἄν τις διαποροίη περὶ 6
τῶν κειμένων παρὰ τῷ ποιητῇ περί τε Μυσῶν καὶ

1. post ἀπιστητέον : καὶ ἐμψύχων ἀπέχεσθαι δι' εὐσέβειαν

ἀγαυῶν ἱππημολγῶν· ἃ δ' Ἀπολλόδωρος ἐν τῷ δευτέρῳ περὶ νεῶν προοιμιαζόμενος εἴρηκεν ἥκιστα λέγοιτ' ἄν. ἐπαινεῖ γὰρ Ἐρατοσθένους ἀπόφασιν, ὅτι φησὶν ἐκεῖνος καὶ Ὅμηρον καὶ τοὺς ἄλλους τοὺς παλαιοὺς τὰ μὲν Ἑλληνικὰ εἰδέναι τῶν δὲ πόρρω πολλὴν ἔχειν ἀπειρίαν, ἀπείρους μὲν μακρῶν ὁδῶν ὄντας ἀπείρους δὲ τοῦ ναυτίλλεσθαι. συνηγορῶν δὲ τούτοις Ὅμηρόν φησι τὴν μὲν Αὐλίδα καλεῖν πετρήεσσαν, ὥσπερ καὶ ἔστι, πολύκνημον δὲ τὸν Ἐτεωνόν, πολυτρήρωνα δὲ τὴν Θίσβην, ποιήεντα δὲ τὸν Ἁλίαρτον· τὰ δ' ἄπωθεν οὔτ' αὐτὸν εἰδέναι οὔτε τοὺς ἄλλους. ποταμῶν γοῦν περὶ τετταράκοντα ῥεόντων εἰς τὸν Πόντον μηδὲ τῶν ἐνδοξοτάτων μηδενὸς μεμνῆσθαι, οἷον Ἴστρου Τανάιδος Βορυσθένους Ὑπάνιος Φάσιδος Θερμώδοντος Ἅλυος· ἔτι δὲ Σκυθῶν μὲν μὴ μεμνῆσθαι, πλάττειν δὲ ἀγαυούς τινας ἱππημολγοὺς καὶ γαλακτοφάγους ἀβίους τε, Παφλαγόνας τε τοὺς ἐν τῇ μεσογαίᾳ ἱστορηκέναι παρὰ τῶν πεζῇ τοῖς τόποις πλησιασάντων, τὴν παραλίαν δὲ ἀγνοεῖν· καὶ εἰκότως γε. ἄπλουν γὰρ εἶναι τότε τὴν θάλατταν ταύτην καὶ καλεῖσθαι Ἄξενον διὰ τὸ δυσχείμερον καὶ τὴν ἀγριότητα τῶν περιοικούντων ἐθνῶν καὶ μάλιστα τῶν Σκυθικῶν, ξενοθυτούντων καὶ σαρκοφαγούντων καὶ τοῖς κρανίοις ἐκπώμασι χρω-
C.299*μένων· ὕστερον δ' Εὔξεινον κεκλῆσθαι τῶν Ἰώνων ἐν τῇ παραλίᾳ πόλεις κτισάντων· ὁμοίως δ' ἀγνοεῖν καὶ τὰ περὶ Αἴγυπτον καὶ Λιβύην, οἷον τὰς ἀναβάσεις τοῦ Νείλου καὶ προσχώσεις τοῦ πελάγους, ὧν οὐδαμοῦ μεμνῆσθαι, οὐδὲ τοῦ ἰσθμοῦ τοῦ μεταξὺ τῆς Ἐρυθρᾶς καὶ τῆς Αἰγυπτίας θαλάττης, οὐδὲ τῶν κατὰ τὴν Ἀραβίαν καὶ Αἰθιοπίαν καὶ τὸν ὠκεανόν, εἰ μὴ Ζήνωνι τῷ φιλοσόφῳ προσεκτέον γράφοντι „Αἰθίοπάς „θ' ἱκόμην καὶ Σιδονίους Ἄραβάς τε.“* οὐ *θαυμαστὸν*

δ' εἶναι περὶ Ὁμήρου· καὶ γὰρ τοὺς ἔτι νεωτέρους ἐκείνου πολλὰ ἀγνοεῖν καὶ τερατολογεῖν, Ἡσίοδον μὲν Ἡμίκυνας λέγοντα καὶ Μεγαλοκεφάλους καὶ Πυγμαίους, Ἀλκμᾶνα δὲ Στεγανόποδας, Αἰσχύλον δὲ κυνοκεφάλους καὶ στερνοφθάλμους καὶ μονομμάτους καὶ ἄλλα μυρία. ἀπὸ δὲ τούτων ἐπὶ τοὺς συγγραφέας βαδίζει Ῥιπαῖα ὄρη λέγοντας καὶ τὸ Ὠγύιον ὄρος καὶ τὴν τῶν Γοργόνων καὶ Ἑσπερίδων κατοικίαν, καὶ τὴν παρὰ Θεοπόμπῳ Μεροπίδα γῆν, παρ' Ἑκαταίῳ δὲ Κιμμερίδα πόλιν, παρ' Εὐημέρῳ δὲ τὴν Παγχαΐαν γῆν, παρ' Ἀριστοτέλει δὲ ποταμίους λίθους ἐξ ἄμμου ... ἐκ δὲ τῶν ὄμβρων τήκεσθαι, ἐν δὲ τῇ Λιβύῃ Διονύσου πόλιν εἶναι, ταύτην δ' οὐκ ἐνδέχεσθαι δὶς τὸν αὐτὸν ἐξευρεῖν. ἐπιτιμᾷ δὲ καὶ τοῖς περὶ Σικελίαν τὴν πλάνην λέγουσι καθ' Ὅμηρον τὴν Ὀδυσσέως· εἰ γὰρ * αὖ χρῆναι τὴν μὲν πλάνην ἐκεῖ γεγονέναι φάσκειν, τὸν δὲ ποιητὴν ἐξωκεανικέναι μυθολογίας χάριν. καὶ τοῖς μὲν ἄλλοις συγγνώμην εἶναι, Καλλιμάχῳ δὲ μὴ πάνυ μεταποιουμένῳ γε γραμματικῆς, ὃς τὴν μὲν Γαῦδον Καλυψοῦς νῆσόν φησι, τὴν δὲ Κόρκυραν Σχερίαν. ἄλλους δ' αἰτιᾶται ψεύσασθαι περὶ Γερήνων καὶ τοῦ Ἀκακησίου καὶ Δήμου ἐν Ἰθάκῃ, Πελεθρονίου δ' ἐν Πηλίῳ, Γλαυκωπίου δ' ἐν Ἀθήναις. τούτοις δὲ μικρά τινα προσθεὶς τοιαῦτα παύεται, τὰ πλεῖστα μετενέγκας παρὰ τοῦ Ἐρατοσθένους, ὡς καὶ πρότερον ἐμνήσθημεν, οὐκ εὖ εἰρημένα. τὸ μὲν γὰρ τοὺς ὕστερον ἐμπειροτέρους γεγονέναι τῶν πάλαι περὶ τὰ τοιαῦτα καὶ Ἐρατοσθένει καὶ τούτῳ δοτέον· τὸ δ' οὕτω πέρα τοῦ μετρίου προάγειν καὶ μάλιστα ἐφ' Ὁμήρου, δοκεῖ μοι κἂν ἐπιπλῆξαί τις δικαίως καὶ τοὐναντίον εἰπεῖν, ὡς περὶ ὧν

5. post μονομμάτους: ἐν τῷ Προμηθεῖ φασι,

C.300 ἀγνοοῦσιν αὐτοί, περὶ τούτων τῷ ποιητῇ προφέρουσι. τὰ μὲν οὖν ἄλλα ἐν τοῖς καθ' ἕκαστα οἰκείας μνήμης τυγχάνει, τὰ δ' ἐν τοῖς καθόλου.

7 Νυνὶ δὲ περὶ Θρᾳκῶν ἐλέγομεν „Μυσῶν τ' ἀγχε„μάχων καὶ ἀγαυῶν ἱππημολγῶν, γλακτοφάγων ἀβί„ων τε, δικαιοτάτων ἀνθρώπων,“ βουλόμενοι συγκρῖναι τά τε ὑφ' ἡμῶν καὶ τὰ ὑπὸ Ποσειδωνίου λεχθέντα καὶ τὰ ὑπὸ τούτων· πρότερον δ' ὅτι τὴν ἐπιχείρησιν ὑπεναντίαν τοῖς προτεθεῖσι πεποίηνται. προὔθεντο μὲν γὰρ διδάξαι διότι τῶν πόρρω τῆς Ἑλλάδος πλείων ἦν ἄγνοια τοῖς πρεσβυτέροις ἢ τοῖς νεωτέροις, ἔδειξαν δὲ τἀναντία, καὶ οὐ [κατὰ] τὰ πόρρω μόνον ἀλλὰ καὶ τὰ ἐν αὐτῇ τῇ Ἑλλάδι. ἀλλ', ὡς ἔφην, τὰ ἄλλα μὲν ὑπερκείσθω, τὰ δὲ νῦν σκοπῶμεν. Σκυθῶν μὲν γὰρ [μὴ] μεμνῆσθαι κατ' ἄγνοιάν φασι, μηδὲ τῆς περὶ τοὺς ξένους ὠμότητος αὐτῶν, καταθυόντων καὶ σαρκοφαγούντων καὶ τοῖς κρανίοις ἐκπώμασι χρωμένων, δι' οὓς Ἄξενος ὠνομάζετο ὁ πόντος, πλάττειν δ' ἀγαυούς τινας ἱππημολγοὺς γαλακτοφάγους ἀβίους τε, δικαιοτάτους ἀνθρώπους, τοὺς οὐδαμοῦ γῆς ὄντας. πῶς οὖν Ἄξενον ὠνόμαζον, εἰ μὴ ᾔδεισαν τὴν ἀγριότητα, μηδ' αὐτοὺς τοὺς μάλιστα τοιούτους; οὗτοι δ' εἰσὶ δήπου οἱ Σκύθαι. πότερον δ' οὐδ' ἱππημολγοὶ ἦσαν οἱ ἐπέκεινα τῶν Μυσῶν καὶ Θρᾳκῶν καὶ Γετῶν, οὐδὲ γαλακτοφάγοι καὶ ἄβιοι; ἀλλὰ καὶ νῦν εἰσιν ἁμάξοικοι καὶ νομάδες καλούμενοι, ζῶντες ἀπὸ θρεμμάτων καὶ γάλακτος καὶ τυροῦ καὶ μάλιστα ἱππείου, θησαυρισμὸν δ' οὐκ εἰδότες οὐδὲ καπηλείαν πλὴν εἰ φόρτον ἀντὶ φόρτου. πῶς οὖν ἠγνόει τοὺς Σκύθας ὁ ποιητής, ἱππημολγοὺς καὶ γαλακτοφάγους τινὰς προσαγορεύων; ὅτι γὰρ οἱ τότε τούτους ἱππημολγοὺς ἐκάλουν, καὶ Ἡσίοδος μάρτυς ἐν τοῖς ὑπ' Ἐρατοσθένους

παρατεθεῖσιν ἔπεσιν „Αἰθίοπας τε Λίγυς τε ἰδὲ Σκύ„θας ἱππημολγούς.“ τί δὲ θαυμαστόν, εἰ διὰ τὸ πλεονάζειν παρ' ἡμῖν τὴν περὶ τὰ συμβόλαια ἀδικίαν δικαιοτάτους εἶπεν ἀνθρώπους τοὺς ἥκιστα ἐν τοῖς συμβολαίοις καὶ τῷ ἀργυρισμῷ ζῶντας, ἀλλὰ καὶ κοινὰ κεκτημένους πάντα πλὴν ξίφους καὶ ποτηρίου, ἐν δὲ τοῖς πρῶτον τὰς γυναῖκας πλατωνικῶς ἔχοντας κοινὰς καὶ τέκνα; καὶ Αἰσχύλος δ' ἐμφαίνει συνηγορῶν τῷ ποιητῇ φήσας περὶ τῶν Σκυθῶν „ἀλλ' ἱππάκης βρωτῆρες C.301 „εὔνομοι Σκύθαι.“ αὕτη δ' ἡ ὑπόληψις καὶ νῦν ἔτι συμμένει παρὰ τοῖς Ἕλλησιν· ἁπλουστάτους τε γὰρ αὐτοὺς νομίζομεν καὶ ἥκιστα κακεντρεχεῖς εὐτελεστέρους τε πολὺ ἡμῶν καὶ αὐταρκεστέρους· καίτοι ὅ γε καθ' ἡμᾶς βίος εἰς πάντας σχεδόν τι διατέτακε τὴν πρὸς τὸ χεῖρον μεταβολήν, τρυφὴν καὶ ἡδονὰς καὶ κακοτεχνίας καὶ πλεονεξίας μυρίας πρὸς ταῦτ' εἰσάγων. πολὺ οὖν τῆς τοιαύτης κακίας καὶ εἰς τοὺς βαρβάρους ἐμπέπτωκε τούς τε ἄλλους καὶ τοὺς νομάδας· καὶ γὰρ θαλάττης ἁψάμενοι χείρους γεγόνασι λῃστεύοντες καὶ ξενοκτονοῦντες, καὶ ἐπιπλεκόμενοι πολλοῖς μεταλαμβάνουσι τῆς ἐκείνων πολυτελείας καὶ καπηλείας· ἃ δοκεῖ μὲν εἰς ἡμερότητα συντείνειν, διαφθείρει δὲ τὰ ἤθη καὶ ποικιλίαν ἀντὶ τῆς ἁπλότητος τῆς ἄρτι λεχθείσης εἰσάγει.

Οἱ μέντοι πρὸ ἡμῶν καὶ μάλιστα οἱ ἐγγὺς τοῖς 8 Ὁμήρου χρόνοις τοιοῦτοί τινες ἦσαν καὶ ὑπελαμβάνοντο παρὰ τοῖς Ἕλλησιν ὁποίους Ὅμηρός φησιν. ὅρα δὲ ἃ λέγει Ἡρόδοτος περὶ τοῦ τῶν Σκυθῶν βασιλέως, ἐφ' ὃν ἐστράτευσε Δαρεῖος, καὶ τὰ ἐπεσταλμένα παρ' αὐτοῦ. ὅρα δὲ καὶ ἃ λέγει Χρύσιππος περὶ τῶν τοῦ Βοσπόρου βασιλέων τῶν περὶ Λεύκωνα. πλήρεις δὲ καὶ αἱ Περσικαὶ ἐπιστολαὶ τῆς ἁπλότητος ἧς λέγω, καὶ τὰ ὑπὸ τῶν Αἰγυπτίων καὶ Βαβυλωνίων καὶ Ἰνδῶν ἀπο-

μνημονευόμενα. διὰ τοῦτο δὲ καὶ ὁ Ἀνάχαρσις καὶ Ἄβαρις καί τινες ἄλλοι τοιοῦτοι παρὰ τοῖς Ἕλλησιν εὐδοκίμουν, ὅτι ἐθνικόν τινα χαρακτῆρα ἐπέφαινον εὐκολίας καὶ λιτότητος καὶ δικαιοσύνης. καὶ τί δεῖ τοὺς πάλαι λέγειν; Ἀλέξανδρος γὰρ ὁ Φιλίππου κατὰ τὴν ἐπὶ Θρᾷκας τοὺς ὑπὲρ τοῦ Αἵμου στρατείαν ἐμβαλὼν εἰς Τριβαλλούς, ὁρῶν μέχρι τοῦ Ἴστρου καθήκοντας καὶ τῆς ἐν αὐτῷ νήσου Πεύκης, τὰ πέραν δὲ Γέτας ἔχοντας, ἀφῖχθαι λέγεται μέχρι δεῦρο, καὶ εἰς μὲν τὴν νῆσον ἀποβῆναι μὴ δύνασθαι σπάνει πλοίων (ἐκεῖσε γὰρ καταφυγόντα τὸν τῶν Τριβαλλῶν βασιλέα Σύρμον ἀντισχεῖν πρὸς τὴν ἐπιχείρησιν), εἰς δὲ τοὺς Γέτας διαβάντα ἑλεῖν αὐτῶν πόλιν καὶ ἀναστρέψαι διὰ ταχέων εἰς τὴν οἰκείαν, λαβόντα δῶρα [παρὰ] τῶν ἐθνῶν καὶ παρὰ τοῦ Σύρμου. φησὶ δὲ Πτολεμαῖος ὁ Λάγου κατὰ ταύτην τὴν στρατείαν συμμῖξαι τῷ Ἀλεξάνδρῳ Κελτοὺς τοὺς περὶ τὸν Ἀδρίαν φιλίας καὶ ξενίας χάριν, δεξάμε-
C.302 νον δὲ αὐτοὺς φιλοφρόνως τὸν βασιλέα ἐρέσθαι παρὰ πότον, τί μάλιστα εἴη ὃ φοβοῖντο, νομίζοντα αὐτὸν ἐρεῖν· αὐτοὺς δ' ἀποκρίνασθαι ὅτι οὐδὲν πλὴν εἰ ἄρα μὴ ὁ οὐρανὸς αὐτοῖς ἐπιπέσοι, φιλίαν γε μὴν ἀνδρὸς τοιούτου περὶ παντὸς τίθεσθαι. ταῦτα δὲ ἁπλότητος τῆς τῶν βαρβάρων ἐστὶ σημεῖα, τοῦ τε μὴ συγχωρήσαντος μὲν τὴν ἀπόβασιν τὴν εἰς τὴν νῆσον, δῶρα δὲ πέμψαντος καὶ συνθεμένου φιλίαν, καὶ τῶν φοβεῖσθαι μὲν οὐδένα φαμένων, φιλίαν δὲ περὶ παντὸς τίθεσθαι μεγάλων ἀνδρῶν. ὅ τε Δρομιχαίτης κατὰ τοὺς διαδόχους ἦν Γετῶν βασιλεύς· ἐκεῖνος τοίνυν λαβὼν ζωγρίᾳ Λυσίμαχον ἐπιστρατεύσαντα αὐτῷ, δείξας τὴν πενίαν τήν τε ἑαυτοῦ καὶ τοῦ ἔθνους, ὁμοίως δὲ καὶ

28. post ἦν: τοὺς Ἀλεξάνδρου

τὴν αὐτάρκειαν, ἐκέλευσε τοῖς τοιούτοις μὴ πολεμεῖν, ἀλλὰ φίλοις χρῆσθαι· ταῦτα δ' εἰπών, ξενίσας καὶ συνθέμενος φιλίαν ἀπέλυσεν αὐτόν.

Ἔφορος δ' ἐν τῇ τετάρτῃ μὲν τῆς ἱστορίας Εὐ- 9
ρώπῃ δ' ἐπιγραφομένῃ βίβλῳ, περιοδεύσας τὴν Εὐρώπην μέχρι Σκυθῶν ἐπὶ τέλει φησὶν εἶναι τῶν τε ἄλλων Σκυθῶν καὶ τῶν Σαυροματῶν τοὺς βίους ἀνομοίους· τοὺς μὲν γὰρ εἶναι χαλεποὺς ὥστε καὶ ἀνθρωποφαγεῖν, τοὺς δὲ καὶ τῶν ἄλλων ζῴων ἀπέχεσθαι. οἱ μὲν οὖν ἄλλοι, φησί, τὰ περὶ τῆς ὠμότητος αὐτῶν λέγουσιν, εἰδότες τὸ δεινόν τε καὶ τὸ θαυμαστὸν ἐκπληκτικὸν ὄν· δεῖν δὲ τἀναντία καὶ λέγειν καὶ παραδείγματα ποιεῖσθαι· καὶ αὐτὸς οὖν περὶ τῶν δικαιοτάτοις ἤθεσι χρωμένων ποιήσεσθαι τοὺς λόγους· εἶναι γάρ τινας τῶν νομάδων Σκυθῶν γάλακτι τρεφομένους ἵππων τῇ τε δικαιοσύνῃ πάντων διαφέρειν· μεμνῆσθαι δ' αὐτῶν τοὺς ποιητάς, Ὅμηρον μὲν „γλακτοφάγων ἀβίων τε, „δικαιοτάτων ἀνθρώπων“ φήσαντα τὴν γῆν καθορᾶν τὸν Δία, Ἡσίοδον δ' ἐν τῇ καλουμένῃ γῆς περιόδῳ τὸν Φινέα ὑπὸ τῶν Ἁρπυιῶν ἄγεσθαι „γλακτοφάγων „εἰς γαῖαν ἀπήναις οἰκί' ἐχόντων.“ εἶτ' αἰτιολογεῖ διότι ταῖς διαίταις εὐτελεῖς ὄντες καὶ οὐ χρηματισταὶ πρός τε ἀλλήλους εὐνομοῦνται, κοινὰ πάντα ἔχοντες τά τε ἄλλα καὶ τὰς γυναῖκας καὶ τέκνα καὶ τὴν ὅλην συγγένειαν, πρός τε τοὺς ἐκτὸς ἄμαχοί εἰσι καὶ ἀνίκη- C.303
τοι, οὐδὲν ἔχοντες ὑπὲρ οὗ δουλεύσουσι. καλεῖ δὲ καὶ Χοιρίλον εἰπόντα ἐν τῇ διαβάσει τῆς σχεδίας ἣν ἔζευξε Δαρεῖος „μηλονόμοι τε Σάκαι, γενεῇ Σκύθαι· αὐτὰρ „ἔναιον Ἀσίδα πυροφόρον· νομάδων γε μὲν ἦσαν ἀποι-

3. post αὐτόν: καὶ Πλάτων δὲ ἐν τῇ πολιτείᾳ τὴν θάλατταν ὡς πονηροδιδάσκαλον φεύγειν οἴεται δεῖν ὅτι πορρωτάτω τοὺς εὖ πολιτευσομένους καὶ μὴ οἰκεῖν ἐπ' αὐτῇ.

„κοι, ἀνθρώπων νομίμων.“ καὶ τὸν Ἀνάχαρσιν δὲ σοφὸν καλῶν ὁ Ἔφορος τούτου τοῦ γένους φησὶν εἶναι· νομισθῆναι δὲ καὶ τῶν ἑπτὰ σοφῶν ἐπ' εὐτελείᾳ σωφροσύνῃ καὶ συνέσει· εὑρήματά τε αὐτοῦ λέγει τά τε ζώπυρα καὶ τὴν ἀμφίβολον ἄγκυραν καὶ τὸν κεραμικὸν τροχόν. ταῦτα δὲ λέγω σαφῶς μὲν εἰδὼς ὅτι καὶ οὗτος αὐτὸς οὐ τἀληθέστατα λέγει περὶ πάντων, καὶ δὴ καὶ τὸ τοῦ Ἀναχάρσιδος· πῶς γὰρ ὁ τροχὸς εὕρημα αὐτοῦ, ὃν οἶδεν Ὅμηρος πρεσβύτερος ὤν; ἀλλ' ἐκεῖνα διασημῆναι βουλόμενος ὅτι κοινῇ τινι φήμῃ καὶ ὑπὸ τῶν παλαιῶν καὶ ὑπὸ τῶν ὑστέρων πεπιστεῦσθαι συνέβαινε τὸ τῶν νομάδων, τοὺς μάλιστα ἀπῳκισμένους ἀπὸ τῶν ἄλλων ἀνθρώπων γαλακτοφάγους τε εἶναι καὶ ἀβίους καὶ δικαιοτάτους, ἀλλ' οὐχ ὑπὸ Ὁμήρου πεπλάσθαι.

10 Περί τε τῶν Μυσῶν δίκαιός ἐστιν ὑποσχεῖν λόγον τῶν ἐν τοῖς ἔπεσι λεγομένων Ἀπολλόδωρος, πότερ' ἡγεῖται καὶ τούτους εἶναι πλάσμα, ὅταν φῇ ὁ ποιητὴς „Μυσῶν τ' ἀγχεμάχων καὶ ἀγαυῶν ἱππημολγῶν,“ ἢ τοὺς ἐν τῇ Ἀσίᾳ δέχεται. τοὺς μὲν οὖν ἐν τῇ Ἀσίᾳ δεχόμενος παρερμηνεύσει τὸν ποιητήν, ὡς προείρηται, πλάσμα [δὲ] λέγων, ὡς μὴ ὄντων ἐν τῇ Θρᾴκῃ Μυσῶν, παρὰ τὰ ὄντα [ἐρεῖ]. ἔτι γὰρ ἐφ' ἡμῶν Αἴλιος Κάτος μετῴκισεν ἐκ τῆς περαίας τοῦ Ἴστρου πέντε μυριάδας σωμάτων παρὰ τῶν Γετῶν, ὁμογλώττου τοῖς Θρᾳξὶν ἔθνους, εἰς τὴν Θρᾴκην· καὶ νῦν οἰκοῦσιν αὐτόθι Μοισοὶ καλούμενοι, ἤτοι καὶ τῶν πρότερον οὕτω καλουμένων, ἐν δὲ τῇ Ἀσίᾳ Μυσῶν μετονομασθέντων, ἢ ὅπερ οἰκειότερόν ἐστι τῇ ἱστορίᾳ καὶ τῇ ἀποφάσει τοῦ ποιητοῦ, τῶν ἐν τῇ Θρᾴκῃ Μυσῶν καλουμένων

---

9. post ὤν: „ὡς δ' ὅτε τις κεραμεὺς τροχὸν ἅρμενον ἐν παλάμῃσι“ καὶ τὰ ἑξῆς.

πρότερον. περὶ μὲν δὴ τούτων ἅλις· ἐπάνειμι δὲ ἐπὶ τὴν ἑξῆς περιήγησιν.

Τῶν δὴ Γετῶν τὰ μὲν παλαιὰ ἀφείσθω, τὰ δ' εἰς 11
ἡμᾶς ἤδη τοιαῦτα ὑπῆρξε. Βοιρεβίστας ἀνὴρ Γέτης, ἐπιστὰς ἐπὶ τὴν τοῦ ἔθνους ἐπιστασίαν, ἀνέλαβε κεκακωμένους τοὺς ἀνθρώπους ὑπὸ συχνῶν πολέμων καὶ τοσοῦτον ἐπῆρεν ἀσκήσει καὶ νήψει καὶ τῷ προσέχειν τοῖς προστάγμασιν, ὥστ' ὀλίγων ἐτῶν μεγάλην ἀρχὴν κα- C.304
τεστήσατο καὶ τῶν ὁμόρων τοὺς πλείστους ὑπέταξε τοῖς Γέταις· ἤδη δὲ καὶ Ῥωμαίοις φοβερὸς ἦν, διαβαίνων ἀδεῶς τὸν Ἴστρον καὶ τὴν Θρᾴκην λεηλατῶν μέχρι Μακεδονίας καὶ τῆς Ἰλλυρίδος, τούς τε Κελτοὺς τοὺς ἀναμεμιγμένους τοῖς τε Θρᾳξὶ καὶ τοῖς Ἰλλυριοῖς ἐξεπόρθησε, Βοίους δὲ καὶ ἄρδην ἠφάνισε τοὺς ὑπὸ Κριτασίρῳ καὶ Ταυρίσκους. πρὸς δὲ τὴν εὐπείθειαν τοῦ ἔθνους συναγωνιστὴν ἔσχε Δεκαίνεον ἄνδρα γόητα, πεπλανημένον κατὰ τὴν Αἴγυπτον καὶ προσημασίας ἐκμεμαθηκότα τινάς, δι' ὧν ὑπεκρίνετο τὰ θεῖα· καὶ δι' ὀλίγου καθίστατο θεός, καθάπερ ἔφαμεν περὶ τοῦ Ζαμόλξεως διηγούμενοι. τῆς δ' εὐπειθείας σημεῖον· ἐπείσθησαν γὰρ ἐκκόψαι τὴν ἄμπελον καὶ ζῆν οἴνου χωρίς. ὁ μὲν οὖν Βοιρεβίστας ἔφθη καταλυθεὶς ἐπαναστάντων αὐτῷ τινων πρὶν ἢ Ῥωμαίους στεῖλαι στρατείαν ἐπ' αὐτόν· οἱ δὲ διαδεξάμενοι τὴν ἀρχὴν εἰς πλείω μέρη διέστησαν. καὶ δὴ καὶ νῦν, ἡνίκα ἔπεμψεν ἐπ' αὐτοὺς στρατείαν ὁ Σεβαστὸς Καῖσαρ, εἰς πέντε μερίδας, τότε δὲ εἰς τέτταρας διεστῶτες ἐτύγχανον· οἱ μὲν οὖν τοιοῦτοι μερισμοὶ πρόσκαιροι καὶ ἄλλοτ' ἄλλοι.

Γέγονε δὲ καὶ ἄλλος τῆς χώρας μερισμὸς συμμέ- 12
νων ἐκ παλαιοῦ· τοὺς μὲν γὰρ Δακοὺς προσαγορεύουσι τοὺς δὲ Γέτας, Γέτας μὲν τοὺς πρὸς τὸν Πόντον κεκλιμένους καὶ πρὸς τὴν ἕω, Δακοὺς δὲ τοὺς εἰς τά-

ναντία πρὸς τὴν Γερμανίαν καὶ τὰς τοῦ Ἴστρου πηγάς, οὓς οἶμαι Δάους καλεῖσθαι τὸ παλαιόν· ἀφ' οὗ καὶ παρὰ τοῖς Ἀττικοῖς ἐπεπόλασε τὰ τῶν οἰκετῶν ὀνόματα Γέται καὶ Δᾶοι. τοῦτο γὰρ πιθανώτερον ἢ ἀπὸ τῶν Σκυθῶν οὓς καλοῦσι Δάας· πόρρω γὰρ ἐκεῖνοι περὶ τὴν Ὑρκανίαν, καὶ οὐκ εἰκὸς ἐκεῖθεν κομίζεσθαι ἀνδράποδα εἰς τὴν Ἀττικήν. ἐξ ὧν γὰρ ἐκομίζετο, ἢ τοῖς ἔθνεσιν ἐκείνοις ὁμωνύμους ἐκάλουν τοὺς οἰκέτας, ὡς Λυδὸν καὶ Σύρον, ἢ τοῖς ἐπιπολάζουσιν ἐκεῖ ὀνόμασι προσηγόρευον, ὡς Μάνην ἢ Μίδαν τὸν Φρύγα, Τίβιον δὲ τὸν Παφλαγόνα. ἐπὶ τοσοῦτον δ' ὑπὸ τοῦ Βοιρεβίστα τὸ ἔθνος ἐξαρθὲν ἐταπεινώθη τελέως ὑπό τε τῶν στάσεων καὶ τῶν Ῥωμαίων· ἱκανοὶ δ' ὅμως εἰσὶν ἔτι καὶ νῦν στέλλειν τέτταρας μυριάδας.

13 Ῥεῖ δὲ δι' αὐτῶν Μάρισος ποταμὸς εἰς τὸν Δανούιον, ᾧ τὰς παρασκευὰς ἀνεκόμιζον οἱ Ῥωμαῖοι τὰς πρὸς τὸν πόλεμον· καὶ γὰρ τοῦ ποταμοῦ τὰ μὲν ἄνω καὶ πρὸς ταῖς πηγαῖς μέρη μέχρι τῶν καταρακτῶν Δανούιον προσηγόρευον, ἃ μάλιστα διὰ τῶν Δακῶν φέ-
C.305 ρεται, τὰ δὲ κάτω μέχρι τοῦ Πόντου τὰ παρὰ τοὺς Γέτας καλοῦσιν Ἴστρον· ὁμόγλωττοι δ' εἰσὶν οἱ Δακοὶ τοῖς Γέταις. παρὰ μὲν οὖν τοῖς Ἕλλησιν οἱ Γέται γνωρίζονται μᾶλλον διὰ τὸ συνεχεῖς τὰς μεταναστάσεις ἐφ' ἑκάτερα τοῦ Ἴστρου ποιεῖσθαι καὶ τοῖς Μοισοῖς ἀναμεμῖχθαι· καὶ τὸ τῶν Τριβαλλῶν δ' ἔθνος, Θρᾳκικὸν ὄν, τὸ αὐτὸ πέπονθε τοῦτο. μεταναστάσεις γὰρ δέδεκται, τῶν πλησιοχώρων εἰς τοὺς ἀσθενεστέρους ἐξαναστάντων, τῶν μὲν ἐκ τῆς περαίας Σκυθῶν καὶ Βασταρνῶν καὶ Σαυροματῶν ἐπικρατούντων πολλάκις, ὥστε καὶ ἐπιδιαβαίνειν τοῖς ἐξελαθεῖσι καὶ καταμένειν τινὰς αὐτῶν ἢ ἐν ταῖς νήσοις ἢ ἐν τῇ Θρᾴκῃ· τῶν δ' ἐκ θατέρου μέρους ὑπ' Ἰλλυριῶν μάλιστα κα-

τισχυομένων. αὐξηθέντες δ' οὖν ἐπὶ πλεῖστον οἵ τε Γέται οἵ τε Δακοί, ὥστε καὶ εἰκοσιμυριάδας ἐκπέμπειν στρατείας, νῦν ὅσον εἰς τέτταρας μυριάδας συνεσταλμένοι τυγχάνουσι, καὶ ἐγγὺς μὲν ἥκουσι τοῦ ὑπακούειν Ῥωμαίων, οὔπω δ' εἰσὶν ὑποχείριοι τελέως διὰ τὰς ἐκ τῶν Γερμανῶν ἐλπίδας πολεμίων ὄντων τοῖς Ῥωμαίοις.

14 Μεταξὺ δὲ τῆς Ποντικῆς θαλάττης τῆς ἀπὸ Ἴστρου ἐπὶ Τύραν καὶ ἡ τῶν Γετῶν ἐρημία πρόκειται πεδιὰς πᾶσα καὶ ἄνυδρος, ἐν ᾗ Δαρεῖος ἀποληφθεὶς ὁ Ὑστάσπεω, καθ' ὃν καιρὸν διέβη τὸν Ἴστρον ἐπὶ τοὺς Σκύθας, ἐκινδύνευσε πανστρατιᾷ δίψῃ διαλυθῆναι· συνῆκε δ' ὀψὲ καὶ ἀνέστρεψε. Λυσίμαχος δ' ὕστερον στρατεύσας ἐπὶ Γέτας καὶ τὸν βασιλέα Δρομιχαίτην οὐκ ἐκινδύνευσε μόνον, ἀλλὰ καὶ ἑάλω ζωγρίᾳ· πάλιν δ' ἐσώθη τυχὼν εὐγνώμονος τοῦ βαρβάρου, καθάπερ εἶπον πρότερον.

15 Πρὸς δὲ ταῖς ἐκβολαῖς μεγάλη νῆσός ἐστιν ἡ Πεύκη· κατασχόντες δ' αὐτὴν Βαστάρναι Πευκῖνοι προσηγορεύθησαν· εἰσὶ δὲ καὶ ἄλλαι νῆσοι πολὺ ἐλάττους, αἱ μὲν ἀνωτέρω ταύτης αἱ δὲ πρὸς τῇ θαλάττῃ. ἑπτάστομος γάρ ἐστι· μέγιστον δὲ τὸ ἱερὸν στόμα καλούμενον, δι' οὗ σταδίων ἀνάπλους ἐπὶ τὴν Πεύκην ἑκατὸν εἴκοσιν, ἧς κατὰ τὸ κάτω μέρος ἐποίησε τὸ ζεῦγμα Δαρεῖος· δύναιτο δ' ἂν ζευχθῆναι καὶ κατὰ τὸ ἄνω. τοῦτο δὲ καὶ πρῶτόν ἐστι στόμα ἐν ἀριστερᾷ εἰσπλέοντι εἰς τὸν Πόντον· τὰ δ' ἑξῆς ἐν παράπλῳ τῷ ἐπὶ τὸν Τύραν· διέχει δ' ἀπ' αὐτοῦ τὸ ἕβδομον στόμα περὶ τριακοσίους σταδίους. γίνονται οὖν μεταξὺ τῶν στομάτων νησῖδες. τὰ μὲν δὴ τρία στόματα τὰ ἐφεξῆς τῷ ἱερῷ στόματί ἐστι μικρά, τὰ δὲ λοιπὰ τοῦ μὲν πολὺ ἐλάττονα τῶν δὲ μείζονα· Ἔφορος δὲ πεντάστομον

εἴρηκε τὸν Ἴστρον. ἐντεῦθεν δ' ἐπὶ Τύραν ποταμὸν
C.306 πλωτὸν ἐνακόσιοι στάδιοι· ἐν δὲ τῷ μεταξὺ δύο λίμναι μεγάλαι, ἡ μὲν ἀνεῳγμένη πρὸς τὴν θάλατταν ὥστε καὶ λιμένι χρῆσθαι, ἡ δ' ἄστομος.

16 Ἐπὶ δὲ τῷ στόματι τοῦ Τύρα πύργος ἐστὶ Νεοπτολέμου καλούμενος καὶ κώμη Ἑρμώνακτος λεγομένη. ἀναπλεύσαντι δὲ ἑκατὸν τετταράκοντα σταδίους ἐφ' ἑκάτερα πόλεις, ἡ μὲν Νικωνία ἡ δ' ἐν ἀριστερᾷ Ὀφιοῦσσα· οἱ δὲ προσοικοῦντες τῷ ποταμῷ * πόλιν φασὶν ἀνιόντι ἑκατὸν καὶ εἴκοσι σταδίους. διέχει δὲ τοῦ στόματος ἡ νῆσος ἡ Λευκὴ δίαρμα πεντακοσίων σταδίων, ἱερὰ τοῦ Ἀχιλλέως, πελαγία.

17 Εἶτα Βορυσθένης ποταμὸς πλωτὸς ἐφ' ἑξακοσίους σταδίους καὶ πλησίον ἄλλος ποταμὸς Ὕπανις καὶ νῆσος πρὸ τοῦ στόματος τοῦ Βορυσθένους ἔχουσα λιμένα. πλεύσαντι δὲ τὸν Βορυσθένη σταδίους διακοσίους ὁμώνυμος τῷ ποταμῷ πόλις· ἡ δ' αὐτὴ καὶ Ὀλβία καλεῖται, μέγα ἐμπόριον, κτίσμα Μιλησίων. ἡ δὲ ὑπερκειμένη πᾶσα χώρα τοῦ λεχθέντος μεταξὺ Βορυσθένους καὶ Ἴστρου πρώτη μέν ἐστιν ἡ τῶν Γετῶν ἐρημία, ἔπειτα οἱ Τυρεγέται, μεθ' οὓς οἱ Ἰάζυγες Σαρμάται καὶ οἱ Βασίλειοι λεγόμενοι καὶ * Οὖργοι, τὸ μὲν πλέον νομάδες, ὀλίγοι δὲ καὶ γεωργίας ἐπιμελούμενοι· τούτους φασὶ καὶ παρὰ τὸν Ἴστρον οἰκεῖν, ἐφ' ἑκάτερα πολλάκις. ἐν δὲ τῇ μεσογαίᾳ Βαστάρναι μὲν τοῖς Τυρεγέταις ὅμοροι καὶ Γερμανοῖς, σχεδόν τι καὶ αὐτοὶ τοῦ Γερμανικοῦ γένους ὄντες, εἰς πλείω φῦλα διῃρημένοι. καὶ γὰρ Ἄτμονοι λέγονταί τινες καὶ Σιδόνες, οἱ δὲ τὴν Πεύκην κατασχόντες τὴν ἐν τῷ Ἴστρῳ νῆσον Πευκῖνοι, Ῥωξολανοὶ δ' ἀρκτικώτατοι τὰ μεταξὺ τοῦ Τανάιδος καὶ Βορυσθένους νεμόμενοι πεδία. ἡ γὰρ προσάρκτιος πᾶσα ἀπὸ Γερμανίας μέχρι τῆς Κασπίας

πεδιάς ἐστιν, ἣν ἴσμεν· ὑπὲρ δὲ τῶν Ῥωξολανῶν εἴ τινες οἰκοῦσιν οὐκ ἴσμεν. οἱ δὲ Ῥωξολανοὶ καὶ πρὸς τοὺς Μιθριδάτου τοῦ Εὐπάτορος στρατηγοὺς ἐπολέμουν ἔχοντες ἡγεμόνα Τάσιον· ἧκον δὲ Παλάκῳ συμμαχήσοντες τῷ Σκιλούρου, καὶ ἐδόκουν μὲν εἶναι μάχιμοι, πρὸς μέντοι συντεταγμένην φάλαγγα καὶ ὡπλισμένην καλῶς τὸ βάρβαρον φῦλον ἀσθενὲς πᾶν ἐστι καὶ τὸ γυμνητικόν. ἐκεῖνοι γοῦν περὶ πέντε μυριάδας πρὸς ἑξακισχιλίους τοὺς Διοφάντῳ, τῷ τοῦ Μιθριδάτου στρατηγῷ, συμπαραταξαμένους οὐκ ἀντέσχον, ἀλλ' οἱ πλεῖστοι διεφθάρησαν. χρῶνται δὲ ὠμοβοΐνοις κράνεσι καὶ θώραξι, γερροφόροι, ἀμυντήρια δ' ἔχοντες καὶ λόγχας καὶ τόξον καὶ ξίφος· τοιοῦτοι δὲ καὶ τῶν ἄλλων οἱ πλείους. τῶν δὲ νομάδων αἱ σκηναὶ πιλωταὶ C.307 πεπήγασιν ἐπὶ ταῖς ἁμάξαις, ἐν αἷς διαιτῶνται· περὶ δὲ τὰς σκηνὰς τὰ βοσκήματα, ἀφ' ὧν τρέφονται καὶ γάλακτι καὶ τυρῷ καὶ κρέασιν· ἀκολουθοῦσι δὲ ταῖς νομαῖς μεταλαμβάνοντες τόπους ἀεὶ τοὺς ἔχοντας πόαν, χειμῶνος μὲν ἐν τοῖς ἕλεσι τοῖς περὶ τὴν Μαιῶτιν, θέρους δὲ καὶ ἐν τοῖς πεδίοις.

18 Ἅπασα δ' ἡ χώρα δυσχείμερός ἐστι μέχρι τῶν ἐπὶ θαλάττῃ τόπων τῶν μεταξὺ Βορυσθένους καὶ τοῦ στόματος τῆς Μαιώτιδος· αὐτῶν δὲ τῶν ἐπὶ θαλάττῃ τὰ ἀρκτικώτατα τό τε στόμα τῆς Μαιώτιδος καὶ ἔτι μᾶλλον τὸ τοῦ Βορυσθένους [καὶ] ὁ μυχὸς τοῦ Ταμυράκου κόλπου, [τοῦ] καὶ Καρκινίτου, καθ' ὃν ὁ ἰσθμὸς τῆς μεγάλης χερρονήσου. δηλοῖ δὲ τὰ ψύχη, καίπερ ἐν πεδίοις οἰκούντων· ὄνους τε γὰρ οὐ τρέφουσι (δύσριγον γὰρ τὸ ζῷον), οἵ τε βόες οἱ μὲν ἄκερῳ γεννῶνται, τῶν δ' ἀπορρινῶσι τὰ κέρατα (καὶ γὰρ τοῦτο δύσριγον τὸ μέρος), οἵ τε ἵπποι μικροί, τὰ δὲ πρόβατα μεγάλα· ῥήττονται δὲ χαλκαῖ ὑδρίαι, τὰ δ' ἐνόντα συμπήττεται.

τῶν δὲ πάγων ἡ σφοδρότης μάλιστα ἐκ τῶν συμβαινόντων περὶ τὸ στόμα τῆς Μαιώτιδος δῆλός ἐστιν. ἁμαξεύεται γὰρ ὁ διάπλους ὁ εἰς Φαναγόρειαν ἐκ τοῦ Παντικαπαίου, ὥστε καὶ πλοῦν εἶναι καὶ ὁδόν· Νεοπτόλεμον δέ φασι τὸν τοῦ Μιθριδάτου στρατηγὸν ἐν τῷ αὐτῷ πόρῳ θέρους μὲν ναυμαχίᾳ περιγενέσθαι τῶν βαρβάρων, χειμῶνος δ' ἱππομαχίᾳ. ὀρυκτοί τέ εἰσιν ἰχθύες οἱ ἀποληφθέντες ἐν τῷ κρυστάλλῳ τῇ προσαγορευομένῃ γαγγάμῃ, καὶ μάλιστα οἱ ἀντακαῖοι, δελφῖσι πάρισοι τὸ μέγεθος. φασὶ δὲ καὶ τὴν ἄμπελον ἐν τῷ Βοσπόρῳ κατορύττεσθαι χειμῶνος, ἐπαμώντων πολὺ τῆς γῆς. λέγεται δὲ καὶ τὰ καύματα σφοδρὰ γίνεσθαι, τάχα μὲν τῶν σωμάτων ἀηθιζομένων, τάχα δὲ τῶν πεδίων ἀνηνεμούντων τότε, ἢ καὶ τοῦ πάχους τοῦ ἀέρος ἐκθερμαινομένου πλέον, καθάπερ ἐν τοῖς νέφεσιν οἱ παρήλιοι ποιοῦσιν. Ἀτέας δὲ δοκεῖ τῶν πλείστων ἄρξαι τῶν ταύτῃ βαρβάρων ὁ πρὸς Φίλιππον πολεμήσας τὸν Ἀμύντου.

19 Μετὰ δὲ τὴν πρὸ τοῦ Βορυσθένους νῆσον ἑξῆς πρὸς ἀνίσχοντα ἥλιον ὁ πλοῦς ἐπὶ ἄκραν τὴν τοῦ Ἀχιλλείου δρόμου, ψιλὸν μὲν χωρίον καλούμενον δ' ἄλσος, ἱερὸν Ἀχιλλέως· εἶθ' ὁ Ἀχίλλειος δρόμος, ἀλιτενὴς χερρόνησος· ἔστι γὰρ ταινία τις ὅσον χιλίων σταδίων μῆκος ἐπὶ τὴν ἕω, πλάτος δὲ τὸ μέγιστον δυεῖν σταδίων, ἐλάχιστον τεττάρων πλέθρων, διέχουσα τῆς ἑκατέρωθεν τοῦ αὐχένος ἠπείρου σταδίους ἑξήκοντα,
C.308 ἀμμώδης, ὕδωρ ἔχουσα ὀρυκτόν· κατὰ μέσην δ' ὁ τοῦ ἰσθμοῦ αὐχὴν ὅσον τετταράκοντα σταδίων· τελευτᾷ δὲ πρὸς ἄκραν ἣν Ταμυράκην καλοῦσιν, ἔχουσαν ὕφορμον βλέποντα πρὸς τὴν ἤπειρον· μεθ' ἣν ὁ Καρκινίτης κόλπος εὐμεγέθης, ἀνέχων πρὸς τὰς ἄρκτους ὅσον ἐπὶ σταδίους χιλίους, οἱ δὲ καὶ τριπλασίους φασὶ

μέχρι τοῦ μυχοῦ ..... καλοῦνται δὲ Τάφριοι. τὸν δὲ κόλπον καὶ Ταμυράκην καλοῦσιν ὁμωνύμως τῇ ἄκρᾳ.

4 Ἐνταῦθα δ' ἐστὶν ὁ ἰσθμὸς ὁ διείργων τὴν σαπρὰν λεγομένην λίμνην ἀπὸ τῆς θαλάττης σταδίων [ὧν] τετταράκοντα καὶ ποιῶν τὴν Ταυρικὴν καὶ Σκυθικὴν λεγομένην χερρόνησον· οἱ δὲ τριακοσίων ἑξήκοντα τὸ πλάτος τοῦ ἰσθμοῦ φασιν. ἡ δὲ σαπρὰ λίμνη σταδίων μὲν καὶ τετρακισχιλίων λέγεται, μέρος δ' ἐστὶ τῆς Μαιώτιδος τὸ πρὸς δύσιν· συνεστόμωται γὰρ αὐτῇ στόματι μεγάλῳ. ἑλώδης δ' ἐστὶ σφόδρα καὶ ῥαπτοῖς πλοίοις μόγις πλόϊμος· οἱ γὰρ ἄνεμοι τὰ τενάγη ῥᾳδίως ἀνακαλύπτουσιν, εἶτα πάλιν πληροῦσιν, ὥστε τὰ ἕλη τοῖς μείζοσι σκάφεσιν οὐ περάσιμά ἐστιν. ἔχει δ' ὁ κόλπος νησίδια τρία καὶ προσβραχῆ τινα καὶ χοιραδώδη ὀλίγα κατὰ τὸν παράπλουν.

2 Ἐκπλέοντι δ' ἐν ἀριστερᾷ πολίχνη καὶ *ἄλλος λιμὴν Χερρονησιτῶν. ἔκκειται γὰρ ἐπὶ τὴν μεσημβρίαν ἄκρα μεγάλη κατὰ τὸν παράπλουν ἐφεξῆς, μέρος οὖσα τῆς ὅλης χερρονήσου, ἐφ' ᾗ ἵδρυται πόλις Ἡρακλεωτῶν ἄποικος τῶν ἐν τῷ Πόντῳ, αὐτὸ τοῦτο καλουμένη Χερρόνησος, διέχουσα τοῦ Τύρα παράπλουν σταδίων τετρακισχιλίων τετρακοσίων· ἐν ᾗ τὸ τῆς Παρθένου ἱερόν, δαίμονός τινος, ἧς ἐπώνυμος καὶ ἡ ἄκρα ἡ πρὸ τῆς πόλεώς ἐστιν ἐν σταδίοις ἑκατόν, καλουμένη Παρθένιον, ἔχον νεὼν τῆς δαίμονος καὶ ξόανον. μεταξὺ δὲ τῆς πόλεως καὶ τῆς ἄκρας λιμένες τρεῖς· εἶθ' ἡ παλαιὰ Χερρόνησος κατεσκαμμένη καὶ μετ' αὐτὴν λιμὴν στενόστομος, καθ' ὃν μάλιστα οἱ Ταῦροι, Σκυθικὸν ἔθνος, τὰ ληστήρια συνίσταντο τοῖς καταφεύγουσιν ἐπ' αὐτὸν ἐπιχειροῦντες· καλεῖται δὲ συμβόλων λιμήν. οὗτος δὲ ποιεῖ πρὸς ἄλλον λιμένα Κτενοῦντα καλούμενον τετταράκοντα σταδίων ἰσθμόν· οὗτος δ' ἐστὶν ὁ ἰσθμὸς ὁ

κλείων τὴν μικρὰν χερρόνησον, ἣν ἔφαμεν τῆς μεγάλης χερρονήσου μέρος, ἔχουσαν ἐν αὐτῇ τὴν ὁμωνύμως λεγομένην πόλιν Χερρόνησον.

3 *Αὕτη δ' ἦν πρότερον αὐτόνομος, πορθουμένη δὲ ὑπὸ τῶν βαρβάρων ἠναγκάσθη προστάτην ἑλέσθαι*
C.309 *Μιθριδάτην τὸν Εὐπάτορα, στρατηγιῶντα ἐπὶ τοὺς ὑπὲρ τοῦ ἰσθμοῦ μέχρι Βορυσθένους βαρβάρους· ταῦτα δ' ἦν ἐπὶ Ῥωμαίους παρασκευή. ἐκεῖνος μὲν οὖν κατὰ ταύτας τὰς ἐλπίδας ἄσμενος πέμψας εἰς τὴν Χερρόνησον στρατιὰν ἅμα πρός τε τοὺς Σκύθας ἐπολέμει Σκίλουρόν τε καὶ τοὺς Σκιλούρου παῖδας τοὺς περὶ Πάλακον, οὓς Ποσειδώνιος μὲν πεντήκοντά φησιν Ἀπολλωνίδης δὲ ὀγδοήκοντα· ἅμα δὲ τούτους τε ἐχειρώσατο βίᾳ καὶ Βοσπόρου κατέστη κύριος παρ' ἑκόντος λαβὼν Παιρισάδου τοῦ κατέχοντος. ἐξ ἐκείνου δὴ τοῦ χρόνου τοῖς τοῦ Βοσπόρου δυνάσταις ἡ τῶν Χερρονησιτῶν πόλις ὑπήκοος μέχρι νῦν ἐστι. τὸ δ' ἴσον ὁ Κτενοῦς διέχει τῆς τε τῶν Χερρονησιτῶν πόλεως καὶ τοῦ συμβόλων λιμένος. μετὰ δὲ τὸν συμβόλων λιμένα μέχρι Θεοδοσίας πόλεως ἡ Ταυρικὴ παραλία, χιλίων που σταδίων τὸ μῆκος, τραχεῖα καὶ ὀρεινὴ καὶ καταιγίζουσα τοῖς βορέαις ἵδρυται. πρόκειται δ' αὐτῆς ἄκρα πολὺ πρὸς τὸ πέλαγος καὶ τὴν μεσημβρίαν ἐκκειμένη κατὰ Παφλαγονίαν καὶ Ἄμαστριν πόλιν, καλεῖται δὲ Κριοῦ μέτωπον. ἀντίκειται δ' αὐτῇ τὸ τῶν Παφλαγόνων ἀκρωτήριον ἡ Κάραμβις τὸ διαιροῦν εἰς πελάγη δύο τὸν Εὔξεινον πόντον τῷ ἑκατέρωθεν σφιγγομένῳ πορθμῷ. διέστηκε δ' ἡ Κάραμβις τῆς μὲν τῶν Χερρονησιτῶν πόλεως σταδίους δισχιλίους καὶ πεντακοσίους, τοῦ δὲ Κριοῦ μετώπου πολὺ ἐλάττους τὸν ἀριθμόν·*

---

7. post βαρβάρους: *καὶ τοῦ Ἀδρίου·*

συχνοὶ γοῦν τῶν διαπλευσάντων τὸν πορθμὸν ἅμα φασὶν ἰδεῖν ἀμφοτέρας ἑκατέρωθεν τὰς ἄκρας. ἐν δὲ τῇ ὀρεινῇ τῶν Ταύρων καὶ τὸ ὄρος ἐστὶν ὁ Τραπεζοῦς, ὁμώνυμον τῇ πόλει τῇ περὶ τὴν Τιβαρανίαν καὶ τὴν Κολχίδα· καὶ ἄλλο δ' ἐστὶν ὄρος Κιμμέριον κατὰ τὴν αὐτὴν ὀρεινήν, δυναστευσάντων ποτὲ τῶν Κιμμερίων ἐν τῷ Βοσπόρῳ· καθ' ὃ καὶ Κιμμερικὸς Βόσπορος καλεῖται τοῦ πορθμοῦ πᾶν ὃ ἐπέχει τὸ στόμα τῆς Μαιώτιδος.

4 *Μετὰ δὲ τὴν ὀρεινὴν τὴν λεχθεῖσαν ἡ Θεοδοσία κεῖται πόλις, πεδίον εὔγεων ἔχουσα καὶ λιμένα ναυσὶ καὶ ἑκατὸν ἐπιτήδειον· οὗτος δὲ ὅρος ἦν πρότερον τῆς τῶν Βοσποριανῶν καὶ Ταύρων γῆς· καὶ ἡ ἑξῆς δ' ἐστὶν εὔγεως χώρα μέχρι Παντικαπαίου, τῆς μητροπόλεως τῶν Βοσποριανῶν ἱδρυμένης ἐπὶ τῷ στόματι τῆς Μαιώτιδος. ἔστι δὲ τὸ μεταξὺ τῆς Θεοδοσίας καὶ τοῦ Παντικαπαίου σταδίων περὶ πεντακοσίων καὶ τριάκοντα, χώρα πᾶσα σιτοφόρος, κώμας ἔχουσα καὶ πόλιν εὐλίμενον τὸ Νύμφαιον καλούμενον. τὸ δὲ Παντικάπαιον λόφος ἐστὶ πάντῃ περιοικούμενος ἐν κύκλῳ σταδίων εἴκοσι· πρὸς ἕω δ' ἔχει λιμένα καὶ νεώρια ὅσον τριάκοντα νεῶν, ἔχει δὲ καὶ ἀκρόπολιν· κτίσμα δ' ἐστὶ* C.310 *Μιλησίων. ἐμοναρχεῖτο δὲ πολὺν χρόνον ὑπὸ δυναστῶν τῶν περὶ Λεύκωνα καὶ Σάτυρον καὶ Παιρισάδην αὕτη τε καὶ αἱ πλησιόχωροι κατοικίαι πᾶσαι αἱ περὶ τὸ στόμα τῆς Μαιώτιδος ἑκατέρωθεν μέχρι Παιρισάδου τοῦ Μιθριδάτῃ παραδόντος τὴν ἀρχήν. ἐκαλοῦντο δὲ τύραννοι, καίπερ οἱ πλείους ἐπιεικεῖς γεγονότες, ἀρξάμενοι ἀπὸ Παιρισάδου καὶ Λεύκωνος. Παιρισάδης δὲ καὶ θεὸς νενόμισται· τούτῳ δὲ ὁμώνυμος καὶ ὁ ὕστατος, ὃς οὐχ οἷός τε ὢν ἀντέχειν πρὸς τοὺς βαρβάρους φόρον πραττομένους μείζω τοῦ πρότερον Μιθριδάτῃ*

τῷ Εὐπάτορι παρέδωκε τὴν ἀρχήν· ἐξ ἐκείνου δ' ἡ βασιλεία γεγένηται Ῥωμαίοις ὑπήκοος. τὸ μὲν οὖν πλέον αὐτῆς μέρος ἐστὶν ἐπὶ τῆς Εὐρώπης, μέρος δέ τι καὶ ἐπὶ τῆς Ἀσίας.

Τὸ δὲ στόμα τῆς Μαιώτιδος καλεῖται μὲν Κιμμερικὸς Βόσπορος, ἄρχεται δὲ ἀπὸ μείζονος πλάτους ἑβδομήκοντά που σταδίων· καθ' ὃ διαίρουσιν ἐκ τῶν περὶ Παντικάπαιον τόπων εἰς τὴν ἐγγυτάτω πόλιν τῆς Ἀσίας τὴν Φαναγόρειαν· τελευτᾷ δ' εἰς πολὺ στενώτερον πορθμόν. διαιρεῖ δ' ὁ στενωπὸς οὗτος τὴν Ἀσίαν ἀπὸ τῆς Εὐρώπης καὶ ὁ Τάναϊς ποταμός, καταντικρὺ ῥέων ἀπὸ τῶν ἄρκτων εἴς τε τὴν λίμνην καὶ τὸ στόμα αὐτῆς· δύο δ' ἔχει τὰς εἰς τὴν λίμνην ἐκβολὰς διεχούσας ἀλλήλων ὅσον σταδίους ἑξήκοντα. ἔστι δὲ καὶ πόλις ὁμώνυμος τῷ ποταμῷ, μέγιστον τῶν βαρβάρων ἐμπόριον μετὰ τὸ Παντικάπαιον. ἐν ἀριστερᾷ δ' εἰσπλέοντι τὸν Κιμμερικὸν Βόσπορον πολίχνιόν ἐστι Μυρμήκιον ἐν εἴκοσι σταδίοις ἀπὸ τοῦ Παντικαπαίου. τοῦ δὲ Μυρμηκίου διπλάσιον διέχει κώμη Παρθένιον, καθ' ἣν στενώτατος ὁ εἴσπλους ἐστὶν ὅσον εἴκοσι σταδίων, ἔχων ἀντικειμένην ἐν τῇ Ἀσίᾳ κώμην Ἀχίλλειον καλουμένην. ἐντεῦθεν δ' εὐθυπλοίᾳ μὲν ἐπὶ τὸν Τάναϊν καὶ τὴν κατὰ τὰς ἐκβολὰς νῆσον στάδιοι δισχίλιοι διακόσιοι, μικρὸν δ' ὑπερβάλλει τοῦ ἀριθμοῦ τούτου πλέοντι παρὰ τὴν Ἀσίαν· πλέον δ' ἢ τριπλάσιον ἐν ἀριστερᾷ πλέοντι μέχρι τοῦ Τανάιδος, ἐν ᾧ παράπλῳ καὶ ὁ ἰσθμὸς ἵδρυται. οὗτος μὲν οὖν ὁ παράπλους ἔρημος πᾶς ὁ παρὰ τὴν Εὐρώπην, ὁ δ' ἐν δεξιᾷ οὐκ ἔρημος· ὁ δὲ σύμπας τῆς λίμνης κύκλος ἐνακισχιλίων ἱστορεῖται σταδίων. ἡ δὲ μεγάλη χερρόνησος τῇ Πελοποννήσῳ προσέοικε καὶ τὸ σχῆμα καὶ τὸ μέγεθος. ἔχουσι δ' αὐτὴν οἱ τοῦ Βοσπόρου δυνάσται κεκακωμένην πᾶ-

σαν ὑπὸ τῶν συνεχῶν πολέμων. πρότερον δ' εἶχον ὀλίγην μὲν τὴν πρὸς τῷ στόματι τῆς Μαιώτιδος καὶ τῷ Παντικαπαίῳ μέχρι Θεοδοσίας τῶν Βοσπορίων τύ- C.311
ραννοι, τὴν δὲ πλείστην μέχρι τοῦ ἰσθμοῦ καὶ τοῦ κόλπου τοῦ Καρκινίτου Ταῦροι, Σκυθικὸν ἔθνος· καὶ ἐκαλεῖτο ἡ χώρα πᾶσα αὕτη, σχεδὸν δέ τι καὶ ἡ ἔξω τοῦ ἰσθμοῦ μέχρι Βορυσθένους, μικρὰ Σκυθία· διὰ δὲ τὸ πλῆθος τῶν ἐνθένδε περαιουμένων τόν τε Τύραν καὶ τὸν Ἴστρον καὶ ἐποικούντων τὴν γῆν καὶ ταύτης οὐκ ὀλίγη μικρὰ προσηγορεύθη Σκυθία, τῶν Θρᾳκῶν τὰ μὲν τῇ βίᾳ συγχωρούντων τὰ δὲ τῇ κακίᾳ τῆς χώρας· ἑλώδης γάρ ἐστιν ἡ πολλὴ αὐτῆς.

Τῆς δὲ χερρονήσου, πλὴν τῆς ὀρεινῆς τῆς ἐπὶ τῇ 6
θαλάττῃ μέχρι Θεοδοσίας, ἥ γε ἄλλη πεδιὰς καὶ εὔγεως ἐστι πᾶσα, σίτῳ δὲ καὶ σφόδρα εὐτυχής, τριακοντάχουν ἀποδιδοῦσα διὰ τοῦ τυχόντος ὀρυκτοῦ σχιζομένη. φόρον τε ἐτέλουν ὀκτωκαίδεκα μυριάδας μεδίμνων Μιθριδάτῃ, τάλαντα δ' ἀργυρίου διακόσια σὺν τοῖς Ἀσιανοῖς χωρίοις τοῖς περὶ τὴν Σινδικήν. κἀν τοῖς πρόσθεν χρόνοις ἐντεῦθεν ἦν τὰ σιτοπομπεῖα τοῖς Ἕλλησι, καθάπερ ἐκ τῆς λίμνης αἱ ταριχεῖαι. Λεύκωνα δέ φασιν ἐκ τῆς Θεοδοσίας Ἀθηναίοις πέμψαι μυριάδας μεδίμνων διακοσίας καὶ δέκα. οἱ δ' αὐτοὶ οὗτοι καὶ γεωργοὶ ἐκαλοῦντο ἰδίως διὰ τὸ τοὺς ὑπερκειμένους νομάδας εἶναι, τρεφομένους κρέασιν ἄλλοις τε καὶ ἱππείοις, ἱππείῳ δὲ καὶ τυρῷ καὶ γάλακτι καὶ ὀξυγάλακτι (τοῦτο δὲ καὶ ὄψημά ἐστιν αὐτοῖς κατασκευασθέν πως)· διόπερ ὁ ποιητὴς ἅπαντας εἴρηκε τοὺς ταύτῃ γαλακτοφάγους. οἱ μὲν οὖν νομάδες πολεμισταὶ μᾶλλόν εἰσιν ἢ ληστρικοί, πολεμοῦσι δὲ ὑπὲρ τῶν φόρων. ἐπιτρέψαντες γὰρ ἔχειν τὴν γῆν τοῖς ἐθέλουσι γεωργεῖν ἀντὶ ταύτης ἀγαπῶσι φόρους λαμβάνοντες τοὺς

συντεταγμένους μετρίους τινάς, οὐκ εἰς περιουσίαν ἀλλ' εἰς τὰ ἐφήμερα καὶ τὰ ἀναγκαῖα τοῦ βίου· μὴ διδόντων δὲ αὐτοῖς πολεμοῦσιν. οὕτω δὲ καὶ δικαίους ἅμα καὶ ἀβίους ὁ ποιητὴς εἴρηκε τοὺς αὐτοὺς τούτους ἄνδρας, ἐπεὶ τῶν γε φόρων ἀπευτακτουμένων οὐδ' ἂν καθίσταντο εἰς πόλεμον. οὐκ ἀπευτακτοῦσι δ' οἱ δυνάμει πεποιθότες, ὥστε ἢ ἀμύνασθαι ῥαδίως ἐπιόντας ἢ κωλῦσαι τὴν ἔφοδον· καθάπερ Ἄσανδρον ποιῆσαί φησιν Ὑψικράτης, ἀποτειχίσαντα τὸν ἰσθμὸν τῆς χερρονήσου τὸν πρὸς τῇ Μαιώτιδι τριακοσίων ὄντα καὶ ἑξήκοντα σταδίων, ἐπιστήσαντα πύργους, καθ' ἕκαστον στάδιον ἕνα. οἱ δὲ γεωργοὶ ταύτῃ μὲν ἡμερώτεροί τε ἅμα καὶ πολιτικώτεροι νομίζονται εἶναι, χρηματισταὶ δ' ὄντες καὶ θαλάττης ἁπτόμενοι ληστηρίων
C.312 οὐκ ἀπέχονται, οὐδὲ τῶν τοιούτων ἀδικιῶν καὶ πλεονεξιῶν.

7 Πρὸς δὲ τοῖς καταριθμηθεῖσι τόποις ἐν τῇ χερρονήσῳ καὶ τὰ φρούρια ὑπῆρξεν, ἃ κατεσκεύασε Σκίλουρος καὶ οἱ παῖδες, οἷσπερ καὶ ὁρμητηρίοις ἐχρῶντο πρὸς τοὺς Μιθριδάτου στρατηγούς, Παλάκιόν τε καὶ Χάβον καὶ Νεάπολις· ἦν δὲ καὶ Εὐπατόριόν τι, κτίσαντος Διοφάντου, [τοῦ] Μιθριδάτου στρατηγοῦ. ἔστι δ' ἄκρα διέχουσα τοῦ τῶν Χερρονησιτῶν τείχους ὅσον πεντεκαίδεκα σταδίους, κόλπον ποιοῦσα εὐμεγέθη νεύοντα πρὸς τὴν πόλιν· τούτου δ' ὑπέρκειται λιμνοθάλαττα ἁλοπήγιον ἔχουσα· ἐνταῦθα δὲ καὶ ὁ Κτενοῦς ἦν. ἵν' οὖν ἀντέχοιεν, οἱ βασιλικοὶ πολιορκούμενοι τῇ τε ἄκρᾳ τῇ λεχθείσῃ φρουρὰν ἐγκατέστησαν τειχίσαντες τὸν τόπον, καὶ τὸ στόμα τοῦ κόλπου τὸ μέχρι τῆς πόλεως διέχωσαν, ὥστε πεζεύεσθαι ῥᾳδίως καὶ τρόπον τινὰ μίαν εἶναι πόλιν ἐξ ἀμφοῖν· ἐκ δὲ τούτου ῥᾷον ἀπεκρούοντο τοὺς Σκύθας. ἐπεὶ δὲ καὶ

τῷ διατειχίσματι τοῦ ἰσθμοῦ τοῦ πρὸς τῷ Κτενοῦντι προσέβαλον καὶ τὴν τάφρον ἐνέχουν καλάμῳ, τὸ μεθ' ἡμέραν γεφυρωθὲν μέρος νύκτωρ ἐνεπίμπρασαν οἱ βασιλικοὶ καὶ ἀντεῖχον τέως ἕως ἐπεκράτησαν. καὶ νῦν ὑπὸ τοῖς τῶν Βοσποραν ῶν βασιλεῦσιν, οὓς ἂν Ῥωμαῖοι καταστήσωσιν, ἅπαντά ἐστιν.

8 Ἴδιον δὲ τοῦ Σκυθικοῦ καὶ τοῦ Σαρματικοῦ παντὸς ἔθνους τὸ τοὺς ἵππους ἐκτέμνειν εὐπειθείας χάριν· μικροὶ μὲν γάρ εἰσιν, ὀξεῖς δὲ σφόδρα καὶ δυσπειθεῖς. θῆραι δ' εἰσὶν ἐν μὲν τοῖς ἕλεσιν ἐλάφων καὶ συάγρων, ἐν δὲ τοῖς πεδίοις ὀνάγρων καὶ δορκάδων. ἴδιον δέ τι καὶ τὸ ἀετὸν μὴ γίνεσθαι ἐν τοῖς τόποις τούτοις. ἔστι δὲ τῶν τετραπόδων ὁ καλούμενος κόλος, μεταξὺ ἐλάφου καὶ κριοῦ τὸ μέγεθος, λευκός, ὀξύτερος τούτων τῷ δρόμῳ, πίνων τοῖς ῥώθωσιν εἰς τὴν κεφαλήν, εἶτ' ἐντεῦθεν εἰς ἡμέρας ταμιεύων πλείους ὥστ' ἐν τῇ ἀνύδρῳ νέμεσθαι ῥᾳδίως. τοιαύτη μὲν ἡ ἐκτὸς Ἴστρου πᾶσα ἡ μεταξὺ τοῦ Ῥήνου καὶ τοῦ Τανάιδος ποταμοῦ μέχρι τῆς Ποντικῆς θαλάττης καὶ τῆς Μαιώτιδος.

5 Λοιπὴ δ' ἐστὶ τῆς Εὐρώπης ἡ ἐντὸς Ἴστρου καὶ τῆς κύκλῳ θαλάττης, ἀρξαμένη ἀπὸ τοῦ μυχοῦ τοῦ Ἀδριατικοῦ μέχρι τοῦ ἱεροῦ στόματος τοῦ Ἴστρου, ἐν ᾗ ἔστιν ἥ τε Ἑλλὰς καὶ τὰ τῶν Μακεδόνων καὶ τῶν Ἠπειρωτῶν ἔθνη καὶ τὰ ὑπὲρ τούτων πρὸς τὸν Ἴστρον καθήκοντα καὶ πρὸς τὴν ἐφ' ἑκάτερα θάλατταν τήν τε C.313 Ἀδριατικὴν καὶ τὴν Ποντικήν, πρὸς μὲν τὴν Ἀδριατικὴν τὰ Ἰλλυρικά, πρὸς δὲ τὴν ἑτέραν μέχρι Προποντίδος καὶ Ἑλλησπόντου τὰ Θρᾴκια καὶ εἴ τινα τούτοις ἀναμέμικται Σκυθικὰ ἢ Κελτικά. δεῖ δ' ἀπὸ τοῦ Ἴστρου τὴν ἀρχὴν ποιήσασθαι τὰ ἐφεξῆς λέγοντας τοῖς περιοδευθεῖσι τόποις· ταῦτα δ' ἔστι τὰ συνεχῆ τῇ Ἰταλίᾳ τε καὶ ταῖς Ἄλπεσι καὶ Γερμανοῖς καὶ Δακοῖς καὶ Γέταις.

δίχα δ' ἄν τις καὶ ταῦτα διέλοι· τρόπον γάρ τινα τῷ Ἴστρῳ παράλληλά ἐστι τά τε Ἰλλυρικὰ καὶ τὰ Παιονικὰ καὶ τὰ Θρᾴκια ὄρη, μίαν πως γραμμὴν ἀποτελοῦντα διήκουσαν ἀπὸ τοῦ Ἀδρίου μέχρι πρὸς τὸν Πόντον· ἧς προσάρκτια μέν ἐστι μέρη τὰ μεταξὺ τοῦ Ἴστρου καὶ τῶν ὀρῶν, πρὸς νότον δ' ἥ τε Ἑλλὰς καὶ ἡ συνεχὴς βάρβαρος μέχρι τῆς ὀρεινῆς. πρὸς μὲν οὖν τῷ Πόντῳ τὸ Αἷμον ἔστιν ὄρος, μέγιστον τῶν ταύτῃ καὶ ὑψηλότατον, μέσην πως διαιροῦν τὴν Θρᾴκην· ἀφ' οὗ φησι Πολύβιος ἀμφοτέρας καθορᾶσθαι τὰς θαλάττας, οὐκ ἀληθῆ λέγων· καὶ γὰρ τὸ διάστημα μέγα τὸ πρὸς τὸν Ἀδρίαν καὶ τὰ ἐπισκοτοῦντα πολλά. πρὸς δὲ τῷ Ἀδρίᾳ πᾶσα ἡ Ἀρδία σχεδόν τι, μέση δ' ἡ Παιονία καὶ αὐτὴ πᾶσα ὑψηλή. ἐφ' ἑκάτερα δ' αὐτῆς ἐπὶ μὲν τὰ Θρᾴκια ἡ Ῥοδόπη ὁμορεῖ, ὑψηλότατον ὄρος μετὰ τὸν Αἷμον, ἐπὶ δὲ θάτερα πρὸς ἄρκτον τὰ Ἰλλυρικὰ ἥ τε τῶν Αὐταριατῶν χώρα καὶ ἡ Δαρδανική. λέγωμεν δὴ τὰ Ἰλλυρικὰ πρῶτα συνάπτοντα τῷ τε Ἴστρῳ καὶ ταῖς Ἄλπεσιν, αἳ κεῖνται μεταξὺ τῆς Ἰταλίας καὶ τῆς Γερμανίας, ἀρξάμεναι ἀπὸ τῆς λίμνης τῆς κατὰ τοὺς Ὀυινδολικοὺς καὶ Ῥαιτοὺς καὶ Ἑλουηττίους.

2 Μέρος μὲν δή τι τῆς χώρας ταύτης ἠρήμωσαν οἱ Δακοὶ καταπολεμήσαντες Βοίους καὶ Ταυρίσκους, ἔθνη Κελτικὰ τὰ ὑπὸ Κριτασίρῳ, φάσκοντες εἶναι τὴν χώραν σφετέραν, καίπερ ποταμοῦ διείργοντος τοῦ Παρίσου, ῥέοντος ἀπὸ τῶν ὀρῶν ἐπὶ τὸν Ἴστρον κατὰ τοὺς Σκορδίσκους καλουμένους Γαλάτας· καὶ γὰρ οὗτοι τοῖς Ἰλλυρικοῖς ἔθνεσι καὶ τοῖς Θρᾳκίοις ἀναμὶξ ᾤκησαν· ἀλλ' ἐκείνους μὲν οἱ Δακοὶ κατέλυσαν, τούτοις δὲ καὶ συμμάχοις ἐχρήσαντο πολλάκις. τὸ δὲ λοιπὸν ἔχουσι Παννόνιοι μέχρι Σεγεστικῆς καὶ Ἴστρου πρὸς ἄρκτον καὶ ἕω· πρὸς δὲ τἆλλα μέρη ἐπὶ πλέον

διατείνουσιν. ἡ δὲ Σεγεστικὴ πόλις ἐστὶ Παννονίων ἐν συμβολῇ ποταμῶν πλειόνων, ἁπάντων πλωτῶν, εὐφυὲς ὁρμητήριον τῷ πρὸς Δακοὺς πολέμῳ· ὑποπέπτωκε γὰρ ταῖς Ἄλπεσιν, αἳ διατείνουσι μέχρι τῶν Ἰαπόδων, Κελτικοῦ τε ἅμα καὶ Ἰλλυρικοῦ ἔθνους· ἐντεῦ- C.314
θεν δὲ καὶ ποταμοὶ ῥέουσι πολὺν καταφέροντες εἰς αὐτὴν τόν τε ἄλλον καὶ τὸν ἐκ τῆς Ἰταλίας φόρτον. εἰς γὰρ Ναύπορτον ἐξ Ἀκυληίας ὑπερτιθεῖσι τὴν Ὄκραν εἰσὶ στάδιοι τριακόσιοι πεντήκοντα, εἰς ἣν αἱ ἁρμάμαξαι κατάγονται, τῶν Ταυρίσκων οὖσαν κατοικίαν· ἔνιοι δὲ πεντακοσίους φασίν. ἡ δ' Ὄκρα ταπεινότατον μέρος τῶν Ἀλπεών ἐστι τῶν διατεινουσῶν ἀπὸ τῆς Ῥαιτικῆς μέχρι Ἰαπόδων· ἐντεῦθεν δ' ἐξαίρεται τὰ ὄρη πάλιν ἐν τοῖς Ἰάποσι καὶ καλεῖται Ἄλβια. ὁμοίως δὲ καὶ ἐκ Τεργέστε κώμης Καρνικῆς ὑπέρθεσίς ἐστι διὰ τῆς Ὄκρας εἰς ἕλος Λούγεον καλούμενον. πλησίον δὲ τοῦ Ναυπόρτου ποταμός ἐστι Κορκόρας ὁ δεχόμενος τὰ φορτία· οὗτος μὲν οὖν εἰς τὸν Σάβον ἐμβάλλει, ἐκεῖνος δ' εἰς τὸν Δράβον, ὁ δὲ εἰς τὸν Νόαρον κατὰ τὴν Σεγεστικήν. ἐντεῦθεν δ' ἤδη ὁ Νόαρος * πλήθει προσλαβὼν τὸν διὰ τῶν Ἰαπόδων ῥέοντα ἐκ τοῦ Ἀλβίου ὄρους Κόλαπιν συμβάλλει τῷ Δανουίῳ κατὰ τοὺς Σκορδίσκους. ὁ δὲ πλοῦς τὰ πολλὰ τοῖς ποταμοῖς ἐπὶ τὰς ἄρκτους ἐστίν· ὁδὸς δ' ἀπὸ Τεργέστε ἐπὶ τὸν Δανούιον σταδίων ὅσον χιλίων καὶ διακοσίων. ἐγγὺς δὲ τῆς Σεγεστικῆς ἐστι καὶ ἡ Σισκία φρούριον καὶ Σίρμιον ἐν ὁδῷ κείμεναι τῇ εἰς Ἰταλίαν.

Ἔθνη δ' ἐστὶ τῶν Παννονίων Βρεῦκοι καὶ Ἀνδι- 3
ζήτιοι καὶ Διτίωνες καὶ Πειροῦσται καὶ Μαζαῖοι καὶ Δαισιτιᾶται, ὧν Βάτων ἡγεμών, καὶ ἄλλα ἀσημότερα μικρά, ἃ διατείνει μέχρι Δαλματίας σχεδὸν δέ τι καὶ Ἀρδιαίων ἰόντι πρὸς νότον· ἅπασα δ' ἡ ἀπὸ τοῦ μυ-

χοῦ τοῦ Ἀδρίου παρήκουσα ὀρεινὴ μέχρι τοῦ Ῥιζονικοῦ κόλπου καὶ τῆς Ἀρδιαίων γῆς ...... μεταξὺ πίπτουσα τῆς τε θαλάττης καὶ τῶν Παννονίων ἐθνῶν. σχεδὸν δέ τι καὶ ἐντεῦθεν τὴν ἀρχὴν ποιητέον τῆς συνεχοῦς περιοδείας ἀναλαβοῦσι μικρὰ τῶν λεχθέντων πρότερον. ἔφαμεν δ' ἐν τῇ περιοδείᾳ τῆς Ἰταλίας Ἴστρους εἶναι πρώτους τῆς Ἰλλυρικῆς παραλίας συνεχεῖς τῇ Ἰταλίᾳ καὶ τοῖς Κάρνοις, καὶ διότι μέχρι Πόλας, Ἰστρικῆς πόλεως, προήγαγον οἱ νῦν ἡγεμόνες τοὺς τῆς Ἰταλίας ὅρους. οὗτοι μὲν οὖν περὶ ὀκτακοσίους σταδίους εἰσὶν ἀπὸ τοῦ μυχοῦ. τοσοῦτοι δ' εἰσὶ καὶ ἀπὸ τῆς ἄκρας τῆς πρὸ τῶν Πολῶν ἐπὶ Ἀγκῶνα ἐν δεξιᾷ ἔχοντι τὴν Ἑνετικήν. ὁ δὲ πᾶς Ἰστρικὸς παράπλους χίλια τριακόσια.

4 Ἑξῆς δ' ἐστὶν ὁ Ἰαποδικὸς παράπλους χιλίων σταδίων· ἵδρυνται γὰρ οἱ Ἰάποδες ἐπὶ τῷ Ἀλβίῳ ὄρει τελευταίῳ τῶν Ἄλπεων ὄντι ὑψηλῷ σφόδρα, τῇ μὲν ἐπὶ τοὺς Παννονίους καὶ τὸν Ἴστρον καθήκοντες τῇ δ' ἐπὶ τὸν Ἀδρίαν, ἀρειμάνιοι μὲν ἐκπεπονημένοι δὲ ὑπὸ τοῦ Σεβαστοῦ τελέως· πόλεις δ' αὐτῶν Μέτουλον C.315 Ἀρουπῖνοι Μονήτιον Οὐένδων· λυπρὰ δὲ τὰ χωρία, καὶ ζειᾷ καὶ κέγχρῳ τὰ πολλὰ τρεφομένων· ὁ δ' ὁπλισμὸς Κελτικός· κατάστικτοι δ' ὁμοίως τοῖς ἄλλοις Ἰλλυριοῖς καὶ Θρᾳξί. μετὰ δὲ τὸν τῶν Ἰαπόδων ὁ Λιβυρνικὸς παράπλους ἐστί, μείζων τοῦ προτέρου σταδίοις [πεντακοσίοις], ἐν δὲ τῷ παράπλῳ ποταμὸς φορτίοις ἀνάπλουν ἔχων μέχρι Δαλματέων, καὶ Σκάρδων Λιβυρνὴ πόλις.

5 Παρ' ὅλην δ' ἣν εἶπον παραλίαν νῆσοι μὲν αἱ Ἀψυρτίδες, περὶ ἃς ἡ Μήδεια λέγεται διαφθεῖραι τὸν ἀδελφὸν Ἄψυρτον διώκοντα αὐτήν. ἔπειτα ἡ Κυρικτικὴ κατὰ τοὺς Ἰάποδας· εἶθ' αἱ Λιβυρνίδες περὶ τετ-

ταράκοντα τὸν ἀριθμόν· εἶτ' ἄλλαι νῆσοι, γνωριμώταται δ' Ἴσσα, Τραγούριον, Ἰσσέων κτίσμα, Φάρος ἡ πρότερον Πάρος, Παρίων κτίσμα, ἐξ ἧς Δημήτριος ὁ Φάριος. εἶτα ἡ τῶν Δαλματέων παραλία καὶ τὸ ἐπίνειον αὐτῶν Σάλων. ἔστι δὲ τῶν πολὺν χρόνον πολεμησάντων πρὸς Ῥωμαίους τὸ ἔθνος τοῦτο· κατοικίας δ' ἔσχεν ἀξιολόγους εἰς πεντήκοντα, ὧν τινὰς καὶ πόλεις, Σάλωνά τε καὶ Πριάμωνα καὶ Νινίαν καὶ Σινώτιον τό τε νέον καὶ τὸ παλαιόν, ἃς ἐνέπρησεν ὁ Σεβαστός. ἔστι δὲ καὶ Ἀνδήτριον ἐρυμνὸν χωρίον, Δέλμιον δὲ μεγάλη πόλις, ἧς ἐπώνυμον τὸ ἔθνος· μικρὰν δ' ἐποίησε Νασικᾶς καὶ τὸ πεδίον μηλόβοτον διὰ τὴν πλεονεξίαν τῶν ἀνθρώπων. ἴδιον δὲ τῶν Δαλματέων τὸ διὰ ὀκταετηρίδος χώρας ἀναδασμὸν ποιεῖσθαι· τὸ δὲ μὴ χρῆσθαι νομίσμασι πρὸς μὲν τοὺς ἐν τῇ παραλίᾳ ταύτῃ ἴδιον, πρὸς ἄλλους δὲ τῶν βαρβάρων πολλοὺς κοινόν. Ἄδριον δὲ ὄρος ἐστὶ μέσην τέμνον τὴν Δαλματικήν, τὴν μὲν ἐπιθαλάττιον τὴν δ' ἐπὶ θάτερα. εἶθ' ὁ Νάρων ποταμὸς καὶ οἱ περὶ αὐτὸν Δαόριζοι καὶ Ἀρδιαῖοι καὶ Πληραῖοι, ὧν τοῖς μὲν πλησιάζει νῆσος ἡ μέλαινα Κόρκυρα καλουμένη καὶ πόλις, Κνιδίων κτίσμα, τοῖς δὲ Ἀρδιαίοις ἡ Φάρος, Πάρος λεγομένη πρότερον· Παρίων γάρ ἐστι κτίσμα.

Οὐαρδαίους δ' οἱ ὕστερον ἐκάλεσαν τοὺς Ἀρδιαί- 6
ους· ἀπέωσαν δ' αὐτοὺς εἰς τὴν μεσόγαιαν ἀπὸ τῆς θαλάττης Ῥωμαῖοι, λυμαινομένους αὐτὴν διὰ τῶν ληστηρίων, καὶ ἠνάγκασαν γεωργεῖν. τραχεῖα δὲ χώρα καὶ λυπρὰ καὶ οὐ γεωργῶν ἀνθρώπων, ὥστ' ἐξέφθαρται τελέως [τὸ ἔθνος], μικροῦ δὲ καὶ ἐκλέλοιπε. τοῦτο δὲ καὶ τοῖς ἄλλοις ἔθνεσι τοῖς ταύτῃ συνέβη· οἱ γὰρ πλεῖστον δυνάμενοι πρότερον τελέως ἐταπεινώθησαν καὶ ἐξέλιπον, Γαλατῶν μὲν Βοῖοι καὶ Σκορδίσται, Ἰλ-

λυριῶν δὲ Αὐταριᾶται καὶ Ἀρδιαῖοι καὶ Δαρδάνιοι,
Θρᾳκῶν δὲ Τριβαλλοί, ὑπ' ἀλλήλων μὲν ἐξ ἀρχῆς,
C.316 ὕστερον δ' ὑπὸ Μακεδόνων καὶ Ῥωμαίων ἐκπολεμούμενοι.

7 Μετὰ δ' οὖν τὴν τῶν Ἀρδιαίων καὶ Πληραίων παραλίαν ὁ Ῥιζονικὸς κόλπος ἐστὶ καὶ Ῥίζων πόλις καὶ ἄλλα πολίχνια, καὶ Δρίλων ποταμὸς ἀνάπλουν ἔχων πρὸς ἕω μέχρι τῆς Δαρδανικῆς, ἣ συνάπτει τοῖς Μακεδονικοῖς ἔθνεσι καὶ τοῖς Παιονικοῖς πρὸς μεσημβρίαν, καθάπερ καὶ οἱ Αὐταριᾶται καὶ Δασαρήτιοι, ἄλλοι κατ' ἄλλα μέρη συνεχεῖς ἀλλήλοις ὄντες καὶ τοῖς Αὐταριάταις. τῶν δὲ Δαρδανιατῶν εἰσι καὶ οἱ Γαλάβριοι, παρ' οἷς ... πόλις ἀρχαία, καὶ οἱ Θουνάται, [οἳ] Μαίδοις ἔθνει Θρᾳκίῳ πρὸς ἕω συνάπτουσιν. ἄγριοι δ' ὄντες οἱ Δαρδάνιοι τελέως, ὥσθ' ὑπὸ ταῖς κοπρίαις ὀρύξαντες σπήλαια ἐνταῦθα διαίτας ποιεῖσθαι, μουσικῆς δ' ὅμως ἐπεμελήθησαν ἀεὶ χρώμενοι καὶ αὐλοῖς καὶ τοῖς ἐντατοῖς ὀργάνοις. οὗτοι μὲν οὖν ἐν τῇ μεσογαίᾳ· μνησθησόμεθα δ' αὐτῶν καὶ ὕστερον.

8 Μετὰ δὲ τὸν Ῥιζονικὸν κόλπον Λίσσος ἐστὶ πόλις καὶ Ἀκρόλισσος καὶ Ἐπίδαμνος Κερκυραίων κτίσμα, ἡ νῦν Δυρράχιον ὁμωνύμως τῇ χερρονήσῳ λεγομένη ἐφ' ἧς ἵδρυται. εἶθ' ὁ Ἄψος ποταμὸς καὶ ὁ Ἀῶος, ἐφ' ᾧ Ἀπολλωνία πόλις εὐνομωτάτη, κτίσμα Κορινθίων καὶ Κερκυραίων, τοῦ ποταμοῦ μὲν ἀπέχουσα σταδίους δέκα τῆς θαλάττης δὲ ἑξήκοντα. τὸν δ' Ἄωον Αἴαντα καλεῖ Ἑκαταῖος καί φησιν ἀπὸ τοῦ αὐτοῦ τόπου τοῦ περὶ Λάκμον, μᾶλλον δὲ τοῦ αὐτοῦ μυχοῦ, τόν τε Ἴναχον ῥεῖν εἰς Ἄργος πρὸς νότον καὶ τὸν Αἴαντα πρὸς

---

17. ante ἀεί: μουσικοῖς

ἑσπέραν καὶ πρὸς τὸν Ἀδρίαν. ἐν δὲ τῇ χώρᾳ τῶν Ἀπολλωνιατῶν καλεῖταί τι νυμφαῖον· πέτρα δ' ἐστὶ πῦρ ἀναδιδοῦσα, ὑπ' αὐτῇ δὲ κρῆναι ῥέουσι χλιαροῦ καὶ ἀσφάλτου, καιομένης, ὡς εἰκός, τῆς βώλου τῆς ἀσφαλτίτιδος· μέταλλον δ' αὐτῆς ἔστι πλησίον ἐπὶ λόφου· τὸ δὲ τμηθὲν ἐκπληροῦται πάλιν τῷ χρόνῳ, τῆς ἐγχωννυμένης εἰς τὰ ὀρύγματα γῆς μεταβαλλούσης εἰς ἄσφαλτον, ὥς φησι Ποσειδώνιος. λέγει δ' ἐκεῖνος καὶ τὴν ἀμπελῖτιν γῆν ἀσφαλτώδη τὴν ἐν Σελευκείᾳ τῇ Πιερίᾳ μεταλλευομένην ἄκος τῆς φθειριώσης ἀμπέλου· χρισθεῖσαν γὰρ μετ' ἐλαίου φθείρειν τὸ θηρίον πρὶν ἐπὶ τοὺς βλαστοὺς τῆς ῥίζης ἀναβῆναι· τοιαύτην δ' εὑρεθῆναι καὶ ἐν Ῥόδῳ πρυτανεύοντος αὐτοῦ, πλείονος δ' ἐλαίου δεῖσθαι. μετὰ δ' Ἀπολλωνίαν Βυλλιακὴ καὶ Ὠρικὸν καὶ τὸ ἐπίνειον αὐτοῦ ὁ Πάνορμος καὶ τὰ Κεραύνια ὄρη, ἡ ἀρχὴ τοῦ στόματος τοῦ Ἰονίου κόλπου καὶ τοῦ Ἀδρίου.

Τὸ μὲν οὖν στόμα κοινὸν ἀμφοῖν ἐστι, διαφέρει 9
δὲ ὁ Ἰόνιος διότι τοῦ πρώτου μέρους τῆς θαλάττης C.317
ταύτης ὄνομα τοῦτ' ἐστίν, ὁ δ' Ἀδρίας τῆς ἐντὸς μέχρι τοῦ μυχοῦ, νυνὶ δὲ καὶ τῆς συμπάσης. φησὶ δ' ὁ Θεόπομπος τῶν ὀνομάτων τὸ μὲν ἥκειν ἀπὸ ἀνδρὸς ἡγησαμένου τῶν τόπων ἐξ Ἴσσης τὸ γένος, τὸν Ἀδρίαν δὲ ποταμοῦ ἐπώνυμον γεγονέναι. στάδιοι δ' ἀπὸ τῶν Λιβυρνῶν ἐπὶ τὰ Κεραύνια μικρῷ πλείους ἢ δισχίλιοι. Θεόπομπος δὲ τὸν πάντα ἀπὸ τοῦ μυχοῦ πλοῦν ἡμερῶν ἓξ εἴρηκε, πεζῇ δὲ τὸ μῆκος τῆς Ἰλλυρίδος καὶ τριάκοντα· πλεονάζειν δέ μοι δοκεῖ. καὶ ἄλλα δ' οὐ πιστὰ λέγει, τό τε συντετρῆσθαι τὰ πελάγη .... ἀπὸ τοῦ εὑρίσκεσθαι κέραμόν τε Χῖον καὶ Θάσιον ἐν τῷ Νάρωνι, καὶ τὸ ἄμφω κατοπτεύεσθαι τὰ πελάγη ἀπό τινος ὄρους, καὶ τῶν νήσων τῶν Λιβυρνίδων * τιθείς,

ὥστε κύκλον ἔχειν σταδίων καὶ πεντακοσίων, καὶ τὸ τὸν Ἴστρον ἑνὶ τῶν στομάτων εἰς τὸν Ἀδρίαν ἐμβάλλειν. τοιαῦτα δὲ καὶ τοῦ Ἐρατοσθένους ἔνια παρακούσματά ἐστι λαοδογματικά, καθάπερ Πολύβιός φησι καὶ περὶ αὐτοῦ καὶ τῶν ἄλλων λέγων συγγραφέων.

10 Τὸν μὲν οὖν παράπλουν ἅπαντα τὸν Ἰλλυρικὸν σφόδρα εὐλίμενον εἶναι συμβαίνει καὶ ἐξ αὐτῆς τῆς συνεχοῦς ἠόνος καὶ ἐκ τῶν πλησίον νήσων, ὑπεναντίως τῷ Ἰταλικῷ τῷ ἀντικειμένῳ ἀλιμένῳ ὄντι· ἀλεεινοὶ δὲ καὶ χρηστόκαρποι ὁμοίως· ἐλαιόφυτοι γὰρ καὶ εὐάμπελοι, πλὴν εἴ τί που σπάνιον ἐκτετράχυνται τελέως. τοιαύτη δ' οὖσα ὠλιγωρεῖτο πρότερον ἡ Ἰλλυρικὴ παραλία, τάχα μὲν καὶ κατ' ἄγνοιαν τῆς ἀρετῆς, τὸ μέντοι πλέον διὰ τὴν ἀγριότητα τῶν ἀνθρώπων καὶ τὸ ληστρικὸν ἔθος. ἡ δ' ὑπερκειμένη ταύτης πᾶσα ὀρεινὴ καὶ ψυχρὰ καὶ νιφόβολός ἐστιν, ἡ δὲ προσάρκτιος καὶ μᾶλλον, ὥστε καὶ τῶν ἀμπέλων σπάνιν εἶναι καὶ ἐν ταῖς ὑψώσεσι καὶ ἐν τοῖς ἐπιπεδωτέροις. ὀροπέδια δ' ἐστὶ ταῦτα ἃ κατέχουσιν οἱ Παννόνιοι, πρὸς νότον μὲν μέχρι Δαλματέων καὶ Ἀρδιαίων διατείνοντα, πρὸς ἄρκτον δὲ ἐπὶ τὸν Ἴστρον τελευτῶντα, πρὸς ἕω δὲ Σκορδίσκοις συνάπτοντα ..... τῇ δὲ παρὰ τὰ ὄρη τῶν Μακεδόνων καὶ Θρακῶν.

11 Αὐταριᾶται μὲν οὖν τὸ μέγιστον καὶ ἄριστον τῶν Ἰλλυριῶν ἔθνος ὑπῆρξεν, ὃ πρότερον μὲν πρὸς Ἀρδιαίους συνεχῶς ἐπολέμει περὶ ἁλῶν ἐν μεθορίοις πηγνυμένων ἐξ ὕδατος ῥέοντος ὑπὸ ἄγκει τινὶ τοῦ ἔαρος· ἀρυσαμένοις γὰρ καὶ ἀποθεῖσιν ἡμέρας πέντε ἐξεπήγνυντο οἱ ἅλες. συνέκειτο δὲ παρὰ μέρος χρῆσθαι τῷ ἁλοπηγίῳ, παραβαίνοντες δὲ τὰ συγκείμενα ἐπολέμουν·
C.318 καταστρεψάμενοι δέ ποτε οἱ Αὐταριᾶται Τριβαλλοὺς ἀπὸ Ἀγριάνων μέχρι τοῦ Ἴστρου καθήκοντας

ἡμερῶν πεντεκαίδεκα ὁδὸν ἐπῆρξαν καὶ τῶν ἄλλων Θρᾳκῶν τε καὶ Ἰλλυριῶν· κατελύθησαν δ' ὑπὸ Σκορδίσκων πρότερον, ὕστερον δ' ὑπὸ Ῥωμαίων, οἳ καὶ τοὺς Σκορδίσκους αὐτοὺς κατεπολέμησαν πολὺν χρόνον ἰσχύσαντας.

Ὤικησαν δ' οὗτοι παρὰ τὸν Ἴστρον διῃρημένοι 12
δίχα, οἱ μὲν μεγάλοι Σκορδίσκοι καλούμενοι οἱ δὲ μικροί· οἱ μὲν μεταξὺ δυεῖν ποταμῶν ἐμβαλλόντων εἰς τὸν Ἴστρον, τοῦ τε Νοάρου τοῦ παρὰ τὴν Σεγεστικὴν ῥέοντος καὶ τοῦ Μάργου (τινὲς δὲ Βάργον φασίν), οἱ δὲ μικροὶ τούτου πέραν, συνάπτοντες Τριβαλλοῖς καὶ Μυσοῖς. εἶχον δὲ καὶ τῶν νήσων τινὰς οἱ Σκορδίσκοι· ἐπὶ τοσοῦτον δ' ηὐξήθησαν ὥστε καὶ μέχρι τῶν Ἰλλυρικῶν καὶ τῶν Παιονικῶν καὶ Θρᾳκίων προῆλθον ὀρῶν· κατέσχον οὖν καὶ τὰς νήσους τὰς ἐν τῷ Ἴστρῳ τὰς πλείους, ἦσαν δὲ καὶ πόλεις αὐτοῖς Ἑόρτα καὶ Καπέδουνον. μετὰ δὲ τὴν τῶν Σκορδίσκων χώραν παρὰ μὲν τὸν Ἴστρον ἡ τῶν Τριβαλλῶν καὶ Μυσῶν ἐστιν, ὧν ἐμνήσθημεν πρότερον, καὶ τὰ ἕλη τὰ τῆς μικρᾶς καλουμένης Σκυθίας τῆς ἐντὸς Ἴστρου· καὶ τούτων ἐμνήσθημεν. ὑπεροικοῦσι δ' οὗτοί τε καὶ Κρόβυζοι καὶ οἱ Τρωγλοδύται λεγόμενοι τῶν περὶ Κάλλατιν καὶ Τομέα καὶ Ἴστρον τόπων. εἶθ' οἱ περὶ τὸ Αἶμον καὶ οἱ ὑπὲρ αὐτοῦ οἰκοῦντες μέχρι τοῦ Πόντου Κόραλλοι καὶ Βέσσοι καὶ Μαίδων τινὲς καὶ Δανθηλητῶν. πάντα μὲν οὖν ταῦτα ληστρικώτατα ἔθνη, Βέσσοι δέ, οἵπερ τὸ πλέον τοῦ ὄρους νέμονται τοῦ Αἵμου, καὶ ὑπὸ τῶν ληστῶν λησταὶ προσαγορεύονται, καλυβῖταί τινες καὶ λυπρόβιοι, συνάπτοντες τῇ τε Ῥοδόπῃ καὶ τοῖς Παίοσι καὶ τῶν Ἰλλυριῶν τοῖς τε Αὐταριάταις καὶ τοῖς

8. post ποταμῶν: οἰκεῖν

Δαρδανίοις. μεταξὺ δὲ τούτων τε καὶ τῶν Ἀρδιαίων οἱ Δασαρήτιοι εἰσὶ καὶ Ἀγριᾶνες καὶ ἄλλα ἄσημα ἔθνη, ἃ ἐπόρθουν οἱ Σκορδίσκοι μέχρι ἠρήμωσαν τὴν χώραν καὶ δρυμῶν ἀβάτων ἐφ᾽ ἡμέρας πλείους ἐποίησαν μεστήν.

6 Λοιπὴ δ᾽ ἐστὶ τῆς μεταξὺ Ἴστρου καὶ τῶν ὀρῶν τῶν ἐφ᾽ ἑκάτερα τῆς Παιονίας ἡ Ποντικὴ παραλία, ἡ ἀπὸ τοῦ ἱεροῦ στόματος τοῦ Ἴστρου μέχρι τῆς περὶ τὸν Αἷμον ὀρεινῆς καὶ μέχρι τοῦ στόματος τοῦ κατὰ Βυζάντιον. καθάπερ [δὲ] τὴν Ἰλλυρικὴν παραλίαν ἐπιόντες μέχρι τῶν Κεραυνίων ὀρῶν προὔβημεν ἔξω τῆς Ἰλλυρικῆς πιπτόντων ὀρεινῆς, ἐχόντων δέ τι οἰκεῖον πέρας, τὰ μεσόγαια δ᾽ ἔθνη τούτοις ἀφωρίσμεθα, νομίζοντες σημειωδεστέρας ἔσεσθαι τὰς τοιαύτας περιγραφὰς καὶ πρὸς τὰ νῦν καὶ πρὸς τὰ ὕστερον, οὕτω κἀνταῦθα ἡ παραλία, κἂν ὑπερπίπτῃ τὴν ὀρεινὴν γραμμήν, ὅμως εἰς οἰκεῖόν τι πέρας τελευτήσει τὸ τοῦ Πόν-
C.319 του στόμα καὶ πρὸς τὰ νῦν καὶ πρὸς τὰ ἐφεξῆς. ἔστιν οὖν ἀπὸ τοῦ ἱεροῦ στόματος τοῦ Ἴστρου ἐν δεξιᾷ ἔχοντι τὴν συνεχῆ παραλίαν Ἴστρος πολίχνιον ἐν πεντακοσίοις σταδίοις, Μιλησίων κτίσμα· εἶτα Τόμις, ἕτερον πολίχνιον ἐν διακοσίοις πεντήκοντα σταδίοις· εἶτα πόλις Κάλλατις ἐν διακοσίοις ὀγδοήκοντα, Ἡρακλεωτῶν ἄποικος· εἶτ᾽ Ἀπολλωνία ἐν χιλίοις τριακοσίοις σταδίοις, ἄποικος Μιλησίων, τὸ πλέον τοῦ κτίσματος ἱδρυμένον ἔχουσα ἐν νησίῳ τινί, [ὅπου] ἱερὸν τοῦ Ἀπόλλωνος, ἐξ οὗ Μάρκος Λεύκολλος τὸν κολοσσὸν ἦρε καὶ ἀνέθηκεν ἐν τῷ Καπετωλίῳ τὸν τοῦ Ἀπόλλωνος, Καλάμιδος ἔργον. ἐν τῷ μεταξὺ δὲ διαστήματι τῷ ἀπὸ Καλλάτιδος εἰς Ἀπολλωνίαν Βιζώνη τέ ἐστιν, ἧς κατεπόθη πολὺ μέρος ὑπὸ σεισμῶν, καὶ Κρουνοὶ καὶ Ὀδησσὸς Μιλησίων ἄποικος, καὶ Ναύλοχος Με-

σημβριανῶν πολίχνιον· εἶτα τὸ Αἶμον ὄρος μέχρι τῆς δεῦρο θαλάττης διῆκον· εἶτα Μεσημβρία Μεγαρέων ἄποικος, πρότερον δὲ * Μενεβρία, οἷον * Μένα πόλις, τοῦ κτίσαντος * Μένα καλουμένου, τῆς δὲ πόλεως βρίας καλουμένης θρᾳκιστί· ὡς καὶ ἡ τοῦ Σήλυος πόλις Σηλυμβρία προσηγόρευται, ἥ τε Αἶνος Πολτυμβρία ποτὲ ὠνομάζετο· εἶτ' Ἀγχιάλη πολίχνιον Ἀπολλωνιατῶν καὶ αὐτὴ Ἀπολλωνία. ἐν δὲ ταύτῃ τῇ παραλίᾳ ἐστὶν ἡ Τίριζις ἄκρα, χωρίον ἐρυμνόν, ᾧ ποτε καὶ Λυσίμαχος ἐχρήσατο γαζοφυλακίῳ. πάλιν δ' ἀπὸ τῆς Ἀπολλωνίας ἐπὶ Κυανέας στάδιοί εἰσι περὶ χιλίους καὶ πεντακοσίους, ἐν δὲ τῷ μεταξὺ ἥ τε Θυνιὰς τῶν Ἀπολλωνιατῶν χώρα, καὶ Φινόπολις καὶ Ἀνδριακή, συνάπτουσαι τῷ Σαλμυδησσῷ. ἔστι δ' οὗτος ἔρημος αἰγιαλὸς καὶ λιθώδης, ἀλίμενος, ἀναπεπταμένος πολὺς πρὸς τοὺς βορέας, σταδίων ὅσον ἑπτακοσίων μέχρι Κυανέων τὸ μῆκος, πρὸς ὃν οἱ ἐκπίπτοντες ὑπὸ τῶν Ἀστῶν διαρπάζονται τῶν ὑπερκειμένων, Θρᾳκίου ἔθνους. αἱ δὲ Κυάνεαι πρὸς τῷ στόματι τοῦ Πόντου εἰσὶ δύο νησίδια, τὸ μὲν τῇ Εὐρώπῃ προσεχὲς τὸ δὲ τῇ Ἀσίᾳ, πορθμῷ διειργόμενα ὅσον εἴκοσι σταδίων. τοσοῦτον δὲ διέχει καὶ τοῦ ἱεροῦ τοῦ Βυζαντίων καὶ τοῦ ἱεροῦ τοῦ Χαλκηδονίων, ὅπερ ἐστὶ τοῦ στόματος τοῦ Εὐξείνου τὸ στενώτατον· προϊόντι γὰρ δέκα σταδίους ἄκρα ἐστὶ πενταστάδιον ποιοῦσα τὸν πορθμόν, εἶτα διίσταται ἐπὶ πλέον καὶ ποιεῖν ἄρχεται τὴν Προποντίδα.

Ἀπὸ μὲν οὖν τῆς ἄκρας τῆς τὸ πενταστάδιον ποι- 2
ούσης ἐπὶ τὸν ὑπὸ τῇ Συκῇ καλούμενον λιμένα στάδιοι πέντε καὶ τριάκοντα, ἐντεῦθεν δ' ἐπὶ τὸ Κέρας τὸ C.320
Βυζαντίων πέντε. ἔστι δὲ τὸ Κέρας προσεχὴς τῷ Βυ-

12. post χώρα: Ἀγχιάλη καὶ αὐτὴ Ἀπολλωνιατῶν

ζαντίων τείχει κόλπος ἀνέχων ὡς πρὸς δύσιν ἐπὶ σταδίους ἑξήκοντα, ἐοικὼς ἐλάφου κέρατι· εἰς γὰρ πλείστους σχίζεται κόλπους ὡς ἂν κλάδους τινάς, εἰς οὓς ἐμπίπτουσα ἡ πηλαμὺς ἁλίσκεται ῥαδίως διά τε τὸ πλῆθος αὐτῆς καὶ τὴν βίαν τοῦ συνελαύνοντος ῥοῦ καὶ τὴν στενότητα τῶν κόλπων, ὥστε καὶ χερσὶν ἁλίσκεσθαι. γεννᾶται μὲν οὖν τὸ ζῷον ἐν τοῖς ἕλεσι τῆς Μαιώτιδος, ἰσχῦσαν δὲ μικρὸν ἐκπίπτει διὰ τοῦ στόματος ἀγεληδὸν καὶ φέρεται παρὰ τὴν Ἀσιανὴν ἠόνα μέχρι Τραπεζοῦντος καὶ Φαρνακείας· ἐνταῦθα δὲ πρῶτον συνίστασθαι συμβαίνει τὴν θήραν, οὐ πολλὴ δ' ἐστίν· οὐ γάρ πω τὸ προσῆκον ἔχει μέγεθος· εἰς δὲ Σινώπην προϊοῦσα ὡραιοτέρα πρός τε τὴν θήραν καὶ τὴν ταριχείαν ἐστίν· ἐπειδὰν δὲ ἤδη συνάψῃ ταῖς Κυανέαις καὶ παραλλάξῃ ταύτας, ἐκ τῆς Χαλκηδονιακῆς ἀκτῆς λευκή τις πέτρα προπίπτουσα φοβεῖ τὸ ζῷον ὥστ' εὐθὺς εἰς τὴν περαίαν τρέπεσθαι· παραλαβὼν δ' ὁ ἐνταῦθα ῥοῦς, ἅμα καὶ τῶν τόπων εὐφυῶν ὄντων πρὸς τὸ τὸν ἐκεῖ ῥοῦν τῆς θαλάττης ἐπὶ τὸ Βυζάντιον καὶ τὸ πρὸς αὐτῷ Κέρας τετράφθαι, φυσικῶς συνελαύνεται δεῦρο καὶ παρέχει τοῖς Βυζαντίοις καὶ τῷ δήμῳ τῶν Ῥωμαίων πρόσοδον ἀξιόλογον. Χαλκηδόνιοι δ' ἐπὶ τῆς περαίας ἱδρυμένοι πλησίον οὐ μετέχουσι τῆς εὐπορίας ταύτης διὰ τὸ μὴ προσπελάζειν τοῖς λιμέσιν αὐτῶν τὴν πηλαμύδα· ᾗ δὴ καὶ τὸν Ἀπόλλω φασὶ τοῖς κτίσασι τὸ Βυζάντιον ὕστερον μετὰ τὴν ὑπὸ Μεγαρέων Χαλκηδόνος κτίσιν χρηστηριαζομένοις προστάξαι ποιήσασθαι τὴν ἵδρυσιν ἀπεναντίον τῶν τυφλῶν, τυφλοὺς καλέσαντα τοὺς Χαλκηδονίους, ὅτι πρότεροι πλεύσαντες τοὺς τό-

7. post ἁλίσκεσθαι: διὰ τὴν στενοχωρίαν.

πους, ἀφέντες τὴν πέραν κατασχεῖν τοσοῦτον πλοῦτον ἔχουσαν, εἵλοντο τὴν λυπροτέραν.

Μέχρι μὲν δὴ Βυζαντίου προήλθομεν, ἐπειδὴ πόλις ἐπιφανὴς πλησιάζουσα μάλιστα τῷ στόματι εἰς γνωριμώτερον πέρας ἀπὸ τοῦ Ἴστρου τὸν παράπλουν τελευτῶντα ἀπέφαινεν. ὑπέρκειται δὲ τοῦ Βυζαντίου τὸ τῶν Ἀστῶν ἔθνος, ἐν ᾧ πόλις Καλύβη, Φιλίππου τοῦ Ἀμύντου τοὺς πονηροτάτους ἐνταῦθα ἱδρύσαντος.

Τὰ μὲν οὖν ἀφοριζόμενα ἔθνη τῷ τε Ἴστρῳ καὶ 7 τοῖς Ἰλλυρικοῖς ὄρεσι καὶ Θρᾳκίοις ταῦτ' ἐστιν ὧν ἄξιον μνησθῆναι, κατέχοντα τὴν Ἀδριατικὴν παραλίαν πᾶσαν ἀπὸ τοῦ μυχοῦ ἀρξάμενα, καὶ τὴν τὰ ἀριστερὰ τοῦ Πόντου λεγομένην ἀπὸ Ἴστρου ποταμοῦ μέχρι Βυζαντίου. λοιπὰ δέ ἐστι τὰ νότια μέρη τῆς λε- C.321 χθείσης ὀρεινῆς καὶ ἑξῆς τὰ ὑποπίπτοντα χωρία, ἐν οἷς ἐστιν ἥ τε Ἑλλὰς καὶ ἡ προσεχὴς βάρβαρος μέχρι τῶν ὀρῶν.

Ἑκαταῖος μὲν οὖν ὁ Μιλήσιος περὶ τῆς Πελοποννήσου φησὶν διότι πρὸ τῶν Ἑλλήνων ᾤκησαν αὐτὴν βάρβαροι. σχεδὸν δέ τι καὶ ἡ σύμπασα Ἑλλὰς κατοικία βαρβάρων ὑπῆρξε τὸ παλαιόν, ἀπ' αὐτῶν λογιζομένοις τῶν μνημονευομένων, Πέλοπος μὲν ἐκ τῆς Φρυγίας ἐπαγαγομένου λαὸν εἰς τὴν ἀπ' αὐτοῦ κληθεῖσαν Πελοπόννησον, Δαναοῦ δὲ ἐξ Αἰγύπτου, Δρυόπων τε καὶ Καυκώνων καὶ Πελασγῶν καὶ Λελέγων καὶ ἄλλων τοιούτων κατανειμαμένων τὰ ἐντὸς Ἰσθμοῦ· καὶ τὰ ἐκτὸς δέ· τὴν μὲν γὰρ Ἀττικὴν οἱ μετὰ Εὐμόλπου Θρᾷκες ἔσχον, τῆς δὲ Φωκίδος τὴν Δαυλίδα Τηρεύς, τὴν δὲ Καδμείαν οἱ μετὰ Κάδμου Φοίνικες, αὐτὴν δὲ τὴν Βοιωτίαν Ἄονες καὶ Τέμμικες καὶ Ὕαντες·

30. post Ὕαντες: ὡς δὲ Πίνδαρός φησιν „ἦν ὅτε σύας Βοιώτιον ἔθνος ἔννεπον."

καὶ ἀπὸ τῶν ὀνομάτων δὲ ἐνίων τὸ βάρβαρον ἐμφαίνεται, Κέκροψ καὶ Κόδρος καὶ Ἄικλος καὶ Κόθος καὶ Δρύμας καὶ Κρίνακος. οἱ δὲ Θρᾷκες καὶ Ἰλλυριοὶ καὶ Ἠπειρῶται καὶ μέχρι νῦν ἐν πλευραῖς εἰσιν· ἔτι μέντοι μᾶλλον πρότερον ἢ νῦν, ὅπου γε καὶ τῆς ἐν τῷ παρόντι Ἑλλάδος ἀναντιλέκτως οὔσης τὴν πολλὴν οἱ βάρβαροι ἔχουσι, Μακεδονίαν μὲν Θρᾷκες καί τινα μέρη τῆς Θετταλίας, Ἀκαρνανίας δὲ καὶ Αἰτωλίας [τὰ] ἄνω Θεσπρωτοὶ καὶ Κασσωπαῖοι καὶ Ἀμφίλοχοι καὶ Μολοττοὶ καὶ Ἀθαμᾶνες, Ἠπειρωτικὰ ἔθνη.

2 *Περὶ μὲν οὖν Πελασγῶν εἴρηται, τοὺς δὲ Λέλεγας τινὲς μὲν τοὺς αὐτοὺς Καρσὶν εἰκάζουσιν, οἱ δὲ συνοίκους μόνον καὶ συστρατιώτας· διόπερ ἐν τῇ Μιλησίᾳ Λελέγων κατοικίας λέγεσθαί τινας, πολλαχοῦ δὲ τῆς Καρίας τάφους Λελέγων καὶ ἐρύματα ἔρημα Λελέγεια καλούμενα. ἥ τε Ἰωνία νῦν λεγομένη πᾶσα ὑπὸ Καρῶν ᾠκεῖτο καὶ Λελέγων· ἐκβαλόντες δὲ τούτους οἱ Ἴωνες αὐτοὶ τὴν χώραν κατέσχον, ἔτι δὲ πρότερον οἱ τὴν Τροίαν ἑλόντες ἐξήλασαν τοὺς Λέλεγας ἐκ τῶν περὶ τὴν Ἴδην τόπων τῶν κατὰ Πήδασον καὶ τὸν Σατνιόεντα ποταμόν. ὅτι μὲν οὖν βάρβαροι ἦσαν οὗτοι, καὶ αὐτὸ τὸ κοινωνῆσαι τοῖς Καρσὶ νομίζοιτ' ἂν σημεῖον· ὅτι δὲ πλάνητες καὶ μετ' ἐκείνων καὶ χωρὶς καὶ ἐκ παλαιοῦ, καὶ αἱ Ἀριστοτέλους πολιτεῖαι δηλοῦσιν. ἐν μὲν γὰρ τῇ Ἀκαρνάνων φησὶ τὸ μὲν ἔχειν αὐτῆς Κουρῆτας,* C.322 *τὸ δὲ προσεσπέριον Λέλεγας, εἶτα Τηλεβόας· ἐν δὲ τῇ Αἰτωλῶν τοὺς νῦν Λοκροὺς Λέλεγας καλεῖ, κατασχεῖν δὲ καὶ τὴν Βοιωτίαν αὐτούς φησιν· ὁμοίως δὲ καὶ ἐν τῇ Ὀπουντίων καὶ Μεγαρέων· ἐν δὲ τῇ Λευκαδίων καὶ αὐτόχθονά τινα Λέλεγα ὀνομάζει, τούτου δὲ θυγατριδοῦν Τηλεβόαν, τοῦ δὲ παῖδας δύο καὶ εἴκοσι Τηλεβόας, ὧν τινὰς οἰκῆσαι τὴν Λευκάδα. μάλιστα δ'*

ἄν τις Ἡσιόδῳ πιστεύσειεν οὕτως περὶ αὐτῶν εἰπόντι „ἤτοι γὰρ Λοκρὸς Λελέγων ἡγήσατο λαῶν, τούς ῥά „ποτε Κρονίδης, Ζεὺς ἄφθιτα μήδεα εἰδώς, λεκτοὺς „ἐκ γαίης λάους πόρε Δευκαλίωνι.“ τῇ γὰρ ἐτυμολογίᾳ τὸ συλλέκτους γεγονέναι τινὰς ἐκ παλαιοῦ καὶ μιγάδας αἰνίττεσθαί μοι δοκεῖ καὶ διὰ τοῦτο ἐκλελοιπέναι τὸ γένος· ὅπερ ἄν τις καὶ περὶ Καυκώνων λέγοι, νῦν οὐδαμοῦ ὄντων πρότερον δ' ἐν πλείοσι τόποις κατῳκισμένων.

3 Πρότερον μὲν οὖν καίπερ μικρῶν καὶ πολλῶν καὶ ἀδόξων ὄντων τῶν ἐθνῶν, ὅμως διὰ τὴν εὐανδρίαν καὶ τὸ βασιλεύεσθαι κατὰ σφᾶς οὐ πάνυ ἦν χαλεπὸν διαλαβεῖν τοὺς ὅρους αὐτῶν, νυνὶ δ' ἐρήμου τῆς πλείστης χώρας γεγενημένης καὶ τῶν κατοικιῶν καὶ μάλιστα τῶν πόλεων ἠφανισμένων, οὐδ' εἰ δύναιτό τις ἀκριβοῦν ταῦτα, οὐδὲν ἂν ποιοίη χρήσιμον διὰ τὴν ἀδοξίαν καὶ τὸν ἀφανισμὸν αὐτῶν, ὃς ἐκ πολλοῦ χρόνου λαβὼν τὴν ἀρχὴν οὐδὲ νῦν πω πέπαυται κατὰ πολλὰ μέρη διὰ τὰς ἀποστάσεις, ἀλλ' ἐνστρατοπεδεύουσιν αὐτοῖς Ῥωμαῖοι τοῖς οἴκοις, κατασταθέντες ὑπ' αὐτῶν δυνάσται. τῶν γοῦν Ἠπειρωτῶν ἑβδομήκοντα πόλεις Πολύβιός φησιν ἀνατρέψαι Παῦλον μετὰ τὴν Μακεδόνων καὶ Περσέως κατάλυσιν (Μολοττῶν δ' ὑπάρξαι τὰς πλείστας), πέντε δὲ καὶ δέκα μυριάδας ἀνθρώπων ἐξανδραποδίσασθαι. ὅμως δ' οὖν ἐγχειρήσομεν, ἐφ' ὅσον τῇ γραφῇ τε προσήκει καὶ ἡμῖν ἐφικτόν, ἐπελθεῖν τὰ καθ' ἕκαστα, ἀρξάμενοι ἀπὸ τῆς κατὰ τὸν Ἰόνιον κόλπον παραλίας· αὕτη δ' ἐστὶν εἰς ἣν ὁ ἔκπλους ὁ ἐκ τοῦ Ἀδρίου τελευτᾷ.

4 Ταύτης δὴ τὰ πρῶτα μέρη τὰ περὶ Ἐπίδαμνον καὶ Ἀπολλωνίαν ἐστίν. ἐκ δὲ τῆς Ἀπολλωνίας εἰς Μακεδονίαν ἡ Ἐγνατία ἐστὶν ὁδὸς πρὸς ἕω, βεβηματισμένη

κατὰ μίλιον καὶ κατεστηλωμένη μέχρι Κυψέλων καὶ Ἕβρου ποταμοῦ· μιλίων δ᾽ ἐστὶ πεντακοσίων τριάκοντα πέντε· λογιζομένῳ δέ, ὡς μὲν οἱ πολλοί, τὸ μίλιον ὀκταστάδιον τετρακισχίλιοι ἂν εἶεν στάδιοι καὶ ἐπ᾽ αὐτοῖς διακόσιοι ὀγδοήκοντα, ὡς δὲ Πολύβιος προστιθεὶς τῷ ὀκτασταδίῳ δίπλεθρον, ὅ ἐστι τρίτον σταδίου, προσθετέον ἄλλους σταδίους ἑκατὸν ἑβδομή- C.323 κοντα ὀκτώ, τὸ τρίτον τοῦ τῶν μιλίων ἀριθμοῦ. συμβαίνει δ᾽ ἀπὸ ἴσου διαστήματος συμπίπτειν εἰς τὴν αὐτὴν ὁδὸν τούς τ᾽ ἐκ τῆς Ἀπολλωνίας ὁρμηθέντας καὶ τοὺς ἐξ Ἐπιδάμνου. ἡ μὲν οὖν πᾶσα Ἐγνατία καλεῖται, ἡ δὲ πρώτη ἐπὶ Κανδαυίας λέγεται ὄρους Ἰλλυρικοῦ, διὰ Λυχνιδοῦ πόλεως καὶ Πυλῶνος τόπου ὁρίζοντος ἐν τῇ ὁδῷ τήν τε Ἰλλυρίδα καὶ τὴν Μακεδονίαν· ἐκεῖθεν δ᾽ ἐστὶ παρὰ Βαρνοῦντα διὰ Ἡρακλείας καὶ Λυγκηστῶν καὶ Ἐορδῶν εἰς Ἔδεσσαν καὶ Πέλλαν μέχρι Θεσσαλονικείας· μίλια δ᾽ ἐστί, φησὶ Πολύβιος, ταῦτα διακόσια ἑξήκοντα ἑπτά. ταύτην δὴ τὴν ὁδὸν ἐκ τῶν περὶ τὴν Ἐπίδαμνον καὶ τὴν Ἀπολλωνίαν τόπων ἰοῦσιν ἐν δεξιᾷ μέν ἐστι τὰ Ἠπειρωτικὰ ἔθνη κλυζόμενα τῷ Σικελικῷ πελάγει μέχρι τοῦ Ἀμβρακικοῦ κόλπου, ἐν ἀριστερᾷ δὲ τὰ ὄρη τὰ τῶν Ἰλλυριῶν ἃ προδιήλθομεν, καὶ τὰ ἔθνη τὰ παροικοῦντα μέχρι Μακεδονίας καὶ Παιόνων. εἶτ᾽ ἀπὸ μὲν Ἀμβρακικοῦ κόλπου τὰ νεύοντα ἐφεξῆς πρὸς ἕω, τὰ ἀντιπαρήκοντα τῇ Πελοποννήσῳ, τῆς Ἑλλάδος ἐστίν· εἶτ᾽ ἐκπίπτει [εἰς] τὸ Αἰγαῖον πέλαγος ἀπολιπόντα ἐν δεξιᾷ τὴν Πελοπόννησον ὅλην. ἀπὸ δὲ τῆς ἀρχῆς τῶν Μακεδονικῶν ὀρῶν καὶ τῶν Παιονικῶν μέχρι Στρυμόνος ποταμοῦ Μακεδόνες τε οἰκοῦσι καὶ Παίονες καί τινες τῶν ὀρεινῶν Θρᾳκῶν· τὰ δὲ πέραν Στρυμόνος ἤδη μέχρι τοῦ Ποντικοῦ στόματος καὶ τοῦ Αἵμου πάντα Θρᾳκῶν ἔστι πλὴν τῆς

παραλίας· αὕτη δ' ὑφ' Ἑλλήνων οἰκεῖται, τῶν μὲν ἐπὶ τῇ Προποντίδι ἱδρυμένων, τῶν δὲ ἐφ' Ἑλλησπόντῳ καὶ τῷ Μέλανι κόλπῳ, τῶν δ' ἐπὶ τῷ Αἰγαίῳ. τὸ δ' Αἰγαῖον πέλαγος δύο κλύζει πλευρὰς τῆς Ἑλλάδος, τὴν μὲν πρὸς ἕω βλέπουσαν, τείνουσαν δὲ ἀπὸ Σουνίου πρὸς τὴν ἄρκτον μέχρι τοῦ Θερμαίου κόλπου καὶ Θεσσαλονικείας Μακεδονικῆς πόλεως, ἣ νῦν μάλιστα τῶν ἄλλων εὐανδρεῖ, τὴν δὲ πρὸς νότον τὴν Μακεδονικὴν ἀπὸ Θεσσαλονικείας μέχρι Στρυμόνος· τινὲς δὲ καὶ τὴν ἀπὸ Στρυμόνος μέχρι Νέστου τῇ Μακεδονίᾳ προσνέμουσιν, ἐπειδὴ Φίλιππος ἐσπούδασε διαφερόντως περὶ ταῦτα τὰ χωρία ὥστ' ἐξιδιώσασθαι, καὶ συνεστήσατο προσόδους μεγίστας ἐκ τῶν μετάλλων καὶ τῆς ἄλλης εὐφυΐας τῶν τόπων. ἀπὸ δὲ Σουνίου μέχρι Πελοποννήσου τὸ Μυρτῷον ἔστι καὶ Κρητικὸν πέλαγος καὶ Λιβυκὸν σὺν τοῖς κόλποις μέχρι τοῦ Σικελικοῦ· τοῦτο δὲ καὶ τὸν Ἀμβρακικὸν καὶ Κορινθιακὸν καὶ Κρισαῖον ἐκπληροῖ κόλπον.

Τῶν μὲν οὖν Ἠπειρωτῶν ἔθνη φησὶν εἶναι Θεό- 5
πομπος τετταρεσκαίδεκα, τούτων δ' ἐνδοξότατα Χάονες καὶ Μολοττοὶ διὰ τὸ ἄρξαι ποτὲ πάσης τῆς Ἠπειρώτιδος πρότερον μὲν Χάονας, ὕστερον δὲ Μολοττούς, οἳ C.324
καὶ διὰ τὴν συγγένειαν τῶν βασιλέων ἐπὶ πλέον ηὐξήθησαν (τῶν γὰρ Αἰακιδῶν ἦσαν), καὶ διὰ τὸ παρὰ τούτοις εἶναι τὸ ἐν Δωδώνῃ μαντεῖον, παλαιόν τε καὶ ὀνομαστὸν ὄν. Χάονες μὲν οὖν καὶ Θεσπρωτοὶ καὶ μετὰ τούτους ἐφεξῆς Κασσωπαῖοι (καὶ οὗτοι δ' εἰσὶ Θεσπρωτοὶ) τὴν ἀπὸ τῶν Κεραυνίων ὀρῶν μέχρι τοῦ Ἀμβρακικοῦ κόλπου παραλίαν νέμονται χώραν εὐδαίμονα ἔχοντες· ὁ δὲ πλοῦς ἀπὸ τῶν Χαόνων ἀρξαμένῳ πρὸς ἀνίσχοντα ἥλιον καὶ πρὸς τὸν Ἀμβρακικὸν κόλπον καὶ τὸν Κορινθιακόν, ἐν δεξιᾷ ἔχοντι τὸ Αὐσόνιον πέλα-

γος, ἐν ἀριστερᾷ δὲ τὴν Ἤπειρον, εἰσὶ χίλιοι καὶ τριακόσιοι στάδιοι ἀπὸ τῶν Κεραυνίων ἐπὶ τὸ στόμα τοῦ Ἀμβρακικοῦ κόλπου. ἐν τούτῳ δ' ἐστὶ τῷ διαστήματι Πάνορμός τε λιμὴν μέγας ἐν μέσοις τοῖς Κεραυνίοις ὄρεσι, καὶ μετὰ ταῦτα Ὄγχησμος λιμὴν ἄλλος, καθ' ὃν τὰ δυσμικὰ ἄκρα τῆς Κορκυραίας ἀντίκειται, καὶ πάλιν ἄλλος Κασσιόπη, ἀφ' οὗ ἐπὶ Βρεντέσιον χίλιοι ἑπτακόσιοι στάδιοι· οἱ δ' ἴσοι καὶ ἐπὶ Τάραντα ἀπὸ ἄλλου ἀκρωτηρίου νοτιωτέρου τῆς Κασσιόπης ὃ καλοῦσι Φαλακρόν. μετὰ δὲ Ὄγχησμον Ποσείδιον καὶ Βουθρωτὸν ἐπὶ τῷ στόματι τοῦ Πηλώδους καλουμένου λιμένος ἱδρυμένον ἐν τόπῳ χερρονησίζοντι, ἐποίκους ἔχον Ῥωμαίους, καὶ τὰ Σύβοτα. εἰσὶ δὲ νησῖδες τὰ Σύβοτα τῆς μὲν Ἠπείρου μικρὸν ἀπέχουσαι, κατὰ δὲ τὸ ἑῷον ἄκρον τῆς Κορκυραίας τὴν Λευκίμμαν κείμεναι. καὶ ἄλλαι δ' ἐν τῷ παράπλῳ νησῖδες εἰσὶν οὐκ ἄξιαι μνήμης. ἔπειτα ἄκρα Χειμέριον καὶ Γλυκὺς λιμήν, εἰς ὃν ἐμβάλλει ὁ Ἀχέρων ποταμός, ῥέων ἐκ τῆς Ἀχερουσίας λίμνης καὶ δεχόμενος πλείους ποταμοὺς ὥστε καὶ γλυκαίνειν τὸν κόλπον· ῥεῖ δὲ καὶ ὁ Θύαμις πλησίον. ὑπέρκειται δὲ τούτου μὲν τοῦ κόλπου Κίχυρος, ἡ πρότερον Ἐφύρα, πόλις Θεσπρωτῶν· τοῦ δὲ κατὰ Βουθρωτὸν ἡ Φοινίκη. ἐγγὺς δὲ τῆς Κιχύρου πολίχνιον Βουχέτιον Κασσωπαίων μικρὸν ὑπὲρ τῆς θαλάττης ὄν, καὶ Ἐλάτρια καὶ Πανδοσία καὶ Βατίαι ἐν μεσογαίᾳ, καθήκει δ' αὐτῶν ἡ χώρα μέχρι τοῦ κόλπου. μετὰ δὲ Γλυκὺν λιμένα ἐφεξῆς εἰσι δύο ἄλλοι λιμένες, ὁ μὲν ἐγγυτέρω καὶ ἐλάττων Κόμαρος ἰσθμὸν ποιῶν ἑξήκοντα σταδίων πρὸς τὸν Ἀμβρακικὸν κόλπον καὶ τὸ τοῦ Σεβαστοῦ Καίσαρος κτίσμα τὴν Νικόπολιν· ὁ δὲ ἀπωτέρω καὶ μείζων καὶ ἀμείνων πλησίον τοῦ στό-

ματος τοῦ κόλπου, διέχων τῆς Νικοπόλεως ὅσον δώδεκα σταδίους.

Ἐφεξῆς δὲ τὸ στόμα τοῦ Ἀμβρακικοῦ κόλπου· τού- C.325 6 του δὲ τοῦ κόλπου τὸ μὲν στόμα μικρῷ τοῦ τετρασταδίου μεῖζον, ὁ δὲ κύκλος καὶ τριακοσίων σταδίων, εὐλίμενος δὲ πᾶς. οἰκοῦσι δὲ τὰ μὲν ἐν δεξιᾷ εἰσπλέουσι τῶν Ἑλλήνων Ἀκαρνᾶνες· καὶ ἱερὸν τοῦ Ἀκτίου Ἀπόλλωνος ἐνταῦθά ἐστι πλησίον τοῦ στόματος, λόφος τις ἐφ᾽ ᾧ ὁ νεώς, καὶ ὑπ᾽ αὐτῷ πεδίον ἄλσος ἔχον καὶ νεώρια, ἐν οἷς ἀνέθηκε Καῖσαρ τὴν δεκαναΐαν ἀκροθίνιον, ἀπὸ μονοκρότου μέχρι δεκήρους· ὑπὸ πυρὸς δ᾽ ἠφανίσθαι καὶ οἱ νεώσοικοι λέγονται καὶ τὰ πλοῖα· ἐν ἀριστερᾷ δὲ ἡ Νικόπολις καὶ τῶν Ἠπειρωτῶν οἱ Κασσωπαῖοι μέχρι τοῦ μυχοῦ τοῦ κατὰ Ἀμβρακίαν· ὑπέρκειται δὲ αὕτη τοῦ μυχοῦ μικρόν, Γόργου τοῦ Κυψέλου κτίσμα· παραρρεῖ δ᾽ αὐτὴν ὁ Ἄρατθος ποταμὸς ἀνάπλουν ἔχων ἐκ θαλάττης εἰς αὐτὴν ὀλίγων σταδίων, ἀρχόμενος ἐκ Τύμφης ὄρους καὶ τῆς Παρωραίας. ηὐτύχει μὲν οὖν καὶ πρότερον ἡ πόλις αὕτη διαφερόντως (τὴν γοῦν ἐπωνυμίαν ἐντεῦθεν ἔσχηκεν ὁ κόλπος), μάλιστα δ᾽ ἐκόσμησεν αὐτὴν Πύρρος βασιλείῳ χρησάμενος τῷ τόπῳ· Μακεδόνες δ᾽ ὕστερον καὶ Ῥωμαῖοι καὶ ταύτην καὶ τὰς ἄλλας κατεπόνησαν τοῖς συνεχέσι πολέμοις διὰ τὴν ἀπείθειαν, ὥστε τὸ τελευταῖον ὁ Σεβαστὸς ὁρῶν ἐκλελειμμένας τελέως τὰς πόλεις εἰς μίαν συνῴκισε τὴν ὑπ᾽ αὐτοῦ κληθεῖσαν Νικόπολιν ἐν τῷ κόλπῳ τούτῳ, ἐκάλεσε δ᾽ ἐπώνυμον τῆς νίκης, ἐν ᾗ κατεναυμάχησεν Ἀντώνιον πρὸ τοῦ στόματος τοῦ κόλπου καὶ τὴν Αἰγυπτίων βασίλισσαν Κλεοπάτραν παροῦσαν ἐν τῷ ἀγῶνι καὶ αὐτήν. ἡ μὲν οὖν Νικόπολις εὐανδρεῖ καὶ λαμβάνει καθ᾽ ἡμέραν ἐπίδοσιν, χώραν τε ἔχουσα πολλὴν καὶ τὸν ἐκ τῶν λα-

φύρων κόσμον, τό τε κατασκευασθὲν τέμενος ἐν τῷ προαστείῳ τὸ μὲν εἰς τὸν ἀγῶνα τὸν πεντετηρικὸν ἐν ἄλσει ἔχοντι γυμνάσιόν τε καὶ στάδιον, τὸ δ' ἐν τῷ ὑπερκειμένῳ τοῦ ἄλσους ἱερῷ λόφῳ τοῦ Ἀπόλλωνος. ἀποδέδεικται δ' ὁ ἀγὼν Ὀλύμπιος, τὰ Ἄκτια, ἱερὸς τοῦ Ἀκτίου Ἀπόλλωνος, τὴν δ' ἐπιμέλειαν ἔχουσιν αὐτοῦ Λακεδαιμόνιοι. αἱ δ' ἄλλαι κατοικίαι περιπόλιοι τῆς Νικοπόλεώς εἰσιν. ἤγετο δὲ καὶ πρότερον τὰ Ἄκτια τῷ θεῷ, στεφανίτης ἀγών, ὑπὸ τῶν περιοίκων· νυνὶ δ' ἐντιμότερον ἐποίησεν ὁ Καῖσαρ.

7 Μετὰ δὲ τὴν Ἀμβρακίαν τὸ Ἄργος ἐστὶ τὸ Ἀμφιλοχικόν, κτίσμα Ἀλκμαίωνος καὶ τῶν παίδων. Ἔφορος μὲν οὖν φησι τὸν Ἀλκμαίωνα μετὰ τὴν Ἐπιγόνων ἐπὶ τὰς Θήβας στρατείαν παρακληθέντα ὑπὸ Διομήδους συνελθεῖν εἰς Αἰτωλίαν αὐτῷ καὶ συγκατακτήσασθαι ταύτην τε καὶ τὴν Ἀκαρνανίαν· καλοῦντος δ' αὐτοὺς ἐπὶ τὸν Τρωικὸν πόλεμον Ἀγαμέμνονος, τὸν
C.326 μὲν Διομήδη πορευθῆναι, τὸν δ' Ἀλκμαίωνα μείναντα ἐν τῇ Ἀκαρνανίᾳ τὸ Ἄργος κτίσαι, καλέσαι δ' Ἀμφιλοχικὸν ἐπώνυμον τοῦ ἀδελφοῦ, Ἴναχον δὲ τὸν διὰ τῆς χώρας ῥέοντα ποταμὸν εἰς τὸν κόλπον ἀπὸ τοῦ κατὰ τὴν Ἀργείαν προσαγορεῦσαι. Θουκυδίδης δέ φησιν αὐτὸν Ἀμφίλοχον μετὰ τὴν ἐκ Τροίας ἐπάνοδον δυσαρεστοῦντα τοῖς ἐν Ἄργει παρελθεῖν εἰς τὴν Ἀκαρνανίαν, διαδεξάμενον δὲ τὴν τἀδελφοῦ δυναστείαν κτίσαι τὴν πόλιν ἐπώνυμον ἑαυτοῦ.

Ἠπειρῶται δ' εἰσὶ καὶ Ἀμφίλοχοι καὶ οἱ ὑπερκείμενοι καὶ συνάπτοντες τοῖς Ἰλλυρικοῖς ὄρεσι, τραχεῖαν οἰκοῦντες χώραν, Μολοττοί τε καὶ Ἀθαμᾶνες καὶ Αἴθικες καὶ Τυμφαῖοι καὶ Ὀρέσται Παρωραῖοί τε καὶ Ἀτιντᾶνες, οἱ μὲν πλησιάζοντες τοῖς Μακεδόσι μᾶλλον οἱ δὲ τῷ Ἰονίῳ κόλπῳ. λέγεται δὲ τὴν Ὀρεστιάδα

κατασχεῖν ποτε Ὀρέστης φεύγων τὸν τῆς μητρὸς φόνον καὶ καταλιπεῖν ἐπώνυμον ἑαυτοῦ τὴν χώραν, κτίσαι δὲ καὶ πόλιν, καλεῖσθαι δ' αὐτὴν Ἄργος Ὀρεστικόν. ἀναμέμικται δὲ τούτοις τὰ Ἰλλυρικὰ ἔθνη τὰ πρὸς τῷ νοτίῳ μέρει τῆς ὀρεινῆς καὶ τὰ ὑπὲρ τοῦ Ἰονίου κόλπου· τῆς γὰρ Ἐπιδάμνου καὶ τῆς Ἀπολλωνίας μέχρι τῶν Κεραυνίων ὑπεροικοῦσι Βυλλίονές τε καὶ Ταυλάντιοι καὶ Παρθῖνοι καὶ Βρῦγοι· πλησίον δέ που καὶ τὰ ἀργυρεῖα τὰ ἐν Δαμαστίῳ, περὶ ἃ Δυέσται συνεστήσαντο τὴν δυναστείαν καὶ Ἐγχέλειοι, οὓς καὶ Σεσαρηθίους καλοῦσι· πρὸς δὲ τούτοις Λυγκῆσταί τε καὶ ἡ Δευρίοπος καὶ ἡ τρίπολις Πελαγονία καὶ Ἐορδοὶ καὶ Ἐλίμεια καὶ Ἐράτυρα. ταῦτα δὲ πρότερον μὲν κατεδυναστεύετο ἕκαστα, ὧν ἐν τοῖς Ἐγχελείοις οἱ Κάδμου καὶ Ἁρμονίας ἀπόγονοι ἦρχον, καὶ τὰ μυθευόμενα περὶ αὐτῶν ἐκεῖ δείκνυται. οὗτοι μὲν οὖν οὐχ ὑπὸ ἰθαγενῶν ἤρχοντο· οἱ δὲ Λυγκῆσται ὑπ' Ἀρραβαίῳ ἐγένοντο τοῦ Βακχιαδῶν γένους ὄντι· τούτου δ' ἦν θυγατριδῆ ἡ Φιλίππου μήτηρ τοῦ Ἀμύντου Εὐρυδίκη, Σίρρα δὲ θυγάτηρ· καὶ τῶν Ἠπειρωτῶν δὲ Μολοττοὶ ὑπὸ Πύρρῳ τῷ Νεοπτολέμου τοῦ Ἀχιλλέως καὶ τοῖς ἀπογόνοις αὐτοῦ Θετταλοῖς οὖσι γεγονότες· οἱ λοιποὶ δὲ ὑπὸ ἰθαγενῶν ἤρχοντο· εἶτ' ἐπικρατούντων ἀεί τινων κατέστρεψεν ἅπαντα εἰς τὴν Μακεδόνων ἀρχήν, πλὴν ὀλίγων τῶν ὑπὲρ τοῦ Ἰονίου κόλπου. καὶ δὴ καὶ τὰ περὶ Λύγκον καὶ Πελαγονίαν καὶ Ὀρεστιάδα καὶ Ἐλίμειαν τὴν ἄνω Μακεδονίαν ἐκάλουν, οἱ δ' ὕστερον καὶ ἐλευθέραν· ἔνιοι δὲ καὶ σύμπασαν τὴν μέχρι Κορκύρας Μακεδονίαν προσαγορεύουσιν, αἰτιολογοῦντες ἅμα C.327 ὅτι καὶ κουρᾷ καὶ διαλέκτῳ καὶ χλαμύδι καὶ ἄλλοις τοιούτοις χρῶνται παραπλησίως· ἔνιοι δὲ καὶ δίγλωττοί εἰσι. καταλυθείσης δὲ τῆς Μακεδόνων ἀρχῆς ὑπὸ

Ῥωμαίους ἔπεσε. διὰ δὲ τούτων ἐστὶ τῶν ἐθνῶν ἡ Ἐγνατία ὁδὸς ἐξ Ἐπιδάμνου καὶ Ἀπολλωνίας· περὶ δὲ τὴν ἐπὶ Κανδαβίας ὁδὸν αἵ τε λίμναι εἰσὶν αἱ περὶ Λυχνιδὸν ταριχείας ἰχθύων αὐτάρκεις ἔχουσαι, καὶ ποταμοὶ οἵ τε εἰς τὸν Ἰόνιον κόλπον ἐκπίπτοντες καὶ οἱ ἐπὶ τὰ νότια μέρη, ὅ τ' Ἴναχος καὶ ὁ Ἄρατθος καὶ ὁ Ἀχελῶος καὶ ὁ Εὔηνος ὁ Λυκόρμας πρότερον καλούμενος, ὁ μὲν εἰς τὸν κόλπον τὸν Ἀμβρακικὸν ἐμβάλλων ὁ δὲ εἰς τὸν Ἀχελῶον, αὐτὸς δὲ ὁ Ἀχελῶος εἰς τὴν θάλατταν καὶ ὁ Εὔηνος, ὁ μὲν τὴν Ἀκαρνανίαν διεξιὼν ὁ δὲ τὴν Αἰτωλίαν· ὁ δὲ Ἐρίγων πολλὰ δεξάμενος ῥεύματα ἐκ τῶν Ἰλλυρικῶν ὀρῶν καὶ Λυγκηστῶν καὶ Βρύγων καὶ Δευριόπων καὶ Πελαγόνων εἰς τὸν Ἀξιὸν ἐκδίδωσι.

9 Πρότερον μὲν οὖν καὶ πόλεις ἦσαν ἐν τοῖς ἔθνεσι τούτοις· τρίπολις γοῦν ἡ Πελαγονία ἐλέγετο, ἧς καὶ Ἄζωρος ἦν, καὶ ἐπὶ τῷ Ἐρίγωνι πᾶσαι αἱ τῶν Δευριόπων πόλεις ᾤκηντο, ὧν τὸ Βρυάνιον καὶ Ἀλαλκομεναὶ καὶ Στύβαρα· Κύδραι δὲ Βρύγων, Αἰγίνιον δὲ Τυμφαίων, ὅμορον Αἰθικίᾳ καὶ Τρίκκῃ· πλησίον δ' ἤδη τῆς τε Μακεδονίας καὶ τῆς Θετταλίας περὶ τὸ Ποῖον ὄρος καὶ τὴν Πίνδον Αἴθικές τε καὶ τοῦ Πηνειοῦ πηγαί, ὧν ἀμφισβητοῦσι Τυμφαῖοί τε καὶ [οἱ] ὑπὸ τῇ Πίνδῳ Θετταλοί· καὶ πόλις Ὀξύνεια παρὰ τὸν Ἴωνα ποταμὸν ἀπέχουσα Ἀζώρου τῆς τριπολίτιδος σταδίους ἑκατὸν εἴκοσι· πλησίον δὲ καὶ Ἀλαλκομεναὶ καὶ Αἰγίνιον καὶ Εὔρωπος καὶ αἱ τοῦ Ἴωνος εἰς τὸν Πηνειὸν συμβολαί. τότε μὲν οὖν, ὡς εἶπον, καίπερ οὖσα τραχεῖα καὶ ὀρῶν πλήρης, Τομάρου καὶ Πολυάνου καὶ ἄλλων πλειόνων, ὅμως εὐάνδρει ἥ τε Ἤπειρος πᾶσα καὶ ἡ Ἰλλυρίς· νῦν δὲ τὰ πολλὰ μὲν ἐρημία κατέχει, τὰ δ' οἰκούμενα κωμηδὸν καὶ ἐν ἐρειπίοις λείπεται.

10 Ἐκλέλοιπε δέ πως καὶ τὸ μαντεῖον τὸ ἐν Δωδώνῃ,

καθάπερ τἆλλα. ἔστι δ', ὥς φησιν Ἔφορος, Πελασγῶν ἵδρυμα· οἱ δὲ Πελασγοὶ τῶν περὶ τὴν Ἑλλάδα δυναστευσάντων ἀρχαιότατοι λέγονται· καὶ ὁ ποιητής φησιν οὕτω „Ζεῦ ἄνα Δωδωναῖε, Πελασγικέ," ὁ δ' Ἡσίοδος „Δωδώνην φηγόν τε, Πελασγῶν ἕδρανον ἦεν." περὶ μὲν οὖν τῶν Πελασγῶν ἐν τοῖς C.328 Τυρρηνικοῖς εἴρηται, περὶ δὲ Δωδώνης τοὺς μὲν περιοικοῦντας τὸ ἱερὸν διότι βάρβαροι διασαφεῖ καὶ ὁ Ὅμηρος ἐκ τῆς διαίτης, ἀνιπτόποδας χαμαιεύνας λέγων· πότερον δὲ χρὴ λέγειν Ἑλλούς, ὡς Πίνδαρος, ἢ Σελλούς, ὡς ὑπονοοῦσι παρ' Ὁμήρῳ κεῖσθαι, ἡ γραφὴ ἀμφίβολος οὖσα οὐκ ἐᾷ διισχυρίζεσθαι. Φιλόχορος δέ φησι καὶ τὸν περὶ Δωδώνην τόπον, ὥσπερ τὴν Εὔβοιαν, Ἑλλοπίαν κληθῆναι· καὶ γὰρ Ἡσίοδον οὕτω λέγειν „ἔστι τις Ἑλλοπίη, πολυλήιος ἠδ' εὐλείμων· „ἔνθα δὲ Δωδώνη τις ἐπ' ἐσχατιῇ πεπόλισται." οἴονται δέ, φησὶν ὁ Ἀπολλόδωρος, ἀπὸ τῶν ἑλῶν τῶν περὶ τὸ ἱερὸν οὕτω καλεῖσθαι· τὸν μέντοι ποιητὴν [οὐχ] οὕτω λέγειν Ἑλλοὺς ἀλλὰ Σελλοὺς ὑπολαμβάνει τοὺς περὶ τὸ ἱερόν, προσθεὶς ὅτι καὶ Σελλήεντα τινὰ ὀνομάζει ποταμόν. ὀνομάζει μὲν οὖν, ὅταν φῇ „τηλόθεν ἐξ Ἐφύρης ποταμοῦ ἄπο Σελλήεντος." [οὐ μέντοι, ὁ Σκήψιός φησι, τῆς] ἐν Θεσπρωτοῖς Ἐφύρας, ἀλλὰ τῆς ἐν τοῖς Ἠλείοις· ἐκεῖ γὰρ εἶναι τὸν Σελλήεντα, ἐν δὲ Θεσπρωτοῖς οὐδένα, οὐδ' ἐν Μολοττοῖς. τὰ δὲ μυθευόμενα περὶ τῆς δρυὸς καὶ τῶν πελειῶν καὶ εἴ τινα ἄλλα τοιαῦτα, καθάπερ καὶ [τὰ] περὶ Δελφῶν, τὰ μὲν ποιητικωτέρας ἐστὶ διατριβῆς τὰ δ' οἰκεῖα τῆς νῦν περιοδείας.

11 Ἡ Δωδώνη τοίνυν τὸ μὲν παλαιὸν ὑπὸ Θεσπρωτοῖς ἦν καὶ τὸ ὄρος ὁ Τόμαρος ἢ Τμάρος (ἀμφοτέρως γὰρ λέγεται), ὑφ' ᾧ κεῖται τὸ ἱερόν· καὶ οἱ τραγικοὶ

δὲ καὶ Πίνδαρος Θεσπρωτίδα εἰρήκασι τὴν Δωδώνην· ὕστερον δὲ ὑπὸ Μολοττοῖς ἐγένετο. ἀπὸ δὲ τοῦ Τομάρου τοὺς ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ λεγομένους ὑποφήτας τοῦ Διός, οὓς καὶ ἀνιπτόποδας χαμαιεύνας καλεῖ, τομούρους φασὶ λεχθῆναι· καὶ ἐν μὲν τῇ Ὀδυσσείᾳ οὕτω γράφουσί τινες ἅ φησιν Ἀμφίνομος, συμβουλεύων τοῖς μνηστῆρσι μὴ πρότερον ἐπιτίθεσθαι τῷ Τηλεμάχῳ πρὶν ἂν τὸν Δία ἔρωνται „εἰ μέν κ᾽ αἰνήσωσι „Διὸς μεγάλοιο τομοῦροι, αὐτός τε κτανέω, τούς τ᾽ „ἄλλους πάντας ἀνώξω· εἰ δέ κ᾽ ἀποτρεπέῃσι θεός, „παύεσθαι ἄνωγα.“ βέλτιον γὰρ εἶναι τομούρους ἢ θέμιστας γράφειν· οὐδαμοῦ γοῦν τὰ μαντεῖα θέμιστας λέγεσθαι παρὰ τῷ ποιητῇ, ἀλλὰ τὰς βουλὰς καὶ τὰ πολιτεύματα καὶ νομοθετήματα· τομούρους δ᾽ εἰρῆσθαι C.329 ἐπιτετμημένως οἷον τομαροφύλακας. οἱ μὲν οὖν νεώτεροι λέγουσιν τομούρους· [παρ᾽] Ὁμήρῳ δ᾽ ἁπλούστερον δεῖ δέχεσθαι θέμιστας καταχρηστικῶς καὶ βουλάς, τὰ προστάγματα καὶ τὰ βουλήματα τὰ μαντικά, καθάπερ καὶ τὰ νόμιμα· τοιοῦτον γὰρ καὶ τό „ἐκ δρυὸς ὑψικόμοιο Διὸς βουλὴν ἐπακοῦσαι.“

12 Κατ᾽ ἀρχὰς μὲν οὖν ἄνδρες ἦσαν οἱ προφητεύοντες· καὶ τοῦτ᾽ ἴσως καὶ ὁ ποιητὴς ἐμφαίνει· ὑποφήτας γὰρ καλεῖ, ἐν οἷς τάττοιντο κἂν οἱ προφῆται· ὕστερον δ᾽ ἀπεδείχθησαν τρεῖς γραῖαι, ἐπειδὴ καὶ σύνναος τῷ Διὶ προσαπεδείχθη καὶ ἡ Διώνη. Σουίδας μέντοι Θετταλοῖς μυθώδεις λόγους προσχαριζόμενος ἐκεῖθέν τέ φησιν εἶναι τὸ ἱερὸν μετενηνεγμένον ἐκ τῆς περὶ Σκοτοῦσσαν Πελασγίας (ἔστι δ᾽ ἡ Σκοτοῦσσα τῆς Πελασγιώτιδος Θετταλίας), συνακολουθῆσαί τε γυναῖκας τὰς πλείστας, ὧν ἀπογόνους εἶναι τὰς νῦν προφήτι-

15. post ἐπιτετμημένως: τμάρους

δας· ἀπὸ δὲ τούτου καὶ Πελασγικὸν Δία κεκλῆσθαι· Κινέας δ' ἔτι μυθωδέστερον.

— ΕΚ ΤΟΥ Ζ —

1 Κινέας δέ φησι πόλιν ἐν Θεσσαλίᾳ εἶναι καὶ φηγὸν καὶ τὸ τοῦ Διὸς μαντεῖον εἰς Ἤπειρον μετενεχθῆναι. Stephanus in Δωδώνη.

1a Ἦν δὲ πρότερον περὶ Σκοτοῦσσαν πόλιν τῆς Πελασγιώτιδος τὸ χρηστήριον· ἐμπρησθέντος δ' ὑπό τινων τοῦ δένδρου μετηνέχθη κατὰ χρησμὸν τοῦ Ἀπόλλωνος ἐν Δωδώνῃ. ἐχρησμῴδει δ' οὐ διὰ λόγων, ἀλλὰ διά τινων συμβόλων, ὥσπερ τὸ ἐν Λιβύῃ Ἀμμωνιακόν· ἴσως δέ τινα πτῆσιν αἱ τρεῖς περιστεραὶ ἐπέτοντο ἐξαίρετον, ἐξ ὧν αἱ ἱέρειαι παρατηρούμεναι προεθέσπιζον. φασὶ δὲ καὶ κατὰ τὴν τῶν Μολοττῶν καὶ Θεσπρωτῶν γλῶτταν τὰς γραίας πελίας καλεῖσθαι καὶ τοὺς γέροντας πελίους· καὶ ἴσως οὐκ ὄρνεα ἦσαν αἱ θρυλούμεναι πελειάδες, ἀλλὰ γυναῖκες γραῖαι τρεῖς περὶ τὸ ἱερὸν σχολάζουσαι. Epit. (i. e. epitome edita).

2 Ὅτι κατὰ Θεσπρωτοὺς καὶ Μολοττοὺς τὰς γραίας πελίας καὶ τοὺς γέροντας πελίους, καθάπερ καὶ παρὰ Μακεδόσι· πελιγόνας γοῦν καλοῦσιν ἐκεῖνοι τοὺς ἐν τιμαῖς, καθὰ παρὰ Λάκωσι καὶ Μασσαλιώταις τοὺς γέροντας· ὅθεν καὶ τὰς ἐν τῇ Δωδωναίᾳ δρυῒ μεμυθεῦσθαι πελείας φασίν. E. (i. e. epitome Vaticana).

3 Ὅτι ἡ παροιμία „τὸ ἐν Δωδώνῃ χαλκίον“ ἐντεῦθεν ὠνομάσθη· χαλκίον ἦν ἐν τῷ ἱερῷ ἔχον ὑπερκείμενον ἀνδριάντα κρατοῦντα μάστιγα χαλκῆν, ἀνάθημα Κορκυραίων· ἡ δὲ μάστιξ ἦν τριπλῆ ἁλυσιδωτὴ ἀπηρτημένους ἔχουσα ἐξ αὐτῆς ἀστραγάλους, οἳ πλήττοντες τὸ χαλκίον συνεχῶς, ὁπότε αἰωροῖντο ὑπὸ τῶν ἀνέμων, μακροὺς ἤχους ἀπειργάζοντο, ἕως ὁ μετρῶν τὸν

χρόνον ἀπὸ τῆς ἀρχῆς τοῦ ἤχου μέχρι τέλους καὶ ἐπὶ τετρακόσια προέλθοι· ὅθεν καὶ ἡ παροιμία ἐλέχθη „ἡ Κερκυραίων μάστιξ." Epit.

4 *Ἡ δὲ Παιονία τούτοις μὲν ἔστι πρὸς ἕω τοῖς ἔθνεσι, πρὸς δύσιν δὲ τοῖς Θρακίοις ὄρεσι, πρὸς ἄρκτον δ' ὑπέρκειται τοῖς Μακεδόσι, διὰ Γορτυνίου πόλεως καὶ Στόβων ἔχουσα τὰς εἰσβολὰς ἐπὶ τὰ πρὸς .... δι' ὧν ὁ Ἀξιὸς ῥέων δυσείσβολον ποιεῖ τὴν Μακεδονίαν ἐκ τῆς Παιονίας, ὡς ὁ Πηνειὸς διὰ τῶν Τεμπῶν φερόμενος ἀπὸ τῆς Ἑλλάδος αὐτὴν ἐρυμνοῖ· πρὸς νότον δὲ τοῖς Αὐταριάταις καὶ Δαρδανίοις καὶ Ἀρδιαίοις ὁμορεῖ· ἐκτέταται δὲ καὶ μέχρι Στρυμόνος ἡ Παιονία.* E.

5 *Ὅτι ὁ Ἁλιάκμων εἰς τὸν Θερμαῖον κόλπον ῥεῖ.* E.

6 *Ἡ δ' Ὀρεστὶς πολλὴ καὶ ὄρος ἔχει μέγα μέχρι τοῦ Κόρακος τῆς Αἰτωλίας καθῆκον καὶ τοῦ Παρνασσοῦ. περιοικοῦσι δ' αὐτοί τε Ὀρέσται καὶ Τυμφαῖοι καὶ οἱ ἐκτὸς Ἰσθμοῦ Ἕλληνες οἱ περὶ Παρνασσὸν καὶ τὴν Οἴτην καὶ Πίνδον. ἑνὶ μὲν δὴ κοινῷ ὀνόματι καλεῖται Βοῖον τὸ ὄρος, κατὰ μέρη δὲ πολυώνυμόν ἐστιν. φασὶ δ' ἀπὸ τῶν ὑψηλοτάτων σκοπιῶν ἀφορᾶσθαι τό τε Αἰγαῖον πέλαγος καὶ τὸ Ἀμβρακικὸν καὶ τὸ Ἰόνιον, πρὸς ὑπερβολὴν οἶμαι λέγοντες. καὶ τὸ Πτελεὸν ἱκανῶς ἐστιν ἐν ὕψει τὸ περικείμενον τῷ Ἀμβρακικῷ κόλπῳ, τῇ μὲν ἐκτεινόμενον μέχρι τῆς Κερκυραίας τῇ δ' ἐπὶ τὴν κατὰ Λευκάδα θάλασσαν.* E.

7 *Ὅτι ἐπὶ γέλωτι ἐν παροιμίας μέρει *γελᾶται Κέρκυρα ταπεινωθεῖσα τοῖς πολλοῖς πολέμοις.* E.

8 *Ὅτι ἡ Κόρκυρα τὸ παλαιὸν εὐτυχὴς ἦν καὶ δύναμιν ναυτικὴν πλείστην εἶχεν, ἀλλ' ὑπὸ πολέμων τινῶν καὶ τυράννων ἐφθάρη· καὶ ὕστερον ὑπὸ Ῥωμαίων ἐλευθερωθεῖσα οὐκ ἐπῃνέθη, ἀλλ' ἐπὶ λοιδορίᾳ παροι-*

μίαν ἔλαβεν „ἐλευθέρα Κόρκυρα, χέζ' ὅπου θέλεις.“ Epit.

Λοιπὴ δ' ἐστὶ τῆς Εὐρώπης ἥ τε Μακεδονία καὶ 9
τῆς Θρᾴκης τὰ συνεχῆ ταύτῃ μέχρι Βυζαντίου καὶ ἡ Ἑλλὰς καὶ αἱ προσεχεῖς νῆσοι. ἔστι μὲν οὖν Ἑλλὰς καὶ ἡ Μακεδονία· νυνὶ μέντοι τῇ φύσει τῶν τόπων ἀκολουθοῦντες καὶ τῷ σχήματι χωρὶς ἔγνωμεν αὐτὴν ἀπὸ τῆς ἄλλης Ἑλλάδος τάξαι καὶ συνάψαι πρὸς τὴν ὅμορον αὐτῇ Θρᾴκην μέχρι τοῦ στόματος τοῦ Εὐξείνου καὶ τῆς Προποντίδος. εἶτα μετ' ὀλίγα μέμνηται Κυψέλων καὶ τοῦ Ἕβρου ποταμοῦ. καταγράφει δὲ καί τι σχῆμα παραλληλόγραμμον, ἐν ᾧ ἡ σύμπασα Μακεδονία ἐστίν. E.

Ὅτι ἡ Μακεδονία περιορίζεται ἐκ μὲν δυσμῶν τῇ 10
παραλίᾳ τοῦ Ἀδρίου, ἐξ ἀνατολῶν δὲ τῇ παραλλήλῳ ταύτης μεσημβρινῇ γραμμῇ τῇ διὰ τῶν ἐκβολῶν Ἕβρου ποταμοῦ καὶ Κυψέλων πόλεως, ἐκ βορρᾶ δὲ τῇ νοουμένῃ εὐθείᾳ γραμμῇ τῇ διὰ Βερτίσκου ὄρους καὶ Σκάρδου καὶ Ὀρβήλου καὶ Ῥοδόπης καὶ Αἵμου· τὰ γὰρ ὄρη ταῦτα ἀρχόμενα ἀπὸ τοῦ Ἀδρίου διήκει κατὰ εὐθεῖαν γραμμὴν ἕως τοῦ Εὐξείνου, ποιοῦντα χερρόνησον μεγάλην πρὸς νότον, τήν τε Θρᾴκην ὁμοῦ καὶ Μακεδονίαν καὶ Ἤπειρον καὶ Ἀχαΐαν· ἐκ νότου δὲ τῇ Ἐγνατίᾳ ὁδῷ ἀπὸ Δυρραχίου πόλεως πρὸς ἀνατολὰς ἰοῦσιν ἕως Θεσσαλονικείας· καὶ ἔστι τὸ σχῆμα τοῦτο τῆς Μακεδονίας παραλληλογράμμου ἔγγιστα. Epit.

Ὅτι Ἠμαθία ἐκαλεῖτο πρότερον ἡ νῦν Μακεδο- 11
νία. ἔλαβε δὲ τοὔνομα τοῦτο ἀπ' ἀρχαίου τινὸς τῶν ἡγεμόνων Μακεδόνος. ἦν δὲ καὶ πόλις Ἠμαθία πρὸς θαλάσσῃ. κατεῖχον δὲ τὴν χώραν ταύτην Ἠπειρωτῶν τινες καὶ Ἰλλυριῶν, τὸ δὲ πλεῖστον Βοττιαῖοι καὶ Θρᾷκες· οἱ μὲν ἐκ Κρήτης, ὥς φασι, τὸ γένος ὄντες, ἡγε-

*μόνα ἔχοντες Βόττωνα, Θρᾳκῶν δὲ Πίερες μὲν ἐνέμοντο τὴν Πιερίαν καὶ τὰ περὶ τὸν Ὄλυμπον, Παίονες δὲ [τὰ] περὶ τὸν Ἀξιὸν ποταμὸν καὶ τὴν καλουμένην διὰ τοῦτο Ἀμφαξῖτιν, Ἠδωνοὶ δὲ καὶ Βισάλται τὴν λοιπὴν μέχρι Στρυμόνος· ὧν οἱ μὲν αὐτὸ τοῦτο προσηγορεύοντο Βισάλται, Ἠδωνῶν δ' οἱ μὲν Μυγδόνες οἱ δὲ *Ἤδωνες οἱ δὲ Σίθωνες. τούτων δὲ πάντων οἱ Ἀργεάδαι καλούμενοι κατέστησαν κύριοι καὶ Χαλκιδεῖς οἱ ἐν Εὐβοίᾳ. ἐπῆλθον δὲ καὶ Χαλκιδεῖς οἱ ἐν Εὐβοίᾳ ἐπὶ τὴν τῶν Σιθώνων καὶ συνῴκισαν πόλεις ἐν αὐτῇ περὶ τριάκοντα, ἐξ ὧν ὕστερον ἐκβαλλόμενοι συνῆλθον εἰς μίαν οἱ πλείους αὐτῶν, εἰς τὴν Ὄλυνθον· ὠνομάζοντο δ' οἱ ἐπὶ Θρᾴκης Χαλκιδεῖς.* E.

11a *Τὸ δὲ ἐθνικὸν τοῦ Βόττεια διὰ τοῦ ῑ, ὡς Στράβων ἐν ζ. καλεῖται δὲ ἀπὸ Βόττωνος τοῦ Κρητός.* Etymol. M. p. 206, 6.

12 *Ὅτι Πηνειὸς μὲν ὁρίζει τὴν κάτω καὶ πρὸς θαλάττῃ Μακεδονίαν ἀπὸ Θετταλίας καὶ Μαγνησίας, Ἁλιάκμων δὲ τὴν ἄνω, καὶ ἔτι τοὺς Ἠπειρώτας καὶ τοὺς Παίονας καὶ αὐτὸς καὶ ὁ Ἐρίγων καὶ ὁ Ἀξιὸς καὶ ἕτεροι.* E.

13 *Ὅτι ἐστὶ τῆς παραλίας τῆς Μακεδονικῆς ἀπὸ τοῦ μυχοῦ τοῦ Θερμαίου κόλπου καὶ Θεσσαλονικείας ἡ μὲν τεταμένη πρὸς νότον μέχρι Σουνίου, ἡ δὲ πρὸς ἕω μέχρι τῆς Θρᾳκίας χερρονήσου, γωνίαν τινὰ ποιοῦσα κατὰ τὸν μυχόν. εἰς ἑκάτερον δὲ καθηκούσης τῆς Μακεδονίας, ἀπὸ τῆς προτέρας λεχθείσης ἀρκτέον. τὰ μὲν δὴ πρῶτα μέρη τὰ περὶ Σούνιον ὑπερκειμένην ἔχει τὴν Ἀττικὴν σὺν τῇ Μεγαρικῇ μέχρι τοῦ Κρισαίου κόλπου· μετὰ δὲ ταύτην ἡ Βοιωτική ἐστι παραλία ἡ πρὸς Εὔβοιαν· ὑπέρκειται δ' αὐτῆς ἡ λοιπὴ Βοιωτία ἐπὶ δύσιν παράλληλος τῇ Ἀττικῇ. λέγει δὲ καὶ τὴν Ἐγνα-*

τίαν ὁδὸν τελευτᾶν εἰς Θεσσαλονίκειαν ἀπὸ τοῦ Ἰονίου κόλπου. E.

Τῶν ταινιῶν, φησίν, ἀφοριοῦμεν πρώτους τοὺς 14
περὶ Πηνειὸν οἰκοῦντας καὶ τὸν Ἁλιάκμονα πρὸς θαλάττῃ. ῥεῖ δ' ὁ Πηνειὸς ἐκ τοῦ Πίνδου ὄρους διὰ μέσης τῆς Θετταλίας πρὸς ἕω. διελθὼν δὲ τὰς τῶν Λαπιθῶν πόλεις καὶ Περραιβῶν τινας συνάπτει τοῖς Τέμπεσι, παραλαβὼν πλείους ποταμούς, ὧν καὶ ὁ Εὔρωπος, ὃν Τιταρήσιον εἶπεν ὁ ποιητής, τὰς πηγὰς ἔχοντα ἀπὸ τοῦ Τιταρίου ὄρους συμφυοῦς τῷ Ὀλύμπῳ, ὃ κἀντεῦθεν ἄρχεται διορίζειν τὴν Μακεδονίαν ἀπὸ τῆς Θετταλίας. ἔστι γὰρ τὰ Τέμπη στενὸς αὐλὼν μεταξὺ Ὀλύμπου καὶ Ὄσσης. φέρεται δ' ὁ Πηνειὸς ἀπὸ τῶν στενῶν τούτων ἐπὶ σταδίους τετταράκοντα, ἐν ἀριστερᾷ μὲν ἔχων τὸν Ὄλυμπον, Μακεδονικὸν ὄρος μετεωρότατον, [ἐν δὲ δεξιᾷ τὴν Ὄσσαν, ἐγγὺς] τῶν ἐκβολῶν τοῦ ποταμοῦ. ἐπὶ μὲν δὴ ταῖς ἐκβολαῖς τοῦ Πηνειοῦ ἐν δεξιᾷ Γυρτὼν ἵδρυται, Περραιβικὴ πόλις καὶ Μαγνῆτις, ἐν ᾗ Πειρίθους τε καὶ Ἰξίων ἐβασίλευσαν· ἀπέχει δ' ὅσον σταδίους ἑκατὸν τῆς Γυρτῶνος πόλις Κραννών, καί φασιν, ὅταν εἴπῃ ὁ ποιητής „τὼ μὲν ἄρ' ἐκ „Θρῄκης“ καὶ ἑξῆς, Ἐφύρους μὲν λέγεσθαι τοὺς Κραννωνίους, Φλεγύας δὲ τοὺς Γυρτωνίους· ἐπὶ δὲ θάτερα ἡ Πιερία. E.

Ὅτι ὁ Πηνειὸς ποταμός, ῥέων διὰ τῶν Τεμπῶν, 15
καὶ ἀρχόμενος ἀπὸ τοῦ Πίνδου ὄρους, καὶ διὰ μέσης Θεσσαλίας καὶ τῶν Λαπιθῶν καὶ Περραιβῶν, δεχόμενός τε τὸν Εὔρωπον ποταμόν, ὃν Ὅμηρος Τιταρήσιον ὠνόμασε, διορίζει Μακεδονίαν μὲν πρὸς βορρᾶν, Θεσσαλίαν δὲ πρὸς νότον. αἱ δὲ τοῦ Εὐρώπου ποταμοῦ πηγαὶ ἐκ τοῦ Τιταρίου ὄρους ἄρχονται, ὅ ἐστι συνεχὲς τῷ Ὀλύμπῳ. καὶ ἔστιν ὁ μὲν Ὄλυμπος

τῆς Μακεδονίας, ἡ δὲ Ὄσσα τῆς Θεσσαλίας καὶ τὸ Πήλιον. Epit.

16 Ὅτι ὑπὸ ταῖς ὑπωρείαις τοῦ Ὀλύμπου παρὰ τὸν Πηνειὸν ποταμὸν Γυρτὼν ἔστι, πόλις Περραιβικὴ καὶ Μαγνῆτις, ἐν ᾗ Πειρίθους τε καὶ Ἰξίων ἦρξαν. ἀπέχει
C.330 δ' ἑκατὸν τῆς Γυρτῶνος πόλεως Κραννών, καί φασιν, ὅταν εἴπῃ ὁ ποιητής „τὼ μὲν ἄρ' ἐκ Θρῄκης,“ Ἐφύρους μὲν λέγεσθαι τοὺς Κραννωνίους, Φλεγύας δὲ τοὺς Γυρτωνίους. Epit.

16[a] Ἀπέχει δὲ σταδίους ἑκατὸν Γυρτῶνος ἡ Κραννὼν πόλις, ὥς φησι Στράβων. Stephanus in Κραννών.

16[b] Ὁμόλιον πόλις Μακεδονίας καὶ Μαγνησίας. Στράβων ἑβδόμῃ. Stephanus v. Ὁμόλιον. cf. Strabo 9 p. 443.

17 Ὅτι τὸ Δῖον ἡ πόλις οὐκ ἐν τῷ αἰγιαλῷ τοῦ Θερμαίου κόλπου ἐστὶν ἐν ταῖς ὑπωρείαις τοῦ Ὀλύμπου, ἀλλ' ὅσον ἑπτὰ ἀπέχει σταδίους· ἔχει δ' ἡ πόλις τὸ Δῖον κώμην πλησίον Πίμπλειαν, ἔνθα Ὀρφεὺς διέτριβεν. Epit.

18 Ὅτι ὑπὸ τῷ Ὀλύμπῳ πόλις Δῖον. ἔχει δὲ κώμην πλησίον Πίμπλειαν· ἐνταῦθα τὸν Ὀρφέα διατρῖψαί φησι τὸν Κίκονα, ἄνδρα γόητα, ἀπὸ μουσικῆς ἅμα καὶ μαντικῆς καὶ τῶν περὶ τὰς τελετὰς ὀργιασμῶν ἀγυρτεύοντα τὸ πρῶτον, εἶτ' ἤδη καὶ μειζόνων ἀξιοῦντα ἑαυτὸν καὶ ὄχλον καὶ δύναμιν κατασκευαζόμενον· τοὺς μὲν οὖν ἑκουσίως ἀποδέχεσθαι, τινὰς δ' ὑπιδομένους ἐπιβουλὴν καὶ βίαν ἐπισυστάντας διαφθεῖραι αὐτόν. ἐνταῦθα πλησίον καὶ τὰ Λείβηθρα. E.

19 Ὅτι τὸ παλαιὸν οἱ μάντεις καὶ μουσικὴν εἰργάζοντο. Epit.

20 Μετὰ δὲ τὸ Δῖον αἱ τοῦ Ἁλιάκμονος ἐκβολαί· εἶτα Πύδνα Μεθώνη Ἄλωρος καὶ ὁ Ἐρίγων ποταμὸς καὶ Λουδίας, ὁ μὲν ἐκ Τρικλάρων ῥέων δι' Ὀρεστῶν καὶ

τῆς Πελαγονίας ἐν ἀριστερᾷ ἀφιεὶς τὴν πόλιν καὶ συμβάλλων τῷ Ἀξιῷ· ὁ δὲ Λουδίας εἰς Πέλλαν ἀνάπλουν ἔχων σταδίων ἑκατὸν καὶ εἴκοσι. μέση δ' οὖσα ἡ Μεθώνη τῆς μὲν Πύδνης ὅσον τετταράκοντα σταδίων ἀπέχει, τῆς Ἀλώρου δὲ ἑβδομήκοντα. ἔστι δ' ἡ Ἄλωρος τὸ μυχαίτατον τοῦ Θερμαίου κόλπου· * λέγεται δὲ Θεσσαλονίκεια διὰ τὴν ἐπιφάνειαν. τὴν μὲν οὖν Ἄλωρον Βοτταϊκὴν νομίζουσι, τὴν δὲ Πύδναν Πιερικήν. Πέλλα ἐστὶ μὲν τῆς κάτω Μακεδονίας ἣν Βοττιαῖοι κατεῖχον· ἐνταῦθ' ἦν πάλαι τὸ τῆς Μακεδονίας χρηματιστήριον· ηὔξησε τὴν πόλιν ἐκ μικρᾶς Φίλιππος τραφεὶς ἐν αὐτῇ. ἔχει δ' ἄκραν ἐν λίμνῃ τῇ καλουμένῃ Λουδίᾳ· ἐκ ταύτης ὁ Λουδίας ἐκδίδωσι ποταμός, αὐτὴν δὲ πληροῖ τοῦ Ἀξιοῦ τι ἀπόσπασμα. ὁ δὲ Ἀξιὸς ἐκδίδωσι μεταξὺ Χαλάστρας καὶ Θέρμης· ἐπίκειται δὲ τῷ ποταμῷ τούτῳ χωρίον ἐρυμνόν, ὃ νῦν μὲν καλεῖται Ἀβυδών, Ὅμηρος δ' Ἀμυδῶνα καλεῖ, καί φησι τοὺς Παίονας ἐντεῦθεν εἰς Τροίαν ἐπικούρους ἐλθεῖν „τηλόθεν ἐξ Ἀμυδῶνος ἀπ' Ἀξιοῦ εὐρυρέοντος.“ κατεσκάφη δ' ὑπὸ τῶν Ἀργεαδῶν. E.

Ὅτι ὁ Ἀξιὸς θολερὸς ῥεῖ· ὁ δ' Ὅμηρος Ἀξιοῦ κάλ- 21
λιστον ὕδωρ φησίν, ἴσως διὰ τὴν πηγὴν τὴν καλουμένην Αἶαν, ἣ καθαρώτατον ἐκδιδοῦσα ὕδωρ εἰς τοῦτον ἐλέγχει φαύλην ὑπάρχουσαν τὴν νῦν φερομένην γραφὴν παρὰ τῷ ποιητῇ. μετὰ δὲ Ἀξιὸν Ἐχέδωρος ἐν σταδίοις εἴκοσιν· εἶτα Θεσσαλονίκεια Κασάνδρου κτίσμα ἐν ἄλλοις τετταράκοντα καὶ ἡ Ἐγνατία ὁδός. ἐπωνόμασε δὲ τὴν πόλιν ἀπὸ τῆς ἑαυτοῦ γυναικὸς Θεσσαλονίκης, Φιλίππου δὲ τοῦ Ἀμύντου θυγατρός, καθελὼν τὰ ἐν τῇ Κρουσίδι πολίσματα καὶ τὰ ἐν τῷ Θερμαίῳ κόλπῳ περὶ ἓξ καὶ εἴκοσι καὶ συνοικίσας εἰς ἕν· ἡ δὲ μητρόπολις τῆς νῦν Μακεδονίας ἐστί. τῶν δὲ συνοι-

κισθεισῶν ἦν Ἀπολλωνία καὶ Χαλάστρα καὶ Θέρμα καὶ Γαρησκὸς καὶ Αἴνεια καὶ Κισσός, ὧν τὴν Κισσὸν ὑπονοήσειεν ἄν τις τῷ Κισσῇ προσήκειν, οὗ μέμνηται ὁ ποιητὴς „Κισσῆς τόν γ' ἔθρεψε,“ τὸν Ἰφιδάμαντα λέγων. E.

22 *Ὅτι μετὰ τὸ Δῖον πόλιν ὁ Ἁλιάκμων ποταμός ἐστιν, ἐκβάλλων εἰς τὸν Θερμαῖον κόλπον· καὶ τὸ ἀπὸ τούτου ἡ πρὸς βορρᾶν τοῦ κόλπου παραλία Πιερία καλεῖται ἕως τοῦ Ἀξιοῦ ποταμοῦ, ἐν ᾗ καὶ πόλις Πύδνα, ἣ νῦν Κίτρον καλεῖται· εἶτα Μεθώνη καὶ Ἄλωρος πόλεις· εἶτα Ἐρίγων καὶ Λουδίας ποταμοί· ἀπὸ δὲ Λουδίου εἰς Πέλλαν πόλιν ἀνάπλους στάδια ἑκατὸν εἴκοσιν. ἀπέχει δ' ἡ Μεθώνη τῆς μὲν Πύδνης στάδια τετταράκοντα, τῆς Ἀλώρου δὲ ἑβδομήκοντα στάδια. ἡ μὲν οὖν Πύδνα Πιερική ἐστι πόλις, ἡ δὲ Ἄλωρος Βοτταϊκή. ἐν μὲν οὖν τῷ πρὸ τῆς Πύδνης πεδίῳ Ῥωμαῖοι Περσέα καταπολεμήσαντες καθεῖλον τὴν τῶν Μακεδόνων βασιλείαν, ἐν δὲ τῷ πρὸ τῆς Μεθώνης πεδίῳ γενέσθαι συνέβη Φιλίππῳ τῷ Ἀμύντου τὴν ἐκκοπὴν τοῦ δεξιοῦ ὀφθαλμοῦ καταπελτικῷ βέλει κατὰ τὴν πολιορκίαν τῆς πόλεως.* Epit.

23 *Ὅτι τὴν Πέλλαν οὖσαν μικρὰν πρότερον Φίλιππος εἰς μῆκος ηὔξησε τραφεὶς ἐν αὐτῇ· ἔχει δὲ λίμνην πρὸ αὐτῆς, ἐξ ἧς ὁ Λουδίας ποταμὸς ῥεῖ· τὴν δὲ λίμνην πληροῖ τοῦ Ἀξιοῦ τι ποταμοῦ ἀπόσπασμα. εἶτα ὁ Ἀξιὸς διαιρῶν τήν τε Βοττιαίαν καὶ τὴν Ἀμφαξῖτιν γῆν, καὶ παραλαβὼν τὸν Ἐρίγωνα ποταμὸν ἐξίησι μεταξὺ Χαλάστρας καὶ Θέρμης· ἐπίκειται δὲ τῷ Ἀξιῷ ποταμῷ χωρίον, ὅπερ Ὅμηρος Ἀμυδῶνα καλεῖ, καί φησι τοὺς Παίονας ἐντεῦθεν εἰς Τροίαν ἐπικούρους ἐλθεῖν „τηλόθεν ἐξ Ἀμυδῶνος ἀπ' Ἀξιοῦ εὐρυρέοντος.“ ἀλλ' ἐπεὶ ὁ μὲν Ἀξιὸς θολερός ἐστι, κρήνη δέ τις ἐξ Ἀμυδῶνος ἀνί-*

σχουσα καὶ ἐπιμιγνυμένη αὐτῷ καλλίστου ὕδατος, διὰ τοῦτο τὸν ἑξῆς στίχον „Ἀξιοῦ, οὗ κάλλιστον ὕδωρ „ἐπικίδναται Αἶαν“ μεταγράφουσιν οὕτως „Ἀξιοῦ, ᾧ „κάλλιστον ὕδωρ ἐπικίδναται Αἴης.“ οὐ γὰρ τὸ τοῦ Ἀξιοῦ ὕδωρ κάλλιστον τῇ πηγῇ ἐπικίδναται, ἀλλὰ τὸ τῆς πηγῆς τῷ Ἀξιῷ. Epit.

Ἐν δὲ τῷ „ἐπικίδναται αἴῃ“ ἢ „αἶαν“ (διττῶς γὰρ 23
ἡ γραφὴ) αἶαν τινὲς οὐ τὴν γῆν ἐνόησαν, ἀλλά τινα πηγήν, ὡς δῆλον ἐξ ὧν ὁ γεωγράφος φησί, λέγων ὅτι ἡ παρ' Ὁμήρῳ Ἀμυδὼν Ἀβυδὼν ὕστερον ἐκλήθη, κατεσκάφη δέ. πηγὴ δὲ πλησίον Ἀμυδῶνος Αἶα καλουμένη καθαρώτατον ὕδωρ ἐκδιδοῦσα εἰς τὸν Ἄξιον, ὃς ἐκ πολλῶν πληρούμενος ποταμῶν θολερὸς ῥέει. φαύλη οὖν, φησίν, ἡ φερομένη γραφὴ Ἀξίου κάλλιστον ὕδωρ ἐπικίδναται αἴῃ, ὡς δηλαδὴ οὐ τοῦ Ἀξίου ἐπικιδνάντος τὸ ὕδωρ τῇ πηγῇ, ἀλλ' ἀνάπαλιν· εἶτα ὑποδυσκόλως αἰτιώμενος ὁ γεωγράφος καὶ τὸ νοῆσαι τὴν αἶαν ἐπὶ τῆς γῆς ἔοικε παντελῶς ἐθέλειν ἐκβαλεῖν τοῦ Ὁμηρικοῦ ἔπους τὴν τοιαύτην λέξιν. Eustathius ad Il. β 850.

Ὅτι μετὰ τὸν Ἀξιὸν ποταμὸν ἡ Θεσσαλονίκη ἐστὶ 24
πόλις, ἣ πρότερον Θέρμη ἐκαλεῖτο· κτίσμα δ' ἐστὶ Κασσάνδρου, ὃς ἐπὶ τῷ ὀνόματι τῆς ἑαυτοῦ γυναικός, παιδὸς δὲ Φιλίππου τοῦ Ἀμύντου, ὠνόμασε· μετῴκισε δὲ τὰ πέριξ πολίχνια εἰς αὐτήν, οἷον Χαλάστραν Αἴνειαν Κισσὸν καί τινα καὶ ἄλλα. ἐκ δὲ τοῦ Κισσοῦ τούτου ὑπονοήσειεν ἄν τις γενέσθαι καὶ τὸν παρ' Ὁμήρῳ Ἰφιδάμαντα, οὗ ὁ πάππος Κισσεὺς ἔθρεψεν αὐτὸν (φησὶν) ἐν Θρήκῃ, ἣ νῦν Μακεδονία καλεῖται. Epit.

Ὅτι αὐτοῦ που καὶ τὸ Βέρμιον ὄρος, ὃ πρότερον 25
κατεῖχον Βρίγες Θρᾳκῶν ἔθνος, ὧν τινες διαβάντες εἰς τὴν Ἀσίαν Φρύγες μετωνομάσθησαν· μετὰ δὲ Θεσσαλονίκειάν ἐστι τὰ λοιπὰ τοῦ Θερμαίου κόλπου μέχρι

τοῦ Καναστραίου. τοῦτο δ' ἐστὶν ἄκρα χερρονησίζουσα, ἀνταίρουσα τῇ Μαγνήτιδι· ὄνομα δὲ τῇ χερρονήσῳ Παλλήνη· πενταστάδιον δ' ἔχει τὸν ἰσθμὸν διορωρυγμένον· κεῖται δ' ἐπ' αὐτῷ πόλις ἡ πρότερον μὲν Ποτίδαια, Κορινθίων κτίσμα, ὕστερον δὲ Κασάνδρεια ἀπὸ τοῦ αὐτοῦ βασιλέως Κασάνδρου ἀναλαβόντος αὐτὴν ἀνατετραμμένην· ὁ περίπλους ταύτης τῆς χερρονήσου πεντακοσίων καὶ ἑβδομήκοντα. ἔτι δὲ πρότερον τοὺς Γίγαντας ἐνταῦθα γενέσθαι φασὶ καὶ τὴν χώραν ὀνομάζεσθαι Φλέγραν οἱ μὲν μυθολογοῦντες οἱ δὲ πιθανώτερον ἔθνος τι βάρβαρον καὶ ἀσεβὲς ἀποφαίνοντες τὸ κατέχον τὸν τόπον, καταλυθὲν δ' ὑπὸ Ἡρακλέους, ἡνίκα τὴν Τροίαν ἑλὼν ἀνέπλει εἰς τὴν οἰκείαν. κἀνταῦθα δὲ τῆς λύμης αἱ Τρῳάδες αἴτιαι λέγονται, ἐμπρήσασαι τὰς ναῦς, ἵνα μὴ ταῖς γυναιξὶ τῶν ἑλόντων αὐτὰς δουλεύοιεν. E.

26 *Ὅτι ἡ Βέροια πόλις ἐν ταῖς ὑπωρείαις κεῖται τοῦ Βερμίου ὄρους.* Epit.

27 *Ὅτι ἡ Παλλήνη χερρόνησος, ἧς ἐν τῷ ἰσθμῷ κεῖται ἡ πρὶν μὲν Ποτίδαια νῦν δὲ Κασσάνδρεια, Φλέγρα τὸ πρὶν ἐκαλεῖτο· ᾤκουν δ' αὐτὴν οἱ μυθευόμενοι Γίγαντες, ἔθνος ἀσεβὲς καὶ ἄνομον, οὓς Ἡρακλῆς διέφθειρεν· ἔχει δὲ πόλεις τέσσαρας, Ἄφυτιν Μένδην Σκιώνην Σάνην.* Epit.

28 *Ὅτι διεῖχε Ποτιδαίας Ὄλυνθος ἑβδομήκοντα σταδίους. E.*

29 *Ὅτι τῆς Ὀλύνθου ἐπίνειόν ἐστι Μηκύπερνα ἐν τῷ Τορωναίῳ κόλπῳ.* Epit.

30 *Ὅτι πλησίον Ὀλύνθου χωρίον ἐστὶ κοῖλον, καλούμενον Κανθαρώλεθρον ἐκ τοῦ συμβεβηκότος· τὸ γὰρ ζῷον ὁ κάνθαρος τῆς πέριξ χώρας γινόμενος, ἡνίκα ψαύσῃ τοῦ χωρίου ἐκείνου, διαφθείρεται.* Epit.

Μετὰ δὲ Κασάνδρειαν ἐφεξῆς ἡ λοιπὴ τοῦ Τορω- 31
νικοῦ κόλπου παραλία μέχρι Δέρρεως· ἄκρα δ' ἐστὶν ἀνταίρουσα τῷ Καναστραίῳ καὶ ποιοῦσα τὸν κόλπον. ἀπαντικρὺ δὲ τῆς Δέρρεως πρὸς ἕω τὰ ἄκρα τοῦ Ἄθω, μεταξὺ δὲ ὁ Σιγγικὸς κόλπος ἀπὸ τῆς ἐν αὐτῷ πόλεως ἀρχαίας κατεσκαμμένης Σίγγου τοὔνομα. μεθ' ἣν Ἄκανθος ἐπὶ τῷ ἰσθμῷ τοῦ Ἄθω κειμένη πόλις, Ἀνδρίων κτίσμα, ἀφ' ἧς συχνοὶ καὶ τὸν κόλπον Ἀκάνθιον καλοῦσι. E.

Ὅτι ἀντικρὺ Κανάστρου, ἄκρου τῆς Παλλήνης, 32
ἡ Δέρρις ἐστὶν ἄκρα πλησίον Κωφοῦ λιμένος, καὶ ὁ Τορωναῖος κόλπος ὑπὸ τούτων ἀφορίζεται. καὶ πρὸς ἀνατολὰς αὖθις κεῖται τὸ ἄκρον τοῦ Ἄθωνος, ὃ ἀφορίζει τὸν Σιγγιτικὸν κόλπον, ὡς εἶναι ἐφεξῆς κόλπους τοῦ Αἰγαίου πελάγους πρὸς βορρᾶν, ἀλλήλων ἀπέχοντας οὕτως, Μαλιακὸν Παγασιτικὸν Θερμαῖον Τορωναῖον Σιγγιτικὸν Στρυμονικόν. τὰ δὲ ἄκρα Ποσείδιον μὲν τὸ μεταξὺ Μαλιακοῦ καὶ Παγασιτικοῦ, τὸ δὲ ἐφεξῆς πρὸς βορρᾶν Σηπιάς, εἶτα τὸ ἐν Παλλήνῃ Κάναστρον, εἶτα Δέρρις, εἶτα Νυμφαῖον ἐν τῷ Ἄθωνι πρὸς τῷ Σιγγιτικῷ, τὸ δὲ πρὸς τῷ Στρυμονικῷ Ἀκράθως ἄκρον, ὧν μεταξὺ ὁ Ἄθων, οὗ πρὸς ἀνατολὰς ἡ Λῆμνος· πρὸς δὲ βορρᾶν ἀφορίζει τὸν Στρυμονικὸν κόλπον ἡ Νεάπολις. Epit.

Ὅτι Ἄκανθος πόλις ἐν τῷ Σιγγιτικῷ κόλπῳ ἐστὶ C.331 33
παράλιος πλησίον τῆς τοῦ Ξέρξου διώρυχος· ἔχει δ' ὁ Ἄθων πέντε πόλεις, Δῖον Κλεωνὰς Θύσσον Ὀλόφυξιν Ἀκροθώους· αὕτη δὲ πρὸς τῇ κορυφῇ τοῦ Ἄθωνος κεῖται. ἔστι δ' ὁ Ἄθων ὄρος μαστοειδὲς ὀξύτατον ὑψηλότατον· οὗ οἱ τὴν κορυφὴν οἰκοῦντες ὁρῶσι τὸν ἥλιον ἀνατέλλοντα πρὸ ὡρῶν τριῶν τῆς ἐν τῇ παραλίᾳ ἀνατολῆς. καὶ ἔστιν ἀπὸ πόλεως τῆς Ἀκάνθου ὁ περίπλους τῆς χερρονήσου ἕως Σταγείρου, πόλεως τοῦ

Ἀριστοτέλους, στάδια τετρακόσια, ἐν ᾗ λιμὴν ὄνομα Κάπρος καὶ νησίον ὁμώνυμον τῷ λιμένι· εἶτα αἱ τοῦ Στρυμόνος ἐκβολαί· εἶτα Φάγρης Γαληψὸς Ἀπολλωνία, πᾶσαι πόλεις· εἶτα τὸ Νέστου στόμα τοῦ διορίζοντος Μακεδονίαν καὶ Θρᾴκην, ὡς Φίλιππος καὶ Ἀλέξανδρος ὁ τούτου παῖς διώριζον ἐν τοῖς κατ᾽ αὐτοὺς χρόνοις. εἰσὶ δὲ περὶ τὸν Στρυμονικὸν κόλπον πόλεις καὶ ἕτεραι, οἷον Μύρκινος Ἄργιλος Δραβῆσκος Δάτον, ὅπερ καὶ ἀρίστην ἔχει χώραν καὶ εὔκαρπον καὶ ναυπήγια καὶ χρυσοῦ μέταλλα· ἀφ᾽ οὗ καὶ παροιμία „Δάτον ἀγαθῶν,“ ὡς καὶ „ἀγαθῶν ἀγαθίδας.“ Epit.

34 Ὅτι πλεῖστα μέταλλά ἐστι χρυσοῦ ἐν ταῖς Κρηνίσιν, ὅπου νῦν οἱ Φίλιπποι πόλις ἵδρυται, πλησίον τοῦ Παγγαίου ὄρους· καὶ αὐτὸ δὲ τὸ Παγγαῖον ὄρος χρυσεῖα καὶ ἀργυρεῖα ἔχει μέταλλα καὶ ἡ πέραν καὶ ἡ ἐντὸς τοῦ Στρυμόνος ποταμοῦ μέχρι Παιονίας· φασὶ δὲ καὶ τοὺς τὴν Παιονίαν γῆν ἀροῦντας εὑρίσκειν χρυσοῦ τινα μόρια. Epit.

35 Ἔστι δ᾽ ὁ Ἄθως ὄρος ὑψηλὸν καὶ μαστοειδές, ὥστε τοὺς ἐν ταῖς κορυφαῖς ἤδη ἀνίσχοντος ἡλίου κάμνειν ἀροῦντας, ἡνίκα ἀλεκτοροφωνίας ἀρχὴ παρὰ τοῖς τὴν ἀκτὴν οἰκοῦσίν ἐστιν. ἐν δὲ τῇ ἀκτῇ ταύτῃ Θάμυρις ὁ Θρᾷξ ἐβασίλευσε, τῶν αὐτῶν ἐπιτηδευμάτων γεγονὼς ὢν καὶ Ὀρφεύς. ἐνταῦθα δὲ καὶ διῶρυξ δείκνυται ἡ περὶ τὴν Ἄκανθον, καθ᾽ ἣν Ξέρξης τὸν Ἄθω διορύξαι λέγεται καὶ διαγαγεῖν ἐκ τοῦ Στρυμονικοῦ κόλπου διὰ τοῦ ἰσθμοῦ, δεξάμενος τὴν θάλασσαν εἰς τὴν διώρυγα. Δημήτριος δ᾽ ὁ Σκήψιος οὐκ οἴεται πλευσθῆναι τὴν διώρυγα ταύτην· μέχρι μὲν γὰρ δέκα σταδίων εὔγεων καὶ ὀρυκτὴν εἶναι, διορωρύχθαι δ᾽ ἐπὶ πλάτος πλεθριαῖον, εἶθ᾽ ὑψηλὸν εἶναι πλαταμῶνα σταδιαῖον σχεδόν τι τὸ μῆκος, ὅσον οὐκ ἐνὸν ἐκλατομηθῆναι δι᾽ ὅλου

μέχρι θαλάσσης· εἰ δὲ καὶ μέχρι δεῦρο, οὔ γε καὶ κατὰ βυθοῦ ὥστε πόρον γενέσθαι πλωτόν· ὅπου Ἀλέξαρχον τὸν Ἀντιπάτρου πόλιν ὑποδείμασθαι τὴν Οὐρανόπολιν τριάκοντα σταδίων τὸν κύκλον ἔχουσαν. ᾤκησαν δὲ τὴν χερρόνησον ταύτην τῶν ἐκ Λήμνου Πελασγῶν τινες, εἰς πέντε διῃρημένοι πολίσματα, Κλεωνὰς Ὀλόφυξιν Ἀκροθώους Δῖον Θύσσον. μετὰ δὲ Ἄθω ὁ Στρυμονικὸς κόλπος μέχρι Νέστου τοῦ ποταμοῦ τοῦ ἀφορίζοντος τὴν κατὰ Φίλιππον καὶ Ἀλέξανδρον Μακεδονίαν· εἰς μέντοι τἀκριβὲς ἄκρα τίς ἐστιν ἡ ποιοῦσα τὸν κόλπον πρὸς τὸν Ἄθω, πόλιν ἐσχηκυῖα τὴν Ἀπολλωνίαν. ἐν δὲ τῷ κόλπῳ πρώτη μετὰ τὸν Ἀκανθίων λιμένα Στάγειρα, ἔρημος, καὶ αὐτὴ τῶν Χαλκιδικῶν, Ἀριστοτέλους πατρίς, καὶ λιμὴν αὐτῆς Κάπρος καὶ νησίον ὁμώνυμον τούτῳ· εἶθ᾽ ὁ Στρυμὼν καὶ ὁ ἀνάπλους εἰς Ἀμφίπολιν εἴκοσι σταδίων· ἔστι δ᾽ Ἀθηναίων κτίσμα ἐν τῷ τόπῳ ἱδρυμένον τούτῳ, ὃς καλεῖται Ἐννέα ὁδοί· εἶτα Γαληψὸς καὶ Ἀπολλωνία, κατεσκαμμέναι ὑπὸ Φιλίππου. E.

Ἀπὸ Πηνειοῦ φησὶν εἰς Πύδναν σταδίους * ἑκατὸν 36
εἴκοσι. παρὰ δὲ τὴν παραλίαν τοῦ Στρυμόνος καὶ Δατηνῶν πόλις Νεάπολις καὶ αὐτὸ τὸ Δάτον, εὔκαρπα πεδία καὶ λίμνην καὶ ποταμοὺς καὶ ναυπήγια καὶ χρυσεῖα λυσιτελῆ ἔχον, ἀφ᾽ οὗ καὶ παροιμιάζονται „Δάτον ἀγαθῶν“ ὡς καὶ „ἀγαθῶν ἀγαθῖδας.“ ἔστι δ᾽ ἡ χώρα ἡ πρὸς τὸ Στρυμόνος πέραν, ἡ μὲν ἐπὶ τῇ θαλάττῃ καὶ τοῖς περὶ Δάτον τόποις Ὀδόμαντες καὶ Ἠδωνοὶ καὶ Βισάλται, οἵ τε αὐτόχθονες καὶ οἱ ἐκ Μακεδονίας διαβάντες, ἐν οἷς Ῥῆσος ἐβασίλευσεν. ὑπὲρ δὲ τῆς Ἀμφιπόλεως Βισάλται καὶ μέχρι πόλεως Ἡρακλείας, ἔχοντες αὐλῶνα εὔκαρπον, ὃν διαρρεῖ ὁ Στρυμὼν ὡρμημένος ἐκ τῶν περὶ Ῥοδόπην Ἀγριάνων, οἷς παράκειται

τῆς Μακεδονίας ἡ Παρορβηλία, ἐν μεσογαίᾳ ἔχουσα κατὰ τὸν αὐλῶνα τὸν ἀπὸ Εἰδομένης Καλλίπολιν Ὀρθόπολιν Φιλιππούπολιν Γαρησκόν. ἐν δὲ τοῖς Βισάλταις ἀνὰ ποταμὸν ἰόντι τὸν Στρυμόνα καὶ ἡ Βέργη ἵδρυται, κώμη ἀπέχουσα Ἀμφιπόλεως περὶ διακοσίους σταδίους. ἐπὶ δὲ ἄρκτους ἰόντι ἀπὸ Ἡρακλείας καὶ τὰ στενὰ δι᾽ ὧν ὁ Στρυμὼν φέρεται, δεξιὸν ἔχοντι τὸν ποταμὸν ἐκ μὲν τῶν εὐωνύμων ἐστὶν ἡ Παιονία καὶ τὰ περὶ τὸν Δόβηρον καὶ τὴν Ῥοδόπην καὶ τὸν Αἷμον ὄρος, ἐν δεξιᾷ δὲ τὰ περὶ τὸν Αἷμον. ἐντὸς δὲ τοῦ Στρυμόνος πρὸς αὐτῷ μὲν τῷ ποταμῷ ἡ Σκοτοῦσσα ἔστι, πρὸς δὲ τῇ λίμνῃ τῇ Βόλβῃ Ἀρέθουσα. καὶ δὴ καὶ μάλιστα λέγονται Μυγδόνες οἱ περὶ τὴν λίμνην. οὐ μόνον δ᾽ ὁ Ἀξιὸς ἐκ Παιόνων ἔχει τὴν ῥύσιν, ἀλλὰ καὶ ὁ Στρυμών· ἐξ Ἀγριάνων γὰρ διὰ Μαίδων καὶ Σιντῶν εἰς τὰ μεταξὺ Βισαλτῶν καὶ Ὀδομάντων ἐκπίπτει. E.

37 Ὅτι ὁ Στρυμὼν ποταμὸς ἄρχεται ἐκ τῶν περὶ τὴν Ῥοδόπην Ἀγριάνων. Epit.

38 Τοὺς δὲ Παίονας οἱ μὲν ἀποίκους Φρυγῶν οἱ δ᾽ ἀρχηγέτας ἀποφαίνουσι, καὶ τὴν Παιονίαν μέχρι Πελαγονίας καὶ Πιερίας ἐκτετάσθαι φασί· καλεῖσθαι δὲ πρότερον Ὀρεστίαν τὴν Πελαγονίαν, τὸν δὲ Ἀστεροπαῖον, ἕνα τῶν ἐκ Παιονίας στρατευσάντων ἐπ᾽ Ἴλιον ἡγεμόνων, οὐκ ἀπεικότως υἱὸν λέγεσθαι Πηλεγόνος, καὶ αὐτοὺς τοὺς Παίονας καλεῖσθαι Πελαγόνας. E.

39 Ὅτι ὁ παρ᾽ Ὁμήρῳ Ἀστεροπαῖος υἱὸς Πηλεγόνος ἐκ Παιονίας ὢν τῆς ἐν Μακεδονίᾳ ἱστορεῖται· διὸ καὶ Πηλεγόνος υἱός· οἱ γὰρ Παίονες Πελαγόνες ἐκαλοῦντο. Epit.

40 Ἐπεὶ δὲ ὁ παιανισμὸς τῶν Θρᾳκῶν τιτανισμὸς ὑπὸ τῶν Ἑλλήνων λέγεται κατὰ μίμησιν τῆς ἐν παιᾶσι φωνῆς, καὶ οἱ Τιτᾶνες ἐκλήθησαν Πηλαγόνες. E.

41 Ὅτι καὶ πάλαι καὶ νῦν οἱ Παίονες φαίνονται πολλὴν τῆς νῦν Μακεδονίας κατεσχηκότες, ὡς καὶ Πέρινθον πολιορκῆσαι, καὶ Κρηστωνίαν καὶ Μυγδονίδα πᾶσαν καὶ τὴν Ἀγριάνων μέχρι Παγγαίου ὑπ' αὐτοῖς γενέσθαι. τῆς δ' ἐν τῷ Στρυμονικῷ κόλπῳ παραλίας τῆς ἀπὸ Γαληψοῦ μέχρι Νέστου ὑπέρκεινται οἱ Φίλιπποι καὶ τὰ περὶ Φιλίππους. οἱ δὲ Φίλιπποι Κρηνίδες ἐκαλοῦντο πρότερον, κατοικία μικρά· ηὐξήθη δὲ μετὰ τὴν περὶ Βροῦτον καὶ Κάσσιον ἧτταν. E.

43 Ὅτι οἱ νῦν Φίλιπποι πόλις Κρηνίδες ἐκαλοῦντο τὸ παλαιόν. Epit.

44 Πρόκεινται δὲ τῆς παραλίας ταύτης δύο νῆσοι, Λῆμνος καὶ Θάσος. μετὰ δὲ τὸν εἰς Θάσον πορθμὸν Ἄβδηρα καὶ τὰ περὶ Ἀβδήρου μυθευόμενα. ᾤκησαν δ' αὐτὴν Βίστονες Θρᾷκες, ὧν Διομήδης ἦρχεν· οὐ μένει δ' ὁ Νέστος ἐπὶ ταὐτοῦ ῥείθρου διὰ παντός, ἀλλὰ κατακλύζει τὴν χώραν πολλάκις. εἶτα Δίκαια πόλις ἐν κόλπῳ κειμένη καὶ λιμήν· ὑπέρκειται δὲ τούτων ἡ Βιστονὶς λίμνη κύκλον ἔχουσα ὅσον διακοσίων σταδίων. φασὶ δὲ τοῦ πεδίου κοίλου παντάπασιν ὄντος καὶ ταπεινοτέρου τῆς θαλάττης ἱπποκρατούμενον τὸν Ἡρακλέα, ἡνίκα ἦλθεν ἐπὶ τὰς τοῦ Διομήδους ἵππους, διορύξαι τὴν ᾐόνα καὶ τὴν θάλατταν ἐπαφέντα τῷ πεδίῳ κρατῆσαι τῶν ἐναντίων. δείκνυται δὲ καὶ τὸ βασίλειον Διομήδους ἀπὸ συμβεβηκότος καλούμενον Καρτερὰ κώμη διὰ τὴν ἐρυμνότητα. μετὰ δὲ τὴν ἀνὰ μέσον λίμνην Ξάνθεια Μαρώνεια καὶ Ἴσμαρος, αἱ τῶν Κικόνων πόλεις· καλεῖται δὲ νῦν Ἰσμάρα πλησίον τῆς Μαρωνείας· πλησίον δὲ καὶ ἡ Ἰσμαρὶς ἐξίησι λίμνη· καλεῖται δὲ τὸ ῥεῖθρον ἡδύ .... γειον· αὐτοῦ δὲ καὶ αἱ Θασίων λεγόμεναι κεφαλαί. Σαπαῖοι δ' εἰσὶν οἱ ὑπερκείμενοι. E.

45 Ὅτι τὰ Τόπειρα ἔστι πρὸς Ἀβδήροις καὶ Μαρωνείᾳ. E.

46 Ὅτι Σιντοὶ ἔθνος Θρᾳκικὸν κατῴκει τὴν Λῆμνον νῆσον· ὅθεν Ὅμηρος Σίντιας αὐτοὺς καλεῖ λέγων „ἔνθα με Σίντιες ἄνδρες.“ Epit.

47 Ὅτι μετὰ τὸν Νέστον ποταμὸν πρὸς ἀνατολὰς Ἄβδηρα πόλις, ἐπώνυμος Ἀβδήρου, ὃν οἱ τοῦ Διομήδους ἵπποι ἔφαγον· εἶτα Δίκαια πόλις πλησίον, ἧς ὑπέρκειται λίμνη μεγάλη ἡ Βιστονίς· εἶτα πόλις Μαρώνεια. Epit.

48 Ἔστι δ' ἡ Θρᾴκη σύμπασα ἐκ δυεῖν καὶ εἴκοσιν ἐθνῶν συνεστῶσα· δύναται δὲ στέλλειν καίπερ οὖσα περισσῶς ἐκπεπονημένη μυρίους καὶ πεντακισχιλίους ἱππέας, πεζῶν δὲ καὶ εἴκοσι μυριάδας. μετὰ δὲ τὴν Μαρώνειαν Ὀρθαγόρεια πόλις καὶ τὰ περὶ Σέρριον, παράπλους τραχύς, καὶ τὸ τῶν Σαμοθρᾴκων πολίχνιον Τέμπυρα καὶ ἄλλο Χαράκωμα, οὗ πρόκειται ἡ Σαμοθρᾴκη νῆσος, καὶ Ἴμβρος οὐ πολὺ ἄπωθεν ταύτης· πλέον δ' ἢ διπλάσιον ἡ Θάσος. ἀπὸ δὲ Χαρακώματος Δορίσκος, ὅπου ἐμέτρησε Ξέρξης τῆς στρατιᾶς τὸ πλῆθος. εἶθ' Ἕβρος ἀνάπλουν ἔχων εἰς Κύψελα ἑκατὸν εἴκοσι· τῆς Μακεδονίας φησὶ τοῦτο ὅριον, ἣν ἀφείλοντο Περσέα Ῥωμαῖοι καὶ μετὰ ταῦτα τὸν Ψευδοφίλιππον. Παῦλος μὲν οὖν ὁ τὸν Περσέα ἑλὼν συνάψας τῇ Μακεδονίᾳ καὶ τὰ Ἠπειρωτικὰ ἔθνη εἰς τέτταρα μέρη διέταξε τὴν χώραν, καὶ τὸ μὲν προσένειμεν Ἀμφιπόλει, τὸ δὲ Θεσσαλονικείᾳ, τὸ δὲ Πέλλῃ, τὸ δὲ Πελαγόσι. παροικοῦσι δὲ τὸν Ἕβρον Κορπῖλοι καὶ Βρέναι ἔτι ἀνωτέρω, εἶτ' ἔσχατοι Βέσσοι· μέχρι γὰρ δεῦρο ὁ ἀνάπλους. ἅπαντα δὲ τὰ ἔθνη ληστρικὰ ταῦτα, μάλιστα δ' οἱ Βέσσοι, οὓς λέγει γειτονεύειν Ὀδρύσαις καὶ Σαπαίοις. Ἀστῶν δὲ βασίλειον ἦν Βιζύη. Ὀδρύσας δὲ

καλοῦσιν ἔνιοι πάντας τοὺς ἀπὸ Ἕβρου καὶ Κυψέλων μέχρι Ὀδησσοῦ τῆς παραλίας ὑπεροικοῦντας, ὧν ἐβασίλευσεν Ἀμάδοκος καὶ Κερσοβλέπτης καὶ Βηρισάδης καὶ Σεύθης καὶ Κότυς. *E.*

49 Ὅτι ὁ νῦν ποταμὸς Ῥιγινία ἐν Θρᾴκῃ καλούμενος Ἐρίγων ἦν καλούμενος. Epit.

50 Ὅτι τὴν Σαμοθρᾴκην Ἰασίων καὶ Δάρδανος ἀδελφοὶ ᾤκουν· κεραυνωθέντος δὲ Ἰασίωνος διὰ τὴν εἰς Δήμητρα ἁμαρτίαν, ὁ Δάρδανος ἀπάρας ἐκ Σαμοθρᾴκης, ἐλθὼν ᾤκησεν ἐν τῇ ὑπωρείᾳ τῆς Ἴδης, τὴν πόλιν Δαρδανίαν καλέσας, καὶ ἐδίδαξε τοὺς Τρῶας τὰ ἐν Σαμοθρᾴκῃ μυστήρια· ἐκαλεῖτο δὲ ἡ Σαμοθρᾴκη Σάμος πρίν. Epit.

51 Ὅτι τοὺς ἐν τῇ Σαμοθρᾴκῃ τιμωμένους θεοὺς εἰρήκασι πολλοὶ τοὺς αὐτοὺς τοῖς Καβείροις, οὐδ' αὐτοὺς ἔχοντες λέγειν τοὺς Καβείρους οἵτινές εἰσι, καθάπερ τοὺς Κύρβαντας καὶ Κορύβαντας, ὡς δ' αὕτως Κουρῆτας καὶ Ἰδαίους Δακτύλους. *E.*

52 Πρὸς δὲ τῇ ἐκβολῇ τοῦ Ἕβρου διστόμου ὄντος πόλις Αἶνος ἐν τῷ Μέλανι κόλπῳ κεῖται, κτίσμα Μιτυληναίων καὶ Κυμαίων, ἔτι δὲ πρότερον Ἀλωπεκοννησίων· εἶτ' ἄκρα Σαρπηδών· εἶθ' ἡ Χερρόνησος ἡ Θρᾳκία καλουμένη, ποιοῦσα τήν τε Προποντίδα καὶ τὸν Μέλανα κόλπον καὶ τὸν Ἑλλήσποντον· ἄκρα γὰρ ἔκκειται πρὸς εὐρόνοτον, συνάπτουσα τὴν Εὐρώπην πρὸς τὴν Ἀσίαν ἑπτασταδίῳ πορθμῷ τῷ κατὰ Ἄβυδον καὶ Σηστόν, ἐν ἀριστερᾷ μὲν τὴν Προποντίδα ἔχουσα, ἐν δεξιᾷ δὲ τὸν Μέλανα κόλπον καλούμενον οὕτως ἀπὸ τοῦ Μέλανος ἐκδιδόντος εἰς αὐτόν, καθάπερ Ἡρόδοτος καὶ Εὔδοξος· εἴρηκε δέ, φησίν, ὁ Ἡρόδοτος μὴ ἀνταρκέσαι τὸ ῥεῖθρον τῇ Ξέρξου στρατιᾷ τοῦτο· ἰσθμῷ δὲ κλείεται τετταράκοντα σταδίων ἡ λεχθεῖσα ἄκρα.

ἐν μέσῳ μὲν οὖν τοῦ ἰσθμοῦ Λυσιμάχεια πόλις ἵδρυται ἐπώνυμος τοῦ κτίσαντος βασιλέως· ἑκατέρωθεν δ' ἐπὶ μὲν τῷ Μέλανι κόλπῳ Καρδία κεῖται μεγίστη τῶν ἐν τῇ Χερρονήσῳ πόλεων, Μιλησίων καὶ Κλαζομενίων κτίσμα, ὕστερον δὲ καὶ Ἀθηναίων· ἐν δὲ τῇ Προποντίδι Πακτύη. μετὰ δὲ Καρδίαν Δράβος καὶ Λίμναι· εἶτ' Ἀλωπεκόννησος, εἰς ἣν τελευτᾷ μάλιστα ὁ Μέλας κόλπος· εἶτ' ἄκρα μεγάλη Μαζουσία· εἶτ' ἐν κόλπῳ Ἐλαιοῦς, ὅπου τὸ Πρωτεσιλάειον, καθ' ὃ τὸ Σίγειον ἀπὸ τετταράκοντα σταδίων ἐστίν, ἄκρα τῆς Τρῳάδος· καὶ σχεδὸν τοῦτ' ἔστι τὸ νοτιώτατον ἄκρον τῆς Χερρονήσου, σταδίους μικρῷ πλείους τῶν τετρακοσίων ἀπὸ Καρδίας· καὶ οἱ λοιποὶ δ' ἐπὶ θάτερον μέρος τοῦ ἰσθμοῦ μικρῷ τοῦ διαστήματος τούτου πλείους περιπλέοντι. E.

53 Ὅτι ἡ ἐν Θρᾴκῃ Χερρόνησος τρεῖς ποιεῖ θαλάσσας· Προποντίδα ἐκ βορρᾶ, Ἑλλήσποντον ἐξ ἀνατολῶν καὶ τὸν Μέλανα κόλπον ἐκ νότου, ὅπου καὶ ὁ Μέλας ποταμὸς ἐκβάλλει, ὁμώνυμος τῷ κόλπῳ. Epit.

54 Ὅτι ἐν τῷ ἰσθμῷ τῆς Χερρονήσου τρεῖς πόλεις κεῖνται· πρὸς μὲν τῷ Μέλανι κόλπῳ Καρδία, πρὸς δὲ τῇ Προποντίδι Πακτύη, πρὸς δὲ τῇ μεσογαίᾳ Λυσιμάχεια· μῆκος τοῦ ἰσθμοῦ στάδια τετταράκοντα. Epit.

55 Ὅτι ἡ πόλις ὁ Ἐλαιοῦς ἀρσενικῶς λέγεται· τάχα δὲ καὶ ὁ Τραπεζοῦς. Epit.

56 Ἔστι δ' ἐν τῷ περίπλῳ τούτῳ τῷ μετὰ Ἐλαιοῦντα ἡ εἰσβολὴ πρῶτον ἡ εἰς τὴν Προποντίδα διὰ τῶν στενῶν, ἥν φασιν ἀρχὴν εἶναι τοῦ Ἑλλησπόντου· ἐνταῦθα δ' ἐστὶ τὸ Κυνὸς σῆμα ἄκρα, οἱ δ' Ἑκάβης φασί· καὶ γὰρ δείκνυται κάμψαντι τὴν ἄκραν τάφος αὐτῆς. εἶτα Μάδυτος καὶ Σηστιὰς ἄκρα, καθ' ἣν τὸ Ξέρξου ζεῦγμα, καὶ μετὰ ταῦτα Σηστός. ἀπὸ δὲ Ἐλαιοῦντος

ἐπὶ τὸ ζεῦγμα ἑκατὸν ἑβδομήκοντα· μετὰ δὲ Σηστὸν ἐπὶ Αἰγὸς ποταμοὺς διακόσιοι ὀγδοήκοντα, πολίχνην κατεσκαμμένην, ὅπου φασὶ τὸν λίθον πεσεῖν κατὰ τὰ Περσικά· εἶτα Καλλίπολις, ἀφ' ἧς εἰς Λάμψακον δίαρμα εἰς τὴν Ἀσίαν τετταράκοντα· εἶτα πολίχνιον κατεσκαμμένον Κριθωτή· εἶτα Πακτύη· εἶτα τὸ Μακρὸν τεῖχος καὶ Λευκὴ ἀκτὴ καὶ τὸ Ἱερὸν ὄρος καὶ Πέρινθος, Σαμίων κτίσμα· εἶτα Σηλυβρία. ὑπέρκειται δ' αὐτῶν Σίλτα, καὶ τὸ Ἱερὸν ὄρος τιμᾶται ὑπὸ τῶν ἐγχωρίων καὶ ἔστιν οἷον ἀκρόπολις τῆς χώρας. ἄσφαλτον δ' ἐξίησιν εἰς τὴν θάλασσαν, καθ' ὃν τόπον ἡ Προκόννησος ἐγγυτάτω τῆς γῆς ἐστι ἀπὸ ἑκατὸν εἴκοσι σταδίων, τὸ μέταλλον ἔχουσα τῆς λευκῆς μαρμάρου πολύ τε καὶ σπουδαῖον. μετὰ δὲ Σηλυβρίαν Ἀθύρας ἐστὶ ποταμὸς καὶ Βαθυνίας· εἶτα Βυζάντιον καὶ τὰ ἐφεξῆς μέχρι Κυανέων πετρῶν. Ε.

Ὅτι ἐκ Περίνθου εἰς Βυζάντιόν εἰσιν ἑξακόσιοι 57
τριάκοντα· ἀπὸ δὲ Ἕβρου καὶ Κυψέλων εἰς Βυζάντιον μέχρι Κυανέων τρισχίλιοι ἑκατόν, ὥς φησιν Ἀρτεμίδωρος· τὸ δὲ σύμπαν μῆκος ἀπὸ Ἰονίου κόλπου τοῦ κατὰ Ἀπολλωνίαν μέχρι Βυζαντίου ἑπτακισχίλιοι τριακόσιοι εἴκοσι· προστίθησι δ' ὁ Πολύβιος καὶ ἄλλους ἑκατὸν ὀγδοήκοντα, τὸ τρίτον τοῦ σταδίου προσλαμβάνων ἐπὶ τοῖς ὀκτὼ τοῦ μιλίου σταδίοις. Δημήτριος δ' ὁ Σκήψιος ἐν τοῖς περὶ τοῦ Τρωικοῦ διακόσμου τὸ μὲν ἐκ Περίνθου μέχρι Βυζαντίου φησὶν ἑξακοσίους σταδίους, τὸ δ' ἴσον μέχρι Παρίου. τὴν δὲ Προποντίδα μήκει μὲν χιλίων καὶ τετρακοσίων ἀποφαίνει σταδίων, εἰς εὖρος δὲ πεντακοσίων. τοῦ δὲ Ἑλλησπόντου τὸ στενώτατον ἑπταστάδιόν φησι, μῆκος δὲ τετρακοσίων. Ε.

Ὅτι Ἑλλήσποντος οὐχ ὁμολογεῖται παρὰ πᾶσιν ὁ 58
αὐτός, ἀλλὰ δόξαι περὶ αὐτοῦ λέγονται πλείους. οἱ

μὲν γὰρ ὅλην τὴν Προποντίδα καλοῦσιν Ἑλλήσποντον, οἱ δὲ μέρος τῆς Προποντίδος τὸ ἐντὸς Περίνθου· οἱ δὲ προσλαμβάνουσι καὶ τῆς ἔξω θαλάσσης τῆς πρὸς τὸ Αἰγαῖον πέλαγος καὶ τὸν Μέλανα κόλπον ἀνεῳγμένης, καὶ οὗτοι ἄλλος ἄλλα ἀποτεμνόμενος· οἱ μὲν τὸ ἀπὸ Σιγείου ἐπὶ Λάμψακον καὶ Κύζικον ἢ Πάριον ἢ Πρίαπον, ὁ δὲ προσλαμβάνων καὶ τὸ ἀπὸ Σιγρίου τῆς Λεσβίας. οὐκ ὀκνοῦσι δέ τινες καὶ τὸ μέχρι τοῦ Μυρτῴου πελάγους ἅπαν καλεῖν Ἑλλήσποντον, εἴπερ, ὥς φησιν ἐν τοῖς ὕμνοις Πίνδαρος, οἱ μεθ' Ἡρακλέους ἐκ Τροίας πλέοντες διὰ παρθένιον Ἕλλας πορθμόν, ἐπεὶ τῷ Μυρτῴῳ συνῆψαν, εἰς Κῶν ἐπαλινδρόμησαν ζεφύρου ἀντιπνεύσαντος. οὕτω δὲ καὶ τὸ Αἰγαῖον πέλαγος μέχρι τοῦ Θερμαίου κόλπου καὶ τῆς κατὰ Θετταλίαν καὶ Μακεδονίαν θαλάσσης ἅπαν ἀξιοῦσιν Ἑλλήσποντον προσαγορεύειν δεῖν, μάρτυρα καὶ Ὅμηρον καλοῦντες. φησὶ γάρ „ὄψεαι, „ἢν ἐθέλησθα καὶ αἴ κέν τοι τὰ μεμήλῃ, ἦρι μάλ' Ἑλλή„σποντον ἐπ' ἰχθυόεντα πλεούσας νῆας ἐμάς.“ ἐλέγχεται δὲ τὸ τοιοῦτον ἐκ τῶν ἐπῶν ἐκείνων „ἥρως Ἰμβρα„σίδης, ὃς ἄρ' Αἰνόθεν εἰληλούθει·“ οὗτος δὲ τῶν Θρᾳκῶν ἡγεῖτο „ὅσσους Ἑλλήσποντος ἀγάρροος ἐντὸς ἐέρ„γει·“ τοὺς γὰρ ἐφεξῆς τούτων ἐκτὸς ἂν καὶ τοῦ Ἑλλησπόντου καθιδρυμένους ἀποφαίνοι. ἡ μὲν γὰρ Αἶνος κεῖται κατὰ τὴν πρότερον Ἀψυνθίδα νῦν δὲ Κορπιλικὴν λεγομένην, ἡ δὲ τῶν Κικόνων ἐφεξῆς πρὸς δύσιν. E.

58[a] Τετραχωρῖται, οἱ Βεσσοί, ὡς Στράβων ἑβδόμῃ. οὗτοι λέγονται καὶ Τετράκωμοι. Stephanus v. Τετραχωρῖται.

58[b] Λέγει γὰρ (Στράβων) αὐτὸν ἐν τῇ ἑβδόμῃ (τῶν γεωγραφουμένων) ἐγνωκέναι Ποσειδώνιον τὸν ἀπὸ τῆς στοᾶς φιλόσοφον .... συγγενομένου Σκιπίωνι τῷ τὴν Καρχηδόνα ἑλόντι. Athenaeus 14 p. 657 f.

— Η —

Ἐπεὶ δ' ἐπιόντες ἀπὸ τῶν ἑσπερίων τῆς Εὐρώπης C.332 1
μερῶν, ὅσα τῇ θαλάττῃ περιέχεται τῇ ἐντὸς καὶ τῇ ἐκτός, τά τε βάρβαρα ἔθνη περιωδεύσαμεν πάντα ἐν αὐτῇ μέχρι τοῦ Τανάιδος καὶ τῆς Ἑλλάδος οὐ πολὺ μέρος, ἀποδώσομεν νυνὶ τὰ λοιπὰ τῆς Ἑλλαδικῆς γεωγραφίας, ἅπερ Ὅμηρος μὲν πρῶτος, ἔπειτα καὶ ἄλλοι πλείους ἐπραγματεύσαντο, οἱ μὲν ἰδίᾳ λιμένας ἢ περίπλους ἢ περιόδους γῆς ἤ τι τοιοῦτον ἄλλο ἐπιγράψαντες, ἐν οἷς καὶ τὰ Ἑλλαδικὰ περιέχεται, οἱ δ' ἐν τῇ κοινῇ τῆς ἱστορίας γραφῇ χωρὶς ἀποδείξαντες τὴν τῶν ἠπείρων τοπογραφίαν, καθάπερ Ἔφορός τε ἐποίησε καὶ Πολύβιος· ἄλλοι δ' εἰς τὸν φυσικὸν τόπον καὶ τὸν μαθηματικὸν προσέλαβόν τινα καὶ τῶν τοιούτων, καθάπερ Ποσειδώνιός τε καὶ Ἵππαρχος. τὰ μὲν οὖν τῶν ἄλλων εὐδιαίτητά ἐστι, τὰ δ' Ὁμήρου σκέψεως δεῖται κριτικῆς, ποιητικῶς τε λέγοντος καὶ οὐ τὰ νῦν ἀλλὰ τὰ ἀρχαῖα, ὧν ὁ χρόνος ἠμαύρωκε τὰ πολλά. ὡς δ' οὖν δυνατὸν ἐγχειρητέον ἀρξαμένοις ἀφ' ὧνπερ ἀπελίπομεν· ἐτελεύτα δ' ἡμῖν ὁ λόγος ἀπὸ μὲν τῆς ἑσπέρας καὶ τῶν ἄρκτων εἰς τὰ Ἠπειρωτικὰ ἔθνη καὶ τὰ τῶν Ἰλλυριῶν, ἀπὸ δὲ τῆς ἕω εἰς τὰ τῶν Μακεδόνων μέχρι Βυζαντίου. μετὰ μὲν οὖν τοὺς Ἠπειρώτας καὶ τοὺς Ἰλλυριοὺς τῶν Ἑλλήνων Ἀκαρνᾶνές εἰσι καὶ Αἰτωλοὶ καὶ Λοκροὶ οἱ Ὀζόλαι· πρὸς δὲ τούτοις Φωκεῖς τε καὶ Βοιωτοί· τούτοις δ' ἀντίπορθμός ἐστιν ἡ Πελοπόννησος, ἀπολαμβάνουσα μεταξὺ τὸν Κορινθιακὸν κόλπον καὶ σχηματίζουσά τε τοῦτον καὶ σχηματιζομένη ὑπ' αὐτοῦ· μετὰ C.333

---

6. post μέρος: τῆς Μακεδονίας

δὲ Μακεδονίαν Θετταλοὶ μέχρι Μαλιέων καὶ τῶν ἄλλων τῶν ἐκτὸς Ἰσθμοῦ καὶ αὐτῶν τῶν ἐντός.

2 * ἐπιδουο μὲν οὖν πολλὰ ἔθνη γεγένηται, τὰ δ' ἀνωτάτω τοσαῦτα ὅσας καὶ διαλέκτους παρειλήφαμεν τὰς Ἑλληνίδας· τούτων δ' αὐτῶν τεττάρων οὐσῶν τὴν μὲν Ἰάδα τῇ παλαιᾷ Ἀτθίδι τὴν αὐτὴν φαμέν (καὶ γὰρ Ἴωνες ἐκαλοῦντο οἱ τότε Ἀττικοί, καὶ ἐκεῖθέν εἰσιν οἱ τὴν Ἀσίαν ἐποικήσαντες Ἴωνες καὶ χρησάμενοι τῇ νῦν λεγομένῃ γλώττῃ Ἰάδι), τὴν δὲ Δωρίδα τῇ Αἰολίδι· πάντες γὰρ οἱ ἐκτὸς Ἰσθμοῦ πλὴν Ἀθηναίων καὶ Μεγαρέων καὶ τῶν περὶ τὸν Παρνασσὸν Δωριέων καὶ νῦν ἔτι Αἰολεῖς καλοῦνται· καὶ τοὺς Δωριέας δὲ ὀλίγους ὄντας καὶ τραχυτάτην οἰκοῦντας χώραν εἰκός ἐστι τῷ ἀνεπιμίκτῳ παρατρέψαι τὴν γλῶτταν καὶ τὰ ἄλλα ἔθη πρὸς τὸ μὴ ὁμογενές, ὁμογενεῖς πρότερον ὄντας. τοῦτο δ' αὐτὸ καὶ τοῖς Ἀθηναίοις συνέβη, λεπτόγεών τε καὶ τραχεῖαν οἰκοῦντας χώραν ἀπορθήτους * μὲν εἶναι διὰ τοῦτο καὶ αὐτόχθονας νομισθῆναι φησὶν ὁ Θουκυδίδης, κατέχοντας τὴν αὐτὴν ἀεί, μηδενὸς ἐξελαύνοντος αὐτοὺς μηδ' ἐπιθυμοῦντος ἔχειν τὴν ἐκείνων· τοῦτο τοίνυν αὐτὸ καὶ τοῦ ἑτερογλώττου καὶ τοῦ ἑτεροεθοῦς αἴτιον, ὡς εἰκός, ὑπῆρξε καίπερ ὀλίγοις οὖσιν. οὕτω δὲ τοῦ Αἰολικοῦ πλήθους ἐπικρατοῦντος ἐν τοῖς ἐκτὸς Ἰσθμοῦ, καὶ οἱ ἐντὸς Αἰολεῖς πρότερον ἦσαν, εἶτ' ἐμίχθησαν, Ἰώνων μὲν ἐκ τῆς Ἀττικῆς τὸν Αἰγιαλὸν κατασχόντων, τῶν δ' Ἡρακλειδῶν τοὺς Δωριέας καταγαγόντων, ὑφ' ὧν τά τε Μέγαρα ᾠκίσθη καὶ πολλαὶ τῶν ἐν τῇ Πελοποννήσῳ πόλεων. οἱ μὲν οὖν Ἴωνες ἐξέπεσον πάλιν ταχέως ὑπὸ Ἀχαιῶν, Αἰολικοῦ ἔθνους· ἐλείφθη δ' ἐν τῇ Πελοποννήσῳ τὰ δύο ἔθνη, τό τε Αἰολικὸν καὶ τὸ Δωρικόν. ὅσοι μὲν οὖν ἧττον τοῖς Δωριεῦσιν ἐπεπλέκοντο (καθάπερ συνέβη τοῖς τε Ἀρκάσι

καὶ τοῖς Ἠλείοις, τοῖς μὲν ὀρεινοῖς τελέως οὖσι καὶ οὐκ ἐμπεπτωκόσιν εἰς τὸν κλῆρον, τοῖς δ' ἱεροῖς νομισθεῖσι τοῦ Ὀλυμπίου Διὸς καὶ καθ' αὑτοὺς εἰρήνην ἄγουσι πολὺν χρόνον, ἄλλως τε καὶ τοῦ Αἰολικοῦ γένους οὖσι καὶ δεδεγμένοις τὴν Ὀξύλῳ συγκατελθοῦσαν στρατιὰν περὶ τὴν τῶν Ἡρακλειδῶν κάθοδον), οὗτοι αἰολιστὶ διελέχθησαν, οἱ δ' ἄλλοι μικτῇ τινι ἐχρήσαντο ἐξ ἀμφοῖν, οἱ μὲν μᾶλλον οἱ δ' ἧττον αἰολίζοντες· σχεδὸν δέ τι καὶ νῦν κατὰ πόλεις ἄλλοι ἄλλως διαλέγονται, δοκοῦσι δὲ δωρίζειν ἅπαντες διὰ τὴν συμβᾶσαν ἐπικράτειαν. τοσαῦτα μὲν οὖν τὰ τῶν Ἑλλήνων ἔθνη καὶ οὕτως C.334, ὡς τύπῳ εἰπεῖν, ἀφωρισμένα. λέγωμεν δὴ διαλαβόντες ὃν χρὴ τρόπον τῇ τάξει περὶ αὐτῶν.

3 Ἔφορος μὲν οὖν ἀρχὴν εἶναι τῆς Ἑλλάδος τὴν Ἀκαρνανίαν φησὶν ἀπὸ τῶν ἑσπερίων μερῶν· ταύτην γὰρ συνάπτειν πρώτην τοῖς Ἠπειρωτικοῖς ἔθνεσιν. ἀλλ' ὥσπερ οὗτος τῇ παραλίᾳ μέτρῳ χρώμενος ἐντεῦθεν ποιεῖται τὴν ἀρχήν, ἡγεμονικόν τι τὴν θάλατταν κρίνων πρὸς τὰς τοπογραφίας, ἐπεὶ ἄλλως γ' ἐνεχώρει κατὰ τὴν Μακεδόνων καὶ Θετταλῶν τὴν ἀρχὴν ἀποφαίνεσθαι τῆς Ἑλλάδος· οὕτω καὶ ἡμῖν προσήκει ἀκολουθοῦσι τῇ φύσει τῶν τόπων σύμβουλον ποιεῖσθαι τὴν θάλατταν. αὕτη δ' ἐκ τοῦ Σικελικοῦ πελάγους προσπεσοῦσα τῇ μὲν ἀναχεῖται πρὸς τὸν Κορινθιακὸν κόλπον, τῇ δ' ἀποτελεῖ χερρόνησον μεγάλην τὴν Πελοπόννησον, ἰσθμῷ στενῷ κλειομένην. ἔστι δὲ τὰ δύο μέγιστα συστήματα τῆς Ἑλλάδος τό τε ἐντὸς Ἰσθμοῦ καὶ τὸ ἐκτὸς μέχρι τῆς ἐκβολῆς τοῦ Πηνειοῦ· ἔστι δὲ καὶ μεῖζον καὶ ἐπιφανέστερον τὸ ἐντὸς Ἰσθμοῦ· σχε-

---

28. post ἐκτὸς: πυλῶν post Πηνειοῦ: καὶ τοῦτο δ' ἐστὶ τὸ Θετταλικόν·

δὸν δέ τι καὶ ἀκρόπολίς ἐστιν ἡ Πελοπόννησος τῆς συμπάσης Ἑλλάδος...... χωρὶς γὰρ τῆς λαμπρότητος καὶ δυνάμεως τῶν ἐνοικησάντων ἐθνῶν αὐτὴ ἡ τῶν τόπων θέσις ὑπογράφει τὴν ἡγεμονίαν ταύτην, κόλποις τε καὶ ἄκραις πολλαῖς καὶ τοῖς σημειωδεστάτοις, χερρονήσοις μεγάλαις, διαπεποικιλμένη, ὧν ἐκ διαδοχῆς ἑτέρα τὴν ἑτέραν ἔχει. ἔστι δὲ πρώτη μὲν τῶν χερρονήσων ἡ Πελοπόννησος, ἰσθμῷ κλειομένη τετταράκοντα σταδίων. δευτέρα δὲ ἡ καὶ ταύτην περιέχουσα, ἧς ἰσθμός ἐστιν ὁ ἐκ Παγῶν τῶν Μεγαρικῶν εἰς Νίσαιαν, τὸ Μεγαρέων ἐπίνειον, ὑπερβολῇ σταδίων ἑκατὸν εἴκοσιν ἀπὸ θαλάττης ἐπὶ θάλατταν. τρίτη δ᾽ ἡ καὶ ταύτην περιέχουσα, ἧς ἰσθμὸς ἀπὸ τοῦ μυχοῦ τοῦ Κρισαίου κόλπου μέχρι Θερμοπυλῶν· ἡ δ᾽ ἐπινοουμένη εὐθεῖα γραμμὴ ὅσον πεντακοσίων ὀκτὼ σταδίων τὴν μὲν Βοιωτίαν ἅπασαν ἐντὸς ἀπολαμβάνουσα, τὴν δὲ Φωκίδα τέμνουσα λοξὴν καὶ τοὺς Ἐπικνημιδίους. τετάρτη δὲ ἡ ἀπὸ τοῦ Ἀμβρακικοῦ κόλπου διὰ τῆς Οἴτης καὶ τῆς Τραχινίας εἰς τὸν Μαλιακὸν κόλπον καθήκοντα ἔχουσα τὸν ἰσθμὸν καὶ τὰς Θερμοπύλας, ὅσον ὀκτακοσίων ὄντα σταδίων· πλειόνων δ᾽ ἢ χιλίων ἄλλος ἐστὶν ἀπὸ τοῦ αὐτοῦ κόλπου τοῦ Ἀμβρακικοῦ διὰ Θετταλῶν καὶ Μακεδόνων εἰς τὸν Θερμαῖον διήκων μυχόν. ὑπαγορεύει δή τινα τάξιν οὐ φαύλην ἡ τῶν χερρονήσων διαδοχή· δεῖ δ᾽ ἀπὸ τῆς ἐλαχίστης ἄρξασθαι, ἐπιφανεστάτης δέ.

C.335 2 Ἔστι τοίνυν ἡ Πελοπόννησος ἐοικυῖα φύλλῳ πλατάνου τὸ σχῆμα, ἴση σχεδόν τι κατὰ μῆκος καὶ κατὰ πλάτος ὅσον χιλίων καὶ τετρακοσίων σταδίων, τὸ μὲν ἀπὸ τῆς ἑσπέρας ἐπὶ τὴν ἕω, τοῦτο δ᾽ ἐστὶ τὸ ἀπὸ τοῦ Χελωνάτα δι᾽ Ὀλυμπίας καὶ τῆς Μεγαλοπολίτιδος ἐπὶ Ἰσθμόν· τὸ δ᾽ ἀπὸ τοῦ νότου πρὸς τὴν ἄρκτον, ὅ ἐστι

τὸ ἀπὸ Μαλεῶν δι' Ἀρκαδίας εἰς Αἴγιον· ἡ δὲ περίμετρος μὴ κατακολπίζοντι τετρακισχιλίων σταδίων, ὡς Πολύβιος· Ἀρτεμίδωρος δὲ καὶ τετρακοσίους προστίθησι· κατακολπίζοντι δὲ πλείους τῶν ἑξακοσίων ἐπὶ τοῖς πεντακισχιλίοις. ὁ δ' Ἰσθμὸς κατὰ τὸν διολκόν, δι' οὗ τὰ πορθμεῖα ὑπερνεωλκοῦσιν ἀπὸ τῆς ἑτέρας εἰς τὴν ἑτέραν θάλατταν, εἴρηται ὅτι τετταράκοντα σταδίων ἐστίν.

Ἔχουσι δὲ τῆς χερρονήσου ταύτης τὸ μὲν ἑσπέριον 2
μέρος Ἠλεῖοι καὶ Μεσσήνιοι, κλυζόμενοι τῷ Σικελικῷ πελάγει· προσλαμβάνουσι δὲ καὶ τῆς ἑκατέρωθεν παραλίας, ἡ μὲν Ἠλεία πρὸς ἄρκτον ἐπιστρέφουσα καὶ τὴν ἀρχὴν τοῦ Κορινθιακοῦ κόλπου μέχρι ἄκρας Ἀράξου, καθ' ἣν ἀντίπορθμός ἐστιν ἥ τε Ἀκαρνανία καὶ αἱ προκείμεναι νῆσοι, Ζάκυνθος καὶ Κεφαλληνία καὶ Ἰθάκη καὶ [αἱ] Ἐχινάδες, ὧν ἐστι καὶ τὸ Δουλίχιον· τῆς δὲ Μεσσηνίας τὸ πλέον ἀνεῳγμένον πρὸς νότον καὶ τὸ Λιβυκὸν πέλαγος μέχρι τῶν καλουμένων Θυρίδων πλησίον Ταινάρου. ἑξῆς δὲ μετὰ μὲν τὴν Ἠλείαν ἐστὶ τὸ τῶν Ἀχαιῶν ἔθνος πρὸς ἄρκτους βλέπον καὶ τῷ Κορινθιακῷ κόλπῳ παρατεῖνον, τελευτᾷ δ' εἰς τὴν Σικυωνίαν· ἐντεῦθεν δὲ Σικυὼν καὶ Κόρινθος ἐκδέχεται μέχρι τοῦ Ἰσθμοῦ· μετὰ δὲ τὴν Μεσσηνίαν ἡ Λακωνικὴ καὶ ἡ Ἀργεία, μέχρι τοῦ Ἰσθμοῦ καὶ αὕτη. κόλποι δ' εἰσὶν ἐνταῦθα ὅ τε Μεσσηνιακὸς καὶ ὁ Λακωνικὸς καὶ τρίτος ὁ Ἀργολικός, τέταρτος δ' ὁ Ἑρμιονικὸς καὶ Σαρωνικός (οἱ δὲ Σαλαμινιακὸν καλοῦσιν), ὧν τοὺς μὲν ἡ Λιβυκὴ τοὺς δ' ἡ Κρητικὴ θάλαττα πληροῖ καὶ τὸ Μυρτῷον πέλαγος· τινὲς δὲ καὶ τὸν Σαρωνικὸν πόρον [ἢ] πέλαγος ὀνομάζουσι. μέση δ' ἐστὶν ἡ Ἀρκαδία πᾶσιν ἐπικειμένη καὶ γειτνιῶσα τοῖς ἄλλοις ἔθνεσιν.

Ὁ δὲ Κορινθιακὸς κόλπος ἄρχεται μὲν ἀπὸ τῶν 3

ἐκβολῶν τοῦ Εὐήνου (τινὲς δέ φασιν τοῦ Ἀχελώου τοῦ ὁρίζοντος Ἀκαρνᾶνας καὶ τοὺς Αἰτωλοὺς) καὶ τοῦ Ἀράξου. ἐνταῦθα γὰρ πρῶτον ἀξιόλογον συναγωγὴν λαμβάνουσι πρὸς ἀλλήλας αἱ ἑκατέρωθεν ἀκταί· προϊοῦσαι δὲ πλέον τελέως συμπίπτουσι κατὰ τὸ Ῥίον καὶ τὸ Ἀντίρριον, ὅσον δὴ πέντε σταδίων ἀπολείπουσαι πορθμόν. ἔστι δὲ τὸ μὲν Ῥίον τῶν Ἀχαιῶν ἀλιτενὴς ἄκρα, δρεπανοειδῆ τινα ἐπιστροφὴν εἰς τὸ ἐντὸς ἔχου-
C.336 σα· καὶ δὴ καὶ καλεῖται Δρέπανον· κεῖται δὲ μεταξὺ Πατρῶν καὶ Αἰγίου Ποσειδῶνος ἱερὸν ἔχουσα· τὸ δ' Ἀντίρριον ἐν μεθορίοις τῆς Αἰτωλίας καὶ τῆς Λοκρίδος ἵδρυται, καλοῦσι δὲ [καὶ] Μολύκριον Ῥίον. εἶτ' ἐντεῦθεν διίσταται πάλιν ἡ παραλία μετρίως ἑκατέρωθεν, προελθοῦσα δ' εἰς τὸν Κρισαῖον κόλπον ἐνταῦθα τελευτᾷ, κλειομένη τοῖς προσεσπερίοις τῆς Βοιωτίας καὶ τῆς Μεγαρικῆς τερμόσιν. ἔχει δὲ τὴν περίμετρον ὁ Κορινθιακὸς κόλπος ἀπὸ μὲν τοῦ Εὐήνου μέχρι Ἀράξου σταδίων δισχιλίων διακοσίων τριάκοντα· εἰ δ' ἀπὸ τοῦ Ἀχελώου, πλεονάζοι ἂν ἑκατόν που σταδίοις. ἀπὸ μέντοι Ἀχελώου ἐπὶ τὸν Εὔηνον Ἀκαρνᾶνές εἰσιν, εἶθ' ἑξῆς ἐπὶ τὸ Ἀντίρριον Αἰτωλοί, τὸ δὲ λοιπὸν μέχρι Ἰσθμοῦ Φωκέων ἐστὶ καὶ Βοιωτῶν καὶ τῆς Μεγαρίδος, στάδιοι χίλιοι ἑκατὸν εἴκοσι δυεῖν δέοντες· ἡ δὲ ἀπὸ τοῦ Ἀντιρρίου μέχρι Ἰσθμοῦ θάλαττα .... Ἀλκυονὶς καλεῖται, μέρος οὖσα τοῦ Κρισαίου κόλπου· ἀ[πὸ δὲ τοῦ] Ἰσθμοῦ ἐπὶ τὸν Ἄραξον τριάκοντα ἐπὶ τοῖς [χιλίοις]. ὡς μὲν δὴ τύπῳ εἰπεῖν τοιαύτη τις καὶ τοσαύτη ἡ τῆς Πελοποννήσου θέσις καὶ τῆς ἀντιπόρθμου γῆς μέχρι τοῦ μυχοῦ, τοιοῦτος δὲ καὶ ὁ μεταξὺ ἀμφοῖν κόλπος. εἶτα καθ' ἕκαστα ἐροῦμεν, τὴν ἀρχὴν ἀπὸ τῆς Ἠλείας ποιησάμενοι.

3 Νῦν μὲν δὴ πᾶσαν Ἠλείαν ὀνομάζουσι τὴν μεταξὺ

Ἀχαιῶν τε καὶ Μεσσηνίων παραλίαν, ἀνέχουσαν εἰς
τὴν μεσόγαιαν τὴν πρὸς Ἀρκαδίᾳ τῇ κατὰ Φολόην
καὶ Ἀζᾶνας καὶ Παρρασίους. τοῦτο δὲ τὸ παλαιὸν εἰς
πλείους δυναστείας διῄρητο, εἶτ' εἰς δύο, τήν τε τῶν
Ἐπειῶν καὶ τὴν ὑπὸ Νέστορι τῷ Νηλέως· καθάπερ
καὶ Ὅμηρος εἴρηκε, τὴν μὲν τῶν Ἐπειῶν ὀνομάζων
Ἦλιν „ἠδὲ παρ' Ἤλιδα δῖαν, ὅθι κρατέουσιν Ἐπειοί,“
τὴν δ' ὑπὸ τῷ Νέστορι Πύλον, δι' ἧς τὸν Ἀλφειὸν ῥεῖν
φησιν, „Ἀλφειοῦ, ὅς τ' εὐρὺ ῥέει Πυλίων διὰ γαίης.“
Πύλον μὲν οὖν καὶ πόλιν οἶδεν ὁ ποιητής „οἱ δὲ Πύ-
„λον, Νηλῆος ἐυκτίμενον πτολίεθρον, ἷξον.“ οὐ διὰ
τῆς πόλεως δὲ οὐδὲ παρ' αὐτὴν ῥεῖ ὁ Ἀλφειός, ἀλλὰ
παρ' αὐτὴν μὲν ἕτερος, ὃν οἱ μὲν Παμισὸν οἱ δὲ Ἄμα-
θον καλοῦσιν, ἀφ' οὗ καὶ ὁ Πύλος Ἠμαθόεις εἰρῆσθαι
οὗτος δοκεῖ, διὰ δὲ τῆς χώρας τῆς Πυλίας ὁ Ἀλφειός.

Ἦλις δὲ ἡ νῦν πόλις οὔπω ἔκτιστο καθ' Ὅμηρον, 2
ἀλλ' ἡ χώρα κωμηδὸν ᾠκεῖτο· ἐκαλεῖτο δὲ κοίλη Ἦλις
ἀπὸ τοῦ συμβεβηκότος· τοιαύτη γὰρ ἦν ἡ πλείστη καὶ
ἀρίστη· ὀψὲ δέ ποτε συνῆλθον εἰς τὴν νῦν πόλιν Ἦλιν,
μετὰ τὰ Περσικά, ἐκ πολλῶν δήμων. σχεδὸν δὲ καὶ
τοὺς ἄλλους τόπους τοὺς κατὰ Πελοπόννησον πλὴν
ὀλίγων, οὓς κατέλεξεν ὁ ποιητής, οὐ πόλεις ἀλλὰ χώ- C.337
ρας νομίζειν [δεῖ], συστήματα δήμων ἐχούσας ἑκάστην
πλείω, ἐξ ὧν ὕστερον αἱ γνωριζόμεναι πόλεις συνῳκί-
σθησαν, οἷον τῆς Ἀρκαδίας Μαντίνεια μὲν ἐκ πέντε
δήμων ὑπ' Ἀργείων συνῳκίσθη, Τεγέα δ' ἐξ ἐννέα, ἐκ
τοσούτων δὲ καὶ Ἡραία ὑπὸ Κλεομβρότου ἢ ὑπὸ
Κλεωνύμου· ὡς δ' αὕτως Αἴγιον ἐξ ἑπτὰ ἢ ὀκτὼ δή-
μων συνεπολίσθη, Πάτραι δὲ ἐξ ἑπτά, Δύμη δὲ ἐξ
ὀκτώ· οὕτω δὲ καὶ ἡ Ἦλις ἐκ τῶν περιοικίδων συνε-
πολίσθη· μία τούτων προσκτισ...... Ἀγριάδες. ῥεῖ
δὲ διὰ τῆς πόλεως ὁ Πηνειὸς ποταμὸς παρὰ τὸ γυμνά-

σιου αὐτῆς· ἔπραξάν τε τοῦτο Ἠλεῖοι χρόνοις ὕστερον πολλοῖς τῆς εἰς αὐτοὺς μεταστάσεως τῶν χωρίων τῶν ὑπὸ τῷ Νέστορι.

3 Ἦν δὲ ταῦτα ἥ τε Πισᾶτις, ἧς ἡ Ὀλυμπία μέρος, καὶ ἡ Τριφυλία καὶ ἡ τῶν Καυκώνων. Τριφύλιοι δ' ἐκλήθησαν ἀπὸ τοῦ συμβεβηκότος, ἀπὸ τοῦ τρία φῦλα συνεληλυθέναι, τό τε τῶν ἀπ' ἀρχῆς Ἐπειῶν καὶ τὸ τῶν ἐποικησάντων ὕστερον Μινυῶν καὶ τὸ τῶν ὕστατα ἐπικρατησάντων Ἠλείων· οἱ δ' ἀντὶ τῶν Μινυῶν Ἀρκάδας φασίν, ἀμφισβητήσαντας τῆς χώρας πολλάκις, ἀφ' οὗ καὶ Ἀρκαδικὸς Πύλος ἐκλήθη ὁ αὐτὸς καὶ Τριφυλιακός. Ὅμηρος δὲ ταύτην ἅπασαν τὴν χώραν μέχρι Μεσσήνης καλεῖ Πύλον ὁμωνύμως τῇ πόλει. ὅτι δὲ διώριστο ἡ κοίλη Ἦλις ἀπὸ τῶν ὑπὸ τῷ Νέστορι τόπων, ὁ τῶν νεῶν κατάλογος δηλοῖ τοῖς τῶν ἡγεμόνων καὶ τῶν κατοικιῶν ὀνόμασι. λέγω δὲ ταῦτα συμβάλλων τά τε νῦν καὶ τὰ ὑφ' Ὁμήρου λεγόμενα· ἀνάγκη γὰρ ἀντεξετάζεσθαι ταῦτα ἐκείνοις διὰ τὴν τοῦ ποιητοῦ δόξαν καὶ συντροφίαν πρὸς ἡμᾶς, τότε νομίζοντος ἑκάστου κατορθοῦσθαι τὴν παροῦσαν πρόθεσιν, ὅταν ᾖ μηδὲν ἀντιπῖπτον τοῖς οὕτω σφόδρα πιστευθεῖσι περὶ τῶν αὐτῶν λόγοις· δεῖ δὴ τά τε ὄντα λέγειν καὶ τὰ τοῦ ποιητοῦ παρατιθέντας ἐφ' ὅσον προσήκει προσσκοπεῖν.

4 Ἔστι δέ τις ἄκρα τῆς Ἠλείας πρόσβορρος ἀπὸ ἑξήκοντα Δύμης Ἀχαϊκῆς πόλεως Ἄραξος. ταύτην μὲν οὖν ἀρχὴν τίθεμεν τῆς τῶν Ἠλείων παραλίας· μετὰ δὲ ταύτην ἐστὶν ἐπὶ τὴν ἑσπέραν προϊοῦσι τὸ τῶν Ἠλείων ἐπίνειον ἡ Κυλλήνη, ἀνάβασιν ἔχουσα ἐπὶ τὴν νῦν πόλιν ἑκατὸν καὶ εἴκοσι σταδίων. μέμνηται δὲ τῆς Κυλλήνης ταύτης καὶ Ὅμηρος λέγων Ὦτον Κυλλήνιον ἀρχὸν Ἐπειῶν. οὐ γὰρ ἀπὸ τοῦ Ἀρκαδικοῦ ὄρους ὄντα

ἔμελλεν ἡγεμόνα τῶν Ἐπειῶν ἀποφῆναι· ἔστι δὲ κώμη μετρία, τὸν Ἀσκληπιὸν ἔχουσα τὸν Κολώτου, θαυμαστὸν ἰδεῖν ξόανον ἐλεφάντινον. μετὰ δὲ Κυλλήνην ἀκρωτήριόν ἐστιν ὁ Χελωνάτας, δυσμικώτατον τῆς Πελοποννήσου σημεῖον. πρόκειται δ' αὐτοῦ νησίον καὶ C.338 βραχέα ἐν μεθορίοις τῆς τε κοίλης Ἤλιδος [καὶ τῆς] Πισατῶν, ὅθεν εἰς Κεφαλληνίαν πλέοντι ε[ἰσὶν οὐ πλεί]ους στάδιοι ὀγδοήκοντα. αὐτοῦ δέ που καὶ ὁ Ἐλίσων ἢ Ἔλισα ῥεῖ ποταμὸς ἐν τῇ λεχθείσῃ μεθορίᾳ.

Μεταξὺ δὲ τοῦ Χελωνάτα καὶ τῆς Κυλλήνης ὅ τε Πηνειὸς ἐκδίδωσι ποταμὸς καὶ ὁ Σελλήεις ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ λεγόμενος, ῥέων ἐκ Φολόης· ἐφ' ᾧ Ἐφύρα πόλις, ἑτέρα τῆς Θεσπρωτικῆς καὶ Θετταλικῆς καὶ τῆς Κορίνθου, τετάρτη τις ἐπὶ τῇ ὁδῷ κειμένη τῇ ἐπὶ Λασίωνα, ἤτοι ἡ αὐτὴ οὖσα τῇ Βοινώᾳ (τὴν γὰρ Οἰνόην οὕτω καλεῖν εἰώθασιν) ἢ πλησίον ἐκείνης, διέχουσα τῆς Ἠλείων πόλεως σταδίους ἑκατὸν εἴκοσιν· ἐξ ἧς ἥ τε Τληπολέμου τοῦ Ἡρακλέους δοκεῖ λέγεσθαι μήτηρ „τὴν ἄγετ' ἐξ Ἐφύρης ποταμοῦ ἄπο Σελλήεντος" (ἐκεῖ γὰρ μᾶλλον αἱ τοῦ Ἡρακλέους στρατεῖαι, πρὸς ἐκείναις τε οὐδεὶς ποταμὸς Σελλήεις), καὶ ὁ τοῦ Μέγητος [θώραξ] „τόν ποτε Φυλεὺς ἤγαγεν ἐξ Ἐφύρης ποτα„μοῦ ἄπο Σελλήεντος." ἐξ ἧς καὶ τὰ φάρμακα τὰ ἀνδροφόνα. εἰς Ἐφύραν γὰρ ἀφῖχθαι [ἡ Ἀθηνᾶ] φησὶ τὸν Ὀδυσσέα „φάρμακον ἀνδροφόνον διζήμενον, ὄφρα οἱ „εἴη ἰοὺς χρίεσθαι" καὶ τὸν Τηλέμαχον οἱ μνηστῆρες „ἠὲ καὶ εἰς Ἐφύρην ἐθέλει πίειραν ἄρουραν ἐλθεῖν, „ὄφρ' ἔνθεν θυμοφθόρα φάρμακ' ἐνείκῃ." καὶ γὰρ τὴν Αὐγέου θυγατέρα τοῦ τῶν Ἐπειῶν βασιλέως ὁ Νέστωρ ἐν τῇ διηγήσει τοῦ πρὸς αὐτοὺς πολέμου φαρμακίδα εἰσάγει „πρῶτος ἐγὼν ἕλον ἄνδρα" φήσας „Μούλιον „αἰχμητήν, γαμβρὸς δ' ἦν Αὐγείαο, πρεσβυτάτην δὲ

„θύγατρ' εἶχεν, ἣ τόσα φάρμακα ἤδη, ὅσα τρέφει εὐ-„ρεῖα χθών.“ ἔστι δὲ καὶ περὶ Σικυῶνα Σελλήεις ποταμὸς καὶ Ἐφύρα πλησίον κώμη, καὶ ἐν τῇ Ἀγραίᾳ τῆς Αἰτωλίας Ἐφύρα κώμη, οἱ δ' ἀπ' αὐτῆς Ἔφυροι· καὶ ἄλλοι οἱ Περραιβῶν πρὸς Μακεδονίᾳ, οἱ Κραννώνιοι, καὶ οἱ Θεσπρωτικοὶ οἱ ἐκ Κιχύρου τῆς πρότερον Ἐφύρας.

6 Ἀπολλόδωρος δὲ διδάσκων ὃν τρόπον ὁ ποιητὴς εἴωθε διαστέλλεσθαι τὰς ὁμωνυμίας, οἷον ἐπὶ τοῦ Ὀρχομενοῦ τὸν μὲν Ἀρκαδικὸν πολύμηλον καλῶν τὸν δὲ Βοιωτιακὸν Μινύειον, καὶ Σάμον Θρηικίην συντιθείς C.339 „μεσσηγύς τε Σάμοιο καὶ Ἴμβρου,“ ἵνα χωρίσῃ ἀπὸ τῆς Ἰωνικῆς, οὕτω φησὶ καὶ τὴν Θεσπρωτικὴν Ἐφύραν διαστέλλεσθαι τῷ τε „τηλόθεν“ καὶ τῷ „ποταμοῦ „ἄπο Σελλήεντος.“ ταῦτα δ' οὐχ ὁμολογεῖ τοῖς ὑπὸ τοῦ Σκηψίου Δημητρίου λεγομένοις, παρ' οὗ μεταφέρει τὰ πλεῖστα. ἐκεῖνος γὰρ οὔ φησιν εἶναι Σελλήεντα ἐν Θεσπρωτοῖς ποταμόν, ἀλλ' ἐν τῇ Ἠλείᾳ παρὰ τὴν ἐκεῖ Ἐφύραν, ὡς προείπομεν. τοῦτό τε οὖν εἴρηκε σκέψεως δεόμενον καὶ περὶ τῆς Οἰχαλίας ὅτι φησὶν οὐ μιᾶς οὔσης, μίαν εἶναι πόλιν Εὐρύτου Οἰχαλιῆος· δῆλον οὖν ὅτι τὴν Θετταλικήν, ἐφ' ἧς φησιν „οἵ τ' ἔχον Οἰχαλίην, „πόλιν Εὐρύτου Οἰχαλιῆος.“ τίς οὖν ἐστιν ἐξ ἧς ὁρμηθέντα αἱ Μοῦσαι κατὰ Δώριον „ἀντόμεναι Θάμυ-„ριν τὸν Θρήικα παῦσαν ἀοιδῆς;“ εἰ μὲν γὰρ ἡ Θετταλική, οὐκ εὖ πάλιν ὁ Σκήψιος Ἀρκαδικήν τινα λέγων, ἣν νῦν Ἀνδανίαν καλοῦσιν· εἰ δ' οὗτος εὖ, καὶ ἡ Ἀρκαδικὴ πόλις Εὐρύτου εἴρηται, ὥστ' οὐ μία μόνον· ἐκεῖνος δὲ μίαν φησί.

---

25. post ἀοιδῆς: φησὶ γὰρ „Οἰχαλίηθεν ἰόντα παρ' Εὐρύτου Οἰχαλιῆος“

Μεταξὺ δὲ τοῦ Πηνειοῦ καὶ τῆς Σελλήεντος ἐκβολῆς Πύλος ᾤκεῖτο κατὰ τὸ Σκόλλιον, οὐχ ἡ τοῦ Νέστορος πόλις, ἀλλ' ἑτέρα τις, ᾗ πρὸς τὸν Ἀλφειὸν οὐδέν ἐστι κοινώνημα, οὐδὲ πρὸς τὸν Παμισόν, εἴτε Ἄμαθον χρὴ καλεῖν. βιάζονται δ' ἔνιοι μνηστευόμενοι τὴν Νέστορος δόξαν καὶ τὴν εὐγένειαν· τριῶν γὰρ Πύλων ἱστορουμένων ἐν Πελοποννήσῳ — καθότι καὶ τὸ ἔπος εἴρηται τουτί „ἔστι Πύλος πρὸ Πύλοιο· Πύλος γε μέν ἐστι καὶ ἄλλος“ — τούτου τε καὶ τοῦ Λεπρεατικοῦ τοῦ ἐν τῇ Τριφυλίᾳ καὶ τῇ Πισάτιδι, τρίτου δὲ τοῦ Μεσσηνιακοῦ τοῦ κατὰ Κορυφάσιον, ἕκαστοι τὸν παρά σφισιν ἠμαθόεντα πειρῶνται δεικνύναι, καὶ τὴν τοῦ Νέστορος πατρίδα τοῦτον ἀποφαίνουσιν. οἱ μὲν οὖν πολλοὶ τῶν νεωτέρων καὶ συγγραφέων καὶ ποιητῶν Μεσσήνιόν φασι τὸν Νέστορα, τῷ σωζομένῳ μέχρι εἰς αὐτοὺς προστιθέμενοι· οἱ δ' Ὁμηρικώτεροι τοῖς ἔπεσιν ἀκολουθοῦντες τοῦτον εἶναί φασι τὸν τοῦ Νέστορος Πύλον, οὗ τὴν χώραν διέξεισιν ὁ Ἀλφειός· διέξεισι δὲ τὴν Πισᾶτιν καὶ τὴν Τριφυλίαν. οἱ δ' οὖν ἐκ τῆς κοίλης Ἤλιδος καὶ τοιαύτην φιλοτιμίαν προσετίθεσαν τῷ παρ' αὐτοῖς Πύλῳ, καὶ γνωρίσματα δεικνύντες Γέρηνον C.340 τόπον καὶ Γέροντα ποταμὸν καὶ ἄλλον Γεράνιον, εἶτ' ἀπὸ τούτων ἐπιθέτως Γερήνιον εἰρῆσθαι πιστούμενοι τὸν Νέστορα. τοῦτο δὲ ταὐτὸ καὶ οἱ Μεσσήνιοι πεποιήκασι, καὶ πιθανώτεροί γε φαίνονται· μᾶλλον γὰρ γνώριμά φασιν εἶναι τὰ παρ' ἐκείνοις Γέρηνα, συνοικουμένην ποτὲ εὖ. τοιαῦτα μὲν τὰ περὶ τὴν κοίλην Ἦλιν ὑπάρχοντα νυνί. 7

Ὁ δὲ ποιητὴς εἰς τέτταρα μέρη διελὼν τήνδε τὴν χώραν, τέτταρας δὲ καὶ τοὺς ἡγεμόνας εἰπών, οὐ σαφῶς εἴρηκεν „οἳ δ' ἄρα Βουπράσιόν τε καὶ Ἤλιδα δῖαν „ἔναιον, ὅσσον ἐφ' Ὑρμίνη καὶ Μύρσινος ἐσχατόωσα 8

„πέτρη τ' Ὠλενίη καὶ Ἀλείσιον ἐντὸς ἐέργει, τῶν αὖ „τέσσαρες ἀρχοὶ ἔσαν, δέκα δ' ἀνδρὶ ἑκάστῳ νῆες „ἕποντο θοαί· πολέες δ' ἔμβαινον Ἐπειοί." τῷ μὲν γὰρ Ἐπειοὺς ἀμφοτέρους προσαγορεύειν τούς τε Βουπρασιεῖς καὶ τοὺς Ἠλείους, Ἠλείους δὲ μηκέτι καλεῖν τοὺς Βουπρασιεῖς, οὐ τὴν Ἠλείαν δόξειεν ἂν εἰς τέτταρα μέρη διαιρεῖν, ἀλλὰ τὴν τῶν Ἐπειῶν, ἣν εἰς δύο μέρη διεῖλε πρότερον· οὐδ' ἂν μέρος εἴη τῆς Ἤλιδος τὸ Βουπράσιον, ἀλλὰ τῶν Ἐπειῶν μᾶλλον. ὅτι γὰρ Ἐπειοὺς καλεῖ τοὺς Βουπρασίους, δῆλον „ὡς ὁπότε „κρείοντ' Ἀμαρυγκέα θάπτον Ἐπειοὶ Βουπρασίῳ." πάλιν δὲ τῷ συγκαταριθμεῖσθαι Βουπράσιόν τε καὶ Ἤλιδα δῖαν λέγοντα, εἶτ' εἰς τέτταρας διαιρεῖν μερίδας, ὡς ἂν κοινῷ δοκεῖ τῷ τε Βουπρασίῳ καὶ τῇ Ἤλιδι αὐτὰς ὑποτάττειν. ἦν δ', ὡς ἔοικε, κατοικία τῆς Ἠλείας τὸ Βουπράσιον ἀξιόλογος, ἣ νῦν οὐκέτ' ἐστίν· ἡ δὲ χώρα καλεῖται μόνον οὕτως ἡ ἐπὶ τῆς ὁδοῦ τῆς ἐπὶ Δύμην ἐξ Ἤλιδος τῆς νῦν πόλεως. ὑπολάβοι δ' ἄν τις καὶ ὑπεροχήν τινα ἔχειν τότε τὸ Βουπράσιον παρὰ τὴν Ἦλιν, ὥσπερ καὶ οἱ Ἐπειοὶ παρὰ τούτους· ὕστερον δ' ἀντ' Ἐπειῶν Ἠλεῖοι ἐκλήθησαν. καὶ τὸ Βουπράσιον μὲν δὴ μέρος ἦν τῆς Ἤλιδος. ποιητικῷ δέ τινι σχήματι συγκαταλέγειν τὸ μέρος τῷ ὅλῳ φασὶ τὸν Ὅμηρον, ὡς τό „ἀν' Ἑλλάδα καὶ μέσον Ἄργος" καί „ἀν' Ἑλλάδα τε Φθίην τε" „Κουρῆτές τ' ἐμάχοντο καὶ Αἰτωλοί" „οἱ δ' ἐκ Δουλιχίοιο Ἐχινάων θ' ἱεράων." καὶ γὰρ τὸ Δουλίχιον τῶν Ἐχινάδων. χρῶνται δὲ καὶ οἱ νεώτεροι· Ἱππῶναξ μέν „Κυπρίων βέκος φαγοῦσι καὶ Ἀμαθουσίων πυρόν·" Κύπριοι γὰρ καὶ οἱ Ἀμαθούσιοι· καὶ

---

11. post Βουπρασίῳ: τὸ δὲ Βουπράσιον εἶναί τινα χώραν τῆς Ἠλείας, κατοικίαν οὐκ ἔχουσαν ὁμώνυμον· νυνὶ φαίνεται τῆς Ἤλιδος ὂν μέρος καὶ τοῦτο.

Ἀλκμὰν δέ „Κύπρον ἱμερτὰν λιποῖσα καὶ Πάφον περιρρύταν“ καὶ Αἰσχύλος „Κύπρου Πάφου τ᾽ ἔχουσα C.341
„πάντα κλῆρον.“ εἰ δ᾽ οὐκ εἴρηκεν Ἠλείους τοὺς Βουπρασίους, οὐδ᾽ ἄλλα πολλὰ τῶν ὄντων, φήσομεν· ἀλλὰ τοῦτ᾽ οὐκ ἔστιν ἀπόδειξις τοῦ μὴ εἶναι, ἀλλὰ τοῦ μὴ εἰπεῖν μόνον.

Ἑκαταῖος δ᾽ ὁ Μιλήσιος ἑτέρους λέγει τῶν Ἠλείων 9
τοὺς Ἐπειούς· τῷ γοῦν Ἡρακλεῖ συστρατεῦσαι τοὺς Ἐπειοὺς ἐπὶ Αὐγέαν καὶ συνανελεῖν αὐτῷ τόν τε Αὐγέαν καὶ τὴν Ἦλιν· φησὶ δὲ καὶ τὴν Δύμην Ἐπειίδα καὶ Ἀχαιίδα. πολλὰ μὲν οὖν καὶ μὴ ὄντα λέγουσιν οἱ ἀρχαῖοι συγγραφεῖς, συντεθραμμένοι τῷ ψεύδει διὰ τὰς μυθογραφίας· διὰ δὲ τοῦτο καὶ οὐχ ὁμολογοῦσι πρὸς ἀλλήλους περὶ τῶν αὐτῶν. οὐ μέντοι ἄπιστον οὐδ᾽ εἴ ποτε διάφοροι τοῖς Ἠλείοις ὄντες οἱ Ἐπειοὶ καὶ ἑτεροεθνεῖς εἰς ταὐτὸ συνήρχοντο κατ᾽ ἐπικράτειαν, καὶ κοινὴν ἔνεμον τὴν πολιτείαν· ἐπεκράτουν δὲ καὶ μέχρι Δύμης. ὁ μὲν γὰρ ποιητὴς οὐκ ὠνόμακε τὴν Δύμην, οὐκ ἀπεικὸς δ᾽ ἐστὶ τότε μὲν αὐτὴν ὑπὸ τοῖς Ἐπειοῖς ὑπάρξαι, ὕστερον δὲ τοῖς Ἴωσιν, ἢ μηδ᾽ ἐκείνοις ἀλλὰ τοῖς τὴν ἐκείνων χώραν κατασχοῦσιν Ἀχαιοῖς· τῶν δὲ τεττάρων μερίδων, ὧν ἐντός ἐστι καὶ τὸ Βουπράσιον, ἡ μὲν Ὑρμίνη καὶ ἡ Μύρσινος τῆς Ἠλείας ἐστίν, αἱ λοιπαὶ δὲ ἐπὶ τῶν ὅρων ἤδη τῆς Πισάτιδος, ὥς οἴονταί τινες.

Ὑρμίνη μὲν οὖν πολίχνιον ἦν, νῦν δ᾽ οὐκ ἔστιν· 10
ἀλλ᾽ ἀκρωτήριον πλησίον Κυλλήνης ὀρεινόν ἐστι, καλούμενον Ὅρμινα ἢ Ὕρμινα· Μύρσινος δὲ τὸ νῦν Μυρτούντιον, ἐπὶ θάλατταν καθήκουσα κατὰ τὴν ἐκ Δύμης εἰς Ἦλιν ὁδὸν κατοικία, στάδια τῆς Ἠλείων πόλεως διέχουσα ἑβδομήκοντα. πέτρην δ᾽ Ὠλενίην εἰκάζουσι τὴν νῦν Σκόλλιν· ἀνάγκη γὰρ εἰκότα λέγειν, καὶ

τῶν τόπων καὶ τῶν ὀνομάτων μεταβεβλημένων, ἐκείνου τε μὴ σφόδρα ἐπὶ πολλῶν σαφηνίζοντος· ἔστι δ' ὄρος πετρῶδες κοινὸν Δυμαίων τε καὶ Τριταιέων καὶ Ἠλείων, ἐχόμενον ἑτέρου τινὸς Ἀρκαδικοῦ ὄρους Λαμπείας, ὃ τῆς Ἤλιδος μὲν διέστηκεν ἑκ[ατὸν καὶ] τριάκοντα σταδίους, Τριταίας δὲ ἑκατόν, [καὶ Δύμης] τοὺς ἴσους, Ἀχαϊκῶν πόλεων. τὸ δ' Ἀλείσιον ἔστι τὸ νῦν Ἀλεσιαῖον, χώρα περὶ τὴν Ἀμφιδολίδα, ἐν ᾗ καὶ κατὰ μῆνα ἀγορὰν συνάγουσιν οἱ περίοικοι· κεῖται δὲ ἐπὶ τῆς ὀρεινῆς ὁδοῦ τῆς ἐξ Ἤλιδος εἰς Ὀλυμπίαν· πρότερον δ' ἦν πόλις τῆς Πισάτιδος, ἄλλοτ' ἄλλως τῶν ὅρων ἐπαλλαττόντων διὰ τὰς τῶν ἡγεμόνων μεταβολάς· τὸ δ' Ἀλείσιον καὶ Ἀλεισίου κολώνην ὁ ποιητὴς καλεῖ
C.342 ὅταν φῇ „μέσφ' ἐπὶ Βουπρασίου πολυπύρου βήσαμεν „ἵππους πέτρης τ' Ὠλενίης καὶ Ἀλεισίου ἔνθα κολώνη „κέκληται.“ ὑπερβατῶς γὰρ δεῖ δέξασθαι ἴσον τῷ „καὶ „ἔνθ' Ἀλεισίου κολώνη κέκληται.“ ἔνιοι δὲ καὶ ποταμὸν δεικνύουσιν Ἀλείσιον.

11 Λεγομένων δέ τινων ἐν τῇ Τριφυλίᾳ Καυκώνων πρὸς τῇ Μεσσηνίᾳ, λεγομένης δὲ καὶ τῆς Δύμης Καυκωνίδος ὑπό τινων, ὄντος δὲ καὶ ποταμοῦ ἐν τῇ Δυμαίᾳ μεταξὺ Δύμης καὶ Τριταίας ὃς καλεῖται Καύκων, ζητοῦσι περὶ τῶν Καυκώνων μὴ διττοὶ λέγονται, οἱ μὲν περὶ τὴν Τριφυλίαν οἱ δὲ περὶ Δύμην καὶ Ἦλιν καὶ τὸν Καύκωνα· ἐμβάλλει δ' οὗτος εἰς ἕτερον, ὃς Τευθέας ἀρσενικῶς καλεῖται, ὁμώνυμος πολίχνῃ τινὶ τῶν εἰς τὴν Δύμην συνῳκισμένων, πλὴν ὅτι χωρὶς τοῦ σίγμα Τευθέα λέγεται θηλυκῶς αὕτη, ἐκτεινόντων τὴν ἐσχάτην συλλαβήν, ὅπου τὸ τῆς * Νεμυδίας Ἀρτέμιδος ἱερόν. ὁ δὲ Τευθέας εἰς τὸν Ἀχελῷον ἐμβάλλει τὸν

22. post Καύκων: θηλυκῶς 23. ante μή: ὡς

κατὰ Δύμην ῥέοντα, ὁμώνυμον τῷ κατὰ Ἀκαρνανίαν, καλούμενον καὶ Πεῖρον. τοῦ δ' Ἡσιόδου εἰπόντος „ᾤκεε δ' Ὠλενίην πέτρην ποταμοῖο παρ' ὄχθας εὐρεῖος „Πείροιο,“ μεταγράφουσί τινες Πώροιο οὐκ εὖ. οὔτε γὰρ τὴν Δύμην ὁπόθεν Καυκωνίδα εἰρῆσθαι συμβέβηκε παραλιπεῖν ἄξιον, οὔτε τὸν ποταμὸν ὁπόθεν Καύκων εἴρηται, διὰ τὸ τοὺς Καύκωνας παρέχειν ζήτησιν, οἵ τινές ποτέ εἰσιν, ὅπου φησὶν ἡ Ἀθηνᾶ βαδίζειν κατὰ τὴν τοῦ χρέους κομιδήν. εἰ γὰρ δὴ δεχοίμεθα τοὺς ἐν τῇ Τριφυλίᾳ λέγεσθαι τοὺς περὶ Λέπρειον, οὐκ οἶδ' ὅπως πιθανὸς ἔσται ὁ λόγος· διὸ καὶ γράφουσί τινες „ἔνθα χρεῖός μοι ὀφείλεται Ἤλιδι δίῃ, οὐκ ὀλίγον.“ σαφεστέραν δ' ἕξει τὴν ἐπίσκεψιν τοῦτο, ἐπειδὰν τὴν ἑξῆς χώραν περιοδεύσωμεν τήν τε Πισᾶτιν καὶ τὴν Τριφυλίαν μέχρι τῆς τῶν Μεσσηνίων μεθορίας.

Μετὰ δὲ τὸν Χελωνάταν ὁ τῶν Πισατῶν ἐστιν 12
αἰγιαλὸς πολύς, εἶτ' ἄκρα Φειά· ἦν δὲ καὶ πολίχνη „Φειᾶς πὰρ τείχεσσιν, Ἰαρδάνου ἀμφὶ ῥέεθρα·“ ἔστι γὰρ καὶ ποτάμιον πλησίον. ἔνιοι δ' ἀρχὴν τῆς Πισά- C.343
τιδος τὴν Φειάν φασι· πρόκειται δὲ καὶ ταύτης νησίον καὶ λιμήν, ἔνθεν εἰς Ὀλυμπίαν τὸ ἐγγυτάτω ἐκ θαλάττης εἰσὶ στάδιοι ἑκατὸν εἴκοσιν. εἶτ' ἄλλη ἄκρα εὐθὺς ἐπὶ πολὺ προὔχουσα ἐπὶ τὴν δύσιν, καθάπερ ὁ Χελωνάτας, ἀφ' ἧς πάλιν ἐπὶ τὴν Κεφαλληνίαν στάδιοι ἑκατὸν εἴκοσιν. εἶθ' ὁ Ἀλφειὸς ἐκδίδωσι, διέχων τοῦ Χε-

---

4. post οὐκ εὖ: περὶ δὲ τῶν Καυκώνων ζητοῦσι, φησίν, ὅτι τῆς Ἀθηνᾶς τῆς τῷ Μέντορι ὡμοιωμένης ἐν τῇ Ὀδυσσείᾳ εἰπούσης πρὸς τὸν Νέστορα „ἀτὰρ ἠῶθεν μετὰ Καύκωνας με- „γαθύμους εἶμ', ἔνθα χρεῖός μοι ὀφείλεται, οὔ τι νέον γε οὐδ' „ὀλίγον. σὺ δὲ τοῦτον, ἐπεὶ τεὸν ἵκετο δῶμα, πέμψον σὺν δίφρῳ „τε καὶ υἱέι· δὸς δέ οἱ ἵππους,“ δοκεῖ σημαίνεσθαι χώρα τις ἐν τῇ τῶν Ἐπειῶν, ἣν οἱ Καύκωνες εἶχον, ἕτεροι ὄντες τῶν ἐν τῇ Τριφυλίᾳ, ἐπεκτείνοντες καὶ μέχρι τῆς Δυμαίας τυχόν.

λωνάτα σταδίους διακοσίους ὀγδοήκοντα, Ἀράξου δὲ πεντακοσίους τετταράκοντα πέντε. ῥεῖ δ' ἐκ τῶν αὐτῶν τόπων ἐξ ὧν καὶ ὁ Εὐρώτας· καλεῖται δὲ Ἀσέα, κώμη τῆς Μεγαλοπολίτιδος, πλησίον ἀλλήλων ἔχουσα δύο πηγάς, ἐξ ὧν ῥέουσιν οἱ λεχθέντες ποταμοί· δύντες δ' ὑπὸ γῆς ἐπὶ συχνοὺς σταδίους ἀνατέλλουσι πάλιν, εἶθ' ὁ μὲν εἰς τὴν Λακωνικὴν ὁ δ' εἰς τὴν Πισᾶτιν κατάγεται. ὁ μὲν οὖν Εὐρώτας κατὰ τὴν ἀρχὴν τῆς Βλεμινάτιδος ἀναδείξας τὸ ῥεῖθρον, παρ' αὐτὴν τὴν Σπάρτην ῥυεὶς καὶ διεξιὼν αὐλῶνά τινα μακρὸν κατὰ τὸ Ἕλος, οὗ μέμνηται καὶ ὁ ποιητής, ἐκδίδωσι μεταξὺ Γυθείου τοῦ τῆς Σπάρτης ἐπινείου καὶ Ἀκραίων. ὁ δ' Ἀλφειὸς παραλαβὼν τόν τε Λάδωνα καὶ τὸν Ἐρύμανθον καὶ ἄλλους ἀσημοτέρους διὰ τῆς Φρίξης καὶ τῆς Πισάτιδος καὶ Τριφυλίας ἐνεχθεὶς παρ' αὐτὴν τὴν Ὀλυμπίαν ἐπὶ θάλατταν τὴν Σικελικὴν ἐκπίπτει μεταξὺ Φειᾶς τε καὶ Ἐπιταλίου. πρὸς δὲ τῇ ἐκβολῇ τὸ τῆς Ἀλφειωνίας Ἀρτέμιδος ἢ Ἀλφειούσης ἄλσος ἐστὶ (λέγεται γὰρ ἀμφοτέρως), ἀπέχον τῆς Ὀλυμπίας εἰς ὀγδοήκοντα σταδίους. ταύτῃ δὲ τῇ θεῷ καὶ ἐν Ὀλυμπίᾳ κατ' ἔτος συντελεῖται πανήγυρις, καθάπερ καὶ τῇ Ἐλαφίᾳ καὶ τῇ Δαφνίᾳ. μεστὴ δ' ἐστὶν ἡ γῆ πᾶσα ἀρτεμισίων τε καὶ ἀφροδισίων καὶ νυμφαίων ἐν ἄλσεσιν ἀνθέων [πλέ]ως τὸ πολὺ διὰ τὴν εὐυδρίαν, συχνὰ δὲ καὶ ἑρμεῖα ἐν ταῖς ὁδοῖς, ποσείδια δ' ἐπὶ ταῖς ἀκταῖς. ἐν δὲ τῷ τῆς Ἀλφειωνίας ἱερῷ γραφαὶ Κλεάνθους τε καὶ Ἀρήγοντος, ἀνδρῶν Κορινθίων, τοῦ μὲν Τροίας ἅλωσις καὶ Ἀθηνᾶς γοναί, τοῦ δ' Ἄρτεμις ἀναφερομένη ἐπὶ γρυπός, σφόδρα εὐδόκιμοι.

13 Εἶτα τὸ διεῖργον ὄρος τῆς Τριφυλίας τὴν Μακιστίαν ἀπὸ τῆς Πισάτιδος· εἶτ' ἄλλος ποταμὸς Χαλκὶς καὶ κρήνη Κρουνοὶ καὶ κατοικία Χαλκίς, καὶ τὸ Σαμι-

κὸν μετὰ ταῦτα, ὅπου τὸ μάλιστα τιμώμενον τοῦ Σαμίου Ποσειδῶνος ἱερόν· ἔστι δ' ἄλσος ἀγριελαιῶν πλέων· ἐπεμελοῦντο δ' αὐτοῦ Μακίστιοι· οὗτοι δὲ καὶ τὴν ἐκεχειρίαν ἐπήγγελλον, ἣν καλοῦσι Σάμιον· συντελοῦσι δ' εἰς τὸ ἱερὸν πάντες Τριφύλιοι. καὶ τὸ τῆς Σκιλλουντίας δὲ Ἀθηνᾶς ἱερὸν τὸ περὶ Σκιλλοῦντα τῶν ἐπιφανῶν ἐστιν, Ὀλυμπίας πλησίον κατὰ τὸν φελλῶνα.

Κατὰ ταῦτα δέ πως τὰ ἱερὰ ὑπέρκειται τῆς θα- 14
λάττης ἐν τριάκοντα ἢ μικρῷ πλείοσι σταδίοις ὁ Τριφυλιακὸς Πύλος [ὁ] καὶ Λεπρεατικός, ὃν καλεῖ ὁ ποιη- C.344
τὴς ἠμαθόεντα καὶ παραδίδωσι τοῦ Νέστορος πατρίδα, ὡς ἄν τις ἐκ τῶν ἐπῶν τεκμαίροιτο· εἴτε τοῦ παραρρέοντος ποταμοῦ πρὸς ἄρκτον Ἀμάθου καλουμένου πρότερον, ὃς νῦν *Μάμαος καὶ Ἀρκαδικὸς καλεῖται, ὥστ' ἐντεῦθεν ἠμαθόεντα κεκλῆσθαι· εἴτε τούτου μὲν Παμισοῦ καλουμένου ὁμωνύμως τοῖς ἐν τῇ Μεσσηνίᾳ δυσί, τῆς δὲ πόλεως ἄδηλον ἐχούσης τὴν ἐτυμολογίαν τοῦ ἐπιθέτου· καὶ γὰρ τὸ ἀμαθώδη τὸν ποταμὸν ἢ τὴν χώραν εἶναι ψεῦδός φασι. πρὸς ἕω δ' ἐστὶν ὄρος τοῦ Πύλου πλησίον ἐπώνυμον Μίνθης, ἣν μυθεύουσι παλλακὴν τοῦ Ἅιδου γενομένην πατηθεῖσαν ὑπὸ τῆς κόρης εἰς τὴν κηπαίαν μίνθην μεταβαλεῖν, ἥν τινες ἡδύοσμον καλοῦσι. καὶ δὴ καὶ τέμενός ἐστιν Ἅιδου πρὸς τῷ ὄρει τιμώμενον καὶ ὑπὸ Μακιστίων, καὶ Δήμητρος ἄλσος ὑπερκείμενον τοῦ Πυλιακοῦ πεδίου. τὸ δὲ πεδίον εὔγεών ἐστι τοῦτο, τῇ θαλάττῃ δὲ συνάψαν παρατείνει παρ' ἅπαν τὸ μεταξὺ τοῦ τε Σαμικοῦ καὶ ποταμοῦ Νέδας διάστημα. θινώδης δὲ καὶ στενός ἐστιν ὁ τῆς θαλάττης αἰγιαλός, ὥστ' οὐκ ἂν ἀπογνοίη τις ἐντεῦθεν ἠμαθόεντα ὠνομάσθαι τὸν Πύλον.

---

12. post ἐπῶν: τῶν Ὁμήρου

15 Πρὸς ἄρκτον δ' ὅμορα ἦν τῷ Πύλῳ δύο πολίδια Τριφυλιακὰ Ὕπανα καὶ Τυμπανέαι, ὧν τὸ μὲν εἰς Ἦλιν συνῳκίσθη τὸ δ' ἔμεινε. καὶ ποταμοὶ δὲ δύο ἐγγὺς ῥέουσιν ὅ τε Δαλίων καὶ ὁ Ἀχέρων, ἐμβάλλοντες εἰς τὸν Ἀλφειόν. ὁ δὲ Ἀχέρων κατὰ τὴν πρὸς τὸν Ἅιδην οἰκειότητα ὠνόμασται· ἐκτετίμηται γὰρ δὴ σφόδρα τά τε τῆς Δήμητρος καὶ τῆς κόρης ἱερὰ ἐνταῦθα καὶ τὰ τοῦ Ἅιδου, τάχα διὰ τὰς ὑπεναντιότητας, ὥς φησιν ὁ Σκήψιος Δημήτριος. καὶ γὰρ εὔκαρπός ἐστι καὶ ἐρυσίβην γεννᾷ καὶ θρύον ἡ Τριφυλία· διόπερ ἀντὶ μεγάλης φορᾶς πυκνὰς ἀφορίας γίνεσθαι συμβαίνει κατὰ τοὺς τόπους.

16 Τοῦ δὲ Πύλου πρὸς νότον ἐστὶ τὸ Λέπρειον. ἦν δὲ καὶ αὕτη ἡ πόλις ὑπὲρ τῆς θαλάττης ἐν τετταράκοντα σταδίοις· μεταξὺ δὲ τοῦ Λεπρείου καὶ τοῦ *Ἀννίου τὸ ἱερὸν τοῦ Σαμίου Ποσειδῶνός ἐστιν, ἑκατὸν σταδίους ἑκατέρου διέχον. τοῦτο δ' ἐστὶ τὸ ἱερὸν ἐν ᾧ καταληφθῆναί φησιν ὁ ποιητὴς ὑπὸ Τηλεμάχου τὴν θυσίαν συντελοῦντας τοὺς Πυλίους „οἱ δὲ Πύλον, Νηλῆος „ἐυκτίμενον πτολίεθρον, ἷξον· τοὶ δ' ἐπὶ θινὶ θαλάσ„σης ἱερὰ ῥέζον, ταύρους παμμέλανας, Ἐνοσίχθονι
C.345 „κυανοχαίτῃ." πάρεστι μὲν γὰρ τῷ ποιητῇ καὶ πλάττειν τὰ μὴ ὄντα, ὅταν δ' ᾖ δυνατόν, ἐφαρμόττειν τοῖς οὖσι τὰ ἔπη καὶ σῴζειν τὴν διήγησιν. τὸ δ' ἀπέχεσθαι προσῆκε μᾶλλον. χώραν δ' εἶχον εὐδαίμονα οἱ Λεπρεᾶται· τούτοις δ' ὅμοροι Κυπαρισσιεῖς. ἄμφω δὲ τὰ χωρία ταῦτα Καύκωνες κατεῖχον, καὶ τὸν Μάκιστον δέ, ὅν τινες Πλατανιστοῦντα καλοῦσιν. ὁμώνυμον τῇ χώρᾳ [δ'] ἐστὶ τὸ πόλισμα. φασὶ δ' ἐν τῇ Λεπρεάτιδι καὶ Καύκωνος εἶναι μνῆμα, εἴτ' ἀρχηγέτου τινὸς εἴτ' ἄλλως ὁμωνύμου τῷ ἔθνει.

17 Πλείους δ' εἰσὶ λόγοι περὶ τῶν Καυκώνων· καὶ

γὰρ Ἀρκαδικὸν ἔθνος φασί, καθάπερ τὸ Πελασγικόν, καὶ πλανητικὸν ἄλλως, ὥσπερ ἐκεῖνο. ἱστορεῖ γοῦν ὁ ποιητὴς καὶ τοῖς Τρωσὶν ἀφιγμένους συμμάχους, πόθεν δ' οὐ λέγει· δοκοῦσι δ' ἐκ Παφλαγονίας· ἐκεῖ γὰρ ὀνομάζουσι Καυκωνιάτας τινὰς Μαριανδυνοῖς ὁμόρους, οἳ καὶ αὐτοὶ Παφλαγόνες εἰσί. μνησθησόμεθα δ' αὐτῶν ἐπὶ πλέον, ὅταν εἰς ἐκεῖνον περιστῇ τὸν τόπον ἡ γραφή. νυνὶ δὲ περὶ τῶν ἐν τῇ Τριφυλίᾳ Καυκώνων ἔτι καὶ ταῦτα προσιστορητέον. οἱ μὲν γὰρ καὶ ὅλην τὴν νῦν Ἠλείαν ἀπὸ τῆς Μεσσηνίας μέχρι Δύμης Καυκωνίαν λεχθῆναί φασιν· Ἀντίμαχος γοῦν καὶ Ἐπειοὺς καὶ Καύκωνας ἅπαντας προσαγορεύει. τινὲς δὲ ὅλην μὲν μὴ κατασχεῖν αὐτούς, δίχα δὲ μεμερισμένους οἰκεῖν, τοὺς μὲν πρὸς τῇ Μεσσηνίᾳ κατὰ τὴν Τριφυλίαν τοὺς δὲ πρὸς τῇ Δύμῃ κατὰ τὴν Βουπρασίδα καὶ τὴν κοίλην Ἦλιν· Ἀριστοτέλης δ' ἐνταῦθα μάλιστα οἶδεν ἱδρυμένους αὐτούς. καὶ δὴ τοῖς ὑφ' Ὁμήρου λεγομένοις ὁμολογεῖ μᾶλλον ἡ ὑστάτη ἀπόφασις, τό τε ζητούμενον πρότερον λαμβάνει λύσιν. ὁ μὲν γὰρ Νέστωρ ὑπόκειται τὸν Τριφυλιακὸν οἰκῶν Πύλον, τά τε πρὸς νότον καὶ τὰ ἑωθινά (ταῦτα δ' ἐστὶ τὰ συγκυροῦντα πρὸς τὴν Μεσσηνίαν καὶ τὴν Λακωνικήν) ὑπ' ἐκείνῳ ἐστίν, ἔχουσι δ' οἱ Καύκωνες, ὥστε τοῖς ἀπὸ τοῦ Πύλου βαδίζουσιν εἰς Λακεδαίμονα ἀνάγκη διὰ Καυκώνων εἶναι τὴν ὁδόν. τὸ δὲ ἱερὸν τοῦ Σαμίου Ποσειδῶνος καὶ ὁ κατ' αὐτὸ ὅρμος, εἰς ὃν κατήχθη Τηλέμαχος, πρὸς δύσιν καὶ πρὸς ἄρκτον ἀπονεύει. εἰ μὲν τοίνυν οἱ Καύκωνες ἐνταῦθα μόνον οἰκοῦσιν, οὐ σώζεται τῷ ποιητῇ ὁ λόγος. κελεύει γὰρ ἡ μὲν Ἀθηνᾶ κατὰ τὸν Σωτάδην τῷ Νέστορι, τὸν μὲν Τηλέμαχον εἰς τὴν Λακεδαίμονα πέμψαι σὺν δίφρῳ τε καὶ υἱέι εἰς τὰ πρὸς ἕω μέρη· αὐτὴ δ' ἐπὶ ναῦν βαδιεῖ-

σθαι νυκτερεύσουσα φησιν ἐπὶ τὴν δυσιν καὶ εἰς τοὐπίσω, „ἀτὰρ ἠῶθεν μετὰ Καύκωνας μεγαθύμους“ πορεύσεσθαι ἐπὶ τὸ χρέος πάλιν εἰς τοὔμπροσθεν. τίς C.346 οὖν ὁ τρόπος; παρῆν γὰρ τῷ Νέστορι λέγειν ‛ἀλλ᾽ οἵ γε Καύκωνες ὑπ᾽ ἐμοί εἰσι καὶ πρὸ ὁδοῦ τοῖς εἰς Λακεδαίμονα βαδίζουσιν· ὥστε τί οὐ συνοδεύεις τοῖς περὶ Τηλέμαχον, ἀλλ᾽ ἀναχωρεῖς εἰς τοὐπίσω;᾽ ἅμα δ᾽ οἰκεῖον ἦν τῷ βαδίζοντι ἐπὶ χρέους κομιδὴν οὐκ ὀλίγου, ὥς φησι, πρὸς ἀνθρώπους ὑπὸ τῷ Νέστορι ὄντας, αἰτήσασθαί τινα παρ᾽ αὐτοῦ βοήθειαν, εἴ τι ἀγνωμονοῖτο (ὥσπερ εἴωθε) περὶ τὸ συμβόλαιον· οὐ γέγονε δὲ τοῦτο. εἰ μὲν τοίνυν ἐνταῦθα μόνον οἰκοῖεν οἱ Καύκωνες, ταῦτ᾽ ἂν συμβαίνοι τὰ ἄτοπα· μεμερισμένων δὲ τινῶν καὶ εἰς τοὺς πρὸς Δύμῃ τόπους τῆς Ἠλείας, ἐκεῖσε ἂν εἴη λέγουσα τὴν ἔφοδον ἡ Ἀθηνᾶ, καὶ οὐκ ἂν ἔτι οὔθ᾽ ἡ εἰς τὴν ναῦν κατάβασις ἔχοι τι ἀπεμφαῖνον οὔθ᾽ ὁ τῆς συνοδίας ἀποσπασμός, εἰς τἀναντία τῆς ὁδοῦ οὔσης. παραπλησίως δ᾽ ἂν καὶ τὰ περὶ τοῦ Πύλου διαπορούμενα τύχοι τῆς προσηκούσης διαίτης ἐπελθοῦσι μικρὸν ἔτι τῆς χωρογραφίας μέχρι τοῦ Πύλου τοῦ Μεσσηνιακοῦ.

18 Ἐλέγοντο δὲ Παρωρεᾶται τινὲς τῶν ἐν τῇ Τριφυλίᾳ κατέχοντες ὄρη περὶ τὸ Λέπρειον καὶ τὸ Μάκιστον καθήκοντα ἐπὶ θάλατταν πλησίον τοῦ Σαμιακοῦ Ποσειδίου.

19 Ὑπὸ τούτοις ἐστὶν ἐν τῇ παραλίᾳ δύο ἄντρα, τὸ μὲν νυμφῶν Ἀνιγριάδων τὸ δὲ ἐν ᾧ τὰ περὶ τὰς Ἀτλαντίδας καὶ τὴν Δαρδάνου γένεσιν. ἐνταῦθα δὲ καὶ τὰ ἄλση τό τε Ἰωναῖον καὶ τὸ Εὐρυκύδειον. .... τὸ μὲν οὖν Σαμικὸν ἔστιν ἔρυμα, πρότερον δὲ καὶ πόλις Σάμος προσαγορευομένη διὰ τὸ ὕψος ἴσως, ἐπειδὴ σάμους ἐκάλουν τὰ ὕψη· τάχα δὲ τῆς Ἀρήνης ἀκρόπολις

ἦν τοῦτο, ἧς ἐν τῷ καταλόγῳ μέμνηται ὁ ποιητὴς „οἳ „δὲ Πύλον τ' ἐνέμοντο καὶ Ἀρήνην ἐρατεινήν.“ οὐδαμοῦ γὰρ σαφῶς εὑρίσκοντες ἐνταῦθα μάλιστα εἰκάζουσι τὴν Ἀρήνην, ὅπου καὶ ὁ παρακείμενος Ἄνιγρος ποταμός, καλούμενος πρότερον Μινύειος, δίδωσιν οὐ μικρὸν σημεῖον· λέγει γὰρ ὁ ποιητὴς „ἔστι δέ τις πο„ταμὸς Μινυήιος εἰς ἅλα βάλλων ἐγγύθεν Ἀρήνης.“ πρὸς γὰρ δὴ τῷ ἄντρῳ τῶν Ἀνιγριάδων νυμφῶν ἐστι πηγή, ὑφ' ἧς ἕλειον καὶ τιφῶδες τὸ ὑποπῖπτον γίνεται χωρίον· ὑποδέχεται δὲ τὸ πλεῖστον τοῦ ὕδατος ὁ Ἄνιγρος βαθὺς καὶ ὕπτιος ὢν ὥστε λιμνάζειν· θινώδης δ' ὢν ὁ τόπος ἐξ εἴκοσι σταδίων βαρεῖαν ὀσμὴν παρέχει καὶ τοὺς ἰχθῦς ἀβρώτους ποιεῖ. μυθεύουσι δ' οἱ μὲν ἀπὸ τοῦ τῶν τετρωμένων Κενταύρων τινὰς ἐνταῦθ' ἀπονίψασθαι τὸν ἐκ τῆς Ὕδρας ἰόν, οἱ δ' ἀπὸ τοῦ Μελάμποδα τοῖς ὕδασι τούτοις καθαρσίοις χρήσασθαι πρὸς τὸν τῶν Προιτίδων καθαρμόν· ἀλφοὺς δὲ C.347 καὶ λεύκας καὶ λειχῆνας ἰᾶται τὸ ἐντεῦθεν λουτρόν. φασὶ δὲ καὶ τὸν Ἀλφειὸν ἀπὸ τῆς τῶν ἀλφῶν θεραπείας οὕτως ὠνομάσθαι. ἐπεὶ οὖν ἥ τε ὑπτιότης τοῦ Ἀνίγρου καὶ αἱ ἀνακοπαὶ τῆς θαλάττης μονὴν μᾶλλον ἢ ῥύσιν παρέχουσι τοῖς ὕδασι, * Μινυήιόν φασιν εἰρῆσθαι πρότερον, παρατρέψαι δέ τινας τοὔνομα καὶ ἀντ' αὐτοῦ ποιῆσαι Μινυήιον. ἔχει δ' ἡ ἐτυμότης καὶ ἄλλας ἀφορμάς, εἴτ' ἀπὸ τῶν μετὰ Χλωρίδος τῆς Νέστορος μητρὸς ἐλθόντων ἐξ Ὀρχομενοῦ τοῦ Μινυείου, [εἴτε] Μινυῶν, οἳ τῶν Ἀργοναυτῶν ἀπόγονοι ὄντες ἐκ Λήμνου μὲν εἰς Λακεδαίμονα ἐξέπεσον ἐντεῦθεν δ' εἰς τὴν Τριφυλίαν, καὶ ᾤκησαν περὶ τὴν Ἀρήνην ἐν τῇ χώρᾳ τῇ νῦν Αἰπασίᾳ καλουμένῃ, οὐκ ἐχούσῃ οὐκέτι τὰ τῶν Μινυῶν κτίσματα· ὧν τινὲς μετὰ Θήρα τοῦ Αὐτεσίωνος (ἦν δ' οὗτος Πολυνείκους ἀπόγονος) πλεύσαντες

εἰς τὴν μεταξὺ Κυρηναίας καὶ τῆς Κρήτης νῆσον „Καλλίστην τὸ πάροιθε, τὸ δ' ὕστερον οὔνομα Θήρην,“ ὥς φησι Καλλίμαχος, ἔκτισαν τὴν μητρόπολιν τῆς Κυρήνης Θήραν, ὁμώνυμον δ' ἀπέδειξαν τῇ πόλει καὶ τὴν νῆσον.

20 Μεταξὺ δὲ τοῦ Ἀνίγρου καὶ τοῦ ὄρους, ἐξ οὗ ῥεῖ, ὁ τοῦ Ἰαρδάνου λειμὼν δείκνυται καὶ τάφος· καὶ Ἀχαιαὶ εἰσὶ δὲ πέτραι ἀπότομοι τοῦ αὐτοῦ ὄρους, ὑπὲρ ὧν ἡ Σάμος, ὡς ἔφαμεν, γέγονε πόλις· οὐ πάνυ δὲ ὑπὸ τῶν τοὺς περίπλους γραψάντων ἡ Σάμος μνημονεύεται, τάχα μέν γε διὰ τὸ πάλαι κατεσπάσθαι, τάχα δὲ καὶ διὰ τὴν θέσιν. τὸ μὲν γὰρ ποσείδιον ἔστιν ἄλσος, ὡς εἴρηται, πρὸς τῇ θαλάττῃ· ὑπέρκειται δ' αὐτοῦ λόφος ὑψηλὸς ἐπίπροσθεν ὢν τοῦ νῦν Σαμικοῦ ἐφ' οὗ ἦν ἡ Σάμος, ὥστ' ἐκ θαλάττης μὴ ὁρᾶσθαι. καὶ πεδίον δ' αὐτόθι καλεῖται Σαμικόν· ἐξ οὗ πλέον ἄν τις τεκμαίροιτο ὑπάρξαι ποτὲ πόλιν τὴν Σάμον. καὶ ἡ Ῥαδίνη δὲ ἣν Στησίχορος ποιῆσαι δοκεῖ (ἧς ἀρχή „ἄγε Μοῦσα λίγει', ἄρξον ἀοιδᾶς, Ἐρατώ, νόμους Σαμίων περὶ παίδων ἐρατᾷ φθεγγομένα λύρᾳ“) ἐντεῦθεν λέγει τοὺς παῖδας. ἐκδοθεῖσαν γὰρ τὴν Ῥαδίνην εἰς Κόρινθον τυράννῳ φησὶν ἐκ τῆς Σάμου πλεῦσαι πνέοντος ζεφύρου, οὐ δήπουθεν τῆς Ἰωνικῆς Σάμου· [τῷ] δ' αὐτῷ ἀνέμῳ καὶ ἀρχιθέωρον εἰς Δελφοὺς [τὸν ἀδ]ελφὸν αὐτῆς ἐλθεῖν καὶ τὸν ἀνεψιὸν ἐρῶντα αὐτῆς ἅρματι εἰς Κόρινθον ἐξορμῆσαι παρ' αὐτήν· ὅ τε τύραννος κτείνας ἀμφοτέρους ἅρματι ἀποπέμπει τὰ σώματα, μεταγνοὺς δ' ἀνακαλεῖ καὶ θάπτει.

C.348 21 Ἀπὸ δὲ τοῦ Πύλου τούτου καὶ τοῦ Λεπρείου τετρακοσίων που σταδίων ἐστὶ διάστημα ἐπὶ τὴν Μεσση-

---

18. ante ἣν: εἰς

νιακὴν Πύλον καὶ τὸ Κορυφάσιον ἐπὶ θαλάττῃ κείμενα φρούρια, καὶ τὴν παρακειμένην Σφαγίαν νῆσον, ἀπὸ δὲ Ἀλφειοῦ ἑπτακοσίων πεντήκοντα, ἀπὸ δὲ τοῦ Χελωνάτα χιλίων τριάκοντα. ἐν δὲ τῷ μεταξὺ τό τε τοῦ Μακιστίου Ἡρακλέους ἱερόν ἐστι καὶ ὁ Ἀκίδων ποταμός. ῥεῖ δὲ παρὰ τάφον Ἰαρδάνου καὶ Χάαν πόλιν ποτὲ ὑπάρξασαν πλησίον Λεπρείου, ὅπου καὶ τὸ πεδίον τὸ Αἰπάσιον. περὶ ταύτης δὲ τῆς Χάας γενέσθαι φασὶν ἔνιοι τὸν πόλεμον τοῖς Ἀρκάσι πρὸς τοὺς Πυλίους, ὃν ἔφρασεν Ὅμηρος, καὶ δεῖν οἴονται γράφειν „ἠβῷμ', „ὡς ὅτ' ἐπ' ὠκυρόῳ Ἀκίδοντι μάχοντο ἀγρόμενοι Πύ„λιοί τε καὶ Ἀρκάδες Χάας πὰρ τείχεσσιν,“ οὐ Κελάδοντι, οὐδὲ Φειᾶς· τῷ γὰρ τάφῳ τοῦ Ἰαρδάνου τοῦτον πλησιάζειν καὶ τοῖς Ἀρκάσι τὸν τόπον μᾶλλον ἢ ἐκεῖνον.

Κυπαρισσία τέ ἐστιν ἐπὶ τῇ θαλάττῃ τῇ Τριφυ- 22
λιακῇ καὶ Πύργοι καὶ ὁ Ἀκίδων ποταμὸς καὶ Νέδα. νυνὶ μὲν οὖν τῇ Τριφυλίᾳ πρὸς τὴν Μεσσηνίαν ὅριόν ἐστι τὸ τῆς Νέδας ῥεῦμα λάβρον ἐκ τοῦ Λυκαίου κατιὸν Ἀρκαδικοῦ ὄρους, ἐκ πηγῆς ἣν ἀναρρῆξαι τεκοῦσαν τὸν Δία μυθεύεται Ῥέαν νίπτρων χάριν. ῥεῖ δὲ παρὰ Φιγαλίαν, καθ' ὃ γειτνιῶσι Πυργῖται Τριφυλίων ἔσχατοι Κυπαρισσιεῦσι πρώτοις Μεσσηνίων. τὸ δὲ παλαιὸν ἄλλως διώριστο, ὡς καὶ τινὰς τῶν πέραν τῆς Νέδας ὑπὸ τῷ Νέστορι εἶναι, τόν τε Κυπαρισσήεντα καὶ ἄλλα τινὰ ἐπέκεινα, καθάπερ καὶ τὴν θάλατταν τὴν Πυλίαν ὁ ποιητὴς ἐπεκτείνει μέχρι τῶν ἑπτὰ πόλεων ὧν ὑπέσχετο Ἀγαμέμνων τῷ Ἀχιλλεῖ „πᾶσαι δ' „ἐγγὺς ἁλὸς νέαται Πύλου ἠμαθόεντος.“ τοῦτο γὰρ ἴσον τῷ „ἐγγὺς ἁλὸς τῆς Πυλίας.“

Ἐφεξῆς δ' οὖν τῷ Κυπαρισσήεντι ἐπὶ τὴν Μεσση- 23
νιακὴν Πύλον παραπλέοντι [καὶ] τὸ Κορυφάσιον ἥ τε

Ἔρανα ἔστιν, ἥν τινες οὐκ εὖ Ἀρήνην νομίζουσιν κεκλῆσθαι πρότερον ὁμωνύμως τῇ Πυλιακῇ, [καὶ ἡ ἄκρα] Πλαταμώδης, ἀφ᾽ ἧς ἐπὶ τὸ Κορυφάσιον καὶ τὴν νῦν καλουμένην Πύλον ἑκατόν εἰσι στάδιοι. ἔστι δὲ καὶ νησίον καὶ πολίχνιον ἐν αὐτῷ ὁμώνυμον Πρωτή. οὐκ ἂν δ᾽ ἐξητάζομεν ἴσως ἐπὶ τοσοῦτον τὰ παλαιά, ἀλλ᾽ ἤρκει λέγειν ὡς ἔχει νῦν ἕκαστα, εἰ μή τις ἦν ἐκ παίδων ἡμῖν παραδεδομένη φήμη περὶ τούτων· ἄλλων δ᾽ ἄλλα εἰπόντων ἀνάγκη διαιτᾶν. πιστεύονται δ᾽ ὡς ἐπὶ τὸ πολὺ οἱ ἐνδοξότατοί τε καὶ πρεσβύτατοι καὶ κατ᾽ ἐμπειρίαν πρῶτοι· Ὁμήρου δ᾽ εἰς ταῦτα ὑπερβεβλη-
C.349 μένου πάντας, ἀνάγκη συνεπισκοπεῖν καὶ τὰ ὑπ᾽ ἐκείνου λεχθέντα καὶ συγκρούειν πρὸς τὰ νῦν, καθάπερ καὶ μικρὸν ἔμπροσθεν ἔφαμεν.

24 Περὶ μὲν οὖν τῆς κοίλης Ἤλιδος καὶ τοῦ Βουπρασίου τὰ λεχθέντα ὑφ᾽ Ὁμήρου προεπέσκεπται ἡμῖν. περὶ δὲ τῆς ὑπὸ τῷ Νέστορι οὕτω φησίν „οἳ δὲ Πύλον „τ᾽ ἐνέμοντο καὶ Ἀρήνην ἐρατεινὴν καὶ Θρύον, Ἀλ„φειοῖο πόρον, καὶ ἐΰκτιτον Αἶπυ καὶ Κυπαρισσήεντα „καὶ Ἀμφιγένειαν ἔναιον καὶ Πτελεὸν καὶ Ἕλος καὶ „Δώριον, ἔνθα τε Μοῦσαι ἀντόμεναι Θάμυριν τὸν „Θρήικα παῦσαν ἀοιδῆς, Οἰχαλίηθεν ἰόντα παρ᾽ Εὐ„ρύτου Οἰχαλιῆος.“ Πύλος μὲν οὖν ἔστι περὶ ἧς ἡ ζήτησις· αὐτίκα δ᾽ ἐπισκεψόμεθα περὶ αὐτῆς. περὶ δὲ τῆς Ἀρήνης εἴρηται· ἣν δὲ λέγει νῦν Θρύον, ἐν ἄλλοις καλεῖ Θρυόεσσαν „ἔστι δέ τις Θρυόεσσα πόλις, αἰπεῖα „κολώνη, τηλοῦ ἐπ᾽ Ἀλφειῷ.“ Ἀλφειοῦ δὲ πόρον φησίν, ὅτι πεζῇ περατὸς εἶναι δοκεῖ κατὰ τοῦτον τὸν τόπον· καλεῖται δὲ νῦν Ἐπιτάλιον τῆς Μακιστίας χωρίον. τὸ εὔκτιτον δ᾽ Αἶπυ ἔνιοι μὲν ζητοῦσι πότερον ποτέρου ἐπίθετον, καὶ τίς ἡ πόλις, καὶ εἰ αἱ νῦν Μαργάλαι τῆς Ἀμφιδολίας· αὗται μὲν οὖν οὐ φυσικὸν ἔρυμα,

ἕτερον δὲ δείκνυται φυσικὸν ἐν τῇ Μακιστίᾳ. ὁ μὲν οὖν τοῦθ' ὑπονοῶν φράζεσθαι ὄνομά φησι τῆς πόλεως τὸ Αἶπυ ἀπὸ τοῦ συμβεβηκότος φυσικῶς, ὡς Ἕλος καὶ Αἰγιαλὸν καὶ ἄλλα πλείω· ὁ δὲ τὴν Μαργάλαν τοὔμπαλιν ἴσως. Θρύον δὲ καὶ Θρυόεσσαν τὸ Ἐπιτάλιόν φασιν, ὅτι πᾶσα μὲν αὕτη ἡ χώρα θρυώδης, μάλιστα δ' οἱ ποταμοί· ἐπὶ πλέον δὲ διαφαίνεται τοῦτο κατὰ τοὺς περατοὺς τοῦ ῥείθρου τόπους. τάχα δέ φασι Θρύον μὲν εἰρῆσθαι τὸν πόρον, εὔκτιτον δ' Αἶπυ τὸ Ἐπιτάλιον· ἔστι γὰρ ἐρυμνὸν φύσει· καὶ γὰρ ἐν ἄλλοις αἰπεῖαν κολώνην λέγει „ἔστι δέ τις Θρυόεσσα πό„λις, αἰπεῖα κολώνη, τηλοῦ ἐπ' Ἀλφειῷ, νυμάτη Πύ„λου ἠμαθόεντος.“

Ὁ δὲ Κυπαρισσήεις ἔστι μὲν περὶ τὴν πρότερον 25 Μακιστίαν, ἡνίκα καὶ πέραν τῆς Νέδας ἔτι ἦν Μακιστία, ἀλλ' οὐκ οἰκεῖται, ὡς οὐδὲ τὸ Μάκιστον· ἄλλη δ' ἐστὶν ἡ Μεσσηνιακὴ Κυπαρισσία, ὁμώνυμος μὲν οὔ, ὁμοίως δὲ νῦν κἀκείνη λέγεται Κυπαρισσία ἑνικῶς τε καὶ θηλυκῶς, ὁ δὲ ποταμὸς Κυπαρισσήεις. καὶ Ἀμφιγένεια δὲ τῆς Μακιστίας ἐστὶ περὶ τὸν Ὑψόεντα, ὅπου τὸ τῆς Λητοῦς ἱερόν. τὸ δὲ Πτελεὸν κτίσμα μὲν γέγονε τῶν ἐκ Πτελεοῦ τοῦ Θετταλικοῦ ἐποικησάντων· λέγεται γὰρ κἀκεῖ „Ἀγχίαλόν τ' Ἀντρῶνα ἰδὲ Πτελεὸν λε- C.350 „χεποίην.“ ἔστι δὲ δρυμῶδες χωρίον ἀοίκητον, Πτελεάσιον καλούμενον. Ἕλος δ' οἱ μὲν περὶ τὸν Ἀλφειὸν χώραν τινά φασιν, οἱ δὲ καὶ πόλιν, ὡς τὴν Λακωνικήν „Ἕλος τ' ἔφαλον πτολίεθρον.“ οἱ δὲ περὶ τὸ Ἀλώριον ἕλος, οὗ τὸ τῆς Ἐλείας Ἀρτέμιδος ἱερὸν τῆς ὑπὸ τοῖς Ἀρκάσιν· ἐκεῖνοι γὰρ ἔσχον τὴν ἱερωσύνην. Δώριον δ' οἱ μὲν ὄρος, οἱ δὲ πεδίον, [οἱ δὲ πολίδιον] φασίν· οὐδὲν δὲ νῦν δείκνυται· ὅμως δ' ἔνιοι τὴν νῦν Ὄλουριν ἢ Ὄλουραν ἐν τῷ καλουμένῳ αὐλῶνι τῆς

Μεσσηνίας κειμένην Δώριον λέγουσιν. αὐτοῦ δέ που καὶ ἡ Οἰχαλία ἐστὶν ἡ τοῦ Εὐρύτου ἡ νῦν Ἀνδανία, πολίχνιον Ἀρκαδικὸν ὁμώνυμον τῷ Θετταλικῷ καὶ τῷ Εὐβοϊκῷ· ὅθεν φησὶν ὁ ποιητὴς ἐς τὸ Δώριον ἀφικόμενον Θάμυριν τὸν Θρᾷκα ὑπὸ Μουσῶν ἀφαιρεθῆναι τὴν μουσικήν.

26 Ἐκ δὴ τούτων δῆλον ὡς ἐφ' ἑκάτερα τοῦ Ἀλφειοῦ ἡ ὑπὸ Νέστορι χώρα ἐστίν, ἣν πᾶσαν ὀνομάζει Πυλίων γῆν· οὐδαμοῦ δὲ ὁ Ἀλφειὸς οὔτε τῆς Μεσσηνίας ἐφάπτεται οὔτε τῆς κοίλης Ἤλιδος. ἐν ταύτῃ γὰρ τῇ χώρᾳ ἐστὶν ἡ πατρὶς τοῦ Νέστορος, ἥν φαμεν Τριφυλιακὸν Πύλον καὶ Ἀρκαδικὸν καὶ Λεπρεατικόν. καὶ γὰρ δὴ οἱ μὲν ἄλλοι Πύλοι ἐπὶ θαλάττῃ δείκνυνται, οὗτος δὲ πλείους ἢ τριάκοντα σταδίους ὑπὲρ αὐτῆς, ὅπερ καὶ ἐκ τῶν ἐπῶν δῆλον. ἐπί τε γὰρ τοὺς Τηλεμάχου ἑταίρους ἄγγελος πέμπεται πρὸς τὸ πλοῖον καλῶν ἐπὶ ξενίαν, ὅ τε Τηλέμαχος κατὰ τὴν ἐκ Σπάρτης ἐπάνοδον τὸν Πεισίστρατον οὐκ ἐᾷ πρὸς τὴν πόλιν ἐλαύνειν, ἀλλὰ παρατρέψαντα ἐπὶ [τὴν] ναῦν σπεύδειν, ὡς οὐ τὴν αὐτὴν οὖσαν ἐπὶ τὴν πόλιν καὶ τὸν ὅρμον. ὅ τε ἀπόπλους τοῦ Τηλεμάχου οὕτως ἂν οἰκείως λέγοιτο „βὰν δὲ παρὰ „Κρουνοὺς καὶ Χαλκίδα καλλιρέεθρον. δύετό τ' ἠέ- „λιος, σκιόωντό τε πᾶσαι ἀγυιαί· ἡ δὲ Φεὰς ἐπέβαλλεν, „ἀγαλλομένη Διὸς οὔρῳ, ἠδὲ παρ' Ἤλιδα δῖαν, ὅθι „κρατέουσιν Ἐπειοί.“ μέχρι μὲν δὴ δεῦρο πρὸς τὴν ἄρκτον ὁ πλοῦς, ἐντεῦθεν δ' ἐπὶ τὸ πρὸς ἕω μέρος ἐπιστρέφει. παρίησι δὲ τὸν εὐθὺν πλοῦν ἡ ναῦς καὶ τὸν ἐξ ἀρχῆς καὶ τὸν εἰς Ἰθάκην διὰ τὸ τοὺς μνηστῆρας ἐκεῖ τὴν ἐνέδραν θέσθαι „ἐν πορθμῷ Ἰθάκης τε Σά- „μοιό τε· ἔνθεν δ' αὖ νήσοισιν ἐπιπροέηκε θοῇσι.“
C.351 θοὰς δὲ εἴρηκε τὰς ὀξείας· τῶν Ἐχινάδων δ' εἰσὶν αὗται, πλησιάζουσαι τῇ ἀρχῇ τοῦ Κορινθιακοῦ κόλπου

καὶ ταῖς ἐκβολαῖς τοῦ Ἀχελώου. παραλλάξας δὲ τὴν Ἰθάκην, ὥστε κατὰ νώτου γενέσθαι, κάμπτει πάλιν πρὸς τὸν οἰκεῖον δρόμον τὸν μεταξὺ τῆς Ἀκαρνανίας καὶ τῆς Ἰθάκης, καὶ κατὰ θάτερα μέρη τῆς νήσου ποιεῖται τὴν καταγωγήν, οὐ κατὰ τὸν πορθμὸν τὸν Κεφαλληνιακόν, ὃν ἐφρούρουν οἱ μνηστῆρες.

Εἰ γοῦν τὸν Ἠλιακὸν Πύλον εἶναί τις τὸν Νέστο- 27
ρος ἐπινοήσειεν, οὐκ ἂν οἰκείως λέγοιτο ἡ ἐντεῦθεν ἀναχθεῖσα ναῦς παρὰ Κρουνοὺς ἐνεχθῆναι καὶ Χαλκίδα μέχρι δύσεως, εἶτα Φεαῖς ἐπιβάλλειν νύκτωρ, καὶ τότε τὴν Ἠλείαν παραπλεῖν· οὗτοι γὰρ οἱ τόποι πρὸς νότον τῆς Ἠλείας εἰσί, πρῶται μὲν αἱ Φεαί, εἶθ' ἡ Χαλκίς, εἶθ' οἱ Κρουνοί, εἶθ' ὁ Πύλος ὁ Τριφυλιακὸς καὶ τὸ Σαμικόν. τῷ μὲν οὖν πρὸς νότον πλέοντι ἐκ τοῦ Ἠλιακοῦ Πύλου οὗτος ἂν ὁ πλοῦς εἴη· τῷ δὲ πρὸς ἄρκτον, ὅπου ἐστὶν ἡ Ἰθάκη, ταῦτα μὲν πάντα ὀπίσω λείπεται, αὐτὴ δ' ἡ Ἠλεία παραπλευστέα ἦν, καὶ πρὸ δύσεώς γε· ὁ δέ φησι μετὰ δύσιν. καὶ μὴν εἰ καὶ πάλιν ὑπόθοιτό τις τὸν Μεσσηνιακὸν Πύλον καὶ τὸ Κορυφάσιον ἀρχὴν τοῦ παρὰ Νέστορος πλοῦ, πολὺ ἂν εἴη τὸ διάστημα καὶ πλέονος χρόνου. αὐτὸ γοῦν τὸ ἐπὶ τὸν Τριφυλιακὸν Πύλον καὶ τὸ Σαμιακὸν ποσείδιον τετρακοσίων ἐστὶ σταδίων· καὶ ὁ παράπλους [οὐ] παρὰ Κρουνοὺς καὶ Χαλκίδα καὶ Φεάν, ἀδόξων ποταμῶν ὀνόματα μᾶλλον δὲ ὀχετῶν, ἀλλὰ παρὰ τὴν Νέδαν πρῶτον, εἶτ' Ἀκίδωνα, εἶτα τὸν Ἀλφειὸν καὶ τόπους τούτων τοὺς μεταξύ· ὕστερον δ', εἰ ἄρα, κἀκείνων ἐχρῆν μνησθῆναι· καὶ γὰρ παρ' ἐκείνους ὑπῆρχεν ὁ πλοῦς.

Καὶ μὴν ἥ γε τοῦ Νέστορος διήγησις, ἣν διατίθε- 28
ται πρὸς Πάτροκλον περὶ τοῦ γενομένου τοῖς Πυλίοις πρὸς Ἠλείους πολέμου, συνηγορεῖ τοῖς ὑφ' ἡμῶν ἐπι-

χειρουμένοις, ἐὰν σκοπῇ τις τὰ ἔπη. φησὶ γὰρ ἐν αὐτοῖς, ὅτι πορθήσαντος Ἡρακλέους τὴν Πυλίαν ὥστε τὴν νεότητα ἐκλειφθῆναι πᾶσαν, δώδεκα δὴ παίδων ὄντων τῷ Νηλεῖ, μόνον αὐτῷ περιγενέσθαι τὸν Νέστορα νέον τελέως· καταφρονήσαντες δ᾽ οἱ Ἐπειοὶ τοῦ Νηλέως διὰ γῆρας καὶ ἐρημίαν ὑπερηφάνως καὶ ὑβριστικῶς ἐχρῶντο τοῖς Πυλίοις. ἀντὶ τούτων οὖν ὁ Νέστωρ συναγαγὼν τοὺς οἰκείους ὅσους οἷός τε ἦν ἐπελθεῖν φησιν ἐπὶ τὴν Ἠλείαν, καὶ περιελάσαι παμπόλλην λείαν „πεντήκοντα βοῶν ἀγέλας, τόσα πώεα οἰῶν, „τόσσα συῶν συβόσια,“ τοσαῦτα δὲ καὶ αἰπόλια, „ἵππους δὲ ξανθὰς ἑκατὸν καὶ πεντήκοντα,“ ὑποπώλους
C.352 τὰς πλείστας. „καὶ τὰ μὲν ἠλασάμεσθα Πύλον“ φησί „Νηλήιον εἴσω, ἐννύχιοι προτὶ ἄστυ,“ ὡς μεθ᾽ ἡμέραν μὲν τῆς λεηλασίας γενομένης καὶ τῆς τροπῆς τῶν ἐκβοηθησάντων, ὅτε κτανεῖν λέγει τὸν Ἰτυμονέα, νύκτωρ δὲ τῆς ἀφόδου γενομένης ὥστ᾽ ἐννυχίους πρὸς τῷ ἄστει γενέσθαι· περὶ δὲ τὴν διανομὴν καὶ θυσίαν ὄντων οἱ Ἐπειοὶ τῇ τρίτῃ τῶν ἡμερῶν κατὰ πλῆθος ἀθροισθέντες πεζοί τε καὶ ἱππεῖς ἀντεπεξῆλθον καὶ τὸ Θρύον ἐπὶ τῷ Ἀλφειῷ κείμενον περιεστρατοπέδευσαν. αἰσθόμενοι δ᾽ εὐθὺς οἱ Πύλιοι βοηθεῖν ὥρμησαν· νυκτερεύσαντες δὲ περὶ τὸν Μινυήιον ποταμὸν ἐγγύθεν Ἀρήνης, ἐντεῦθεν ἔνδιοι πρὸς τὸν Ἀλφειὸν ἀφικνοῦνται· τοῦτο δ᾽ ἐστὶ κατὰ μεσημβρίαν· θύσαντες δὲ τοῖς θεοῖς καὶ νυκτερεύσαντες ἐπὶ τῷ ποταμῷ συμβάλλουσιν εἰς μάχην εὐθὺς ἕωθεν· λαμπρᾶς δὲ τῆς τροπῆς γενομένης οὐκ ἐπαύσαντο διώκοντές τε καὶ κτείνοντες πρὶν Βουπρασίου ἐπέβησαν „πέτρης „τ᾽ Ὠλενίης καὶ Ἀλεισίου ἔνθα κολώνη κέκληται, ὅθεν αὖτις ἀπέτραπε λαὸν Ἀθήνη.“ καὶ ὑποβάς „αὐτὰρ

„Ἀχαιοὶ ἂψ ἀπὸ Βουπρασίοιο Πύλονδ' ἔχον ὠκέας ἵπ-
πους."

Ἐκ τούτων δὴ πῶς ἂν ἢ τὸν Ἠλιακὸν Πύλον ὑπο- 29
λάβοι τις ἢ τὸν Μεσσηνιακὸν λέγεσθαι; τὸν μὲν Ἠλια-
κόν, ὅτι τούτου πορθουμένου συνεπορθεῖτο καὶ ἡ τῶν
Ἐπειῶν ὑπὸ τοῦ Ἡρακλέους· αὕτη δ' ἐστὶν ἡ Ἠλεία.
πῶς οὖν ἤμελλον οἱ συμπεπορθημένοι καὶ ὁμόφυλοι
τοιαύτην ὑπερηφανίαν καὶ ὕβριν κτήσασθαι κατὰ τῶν
συναδικηθέντων; πῶς δ' ἂν τὴν οἰκείαν κατέτρεχον
καὶ ἐλεηλάτουν; πῶς δ' ἂν ἅμα καὶ Αὐγέας ἦρχε τῶν
αὐτῶν καὶ Νηλεὺς ἐχθροὶ ὄντες ἀλλήλων; εἴγε τῷ
Νηλεῖ „χρεῖος μέγ' ὀφείλετ' ἐν Ἤλιδι δίῃ, τέσσαρες
„ἀθλοφόροι ἵπποι αὐτοῖσιν ὄχεσφιν, ἐλθόντες μετ'
„ἄεθλα· περὶ τρίποδος γὰρ ἔμελλον θεύσεσθαι· τοὺς
„δ' αὖθι ἄναξ ἀνδρῶν Αὐγείας κάσχεθε, τὸν δ' ἐλατῆρ'
„ἀφίει." εἰ δ' ἐνταῦθα ᾤκει ὁ Νηλεύς, ἐνταῦθα καὶ
ὁ Νέστωρ ἐπῆρχε. πῶς οὖν τῶν μὲν Ἠλείων καὶ Βου-
πρασίων „τέσσαρες ἀρχοὶ ἔσαν, δέκα δ' ἀνδρὶ ἑκάστῳ
„νῆες ἕποντο θοαί, πολέες δ' ἔμβαινον Ἐπειοί;" εἰς
τέτταρα δὲ καὶ ἡ χώρα διῄρητο, ὧν οὐδενὸς ἐπῆρχεν ὁ
Νέστωρ, „οἳ δὲ Πύλον τ' ἐνέμοντο καὶ Ἀρήνην ἐρα-
τεινήν" καὶ τὰ ἑξῆς τὰ μέχρι Μεσσήνης; οἱ δὲ δὴ ἀν-
τεπεξιόντες Ἐπειοὶ τοῖς Πυλίοις πῶς ἐπὶ τὸν Ἀλφειὸν
ἐξορμῶσι καὶ τὸ Θρύον; πῶς δ' ἐκεῖ τῆς μάχης γενομέ-
νης τρεφθέντες ἐπὶ Βουπρασίου φεύγουσι; πάλιν δ', C.353
εἰ τὸν Μεσσηνιακὸν Πύλον ἐπόρθησεν ὁ Ἡρακλῆς,
πῶς οἱ τοσοῦτον ἀφεστῶτες ὕβριζον εἰς αὐτούς, καὶ ἐν
συμβολαίοις ἦσαν πολλοῖς, καὶ ταῦτ' ἀπεστέρουν χρεο-
κοποῦντες, ὥστε διὰ ταῦτα συμβῆναι τὸν πόλεμον;
πῶς δὲ ἐπὶ τὴν λεηλασίαν ἐξιὼν Νέστωρ τοσαύτην πε-
ριελάσας λείαν συῶν τε καὶ προβάτων, ὧν οὐδὲν ὠκυ-
πορεῖν οὐδὲ μακροπορεῖν δύναται, πλειόνων ἢ χιλίων

σταδίων ὁδὸν διήνυσεν εἰς τὴν πρὸς τῷ Κορυφασίῳ Πύλον, οἱ δὲ τρίτῳ ἤματι πάντες ἐπὶ τὴν Θρυόεσσαν καὶ τὸν ποταμὸν τὸν Ἀλφειὸν ἥκουσι πολιορκήσοντες τὸ φρούριον; πῶς δὲ ταῦτα τὰ χωρία προσήκοντα ἦν τοῖς ἐν τῇ Μεσσηνίᾳ δυναστεύουσιν ἐχόντων Καυκώνων καὶ Τριφυλίων καὶ Πισατῶν; τὰ δὲ Γέρηνα ἢ τὴν Γερηνίαν (ἀμφοτέρως γὰρ λέγεται) τάχα μὲν ἐπίτηδες ὠνόμασάν τινες· δύναται δὲ καὶ κατὰ τύχην οὕτως ὠνομάσθαι τὸ χωρίον. τὸ δ' ὅλον, τῆς Μεσσηνίας ὑπὸ Μενελάῳ τεταγμένης, ὑφ' ᾧ καὶ ἡ Λακωνικὴ ἐτέτακτο (ὡς δῆλον ἔσται καὶ ἐκ τῶν ὕστερον), καὶ τοῦ μὲν Παμισοῦ ῥέοντος διὰ ταύτης καὶ τοῦ Νέδωνος, Ἀλφειοῦ δ' οὐδαμῶς „ὅς τ' εὐρὺ ῥέει Πυλίων διὰ γαίης,“ ἧς ἐπῆρχεν ὁ Νέστωρ, τίς ἂν γένοιτο πιθανὸς λόγος εἰς τὴν ἀλλοτρίαν ἀρχὴν ἐκβιβάζων τὸν ἄνδρα, ἀφαιρούμενος δὲ τὰς συγκαταλεγείσας αὐτῷ πόλεις * πάνθ' ὑπ' ἐκείνῳ ποιῶν;

30 Λοιπὸν δ' ἐστὶν εἰπεῖν περὶ τῆς Ὀλυμπίας καὶ τῆς εἰς τοὺς Ἠλείους ἁπάντων μεταπτώσεως. ἔστι δ' ἐν τῇ Πισάτιδι τὸ ἱερὸν σταδίους τῆς Ἤλιδος ἐλάττους ἢ τριακοσίους διέχον· πρόκειται δ' ἄλσος ἀγριελαίων ἐν ᾧ τὸ στάδιον· παραρρεῖ δ' ὁ Ἀλφειὸς ἐκ τῆς Ἀρκαδίας ῥέων εἰς τὴν Τριφυλιακὴν θάλατταν μεταξὺ δύσεως καὶ μεσημβρίας. τὴν δ' ἐπιφάνειαν ἔσχεν ἐξ ἀρχῆς μὲν διὰ τὸ μαντεῖον τοῦ Ὀλυμπίου Διός· ἐκείνου δ' ἐκλειφθέντος οὐδὲν ἧττον συνέμεινεν ἡ δόξα τοῦ ἱεροῦ, καὶ τὴν αὔξησιν ὅσην ἴσμεν ἔλαβε διά τε τὴν πανήγυριν καὶ τὸν ἀγῶνα τὸν Ὀλυμπιακόν, στεφανίτην τε καὶ ἱερὸν νομισθέντα, μέγιστον τῶν πάντων. ἐκοσμήθη δ' ἐκ τοῦ πλήθους τῶν ἀναθημάτων, ἅπερ ἐκ πάσης ἀνετίθετο τῆς Ἑλλάδος· ὧν ἦν καὶ ὁ χρυσοῦς σφυρήλατος Ζεύς, ἀνάθημα Κυψέλου τοῦ Κορινθίων τυράν-

νου. μέγιστον δὲ τούτων ὑπῆρξε τὸ τοῦ Διὸς ξόανον, ὃ ἐποίει Φειδίας Χαρμίδου Ἀθηναῖος ἐλεφάντινον, τηλικοῦτον τὸ μέγεθος ὡς καίπερ μεγίστου ὄντος τοῦ νεὼ δοκεῖν ἀστοχῆσαι τῆς συμμετρίας τὸν τεχνίτην, καθήμενον ποιήσαντα, ἁπτόμενον δὲ σχεδόν τι τῇ κορυφῇ τῆς ὀροφῆς ὥστ᾿ ἔμφασιν ποιεῖν, ἐὰν ὀρθὸς γένηται διαναστάς, ἀποστεγάσειν τὸν νεών. ἀνέγραψαν C.354 δέ τινες τὰ μέτρα τοῦ ξοάνου, καὶ Καλλίμαχος ἐν ἰάμβῳ τινὶ ἐξεῖπε. πολλὰ δὲ συνέπραξε τῷ Φειδίᾳ Πάναινος ὁ ζωγράφος, ἀδελφιδοῦς ὢν αὐτοῦ καὶ συνεργολάβος, πρὸς τὴν τοῦ ξοάνου διὰ τῶν χρωμάτων κόσμησιν καὶ μάλιστα τῆς ἐσθῆτος. δείκνυνται δὲ καὶ γραφαὶ πολλαί τε καὶ θαυμασταὶ περὶ τὸ ἱερὸν ἐκείνου ἔργα. ἀπομνημονεύουσι δὲ τοῦ Φειδίου, διότι πρὸς τὸν Πάναινον εἶπε πυνθανόμενον πρὸς τί παράδειγμα μέλλοι ποιήσειν τὴν εἰκόνα τοῦ Διός, ὅτι πρὸς τὴν Ὁμήρου δι᾿ ἐπῶν ἐκτεθεῖσαν τούτων „ἦ καὶ κυανέῃσιν „ἐπ᾿ ὀφρύσι νεῦσε Κρονίων· ἀμβρόσιαι δ᾿ ἄρα χαῖται „ἐπερρώσαντο ἄνακτος κρατὸς ἀπ᾿ ἀθανάτοιο, μέγαν „δ᾿ ἐλέλιξεν Ὄλυμπον.“ ἄξιοι δὲ μάλιστα τὴν αἰτίαν ἔχειν τῆς περὶ τὸ Ὀλυμπίασιν ἱερὸν μεγαλοπρεπείας τε καὶ τιμῆς Ἠλεῖοι. κατὰ μὲν γὰρ τὰ Τρωικὰ καὶ ἔτι πρὸ τούτων οὐκ ηὐτύχουν, ὑπό τε τῶν Πυλίων ταπεινωθέντες καὶ ὑφ᾿ Ἡρακλέους ὕστερον, ἡνίκα Αὐγέας

---

20. post Ὄλυμπον: εἰρῆσθαι γὰρ μάλα δοκεῖ καλῶς ἔκ τε τῶν ἄλλων καὶ τῶν ὀφρύων, ὅτι προκαλεῖται τὴν διάνοιαν ὁ ποιητὴς ἀναζωγραφεῖν μέγαν τινὰ τύπον καὶ μεγάλην δύναμιν ἀξίαν τοῦ Διός, καθάπερ καὶ ἐπὶ τῆς Ἥρας, ἅμα φυλάττων τὸ ἐφ᾿ ἑκατέρῳ πρέπον· ἔφη μὲν γὰρ „σείσατο δ᾿ εἰνὶ „θρόνῳ, ἐλέλιξε δὲ μακρὸν Ὄλυμπον.“ τὸ δ᾿ ἐπ᾿ ἐκείνης συμβὰν ὅλῃ κινηθείσῃ, τοῦτ᾿ ἐπὶ τοῦ Διὸς ἀπαντῆσαι ταῖς ὀφρύσι μόνον νεύσαντος, συμπαθούσης δέ τι καὶ τῆς κόμης· κομψῶς δ᾿ εἴρηται καὶ τὸ ὁ τὰς τῶν θεῶν εἰκόνας ἢ μόνος ἰδὼν ἢ μόνος δείξας.

ὁ βασιλεύων αὐτῶν κατελύθη. σημεῖον δέ· εἰς γὰρ τὴν Τροίαν ἐκεῖνοι μὲν τετταράκοντα ναῦς ἔστειλαν, Πύλιοι δὲ καὶ Νέστωρ ἐνενήκοντα. ὕστερον δὲ μετὰ τὴν τῶν Ἡρακλειδῶν κάθοδον συνέβη τἀναντία. Αἰτωλοὶ γὰρ συγκατελθόντες τοῖς Ἡρακλείδαις μετὰ Ὀξύλου καὶ συνοικήσαντες Ἐπειοῖς κατὰ συγγένειαν παλαιὰν ηὔξησαν τὴν κοίλην Ἦλιν καὶ τῆς τε Πισάτιδος ἀφείλοντο πολλήν, καὶ Ὀλυμπία ὑπ' ἐκείνοις ἐγένετο· καὶ δὴ καὶ ὁ ἀγὼν εὕρημά ἐστιν ἐκείνων ὁ Ὀλυμπιακός, καὶ τὰς Ὀλυμπιάδας τὰς πρώτας ἐκεῖνοι συνετέλουν. ἐᾶσαι γὰρ δεῖ τὰ παλαιὰ καὶ περὶ τῆς κτίσεως
C.355 *τοῦ ἱεροῦ καὶ περὶ τῆς θέσεως τοῦ ἀγῶνος, τῶν μὲν ἕνα τῶν Ἰδαίων δακτύλων Ἡρακλέα λεγόντων ἀρχηγέτην τούτων, τῶν δὲ τὸν Ἀλκμήνης καὶ Διός, ὃν καὶ ἀγωνίσασθαι πρῶτον καὶ νικῆσαι· τὰ γὰρ τοιαῦτα πολλαχῶς λέγεται καὶ οὐ πάνυ πιστεύεται. ἐγγυτέρω δὲ πίστεως, ὅτι μέχρι τῆς ἕκτης καὶ εἰκοστῆς Ὀλυμπιάδος ἀπὸ τῆς πρώτης, ἐν ᾗ Κόροιβος ἐνίκα στάδιον Ἠλεῖος, τὴν προστασίαν εἶχον τοῦ τε ἱεροῦ καὶ τοῦ ἀγῶνος Ἠλεῖοι. κατὰ δὲ τὰ Τρωικὰ ἢ οὐκ ἦν ἀγὼν στεφανίτης ἢ οὐκ ἔνδοξος, οὔθ' οὗτος οὔτ' ἄλλος οὐδεὶς τῶν νῦν ἐνδόξων· οὐδὲ μέμνηται τούτων Ὅμηρος οὐδενός, ἀλλ' ἑτέρων τινῶν ἐπιταφίων. καίτοι δοκεῖ τισὶ τοῦ Ὀλυμπιακοῦ μεμνῆσθαι, ὅταν φῇ τὸν Αὐγέαν ἀποστερῆσαι τέσσαρας ἀθλοφόρους ἵππους, ἐλθόντας μετ' ἄεθλα· φασὶ δὲ τοὺς Πισάτας μὴ μετασχεῖν τοῦ Τρωικοῦ πολέμου ἱεροὺς νομισθέντας τοῦ Διός. ἀλλ' οὔθ' ἡ Πισᾶτις ὑπὸ Αὐγέᾳ τόθ' ὑπῆρχεν, ἐν ᾗ ἐστι καὶ ἡ Ὀλυμπία, ἀλλ' ἡ Ἠλεία μόνον, οὔτ' ἐν Ἠλείᾳ συνετελέσθη ὁ Ὀλυμπιακὸς ἀγὼν οὐδ' ἅπαξ, ἀλλ' ἀεὶ ἐν Ὀλυμπίᾳ. ὁ δὲ νῦν παρατεθεὶς ἐν Ἤλιδι φαίνεται γενόμενος, ἐν ᾗ καὶ τὸ χρέος ὠφείλετο „καὶ γὰρ τῷ χρεῖος*

„[μέγ’] ὀφείλετ’ ἐν Ἤλιδι δίῃ, τέσσαρες ἀθλοφόροι ἵπποι.“ καὶ οὗτος μὲν οὐ στεφανίτης (περὶ τρίποδος γὰρ ἔμελλον θεύσεσθαι), ἐκεῖνος δέ. μετὰ [δὲ] τὴν ἕκτην καὶ εἰκοστὴν Ὀλυμπιάδα οἱ Πισᾶται τὴν οἰκείαν ἀπολαβόντες αὐτοὶ συνετέλουν, τὸν ἀγῶνα ὁρῶντες εὐδοκιμοῦντα· χρόνοις δ’ ὕστερον μεταπεσούσης πάλιν τῆς Πισάτιδος εἰς τοὺς Ἠλείους μετέπεσεν εἰς αὐτοὺς πάλιν καὶ ἡ ἀγωνοθεσία. συνέπραξαν δὲ καὶ οἱ Λακεδαιμόνιοι μετὰ τὴν ἐσχάτην κατάλυσιν τῶν Μεσσηνίων συμμαχήσασιν αὐτοῖς τἀναντία τῶν Νέστορος ἀπογόνων καὶ τῶν Ἀρκάδων συμπολεμησάντων τοῖς Μεσσηνίοις· καὶ ἐπὶ τοσοῦτόν γε συνέπραξαν ὥστε τὴν χώραν ἅπασαν τὴν μέχρι Μεσσήνης Ἠλείαν ῥηθῆναι καὶ διαμεῖναι μέχρι νῦν, Πισατῶν δὲ καὶ Τριφυλίων καὶ Καυκώνων μηδ’ ὄνομα λειφθῆναι. καὶ αὐτὸν δὲ τὸν Πύλον τὸν ἠμαθόεντα εἰς τὸ Λέπρειον συνῴκισαν, χαριζόμενοι τοῖς Λεπρεάταις κρατήσασι πολέμῳ, καὶ ἄλλας πολλὰς τῶν κατοικιῶν κατέσπασαν, ὅσας γ’ ἑώρων αὐτοπραγεῖν ἐθελούσας, καὶ φόρους ἐπράξαντο.

Διωνομάσθη δὲ ἡ Πισᾶτις τὸ μὲν πρῶτον διὰ 31
τοὺς ἡγεμόνας δυνηθέντας πλεῖστον, Οἰνόμαόν τε καὶ C.356
Πέλοπα τὸν ἐκεῖνον διαδεξάμενον καὶ τοὺς παῖδας αὐτοῦ πολλοὺς γενομένους· καὶ ὁ Σαλμωνεὺς δ’ ἐνταῦθα βασιλεῦσαι λέγεται· εἰς γοῦν ὀκτὼ πόλεις μεριζομένης τῆς Πισάτιδος, μία τούτων λέγεται καὶ ἡ Σαλμώνη. διὰ ταῦτά τε δὴ καὶ [διὰ] τὸ ἱερὸν τὸ Ὀλυμπίασι διατεθρύληται σφόδρα ἡ χώρα. δεῖ δὲ τῶν παλαιῶν ἱστοριῶν ἀκούειν οὕτως ὡς μὴ ὁμολογουμένων σφόδρα· οἱ γὰρ νεώτεροι πολλὰ καινίζουσιν, ὥστε καὶ τά-

---

21. post δὲ: πλεῖστον

ναντία λέγειν, οἷον τὸν μὲν Αὐγέαν τῆς Πισάτιδος ἄρξαι τὸν δ' Οἰνόμαον καὶ τὸν Σαλμωνέα τῆς Ἠλείας· ἔνιοι δ' εἰς ταὐτὸ συνάγουσι τὰ ἔθνη. δεῖ δὲ τοῖς ὁμολογουμένοις ὡς ἐπὶ πολὺ ἀκολουθεῖν, ἐπεὶ οὐδὲ τοὔνομα τὴν Πισᾶτιν ἐτυμολογοῦσιν ὁμοίως· οἱ μὲν γὰρ ἀπὸ Πίσης ὁμωνύμου τῇ κρήνῃ πόλεως, τὴν δὲ κρήνην Πῖσαν εἰρῆσθαι, οἷον πίστραν, ὅπερ ἐστὶ ποτίστρα· τὴν δὲ πόλιν ἱδρυμένην ἐφ' ὕψους δεικνύουσι μεταξὺ δυεῖν ὀροῖν, Ὄσσης καὶ Ὀλύμπου, ὁμωνύμων τοῖς ἐν Θετταλίᾳ. τινὲς δὲ πόλιν μὲν οὐδεμίαν γεγονέναι Πῖσαν φασίν (εἶναι γὰρ ἂν μίαν τῶν ὀκτώ), κρήνην δὲ μόνην, ἣν νῦν καλεῖσθαι Βῖσαν, Κικυσίου πλησίον πόλεως μεγίστης τῶν ὀκτώ· Στησίχορον δὲ καλεῖν πόλιν τὴν χώραν Πῖσαν λεγομένην, ὡς ὁ ποιητὴς τὴν Λέσβον Μάκαρος πόλιν. Εὐριπίδης δ' ἐν Ἴωνι „Εὔ-„βοι' Ἀθήναις ἐστί τις γείτων πόλις“ καὶ ἐν Ῥαδαμάνθυι „οἳ γῆν ἔχουσ' Εὐβοΐδα πρόσχωρον πόλιν“ Σοφοκλῆς δ' ἐν Μυσοῖς „Ἀσία μὲν ἡ σύμπασα κλή-„ζεται, ξένε, πόλις δὲ Μυσῶν Μυσία προσήγορος.“

32 *Ἡ δὲ Σαλμώνη πλησίον ἐστὶ τῆς ὁμωνύμου κρήνης ἐξ ἧς ῥεῖ ὁ Ἐνιπεύς· ἐμβάλλει δ' εἰς τὸν Ἀλφειόν. τούτου δ' ἐρασθῆναι τὴν Τυρώ φασιν „ἣ ποταμοῦ „ἠράσσατ' Ἐνιπῆος θείοιο.“ ἐνταῦθα γὰρ βασιλεῦσαι τὸν πατέρα αὐτῆς τὸν Σαλμωνέα, καθάπερ καὶ Εὐριπίδης ἐν Αἰόλῳ φησί. ἐγγὺς δὲ τῆς Σαλμώνης Ἡράκλεια, καὶ αὕτη μία τῶν ὀκτώ, διέχουσα περὶ τετταράκοντα σταδίους τῆς Ὀλυμπίας, κειμένη δὲ παρὰ τὸν Κυθήριον ποταμόν, οὗ τὸ τῶν Ἰωνιάδων νυμφῶν· ἱερὸν τῶν πεπιστευμένων θεραπεύειν νόσους τοῖς*

---

21. post *Ἀλφειόν: καλεῖται δὲ νῦν Βαρνίχιος.* 25. post *φησί: τὸν δ' ἐν τῇ Θετταλίᾳ Ἐλισέα γράφουσιν, ὃς ἀπὸ τῆς Ὄθρυος ῥέων δέχεται τὸν Ἀπιδανὸν κατενεχθέντα ἐκ Φαρσάλου.*

ὕδασι. παρὰ δὲ τὴν Ὀλυμπίαν ἐστὶ καὶ ἡ Ἄρπινα, καὶ C.357
αὕτη τῶν ὀκτώ, δι' ἧς ῥεῖ ποταμὸς Παρθενίας ὡς εἰς Ἡραίαν ἰόντων· αὐτοῦ δ' ἔστι καὶ τὸ Κικύσιον τῶν ὀκτὼ καὶ τὸ Δυσπόντιον κατὰ τὴν ὁδὸν τὴν ἐξ Ἤλιδος εἰς Ὀλυμπίαν ἐν πεδίῳ κείμενον· ἐξελείφθη δέ, καὶ ἀπῆραν οἱ πλείους εἰς Ἐπίδαμνον καὶ Ἀπολλωνίαν· καὶ ἡ Φολόη δ' ὑπέρκειται τῆς Ὀλυμπίας ἐγγυτάτω, ὄρος Ἀρκαδικόν, ὥστε τὰς ὑπωρείας τῆς Πισάτιδος εἶναι. καὶ πᾶσα δ' ἡ Πισᾶτις καὶ τῆς Τριφυλίας τὰ πλεῖστα ὁμορεῖ τῇ Ἀρκαδίᾳ· διὰ δὲ τοῦτο καὶ Ἀρκαδικὰ εἶναι δοκεῖ τὰ πλεῖστα τῶν Πυλιακῶν ἐν καταλόγῳ φραζομένων χωρίων· οὐ μέντοι φασὶν οἱ ἔμπειροι· τὸν γὰρ Ἐρύμανθον εἶναι τὸν ὁρίζοντα τὴν Ἀρκαδίαν τῶν εἰς Ἀλφειὸν ἐμπιπτόντων ποταμῶν, ἔξω δ' ἐκείνου τὰ χωρία ἱδρῦσθαι ταῦτα.

Ἔφορος δέ φησιν Αἰτωλὸν ἐκπεσόντα ὑπὸ Σαλ- 33
μωνέως τοῦ βασιλέως Ἐπειῶν τε καὶ Πισατῶν ἐκ τῆς Ἠλείας εἰς τὴν Αἰτωλίαν, ὀνομάσαι τε ἀφ' αὑτοῦ τὴν χώραν καὶ συνοικίσαι τὰς αὐτόθι πόλεις· τούτου δ' ἀπόγονον ὑπάρξαντα Ὄξυλον φίλον τοῖς περὶ Τήμενον Ἡρακλείδαις ἡγήσασθαί τε τὴν ὁδὸν κατιοῦσιν εἰς τὴν Πελοπόννησον καὶ μερίσαι τὴν πολεμίαν αὐτοῖς χώραν καὶ τἆλλα ὑποθέσθαι τὰ περὶ τὴν κατάκτησιν τῆς χώρας, ἀντὶ δὲ τούτων λαβεῖν χάριν τὴν εἰς τὴν Ἠλείαν κάθοδον, προγονικὴν οὖσαν, κατελθεῖν δὲ ἀθροίσαντα στρατιὰν ἐκ τῆς Αἰτωλίας ἐπὶ τοὺς κατέχοντας Ἐπειοὺς τὴν Ἦλιν· ἀπαντησάντων δὲ τῶν Ἐπειῶν μεθ' ὅπλων, ἐπειδὴ ἀντίπαλοι ἦσαν αἱ δυνάμεις, εἰς μονομαχίαν προελθεῖν κατὰ ἔθος τι παλαιὸν

3. post ἰόντων: ἡ δὲ Ἡραία ἐστὶ τῆς Ἀρκαδίας· ὑπέρκειται δὲ τῆς Δυμαίας καὶ Βουπρασίου καὶ Ἤλιδος· ἅπερ ἐστὶ πρὸς ἄρκτον τῇ Πισάτιδι.

τῶν Ἑλλήνων Πυραίχμην Αἰτωλὸν Δέγμενόν τ' Ἐπειόν, τὸν μὲν Δέγμενον μετὰ τόξου ψιλόν, ὡς περιεσόμενον ῥᾳδίως ὁπλίτου διὰ τῆς ἐκηβολίας, τὸν δὲ μετὰ σφενδόνης καὶ πήρας λίθων, ἐπειδὴ κατέμαθε τὸν δόλον· τυχεῖν δὲ νεωστὶ ὑπὸ τῶν Αἰτωλῶν εὑρημένον τὸ τῆς σφενδόνης εἶδος· μακροβολωτέρας δ' οὔσης τῆς σφενδόνης πεσεῖν τὸν Δέγμενον, καὶ κατασχεῖν τοὺς Αἰτωλοὺς τὴν γῆν ἐκβαλόντας τοὺς Ἐπειούς· παραλαβεῖν δὲ καὶ τὴν ἐπιμέλειαν τοῦ ἱεροῦ τοῦ Ὀλυμπίασιν, ἣν εἶχον οἱ Ἀχαιοί· διὰ δὲ τὴν τοῦ Ὀξύλου φιλίαν πρὸς τοὺς Ἡρακλείδας συνομολογηθῆναι ῥᾳδίως ἐκ πάντων
C.358 μεθ' ὅρκου τὴν Ἠλείαν ἱερὰν εἶναι τοῦ Διός, τὸν δ' ἐπιόντα ἐπὶ τὴν χώραν ταύτην μεθ' ὅπλων ἐναγῆ εἶναι, ὡς δ' αὔτως ἐναγῆ καὶ τὸν μὴ ἐπαμύνοντα εἰς δύναμιν· ἐκ δὲ τούτου καὶ τοὺς κτίσαντας τὴν Ἠλείων πόλιν ὕστερον ἀτείχιστον ἐᾶσαι, καὶ τοὺς δι' αὐτῆς τῆς χώρας ἰόντας στρατοπέδῳ τὰ ὅπλα παραδόντας ἀπολαμβάνειν μετὰ τὴν ἐκ τῶν ὅρων ἔκβασιν· Ἴφιτόν τε θεῖναι τὸν Ὀλυμπικὸν ἀγῶνα, ἱερῶν ὄντων τῶν Ἠλείων. ἐκ δὴ τῶν τοιούτων αὔξησιν λαβεῖν τοὺς ἀνθρώπους· τῶν γὰρ ἄλλων πολεμούντων ἀεὶ πρὸς ἀλλήλους, μόνοις ὑπάρξαι πολλὴν εἰρήνην, οὐκ αὐτοῖς μόνον ἀλλὰ καὶ τοῖς ξένοις, ὥστε καὶ εὐανδρῆσαι μάλιστα πάντων παρὰ τοῦτο. Φείδωνα δὲ τὸν Ἀργεῖον, δέκατον μὲν ὄντα ἀπὸ Τημένου, δυνάμει δ' ὑπερβεβλημένον τοὺς κατ' αὐτόν, ἀφ' ἧς τήν τε λῆξιν ὅλην ἀνέλαβε τὴν Τημένου διεσπασμένην εἰς πλείω μέρη, καὶ μέτρα ἐξεῦρε τὰ Φειδώνια καλούμενα καὶ σταθμοὺς καὶ νόμισμα κεχαραγμένον τό τε ἄλλο καὶ τὸ ἀργυροῦν, πρὸς τούτοις ἐπιθέσθαι καὶ ταῖς ὑφ' Ἡρακλέους αἱρεθείσαις πόλεσι, καὶ τοὺς ἀγῶνας ἀξιοῦν τιθέναι αὐτόν, οὓς ἐκεῖνος ἔθηκε· τούτων δὲ εἶναι καὶ

τὸν Ὀλυμπικόν· καὶ δὴ βιασάμενον ἐπελθόντα θεῖναι αὐτόν, οὔτε τῶν Ἠλείων ἐχόντων ὅπλα ὥστε κωλύειν διὰ τὴν εἰρήνην τῶν τε ἄλλων κρατουμένων τῇ δυναστείᾳ· οὐ μὴν τούς γε Ἠλείους ἀναγράψαι τὴν θέσιν ταύτην, ἀλλὰ καὶ ὅπλα κτήσασθαι διὰ τοῦτο καὶ ἀρξαμένους ἐπικουρεῖν σφίσιν αὐτοῖς· συμπράττειν δὲ καὶ Λακεδαιμονίους, εἴτε φθονήσαντας τῇ διὰ τὴν εἰρήνην εὐτυχίᾳ εἴτε καὶ συνεργοὺς ἕξειν νομίσαντας πρὸς τὸ καταλῦσαι τὸν Φείδωνα, ἀφῃρημένον αὐτοὺς τὴν ἡγεμονίαν τῶν Πελοποννησίων, [ἣν ἐκεῖ]νοι προεκέκτηντο· καὶ δὴ καὶ συγκαταλῦσαι τὸν Φείδωνα· τοὺς δὲ συγκατασκευάσαι τοῖς Ἠλείοις τήν τε Πισᾶτιν καὶ τὴν Τριφυλίαν. ὁ δὲ παράπλους ἅπας ὁ τῆς νῦν Ἠλείας μὴ κατακολπίζοντι χιλίων ὁμοῦ καὶ διακοσίων ἐστὶ σταδίων. ταῦτα μὲν περὶ τῆς Ἠλείας.

4 Ἡ δὲ Μεσσηνία συνεχής ἐστι τῇ Ἠλείᾳ, περινεύουσα τὸ πλέον ἐπὶ τὸν νότον καὶ τὸ Λιβυκὸν πέλαγος. αὕτη δ' ἐπὶ μὲν τῶν Τρωικῶν ὑπὸ Μενελάῳ ἐτέτακτο, μέρος οὖσα τῆς Λακωνικῆς, ἐκαλεῖτο δ' ἡ χώρα Μεσσήνη· τὴν δὲ νῦν ὀνομαζομένην πόλιν Μεσσήνην, ἧς ἀκρόπολις ἡ Ἰθώμη ὑπῆρξεν, οὔπω συνέβαινεν ἐκτίσθαι· μετὰ δὲ τὴν Μενελάου τελευτήν, ἐξασθενησάντων C.359 τῶν διαδεξαμένων τὴν Λακωνικήν, οἱ Νηλεΐδαι τῆς Μεσσηνίας ἐπῆρχον. καὶ δὴ κατὰ τὴν τῶν Ἡρακλειδῶν κάθοδον καὶ τὸν τότε γενηθέντα μερισμὸν τῆς χώρας ἦν Μέλανθος βασιλεὺς τῶν Μεσσηνίων καθ' αὑτοὺς ταττομένων, πρότερον δ' ὑπήκοοι ἦσαν τοῦ Μενελάου. σημεῖον δέ· ἐκ γὰρ τοῦ Μεσσηνιακοῦ κόλπου καὶ τοῦ συνεχοῦς Ἀσιναίου λεγομένου ἀπὸ τῆς Μεσσηνιακῆς Ἀσίνης αἱ ἑπτὰ ἦσαν πόλεις, ἃς ὑπέσχετο δώσειν ὁ Ἀγαμέμνων τῷ Ἀχιλλεῖ „Καρδαμύλην Ἐνόπην τε καὶ Ἱρὴν ποιήεσσαν Φηράς τε ζαθέας ἠδ' Ἄν-

„θειαν βαθύλειμον καλήν τ' Αἴπειαν καὶ Πήδασον „ἀμπελόεσσαν,“ οὐκ ἂν τάς γε μὴ προσηκούσας μήτ' αὐτῷ μήτε τῷ ἀδελφῷ ὑποσχόμενος. ἐκ δὲ τῶν Φηρῶν καὶ συστρατεύσαντας τῷ Μενελάῳ δηλοῖ ὁ ποιητής, τὸν δὲ [Οἴτυλον] καὶ συγκαταλέγει τῷ Λακωνικῷ καταλόγῳ, ἱδ[ρυμένον] ἐν τῷ Μεσσηνιακῷ κόλπῳ. ἔστι δ' ἡ Μεσσήνη μετὰ Τριφυλίαν· κοινὴ δ' ἐστὶν ἀμφοῖν ἄκρα, μεθ' ἣν τὸ Κορυφάσιον· ὑπέρκειται δ' ὄρος ἐν ἑπτὰ σταδίοις τὸ Αἰγαλέον τούτου τε καὶ τῆς θαλάττης.

2 Ἡ μὲν οὖν παλαιὰ Πύλος ἡ Μεσσηνιακὴ ὑπὸ τῷ Αἰγαλέῳ πόλις ἦν, κατεσπασμένης δὲ ταύτης ἐπὶ τῷ Κορυφασίῳ τινὲς αὐτῶν ᾤκησαν· προσέκτισαν δ' αὐτὴν Ἀθηναῖοι τὸ δεύτερον ἐπὶ Σικελίαν πλέοντες μετ' Εὐρυμέδοντος ἐπὶ Στρατοκλέους, ἐπιτείχισμα τοῖς Λακεδαιμονίοις. αὐτοῦ δ' ἐστὶ καὶ ἡ Κυπαρισσία ἡ Μεσσηνιακὴ καὶ ἡ . . . . καὶ ἡ προκειμένη πλησίον τοῦ Πύλου Σφαγία νῆσος, ἡ δ' αὐτὴ καὶ Σφακτηρία λεγομένη, περὶ ἣν ἀπέβαλον ζωγρίᾳ Λακεδαιμόνιοι τριακοσίους ἐξ ἑαυτῶν ἄνδρας ὑπ' Ἀθηναίων ἐκπολιορκηθέντας. κατὰ δὲ τὴν παραλίαν ταύτην τῶν Κυπαρισσιέων πελάγιαι πρόκεινται δύο νῆσοι προσαγορευόμεναι Στροφάδες, τετρακοσίους ἀπέχουσαι μάλιστά πως τῆς ἠπείρου σταδίους ἐν τῷ Λιβυκῷ καὶ μεσημβρινῷ πελάγει. φησὶ δὲ Θουκυδίδης ναύσταθμον ὑπάρξαι τῶν Μεσσηνίων ταύτην τὴν Πύλον· διέχει δὲ Σπάρτης τετρακοσίους.

3 Ἑξῆς δ' ἐστὶ Μεθώνη· ταύτην δ' εἶναί φασι τὴν ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ Πήδασον προσαγορευομένην, μίαν τῶν ἑπτὰ ὧν ὑπέσχετο τῷ Ἀχιλλεῖ ὁ Ἀγαμέμνων· ἐνταῦθα Ἀγρίππας τὸν τῶν Μαυρουσίων βασιλέα τῆς

---

8. post Κορυφάσιον: καὶ ἡ Κυπαρισσία· 20. ante τῶν: αἱ

Ἀντωνίου στάσεως ὄντα Βόγον κατὰ τὸν πόλεμον τὸν Ἀκτιακὸν διέφθειρε, λαβὼν ἐξ ἐπίπλου τὸ χωρίον.

4 Τῇ δὲ Μεθώνῃ συνεχής ἐστιν ὁ Ἀκρίτας, ἀρχὴ τοῦ Μεσσηνιακοῦ κόλπου· καλοῦσι δ' αὐτὸν καὶ Ἀσιναῖον ἀπὸ Ἀσίνης, πολίχνης πρώτης ἐν τῷ κόλπῳ, ὁμωνύμου τῇ Ἑρμιονικῇ. αὕτη μὲν οὖν ἡ ἀρχὴ πρὸς C.360 δύσιν τοῦ κόλπου ἐστί, πρὸς ἕω δὲ αἱ καλούμεναι Θυρίδες, ὅμοροι τῇ νῦν Λακωνικῇ τῇ κατὰ Κιναίθιον καὶ Ταίναρον. μεταξὺ δὲ ἀπὸ τῶν Θυρίδων ἀρξαμένοις Οἴτυλός ἐστι· καλεῖται δ' ὑπό τινων Βοίτυλος· εἶτα Λεῦκτρον τῶν ἐν τῇ Βοιωτίᾳ Λεύκτρων ἄποικος, εἶτ' ἐπὶ πέτρας ἐρυμνῆς ἵδρυται Καρδαμύλη, εἶτα Φηραὶ ὅμορος Θουρίᾳ καὶ Γερήνοις, ἀφ' οὗ τόπου Γερήνιον τὸν Νέστορα κληθῆναί φασι διὰ τὸ ἐνταῦθα σωθῆναι αὐτόν, ὡς προειρήκαμεν. δείκνυται δ' ἐν τῇ Γερηνίᾳ Τρικκαίου ἱερὸν Ἀσκληπιοῦ, ἀφίδρυμα τοῦ ἐν τῇ Θετταλικῇ Τρίκκῃ. οἰκίσαι δὲ λέγεται Πέλοψ τό τε Λεῦκτρον καὶ Χαράδραν καὶ Θαλάμας, τοὺς νῦν Βοιωτοὺς καλουμένους, τὴν ἀδελφὴν Νιόβην ἐκδοὺς Ἀμφίονι καὶ ἐκ τῆς Βοιωτίας ἀγαγόμενός τινας. παρὰ δὲ Φηρὰς Νέδων ἐκβάλλει ῥέων διὰ τῆς Λακωνικῆς, ἕτερος ὢν τῆς Νέδας· ἔχει δ' ἱερὸν ἐπίσημον Ἀθηνᾶς Νεδουσίας. *καὶ ἐν Ποιαέσσῃ δ' ἐστὶν Ἀθηνᾶς Νεδουσίας ἱερόν, ἐπώνυμον τόπου τινὸς Νέδοντος, ἐξ οὗ φασιν οἰκίσαι Τήλεκλον Ποιάεσσαν καὶ Ἐχειὰς καὶ Τράγιον.*

5 Τῶν δὲ προταθεισῶν ἑπτὰ πόλεων τῷ Ἀχιλλεῖ περὶ μὲν Καρδαμύλης καὶ Φηρῶν εἰρήκαμεν καὶ Πηδάσου. Ἐνόπην δὲ οἱ μὲν τὰ Πέλλανά φασιν, οἱ δὲ τόπον τινὰ περὶ Καρδαμύλην, οἱ δὲ τὴν Γερηνίαν· τὴν δὲ Ἱρὴν κατὰ τὸ ὄρος δεικνύουσι τὸ κατὰ τὴν Μεγαλόπολιν τῆς Ἀρκαδίας ὡς ἐπὶ τὴν Ἀνδανίαν ἰόντων, ἣν ἔφαμεν Οἰχαλίαν ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ κεκλῆσθαι· οἱ δὲ

τὴν νῦν Μεσόλαν οὕτω καλεῖσθαί φασι καθήκουσαν εἰς τὸν μεταξὺ κόλπον τοῦ Ταϋγέτου καὶ τῆς Μεσσηνίας. ἡ δ' Αἴπεια νῦν Θουρία καλεῖται, ἣν ἔφαμεν ὅμορον Φαραῖς· ἵδρυται δ' ἐπὶ λόφου ὑψηλοῦ, ἀφ' οὗ καὶ τοὔνομα. ἀπὸ δὲ τῆς Θουρίας καὶ ὁ Θουριάτης κόλπος, ἐν ᾧ πόλισμα ἦν Ῥίον τοὔνομα ἀπεναντίον Ταινάρου. Ἄνθειαν δὲ οἱ μὲν αὐτὴν τὴν Θουρίαν φασίν, Αἴπειαν δὲ τὴν Μεθώνην, οἱ δὲ τὴν μεταξὺ Ἀσίνην τῶν Μεσσηνίων πόλεων οἰκειότατα βαθύλειμον λεχθεῖσαν, ἧς πρὸς θαλάττῃ πόλις Κορώνη· καὶ ταύτην δέ τινες Πήδασον λεχθῆναί φασιν ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ. „πᾶσαι δ' ἐγγὺς ἁλός," Καρδαμύλη μὲν ἐπ' C.316 αὐτῇ, Φαραὶ δ' ἀπὸ πέντε σταδίων, ὕφορμον ἔχουσα θερινόν, αἱ δ' ἄλλαι ἀνωμάλοις κέχρηνται τοῖς ἀπὸ θαλάττης διαστήμασι.

6 Πλησίον δὲ τῆς Κορώνης κατὰ μέσον πως τὸν κόλπον ὁ Παμισὸς ποταμὸς ἐκβάλλει, ταύτην μὲν ἐν δεξιᾷ ἔχων καὶ τὰς ἑξῆς· ὧν εἰσιν ἔσχαται πρὸς δύσιν Πύλος καὶ Κυπαρισσία, μέση δὲ τούτων Ἔρανα, ἣν οὐκ εὖ τινες Ἀρήνην .... νενομίκασι πρότερον· Θουρίαν δὲ καὶ Φαρὰς ἐν ἀ[ριστερᾷ]. μέγιστος δ' ἐστὶ ποταμῶν τῶν ἐντὸς Ἰσθμοῦ καίπερ οὐ πλείους ἢ ἑκατὸν σταδίους ἐκ τῶν πηγῶν ῥυεὶς δαψιλὴς τῷ ὕδατι διὰ τοῦ Μεσσηνιακοῦ πεδίου καὶ τῆς Μακαρίας καλουμένης· ἀφέστηκέ τε τῆς νῦν Μεσσηνίων πόλεως ὁ ποταμὸς σταδίους πεντήκοντα. ἔστι δὲ καὶ ἄλλος Παμισὸς χαραδρώδης μικρὸς περὶ Λεῦκτρον ῥέων τὸ Λακωνικόν, περὶ οὗ κρίσιν ἔσχον Μεσσήνιοι πρὸς Λακεδαιμονίους ἐπὶ Φιλίππου· τὸν δὲ Παμισόν, ὃν Ἄμαθόν τινες ὠνόμασαν, προειρήκαμεν.

---

26. post σταδίους: διακοσίους καὶ 30. ante: προειρήκαμεν: ὡς

7 Ἔφορος δὲ τὸν Κρεσφόντην, ἐπειδὴ εἷλε Μεσσήνην, διελεῖν φησιν εἰς πέντε πόλεις αὐτήν, ὥστε Στενύκλαρον μὲν ἐν τῷ μέσῳ τῆς χ[ώρας ταύτης] κειμένην ἀποδεῖξαι βασίλειον αὑτῷ, [εἰς δὲ τὰς ἄλλας] βασιλέας πέμψαι, Πύλον καὶ Ῥίον κ[αὶ Μεσόλαν καὶ] Ὑαμεῖτιν, ποιήσαντα ἰσονόμους πάντας τοῖς Δωριεῦσι τοὺς Μεσσηνίους· ἀγανακτούντων δὲ τῶν Δωριέων μεταγνόντα μόνον τὸν Στενύκλαρον νομίσαι πόλιν, εἰς τοῦτον δὲ καὶ τοὺς Δωριέας συναγαγεῖν πάντας.

8 Ἡ δὲ Μεσσηνίων πόλις ἔοικε Κορίνθῳ· ὑπέρκειται γὰρ τῆς πόλεως ἑκατέρας ὄρος ὑψηλὸν καὶ ἀπότομον τείχει κοινῷ περιειλημμένον ὥστ' ἀκροπόλει χρῆσθαι, τὸ μὲν καλούμενον Ἰθώμη τὸ δὲ Ἀκροκόρινθος· ὥστ' οἰκείως δοκεῖ Δημήτριος ὁ Φάριος πρὸς Φίλιππον εἰπεῖν τὸν Δημητρίου, παρακελευόμενος τούτων ἔχεσθαι τῶν πόλεων ἀμφοῖν ἐπιθυμοῦντα τῆς Πελοποννήσου· „τῶν κεράτων γὰρ κρατῶν“ ἔφη „καθέ„ξεις τὴν βοῦν.“ κέρατα μὲν λέγων τὴν Ἰθώμην καὶ τὸν Ἀκροκόρινθον, βοῦν δὲ τὴν Πελοπόννησον. καὶ δὴ διὰ τὴν εὐκαιρίαν ταύτην ἀμφήριστοι γεγόνασιν αἱ πόλεις αὗται. Κόρινθον μὲν οὖν κατέσκαψαν [Ῥωμαῖοι] καὶ ἀνέστησαν πάλιν· Μεσσήνην δὲ ἀνεῖλον μὲν Λακεδαιμόνιοι, πάλιν δ' ἀνέλαβον Θηβαῖοι καὶ μετὰ ταῦτα Φίλιππος Ἀμύντου· αἱ δ' ἀκροπόλεις ἀοίκητοι διέμειναν.

C.362 9 Τὸ δ' ἐν Λίμναις τῆς Ἀρτέμιδος ἱερόν, ἐφ' ᾧ Μεσσήνιοι περὶ τὰς παρθένους ὑβρίσαι δοκοῦσι τὰς ἀφιγμένας ἐπὶ τὴν θυσίαν, ἐν μεθορίοις ἐστὶ τῆς τε Λακωνικῆς καὶ τῆς Μεσσηνίας, ὅπου κοινὴν συνετέλουν πανήγυριν καὶ θυσίαν ἀμφότεροι· μετὰ δὲ τὴν ὕβριν οὐ διδόντων δίκας τῶν Μεσσηνίων συστῆναί φασι τὸν πόλεμον. ἀπὸ δὲ τῶν Λιμνῶν τούτων καὶ

τὸ ἐν τῇ Σπάρτῃ Λιμναῖον εἴρηται τῆς Ἀρτέμιδος ἱερόν.

10 Πλεονάκις δ' ἐπολέμησαν διὰ τὰς ἀποστάσεις τῶν Μεσσηνίων. τὴν μὲν οὖν πρώτην κατάκτησιν αὐτῶν φησι Τυρταῖος ἐν τοῖς ποιήμασι κατὰ τοὺς τῶν πατέρων πατέρας γενέσθαι· τὴν δὲ δευτέραν, καθ' ἣν ἑλόμενοι συμμάχους Ἀργείους τε καὶ Ἀρκάδας καὶ Πισάτας ἀπέστησαν, Ἀρκάδων μὲν Ἀριστοκράτην τὸν Ὀρχομενοῦ βασιλέα παρεχομένων στρατηγόν, Πισατῶν δὲ Πανταλέοντα τὸν Ὀμφαλίωνος· ἡνίκα φησὶν αὐτὸς στρατηγῆσαι τὸν πόλεμον τοῖς Λακεδαιμονίοις [ἐλθὼν ἐξ Ἐρινεοῦ]· καὶ γάρ εἶναί φησιν ἐκεῖθεν ἐν τῇ ἐλεγείᾳ ἣν ἐπιγράφουσιν Εὐνομίαν „αὐτὸς γὰρ „Κρονίων, καλλιστεφάνου πόσις Ἥρης, Ζεὺς Ἡρα„κλείδαις τήνδε δέδωκε πόλιν· οἷσιν ἅμα προλιπόν„τες Ἐρινεὸν ἠνεμόεντα, εὐρεῖαν Πέλοπος νῆσον ἀφι„κόμεθα.“ ὥστ' ἢ ταῦτα ἠκύρωται τὰ ἐλεγεῖα, ἢ Φιλοχόρῳ ἀπιστητέον τῷ φήσαντι Ἀθηναῖόν τε καὶ Ἀφιδναῖον, καὶ Καλλισθένει καὶ ἄλλοις πλείοσι τοῖς εἰποῦσιν ἐξ Ἀθηνῶν ἀφικέσθαι δεηθέντων Λακεδαιμονίων κατὰ χρησμόν, ὃς ἐπέταττε παρ' Ἀθηναίων λαβεῖν ἡγεμόνα. ἐπὶ μὲν οὖν τοῦ Τυρταίου ὁ δεύτερος ὑπῆρξε πόλεμος· τρίτον δὲ καὶ τέταρτον συστῆναί φασιν, ἐν ᾧ κατελύθησαν οἱ Μεσσήνιοι. ὁ δὲ πᾶς παράπλους ὁ Μεσσηνιακὸς στάδιοι ὀκτακόσιοί που κατακολπίζοντι.

11 Ἀλλὰ γὰρ εἰς πλείω λόγον τοῦ μετρίου πρόιμεν ἀκολουθοῦντες τῷ πλήθει τῶν ἱστορουμένων περὶ χώρας ἐκλελειμμένης τῆς πλείστης· ὅπου γε καὶ ἡ Λακωνικὴ λειπανδρεῖ κρινομένη πρὸς τὴν παλαιὰν εὐανδρίαν. ἔξω γὰρ τῆς Σπάρτης αἱ λοιπαὶ πολίχναι τινές εἰσι περὶ τριάκοντα τὸν ἀριθμόν· τὸ δὲ παλαιὸν ἑκα-

τόμπολίν φασιν αὐτὴν καλεῖσθαι, καὶ τὰ ἑκατόμβαια διὰ τοῦτο θύεσθαι παρ' αὐτοῖς κατ' ἔτος.

5 Ἔστι δ' οὖν μετὰ τὸν Μεσσηνιακὸν κόλπον ὁ Λακωνικὸς μεταξὺ Ταινάρου καὶ Μαλεῶν, ἐκκλίνων μικρὸν ἀπὸ μεσημβρίας πρὸς ἕω· διέχουσι δὲ σταδίους ἑκατὸν τριάκοντα αἱ Θυρίδες τοῦ Ταινάρου ἐν τῷ Μεσσηνιακῷ οὖσαι κόλπῳ, ῥοώδης κρημνός. τούτων δ' C.363 ὑπέρκειται τὸ Ταΰγετον· ἔστι δ' ὄρος μικρὸν ὑπὲρ τῆς θαλάττης ὑψηλόν τε καὶ ὄρθιον, συνάπτον κατὰ τὰ προσάρκτια μέρη ταῖς Ἀρκαδικαῖς ὑπωρείαις, ὥστε καταλείπεσθαι μεταξὺ αὐλῶνα, καθ' ὃν ἡ Μεσσηνία συνεχής ἐστι τῇ Λακωνικῇ. ὑποπέπτωκε δὲ τῷ Ταϋγέτῳ ἡ Σπάρτη ἐν μεσογαίᾳ καὶ Ἀμύκλαι, οὗ τὸ τοῦ Ἀπόλλωνος ἱερόν, καὶ ἡ Φᾶρις. ἔστι μὲν οὖν ἐν κοιλοτέρῳ χωρίῳ τὸ τῆς πόλεως ἔδαφος καίπερ ἀπολαμβάνον ὄρη μεταξύ· ἀλλ' οὐδέν γε μέρος αὐτοῦ λιμνάζει, τὸ δὲ παλαιὸν ἐλίμναζε τὸ προάστειον, καὶ ἐκάλουν αὐτὸ Λίμνας· καὶ τὸ τοῦ Διονύσου ἱερὸν ἐν Λίμναις ἐφ' ὑγροῦ βεβηκὸς ἐτύγχανε, νῦν δ' ἐπὶ ξηροῦ τὴν ἵδρυσιν ἔχει. ἐν δὲ τῷ κόλπῳ τῆς παραλίας τὸ μὲν Ταίναρον ἀκτή ἐστιν ἐκκειμένη τὸ ἱερὸν ἔχουσα τοῦ Ποσειδῶνος ἐν ἄλσει ἱδρυμένον· πλησίον δ' ἐστὶν ἄντρον, δι' οὗ τὸν Κέρβερον ἀναχθῆναι μυθεύουσιν ὑφ' Ἡρακλέους ἐξ ᾅδου. ἐντεῦθεν δ' εἰς μὲν Φυκοῦντα ἄκραν τῆς Κυρηναίας πρὸς νότον δίαρμά ἐστι σταδίων τρισχιλίων· εἰς δὲ Πάχυνον πρὸς δύσιν, τὸ τῆς Σικελίας ἀκρωτήριον, τετρακισχιλίων ἑξακοσίων, τινὲς δὲ τετρακισχιλίων φασίν· εἰς δὲ Μαλέας πρὸς ἕω ἑξακοσίων ἑβδομήκοντα κατακολπίζοντι· εἰς δὲ Ὄνου γνάθον, ταπεινὴν χερρόνησον ἐνδοτέρω τῶν Μαλεῶν, πεντακοσίων εἴκοσι (πρόκειται δὲ κατὰ τούτου Κύθηρα ἐν τετταράκοντα σταδίοις, νῆσος εὐλίμενος, πύ-

λιν ἔχουσα ὁμώνυμον, ἣν ἔσχεν Εὐρυκλῆς ἐν μέρει κτήσεως ἰδίας ὁ καθ' ἡμᾶς τῶν Λακεδαιμονίων ἡγεμών· περίκειται δὲ νησίδια πλείω τὰ μὲν ἐγγὺς τὰ δὲ καὶ μικρὸν ἀπωτέρω)· εἰς δὲ Κώρυκον ἄκραν τῆς Κρήτης ἐγγυτάτω πλοῦς ἐστι σταδίων ἑπτακοσίων πεντήκοντα.

2 Μετὰ δὲ Ταίναρον πλέοντι ἐπὶ τὴν Ὄνου γνάθον καὶ Μαλέας Ψαμαθοῦς ἐστι πόλις· εἶτ' Ἀσίνη καὶ Γύθειον τὸ τῆς Σπάρτης ἐπίνειον ἐν διακοσίοις καὶ τετταράκοντα σταδίοις ἱδρυμένον· ἔχει δ', ὥς φασι, τὸ ναύσταθμον ὀρυκτόν· εἶθ' ὁ Εὐρώτας ἐκδίδωσι μεταξὺ Γυθείου καὶ Ἀκραίων. τέως μὲν οὖν ὁ πλοῦς ἐστι παρ' αἰγιαλὸν ὅσον διακοσίων καὶ τετταράκοντα σταδίων· εἶθ' ἑλῶδες ὑπέρκειται χωρίον καὶ κώμη Ἕλος· πρότερον δ' ἦν πόλις, καθάπερ καὶ Ὅμηρός φησιν „οἵ τ' ἄρ' Ἀμύκλας εἶχον Ἕλος τ' ἔφαλον πτολίεθρον." κτίσμα δ' Ἑλίου φασὶ τοῦ Περσέως. ἔστι δὲ καὶ πεδίον καλούμενον Λεύκη· εἶτα πόλις ἐπὶ χερρονήσου ἱδρυμένη Κυπαρισσία λιμένα ἔχουσα· εἶτα ἡ Ὄνου γνά-
C.364 θος λιμένα ἔχουσα· εἶτα Βοία πόλις, εἶτα Μαλέαι· στάδιοι δ' εἰς αὐτὰς ἀπὸ τῆς Ὄνου γνάθου πεντήκοντα καὶ ἑκατόν· ἔστι δὲ καὶ Ἀσωπὸς πόλις ἐν τῇ Λακωνικῇ.

3 Τῶν δ' ὑφ' Ὁμήρου καταλεγομένων τὴν μὲν Μέσσην οὐδαμοῦ δείκνυσθαί φασι· Μεσσόαν δ' οὐ τῆς χώρας εἶναι μέρος [ἀλλὰ] τῆς Σπάρτης, καθάπερ καὶ τὸ Λιμναῖον, κατὰ τὸν .... κα. ἔνιοι δὲ κατὰ ἀποκοπὴν δέχονται τὴν Μεσσήνην· εἴρηται γὰρ ὅτι καὶ αὕτη μέρος ἦν τῆς Λακωνικῆς. παραδείγμασι δὲ χρῶνται τοῦ μὲν ποιητοῦ τῷ κρῖ καὶ δῶ καὶ μάψ, καὶ ἔτι „ἥρως δ' Αὐτομέδων τε καὶ Ἄλκιμος," ἀντὶ τοῦ Ἀλκιμέδων· Ἡσιόδου δέ, ὅτι τὸ βριθὺ καὶ βριαρὸν βρῖ λέγει· Σοφοκλῆς δὲ καὶ Ἴων τὸ ῥάδιον ῥά· Ἐπίχαρμος δὲ τὸ

λίαν λῖ, Συρακὼ δὲ τὰς Συρακούσσας· παρ' Ἐμπεδοκλεῖ δέ „μία γίνεται ἀμφοτέρων ὄψ“ ἡ ὄψις· καὶ παρ' Ἀντιμάχῳ „Δήμητρός τοι Ἐλευσινίης ἱερὴ ὄψ.“ καὶ τὸ ἄλφιτον ἄλφι· Εὐφορίων δὲ καὶ τὸν ἧλον λέγει ἧλ· παρὰ Φιλήτᾳ δέ „δμωίδες εἰς ταλάρους λευκὸν ἄγουσιν ἔρι“ [τὸ ἔριον]· „εἰς ἄνεμον δὲ τὰ πηδά“ τὰ πηδάλια Ἄρατός φησι, Δωδὼ δὲ τὴν Δωδώνην Σιμμίας.

Τῶν δ' ἄλλων τῶν ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ κατωνομασμένων τὰ μὲν ἀνῄρηται, τῶν δ' ἴχνη λείπεται, τὰ δὲ μετωνόμασται, καθάπερ αἱ Αὐγειαὶ Αἰγαιαί· [αἱ] γὰρ ἐν τῇ Λοκρίδι οὐδ' ὅλως περίεισι. τὴν δὲ Λᾶν οἱ Διόσκουροί ποτε ἐκ πολιορκίας ἑλεῖν ἱστοροῦνται, ἀφ' οὗ δὴ Λαπέρσαι προσηγορεύθησαν.

Φησὶ δ' Ἔφορος τοὺς κατασχόντας τὴν Λακωνι- 4
κὴν Ἡρακλείδας Εὐρυσθένη τε καὶ Προκλῆ διελεῖν εἰς ἓξ μέρη καὶ πολίσαι τὴν χώραν· μίαν μὲν οὖν τῶν μερίδων, τὰς Ἀμύκλας, ἐξαίρετον δοῦναι τῷ προδόντι αὐτοῖς τὴν Λακωνικὴν καὶ πείσαντι τὸν κατέχοντα αὐτὴν ἀπελθεῖν ὑπόσπονδον μετὰ τῶν Ἀχαιῶν εἰς τὴν Ἰωνίαν· τὴν δὲ Σπάρτην βασίλειον ἀποφῆναι σφίσιν αὐτοῖς· εἰς δὲ τὰς ἄλλας πέμψαι βασιλέας, ἐπιτρέψαντας δέχεσθαι συνοίκους τοὺς βουλομένους τῶν ξένων διὰ τὴν λειπανδρίαν· χρῆσθαι δὲ Λαῒ μὲν να[υστάθμῳ διὰ τὸ εὐ]λίμενον, Αἴγυι δὲ πρὸς τοὺς πολέ[μους ὁρμητηρίῳ· καὶ] γὰρ ὁμορεῖν τοῖς κύκλῳ, Φάριδι δ[ὲ ἀρχείῳ, πλείστην] ἀπὸ τῶν ἐντὸς ἀσφάλειαν ἐχούσῃ, τ. . . . . ὑπακούοντας δ' ἅπαντας τοὺς περιοίκους Σπαρτιατῶν ὅμως ἰσονόμους εἶναι, μετέχοντας C.365
καὶ πολιτείας καὶ ἀρχείων· Ἆγιν δὲ τὸν Εὐρυσθένους

13. post προσηγορεύθησαν: καὶ Σοφοκλῆς λέγει που „νὴ τὼ Λαπέρσα, νὴ τὸν Εὐρώταν τρίτον, νὴ τοὺς ἐν Ἄργει καὶ κατὰ Σπάρτην θεούς.“

ἀφελέσθαι τὴν ἰσοτιμίαν καὶ συντελεῖν προστάξαι τῇ Σπάρτῃ. τοὺς μὲν οὖν ἄλλους ὑπακοῦσαι, τοὺς δ' Ἑλείους τοὺς ἔχοντας τὸ Ἕλος (καλεῖσθαι δὲ Εἵλωτας) ποιησαμένους ἀπόστασιν κατὰ κράτος ἁλῶναι πολέμῳ καὶ κριθῆναι δούλους ἐπὶ τακτοῖς τισιν, ὥστε τὸν ἔχοντα μήτ' ἐλευθεροῦν ἐξεῖναι μήτε πωλεῖν ἔξω τῶν ὅρων τούτους· τοῦτον δὲ λεχθῆναι τὸν πρὸς τοὺς Εἵλωτας πόλεμον. σχεδὸν δέ τι καὶ τὴν εἱλωτείαν τὴν ὕστερον συμμείνασαν μέχρι τῆς Ῥωμαίων ἐπικρατείας οἱ περὶ Ἆγιν εἰσὶν οἱ καταδείξαντες· τρόπον γάρ τινα δημοσίους δούλους εἶχον οἱ Λακεδαιμόνιοι τούτους, κατοικίας τινὰς αὐτοῖς ἀποδείξαντες καὶ λειτουργίας ἰδίας.

5 Περὶ δὲ τῆς Λακώνων πολιτείας καὶ τῶν γενομένων παρ' αὐτοῖς μεταβολῶν τὰ μὲν πολλὰ παρείη τις ἂν διὰ τὸ γνώριμον, τινῶν δ' ἄξιον ἴσως μνησθῆναι. Ἀχαιοὺς γὰρ τοὺς Φθιώτας φασὶ συγκατελθόντας Πέλοπι εἰς τὴν Πελοπόννησον οἰκῆσαι τὴν Λακωνικήν, τοσοῦτον δ' ἀρετῇ διενεγκεῖν ὥστε τὴν Πελοπόννησον, ἐκ πολλῶν ἤδη χρόνων Ἄργος λεγομένην, τότε Ἀχαϊκὸν Ἄργος λεχθῆναι, καὶ οὐ μόνον γε τὴν Πελοπόννησον ἀλλὰ καὶ ἰδίως τὴν Λακωνικὴν οὕτω προσαγορευθῆναι· τὸ γοῦν τοῦ ποιητοῦ „ποῦ Μενέλαος ἔην; „ἦ οὐκ Ἄργεος ἦεν Ἀχαιικοῦ;“ δέχονταί τινες οὕτως „ἦ οὐκ ἦν ἐν τῇ Λακωνικῇ;“ κατὰ δὲ τὴν τῶν Ἡρακλειδῶν κάθοδον Φιλονόμου προδόντος τὴν χώραν τοῖς Δωριεῦσι μετανέστησαν ἐκ τῆς Λακωνικῆς εἰς τὴν τῶν Ἰώνων τὴν καὶ νῦν Ἀχαΐαν καλουμένην· ἐροῦμεν δὲ περὶ αὐτῶν ἐν τοῖς Ἀχαϊκοῖς. οἱ δὲ κατασχόντες τὴν Λακωνικὴν κατ' ἀρχὰς μὲν ἐσωφρόνουν, ἐπεὶ δ'

---

30. post Λακωνικὴν: καὶ

οὖν Λυκούργῳ τὴν πολιτείαν ἐπέτρεψαν, τοσοῦτον ὑπερεβάλοντο τοὺς ἄλλους ὥστε μόνοι τῶν Ἑλλήνων καὶ γῆς καὶ θαλάττης ἐπῆρξαν, διετέλεσάν τε ἄρχοντες τῶν Ἑλλήνων ἕως ἀφείλοντο αὐτοὺς τὴν ἡγεμονίαν Θηβαῖοι καὶ μετ' ἐκείνους εὐθὺς Μακεδόνες. οὐ μὴν τελέως γε οὐδὲ τούτοις εἶξαν, ἀλλὰ φυλάττοντες τὴν αὐτονομίαν ἔριν εἶχον περὶ πρωτείων ἀεὶ πρός τε τοὺς ἄλλους Ἕλληνας καὶ πρὸς τοὺς τῶν Μακεδόνων βασιλέας· καταλυθέντων δὲ τούτων ὑπὸ Ῥωμαίων, μικρὰ μέν τινα προσέκρουσαν τοῖς πεμπομένοις ὑπὸ Ῥωμαίων στρατηγοῖς τυραννούμενοι τότε καὶ πολιτευόμενοι μοχθηρῶς· ἀναλαβόντες δὲ σφᾶς ἐτιμήθησαν διαφερόντως καὶ ἔμειναν ἐλεύθεροι, πλὴν τῶν φιλικῶν λειτουργιῶν ἄλλο συντελοῦντες οὐδέν. νεωστὶ δ' Εὐρυκλῆς αὐτοὺς C.366 ἐτάραξε δόξας ἀποχρήσασθαι τῇ Καίσαρος φιλίᾳ πέρα τοῦ μετρίου πρὸς τὴν ἐπιστασίαν αὐτῶν, ἐπαύσατο δ' ἡ ἀρχὴ ταχέως, ἐκείνου μὲν παραχωρήσαντος εἰς τὸ χρεών, τοῦ δ' υἱοῦ τὴν φιλίαν ἀπεστραμμένου τὴν τοιαύτην πᾶσαν· συνέβη δὲ καὶ τοὺς Ἐλευθερολάκωνας λαβεῖν τινα τάξιν πολιτείας, ἐπειδὴ Ῥωμαίοις προσέθεντο πρῶτοι οἱ περίοικοι τυραννουμένης τῆς Σπάρτης, οἵ τε ἄλλοι καὶ οἱ Εἵλωτες. Ἑλλάνικος μὲν οὖν Εὐρυσθένη καὶ Προκλέα φησὶ διατάξαι τὴν πολιτείαν, Ἔφορος δ' ἐπιτιμᾷ φήσας Λυκούργου μὲν αὐτὸν μηδαμοῦ μεμνῆσθαι, τὰ δ' ἐκείνου ἔργα τοῖς μὴ προσήκουσιν ἀνατιθέναι· μόνῳ γοῦν Λυκούργῳ ἱερὸν ἱδρῦσθαι καὶ θύεσθαι κατ' ἔτος, ἐκείνοις δὲ καίπερ οἰκισταῖς γενομένοις μηδὲ τοῦτο δεδόσθαι ὥστε τοὺς ἀπ' αὐτῶν τοὺς μὲν Εὐρυσθενίδας τοὺς δὲ Προκλείδας καλεῖσθαι, ἀ[λλὰ τοὺς μὲν] Ἀγίδας ἀπὸ Ἄγιδος τοῦ Εὐρυσθένους τοὺς δ' [Εὐρυπωντίδας ἀ]πὸ Εὐρυπῶντος τοῦ Προκλέους· τοὺς μὲν [γὰρ δυναστεῦ]σαι δικαίως,

τοὺς δὲ δεξαμένους ἐπ[ήλυδας ἀνθρώ]πους, δι' ἐκείνων δυναστεῦσαι· ὅθε[ν οὐδ' ἀρχηγέτας] νομισθῆναι ὅπερ πᾶσιν ἀποδέδοτα[ι οἰκισταῖς. Παυ]σανίαν τε τῶν Εὐρυπωντιδῶν ἐκπεσόν[τα .... τῆς] οἰκείας ἐν τῇ φυγῇ συντάξαι λόγ[ον κατὰ τοῦ Λυκούρ]γου, νόμων ὄντος τῆς ἐκβαλούση[ς αὐτὸν αἰτίου, καὶ] τοὺς χρησμοὺς λέγειν τοὺς δοθέντα[ς αὐτῷ περὶ τῶν] πλείστων.

6 Περὶ δὲ τῆς φύσεως τῶν τόπων καὶ τούτων καὶ τῶν Μεσσηνιακῶν ταῦτα μὲν ἀποδεκτέον λέγοντος Εὐριπίδου· τὴν γὰρ Λακωνικήν φησιν ἔχειν „πολὺν „μὲν ἄροτον, ἐκπονεῖν δ' οὐ ῥᾴδιον· κοίλη γάρ, ὄρεσι „περίδρομος, τραχεῖά τε δυσείσβολός τε πολεμίοις,“ τὴν δὲ Μεσσηνιακὴν „καλλίκαρπον κατάρρυτόν τε „μυρίοισι νάμασι, καὶ βουσὶ καὶ ποίμναισιν εὐβοτωτάτην „οὔτ' ἐν πνοαῖσι χείματος δυσχείμερον, οὔτ' αὖ „τεθρίπποις ἡλίου θερμὴν ἄγαν.“ καὶ ὑποβὰς τῶν πάλων φησὶν ὧν οἱ Ἡρακλεῖδαι περὶ τῆς χώρας ἐποιήσαντο, τὸν μὲν πρότερον γενέσθαι „γαίας Λακαίνης „κύριον, φαύλου χθονός·“ τὸν δὲ δεύτερον τῆς Μεσσήνης „ἀρετὴν ἐχούσης μείζον' ἢ λόγῳ φράσαι.“ οἵαν καὶ ὁ Τυρταῖος φράζει. τὴν δὲ Λακωνικὴν καὶ τὴν Μεσσηνίαν ὁρίζειν αὐτοῦ φήσαντος „Παμισὸν εἰς θάλασσαν ἐξορμώμενον,“ οὐ συγχωρητέον, ὃς διὰ μέσης ῥεῖ τῆς Μεσσηνίας, οὐδαμοῦ τῆς νῦν Λακωνικῆς ἁπτόμενος. οὐκ εὖ δὲ οὐδ' ὅτι τῆς Μεσσηνίας ὁμοίως ἐπιθαλαττιαίας οὔσης τῇ Λακωνικῇ φησὶν αὐτὴν πρόσω ναυτίλοισιν εἶναι. ἀλλ' οὐδὲ τὴν Ἦλιν εὖ διορίζει „*πρόσω δὲ βάντι ποταμὸν Ἦλις ἡ Διὸς γείτων καλεῖ-
C.367 „ται.“ εἴτε γὰρ τὴν νῦν Ἠλείαν βούλεται λέγειν, ἥτις [ὁμο]ρεῖ τῇ Μεσσηνίᾳ, ταύτης οὐ προσάπτεται ὁ Παμι[σός], ὥσπερ γε [οὐδὲ] τῆς Λακωνικῆς· εἴρηται γὰρ

ὅτι διὰ μέ[σης ῥ]εῖ τῆς Μεσσηνίας· εἴτε τὴν παλαιὰν τὴν κοίλην [καλουμέ]νην, πολὺ μᾶλλον ἐκπίπτει τῆς ἀληθείας· διαβάν[τι γὰρ τ]ὸν Παμισὸν ἔστι πολλὴ τῆς Μεσσηνίας, εἶθ' ἡ τῶν ...... ων ἅπασα καὶ *Μεσσαίων, ἣν Τριφυλίαν ἐκάλουν, [εἶθ' ἡ Πι]σᾶτις καὶ ἡ Ὀλυμπία, εἶτα μετὰ τριακοσί[ους σταδίους] ἡ Ἦλις.

7 Γραφόντων δὲ τῶν μὲν „Λακεδαίμονα κητώεσσαν" τῶν δὲ „καιετάεσσαν," ζητοῦσι τὴν κητώεσσαν τίνα δέχεσθαι χρή, εἴτε ἀπὸ τῶν κητῶν εἴτε μεγάλην, ὅπερ δοκεῖ πιθανώτερον εἶναι· τὴν δὲ καιετάεσσαν οἱ μὲν καλαμινθώδη δέχονται, οἱ δὲ ὅτι οἱ ἀπὸ τῶν σεισμῶν ῥωχμοὶ *καιετοὶ λέγονται· καὶ ὁ καιέτας τὸ δεσμωτήριον ἐντεῦθεν τὸ παρὰ Λακεδαιμονίοις, σπήλαιόν τι· ἔνιοι δὲ κώους μᾶλλον τὰ τοιαῦτα κοιλώματα λέγεσθαί φασιν, ἀφ' οὗ καὶ τὸ „φηρσὶν ὀρεσκῴοισιν." εὔσειστος δ' ἡ Λακωνική· καὶ δὴ τοῦ Ταϋγέτου κορυφάς τινας ἀπορραγῆναι τινὲς μνημονεύουσιν. εἰσὶ δὲ λατομίαι λίθου πολυτελοῦς τοῦ μὲν Ταιναρίου ἐν Ταινάρῳ παλαιαί, νεωστὶ δὲ καὶ ἐν τῷ Ταϋγέτῳ μέταλλον ἀνέῳξάν τινες εὐμεγέθες, χορηγὸν ἔχοντες τὴν τῶν Ῥωμαίων πολυτέλειαν.

8 Ὅτι δὲ Λακεδαίμων ὁμωνύμως λέγεται καὶ ἡ χώρα καὶ ἡ πόλις, δηλοῖ καὶ Ὅμηρος· λέγω δὲ χώραν σὺν τῇ Μεσσηνίᾳ. περὶ μ[ὲν δὴ τῶν] τόξων ὅταν λέγῃ „καλά, „τά οἱ ξεῖνος Λακεδαίμονι δῶκε τυχήσας, Ἴφιτος Εὐ„ρυτίδης," εἶτ' ἐπενέγκῃ „τὼ δ' ἐν Μεσσήνῃ ξυμβλή„την ἀλλήλοιιν οἴκῳ ἐν Ὀρτιλόχοιο," τὴν χώραν λέγει, ἧς μέρος ἦν καὶ ἡ Μεσσηνία· οὐ διήνεγκεν οὖν αὐτῷ καὶ οὕτως εἰπεῖν „ξεῖνος Λακεδαίμονι δῶκε τυχήσας," καὶ „τὼ δ' ἐν Μεσσήνῃ ξυμβλήτην." ὅτι γὰρ αἱ Φηραὶ

27. ante τὴν: τῆς Φηρῆς

εἰσὶν ὁ τοῦ Ὀρτιλόχου οἶκος δῆλον „ἐς Φηρὰς δ' ἵκον- „το Διοκλῆος ποτὶ δῶμα, υἱέος Ὀρτιλόχοιο," ὅ τε Τηλέμαχος καὶ ὁ Πεισίστρατος· αἱ δὲ Φηραὶ τῆς Μεσσηνίας εἰσίν. ὅταν δ' ἐκ τῶν Φηρῶν ὁρμηθέντας τοὺς περὶ Τηλέμαχον πανημερίους φῇ σείειν ζυγόν, εἶτ' εἴπῃ „δύσετό τ' ἠέλιος, οἱ δ' ἷξον κοίλην Λακεδαίμονα „κητώεσσαν· πρὸς δ' ἄρα δώματ' ἔλων Μενελάου,"
C.368 τὴν πόλιν δεῖ δέχεσθαι· εἰ δὲ μή, ἐκ Λακεδαίμονος εἰς Λακεδαίμονα φανεῖται λέγων τὴν ἄφιξιν· ἄλλως τε οὐ πιθανὸν μὴ ἐν Σπάρτῃ τὴν οἴκησιν εἶναι τοῦ Μενελάου, [οὐδὲ] μὴ οὔσης ἐκεῖ τὸν Τηλέμαχον λέγειν „εἶμι „γὰρ ἐς Σπάρτην τε καὶ εἰς Πύλον." δοκεῖ [δὲ συμ]πίπτειν τούτῳ τὸ τοῖς τῆς χώρας ἐπιθέτοις αὐ ...... εἰ μὴ νὴ Δία ποιητικῇ τις τοῦτο συγχωρήσει ἐξο[υσίᾳ. βέλ]τιον γὰρ τὴν Μεσσήνην μετὰ τῆς Λακωνική]ς καὶ Πύλου] τῆς ὑπὸ τῷ Νέστορι, μηδὲ δὴ καθ' αὑτὴν τάτ[τεσθαι ἐν τῷ] καταλόγῳ μηδὲ κοινωνοῦσαν τῆς στρα[τείας].

6 Μετὰ δὲ Μαλέας ὁ Ἀργολικὸς ἐκδέχεται κόλπος καὶ ὁ Ἑρμιονικός, ὁ μὲν μέχρι τοῦ Σκυλλαίου πλέοντι ὡς πρὸς ἕω βλέπων καὶ πρὸς τὰς Κυκλάδας, ὁ δὲ ἑωθινώτερος τούτου μέχρι πρὸς Αἴγιναν καὶ τὴν Ἐπιδαυρίαν. τὰ μὲν δὴ πρῶτα τοῦ Ἀργολικοῦ Λάκωνες ἔχουσι, τὰ δὲ λοιπὰ Ἀργεῖοι· ἐν οἷς ἐστι τῶν μὲν Λακώνων τὸ Δήλιον ἱερὸν Ἀπόλλωνος ὁμώνυμον τῷ Βοιωτιακῷ, καὶ Μινῴα φρούριον ὁμώνυμος καὶ αὕτη τῇ Μεγαρικῇ, καὶ ἡ λιμηρὰ Ἐπίδαυρος, ὡς Ἀρτεμίδωρός φησιν. Ἀπολλόδωρος δὲ Κυθήρων πλησίον ἱστορεῖ ταύτην, εὐλίμενον δὲ οὖσαν βραχέως καὶ ἐπιτετμημένως λιμηρὰν εἰρῆσθαι ὡς ἂν λιμενηράν, μεταβεβληκέναι δὲ τοὔνομα. ἔστι δὲ τραχὺς ὁ παράπλους εὐθὺς ἀπὸ Μαλεῶν ἀρξάμενος μέχρι πολλοῦ ὁ Λακωνικός,

ἔχει δ' ὅμως ὑφόρμους καὶ λιμένας. ἡ λοιπὴ δ' ἐστὶ παραλία εὐλίμενος, νησίδιά τε πολλὰ πρόκειται αὐτῆς οὐκ ἄξια μνήμης.

Τῶν δ' Ἀργείων αἵ τε Πρασιαὶ καὶ τὸ Τημένιον, 2 ἐν ᾧ τέθαπται Τήμενος, καὶ ἔτι πρότερον τὸ χωρίον, δι' οὗ ῥεῖ ποταμὸς ἡ Λέρνη καλουμένη ὁμώνυμος τῇ λίμνῃ, ἐν ᾗ μεμύθευται τὰ περὶ τὴν Ὕδραν. τὸ δὲ Τημένιον ἀπέχει τοῦ Ἄργους ἓξ καὶ εἴκοσι σταδίους ὑπὲρ τῆς θαλάττης, ἀπὸ δὲ τοῦ Ἄργους εἰς τὸ Ἡραῖον τετταράκοντα, ἔνθεν δὲ εἰς Μυκήνας δέκα. μετὰ δὲ τὸ Τημένιον ἡ Ναυπλία, τὸ τῶν Ἀργείων ναύσταθμον· τὸ δ' ἔτυμον ἀπὸ τοῦ ταῖς ναυσὶ προσπλεῖσθαι. ἀπὸ τούτου δὲ πεπλάσθαι φασὶ τὸν Ναύπλιον καὶ τοὺς παῖδας αὐτοῦ παρὰ τοῖς νεωτέροις· οὐ γὰρ Ὅμηρον ἀμνημονῆσαι ἂν τούτων, τοῦ μὲν Παλαμήδους τοσαύτην σοφίαν καὶ σύνεσιν ἐπιδεδειγμένου, δολοφονηθέντος δὲ ἀδίκως, τοῦ δὲ Ναυπλίου τοσοῦτον ἀπεργασαμένου φθόρον ἀνθρώπων περὶ τὸν Καφηρέα. ἡ δὲ γενεαλογία πρὸς τῷ μυθώδει καὶ τοῖς χρόνοις διημάρτηται· δεδόσθω γὰρ Ποσειδῶνος εἶναι, Ἀμυμώνης δὲ πῶς τὸν κατὰ τὰ Τρωικὰ ἔτι ζῶντα; ἐφεξῆς δὲ τῇ Ναυ- C.369 πλίᾳ τὰ σπήλαια καὶ οἱ ἐν αὐτοῖς οἰκοδομητοὶ λαβύρινθοι, Κυκλώπεια δ' ὀνομάζουσιν.

Εἶτ' ἄλλα χωρία καὶ ἐφεξῆς ὁ Ἑρμιονικὸς κόλπος· 3 καὶ [γὰρ τοῦτον Ὁμ]ήρου τάξαντος ὑπὸ τῇ Ἀργείᾳ καὶ ἡμῖν οὐ [παροπτέος ἐνέ]φηνεν ὁ μερισμὸς τῆς περιοδείας οὗτος. ἄρχεται δ' ἀπὸ *Ἀσίνης πολίχνης· εἶθ' Ἑρμιόνη καὶ Τροιζήν· ἐν παράπλῳ δὲ πρόκειται καὶ Καλαυρία νῆσος, κύκλον ἔχουσα τριάκοντα σταδίων, πορθμῷ δὲ τετρασταδίῳ διεστῶσα τῆς ἠπείρου.

Εἶθ' ὁ Σαρωνικὸς κόλπος· οἱ δὲ πόντον λέγου- 4

σιν, οἱ δὲ πόρον, καθ' ὃ καὶ πέλαγος λέγεται Σαρωνικὸν πᾶς ὁ συνάπτων πόρος ἀπὸ τῆς Ἑρμιονικῆς καὶ τῆς περὶ τὸν Ἰσθμὸν θαλάττης τῷ τε Μυρτῴῳ πελάγει καὶ τῷ Κρητικῷ. τοῦ δὲ Σαρωνικοῦ Ἐπίδαυρός τέ ἐστι καὶ ἡ προκειμένη νῆσος Αἴγινα· εἶτα Κεγχρεαὶ τὸ τῶν Κορινθίων ἐπὶ τὰ πρὸς ἕω μέρη ναύσταθμον· εἶτα λιμὴν Σχοινοῦς πλεύσαντι τετταράκοντα καὶ πέντε σταδίους· ἀπὸ δὲ Μαλεῶν τοὺς πάντας περὶ χιλίους καὶ ὀκτακοσίους. κατὰ δὲ τὸν Σχοινοῦντα ὁ δίολκος τὸ στενώτατον τοῦ Ἰσθμοῦ, περὶ ὃν τὸ τοῦ Ἰσθμίου Ποσειδῶνος ἱερόν· ἀλλὰ [ταῦ]τα μὲν ὑπερκείσθω· ἔξω γάρ ἐστι τῆς Ἀργείας. ἀναλαβόντες δ' ἐφοδεύσωμεν πάλιν τὰ κατὰ τὴν Ἀργείαν.

5 Καὶ πρῶτον ποσαχῶς λέγεται παρὰ τῷ ποιητῇ τὸ Ἄργος καὶ καθ' αὑτὸ καὶ μετὰ τοῦ ἐπιθέτου, Ἀχαιικὸν Ἄργος καλοῦντος ἢ Ἴασον ἢ ἵππιον ἢ Πελασγικὸν ἢ ἱππόβοτον. καὶ γὰρ ἡ πόλις Ἄργος λέγεται „Ἄργος τε Σπάρτη τε.“ „οἱ δ' Ἄργος τ' εἶχον Τίρυνθά τε.“ καὶ ἡ Πελοπόννησος „ἡμετέρῳ ἐνὶ οἴκῳ „ἐν Ἄργεϊ.“ οὐ γὰρ ἡ πόλις γε ἦν οἶκος αὐτοῦ. καὶ ὅλη ἡ Ἑλλάς· Ἀργείους γοῦν καλεῖ πάντας καθάπερ καὶ Δαναοὺς καὶ Ἀχαιούς. τὴν δ' οὖν ὁμωνυμίαν τοῖς ἐπιθέτοις διαστέλλεται, τὴν μὲν Θετταλίαν Πελασγικὸν Ἄργος καλῶν „νῦν αὖ τοὺς ὅσσοι τὸ Πελασγικὸν „Ἄργος ἔναιον.“ τὴν δὲ Πελοπόννησον [Ἀχαιικὸν] „εἰ „δέ κεν Ἄργος ἱκοίμεθ' Ἀχαιικὸν“ „ἢ οὐκ Ἄργεος ἦεν „Ἀχαιικοῦ.“ σημαίνων ἐνταῦθα, ὅτι καὶ Ἀχαιοὶ ἰδίως ὠνομάζοντο οἱ Πελοποννήσιοι κατ' ἄλλην σημασίαν. Ἴασόν τε Ἄργος τὴν Πελοπόννησον λέγει „εἰ πάντες „γ' ἐσίδοιεν ἀν' Ἴασον Ἄργος Ἀχαιοί“ τὴν Πηνελό-

---

2. post Σαρωνικὸν: καλεῖται δὲ

πην, ὅτι πλείους ἂν λάβοι μνηστῆρας· οὐ γὰρ τοὺς C.370
ἐξ ὅλης τῆς Ἑλλάδος εἰκός, ἀλλὰ τοὺς ἐγγύς. ἱππόβοτον δὲ καὶ ἵππιον κοινῶς εἴρηκε.

Περὶ δὲ τῆς Ἑλλάδος καὶ Ἑλλήνων καὶ Πανελλή- 6
νων ἀντιλέγεται. Θουκυδίδης μὲν γὰρ τὸν ποιητὴν μηδαμοῦ βαρβάρους εἰπεῖν φησι διὰ τὸ μηδὲ Ἕλληνάς πω τὸ ἀντίπαλον εἰς ἓν ὄνομα ἀποκεκρίσθαι. καὶ Ἀπολλόδωρος δὲ μόνους τοὺς ἐν Θετταλίᾳ καλεῖσθαί φησιν Ἕλληνας „Μυρμιδόνες δὲ καλεῦντο καὶ Ἕλληνες.“ Ἡσίοδον μέντοι καὶ Ἀρχίλοχον ἤδη εἰδέναι καὶ Ἕλληνας λεγομένους τοὺς σύμπαντας καὶ Πανέλληνας, τὸν μὲν περὶ τῶν Προιτίδων λέγοντα ὡς Πανέλληνες ἐμνήστευον αὐτάς, τὸν δὲ „ὡς Πανελλήνων ὀιζὺς ἐς Θάσον συνέδραμεν.“ ἄλλοι δ' ἀντιτιθέασιν ὅτι καὶ βαρβάρους εἴρηκεν, εἰπών γε βαρβαροφώνους τοὺς Κᾶρας, καὶ Ἕλληνας τοὺς πάντας „ἀνδρός, τοῦ κλέος εὐρὺ καθ' Ἑλλάδα καὶ μέσον Ἄργος·“ καὶ πάλιν „εἰ δ' ἐθέλῃς [τραφθῆναι] ἀν' Ἑλλάδα καὶ μέσον Ἄργος.“

Ἡ μὲν οὖν πόλις ἡ τῶν Ἀργείων ἐν χωρίοις ἐπι- 7
πέδοις ἵδρυται τὸ πλέον, ἄκραν δ' ἔχει τὴν καλουμένην Λάρισαν, λόφον εὐερκῆ μετρίως ἔχοντα ἱερὸν Διός· ῥεῖ δ' αὐτῆς πλησίον ὁ Ἴναχος χαραδρώδης ποταμὸς τὰς πηγὰς ἔχων ἐκ Λυρκείου. περὶ δὲ τῶν μυθευομένων πηγῶν εἴρηται διότι πλάσματα ποιητῶν ἐστί· πλάσμα δὲ καὶ τὸ „Ἄργος ἄνυδρον ἐὸν Δαναοὶ θέσαν Ἄργος ἔνυδρον,“ τῆς τε χώρας κοίλης οὔσης καὶ ποταμοῖς διαρρεομένης καὶ ἕλη καὶ λίμνας παρεχομένης, καὶ τῆς πόλεως εὐπορουμένης ὕδασι φρεάτων πολλῶν καὶ ἐπιπολαίων. αἰτιῶνται δὲ τῆς ἀπάτης τὸ „καί κεν ἐλέγχιστος πολυδίψιον Ἄργος ἱκοίμην.“ τοῦτο δ' ἤτοι

23. post Λυρκείου: τοῦ κατὰ τὴν Κυνουρίαν ὄρους τῆς Ἀρκαδίας.

ἀντὶ τοῦ πολυπόθητον κεῖται, ἢ χωρὶς τοῦ δ πολυίψιον· ὡς „πολύφθορόν τε δῶμα Πελοπιδῶν τόδε“ φησὶ Σοφοκλῆς· τὸ γὰρ ἴψασθαι φθοράν τινα καὶ βλάβην σημαίνει „νῦν μὲν πειρᾶται, τάχα δ' ἴψεται υἷας Ἀχαιῶν“ ἄλλως τε οὐ τὴν πόλιν λέγει τὸ Ἄργος (οὐ γὰρ ἐκεῖσε ἔμελλεν ἀφίξεσθαι) ἀλλὰ τὴν Πελοπόννησον, οὐ δήπου καὶ ταύτην διψηρὰν οὖσαν. καὶ σὺν τῷ δ δὲ ὑπερβατῶς δέχονταί[τινες κατὰ] συναλοιφὴν μετὰ τοῦ συνδέσμου τοῦ δέ, ἵν' ᾖ οὕτως „καί κεν ἐλέγχιστος πολὺ δ' „ἴψιον Ἄργος ἱκοίμην,“ ..... πολυί]ψιον Ἄργοσδε ἱκοίμην ἀντὶ τοῦ „εἰς Ἄργος.“

C.371 8 Εἷς μὲν δὴ Ἴναχός ἐστιν ὁ διαρρέων τὴν Ἀργείαν· ἄλλος δὲ ποταμὸς Ἐρασῖνος ἐν τῇ Ἀργείᾳ ἐστίν· οὗτος δὲ τὰς ἀρχὰς ἐκ Στυμφάλου τῆς Ἀρκαδίας λαμβάνει καὶ τῆς ἐκεῖ λίμνης τῆς καλουμένης Στυμφαλίδος, ἐν ᾗ τὰς ὄρνεις μυθολογοῦσι τὰς ὑπὸ τοῦ Ἡρακλέους τοξεύμασι καὶ τυμπάνοις ἐξελαθείσας, [ἃς] καὶ αὐτὰς καλοῦσι Στυμφαλίδας· δύντα δ' ὑπὸ γῆς φασὶ τὸν ποταμὸν τοῦτον ἐκπίπτειν εἰς τὴν Ἀργείαν καὶ ποιεῖν ἐπίρρυτον τὸ πεδίον· ῥεῖ δὲ καὶ ἄλλος ὁμώνυμος ἐκ τῆς Ἀρκαδίας εἰς τὸν κατὰ Βοῦραν αἰγιαλόν· ἄλλος δ' ἐστὶν ὁ Ἐρετρικός, καὶ ὁ ἐν τῇ Ἀττικῇ κατὰ Βραυρῶνα. δείκνυται δὲ καὶ Ἀμυμώνη τις κρήνη κατὰ Λέρνην. ἡ δὲ Λέρνη λίμνη τῆς Ἀργείας ἐστὶ καὶ τῆς Μυκηναίας, ἐν ᾗ τὴν Ὕδραν ἱστοροῦσι· διὰ δὲ τοὺς γινομένους καθαρμοὺς ἐν αὐτῇ παροιμία τις ἐξέπεσε „Λέρνη κακῶν.“ τὴν μὲν οὖν χώραν συγχωροῦσιν εὐυδρεῖν, αὐτὴν δὲ τὴν πόλιν ἐν ἀνύδρῳ χωρίῳ κεῖσθαι, φρεάτων δ' εὐπορεῖν (ἃ ταῖς Δαναΐσιν ἀνάπτουσιν, ὡς ἐκείνων ἐξευ-

3. post γὰρ: προϊάψαι καὶ ἰάψαι καὶ 4. post Ἀχαιῶν: κατὰ χρόα καλὸν ἰάψῃ. Ἄϊδι προΐαψεν. 20. post πεδίον: τὸν δ' Ἐρασῖνον καλοῦσι καὶ Ἀρσῖνον.

ρουσῶν, ἀφ᾽ οὗ καὶ τὸ ἔπος * εἰπεῖν τοῦτο „Ἄργος ἄνυδρον ἐὸν Δαναοὶ θέσαν Ἄργος ἔνυδρον“), τῶν δὲ φρεάτων τέτταρα καὶ ἱερὰ ἀποδειχθῆναι καὶ τιμᾶσθαι διαφερόντως, ἐν εὐπορίᾳ ὑδάτων ἀπορίαν εἰσάγοντες.

9 Τὴν δὲ ἀκρόπολιν τῶν Ἀργείων οἰκίσαι λέγεται Δαναός, ὃς τοσοῦτον τοὺς πρὸ αὐτοῦ δυναστεύοντας ἐν τοῖς τόποις ὑπερβαλέσθαι δοκεῖ ὥστε κατ᾽ Εὐριπίδην „Πελασγιώτας ὠνομασμένους τὸ πρὶν Δαναοὺς „καλεῖσθαι νόμον ἔθηκ᾽ ἀν᾽ Ἑλλάδα.“ ἔστι δὲ καὶ τάφος αὐτοῦ κατὰ μέσην τὴν τῶν Ἀργείων ἀγοράν· καλεῖται δὲ πλίνθος. οἶμαι δ᾽ ὅτι καὶ Πελασγιώτας καὶ Δαναούς, ὥσπερ καὶ Ἀργείους, ἡ δόξα τῆς πόλεως ταύτης ἀπ᾽ αὐτῆς καὶ τοὺς ἄλλους Ἕλληνας καλεῖσθαι παρεσκεύασεν· οὕτω δὲ καὶ Ἰασίδας καὶ Ἴασον Ἄργος. καὶ Ἀπίαν καὶ Ἀπιδόνας οἱ νεώτεροί φασιν· Ὅμηρος δ᾽ Ἀπιδόνας μὲν οὐ λέγει, ἀπίαν δὲ τὴν πόρρω μᾶλλον. ὅτι δ᾽ Ἄργος τὴν Πελοπόννησον λέγει, προσλαβεῖν ἔστι καὶ τάδε „Ἀργείη δ᾽ Ἑλένη“ καὶ „ἔστι πόλις „Ἐφύρη μυχῷ Ἄργεος“ καὶ „μέσον Ἄργος“ καὶ „πολ„λῇσιν νήσοισι καὶ Ἄργεϊ παντὶ ἀνάσσειν.“ ἄργος C.372 δὲ καὶ τὸ πεδίον λέγεται παρὰ τοῖς νεωτέροις, παρ᾽ Ὁμήρῳ δ᾽ οὐδ᾽ ἅπαξ· μάλιστα δ᾽ οἴονται Μακεδονικὸν καὶ Θετταλικὸν εἶναι.

10 Τῶν δ᾽ ἀπογόνων τοῦ Δαναοῦ διαδεξαμένων τὴν ἐν Ἄργει δυναστείαν, ἐπιμιχθέντων δὲ τούτοις τῶν Ἀμυθαονιδῶν ὡρμημένων ἐκ τῆς Πισάτιδος καὶ τῆς Τριφυλίας, οὐκ ἂν θαυμάσειέ τις εἰ συγγενεῖς ὄντες οὕτω διείλοντο τὴν χώραν εἰς δύο βασιλείας τὸ πρῶτον, ὥστε τὰς ἡγεμονευούσας ἐν αὐταῖς δύο πόλεις ἀποδειχθῆναι πλησίον ἀλλήλων ἱδρυμένας ἐν ἐλάττοσιν ἢ πεντήκοντα σταδίοις, τό τε Ἄργος καὶ τὰς Μυκήνας, καὶ τὸ Ἡραῖον εἶναι κοινὸν ἱερὸν τὸ πρὸς ταῖς

Μυκήναις ἀμφοῖν, ἐν ᾧ τὰ Πολυκλείτου ξόανα τῇ μὲν τέχνῃ κάλλιστα τῶν πάντων πολυτελείᾳ δὲ καὶ μεγέθει τῶν Φειδίου λειπόμενα. κατ᾽ ἀρχὰς μὲν οὖν τὸ Ἄργος ἐπεκράτει μᾶλλον, εἶθ᾽ αἱ Μυκῆναι μείζονα ἐπίδοσιν λαβοῦσαι διὰ τὴν τῶν Πελοπιδῶν εἰς αὐτὰς μεθίδρυσιν· περιστάντων γὰρ εἰς τοὺς Ἀτρέως παῖδας ἁπάντων, Ἀγαμέμνων ὢν πρεσβύτερος παραλαβὼν τὴν ἐξουσίαν ἅμα τύχῃ τε καὶ ἀρετῇ πρὸς τοῖς οὖσι πολλὴν προσεκτήσατο τῆς χώρας, καὶ δὴ καὶ τὴν Ἀργολικὴν τῇ Μυκηναίᾳ προσέθηκε. Μενέλαος μὲν δὴ τὴν Λακωνικὴν ἔσχε, Μυκήνας δὲ καὶ τὰ μέχρι Κορίνθου καὶ Σικυῶνος καὶ τῆς Ἰώνων μὲν τότε καὶ Αἰγιαλέων καλουμένης Ἀχαιῶν δὲ ὕστερον Ἀγαμέμνων παρέλαβε. μετὰ δὲ τὰ Τρωικὰ τῆς Ἀγαμέμνονος ἀρχῆς καταλυθείσης ταπεινωθῆναι [συνέβη] Μυκήνας καὶ μάλιστα μετὰ τὴν τῶν Ἡρακλειδῶν κάθοδον. κατασχόντες γὰρ οὗτοι τὴν Πελοπόννησον ἐξέβαλον τοὺς πρότερον κρατοῦντας ὥσθ᾽ οἱ τὸ Ἄργος ἔχοντες εἶχον καὶ τὰς Μυκήνας συντελούσας εἰς ἕν· χρόνοις δ᾽ ὕστερον κατεσκάφησαν ὑπ᾽ Ἀργείων ὥστε νῦν μηδ᾽ ἴχνος εὑρίσκεσθαι τῆς Μυκηναίων πόλεως. ὅπου δὲ Μυκῆναι τοιαῦτα πεπόνθασιν, οὐ δεῖ θαυμάζειν οὐδ᾽ εἴ τινες τῶν ὑπὸ τῷ Ἄργει καταλεγομένων ἀφανεῖς νῦν εἰσιν. ὁ μὲν δὴ κατάλογος ἔχει οὕτως „οἳ δ᾽ Ἄργος τ᾽ εἶχον Τί„ρυνθά τε τειχιόεσσαν Ἑρμιόνην τ᾽ Ἀσίνην τε, [βα„θὺ]ν κατὰ κόλπον ἐχούσας, Τροιζῆν᾽ Ἠιόνας τε καὶ „ἀμπελόεντ᾽ Ἐπίδαυρον, οἵ τ᾽ ἔχον Αἴγιναν Μάσητά „τε, κοῦροι Ἀχαιῶν.“ τούτων δὲ περὶ μὲν τοῦ Ἄργους εἴρηται, περὶ δὲ τῶν ἄλλων λεκτέον.

11 Τῇ μὲν οὖν Τίρυνθι ὁρμητηρίῳ χρήσασθαι δοκεῖ Προῖτος καὶ τειχίσαι διὰ Κυκλώπων, οὓς ἑπτὰ μὲν εἶναι καλεῖσθαι δὲ γαστερόχειρας τρεφομένους ἐκ τῆς

τέχνης, ἥκειν δὲ μεταπέμπτους ἐκ Λυκίας· καὶ ἴσως C.373 τὰ σπήλαια τὰ περὶ τὴν Ναυπλίαν καὶ τὰ ἐν αὐτοῖς ἔργα τούτων ἐπώνυμά ἐστιν. ἡ δὲ ἀκρόπολις Λίκυμνα ἐπώνυμος Λικυμνίου, διέχει δὲ τῆς * Ναυπλίους περὶ δώδεκα σταδίους· ἔρημος δ' ἐστὶ κἀκείνη καὶ ἡ πλησίον Μιδέα, ἑτέρα οὖσα τῆς Βοιωτικῆς· ἐκείνη γάρ ἐστι Μίδεια ὡς πρόνοια, αὕτη δὲ Μιδέα ὡς Τεγέα· ταύτῃ δ' ὅμορος Πρόσυμνα .... αὕτη ἱερὸν ἔχουσα Ἥρας· ἠρήμωσαν δὲ τὰς πλείστας οἱ Ἀργεῖοι ἀπειθούσας. οἱ δ' οἰκήτορες οἱ μὲν ἐκ [τῆς] Τίρυνθος ἀπῆλθον εἰς Ἐπίδαυρον, οἱ δὲ ἐ[κ τῆς .....] εἰς τοὺς Ἁλιεῖς καλουμένους, οἱ δ' ἐκ τῆς Ἀ[σίνης (ἐστι δ'] αὕτη κώμη τῆς Ἀργείας πλησίον Ναυπλίας) ὑπὸ Λακεδαιμονίων εἰς τὴν Μεσσηνίαν μετῳκίσθ[ησαν, ὅπου] καὶ ἡ ὁμώνυμος τῇ Ἀργολικῇ Ἀσίνῃ πολίχ[νη]. οἱ γὰρ Λακεδαιμόνιοι, φησὶν ὁ Θεόπομπος, πολλὴν κατακτησάμενοι τῆς ἀλλοτρίας εἰς ταύτην κατῴκιζον οὓς ἂν ὑποδέξαιντο τῶν φυγόντων ἐπ' αὐτο[ύς· καὶ οἱ] ἐκ τῆς Ναυπλίας ἐκεῖσε ἀνεχώρησαν.

Ἑρμιόνη δ' ἐστὶ τῶν οὐκ ἀσήμων πόλεων, ἧς τὴν 12 παραλίαν ἔχουσιν Ἁλιεῖς λεγόμενοι θαλαττουργοί τινες ἄνδρες. παρ' Ἑρμιονεῦσι δὲ τεθρύληται τὴν εἰς Ἅιδου κατάβασιν σύντομον εἶναι· διόπερ οὐκ ἐντιθέασιν ἐνταῦθα τοῖς νεκροῖς ναῦλον.

Δρυόπων δ' οἰκητήριόν φασι * καὶ τὴν Ἀσίνην, 13 εἴτ' ἐκ τῶν περὶ Σπερχειὸν τόπων ὄντας αὐτοὺς Δρύοπος τοῦ Ἀρκάδος κατοικίσαντος ἐνταῦθα, ὡς Ἀριστοτέλης φησίν, εἴθ' Ἡρακλέους ἐκ τῆς περὶ τὸν Παρνασσὸν Δωρίδος ἐξελάσαντος αὐτούς. τὸ δὲ Σκύλλαιον τὸ ἐν Ἑρμιόνῃ ὠνομάσθαι φασὶν ἀπὸ Σκύλλης τῆς Νίσου θυγατρός, ἣν ἐξ ἔρωτος προδοῦσαν Μίνῳ τὴν Νίσαιαν καταποντωθῆναί φασιν ὑπ' αὐτοῦ, δεῦρο

δ' ἐκκυμανθεῖσαν ταφῆς τυχεῖν. Ἠιόνες δὲ κώμη τις ἦν, ἣν ἐρημώσαντες Μυκηναῖοι ναύσταθμον ἐποίησαν, ἀφαν[ισθεῖσα δ' ὕστερον] οὐδὲ ναύσταθμόν ἐστιν.

14 Τροιζὴν δὲ ἱερά ἐστι Ποσειδῶνος, ἀφ' οὗ καὶ Ποσειδωνία ποτὲ ἐλέγετο· ὑπέρκειται δὲ τῆς θαλάττης εἰς πεντεκαίδεκα σταδίους, οὐδ' αὕτη ἄσημος πόλις. πρόκειται δὲ τοῦ λιμένος αὐτῆς Πώγωνος τοὔνομα Καλαυρία νησίδιον ὅσον τριάκοντα σταδίων ἔχον τὸν κύκλον· ἐνταῦθα ἦν ἄσυλον Ποσειδῶνος ἱερόν, καί φασι τὸν θεὸν τοῦτον ἀλλάξασθαι πρὸς μὲν Λητὼ τὴν C.374 Καλαυρίαν ἀντιδόντα Δῆλον, πρὸς Ἀπόλλωνα δὲ Ταίναρον ἀντιδόντα Πυθώ. Ἔφορος δὲ καὶ τὸν χρησμὸν λέγει „Ἶσόν τοι Δῆλόν τε Καλαύρειάν τε νέμεσθαι, Πυθώ τ' ἠγαθέην καὶ Ταίναρον ἠνεμόεντα.“ ἦν δὲ καὶ Ἀμφικτυονία τις περὶ τὸ ἱερὸν τοῦτο ἑπτὰ πόλεων αἳ μετεῖχον τῆς θυσίας· ἦσαν δὲ Ἑρμιὼν Ἐπίδαυρος Αἴγινα Ἀθῆναι Πρασιεῖς Ναυπλιεῖς Ὀρχομενὸς ὁ Μινύειος· ὑπὲρ μὲν οὖν Ναυπλιέων Ἀργεῖοι συνετέλουν, ὑπὲρ Πρασιέων δὲ Λακεδαιμόνιοι. οὕτω δ' ἐπεκράτησεν ἡ τιμὴ τοῦ θεοῦ τούτου παρὰ τοῖς Ἕλλησιν ὥστε καὶ Μακεδόνες δυναστεύοντες ἤδη μέχρι δεῦρο ἐφύλαττόν πως τὴν ἀσυλίαν, καὶ τοὺς ἱκέτας ἀποσπᾶν ᾐδοῦντο τοὺς εἰς Καλαυρίαν καταφυγόντας· ὅπου γε οὐδὲ Δημοσθένη ἐθάρρησεν Ἀρχίας βιάσασθαι στρατιώτας ἔχων, ᾧ προσετέτακτο ὑπὸ Ἀντιπάτρου ζῶντα ἀγαγεῖν κἀκεῖνον καὶ τῶν ἄλλων ῥητόρων ὃν ἂν εὕρῃ τῶν ἐν ταῖς αἰτίαις ὄντων ταῖς παραπλησίοις, ἀλλὰ πείθειν ἐπειρᾶτο· οὐ μὴν ἔπεισέ γε, ἀλλ' ἔφθη φαρμάκῳ παραλύσας ἑαυτὸν τοῦ ζῆν. Τροιζὴν δὲ καὶ Πιτθεὺς οἱ Πέλοπος ὁρμηθέντες ἐκ τῆς Πισάτιδος ὁ μὲν τὴν πόλιν ὁμώνυμον ἑαυτοῦ κατέλιπεν, ὁ δὲ Πιτθεὺς ἐβασίλευσεν ἐκεῖνον διαδεξάμενος. Ἄνθης δ' ὁ προ-

κατέχων πλεύσας Ἁλικαρνασὸν ἔκτισεν· ἐροῦμεν δ' ἐν τοῖς Καρικοῖς .... ον καὶ τοῖς Τρωικοῖς.

Ἡ Ἐπίδαυρος δ' ἐκαλεῖτο Ἐπίταυρος· φησὶ δὲ 15
Ἀριστοτέλης κατασχεῖν αὐτὴν Κᾶρας, ὥσπερ καὶ Ἑρμιόνα, τῶν δὲ Ἡρακλειδῶν κατελθόντων Ἴωνας αὐτοῖς συνοικῆσαι τοὺς ἐκ τῆς Ἀττικῆς τετραπόλεως συνεπομένους εἰς Ἄργος. καὶ αὕτη δ' οὐκ ἄσημος ἡ πόλις καὶ μάλιστα διὰ τὴν ἐπιφάνειαν τοῦ Ἀσκληπιοῦ θεραπεύειν νόσους παντοδαπὰς πεπιστευμένου, καὶ τὸ ἱερὸν πλῆρες ἔχοντος ἀεὶ τῶν τε καμνόντων καὶ τῶν ἀνακειμένων πινάκων, ἐν οἷς ἀναγεγραμμέναι τυγχάνουσιν αἱ θεραπεῖαι, καθάπερ ἐν Κῷ τε καὶ Τρίκκῃ. κεῖται δ' ἡ πόλις ἐν μυχῷ τοῦ Σαρωνικοῦ κόλπου, τὸν περίπλουν ἔχουσα σταδίων πεντεκαίδεκα, βλέπουσα πρὸς ἀνατολὰς θερινάς· περικλείεται δ' ὄρεσιν ὑψηλοῖς μέχρι πρὸς τὴν θάλατταν, ὥστ' ἐρυμνὴ κατεσκεύασται φυσικῶς πανταχόθεν. μεταξὺ δὲ Τροιζῆνος καὶ Ἐπιδαύρου χωρίον ἦν ἐρυμνὸν Μέθανα καὶ χερρόνησος ὁμώνυμος τούτῳ· παρὰ Θουκυδίδῃ δὲ ἔν τισιν ἀντιγράφοις Μεθώνη φέρεται ὁμωνύμως τῇ Μακεδονικῇ, ἐν ᾗ Φίλιππος ἐξεκόπη τὸν ὀφθαλμὸν πολιορκῶν· διόπερ οἴεταί τινας ἐξαπατηθέντας ὁ Σκήψιος C.375
Δημήτριος τὴν ἐν τῇ Τροιζηνίᾳ Μεθώνην ὑπονοεῖν, καθ' ἧς ἀράσασθαι λέγεται τοὺς ὑπ' Ἀγαμέμνονος πεμφθέντας ναυτολόγους μηδέποτε παύσασθαι [τοῦ] τειχοδομεῖν, οὐ τούτων ἀλλὰ τῶν Μακεδόνων ἀνανευσάντων, ὥς φησι Θεόπομπος· τούτους δ' οὐκ εἰκὸς ἐγγὺς ὄντας ἀπειθῆσαι.

Αἴγινα δ' ἔστι μὲν καὶ τόπος τις τῆς Ἐπιδαυρίας, 16
ἔστι δὲ καὶ νῆσος πρὸ τῆς ἠπείρου ταύτης, ἣν ἐν τοῖς ἀρτίως παρατεθεῖσιν ἔπεσι βούλεται φράζειν ὁ ποιητής· διὸ καὶ γράφουσί τινες „νῆσόν τ' Αἴγιναν“ ἀντὶ

τοῦ „οἵ τ' ἔχον Αἴγιναν," διαστελλόμενοι τὴν ὁμωνυμίαν. ὅτι μὲν οὖν τῶν σφόδρα γνωρίμων ἐστὶν ἡ νῆσος, τί δεῖ λέγειν; ἐντεῦθεν γὰρ Αἰακός τε λέγεται καὶ οἱ ἀπ' αὐτοῦ. αὕτη δ' ἐστὶν ἡ καὶ θαλαττοκρατήσασά ποτε καὶ περὶ πρωτείων ἀμφισβητήσασα πρὸς Ἀθηναίους ἐν τῇ περὶ Σαλαμῖνα ναυμαχίᾳ κατὰ τὰ Περσικά. λέγεται δὲ σταδίων ἑκατὸν ὀγδοήκοντα ὁ κύκλος τῆς νήσου, πόλιν δ' ὁμώνυμον ἔχει τετραμμένην πρὸς λίβα· περιέχουσι δ' αὐτὴν ἥ τε Ἀττικὴ καὶ ἡ Μεγαρὶς καὶ τῆς Πελοποννήσου τὰ μέχρι Ἐπιδαύρου, σχεδόν τι ἑκατὸν σταδίους ἑκάστη διέχουσα· τὸ δὲ ἑωθινὸν μέρος καὶ τὸ νότιον πελάγει κλύζεται τῷ τε Μυρτῴῳ καὶ τῷ Κρητικῷ· νησίδια δὲ περίκειται πολλὰ μὲν πρὸς τῇ ἠπείρῳ, Βέλβινα δὲ πρὸς τὸ πέλαγος ἀνατείνουσα. ἡ δὲ χώρα αὐτῆς κατὰ βάθους μὲν γεώδης ἐστί, πετρώδης δ' ἐπιπολῆς καὶ μάλιστα ἡ πεδιάς· διόπερ ψιλὴ πᾶσά ἐστι, κριθοφόρος δὲ ἱκανῶς. Μυρμιδόνας δὲ κληθῆναί φασιν οὐχ ὡς ὁ μῦθος τοὺς Αἰγινήτας, ὅτι λοιμοῦ μεγάλου συμπεσόντος οἱ μύρμηκες ἄνθρωποι γένοιντο κατ' εὐχὴν Αἰακοῦ, ἀλλ' ὅτι μυρμήκων τρόπον ὀρύττοντες τὴν γῆν ἐπιφέροιεν ἐπὶ τὰς πέτρας ὥστ' ἔχειν γεωργεῖν, ἐν δὲ τοῖς ὀρύγμασιν οἰκεῖν φειδόμενοι πλίνθων. ὠνομάζετο δ' Οἰνώνη πάλαι. ἐπῴκησαν δ' αὐτὴν Ἀργεῖοι καὶ Κρῆτες καὶ Ἐπιδαύριοι καὶ Δωριεῖς, ὕστερον δὲ κατεκληρούχησαν τὴν νῆσον Ἀθηναῖοι· ἀφελόμενοι δὲ Λακεδαιμόνιοι τοὺς Ἀθη-
C.376 *ναίους τὴν νῆσον ἀπέδοσαν τοῖς ἀρχαίοις οἰκήτορσιν. ἀποίκους δ' ἔστειλαν Αἰγινῆται εἴς τε Κυδω-*

---

23. post *πάλαι: ὁμωνύμως δυσὶ δήμοις τῆς Ἀττικῆς, τῷ τε πρὸς Ἐλευθεραῖς „Οἰνώνη σύγχορτα ναίειν πεδία ταῖς δ' Ἐλευθεραῖς," καὶ μιᾷ τῶν ἐκ τετραπόλεως τῆς περὶ Μαραθῶνα, καθ' ἧς ἡ παροιμία „Οἰνώνη τὴν χαράδραν."*

νίαν τὴν ἐν Κρήτῃ καὶ εἰς Ὀμβρικούς. Ἔφορος δ' ἐν Αἰγίνῃ ἄργυρον πρῶτον κοπῆναί φησιν ὑπὸ Φείδωνος· ἐμπόριον γὰρ γενέσθαι, διὰ τὴν λυπρότητα τῆς χώρας τῶν ἀνθρώπων θαλαττουργούντων ἐμπορικῶς, ἀφ' οὗ τὸν ῥῶπον Αἰγιναίαν ἐμπολὴν λέγεσθαι.

Ὁ δὲ ποιητὴς ἔνια μὲν χωρία λέγει συνεχῶς ὥσπερ 17
καὶ κεῖται „οἵ θ' Ὑρίην ἐνέμοντο καὶ Αὐλίδα“ „οἵ δ' „Ἄργος τ' εἶχον Τίρυνθά τε“ „Ἑρμιόνην τ' Ἀσίνην τε“ „Τροιζῆν' Ἠιόνας τε.“ ἄλλοτε δ' οὐχ ὡς ἔστι τῇ τάξει „Σχοῖνόν τε Σκῶλόν τε“ „Θέσπειαν Γραῖάν τε.“ τά τ' ἐν ἠπείρῳ ταῖς νήσοις συμφράζει „οἵ ῥ' Ἰθάκην εἶχον, „καὶ Κροκύλει' ἐνέμοντο.“ τὰ γὰρ Κροκύλεια ἐν τοῖς Ἀκαρνᾶσιν. οὕτω δὲ καὶ νῦν τῇ Αἰγίνῃ τὸν Μάσητα συνῆψεν ὄντα τῆς Ἀργολικῆς ἠπείρου. Θυρέας δὲ Ὅμηρος μὲν οὐκ ὠνόμασεν, οἱ δ' ἄλλοι θρυλοῦσι· περὶ ὧν Ἀργείοις καὶ Λακεδαιμονίοις συνέστη ἀγὼν τριακοσίοις πρὸς τριακοσίους· ἐνίκων δὲ Λακεδαιμόνιοι στρατηγοῦντος Ὀθρυάδα· εἶναι δέ φησι τὸ χωρίον τοῦτο Θουκυδίδης ἐν τῇ Κυνουρίᾳ κατὰ τὴν μεθορίαν τῆς Ἀργείας καὶ τῆς Λακωνικῆς. εἰσὶ δὲ καὶ Ὑσίαι τόπος γνώριμος τῆς Ἀργολικῆς καὶ Κεγχρεαί, αἳ κεῖνται ἐπὶ τῇ ὁδῷ τῇ ἐκ Τεγέας εἰς Ἄργος διὰ τοῦ Παρθενίου ὄρους. Ὅμηρος δ' αὐτὰς οὐκ οἶδεν.

Τῶν [δὴ] κατὰ Πελοπόννησον πόλεων ἐνδοξότα- 18
ται γεγόνασι καὶ μέχρι νῦν εἰσιν „Ἄργος τε Σπάρτη „τε,“ διὰ δὲ τὸ πολυθρύλητον ἥκιστα δεῖ μακρολογεῖν περὶ αὐτῶν· τὰ γὰρ ὑπὸ πάντων εἰρημένα λέγειν δόξομεν. τὸ παλαιὸν μὲν οὖν ηὐδοκίμει τὸ Ἄργος μᾶλ-

---

23. post ὄρους: καὶ τοῦ Κρεοπώλου. ib. post οἶδεν: οὐδὲ τὸ Λύρκειον, οὐδ' Ὀρνεάς· κῶμαι δ' εἰσὶ τῆς Ἀργείας, ἡ μὲν ὁμώνυμος τῷ ὄρει τῷ [Λυρκείῳ], αἱ δὲ ταῖς Ὀρνεαῖς ταῖς μεταξὺ Κορίνθου καὶ Σικυῶνος ἱδρυμέναις.

λον, ὕστερον δὲ καὶ μέχρι παντὸς ὑπερεβάλοντο Λακεδαιμόνιοι καὶ διετέλεσαν τὴν αὐτονομίαν φυλάττοντες, πλὴν εἴ τί που μικρὸν προσπταίειν αὐτοὺς συνέβαινεν. Ἀργεῖοι δὲ Πύρρον μὲν οὐκ ἐδέξαντο (ἀλλὰ καὶ πρὸ τοῦ τείχους ἔπεσε γρᾳδίου τινός, ὡς ἔοικε, κεραμίδα ἀφέντος ἄνωθεν ἐπὶ τὴν κεφαλήν) ὑπ' ἄλ-
C.377 λοις δ' ἐγένοντο βασιλεῦσι, μετασχόντες δὲ τοῦ τῶν Ἀχαιῶν συστήματος σὺν ἐκείνοις εἰς τὴν τῶν Ῥωμαίων ἐξουσίαν ἦλθον, καὶ νῦν συνέστηκεν ἡ πόλις δευτερεύουσα τῇ τάξει μετὰ τὴν Σπάρτην.

19 Ἑξῆς δὲ λέγωμεν περὶ τῶν ὑπὸ Μυκήναις καὶ τῷ Ἀγαμέμνονι τεταγμένων τόπων ἐν τῷ καταλόγῳ τῶν νεῶν· ἔχει δ' οὕτω τὰ ἔπη „οἳ δὲ Μυκήνας εἶχον, ἐυ„κτίμενον πτολίεθρον, ἀφνειόν τε Κόρινθον ἐυκτιμέ„νας τε Κλεωνάς, Ὀρνειάς τ' ἐνέμοντο Ἀραιθυρέην „[τ' ἐρατεινὴν] καὶ Σικυῶν', ὅθ' [ἄρ'] Ἄδρηστος πρῶτ' „ἐμβασίλευεν, οἵ θ' Ὑπερησίην τε καὶ αἰπεινὴν Γο„νόεσσαν Πελλήνην τ' εἶχον, ἠδ' Αἴγιον ἀμφενέ„μοντο, Αἰγιαλόν τ' ἀνὰ πάντα καὶ ἀμφ' Ἑλίκην εὐ„ρεῖαν.“ αἱ μὲν οὖν Μυκῆναι νῦν οὐκέτ' εἰσίν, ἔκτισε δ' αὐτὰς Περσεύς, διεδέξατο δὲ Σθένελος, εἶτ' Εὐρυσθεύς· οἱ δ' αὐτοὶ καὶ τοῦ Ἄργους ἦρξαν. Εὐρυσθεὺς μὲν οὖν στρατεύσας εἰς Μαραθῶνα ἐπὶ τοὺς Ἡρακλέους παῖδας καὶ Ἰόλαον βοηθησάντων Ἀθηναίων ἱστορεῖται πεσεῖν ἐν τῇ μάχῃ, καὶ τὸ μὲν ἄλλο σῶμα Γαργηττοῖ ταφῆναι, τὴν δὲ κεφαλὴν χωρὶς ἐν Τρικορύνθῳ, ἀποκόψαντος αὐτὴν Ἰολάου περὶ τὴν κρήνην τὴν Μακαρίαν ὑπὸ ἁμαξιτόν· καὶ ὁ τόπος καλεῖται Εὐρυσθέως κεφαλή. αἱ δὲ Μυκῆναι μετέπεσον εἰς τοὺς Πελοπίδας ὁρμηθέντας ἐκ τῆς Πισάτιδος, εἶτ' εἰς τοὺς Ἡρακλείδας καὶ τὸ Ἄργος ἔχοντας. μετὰ δὲ τὴν ἐν Σαλαμῖνι ναυμαχίαν Ἀργεῖοι μετὰ Κλεωναίων καὶ Τεγεατῶν

ἐπελθόντες ἄρδην τὰς Μυκήνας ἀνεῖλον καὶ τὴν χώραν διενείμαντο. διὰ δὲ τὴν ἐγγύτητα τὰς δύο πόλεις ὡς μίαν οἱ τραγικοὶ συνωνύμως προσαγορεύουσιν, Εὐριπίδης δὲ καὶ ἐν τῷ αὐτῷ δράματι τοτὲ μὲν Μυκήνας καλῶν τοτὲ δ' Ἄργος τὴν αὐτὴν πόλιν, καθάπερ ἐν Ἰφιγενείᾳ καὶ Ὀρέστῃ. Κλεωναὶ δ' εἰσὶ πόλισμα ἐπὶ τῇ ὁδῷ κείμενον τῇ ἐξ Ἄργους εἰς Κόρινθον ἐπὶ λόφου περιοικουμένου πανταχόθεν καὶ τετειχισμένου καλῶς, ὥστ' οἰκείως εἰρῆσθαί μοι δοκεῖ τὸ ἐυκτιμένας Κλεωνάς. ἐνταῦθα δὲ καὶ ἡ Νεμέα μεταξὺ Κλεωνῶν καὶ Φλιοῦντος καὶ τὸ ἄλσος, ἐν ᾧ καὶ τὰ Νέμεα συντελεῖν ἔθος τοῖς Ἀργείοις, καὶ τὰ περὶ τὸν Νεμεαῖον λέοντα μυθευόμενα, καὶ ἡ Βέμβινα κώμη· διέχουσι δ' αἱ Κλεωναὶ τοῦ μὲν Ἄργους σταδίους ἑκατὸν εἴκοσι, Κορίνθου δὲ ὀγδοήκοντα. καὶ ἡμεῖς ἀπὸ τοῦ Ἀκροκορίνθου κατωπτεύσαμεν τὸ κτίσμα.

Ὁ δὲ Κόρινθος ἀφνειὸς μὲν λέγεται διὰ τὸ ἐμπό- C.378 20
ριον, ἐπὶ τῷ Ἰσθμῷ κείμενος καὶ δυεῖν λιμένων [ὧν] κύριος, ὧν ὁ μὲν τῆς Ἀσίας ὁ δὲ τῆς Ἰταλίας ἐγγύς ἐστι .... καὶ ῥᾳδίας ποιεῖ τὰς ἑκατέρωθεν ἀμοιβὰς τῶν φορτίων πρὸς ἀλλήλους τοῖς τοσοῦτον ἀφεστῶσιν. ἦν δ' ὥσπερ ὁ πορθμὸς οὐκ εὔπλους ὁ κατὰ τὴν Σικελίαν τὸ παλαιόν, οὕτω καὶ τὰ πελάγη καὶ μάλιστα τὸ ὑπὲρ Μαλεῶν διὰ τὰς ἀντιπνοίας· ἀφ' οὗ καὶ παροιμιάζονται „Μαλέας δὲ κάμψας ἐπιλάθου τῶν οἴκαδε.“ ἀγαπητὸν οὖν ἑκατέροις ἦν τοῖς τε ἐκ τῆς Ἰταλίας καὶ ἐκ τῆς Ἀσίας ἐμπόροις, ἀφεῖσι τὸν περὶ Μαλέας πλοῦν, κατάγεσθαι τὸν φόρτον αὐτόθι· καὶ πεζῇ δὲ τῶν ἐκκομιζομένων ἐκ τῆς Πελοποννήσου καὶ τῶν εἰσαγομένων ἔπιπτε τὰ τέλη τοῖς τὰ κλεῖθρα ἔχουσι. διέμεινε δὲ

---

27. post πλοῦν: εἰς Κόρινθον

τοῦτο καὶ εἰς ὕστερον μέχρι παντός· τοῖς δ' ὕστερον καὶ πλείω προσεγίνετο πλεονεκτήματα· καὶ γὰρ ὁ Ἰσθμικὸς ἀγὼν ἐκεῖ συντελούμενος ὄχλους ἐπήγετο, καὶ οἱ Βακχιάδαι τυραννήσαντες, πλούσιοι καὶ πολλοὶ καὶ γένος λαμπροί, διακόσια ἔτη σχεδόν τι κατέσχον τὴν ἀρχὴν καὶ τὸ ἐμπόριον ἀδεῶς ἐκαρπώσαντο· τούτους δὲ Κύψελος καταλύσας αὐτὸς ἐτυράννησε, καὶ μέχρι τριγονίας ὁ οἶκος αὐτοῦ συνέμεινε· τοῦ δὲ περὶ τὸν οἶκον τοῦτον πλούτου μαρτύριον τὸ Ὀλυμπίασιν ἀνάθημα Κυψέλου, σφυρήλατος χρυσοῦς ἀνδριὰς εὐμεγέθης [Διός]. Δημάρατός τε, εἷς τῶν ἐν Κορίνθῳ δυναστευσάντων, φεύγων τὰς ἐκεῖ στάσεις τοσοῦτον ἠνέγκατο πλοῦτον οἴκοθεν εἰς τὴν Τυρρηνίαν ὥστε αὐτὸς μὲν ἦρξε τῆς δεξαμένης αὐτὸν πόλεως, ὁ δ' υἱὸς αὐτοῦ καὶ Ῥωμαίων κατέστη βασιλεύς. τό τε τῆς Ἀφροδίτης ἱερὸν οὕτω πλούσιον ὑπῆρξεν ὥστε πλείους ἢ χιλίας ἱεροδούλους ἐκέκτητο ἑταίρας, ἃς ἀνετίθεσαν τῇ θεῷ καὶ ἄνδρες καὶ γυναῖκες. καὶ διὰ ταύτας οὖν πολυωχλεῖτο ἡ πόλις καὶ ἐπλουτίζετο· οἱ γὰρ ναύκληροι ῥᾳδίως ἐξανηλίσκοντο, καὶ διὰ τοῦτο ἡ παροιμία φησίν „οὐ παντὸς ἀνδρὸς ἐς Κόρινθόν ἐσθ' ὁ πλοῦς.“ καὶ δὴ καὶ μνημονεύεταί τις ἑταίρα πρὸς τὴν ὀνειδίζουσαν, ὅτι οὐ φιλεργὸς εἴη οὐδ' ἐρίων ἅπτοιτο, εἰπεῖν „ἐγὼ „μέντοι ἡ τοιαύτη τρεῖς ἤδη καθεῖλον ἱστοὺς ἐν βραχεῖ χρόνῳ τούτῳ.“

21 Τὴν δὲ τοποθεσίαν τῆς πόλεως, ἐξ ὧν Ἱερώνυμός
C.379 τε εἴρηκε καὶ Εὔδοξος καὶ ἄλλοι καὶ αὐτοὶ δὲ εἴδομεν
νεωστὶ ἀναληφθείσης ὑπὸ τῶν Ῥωμαίων, τοιάνδε εἶναι συμβαίνει. ὄρος ὑψηλὸν ὅσον τριῶν ἥμισυ σταδίων ἔχον τὴν κάθετον, τὴν δ' ἀνάβασιν καὶ τριάκοντα σταδίων, εἰς ὀξεῖαν τελευτᾷ κορυφήν· καλεῖται δὲ Ἀκροκόρινθος, οὗ τὸ μὲν πρὸς ἄρκτον μέρος ἐστὶ τὸ

μάλιστα ὄρθιον, ὑφ' ᾧ κεῖται ἡ πόλις ἐπὶ τραπεζώδους ἐπιπέδου χωρίου πρὸς αὐτῇ τῇ ῥίζῃ τοῦ Ἀκροκορίνθου. αὐτῆς μὲν οὖν τῆς πόλεως ὁ κύκλος καὶ τετταράκοντα σταδίων ὑπῆρχεν· ἐτετείχιστο δ' ὅσον τῆς πόλεως γυμνὸν ἦν τοῦ ὄρους· συμπεριείληπτο δὲ τῷ περιβόλῳ τούτῳ καὶ τὸ ὄρος αὐτὸ ὁ Ἀκροκόρινθος ᾗ δυνατὸν ἦν τειχισμὸν δέξασθαι, καὶ ἡμῖν ἀναβαίνουσιν ἦν δῆλα τὰ ἐρείπια τῆς σχοινίας· ὥσθ' ἡ πᾶσα περίμετρος ἐγίνετο περὶ πέντε καὶ ὀγδοήκοντα σταδίων. ἀπὸ δὲ τῶν ἄλλων μερῶν ἧττον ὄρθιόν ἐστι τὸ ὄρος, ἀνατέταται μέντοι ἐνθένδε ἱκανῶς καὶ περίοπτόν ἐστιν. ἡ μὲν οὖν κορυφὴ ναΐδιον ἔχει Ἀφροδίτης, ὑπὸ δὲ τῇ κορυφῇ τὴν Πειρήνην εἶναι συμβαίνει κρήνην, ἔκρυσιν μὲν οὐκ ἔχουσαν μεστὴν δ' ἀεὶ διαυγοῦς καὶ ποτίμου ὕδατος. φασὶ δὲ καὶ ἐνθένδε καὶ ἐξ ἄλλων ὑπονόμων τινῶν φλεβίων συνθλίβεσθαι τὴν πρὸς τῇ ῥίζῃ τοῦ ὄρους κρήνην ἐκρέουσαν εἰς τὴν πόλιν ὥσθ' ἱκανῶς ἀπ' αὐτῆς ὑδρεύεσθαι. ἔστι δὲ καὶ φρεάτων εὐπορία κατὰ τὴν πόλιν, λέγουσι δὲ καὶ κατὰ τὸν Ἀκροκόρινθον· οὐ μὴν ἡμεῖς γε εἴδομεν. τοῦ δ' οὖν Εὐριπίδου φήσαντος οὕτως „ἥκω περίκλυστον προλιποῦσ' „Ἀκροκόρινθον, ἱερὸν ὄχθον, πόλιν Ἀφροδίτας," τὸ περίκλυστον ἤτοι κατὰ βάθους δεκτέον, ἐπεὶ καὶ * φρέατα καὶ ὑπόνομοι λιβάδες διήκουσι δι' αὐτοῦ, ἢ τὸ παλαιὸν ὑποληπτέον τὴν Πειρήνην ἐπιπολάζειν καὶ κατάρρυτον ποιεῖν τὸ ὄρος. ἐνταῦθα δέ φασι πίνοντα τὸν Πήγασον ἁλῶναι ὑπὸ Βελλεροφόντου, πτηνὸν ἵππον ἐκ τοῦ τραχήλου τοῦ Μεδούσης ἀναπαλέντα κατὰ τὴν γοργοτομίαν· τὸν δ' αὐτόν φασι καὶ τὴν Ἵππου κρήνην ἀναβαλεῖν ἐν τῷ Ἑλικῶνι πλήξαντα τῷ ὄνυχι τὴν ὑποῦσαν πέτραν. ὑπὸ δὲ τῇ Πειρήνῃ τὸ Σισύφειόν ἐστιν, ἱεροῦ τινος ἢ βασιλείου λευκῶν λί-

θων πεποιημένου διασῷζον ἐρείπια οὐκ ὀλίγα. ἀπὸ δὲ τῆς κορυφῆς πρὸς ἄρκτον μὲν ἀφορᾶται ὅ τε Παρνασσὸς καὶ ὁ Ἑλικών, ὄρη ὑψηλὰ καὶ νιφόβολα, καὶ ὁ Κρισαῖος κόλπος ὑποπεπτωκὼς ἀμφοτέροις, περιεχόμενος ὑπὸ τῆς Φωκίδος καὶ τῆς Βοιωτίας καὶ τῆς Μεγαρίδος καὶ τῆς ἀντιπόρθμου τῇ Φωκίδι Κορινθίας καὶ Σικυωνίας· πρὸς ἑσπέραν δὲ ..... ὑπέρκειται δὲ τούτων
C.380 ἁπάντων τὰ καλούμενα Ὄνεια ὄρη διατείνοντα μέχρι Βοιωτίας καὶ Κιθαιρῶνος ἀπὸ τῶν Σκειρωνίδων πετρῶν, ἀπὸ τῆς παρὰ ταύτας ὁδοῦ πρὸς τὴν Ἀττικήν.

22 Ἀρχὴ δὲ τῆς παραλίας ἑκατέρας τῆς μὲν τὸ Λέχαιον τῆς δὲ Κεγχρεαὶ κώμη καὶ λιμὴν ἀπέχων τῆς πόλεως ὅσον ἑβδομήκοντα σταδίους· τούτῳ μὲν οὖν χρῶνται πρὸς τοὺς ἐκ τῆς Ἀσίας πρὸς δὲ τοὺς ἐκ τῆς Ἰταλίας τῷ Λεχαίῳ. τὸ δὲ Λέχαιον ὑποπέπτωκε τῇ πόλει κατοικίαν ἔχον οὐ πολλήν· σκέλη δὲ καθείλκυσται σταδίων περὶ δώδεκα ἑκατέρωθεν τῆς ὁδοῦ τῆς ἐπὶ τὸ Λέχαιον. ἐντεῦθεν δὲ παρεκτείνουσα ἡ ἠὼν μέχρι Παγῶν τῆς Μεγαρίδος κλύζεται μὲν ὑπὸ τοῦ Κορινθιακοῦ κόλπου, κοίλη δ' ἐστὶ καὶ ποιεῖ τὸν δίολκον πρὸς τὴν ἑτέραν ἠόνα τὴν κατὰ Σχοινοῦντα πλησίον ὄντα τῶν Κεγχρεῶν. ἐν δὲ τῷ μεταξὺ τοῦ Λεχαίου καὶ Παγῶν τὸ τῆς Ἀκραίας μαντεῖον Ἥρας ὑπῆρχε τὸ παλαιόν, καὶ αἱ Ὀλμιαὶ τὸ ποιοῦν ἀκρωτήριον τὸν κόλπον ἐν ᾧ ἥ τε Οἰνόη καὶ Παγαί, τὸ μὲν τῶν Μεγαρέων φρούριον ἡ δὲ Οἰνόη τῶν Κορινθίων. ἀπὸ [δὲ] τῶν Κεγχρεῶν ὁ Σχοινοῦς, καθ' ὃν τὸ στενὸν τοῦ διόλκου· ἔπειθ' ἡ Κρομμυωνία. πρόκειται δὲ τῆς ἠόνος ταύτης ὅ τε Σαρωνικὸς κόλπος καὶ ὁ Ἐλευσινιακός, τρόπον τινὰ ὁ αὐτὸς ὤν, συνεχὴς τῷ Ἑρμιονικῷ. ἐπὶ δὲ τῷ Ἰσθμῷ καὶ τὸ τοῦ Ἰσθμίου Ποσειδῶνος ἱερὸν ἄλσει πιτυώδει συνηρεφές, ὅπου τὸν ἀγῶνα τῶν Ἰσθμίων

Κορίνθιοι συνετέλουν. ἡ δὲ Κρομμυὼν ἔστι κώμη τῆς Κορινθίας, πρότερον δὲ τῆς Μεγαρίδος, ἐν ᾗ μυθεύουσι τὰ περὶ τὴν Κρομμυωνίαν ὗν, ἣν μητέρα τοῦ Καλυδωνίου κάπρου φασί· καὶ τῶν Θησέως ἄθλων ἕνα τοῦτον παραδιδόασι τὴν τῆς ὑὸς ταύτης ἐξαίρεσιν. καὶ ἡ Τενέα δ' ἐστὶ κώμη τῆς Κορινθίας, ἐν ᾗ τοῦ Τενεάτου Ἀπόλλωνος ἱερόν· λέγεται δὲ καὶ Ἀρχίᾳ τῷ στείλαντι τὴν εἰς Συρακούσας ἀποικίαν τοὺς πλείστους τῶν ἐποίκων ἐντεῦθεν συνεπακολουθῆσαι, καὶ μετὰ ταῦτα εὐθηνεῖν μάλιστα τῶν ἄλλων τὴν κατοικίαν ταύτην, τὰ δ' ὕστατα καὶ καθ' αὑτοὺς πολιτεύεσθαι, προσθέσθαι τε τοῖς Ῥωμαίοις ἀποστάντας Κορινθίων καὶ κατασκαφείσης τῆς πόλεως συμμεῖναι. φέρεται δὲ καὶ χρησμὸς ὁ δοθείς τινι τῶν ἐκ τῆς Ἀσίας ἐρωτῶντι εἰ λῷον εἴη μετοικεῖν εἰς Κόρινθον „εὐδαίμων ὁ Κό„ρινθος, ἐγὼ δ' εἴην Τενεάτης.“ ὅπερ κατ' ἄγνοιάν τινες παρατρέπουσιν „ἐγὼ δ' εἴην Τεγεάτης.“ λέγεται δ' ἐνταῦθα ἐκθρέψαι Πόλυβος τὸν Οἰδίπουν. δοκεῖ δὲ καὶ συγγένειά τις εἶναι Τενεδίοις πρὸς τούτους ἀπὸ Τέννου τοῦ Κύκνου, καθάπερ εἴρηκεν Ἀριστοτέλης· καὶ ἡ τοῦ Ἀπόλλωνος δὲ τιμὴ παρ' ἀμφοτέροις ὁμοία οὖσα δίδωσιν οὐ μικρὰ σημεῖα.

Κορίνθιοι δ' ὑπὸ Φιλίππῳ ὄντες ἐκείνῳ τε συνε- C.381 23
φιλονείκησαν καὶ ἰδίᾳ πρὸς Ῥωμαίους ὑπεροπτικῶς εἶχον, ὥστε τινὲς καὶ τῶν πρέσβεων παριόντων τὴν οἰκίαν αὐτῶν ἐθάρρησαν καταντλῆσαι βόρβορον. ἀντὶ τούτων μὲν οὖν καὶ ἄλλων ὧν ἐξήμαρτον ἔτισαν δίκας αὐτίκα· πεμφθείσης γὰρ ἀξιολόγου στρατιᾶς, αὐτή τε κατέσκαπτο ὑπὸ Λευκίου Μομμίου καὶ τἆλλα μέχρι Μακεδονίας ὑπὸ Ῥωμαίοις ἐγένετο, ἐν ἄλλοις ἄλλων πεμπομένων στρατηγῶν· τὴν δὲ χώραν ἔσχον Σικυώνιοι τὴν πλείστην τῆς Κορινθίας. Πολύβιος δὲ τὰ συμ-

βάντα περὶ τὴν ἅλωσιν ἐν οἴκτου μέρει λέγων προστίθησι καὶ τὴν στρατιωτικὴν ὀλιγωρίαν τὴν περὶ τὰ τῶν τεχνῶν ἔργα καὶ τὰ ἀναθήματα. φησὶ γὰρ ἰδεῖν παρὼν ἐρριμμένους πίνακας ἐπ' ἐδάφους, πεττεύοντας δὲ τοὺς στρατιώτας ἐπὶ τούτων. ὀνομάζει δ' αὐτῶν Ἀριστείδου γραφὴν τοῦ Διονύσου, ἐφ' οὗ τινες εἰρῆσθαί φασι τὸ „οὐδὲν πρὸς τὸν Διόνυσον,“ καὶ τὸν Ἡρακλέα τὸν καταπονούμενον τῷ τῆς Δηιανείρας χιτῶνι. τοῦτον μὲν οὖν οὐχ ἑωράκαμεν ἡμεῖς, τὸν δὲ Διόνυσον ἀνακείμενον ἐν τῷ Δημητρείῳ τῷ ἐν Ῥώμῃ κάλλιστον ἔργον ἑωρῶμεν· ἐμπρησθέντος δὲ τοῦ νεὼ συνηφανίσθη καὶ ἡ γραφὴ νεωστί. σχεδὸν δέ τι καὶ τῶν ἄλλων ἀναθημάτων τῶν ἐν Ῥώμῃ τὰ πλεῖστα καὶ ἄριστα ἐντεῦθεν ἀφῖχθαι· τινὰ δὲ καὶ αἱ κύκλῳ τῆς Ῥώμης πόλεις ἔσχον. μεγαλόφρων γὰρ ὢν μᾶλλον ἢ φιλότεχνος ὁ Μόμμιος, ὥς φασι, μετεδίδου ῥᾳδίως τοῖς δεηθεῖσι. Λεύκολλος δὲ κατασκευάσας τὸ τῆς Εὐτυχίας ἱερὸν καὶ στοάν τινα χρῆσιν ᾐτήσατο ὧν εἶχεν ἀνδριάντων ὁ Μόμμιος, ὡς κοσμήσων τὸ ἱερὸν μέχρι ἀναδείξεως, εἶτ' ἀποδώσων· οὐκ ἀπέδωκε δέ, ἀλλ' ἀνέθηκε κελεύσας αἴρειν εἰ βούλεται· πρᾴως δ' ἤνεγκεν ἐκεῖνος οὐ φροντίσας οὐδέν, ὥστ' ηὐδοκίμει τοῦ ἀναθέντος μᾶλλον. πολὺν δὲ χρόνον ἐρήμη μείνασα ἡ Κόρινθος ἀνελήφθη πάλιν ὑπὸ Καίσαρος τοῦ θεοῦ διὰ τὴν εὐφυΐαν, ἐποίκους πέμψαντος τοῦ ἀπελευθερικοῦ γένους πλείστους· οἳ τὰ ἐρείπια κινοῦντες καὶ τοὺς τάφους συνανασκάπτοντες εὕρισκον ὀστρακίνων * τορευμάτων πλήθη, πολλὰ δὲ καὶ χαλκώματα· θαυμάζοντες δὲ τὴν κατασκευὴν οὐδένα τάφον ἀσκευώρητον εἴασαν, ὥστε εὐπορήσαντες τῶν τοιούτων καὶ διατιθέμενοι πολλοῦ
C.382 νεκροκορινθίων ἐπλήρωσαν τὴν Ῥώμην· οὕτω γὰρ ἐκάλουν τὰ ἐκ τῶν τάφων ληφθέντα, καὶ μάλιστα τὰ

ὀστράκινα. κατ᾽ ἀρχὰς μὲν οὖν ἐτιμήθη σφόδρα ὁμοίως τοῖς χαλκώμασι τοῖς κορινθιουργέσιν, εἶτ᾽ ἐπαύσαντο τῆς σπουδῆς, ἐκλιπόντων τῶν ὀστράκων καὶ οὐδὲ κατωρθωμένων τῶν πλείστων. ἡ μὲν δὴ πόλις ἡ τῶν Κορινθίων μεγάλη τε καὶ πλουσία διὰ παντὸς ὑπῆρξεν, ἀνδρῶν τε ηὐπόρησεν ἀγαθῶν εἴς τε τὰ πολιτικὰ καὶ εἰς τὰς τέχνας τὰς δημιουργικάς· μάλιστα γὰρ καὶ ἐνταῦθα καὶ ἐν Σικυῶνι ηὐξήθη γραφική τε καὶ πλαστικὴ καὶ πᾶσα ἡ τοιαύτη δημιουργία. χώραν δ᾽ ἔσχεν οὐκ εὔγεων σφόδρα, ἀλλὰ σκολιάν τε καὶ τραχεῖαν, ἀφ᾽ οὗ πάντες ὀφρυόεντα Κόρινθον εἰρήκασι καὶ παροιμιάζονται „Κόρινθος ὀφρυᾷ τε καὶ κοιλαίνεται."

24 Ὀρνεαὶ δ᾽ εἰσὶν ἐπώνυμοι τῷ παραρρέοντι ποταμῷ, νῦν μὲν ἔρημοι πρότερον δ᾽ οἰκούμεναι καλῶς, ἱερὸν ἔχουσαι Πριάπου τιμώμενον, ἀφ᾽ ὧν καὶ ὁ τὰ Πριάπεια ποιήσας Εὐφορίων Ὀρνεάτην καλεῖ τὸν θεόν· κεῖνται δ᾽ ὑπὲρ τοῦ πεδίου τοῦ Σικυωνίων, τὴν δὲ χώραν ἔσχον Ἀργεῖοι. Ἀραιθυρέα δ᾽ ἐστὶν ἡ νῦν Φλιασία καλουμένη, πόλιν δ᾽ εἶχεν ὁμώνυμον τῇ χώρᾳ πρὸς ὄρει Κηλώσσῃ· οἱ δ᾽ ὕστερον ἀναστάντες ἐκεῖθεν πρὸ τριάκοντα σταδίων ἔκτισαν πόλιν, ἣν ἐκάλεσαν Φλιοῦντα· τῆς δὲ Κηλώσσης μέρος ὁ Καρνεάτης, ὅθεν λαμβάνει τὴν ἀρχὴν Ἀσωπὸς ὁ παραρρέων τὴν Σικυῶνα καὶ ποιῶν τὴν Ἀσωπίαν χώραν, μέρος οὖσαν τῆς Σικυωνίας. ἔστι δ᾽ Ἀσωπὸς καὶ ὁ παρὰ Θήβας ῥέων καὶ Πλαταιὰς καὶ Τάναγραν, ἄλλος δ᾽ ἔστιν ἐν Ἡρακλείᾳ τῇ Τραχινίᾳ παρὰ κώμην ῥέων ἣν Παρασωπίους ὀνομάζουσι, τέταρτος δ᾽ ὁ ἐν Πάρῳ. κεῖται δ᾽ ὁ Φλιοῦς ἐν μέσῳ Σικυωνίας Ἀργείας Κλεωνῶν καὶ Στυμφάλου κύκλῳ περιεχόμενος· τιμᾶται δ᾽ ἐν Φλιοῦντι καὶ Σικυῶνι τὸ τῆς Δίας ἱερόν· καλοῦσι δ᾽ οὕτω τὴν Ἥβην.

Τὴν δὲ Σικυῶνα πρότερον Μηκώνην ἐκάλουν, ἔτι δὲ πρότερον Αἰγιαλεῖς· ἀνῴκισε δ' αὐτὴν ἀπὸ θαλάττης ὅσον εἴκοσι σταδίοις (οἱ δὲ δώδεκά φασιν) ἐπὶ λόφον ἐρυμνὸν Δημήτριος· τὸ δὲ παλαιὸν κτίσμα ἐπίνειόν ἐστιν ἔχον λιμένα. ὁρίζει δὲ τὴν Σικυωνίαν καὶ τὴν Κορινθίαν ποταμὸς Νεμέα· ἐτυραννήθη δὲ πλεῖστον χρόνον, ἀλλ' ἀεὶ τοὺς τυράννους ἐπιεικεῖς ἄνδρας ἔσχεν, Ἄρατον δ' ἐπιφανέστατον, ὃς καὶ τὴν πόλιν ἠλευθέρωσε, καὶ Ἀχαιῶν ἦρξε παρ' ἑκόντων λαβὼν τὴν ἐξουσίαν, καὶ τὸ σύστημα ηὔξησε προσθεὶς αὐτῷ
C.383 τήν τε πατρίδα καὶ τὰς ἄλλας πόλεις τὰς ἐγγύς. Ὑπερησίην δὲ καὶ τὰς ἑξῆς πόλεις ἃς ὁ ποιητὴς λέγει, καὶ τὸν Αἰγιαλὸν τῶν Ἀχαιῶν ἤδη συμβέβηκεν εἶναί μέχρι Δύμης καὶ τῶν ὅρων τῆς Ἠλείας.

7 Ταύτης δὲ τῆς χώρας τὸ μὲν παλαιὸν Ἴωνες ἐκράτουν, ἐξ Ἀθηναίων τὸ γένος ὄντες, ἐκαλεῖτο δὲ τὸ μὲν παλαιὸν Αἰγιάλεια καὶ οἱ ἐνοικοῦντες Αἰγιαλεῖς, ὕστερον δ' ἀπ' ἐκείνων Ἰωνία, καθάπερ καὶ ἡ Ἀττική, ἀπὸ Ἴωνος τοῦ Ξούθου. φασὶ δὲ Δευκαλίωνος μὲν Ἕλληνα εἶναι, τοῦτον δὲ περὶ τὴν Φθίαν τῶν μεταξὺ Πηνειοῦ καὶ Ἀσωποῦ δυναστεύοντα τῷ πρεσβυτάτῳ τῶν παίδων παραδοῦναι τὴν ἀρχήν, τοὺς δ' ἄλλους ἔξω διαπέμψαι ζητήσοντας ἵδρυσιν ἕκαστον αὑτῷ· ὧν Δῶρος μὲν τοὺς περὶ Παρνασσὸν Δωριέας συνοικίσας κατέλιπεν ἐπωνύμους αὑτοῦ, Ξοῦθος δὲ τὴν Ἐρεχθέως θυγατέρα γήμας ᾤκισε τὴν τετράπολιν τῆς Ἀττικῆς, Οἰνόην Μαραθῶνα Προβάλινθον καὶ Τρικόρυνθον. τῶν δὲ τούτου παίδων Ἀχαιὸς μὲν φόνον ἀκούσιον πράξας ἔφυγεν εἰς Λακεδαίμονα καὶ Ἀχαιοὺς τοὺς ἐκεῖ κληθῆναι παρεσκεύασεν, Ἴων δὲ τοὺς μετ' Εὐμόλπου νικήσας Θρᾷκας οὕτως ηὐδοκίμησεν ὥστ' ἐπέτρεψαν αὐτῷ τὴν πολιτείαν Ἀθηναῖοι. ὁ δὲ πρῶτον μὲν εἰς

τέτταρας φυλὰς διεῖλε τὸ πλῆθος, εἶτα εἰς τέτταρας βίους· τοὺς μὲν γὰρ γεωργοὺς ἀπέδειξε τοὺς δὲ δημιουργοὺς τοὺς δὲ ἱεροποιούς, τετάρτους δὲ τοὺς φύλακας· τοιαῦτα δὲ πλείω διατάξας τὴν χώραν ἐπώνυμον ἑαυτοῦ κατέλιπεν. οὕτω δὲ πολυανδρῆσαι τὴν χώραν τότε συνέπεσεν ὥστε καὶ ἀποικίαν τῶν Ἰώνων ἔστειλαν εἰς Πελοπόννησον Ἀθηναῖοι, καὶ τὴν χώραν ἣν κατέσχον ἐπώνυμον ἑαυτῶν ἐποίησαν Ἰωνίαν ἀντ' Αἰγιάλου κληθεῖσαν, οἵ τε ἄνδρες ἀντὶ Αἰγιαλέων Ἴωνες προσηγορεύθησαν εἰς δώδεκα πόλεις μερισθέντες. μετὰ δὲ τὴν Ἡρακλειδῶν κάθοδον ὑπ' Ἀχαιῶν ἐξελαθέντες ἐπανῆλθον πάλιν εἰς Ἀθήνας· ἐκεῖθεν δὲ μετὰ τῶν Κοδριδῶν ἔστειλαν τὴν Ἰωνικὴν ἀποικίαν εἰς τὴν Ἀσίαν· ἔκτισαν δὲ δώδεκα πόλεις ἐν τῇ παραλίᾳ τῆς Καρίας καὶ τῆς Λυδίας, εἰς τοσαῦτα μέρη διελόντες σφᾶς ὅσα καὶ ἐν τῇ Πελοποννήσῳ κατεῖχον. οἱ δ' Ἀχαιοὶ Φθιῶται μὲν ἦσαν τὸ γένος, ᾤκησαν δ' ἐν Λακεδαίμονι, τῶν δ' Ἡρακλειδῶν ἐπικρατησάντων ἀναληφθέντες ὑπὸ Τισαμενοῦ τοῦ Ὀρέστου παιδός, ὡς προειρήκαμεν, τοῖς Ἴωσιν ἐπέθεντο, καὶ γενόμενοι κρείττους τοὺς μὲν ἐξέβαλον, αὐτοὶ δὲ κατέσχον τὴν γῆν, καὶ διεφύλαξαν τὸν αὐτὸν τῆς χώρας μερισμὸν ὅνπερ καὶ παρέλαβον. οὕτω δ' ἴσχυσαν ὥστε τὴν ἄλλην Πελοπόννησον C.384 ἐχόντων τῶν Ἡρακλειδῶν ὧν ἀπέστησαν, ἀντεῖχον ὅμως πρὸς ἅπαντας Ἀχαΐαν ὀνομάσαντες τὴν χώραν. ἀπὸ μὲν οὖν Τισαμενοῦ μέχρι Ὠγύγου βασιλευόμενοι διετέλουν· εἶτα δημοκρατηθέντες τοσοῦτον ηὐδοκίμησαν περὶ τὰς πολιτείας ὥστε τοὺς Ἰταλιώτας μετὰ τὴν στάσιν τὴν πρὸς τοὺς Πυθαγορείους τὰ πλεῖστα τῶν νομίμων μετενέγκασθαι παρὰ τούτων συνέβη· μετὰ δὲ τὴν ἐν Λεύκτροις μάχην ἐπέτρεψαν Θηβαῖοι τούτοις τὴν δίαιταν περὶ τῶν ἀντιλεγομένων

ταῖς πόλεσι πρὸς ἀλλήλας· ὕστερον δ' ὑπὸ Μακεδόνων λυθείσης τῆς κοινωνίας ἀνέλαβον σφᾶς πάλιν κατὰ μικρόν· ἦρξαν δὲ Πύρρου στρατεύσαντος εἰς Ἰταλίαν τέτταρες συνιοῦσαι πόλεις, ὧν ἦσαν Πάτραι καὶ Δύμη· εἶτα προσελάμβανόν τινας τῶν δώδεκα πλὴν Ὠλένου καὶ Ἑλίκης, τῆς μὲν οὐ συνελθούσης τῆς
2 δ' ἀφανισθείσης ὑπὸ κύματος. ἐξαρθὲν γὰρ ὑπὸ σεισμοῦ τὸ πέλαγος κατέκλυσε καὶ αὐτὴν καὶ τὸ ἱερὸν τοῦ Ἑλικωνίου Ποσειδῶνος, ὃν καὶ νῦν ἔτι τιμῶσιν Ἴωνες, καὶ θύουσιν ἐκεῖ τὰ Πανιώνια. μέμνηται δ', ὡς ὑπονοοῦσί τινες, ταύτης τῆς θυσίας Ὅμηρος ὅταν φῇ „αὐτὰρ ὁ θυμὸν ἄισθε καὶ ἤρυγεν, ὡς ὅτε ταῦρος „ἤρυγεν ἑλκόμενος Ἑλικώνιον ἀμφὶ ἄνακτα.“ τεκμαίρονταί τε νεώτερον εἶναι τῆς Ἰωνικῆς ἀποικίας τὸν ποιητήν, μεμνημένον γε τῆς Πανιωνικῆς θυσίας ἣν ἐν τῇ Πριηνέων χώρᾳ συντελοῦσιν Ἴωνες τῷ Ἑλικωνίῳ Ποσειδῶνι, ἐπεὶ καὶ αὐτοὶ οἱ Πριηνεῖς ἐξ Ἑλίκης εἶναι λέγονται· καὶ δὴ πρὸς τὴν θυσίαν ταύτην καθιστᾶσιν ἄνδρα νέον Πριηνέα τὸν τῶν ἱερῶν ἐπιμελησόμενον. τεκμηριοῦνται δ' ἔτι μᾶλλον τὸ προκείμενον ἐκ τῶν περὶ τοῦ ταύρου πεφρασμένων· τότε γὰρ νομίζουσι καλλιερεῖν περὶ τὴν θυσίαν ταύτην Ἴωνες, ὅταν θυόμενος ὁ ταῦρος μυκήσηται. οἱ δ' ἀντιλέγοντες μεταφέρουσιν εἰς τὴν Ἑλίκην τὰ λεχθέντα τεκμήρια περὶ τοῦ ταύρου καὶ τῆς θυσίας, ὡς ἐκεῖ νενομισμένων τούτων καὶ τοῦ ποιητοῦ παραβάλλοντος τὰ ἐκεῖ συντελούμενα. κατεκλύσθη δ' ἡ Ἑλίκη δυσὶν ἔτεσι πρὸ τῶν Λευκτρικῶν. Ἐρατοσθένης δὲ καὶ αὐτὸς ἰδεῖν φησι τὸν τόπον, καὶ τοὺς πορθμέας λέγειν ὡς ἐν τῷ πόρῳ ὀρθὸς ἑστήκει Ποσειδῶν χάλκεος, ἔχων ἱππόκαμπον ἐν τῇ χειρὶ κίνδυνον φέροντα τοῖς δικτυεῦσιν. Ἡρακλείδης δέ φησι κατ' αὐτὸν γενέσθαι τὸ πάθος νύκτωρ,

δώδεκα σταδίους διεχούσης τῆς πόλεως ἀπὸ θαλάττης C.385 καὶ τούτου τοῦ χωρίου παντὸς σὺν τῇ πόλει καλυφθέντος, δισχιλίους δὲ παρὰ τῶν Ἀχαιῶν πεμφθέντας ἀνελέσθαι μὲν τοὺς νεκροὺς μὴ δύνασθαι, τοῖς δ' ὁμόροις νεῖμαι τὴν χώραν. συμβῆναι δὲ τὸ πάθος κατὰ μῆνιν Ποσειδῶνος· τοὺς γὰρ ἐκ τῆς Ἑλίκης ἐκπεσόντας Ἴωνας αἰτεῖν πέμψαντας παρὰ τῶν Ἑλικέων μάλιστα μὲν τὸ βρέτας τοῦ Ποσειδῶνος, εἰ δὲ μή, τοῦ γε ἱεροῦ τὴν ἀφίδρυσιν· οὐ δόντων δὲ πέμψαι πρὸς τὸ κοινὸν τῶν Ἀχαιῶν· τῶν δὲ ψηφισαμένων οὐδ' ὣς ὑπακοῦσαι· τῷ δ' ἑξῆς χειμῶνι συμβῆναι τὸ πάθος, τοὺς δ' Ἀχαιοὺς ὕστερον δοῦναι τὴν ἀφίδρυσιν τοῖς Ἴωσιν. Ἡσίοδος δὲ καὶ ἄλλης Ἑλίκης μέμνηται Θετταλικῆς.

3 Εἴκοσι μὲν δὴ ἔτη διετέλεσαν γραμματέα κοινὸν ἔχοντες καὶ στρατηγοὺς δύο κατ' ἐνιαυτὸν οἱ Ἀχαιοί, καὶ κοινοβούλιον εἰς ἕνα τόπον συνήγετο αὐτοῖς (ἐκαλεῖτο δὲ Ἀμάριον) ἐν ᾧ τὰ κοινὰ ἐχρημάτιζον καὶ οὗτοι καὶ Ἴωνες πρότερον· εἶτα ἔδοξεν ἕνα χειροτονεῖσθαι στρατηγόν. Ἄρατος δὲ στρατηγήσας ἀφείλετο Ἀντίγονον τὸν Ἀκροκόρινθον, καὶ τὴν πόλιν τοῖς Ἀχαιοῖς προσέθηκε καθάπερ καὶ τὴν πατρίδα· προσελάβετο δὲ καὶ Μεγαρέας· καὶ τὰς παρ' ἑκάστοις τυραννίδας καταλύων Ἀχαιοὺς ἐποίει τοὺς ἐλευθερωθέντας .... τὴν δὲ Πελοπόννησον ἠλευθέρωσε τῶν τυραννίδων, ὥστε καὶ Ἄργος καὶ Ἑρμιὼν καὶ Φλιοῦς καὶ Μεγάλη πόλις, ἡ μεγίστη τῶν ἐν Ἀρκαδίᾳ, προσετέθη τοῖς Ἀχαιοῖς, ὅτε δὴ καὶ πλεῖστον ηὔξηντο. ἦν δ' ὁ καιρὸς ἡνίκα Ῥωμαῖοι Καρχηδονίους ἐκ τῆς Σικελίας ἐκβαλόντες ἐστράτευσαν ἐπὶ τοὺς περὶ τὸν Πάδον Γαλάτας. μέχρι δὲ τῆς Φιλοποίμενος στρατηγίας συμμείναντες ἱκανῶς οἱ Ἀχαιοὶ διελύθησαν κατ' ὀλίγον, ἤδη Ῥωμαίων ἐχόντων τὴν Ἑλλάδα σύμπασαν καὶ οὐ τὸν αὐτὸν

τρόπον ἑκάστοις χρωμένων, ἀλλὰ τοὺς μὲν συνέχειν τοὺς δὲ καταλύειν βουλομένων .....

4 Ἡ δὲ τάξις τῶν τόπων, οὓς κατῴκουν εἰς δώδεκα μέρη διῃρημένοι, τοιαύτη τίς ἐστι· μετὰ Σικυῶνα Πελλήνη κεῖται· εἶτα Αἴγειρα δευτέρα· τρίτη Αἰγαί, Ποσειδῶνος ἱερὸν ἔχουσα· τετάρτη Βοῦρα· μετ' αὐτὴν Ἑλίκη, εἰς ἣν καταπεφεύγεισαν Ἴωνες, μάχῃ κρατηθέντες ὑπ' Ἀχαιῶν, καὶ τὸ τελευταῖον ἐξέπεσον ἐνθένδε· C.386 μετὰ δὲ Ἑλίκην Αἴγιον καὶ Ῥύπες καὶ Πατρεῖς καὶ Φαρεῖς· εἶτ' Ὤλενος, παρ' ὃν ποταμὸς μέγας * Μέλας· εἶτα Δύμη καὶ Τριταιεῖς. οἱ μὲν οὖν Ἴωνες κωμηδὸν ᾤκουν, οἱ δ' Ἀχαιοὶ πόλεις ἔκτισαν, ὧν εἰς τινας ὕστερον συνῴκισαν καὶ ἐκ τῶν ἄλλων μερίδων ἐνίας, καθάπερ τὰς Αἰγὰς εἰς Αἴγειραν (Αἰγαῖοι δ' ἐλέγοντο οἱ ἐνοικοῦντες), Ὤλενον δὲ εἰς Δύμην. δείκνυται δ' ἴχνη μεταξὺ Πατρῶν καὶ Δύμης τοῦ παλαιοῦ τῶν Ὠλενίων κτίσματος· αὐτοῦ δὲ καὶ τὸ τοῦ Ἀσκληπιοῦ ἱερὸν ἐπίσημον, [ὃ] Δύμης μὲν ἀπέχει τετταράκοντα σταδίους, Πατρῶν δὲ ὀγδοήκοντα. ὁμώνυμοι δ' εἰσὶ ταῖς μὲν Αἰγαῖς ταύταις αἱ ἐν Εὐβοίᾳ, τῷ δὲ Ὠλένῳ τὸ ἐν Αἰτωλίᾳ κτίσμα καὶ αὐτὸ ἴχνη σῶζον μόνον. ὁ δὲ ποιητὴς τοῦ μὲν ἐν Ἀχαΐᾳ Ὠλένου οὐ μέμνηται, ὥσπερ οὐδ' ἄλλων πλειόνων τῶν περὶ τὸν Αἰγιαλὸν οἰκούντων, ἀλλὰ κοινότερον λέγει „Αἰγιαλόν τ' ἀνὰ πάντα καὶ „ἀμφ' Ἑλίκην εὐρεῖαν.“ τοῦ δ' Αἰτωλικοῦ μέμνηται ὅταν φῇ „οἳ Πλευρῶν' ἐνέμοντο καὶ Ὤλενον.“ τὰς δ' Αἰγὰς ἀμφοτέρας λέγει, τὴν μὲν Ἀχαϊκὴν „οἱ δέ τοι „εἰς Ἑλίκην τε καὶ Αἰγὰς δῶρ' ἀνάγουσι.“ ὅταν δὲ φῇ

2. post βουλομένων: εἶτα λέγει αἰτίαν τοῦ ἐμπλατύνεσθαι τοῖς περὶ Ἀχαιῶν λόγοις τὸ ἐπὶ τοσοῦτον αὐξηθέντας, ὡς καὶ Λακεδαιμονίους ὑπερβαλέσθαι, μὴ ἀξίως γνωρίζεσθαι.

„Αἰγάς, ἔνθα τέ οἱ κλυτὰ δώματα βένθεσι λίμνης· „ἔνθ' ἵππους ἔστησε Ποσειδάων,“ βέλτιον δέχεσθαι τὰς ἐν Εὐβοίᾳ, ἀφ' ὧν εἰκὸς καὶ τὸ πέλαγος Αἰγαῖον λεχθῆναι· ἐκεῖ δὲ καὶ τῷ Ποσειδῶνι ἡ πραγματεία πεποίηται ἡ περὶ τὸν Τρωικὸν πόλεμον. πρὸς δὲ ταῖς Ἀχαϊκαῖς Αἰγαῖς ὁ Κρᾶθις ῥεῖ ποταμὸς ἐκ δυεῖν ποταμῶν αὐξόμενος, ἀπὸ τοῦ κίρνασθαι τὴν ὀνομασίαν ἔχων· ἀφ' οὗ καὶ ὁ ἐν Ἰταλίᾳ Κρᾶθις.

Ἑκάστη δὲ τῶν δώδεκα μερίδων ἐκ δήμων συνει- 5
στήκει ἑπτὰ καὶ ὀκτώ· τοσοῦτον εὐανδρεῖν τὴν χώραν συνέβαινεν. ἔστι δ' ἡ Πελλήνη στάδια ἑξήκοντα τῆς θαλάττης ὑπερκειμένη, φρούριον ἐρυμνόν. ἔστι δὲ καὶ κώμη Πελλήνη, ὅθεν καὶ αἱ Πελληνικαὶ χλαῖναι, ἃς καὶ ἆθλα ἐτίθεσαν ἐν τοῖς ἀγῶσι· κεῖται δὲ μεταξὺ Αἰγίου καὶ Πελλήνης· τὰ δὲ Πέλλανα ἕτερα τούτων ἐστί, Λακωνικὸν χωρίον, ὡς πρὸς τὴν Μεγαλοπολῖτιν νεῦον. Αἴγειρα δὲ ἐπὶ βουνοῦ κεῖται. Βοῦρα δ' ὑπέρκειται τῆς θαλάττης ἐν τετταράκοντά πως σταδίοις, ἣν ὑπὸ σεισμοῦ καταποθῆναι συνέβη. ἀπὸ δὲ τῆς ἐνταῦθα κρήνης Συβάριδος τὸν κατὰ τὴν Ἰταλίαν ποταμὸν ὀνομασθῆναί φασιν. ἡ δ' Αἰγὰ (καὶ γὰρ οὕτω λέγουσι τὰς C.387
Αἰγὰς) νῦν μὲν οὐκ οἰκεῖται, τὴν δὲ χώραν ἔχουσιν Αἰγιεῖς. Αἴγιον δὲ ἱκανῶς οἰκεῖται· ἱστοροῦσι δ' ἐνταῦθα τὸν Δία ὑπ' αἰγὸς ἀνατραφῆναι, καθάπερ φησὶ καὶ Ἄρατος „αἲξ ἱερή, τὴν μέν τε λόγος Διὶ μαζὸν ἐπισχεῖν.“ ἐπιλέγει δὲ καὶ ὅτι „Ὠλενίην δέ μιν αἶγα Διὸς καλέουσ' ὑποφῆται“ δηλῶν τὸν τόπον διότι πλησίον Ὠλένη. αὐτοῦ δὲ καὶ ἡ Κερύνεια ἐπὶ πέτρας ὑψηλῆς ἱδρυμένη. Αἰγιέων δ' ἐστὶ καὶ ταῦτα καὶ Ἑλίκη καὶ τὸ τοῦ Διὸς ἄλσος τὸ Ἀμάριον, ὅπου συνήεσαν οἱ Ἀχαιοὶ βουλευσόμενοι περὶ τῶν κοινῶν. ῥεῖ δὲ διὰ τῆς Αἰγιέων ὁ Σελινοῦς ποταμός, ὁμώνυμος τῷ τε ἐν Ἐφέσῳ

παρὰ τὸ Ἀρτεμίσιον ῥέοντι, καὶ τῷ ἐν τῇ νῦν Ἠλείᾳ τῷ παραρρέοντι τὸ χωρίον ὅ φησιν ὠνήσασθαι τῇ Ἀρτέμιδι Ξενοφῶν κατὰ χρησμόν· ἄλλος δὲ Σελινοῦς ὁ παρὰ τοῖς Ὑβλαίοις Μεγαρεῦσιν, οὓς ἀνέστησαν Καρχηδόνιοι. τῶν δὲ λοιπῶν πόλεων τῶν Ἀχαϊκῶν εἴτε μερίδων Ῥύπες μὲν οὐκ οἰκοῦνται, τὴν δὲ χώραν Ῥυπίδα καλουμένην ἔσχον Αἰγιεῖς καὶ * Φαριεῖς· ἐκ δὲ τῶν Ῥυπῶν ἦν ὁ Μύσκελλος ὁ Κρότωνος οἰκιστής· τῆς δὲ Ῥυπίδος καὶ τὸ Λεῦκτρον ἦν, δῆμος τῶν Ῥυπῶν. μετὰ δὲ τούτους Πάτραι πόλις ἀξιόλογος· μεταξὺ δὲ τὸ Ῥίον ἀπέχον Πατρῶν στάδια τετταράκοντα. Ῥωμαῖοι δὲ νεωστὶ μετὰ τὴν Ἀκτιακὴν νίκην ἵδρυσαν αὐτόθι τῆς στρατιᾶς μέρος ἀξιόλογον, καὶ διαφερόντως εὐανδρεῖ νῦν ἀποικία Ῥωμαίων οὖσα· ἔχει δὲ ὕφορμον μέτριον. ἐφεξῆς δ' ἐστὶν ἡ Δύμη, πόλις ἀλίμενος, πασῶν δυσμικωτάτη, ἀφ' οὗ καὶ τοὔνομα· πρότερον δ' ἐκαλεῖτο Στράτος· διαιρεῖ δ' αὐτὴν ἀπὸ τῆς Ἠλείας κατὰ Βουπράσιον ὁ Λάρισος ποταμός, ῥέων ἐξ ὄρους· τοῦτο δ' οἱ μὲν Σκόλλιν καλοῦσιν, Ὅμηρος δὲ πέτρην Ὠλενίην. τοῦ δ' Ἀντιμάχου Καυκωνίδα τὴν Δύμην εἰπόντος, οἱ μὲν ἐδέξαντο ἀπὸ τῶν Καυκώνων ἐπιθέτως εἰρῆσθαι αὐτὸ μέχρι δεῦρο καθηκόντων, καθάπερ ἐπάνω προείπομεν· οἱ δ' ἀπὸ Καύκωνος ποταμοῦ τινος, ὡς αἱ Θῆβαι Διρκαῖαι καὶ Ἀσωπίδες, Ἄργος δ' Ἰνάχειον, Τροία δὲ Σιμουντίς. δέδεκται δ' οἰκήτορας καὶ ἡ Δύμη μικρὸν πρὸ ἡμῶν ἀνθρώπους μιγάδας, οὓς
C.388 ἀπὸ τοῦ πειρατικοῦ πλήθους περιλιπεῖς ἔσχε Πομπήιος, καταλύσας τὰ λῃστήρια καὶ ἱδρύσας τοὺς μὲν ἐν Σόλοις τοῖς Κιλικίοις τοὺς δ' ἄλλοθι καὶ δὴ καὶ ἐν-

---

7. post Φαριεῖς: καὶ Αἰσχύλος δὲ λέγει που „Βοῦραν θ' „ἱερὰν καὶ κεραυνίας Ῥύπας.“ 10. post Ῥίον: καὶ τὸ Ἀντίρριον

ταῦθα. ἡ δὲ Φάρα συνορεῖ μὲν τῇ Δυμαίᾳ. καλοῦνται δὲ οἱ μὲν ἐκ ταύτης τῆς Φάρας * Φαριεῖς, οἱ δ' ἐκ τῆς Μεσσηνιακῆς Φαραιᾶται· ἔστι δ' ἐν τῇ Φαραϊκῇ Δίρκη κρήνη ὁμώνυμος τῇ ἐν Θήβαις. ἡ δ' Ὤλενος ἔστι μὲν ἔρημος, κεῖται δὲ μεταξὺ Πατρῶν καὶ Δύμης· ἔχουσι δὲ Δυμαῖοι τὴν χώραν. εἶτ' Ἄραξος, τὸ ἀκρωτήριον τῆς Ἠλείας, ἀπὸ Ἰσθμοῦ στάδιοι χίλιοι [τριάκοντα].

Ἀρκαδία δ' ἐστὶν ἐν μέσῳ μὲν τῆς Πελοποννήσου, 8
πλείστην δὲ χώραν ὀρεινὴν ἀποτέμνεται. μέγιστον δ' ὄρος ἐν αὐτῇ Κυλλήνη· τὴν γοῦν κάθετον οἱ μὲν εἴκοσι σταδίων φασὶν οἱ δ' ὅσον πεντεκαίδεκα. δοκεῖ δὲ παλαιότατα ἔθνη τῶν Ἑλλήνων εἶναι τὰ Ἀρκαδικά, Ἀζᾶνές τε καὶ Παρράσιοι καὶ ἄλλοι τοιοῦτοι. διὰ δὲ τὴν τῆς χώρας παντελῆ κάκωσιν οὐκ ἂν προσήκοι μακρολογεῖν περὶ αὐτῶν· αἵ τε γὰρ πόλεις ὑπὸ τῶν συνεχῶν πολέμων ἠφανίσθησαν ἔνδοξοι γενόμεναι πρότερον, τήν τε χώραν οἱ γεωργήσαντες ἐκλελοίπασιν ἐξ ἐκείνων ἔτι τῶν χρόνων ἐξ ὧν εἰς τὴν προσαγορευθεῖσαν Μεγάλην πόλιν αἱ πλεῖσται συνῳκίσθησαν. νυνὶ δὲ καὶ αὐτὴ ἡ Μεγάλη πόλις τὸ τοῦ κωμικοῦ πέπονθε καὶ „ἐρημία μεγάλη 'στὶν ἡ Μεγάλη πόλις.“ βοσκήμασι δ' εἰσὶ νομαὶ δαψιλεῖς, καὶ μάλιστα ἵπποις καὶ ὄνοις τοῖς ἱπποβάτοις· ἔστι δὲ καὶ τὸ γένος τῶν ἵππων ἄριστον τὸ Ἀρκαδικόν, καθάπερ καὶ τὸ Ἀργολικὸν καὶ τὸ Ἐπιδαύριον. καὶ ἡ τῶν Αἰτωλῶν δὲ καὶ Ἀκαρνάνων ἐρημία πρὸς ἱπποτροφίαν εὐφυὴς γέγονεν οὐχ ἧττον τῆς Θετταλίας.

Μαντίνειαν μὲν οὖν ἐποίησεν ἔνδοξον Ἐπαμεινών- 2
δας, τῇ δευτέρᾳ νικήσας μάχῃ Λακεδαιμονίους ἐν ᾗ καὶ αὐτὸς ἐτελεύτα. καὶ αὕτη δὲ καὶ Ὀρχομενὸς καὶ Ἡραία καὶ Κλείτωρ καὶ Φενεὸς καὶ Στύμφαλος καὶ Μαίναλος καὶ Μεθύδριον καὶ Καφυεῖς καὶ Κύναιθα ἢ οὐκέτ' εἰσὶν

ἢ μόλις αὐτῶν ἴχνη φαίνεται καὶ σημεῖα. Τεγέα δ' ἔτι μετρίως συμμένει καὶ τὸ ἱερὸν τῆς Ἀλέας Ἀθηνᾶς· τιμᾶται δ' ἐπὶ μικρὸν καὶ τὸ τοῦ Λυκαίου Διὸς ἱερὸν κατὰ τὸ Λύκαιον [μέγιστον] ὄρος. τῶν δ' ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ λεγομένων „Ῥίπην τε Στρατίην τε καὶ ἠνεμόεσσαν Ἐνίσπην" εὑρεῖν τε χαλεπὸν καὶ εὑροῦσιν οὐδὲν ὄφελος διὰ τὴν ἐρημίαν.

3 Ὄρη δ' ἐπιφανῆ πρὸς τῇ Κυλλήνῃ Φολόη τε καὶ
C.389 Λύκαιον καὶ Μαίναλος καὶ τὸ Παρθένιον καλούμενον καθῆκον ἐπὶ τὴν Ἀργείαν ἀπὸ τῆς Τεγεάτιδος.

4 Περὶ δὲ τοῦ Ἀλφειοῦ καὶ τοῦ Εὐρώτα τὸ συμβεβηκὸς παράδοξον εἴρηται καὶ τὸ περὶ Ἐρασῖνον τὸν ἐκδιδόντα ἐκ τῆς Στυμφαλίδος λίμνης εἰς τὴν Ἀργείαν νυνί, πρότερον δ' οὐκ ἔχοντα ἔκρυσιν, τῶν βερέθρων, ἃ καλοῦσιν οἱ Ἀρκάδες ζέρεθρα, τυφλῶν ὄντων καὶ μὴ δεχομένων ἀπέρασιν ὥστε τὴν τῶν Στυμφαλίων πόλιν νῦν μὲν καὶ πεντήκοντα διέχειν σταδίους ἀπὸ τῆς λίμνης, τότε δ' ἐπ' αὐτῆς κεῖσθαι. τἀναντία δ' ὁ Λάδων ἔπαθε τοῦ ῥεύματος ἐπισχεθέντος ποτὲ διὰ τὴν ἔμφραξιν τῶν πηγῶν· συμπεσόντα γὰρ τὰ περὶ Φενεὸν βέρεθρα ὑπὸ σεισμοῦ, δι' ὧν ἦν ἡ φορά, μονὴν ἐποίησε τοῦ ῥεύματος μέχρι τῶν κατὰ βάθους φλεβῶν τῆς πηγῆς. καὶ οἱ μὲν οὕτω λέγουσιν· Ἐρατοσθένης δέ φησι περὶ Φενεὸν μὲν τὸν Ἀνίαν καλούμενον ποταμὸν λιμνάζειν τὰ πρὸ τῆς πόλεως, καταδύεσθαι δ' εἴς τινας ἠθμοὺς οὓς καλεῖσθαι ζέρεθρα· τούτων δ' ἐμφραχθέντων ἔσθ' ὅτε ὑπερχεῖσθαι τὸ ὕδωρ εἰς τὰ πεδία, πάλιν δ' ἀναστομουμένων ἄθρουν ἐκ τῶν πεδίων ἐκπεσὸν εἰς τὸν Λάδωνα καὶ τὸν Ἀλφειὸν ἐμβάλλειν, ὥστε καὶ τῆς Ὀλυμπίας κλυσθῆναί ποτε τὴν περὶ τὸ ἱερὸν γῆν, τὴν δὲ λίμνην συσταλῆναι· τὸν Ἐρασῖνον δὲ παρὰ Στυμφάλου ῥέοντα ὑποδύντα ὑπὸ τὸ ὄρος ἐν

τῇ Ἀργείᾳ πάλιν ἀναφανῆναι· διὸ δὴ καὶ Ἰφικράτη πολιορκοῦντα τὸν Στύμφαλον καὶ μηδὲν περαίνοντα ἐπιχειρῆσαι τὴν κατάδυσιν ἀποφράξαι σπόγγους πορισάμενον πολλούς, παύσασθαι δὲ διοσημίας γενομένης. περὶ Φενεὸν δ' ἔστι καὶ τὸ καλούμενον Στυγὸς ὕδωρ, λιβάδιον ὀλεθρίου ὕδατος νομιζόμενον ἱερόν. τοσαῦτα καὶ περὶ Ἀρκαδίας εἰρήσθω.

Πολυβίου δ' εἰρηκότος τὸ ἀπὸ Μαλεῶν ἐπὶ τὰς 5 ἄρκτους μέχρι τοῦ Ἴστρου διάστημα περὶ μυρίους σταδίους, εὐθύνει τοῦτο ὁ Ἀρτεμίδωρος οὐκ ἀτόπως, ἐπὶ μὲν Αἴγιον χιλίους καὶ [τετρακοσ]ίους εἶναι λέγων ἐκ Μαλεῶν ὁδόν, ἐνθένδε εἰς [Κίρραν πλοῦν] διακοσίων, ἐνθένδε διὰ Ἡρακλείας [εἰς Θαυμακοὺς] πεντακοσίων ὁδόν, εἶτα εἰς Λάρισαν [καὶ τὸν Πηνειὸν] τριακοσίων τετταράκοντα, εἶτα διὰ [τῶν Τεμπῶν ἐπὶ τὰς Πη]νειοῦ ἐκβολὰς διακοσίων τετταράκον[τα, εἶτα εἰς τὴν Θεσσα]λονίκειαν ἑξακοσίων ἑξήκοντα, ἐντεῦ[θεν ἐπ' Ἴστρον δι' Εἰδομ]ένης καὶ Στόβων καὶ Δαρδανίων τρισχι[λίους καὶ διακοσίο]υς. κατ' ἐκεῖνον δὴ συμβαίνει τὸ ἐκ [τοῦ Ἴστρου ἐπὶ τὰς Μαλ]έας ἑξακισχιλίων πεντακοσίων. αἴτιον δὲ τούτου τὸ μὴ τὴν σύντομον καταμετρεῖν, ἀλλὰ τὴν τυχοῦσαν ἣν ἐπορεύθη τῶν στρατηγῶν τις.

Οὐκ ἄτοπον δ' ἴσως καὶ τοὺς οἰκιστὰς προσθεῖναι τῶν τὴν Πελοπόννησον οἰκούντων, οὓς εἶπεν Ἔφορος, τοὺς μετὰ τὴν Ἡρακλειδῶν κάθοδον· Κορίνθου μὲν Ἀλήτην, Σικυῶνος δὲ Φάλκην, Ἀχαΐας δὲ Τισαμενόν, Ἤλιδος δ' Ὄξυλον, Μεσσήνης δὲ Κρεσφόντην, Λακεδαίμονος δ' Εὐρυσθένη καὶ Προκλῆ, Ἄργους δὲ Τήμενον κ[αὶ Κισσόν, τῶν δὲ] περὶ τὴν Ἀκτὴν Ἀγραῖον καὶ Δηιφόντην.

— Θ —

C.390
1 Περιωδευκόσι δὲ τὴν Πελοπόννησον, ἣν πρώτην ἔφαμεν καὶ ἐλαχίστην τῶν συντιθεισῶν τὴν Ἑλλάδα χερρονήσων, ἐφεξῆς ἂν εἴη τὰς συνεχεῖς ἐπελθεῖν. ἦν δὲ δευτέρα μὲν ἡ προστιθεῖσα τῇ Πελοποννήσῳ τὴν Μεγαρίδα, ὥστε τὸν Κρομμυῶνα Μεγαρέων εἶναι καὶ μὴ Κορινθίων· τρίτη δὲ ἡ πρὸς ταύτῃ προσλαμβάνουσα τὴν Ἀττικὴν καὶ τὴν Βοιωτίαν καὶ τῆς Φωκίδος τι μέρος καὶ τῶν Ἐπικνημιδίων Λοκρῶν. περὶ τούτων οὖν [λεκτέον]. φησὶ δ' Εὔδοξος, εἴ τις νοήσειεν ἀπὸ τῶν Κεραυνίων ὀρῶν ἐπὶ Σούνιον τὸ τῆς Ἀττικῆς ἄκρον ἐπὶ τὰ πρὸς ἕω μέρη τεταμένην εὐθεῖαν, ἐν δεξιᾷ μὲν ἀπολείψειν τὴν Πελοπόννησον ὅλην πρὸς νότον, ἐν ἀριστερᾷ δὲ καὶ πρὸς τὴν ἄρκτον τὴν ἀπὸ τῶν Κεραυνίων ὀρῶν συνεχῆ παραλίαν μέχρι τοῦ Κρισαίου κόλπου καὶ τῆς Μεγαρίδος καὶ συμπάσης τῆς Ἀττικῆς· νομίζει δ' οὐδ' ἂν κ[οιλαίνεσθαι οὕτως] τὴν ἠόνα τὴν ἀπὸ Σουνίου μέχρι [τοῦ Ἰσθμοῦ ὥστε μεγάλην] ἔχειν ἐπιστροφήν, εἰ μὴ προσῆν τῇ [ἠόνι ταύτῃ καὶ] τὰ συνεχῆ τῷ Ἰσθμῷ χωρία τὰ [ποιοῦντα τὸν κόλπον τὸν] Ἑρμιονικὸν καὶ τὴν Ἀκτήν· ὡς δ' αὔ[τως οὐδ' ἂν τὴν ἀπὸ τῶν Κεραυν]ίων ἐπὶ τὸν Κορινθιακὸν κόλπον ἔχειν τινὰ τοσαύ[την ἐπιστρο]φὴν ὥστε κοιλαίνεσθαι κολποειδῶς καθ' αὑ[τήν, εἰ μὴ τὸ] Ῥίον καὶ τὸ Ἀντίρριον συναγόμενα εἰς στενὸν [ἐποίει τὴν] ἔμφασιν ταύτην· ὁμοίως δὲ καὶ τὰ περι[έχοντα] τὸν μυχόν, εἰς ἃ καταλήγειν συμβαίνει τὴν [ταύτῃ] θάλατταν.

2 Οὕτω δ' εἰρηκότος Εὐδόξου, μαθηματικοῦ ἀν-
C.391 δρὸς καὶ σχημάτων ἐμπείρου καὶ κλιμάτων καὶ τοὺς τόπους τούτους εἰδότος, δεῖ νοεῖν τήνδε τὴν πλευρὰν τῆς Ἀττικῆς σὺν τῇ Μεγαρίδι τὴν ἀπὸ Σουνίου μέχρι

Ἰσθμοῦ κοίλην μὲν ἀλλ' ἐπὶ μικρόν. ἐνταῦθα δ' ἐστὶ κατὰ μέσην που τὴν λεχθεῖσαν γραμμὴν ὁ Πειραιεὺς τὸ τῶν Ἀθηνῶν ἐπίνειον. διέχει γὰρ τοῦ μὲν Σχοινοῦντος τοῦ κατὰ τὸν Ἰσθμὸν περὶ τριακοσίους πεντήκοντα σταδίους, τοῦ δὲ Σουνίου τριάκοντα καὶ τριακοσίους· [τόσ]ον πώς ἐστι διάστημα καὶ τὸ ἐπὶ Πηγὰς ἀπὸ τοῦ Πει[ραιῶς], ὅσονπερ καὶ ἐπὶ Σχοινοῦντα· δέκα δ' ὅμως στα[δίοις] πλεονάζειν φασί. κάμψαντι δὲ τὸ Σούνιον πρὸς ἄρκτον μὲν ὁ πλοῦς, ἐκκλίνων [δὲ] πρὸς δύσιν.

3 Ἀκτὴ δ' ἐστὶν [ἡ Ἀττικὴ] ἀμφιθάλαττος, στενὴ τὸ πρῶτον, εἶτ' εἰς τὴν μεσόγαιαν πλατύνεται, μηνοειδῆ δ' οὐδὲν ἧττον ἐπιστροφὴν λαμβάνει πρὸς Ὠρωπὸν τῆς Βοιωτίας τὸ κυρτὸν ἔχουσαν πρὸς θαλάττῃ· τοῦτο δ' ἐστὶ τὸ δεύτερον πλευρὸν ἑῷον τῆς Ἀττικῆς. τὸ δὲ λοιπὸν ἤδη τὸ προσάρκτιόν ἐστι πλευρὸν ἀπὸ τῆς Ὠρωπίας ἐπὶ δύσιν παρατεῖνον μέχρι τῆς Μεγαρίδος, ἡ Ἀττικὴ ὀρεινή, πολυώνυμός τις, διείργουσα τὴν Βοιωτίαν ἀπὸ τῆς Ἀττικῆς· ὥσθ', ὅπερ εἶπον ἐν τοῖς πρόσθεν, ἰσθμὸν γίνεσθαι τὴν Βοιωτίαν ἀμφιθάλαττον οὖσαν τῆς τρίτης χερρονήσου τῆς λεχθείσης, ἀπολαμβάνοντα ἐντὸς τὰ πρὸς τῇ Πελοποννήσῳ τήν τε Μεγαρίδα καὶ τὴν Ἀττικήν. διὰ δὲ τοῦτο καὶ Ἀκτήν φασι λεχθῆναι τὸ παλαιὸν καὶ Ἀκτικὴν τὴν νῦν Ἀττικὴν παρονομασθεῖσαν, ὅτι τοῖς ὄρεσιν ὑποπέπτωκε τὸ πλεῖστον μέρος αὐτῆς ἁλιτενὲς καὶ στενόν, μήκει δ' ἀξιολόγῳ κεχρημένον, προπεπτωκὸς μέχρι Σουνίου. ταύτας οὖν διέξιμεν ἀναλα[βόντες πάλιν ἀπὸ τῆς π]αραλίας ἀφ' ἧσπερ ἀπελίπομεν.

4 Μετὰ δὴ Κρομμυῶνα ὑπέρκεινται τῆς * Ἀττικῆς αἱ Σκειρωνίδες πέτραι πάροδον οὐκ ἀπολείπουσαι πρὸς θαλάττῃ· ὑπὲρ αὐτῶν δ' ἐστὶν ἡ ὁδὸς ἡ ἐπὶ Μεγάρων

καὶ τῆς Ἀττικῆς ἀπὸ τοῦ Ἰσθμοῦ· οὕτω δὲ σφόδρα
πλησιάζει ταῖς πέτραις ἡ ὁδὸς ὥστε πολλαχοῦ καὶ πα-
ράκρημνός ἐστι διὰ τὸ ὑπερκείμενον ὄρος δύσβατόν τε
καὶ ὑψηλόν· ἐνταῦθα δὲ μυθεύεται τὰ περὶ τοῦ Σκεί-
ρωνος καὶ τοῦ Πιτυοκάμπτου τῶν ληζομένων τὴν λε-
χθεῖσαν ὀρεινήν, οὓς καθεῖλε Θησεύς. ἀπὸ δὲ τῶν
ἄκρων τούτων καταιγίζοντα σκαιὸν τὸν ἀργέστην σκεί-
ρωνα προσηγορεύκασιν Ἀθηναῖοι. μετὰ δὲ τὰς Σκει-
ρωνίδας πέτρας ἄκρα πρόκειται Μινῴα ποιοῦσα τὸν
ἐν τῇ Νισαίᾳ λιμένα. ἡ δὲ Νίσαια ἐπίνειόν ἐστιν τῶν
Μεγάρων δεκαοκτὼ σταδίους τῆς πόλεως διέχον, σκέ-
C.392 λεσιν ἑκατέρωθεν συναπτόμενον πρὸς αὐτήν· ἐκα-
λεῖτο δὲ καὶ τοῦτο Μινῴα.

5 Τὸ παλαιὸν μὲν οὖν Ἴωνες εἶχον τὴν χώραν ταύ-
την οἵπερ καὶ τὴν Ἀττικήν, οὔπω τῶν Μεγάρων ἐκτι-
σμένων· διόπερ οὐδ᾽ ὁ ποιητὴς μέμνηται τῶν τόπων
τούτων ἰδίως, ἀλλ᾽ Ἀθηναίους καλῶν τοὺς ἐν τῇ Ἀτ-
τικῇ πάντας συμπεριείληφε καὶ τούτους τῷ κοινῷ ὀνό-
ματι Ἀθηναίους νομίζων, ὡς ὅταν φῇ ἐν τῷ καταλό-
γῳ „οἵ δ᾽ ἄρ᾽ Ἀθήνας εἶχον, ἐυκτίμενον πτολίεθρον“
δέχεσθαι δεῖ καὶ τοὺς νῦν Μεγαρέας, ὡς καὶ τούτους
μετασχόντας τῆς στρατείας. σημεῖον δέ· ἡ γὰρ Ἀττικὴ
τὸ παλαιὸν Ἰωνία καὶ Ἰὰς ἐκαλεῖτο, καὶ ὁ ποιητὴς ὅταν
φῇ „ἔνθα δὲ Βοιωτοὶ καὶ Ἰάονες“ τοὺς Ἀθηναίους
6 λέγει· ταύτης δ᾽ ἦν μερὶς καὶ ἡ Μεγαρίς. καὶ δὴ καὶ
τῶν ὁρίων ἀμφισβητοῦντες πολλάκις οἵ τε Πελοπον-
νήσιοι καὶ Ἴωνες, ἐν οἷς ἦν καὶ ἡ Κρομμυωνία, συνέ-
βησαν καὶ στήλην ἔστησαν ἐπὶ τοῦ συνομολογηθέντος
τόπου περὶ αὐτὸν τὸν Ἰσθμόν, ἐπιγραφὴν ἔχουσαν
ἐπὶ μὲν τοῦ πρὸς τὴν Πελοπόννησον μέρους „τάδ᾽ ἐστὶ
„Πελοπόννησος οὐκ Ἰωνία,“ ἐπὶ δὲ τοῦ πρὸς Μέγαρα
„τάδ᾽ οὐχὶ Πελοπόννησος ἀλλ᾽ Ἰωνία.“ οἵ τε δὴ τὴν

Ἀτθίδα συγγράψαντες πολλὰ διαφωνοῦντες τοῦτό γε ὁμολογοῦσιν οἵ γε λόγου ἄξιοι, διότι τῶν Πανδιονιδῶν τεττάρων ὄντων, Αἰγέως τε καὶ Λύκου καὶ Πάλλαντος καὶ τετάρτου Νίσου, καὶ τῆς Ἀττικῆς εἰς τέτταρα μέρη διαιρεθείσης, ὁ Νῖσος τὴν Μεγαρίδα λάχοι καὶ κτίσαι τὴν Νίσαιαν. Φιλόχορος μὲν οὖν ἀπὸ Ἰσθμοῦ μέχρι τοῦ Πυθίου διήκειν αὐτοῦ φησι τὴν ἀρχήν, Ἄνδρων δὲ μέχρι Ἐλευσῖνος καὶ τοῦ Θριασίου πεδίου. τὴν δ' εἰς τέτταρα μέρη διανομὴν ἄλλων ἄλλως εἰρηκότων ἀρκεῖ ταῦτα παρὰ Σοφοκλέους λαβεῖν· φησὶ δ' ὁ Αἰγεὺς ὅτι ὁ πατὴρ ὥρισεν ἐμοὶ μὲν ἀ[πελθεῖ]ν εἰς ἀκτὰς τῆσδε γῆς πρεσβεῖα νείμας· [εἶτ]α Λύκῳ „τὸν ἀντίπλευρον κῆπον Εὐβοίας νέμει, Νίσῳ δὲ „τὴν ὅμαυλον ἐξαιρεῖ χθόνα Σκείρωνος ἀκτῆς, τῆς δὲ „γῆς τὸ πρὸς νότον ὁ σκληρὸς οὗτος καὶ γίγαντας ἐκ„τρέφων εἴληχε Πάλλας.“ ὅτι μὲν οὖν ἡ Μεγαρὶς τῆς Ἀττικῆς μέρος ἦν, τούτοις χρῶνται τεκμηρίοις.

Μετὰ δὲ τὴν τῶν Ἡρακλειδῶν κάθοδον καὶ τὸν 7
τῆς χώρας μερισμὸν ὑπ' αὐτῶν καὶ τῶν συγκατελθόν-
των αὐτοῖς Δωριέων ἐκπεσεῖν τῆς οἰκείας συνέβη πολ- C.393
λοὺς εἰς τὴν Ἀττικήν, ὧν ἦν καὶ ὁ τῆς Μεσσήνης βασιλεὺς Μέλανθος· οὗτος δὲ καὶ τῶν Ἀθηναίων ἐβασίλευσεν ἑκόντων, νικήσας ἐκ μονομαχίας τὸν τῶν Βοιωτῶν βασιλέα Ξάνθον. εὐανδρούσης δὲ τῆς Ἀττικῆς διὰ τοὺς φυγάδας φοβηθέντες οἱ Ἡρακλεῖδαι, παροξυνόντων αὐτοὺς μάλιστα τῶν ἐν Κορίνθῳ καὶ τῶν ἐν Μεσσήνῃ, τῶν μὲν διὰ τὴν γειτνίασιν, τῶν δὲ ὅτι Κόδρος τῆς Ἀττικῆς ἐβασίλευε τότε ὁ τοῦ Μελάνθου παῖς, ἐστράτευσαν ἐπὶ τὴν Ἀττικήν· ἡττηθέντες δὲ μάχῃ τῆς μὲν ἄλλης ἐξέστησαν γῆς, τὴν Μεγαρικὴν δὲ κατέσχον καὶ τήν τε πόλιν ἔκτισαν τὰ Μέγαρα καὶ τοὺς ἀνθρώπους Δωριέας ἀντὶ Ἰώνων ἐποίησαν· ἠφάνισαν δὲ καὶ

τὴν στήλην τὴν ὁρίζουσαν τούς τε Ἴωνας καὶ τοὺς Πελοποννησίους.

8 Πολλαῖς δὲ κέχρηται μεταβολαῖς ἡ τῶν Μεγαρέων πόλις, συμμένει δ᾽ ὅμως μέχρι νῦν. ἔσχε δέ ποτε καὶ φιλοσόφων διατριβὰς τῶν προσαγορευθέντων Μεγαρικῶν, Εὐκλείδην διαδεξαμένων ἄνδρα Σωκρατικόν, Μεγαρέα τὸ γένος· καθάπερ καὶ Φαίδωνα μὲν τὸν Ἠλεῖον οἱ Ἠλειακοὶ διεδέξαντο, καὶ τοῦτον Σωκρατικόν, ὧν ἦν καὶ Πύρρων, Μενέδημον δὲ τὸν Ἐρετριέα οἱ Ἐρετρικοί. ἔστι δ᾽ ἡ χώρα τῶν Μεγαρέων παράλυπρος καθάπερ καὶ ἡ Ἀττική, καὶ τὸ πλέον αὐτῆς ἐπέχει τὰ καλούμενα Ὄνεια ὄρη, ῥάχις τις μηκυνομένη μὲν ἀπὸ τῶν Σκειρωνίδων πετρῶν ἐπὶ τὴν Βοιωτίαν καὶ τὸν Κιθαιρῶνα, διείργουσα δὲ τὴν κατὰ Νίσαιαν θάλατταν ἀπὸ τῆς κατ[ὰ τὰς Παγὰς] Ἀλκυονίδος προσαγορευομένης.

9 Πρόκειται δ᾽ ἀπὸ Νισαίας πλέοντι εἰς τὴν Ἀττικὴν πέντε νησία. εἶτα Σαλαμὶς ἑβδομήκοντά που σταδίων οὖσα τὸ μῆκος, οἱ δ᾽ ὀγδοήκοντά φασιν· ἔχει δ᾽ ὁμώνυμον πόλιν τὴν μὲν ἀρχαίαν ἔρημον πρὸς Αἴγιναν τετραμμένην καὶ πρὸς νότον (καθάπερ καὶ Αἰσχύλος εἴρηκεν „Αἴγινα δ᾽ αὕτη πρὸς νότου κεῖται πνοάς"), τὴν δὲ νῦν ἐν κόλπῳ κειμένην ἐπὶ χερρονησοειδοῦς τόπου συνάπτοντος πρὸς τὴν Ἀττικήν. ἐκαλεῖτο δ᾽ ἑτέροις ὀνόμασι τὸ παλαιόν· καὶ γὰρ Σκιρὰς καὶ Κύχρεια ἀπό τινων ἡρώων, ἀφ᾽ οὗ μὲν Ἀθηνᾶ τε λέγεται Σκιρὰς καὶ τόπος Σκίρα ἐν τῇ Ἀττικῇ καὶ ἐπὶ Σκίρῳ ἱεροποιία τις καὶ ὁ μὴν ὁ Σκιροφοριών, ἀφ᾽ οὗ δὲ καὶ Κυχρείδης ὄφις, ὅν φησιν Ἡσίοδος τραφέντα ὑπὸ Κυχρέως ἐξελαθῆναι ὑπὸ Εὐρυλόχου λυμαινόμενον τὴν νῆσον, ὑποδέξασθαι δὲ αὐτὸν τὴν Δήμητρα εἰς Ἐλευ-
C.394 σῖνα καὶ γενέσθαι ταύτης ἀμφίπολον. ὠνομάσθη δὲ

καὶ Πιτυοῦσσα ἀπὸ τοῦ φυτοῦ· ἐπιφανὴς δὲ ἡ νῆσος ὑπῆρξε διά τε τοὺς Αἰακίδας ἐπάρξαντας αὐτῆς, καὶ μάλιστα δι' Αἴαντα τὸν Τελαμώνιον, καὶ διὰ τὸ περὶ τὴν νῆσον ταύτην καταναυμαχηθῆναι Ξέρξην ὑπὸ τῶν Ἑλλήνων καὶ φυγεῖν εἰς τὴν οἰκείαν. συναπέλαυσαν δὲ καὶ Αἰγινῆται τῆς περὶ τὸν ἀγῶνα τοῦτον δόξης, γείτονές τε ὄντες καὶ ναυτικὸν ἀξιόλογον παρασχόμενοι. Βώκαρος δ' ἐστὶν ἐν Σαλαμῖνι ποταμός, ὁ νῦν Βωκαλία καλούμενος.

Καὶ νῦν μὲν ἔχουσιν Ἀθηναῖοι τὴν νῆσον, τὸ δὲ 10 παλαιὸν πρὸς Μεγαρέας ὑπῆρξεν αὐτοῖς ἔρις περὶ αὐτῆς· καί φασιν οἱ μὲν Πεισίστρατον οἱ δὲ Σόλωνα παρεγγράψαντα ἐν τῷ νεῶν καταλόγῳ μετὰ τὸ ἔπος τοῦτο „Αἴας δ' ἐκ Σαλαμῖνος ἄγεν δυοκαίδεκα νῆας“ ἑξῆς τοῦτο „στῆσε δ' ἄγων, ἵν' Ἀθηναίων ἵσταντο φά„λαγγες,“ μάρτυρι χρήσασθαι τῷ ποιητῇ τοῦ τὴν νῆσον ἐξ ἀρχῆς Ἀθηναίων ὑπάρξαι. οὐ παραδέχονται δὲ τοῦθ' οἱ κριτικοὶ διὰ τὸ πολλὰ τῶν ἐπῶν ἀντιμαρτυρεῖν αὐτοῖς. διὰ τί γὰρ ναυλοχῶν ἔσχατος φαίνεται ὁ Αἴας, οὐ μετ' Ἀθηναίων ἀλλὰ μετὰ τῶν ὑπὸ Πρωτεσιλάῳ Θετταλῶν; „ἔνθ' ἔσαν Αἴαντός τε νέες καὶ Πρωτεσιλάου“ καὶ ἐν τῇ ἐπιπωλήσει ὁ Ἀγαμέμνων „εὗρ' υἱὸν Πετεῶο „Μενεσθῆα πλή[ξιππον ἑστα]ότ', ἀμφὶ δ' Ἀθηναῖοι, „μήστωρες ἀυτῆς. αὐτὰρ ὁ πλησίον ἑστήκει πολύμη„τις Ὀδυσσεύς, πὰρ δὲ Κεφαλλήνων ἀμφὶ στίχες.“ ἐπὶ δὲ τὸν Αἴαντα καὶ τοὺς Σαλαμινίους πάλιν „ἦλθε „δ' ἐπ' Αἰάντεσσι,“ καὶ παρ' αὐτούς „Ἰδομενεὺς δ' „ἑτέρωθεν,“ οὐ Μενεσθεύς. οἱ μὲν δὴ Ἀθηναῖοι τοιαύτην τινὰ σκήψασθαι μαρτυρίαν παρ' Ὁμήρου δοκοῦσιν, οἱ δὲ Μεγαρεῖς ἀντιπαρῳδῆσαι οὕτως „Αἴας „δ' ἐκ Σαλαμῖνος ἄγεν νέας, ἔκ τε Πολίχνης, ἔκ τ' „Αἰγειρούσσης Νισαίης τε Τριπόδων τε.“ ἅ ἐστι χωρία

Μεγαρικά, ὧν οἱ Τρίποδες Τριποδίσκιον λέγονται, καθ' ὃ ἡ νῦν ἀγορὰ τῶν Μεγάρων κεῖται.

11 Τινὲς δ' ἀπὸ τοῦ τὴν ἱέρειαν τῆς Πολιάδος Ἀθη-
C.395 νᾶς χλωροῦ τυροῦ τοῦ μὲν ἐπιχωρίου μὴ ἅπτεσθαι, ξενικὸν δὲ μόνον προσφέρεσθαι, χρῆσθαι δὲ καὶ τῷ Σαλαμινίῳ, ξένην φασὶ τῆς Ἀττικῆς τὴν Σαλαμῖνα οὐκ εὖ· καὶ γὰρ τὸν ἀπὸ τῶν ἄλλων νήσων τῶν ὁμολογουμένως τῇ Ἀττικῇ προσχώρων προσφέρεται, ξενικὸν πάντα τὸν διαπόντιον νοησάντων τῶν ἀρξάντων τοῦ ἔθους τούτου. ἔοικε δὴ τὸ παλαιὸν ἡ νῦν Σαλαμὶς καθ' αὑτὴν τάττεσθαι, τὰ δὲ Μέγαρα τῆς Ἀττικῆς ὑπάρξαι μέρος. ἐν δὲ τῇ παραλίᾳ τῇ κατὰ Σαλαμῖνα κεῖσθαι συμβαίνει τὰ ὅρια τῆς τε Μεγαρικῆς καὶ τῆς Ἀτθίδος, ὄρη δύο ἃ καλοῦσι Κέρατα.

12 Εἶτ' Ἐλευσὶς πόλις, ἐν ᾗ τὸ τῆς Δήμητρος ἱερὸν τῆς Ἐλευσινίας καὶ ὁ μυστικὸς σηκός, ὃν κατεσκεύασεν Ἰκτῖνος ὄχλον θεάτρου δέξασθαι δυνάμενον, ὃς καὶ τὸν παρθενῶνα ἐποίησε τὸν ἐν ἀκροπόλει τῇ Ἀθηνᾷ, Περικλέους ἐπιστατοῦντος τῶν ἔργων· ἐν δὲ τοῖς δήμοις καταριθμεῖται ἡ πόλις.

13 Εἶτα τὸ Θριάσιον πεδίον καὶ ὁμώνυμος αἰγιαλὸς καὶ δῆμος· εἶθ' ἡ ἄκρα ἡ Ἀμφιάλη καὶ τὸ ὑπερκείμενον λατόμιον καὶ ὁ εἰς Σαλαμῖνα πορθμὸς ὅσον διστάδιος, ὃν διαχοῦν ἐπειρᾶτο Ξέρξης, ἔφθη δὲ ἡ ναυμαχία γενομένη καὶ φυγὴ τῶν Περσῶν. ἐνταῦθα δὲ καὶ αἱ Φαρμακοῦσσαι, δύο νησία ὧν ἐν τῷ μείζονι Κίρκης τάφος δείκνυται.

14 Ὑπὲρ δὲ τῆς ἀκτῆς ταύτης ὄρος ἐστὶν ὃ καλεῖται Κορυδαλλός, καὶ ὁ δῆμος οἱ Κορυδαλλεῖς· εἶθ' ὁ Φώρων λιμὴν καὶ ἡ Ψυττάλεια, νησίον ἔρημον πετρῶδες ὅ τινες εἶπον λήμην τοῦ Πειραιῶς· πλησίον δὲ καὶ ἡ Ἀταλάντη ὁμώνυμος τῇ περὶ Εὔβοιαν καὶ Λοκρούς,

καὶ ἄλλο νησίον ὅμοιον τῇ Ψυτταλείᾳ καὶ τοῦτο· εἶθ' ὁ Πειραιεὺς καὶ αὐτὸς ἐν τοῖς δήμοις ταττόμενος καὶ ἡ Μουνυχία.

Λόφος δ' ἐστὶν ἡ Μουνυχία χερρονησιάζων καὶ 15 κοῖλος καὶ ὑπόνομος πολὺ μέρος φύσει τε καὶ ἐπίτηδες ὥστ' οἰκήσεις δέχεσθαι, στομίῳ δὲ μικρῷ τὴν εἴσοδον ἔχων. ὑποπίπτουσι δ' αὐτῷ λιμένες τρεῖς. τὸ μὲν οὖν παλαιὸν ἐτετείχιστο καὶ συνῴκιστο ἡ Μουνυχία παραπλησίως ὥσπερ ἡ τῶν Ῥοδίων πόλις, προσειληφυῖα τῷ περιβόλῳ τόν τε Πειραιᾶ καὶ τοὺς λιμένας πλήρεις νεωρίων, ἐν οἷς καὶ ἡ ὁπλοθήκη Φίλωνος ἔργον· ἄξιόν τε ἦν ναύσταθμον ταῖς τετρακοσίαις ναυσίν, ὧν οὐκ ἐλάττους ἔστελλον Ἀθηναῖοι. τῷ δὲ τείχει τούτῳ συνῆπτε τὰ καθειλκυσμένα ἐκ τοῦ ἄστεος σκέλη· ταῦτα δ' ἦν μακρὰ τείχη τετταράκοντα σταδίων τὸ μῆκος, συνάπτοντα τὸ ἄστυ τῷ Πειραιεῖ. οἱ δὲ πολλοὶ πόλεμοι τὸ τεῖχος κατήρειψαν καὶ τὸ τῆς Μουνυχίας ἔρυμα, τόν τε Πειραιᾶ συνέστειλαν εἰς ὀλίγην κατοικίαν τὴν περὶ C.396 τοὺς λιμένας καὶ τὸ ἱερὸν τοῦ Διὸς τοῦ σωτῆρος· τοῦ δὲ ἱεροῦ τὰ μὲν στοΐδια ἔχει πίνακας θαυμαστούς, ἔργα τῶν ἐπιφανῶν τεχνιτῶν, τὸ δ' ὕπαιθρον ἀνδριάντας. κατέσπασται δὲ καὶ τὰ μακρὰ τείχη, Λακεδαιμονίων μὲν καθελόντων πρότερον Ῥωμαίων δ' ὕστερον, ἡνίκα Σύλλας ἐκ πολιορκίας εἷλε καὶ τὸν Πειραιᾶ καὶ τὸ ἄστυ.

Τὸ δ' ἄστυ αὐτὸ πέτρα ἐστὶν ἐν πεδίῳ περιοικου- 16 μένη κύκλῳ· ἐπὶ δὲ τῇ πέτρᾳ τὸ τῆς Ἀθηνᾶς ἱερὸν ὅ τε ἀρχαῖος νεὼς ὁ τῆς Πολιάδος ἐν ᾧ ὁ ἄσβεστος λύχνος, καὶ ὁ παρθενὼν ὃν ἐποίησεν Ἰκτῖνος, ἐν ᾧ τὸ τοῦ Φειδίου ἔργον ἐλεφάντινον ἡ Ἀθηνᾶ. ἀλλὰ γὰρ εἰς πλῆθος ἐμπίπτων τῶν περὶ τῆς πόλεως ταύτης ὑμνουμένων τε καὶ διαβοωμένων ὀκνῶ πλεονάζειν, μὴ συμβῇ τῆς προθέσεως ἐκπεσεῖν τὴν γραφήν. ἔπεισι

γὰρ ὅ φησιν Ἡγησίας „ὁρῶ τὴν ἀκρόπολιν καὶ τὸ περιττῆς τριαίνης ἐκεῖθι σημεῖον, ὁρῶ τὴν Ἐλευσῖνα, καὶ „τῶν ἱερῶν γέγονα μύστης· ἐκεῖνο Λεωκόριον, τοῦτο „Θησεῖον· οὐ δύναμαι δηλῶσαι καθ' ἓν ἕκαστον· ἡ „γὰρ Ἀττικὴ θεῶν αὐτοῖς .... καταλαβόντων καὶ „τῶν προγόνων ἡρώων ....“ οὗτος μὲν οὖν ἑνὸς ἐμνήσθη τῶν ἐν ἀκροπόλει σημείων, Πολέμων δ' ὁ περιηγητὴς τέτταρα βιβλία συνέγραψε περὶ τῶν ἀναθημάτων τῶν ἐν ἀκροπόλει· τὸ δ' ἀνάλογον συμβαίνει καὶ ἐπὶ τῶν ἄλλων τῆς πόλεως μερῶν καὶ τῆς χώρας· Ἐλευσῖνά τε εἰπὼν ἕνα τῶν ἑκατὸν ἑβδομήκοντα δήμων πρὸς δὲ καὶ τεττάρων, ὥς φασιν, οὐδένα τῶν ἄλλων ὠνόμακεν.

17 Ἔχουσι δὲ κἂν εἰ μὴ πάντες οἵ γε πολλοὶ μυθοποιίας συχνὰς καὶ ἱστορίας· καθάπερ Ἄφιδνα μὲν τὴν τῆς Ἑλένης ἁρπαγὴν ὑπὸ Θησέως καὶ τὴν ὑπὸ τῶν Διοσκούρων ἐκπόρθησιν αὐτῆς καὶ ἀνακομιδὴν τῆς ἀδελφῆς, Μαραθὼν δὲ τὸν Περσικὸν ἀγῶνα, Ῥαμνοῦς δὲ τὸ τῆς Νεμέσεως ξόανον, ὅ τινες μὲν Διοδότου φασὶν ἔργον τινὲς δὲ Ἀγορακρίτου τοῦ Παρίου, καὶ μεγέθει καὶ κάλλει σφόδρα κατωρθωμένον καὶ ἐνάμιλλον τοῖς Φειδίου ἔργοις. οὕτω δὲ καὶ Δεκέλεια μὲν τὸ ὁρμητήριον τῶν Πελοποννησίων κατὰ τὸν Δεκελεικὸν πόλεμον, Φυλὴ δὲ ὅθεν ἐπήγαγε τὸν δῆμον Θρασύβουλος εἰς Πειραιᾶ κἀκεῖθεν εἰς ἄστυ. οὕτω δὲ καὶ ἐπ' ἄλλων πλειόνων ἔστιν ἱστορεῖν πολλά· καὶ ἔτι τὸ Λεωκόριον καὶ τὸ Θη[σεῖον μύθο]υς ἔχει, καὶ τὸ Λύκειον καὶ τὸ Ὀλυμπικὸν ....ὁ τὸ Ὀλύμπιον, ὅπερ ἡμιτελὲς κατέλιπε τελευτῶν ὁ ἀναθεὶς βασιλεύς· ὁμοίως δὲ καὶ ἡ Ἀκαδημία καὶ οἱ κῆποι τῶν φιλοσόφων καὶ τὸ Ὠιδεῖον καὶ ἡ ποικίλη στοὰ καὶ τὰ ἱερὰ τὰ ἐν τῇ πό[λει πλεῖστα] ἔχοντα τεχνιτῶν ἔργα.

Πολὺ δ' ἂν πλείων εἴη λόγος, εἰ τοὺς ἀρχηγέτας C.397 τοῦ κτίσματος ἐξετάζοι τις ἀρξάμενος ἀπὸ Κέκροπος· 18 οὐδὲ γὰρ ὁμοίως λέγουσιν ἅπαντες. τοῦτο δὲ καὶ ἀπὸ τῶν ὀνομάτων δῆλον· Ἀκτὴν μὲν γὰρ ἀπὸ Ἀκταίωνος φασίν, Ἀτθίδα δὲ καὶ Ἀττικὴν ἀπὸ Ἀτθίδος τῆς Κραναοῦ, ἀφ' οὗ καὶ Κραναοὶ οἱ ἔνοικοι, Μοψοπίαν δὲ ἀπὸ Μοψόπου, Ἰωνίαν δὲ ἀπὸ Ἴωνος τοῦ Ξούθου, Ποσειδωνίαν δὲ καὶ Ἀθήνας ἀπὸ τῶν ἐπωνύμων θεῶν. εἴρηται δ' ὅτι κἀνταῦθα φαίνεται τὸ τῶν Πελασγῶν ἔθνος ἐπιδημῆσαν, καὶ διότι ὑπὸ τῶν Ἀττικῶν Πελαργοὶ προσηγορεύθησαν διὰ τὴν πλάνην.

Ὅσῳ δὲ πλέον ἐστὶ τὸ φιλότιμον περὶ τὰ ἔνδοξα 19 καὶ πλείους οἱ λαλήσαντές τι περὶ αὐτῶν, τοσῷδε μείζων ὁ ἔλεγχος, ἐὰν μὴ κρατῇ τις τῆς ἱστορίας· οἷον ἐν τῇ συναγωγῇ τῶν ποταμῶν ὁ Καλλίμαχος γελᾶν φησιν, εἴ τις θαρρεῖ γράφειν τὰς τῶν Ἀθηναίων παρθένους „ἀφύσσεσθαι καθαρὸν γάνος Ἠριδανοῖο," οὗ καὶ τὰ βοσκήματα ἀπόσχοιτ' ἄν. εἰσὶ μὲν νῦν αἱ πηγαὶ καθαροῦ καὶ ποτίμου ὕδατος, ὥς φασιν, ἐκτὸς τῶν Διοχάρους καλουμένων πυλῶν πλησίον τοῦ Λυκείου· πρότερον δὲ καὶ κρήνη κατεσκεύαστό τις πλησίον πολλοῦ καὶ καλοῦ ὕδατος· εἰ δὲ μὴ νῦν, τί ἂν εἴη θαυμαστόν, εἰ πάλαι πολὺ καὶ καθαρὸν ἦν ὥστε καὶ πότιμον εἶναι, μετέβαλε δὲ ὕστερον; ἐν μὲν οὖν τοῖς καθ' ἕκαστα τοσούτοις οὖσιν οὐκ ἐνδέχεται διατρίβειν, οὐ μὴν οὐδὲ σιγῇ παρελθεῖν ὥστε μηδ' ἐν κεφαλαίῳ μνησθῆναί τινων.

Τοσαῦτ' οὖν ἀπόχρη προσθεῖσιν ὅτι φησὶ Φι- 20 λόχορος πορθουμένης τῆς χώρας ἐκ θαλάττης μὲν ὑπὸ Καρῶν ἐκ γῆς δὲ ὑπὸ Βοιωτῶν, οὓς ἐκάλουν Ἄονας, Κέκροπα πρῶτον εἰς δώδεκα πόλεις συνοικίσαι τὸ πλῆθος, ὧν ὀνόματα Κεκροπία Τετράπολις Ἐπακρία Δε-

κέλεια Ἐλευσὶς Ἄφιδνα (λέγουσι δὲ καὶ πληθυντικῶς Ἀφίδνας) Θόρικος Βραυρὼν Κύθηρος Σφηττὸς Κηφισιά .... πάλιν δ᾽ ὕστερον εἰς μίαν πόλιν συναγαγεῖν λέγεται τὴν νῦν τὰς δώδεκα Θησεύς. ἐβασιλεύοντο μὲν [οὖν οἱ Ἀθηναῖοι] πρότερον, εἶτ᾽ εἰς δημοκρατίαν μετέστησαν· τυράννων δ᾽ ἐπιθεμένων αὐτοῖς, Πεισιστράτου καὶ τῶν παίδων, ὕστερόν τε ὀλιγαρχίας γενομένης τῆς τε τῶν τετρακοσίων καὶ τῆς τῶν τριάκοντα τυράννων, οὓς ἐπέστησαν Λακεδαιμόνιοι, τούτους μὲν διεκρούσαντο ῥᾳδίως, ἐφύλαξαν δὲ τὴν δη-
C.398 μοκρατίαν μέχρι τῆς Ῥωμαίων ἐπικρατείας. καὶ γὰρ εἴ τι μικρὸν ὑπὸ τῶν Μακεδονικῶν βασιλέων παρελυπήθησαν ὥσθ᾽ ὑπακούειν αὐτῶν ἀναγκασθῆναι, τόν γε ὁλοσχερῆ τύπον τῆς πολιτείας τὸν αὐτὸν διετήρουν. ἔνιοι δέ φασι καὶ βέλτιστα τότε αὐτοὺς πολιτεύσασθαι δεκαετῆ χρόνον ὃν ἦρχε Μακεδόνων Κάσανδρος. οὗτος γὰρ ὁ ἀνὴρ πρὸς μὲν τὰ ἄλλα δοκεῖ τυραννικώτερος γενέσθαι, πρὸς Ἀθηναίους δὲ εὐγνωμόνησε λαβὼν ὑπήκοον τὴν πόλιν· ἐπέστησε γὰρ τῶν πολιτῶν Δημήτριον τὸν Φαληρέα τῶν Θεοφράστου τοῦ φιλοσόφου γνωρίμων, ὃς οὐ μόνον οὐ κατέλυσε τὴν δημοκρατίαν ἀλλὰ καὶ ἐπηνώρθωσε. δηλοῖ δὲ τὰ ὑπομνήματα ἃ συνέγραψε περὶ τῆς πολιτείας ταύτης ἐκεῖνος. ἀλλ᾽ οὕτως ὁ φθόνος ἴσχυσε καὶ ἡ πρὸς ὀλίγους ἀπέχθεια ὥστε μετὰ τὴν Κασάνδρου τελευτὴν ἠναγκάσθη φυγεῖν εἰς Αἴγυπτον· τὰς δ᾽ εἰκόνας αὐτοῦ πλείους ἢ τριακοσίας κατέσπασαν οἱ ἐπαναστάντες καὶ κατεχώνευσαν, ἔνιοι δὲ καὶ προστιθέασιν ὅτι καὶ εἰς ἀμίδας. Ῥωμαῖοι δ᾽ οὖν παραλαβόντες αὐτοὺς δημοκρατουμένους ἐφύλαξαν τὴν αὐτονομίαν αὐτοῖς καὶ τὴν ἐλευθερίαν. ἐπιπεσὼν δ᾽ ὁ Μιθριδατικὸς πόλεμος τυράννους αὐτοῖς κατέστησεν οὓς ὁ βασιλεὺς ἐβούλετο· τὸν

δ' ἰσχύσαντα μάλιστα τὸν Ἀριστίωνα καὶ ταύτην βιασάμενον τὴν πόλιν ἐκ πολιορκίας ἑλὼν Σύλλας ὁ τῶν Ῥωμαίων ἡγεμὼν ἐκόλασε, τῇ δὲ πόλει συγγνώμην ἔνειμε· καὶ μέχρι νῦν ἐν ἐλευθερίᾳ τέ ἐστι καὶ τιμῇ παρὰ τοῖς Ῥωμαίοις.

Μετὰ δὲ τὸν Πειραιᾶ Φαληρεῖς δῆμος ἐν τῇ ἐφε- 21
ξῆς παραλίᾳ· εἶθ' Ἁλιμούσιοι Αἰξωνεῖς Ἁλαιεῖς οἱ Αἰξωνικοὶ Ἀναγυράσιοι· εἶτα Θοραιεῖς Λαμπτρεῖς Αἰγιλιεῖς Ἀναφλύστιοι Ἀζηνιεῖς· οὗτοι μὲν οἱ μέχρι τῆς ἄκρας τοῦ Σουνίου. μεταξὺ δὲ τῶν λεχθέντων δήμων μακρὰ ἄκρα, πρώτη μετὰ τοὺς Αἰξωνέας Ζωστήρ, εἶτ' ἄλλη μετὰ Θοραιέας Ἀστυπάλαια· ὧν τῆς μὲν πρόκειται νῆσος Φάβρα τῆς δ' Ἐλαιοῦσσα· καὶ κατὰ τοὺς Αἰξωνέας δ' ἔστιν Ὑδροῦσσα· περὶ δὲ Ἀνάφλυστόν ἐστι καὶ τὸ Πανεῖον καὶ τὸ τῆς Κωλιάδος Ἀφροδίτης ἱερόν, εἰς ὃν τόπον ἐκκυμανθῆναι τὰ τελευταῖα τὰ ἐκ τῆς περὶ Σαλαμῖνα ναυμαχίας τῆς Περσικῆς ναυάγιά φασι, περὶ ὧν καὶ τὸν Ἀπόλλω προειπεῖν „Κωλιάδες δὲ γυναῖκες „ἐρετμοῖσι φρύξουσι.“ πρόκειται δὲ καὶ τούτων τῶν τόπων Βέλβινα νῆσος οὐ πολὺ ἄπωθεν καὶ ὁ Πατρόκλου χάραξ· ἔρημοι δ' αἱ πλεῖσται τούτων.

Κάμψαντι δὲ τὴν κατὰ τὸ Σούνιον ἄκραν ἀξιόλο- 22
γος δῆμος Σούνιον, εἶτα Θόρικος, εἶτα Ποταμὸς δῆμος
οὕτω καλούμενος, ἐξ οὗ οἱ ἄνδρες Ποτάμιοι, εἶτα Πρα- C.399
σιὰ Στειριὰ Βραυρών, ὅπου τὸ τῆς Βραυρωνίας Ἀρτέμιδος ἱερόν, [Ἁλαὶ Ἀραφη]νίδες, ὅπου τὸ τῆς Ταυροπόλου, Μυρρινοῦς Προβάλινθος Μαραθών, ὅπου Μιλτιάδης τὰς μετὰ Δάτιος τοῦ Πέρσου δυνάμεις ἄρδην διέφθειρεν οὐ περιμείνας ὑστερίζοντας Λακεδαιμονίους διὰ τὴν πανσέληνον· ἐνταῦθα μεμυθεύκασι καὶ τὸν Μαραθώνιον ταῦρον ὃν ἀνεῖλε Θησεύς. μετὰ δὲ Μαραθῶνα Τρικόρυνθος, εἶτα Ῥαμνοῦς, [ὅπου] τὸ

τῆς Νεμέσεως ἱερόν, εἶτα Ψαφὶς ἡ τῶν Ὠρωπίων· ἐνταῦθα δέ που καὶ τὸ Ἀμφιαράειόν ἐστι τετιμημένον ποτὲ μαντεῖον, ὅπου φυγόντα τὸν Ἀμφιάρεων, ὥς φησι Σοφοκλῆς, „ἐδέξατο ῥαγεῖσα Θηβαία κόνις αὐτοῖσιν „ὅπλοις καὶ τετρωρίστῳ δίφρῳ.“ Ὠρωπὸς δ' ἐν ἀμφισβητησίμῳ γεγένηται πολλάκις· ἵδρυται γὰρ ἐν μεθορίῳ τῆς τε Ἀττικῆς καὶ τῆς Βοιωτίας. πρόκειται δὲ τῆς παραλίας ταύτης πρὸ μὲν τοῦ Θορίκου καὶ τοῦ Σουνίου νῆσος Ἑλένη τραχεῖα καὶ ἔρημος, παραμήκης ὅσον ἑξήκοντα σταδίων τὸ μῆκος, ἧς φασι μεμνῆσθαι τὸν ποιητὴν ἐν οἷς Ἀλέξανδρος λέγει πρὸς τὴν Ἑλένην „οὐδ' „ὅτε σε πρῶτον Λακεδαίμονος ἐξ ἐρατεινῆς [ἔπλεον] „ἁρπάξας ἐν ποντοπόροισι νέεσσι, νήσῳ δ' ἐν Κρανάῃ ἐμίγην φιλότητι καὶ εὐνῇ.“ ταύτην γὰρ λέγει Κρανάην τὴν νῦν Ἑλένην ἀπὸ τοῦ ἐκεῖ γενέσθαι τὴν μῖξιν. μετὰ δὲ τὴν Ἑλένην ἡ Εὔβοια πρόκειται τῆς ἑξῆς παραλίας, ὁμοίως στενὴ καὶ μακρὰ καὶ κατὰ μῆκος τῇ ἠπείρῳ παραβεβλημένη καθάπερ ἡ Ἑλένη. ἔστι δ' ἀπὸ τοῦ Σουνίου πρὸς τὸ νότιον τῆς Εὐβοίας ἄκρον, ὃ καλοῦσι Λευκὴν ἀκτήν, σταδίων τριακοσίων πλοῦς· ἀλλὰ περὶ Εὐβοίας μὲ[ν λέξομεν ὕστερον], τοὺς δ' ἐν τῇ μεσογαίᾳ δήμους τῆς Ἀττικῆς μακρὸν εἰπεῖν διὰ τὸ πλῆθος.

23 Τῶν δ' ὀρῶν τὰ μὲν ἐν ὀνόματι μάλιστά ἐστιν ὅ τε Ὑμηττὸς καὶ Βριλησσὸς καὶ Λυκαβηττός, ἔτι δὲ Πάρνης καὶ Κορυδαλλός. μαρμάρου δ' ἐστὶ τῆς τε Ὑμηττίας καὶ τῆς Πεντελικῆς κάλλιστα μέταλλα πλησίον τῆς πόλεως· ὁ δ' Ὑμηττὸς καὶ μέλι ἄριστον ποιεῖ. τὰ δ' ἀργυρεῖα τὰ ἐν τῇ Ἀττικῇ κατ' ἀρχὰς μὲν ἦν ἀξιόλογα, νυνὶ δ' ἐκλείπει· καὶ δὴ καὶ οἱ ἐργαζόμενοι, τῆς μεταλλείας ἀσθενῶς ὑπακουούσης, τὴν παλαιὰν ἐκβολάδα καὶ σκωρίαν ἀναχωνεύοντες εὕρισκον ἔτι ἐξ αὐτῆς

ἀποκαθαιρόμενον ἀργύριον, τῶν ἀρχαίων ἀπείρως καμινευόντων. τοῦ δὲ μέλιτος ἀρίστου τῶν πάντων ὄντος τοῦ Ἀττικοῦ πολὺ βέλτιστόν φασι τὸ ἐν τοῖς ἀργυρείοις C.400, ὃ καὶ ἀκάπνιστον καλοῦσιν ἀπὸ τοῦ τρόπου τῆς σκευασίας.

Ποταμοὶ δ' εἰσὶν ὁ μὲν Κηφισσὸς ἐκ Τρινεμέων 24 τὰς ἀρχὰς ἔχων ῥέων δὲ διὰ τοῦ πεδίου, ἐφ' οὗ καὶ ἡ γέφυρα καὶ οἱ γεφυρισμοί, διὰ δὲ τῶν σκελῶν τῶν ἀπὸ τοῦ ἄστεος εἰς τὸν Πειραιᾶ καθηκόντων ἐκδίδωσιν εἰς τὸ Φαληρικόν, χειμαρρώδης τὸ πλέον, θέρους δὲ μειοῦται τελέως. ἔστι δὲ τοιοῦτος μᾶλλον ὁ Ἰλισσός, ἐκ θατέρου μέρους τοῦ ἄστεος ῥέων εἰς τὴν αὐτὴν παραλίαν ἐκ τῶν ὑπὲρ τῆς Ἄγρας καὶ τοῦ Λυκείου μερῶν καὶ τῆς πηγῆς ἣν ὕμνηκεν ἐν Φαίδρῳ Πλάτων. περὶ μὲν τῆς Ἀττικῆς ταῦτα.

Ἑξῆς δ' ἐστὶν ἡ Βοιωτία, περὶ ἧς λέγοντα καὶ περὶ 2 τῶν συνεχῶν ἐθνῶν ἀνάμνησιν ποιήσασθαι χρὴ τοῦ σαφοῦς χάριν ὧν εἴπομεν πρότερον. [ἐλέγομ]εν δὲ τὴν ἀπὸ Σουνίου παραλίαν μέχρι Θετταλο[νικείας] ἐπὶ τὰς ἄρκτους τετάσθαι, μικρὸν ἐκκλίνουσαν [πρὸς δύσιν καὶ] ἔχουσαν τὴν θάλατταν πρὸς ἕω, τὰ δ' ὑπερ[κείμενα μέρ]η πρὸς δύσιν ὡς ἂν ταινίας τινὰς διὰ τῆς [πάσης χώρας] τεταμένας παραλλήλους· ὧν πρώτη ἐστὶν [ἡ Ἀττικὴ σὺν τῇ] Μεγαρίδι ὡς ἂν ταινία τις, τὸ μὲν ἑωθι[νὸν πλευρὸν ἔχου]σα τὴν ἀπὸ Σουνίου μέχρι Ὠρωποῦ καὶ ....ίας, τὸ δ' ἑσπέριον τόν τε Ἰσθμὸν καὶ τὴν [Ἀλκυονίδα θάλ]ατταν τὴν κατὰ Παγὰς μέχρι τῶν [τόπων τῆς Βοιωτί]ας τῶν περὶ Κρέουσαν· τὰ δὲ λοιπὰ [τὴν ἀπὸ Σουνίου] μέχρι Ἰσθμοῦ παραλίαν καὶ τὴν ὡς ἂν ....ς ὀρεινὴν τὴν διείργουσαν ἀπὸ τῆς [Βοιωτίας τὴν Ἀ]ττικήν. δευτέρα δ' ἐστὶν ἡ Βοιωτία ἀπὸ τῆς ἕω ἐπὶ δύσιν τεταμένη ταινία

τις ἀπὸ τῆς κατ' Εὔβοιαν θαλάττης ἐπὶ θάλατταν τὴν κατὰ τὸν Κρισαῖον κόλπον, ἰσομήκης πως τῇ Ἀττικῇ ἢ καὶ ἐλάττων κατὰ μῆκος· ἀρετῇ μέντοι τῆς χώρας πάμπολυ διαφέρει.

2 Ἔφορος δὲ καὶ ταύτῃ κρείττω τὴν Βοιωτίαν ἀποφαίνει τῶν ὁμόρων ἐθνῶν καὶ ὅτι μόνη τριθάλαττός ἐστι καὶ λιμένων εὐπορεῖ πλειόνων, ἐπὶ μὲν τῷ Κρισαίῳ κόλπῳ καὶ τῷ Κορινθιακῷ τὰ ἐκ τῆς Ἰταλίας καὶ Σικελίας καὶ Λιβύης δεχομένη, ἐπὶ δὲ τῶν πρὸς Εὔβοιαν μερῶν ἐφ' ἑκάτερα τοῦ Εὐρίπου σχιζομένης τῆς παραλίας τῇ μὲν ἐπὶ τὴν Αὐλίδα καὶ τὴν Ταναγρικὴν τῇ δ' ἐπὶ τὸν Σαλγανέα καὶ τὴν Ἀνθηδόνα, τῇ μὲν εἶναι συνεχῆ τὴν κατ' Αἴγυπτον καὶ Κύπρον καὶ τὰς νήσους θάλατταν τῇ δὲ τὴν κατὰ Μακεδόνας καὶ τὴν Προποντίδα καὶ τὸν Ἑλλήσποντον. προστίθησι δὲ ὅτι καὶ τὴν Εὔβοιαν τρόπον τινὰ μέρος αὐτῆς πεποίηκεν ὁ Εὔριπος οὕτω στενὸς ὢν καὶ γεφύρᾳ συνεζευγμένος πρὸς αὐ-
C.401 τὴν διπλέθρῳ. τὴν μὲν οὖν χώραν ἐπαινεῖ διὰ ταῦτα, καί φησι πρὸς ἡγεμονίαν εὐφυῶς ἔχειν, ἀγωγῇ δὲ καὶ παιδείᾳ μὴ χρησαμένους * ἐπεὶ μηδὲ τοὺς ἀεὶ προϊσταμένους αὐτῆς, εἰ καί [τί] ποτε κατώρθωσαν, ἐπὶ μικρὸν τὸν χρόνον συμμεῖναι, καθάπερ Ἐπαμεινώνδας ἔδειξε· τελευτήσαντος γὰρ ἐκείνου τὴν ἡγεμονίαν ἀποβαλεῖν εὐθὺς τοὺς Θηβαίους γευσαμένους αὐτῆς μόνον· αἴτιον δὲ εἶναι τὸ λόγων καὶ ὁμιλίας τῆς πρὸς ἀνθρώπους ὀλιγωρῆσαι, μόνης δ' ἐπιμεληθῆναι τῆς κατὰ πόλεμον ἀρετῆς. ἔδει δὲ προσθεῖναι διότι τοῦτο πρὸς Ἕλληνας μάλιστα χρήσιμόν ἐστιν, ἐπεὶ πρός γε τοὺς βαρβάρους βία λόγου κρείττων ἐστί. καὶ Ῥωμαῖοι δὲ τὸ παλαιὸν μὲν ἀγριωτέροις ἔθνεσι πολεμοῦντες οὐδὲν ἐδέοντο τῶν τοιούτων παιδευμάτων, ἀφ' οὗ δὲ ἤρξαντο πρὸς ἡμερώτερα ἔθνη καὶ φῦλα τὴν πραγμα-

τείαν ἔχειν, ἐπέθεντο καὶ ταύτῃ τῇ ἀγωγῇ καὶ κατέστη-
σαν πάντων κύριοι.

Ἡ δ' οὖν Βοιωτία πρότερον μὲν ὑπὸ βαρβάρων 3
ᾠκεῖτο Ἀόνων καὶ Τεμμίκων ἐκ τοῦ Σουνίου πεπλα-
νημένων καὶ Λελέγων καὶ Ὑάντων· εἶτα Φοίνικες
ἔσχον οἱ μετὰ Κάδμου, ὃς τήν τε Καδμείαν ἐτείχισε
καὶ τὴν ἀρχὴν τοῖς ἐκγόνοις ἀπέλιπεν. ἐκεῖνοι δὲ τὰς
Θήβας τῇ Καδμείᾳ προσέκτισαν, καὶ συνεφύλαξαν τὴν
ἀρχὴν ἡγούμενοι τῶν πλείστων Βοιωτῶν ἕως τῆς τῶν
Ἐπιγόνων στρατείας. κατὰ δὲ τούτους ὀλίγον χρόνον
ἐκλιπόντες τὰς Θήβας ἐπανῆλθον πάλιν· ὡς δ' αὔτως
ὑπὸ Θρᾳκῶν καὶ Πελασγῶν ἐκπεσόντες ἐν Θετταλίᾳ
συνεστήσαντο τὴν ἀρχὴν μετὰ Ἀρναίων ἐπὶ πολὺν
χρόνον, ὥστε καὶ Βοιωτοὺς κληθῆναι πάντας. εἶτ'
ἀνέστρεψαν εἰς τὴν οἰκείαν, ἤδη τοῦ Αἰολικοῦ στόλου
παρεσκευασμένου περὶ Αὐλίδα τῆς Βοιωτίας, ὃν ἔστελ-
λον εἰς τὴν Ἀσίαν οἱ Ὀρέστου παῖδες. προσθέντες δὲ
τῇ Βοιωτίᾳ τὴν Ὀρχομενίαν (οὐ γὰρ ἦσαν κοινῇ πρό-
τερον, οὐδ' Ὅμηρος μετὰ Βοιωτῶν αὐτοὺς κατέλεξεν
ἀλλ' ἰδίᾳ, Μινύας προσαγορεύσας) μετ' ἐκείνων ἐξέ-
βαλον τοὺς μὲν Πελασγοὺς εἰς Ἀθήνας, ἀφ' ὧν ἐκλή-
θη μέρος τι τῆς πόλεως Πελασγικόν (ᾤκησαν δὲ ὑπὸ
τῷ Ὑμηττῷ), τοὺς δὲ Θρᾷκας ἐπὶ τὸν Παρνασσόν.
Ὕαντες δὲ τῆς Φωκίδος Ὕαν πόλιν ᾤκισαν.

Φησὶ δ' Ἔφορος τοὺς μὲν Θρᾷκας ποιησαμένους 4
σπονδὰς πρὸς τοὺς Βοιωτοὺς ἐπιθέσθαι νύκτωρ στρα-
τοπεδεύουσιν ὀλιγωρότερον ὡς εἰρήνης γεγονυίας·
διακρουσαμένων [δ'] αὐτοὺς αἰτιωμένων τε ἅμα ὅτι
τὰς σπονδὰς παρέβαινον, μὴ παραβῆναι φάσκειν ἐκεί-
νους· συνθέσθαι γὰρ ἡμέρας, νύκτωρ δ' ἐπιθέσθαι· C.402
ἀφ' οὗ δὴ καὶ τὴν παροιμίαν εἰρῆσθαι „Θρᾳκία παρεύ-
„ρεσις.“ τοὺς δὲ Πελασγοὺς μένοντος ἔτι τοῦ πολέμου

χρηστηριασομένους ἀπελθεῖν, ἀπελθεῖν δὲ καὶ τοὺς Βοιωτούς· τὸν μὲν οὖν τοῖς Πελασγοῖς δοθέντα χρησμὸν ἔφη μὴ ἔχειν εἰπεῖν, τοῖς δὲ Βοιωτοῖς ἀνελεῖν τὴν προφῆτιν ἀσεβήσαντας εὖ πράξειν· τοὺς δὲ θεωροὺς ὑπονοήσαντας χαριζομένην τοῖς Πελασγοῖς τὴν προφῆτιν κατὰ τὸ συγγενὲς (ἐπειδὴ καὶ τὸ ἱερὸν Πελασγικὸν ἐξ ἀρχῆς ὑπῆρξεν) οὕτως ἀνελεῖν, ἁρπάσαντας τὴν ἄνθρωπον εἰς πυρὰν ἐμβαλεῖν ἐνθυμηθέντας, εἴτε κακουργήσασαν εἴτε μή, πρὸς ἀμφότερα ὀρθῶς ἔχειν, εἰ μὲν παρεχρηστηρίασε, κολασθείσης αὐτῆς, εἰ δ' οὐδὲν ἐκακούργησε, τὸ προσταχθὲν αὐτῶν πραξάντων. τοὺς δὲ περὶ τὸ ἱερὸν τὸ μὲν ἀκρίτους κτείνειν τοὺς πράξαντας, καὶ ταῦτ' ἐν ἱερῷ, μὴ δοκιμάσαι, καθιστάναι δ' εἰς κρίσιν, καλεῖν δ' ἐπὶ τὰς ἱερείας, ταύτας δὲ εἶναι τὰς προφήτιδας αἳ λοιπαὶ τριῶν οὐσῶν περιῆσαν· λεγόντων δ' ὡς οὐδαμοῦ νόμος εἴη δικάζειν γυναῖκας, προσελέσθαι καὶ ἄνδρας ἴσους ταῖς γυναιξὶ τὸν ἀριθμόν· τοὺς μὲν οὖν ἄνδρας ἀπογνῶναι, τὰς δὲ γυναῖκας καταγνῶναι, ἴσων δὲ τῶν ψήφων γενομένων τὰς ἀπολυούσας νικῆσαι· ἐκ δὲ τούτων Βοιωτοῖς μόνοις ἄνδρας προθεσπίζειν ἐν Δωδώνῃ. τὰς μέντοι προφήτιδας ἐξηγουμένας τὸ μαντεῖον εἰπεῖν, ὅτι προστάττοι ὁ θεὸς τοῖς Βοιωτοῖς τοὺς παρ' αὐτοῖς τρίποδας * συλλέγοντας εἰς Δωδώνην πέμπειν κατ' ἔτος· καὶ δὴ καὶ ποιεῖν τοῦτο· ἀεὶ γάρ τινα τῶν ἀνακειμένων τριπόδων νύκτωρ καθαιροῦντας καὶ κατακαλύπτοντας ἱματίοις ὡς ἂν λάθρᾳ τριποδηφορεῖν εἰς Δωδώνην.

5 Μετὰ δὲ ταῦτα τὴν Αἰολικὴν ἀποικίαν συνέπραξαν τοῖς περὶ Πενθίλον, πλείστους ἐξ ἑαυτῶν συμπέμψαντες, ὥστε καὶ Βοιωτικὴν προσαγορευθῆναι. ὕστε-

9. post κακουργήσασαν: περὶ τῶν γυναικῶν τῶν δικαστῶν

ρον δὲ χρόνοις πολλοῖς ὁ Περσικὸς πόλεμος περὶ Πλα-
ταιὰς γενόμενος διελυμήνατο τὴν χώραν. εἶτ' ἀνέλα-
βον σφᾶς πάλιν ἐπὶ τοσοῦτον ὥστε καὶ τῆς τῶν Ἑλλή-
νων ἀρχῆς ἀμφισβητῆσαι Θηβαίους δυσὶ μάχαις κρα-
τήσαντας Λακεδαιμονίους. Ἐπαμεινώνδα δὲ πεσόντος
ἐν τῇ μάχῃ ταύτης μὲν τῆς ἐλπίδος διεσφάλησαν, ὑπὲρ
δὲ τῶν Ἑλλήνων ὅμως ἐπολέμησαν πρὸς Φωκέας τοὺς
τὸ ἱερὸν συλήσαντας τὸ κοινόν. κακωθέντες δ' ὑπό τε C.403
τούτου τοῦ πολέμου καὶ τῶν Μακεδόνων ἐπιθεμένων
τοῖς Ἕλλησιν, ὑπὸ τῶν αὐτῶν τούτων καὶ ἀπέβαλον
τὴν πόλιν κατασκαφεῖσαν καὶ ἀνέλαβον ἀνακτισθεῖ-
σαν. ἐξ ἐκείνου δ' ἤδη πράττοντες ἐνδεέστερον ἀεὶ
μέχρι εἰς ἡμᾶς οὐδὲ κώμης ἀξιολόγου τύπον σῴζουσι·
καὶ [αἱ] ἄλλαι δὲ πόλεις ἀνὰ λόγον πλὴν Τανάγρας καὶ
Θεσπιῶν· αὗται δ' ἱκανῶς συμμένουσι πρὸς ἐκείνας
κρινόμεναι.

Ἑξῆς δὲ τὴν περιήγησιν τῆς χώρας ποιητέον ἀρ- 6
ξαμένους ἀπὸ τῆς πρὸς Εὔβοιαν παραλίας τῆς συνε-
χοῦς τῇ Ἀττικῇ. ἀρχὴ δ' ὁ Ὠρωπὸς καὶ ὁ ἱερὸς λιμὴν
ὃν καλοῦσι Δελφίνιον, καθ' ὃν ἡ παλαιὰ Ἐρέτρια ἐν
τῇ Εὐβοίᾳ, διάπλουν ἔχουσα ἑξήκοντα σταδίων. μετὰ
δὲ τὸ Δελφίνιον ὁ Ὠρωπὸς ἐν εἴκοσι σταδίοις· κατὰ δὲ
τοῦτόν ἐστιν ἡ νῦν Ἐρέτρια, διάπλους δ' ἐπ' αὐτὴν
στάδιοι τετταράκοντα.

Εἶτα Δήλιον τὸ ἱερὸν τοῦ Ἀπόλλωνος ἐκ Δήλου 7
ἀφιδρυμένον, Ταναγραίων πολίχνιον Αὐλίδος διέχον
σταδίους τριάκοντα, ὅπου μάχῃ λειφθέντες Ἀθηναῖοι
προτροπάδην ἔφυγον· ἐν δὲ τῇ φυγῇ πεσόντα ἀφ' ἵπ-
που Ξενοφῶντα ἰδὼν κείμενον τὸν Γρύλλου Σωκρά-
της ὁ φιλόσοφος στρατεύων πεζὸς τοῦ ἵππου γεγονό-
τος ἐκποδὼν ἀνέλαβε τοῖς ὤμοις αὐτόν, καὶ ἔσωσεν ἐπὶ
πολλοὺς σταδίους ἕως ἐπαύσατο ἡ φυγή.

8 Εἶτα λιμὴν μέγας ὃν καλοῦσι Βαθὺν λιμένα· εἶθ' ἡ Αὐλὶς πετρῶδες χωρίον καὶ κώμη Ταναγραίων· λιμὴν δ' ἐστὶ πεντήκοντα πλοίοις, ὥστ' εἰκὸς τὸν ναύσταθμον τῶν Ἑλλήνων ἐν τῷ μεγάλῳ ὑπάρξαι λιμένι. καὶ ὁ Εὔριπος δ' ἐστὶ πλησίον ὁ Χαλκίδος, εἰς ὃν ἀπὸ Σουνίου στάδιοι * ἑβδομήκοντα· ἔστι δ' ἐπ' αὐτῷ γέφυρα δίπλεθρος, ὡς εἴρηκα· πύργος δ' ἑκατέρωθεν ἐφέστηκεν ὁ μὲν ἐκ τῆς Χαλκίδος ὁ δ' ἐκ τῆς Βοιωτίας· διῳκοδόμηται δ' εἰς αὐτοὺς σῦριγξ. περὶ δὲ τῆς παλιρροίας τοῦ Εὐρίπου τοσοῦτον μόνον εἰπεῖν ἱκανόν, ὅτι ἑπτάκις μεταβάλλειν φασὶ καθ' ἡμέραν ἑκάστην καὶ νύκτα· τὴν δ' αἰτίαν ἐν ἄλλοις σκεπτέον.

9 Πλησίον δ' ἐστὶν ἐφ' ὕψους κείμενον χωρίον Σαλγανεύς, ἐπώνυμον τοῦ ταφέντος ἐπ' αὐτῷ Σαλγανέως ἀνδρὸς Βοιωτίου, καθηγησαμένου τοῖς Πέρσαις εἰσπλέουσιν εἰς τὸν διάπλουν τοῦτον ἐκ τοῦ Μαλιακοῦ κόλπου, ὃν φασιν ἀναιρεθῆναι πρὶν ἢ τῷ Εὐρίπῳ συνάπτειν ὑπὸ τοῦ ναυάρχου Μεγαβάτου νομισθέντα κακοῦργον, ὡς ἐξ ἀπάτης ἐμβαλόντα τὸν στόλον εἰς τυφλὸν τῆς θαλάττης στενωπόν· αἰσθόμενον δὲ τὸν βάρβαρον τὴν περὶ αὐτὸν ἀπάτην μεταγνῶναί τε καὶ ταφῆς ἀξιῶσαι τὸν ἀναιτίως ἀποθανόντα.

C.404
10 Καὶ ἡ Γραῖα δ' ἐστὶ τόπος Ὠρωποῦ πλησίον καὶ τὸ ἱερὸν τοῦ Ἀμφιαράου καὶ τὸ Ναρκίσσου τοῦ Ἐρετριέως μνῆμα ὃ καλεῖται Σιγηλοῦ, ἐπειδὴ σιγῶσι παριόντες· τινὲς δὲ τῇ Τανάγρᾳ τὴν αὐτήν φασιν· ἡ Ποιμανδρὶς δ' ἐστὶν ἡ αὐτὴ τῇ Ταναγρικῇ· καλοῦνται δὲ καὶ Γεφυραῖοι οἱ Ταναγραῖοι. ἐκ Κνωπίας δὲ τῆς Θηβαϊκῆς μεθιδρύ[θη κατὰ χρησμὸν] δεῦρο τὸ Ἀμφιαράειον.

11 Καὶ ὁ Μυκαλησσὸς δὲ κώμη τῆς Ταναγραϊκῆς·

κεῖται δὲ παρ᾽ ὁδὸν [τὴν ἐκ] Θηβῶν εἰς Χαλκίδα· ὡς δ᾽ αὕτως καὶ τὸ Ἅρμα, τῆς Ταναγραϊκῆς κώμη ἔρημος περὶ τὴν Μυκαλησσόν, ἀπὸ τοῦ Ἀμφιαράου ἅρματος λαβοῦσα τοὔνομα, ἑτέρα οὖσα τοῦ Ἅρματος τοῦ κατὰ τὴν Ἀττικήν, ὅ ἐστι περὶ Φυλήν, δῆμον τῆς Ἀττικῆς ὅμορον τῇ Τανάγρᾳ. ἐντεῦθεν δὲ ἡ παροιμία τὴν ἀρχὴν ἔσχεν ἡ λέγουσα „ὁπόταν δι᾽ Ἅρματος ἀστράψῃ,“ ἀστραπήν τινα σημειουμένων κατὰ χρησμὸν τῶν λεγομένων Πυθαϊστῶν, βλεπόντων ὡς ἐπὶ τὸ Ἅρμα καὶ τότε πεμπόντων τὴν θυσίαν εἰς Δελφοὺς ὅταν ἀστράψαντα ἴδωσιν· ἐτήρουν δ᾽ ἐπὶ τρεῖς μῆνας, καθ᾽ ἕκαστον μῆνα ἐπὶ τρεῖς ἡμέρας καὶ νύκτας, ἀπὸ τῆς ἐσχάρας τοῦ ἀστραπαίου Διός· ἔστι δ᾽ αὕτη ἐν τῷ τείχει μεταξὺ τοῦ Πυθίου καὶ τοῦ Ὀλυμπίου. περὶ δὲ τοῦ Ἅρματος τοῦ Βοιωτιακοῦ οἱ μέν φασιν ἐκπεσόντος ἐκ τοῦ ἅρματος ἐν τῇ μάχῃ τοῦ Ἀμφιαράου κατὰ τὸν τόπον, ὅπου νῦν ἐστὶ τὸ ἱερὸν αὐτοῦ, τὸ ἅρμα ἔρημον ἐνεχθῆναι ἐπὶ τὸν ὁμώνυμον τόπον· οἱ δὲ τοῦ Ἀδράστου συντριβῆναι τὸ ἅρμα φεύγοντός φασιν ἐνταῦθα, τὸν δὲ διὰ τοῦ Ἀρείονος σωθῆναι. Φιλόχορος δ᾽ ὑπὸ τῶν κωμητῶν σωθῆναί φησιν αὐτόν, καὶ διὰ τοῦτο ἰσοπολιτείαν αὐτοῖς παρὰ τῶν Ἀργείων ὑπάρξαι.

*Ἔστι δὲ τῷ ἐκ Θηβῶν εἰς * Ἄργος ἀνιόντι ἐν ἀρι-* 12
στερᾷ ἡ Τάναγρα κ............. ἐν δεξιᾷ κεῖται· καὶ ἡ Ὑρία δὲ τῆς Ταναγραίας νῦν ἐστί, πρότερον δὲ τῆς Θηβαΐδος· ὅπου ὁ Ὑριεὺς μεμύθευται καὶ ἡ τοῦ Ὠρίωνος γένεσις, ἥν φησι Πίνδαρος ἐν τοῖς διθυράμβοις· κεῖται δ᾽ ἐγγὺς Αὐλίδος. ἔνιοι δὲ τὰς Ὑσιὰς Ὑρίην λέγεσθαί φασι, τῆς Παρασωπίας οὖσαν ὑπὸ τῷ Κιθαιρῶνι πλησίον Ἐρυθρῶν ἐν τῇ μεσογαίᾳ, ἄποικον Ὑριέων,

---

1. post *Χαλκίδα*: *καλοῦσι δὲ βοιωτιακῶς Μυκαλεττόν.*

κτίσμα δὲ Νυκτέως τοῦ Ἀντιόπης πατρός. εἰσὶ δὲ καὶ ἐν τῇ Ἀργείᾳ Ὑσίαι κώ[μη], οἱ δ' ἐξ αὐτῆς Ὑσιᾶται λέγονται. τῶν δ' Ἐρυθρῶν τούτων ἄποικοι αἱ ἐν Ἰωνίᾳ Ἐρυθραί. καὶ ὁ Ἑλεὼν δ' ἐστὶ κώμη Ταναγρική, ἀπὸ τῶν ἑλῶν ὠνομασμένη.

13 Μετὰ δὲ Σαλγανέα Ἀνθηδὼν πόλις λιμένα ἔχουσα, ἐσχάτη τῆς Βοιωτιακῆς παραλίας τῆς πρὸς Εὐβοίᾳ,
C.405 καθάπερ καὶ ὁ ποιητὴς εἴρηκεν „Ἀνθηδόνα τ' ἐσχατόωσαν.“ εἰσὶ μέντοι ἔτι προϊόντι μικρὸν πολίχναι δύο τῶν Βοιωτῶν, Λάρυμνά τε, παρ' ἣν ὁ Κηφισσὸς ἐκδίδωσι, καὶ ἔτι ἐπέκεινα Ἁλαί, ὁμώνυμοι τοῖς Ἀττικοῖς δήμοις. κατὰ δὲ τὴν παραλίαν ταύτην κεῖσθαί φασιν Αἰγὰς τὰς ἐν Εὐβοίᾳ, ἐν αἷς τὸ τοῦ Ποσειδῶνος ἱερὸν τοῦ Αἰγαίου· ἐμνήσθημεν δ' αὐτοῦ καὶ πρότερον. δίαρμα δ' ἐστὶν ἀπὸ μὲν τῆς Ἀνθηδόνος εἰς Αἰγὰς ἑκατὸν εἴκοσι στάδιοι, ἀπὸ δὲ τῶν ἄλλων τόπων πολὺ ἐλάττους· κεῖται δ' ἐπὶ ὄρους ὑψηλοῦ τὸ ἱερόν, ἦν δέ ποτε καὶ πόλις· ἐγγὺς δὲ τῶν [Αἰγῶν] καὶ αἱ Ὀρόβιαι. ἐν δὲ τῇ Ἀνθηδονίᾳ Μεσσάπιον ὄρος ἐστὶν ἀπὸ Μεσσάπου, ὃς εἰς τὴν Ἰαπυγίαν ἐλθὼν Μεσσαπίαν τὴν χώραν ἐκάλεσεν. ἐνταῦθα δὲ καὶ τὰ περὶ τὸν Γλαῦκον μυθεύεται τὸν Ἀνθηδόνιον, ὅν φασιν εἰς κῆτος μεταβαλεῖν.

14 Πλησίον δ' ἐστὶν Ἀνθηδόνος ἱεροπρεπὴς τόπος τῆς Βοιωτίας, ἴχνη πόλεως ἔχων, ὁ καλούμενος Ἴσος συστέλλοντι τὴν πρώτην συλλαβήν. οἴονται δέ τινες δεῖν γράφειν „Ἶσόν τε ζαθέην Ἀνθηδόνα τ' ἐσχατόωσαν“ ἐκτείνοντες τὴν πρώτην συλλαβὴν ποιητικῶς διὰ τὸ μέτρον, ἀντὶ τοῦ „Νῖσάν τε ζαθέην.“ ἡ γὰρ Νῖσα οὐδαμοῦ φαίνεται τῆς Βοιωτίας, ὥς φησιν Ἀπολλόδωρος ἐν τοῖς περὶ νεῶν. .... [ε]ἴη, εἰ μὴ τὴν Νῖσαν οὕτως εἴρηκεν· ἦν γὰρ ὁ .... Μεγαρικῇ,

ἐκεῖθεν ἀπῳκισμένη πρόσ[χωρος τοῦ Κιθα]ιρῶνος, ἐκλέλειπται δὲ νῦν. τινὲς δὲ γράφουσι „Κρεῦσάν τε „ζαθέην,“ τὴν νῦν Κρέουσαν δεχόμενοι, τὸ τῶν Θεσπιέων ἐπίνειον ἐν τῷ Κρισαίῳ κόλπῳ ἱδρυμένον· ἄλλοι δὲ „Φαράς τε ζαθέας.“ ἔστι δὲ τῆς τετρακωμίας τῆς περὶ Τάναγραν, Ἐλεῶνος Ἅρματος Μυκαλησσοῦ Φαρῶν. γράφουσι δὲ καὶ τοῦτο „Νῦσάν τε ζαθέην.“ κώμη δ' ἐστὶ τοῦ Ἑλικῶνος ἡ Νῦσα. ἡ μὲν οὖν παραλία τοιαύτη τις ἡ πρὸς Εὔβοιαν.

15 Τὰ δ' ἑξῆς ἐν τῇ μεσογαίᾳ πεδία ἐστὶ κοῖλα πάντοθεν ἐκ τῶν ἄλλων μερῶν ὄρεσι περιεχόμενα, τοῖς Ἀττικοῖς μὲν πρὸς νότου, πρὸς ἄρκτου δὲ τοῖς Φωκικοῖς· ἀπὸ δὲ τῆς ἑσπέρας ὁ Κιθαιρὼν λοξὸς ἐμπίπτει μικρὸν ὑπὲρ τῆς Κρισαίας θαλάττης, ἔχων τὴν ἀρχὴν συνεχῆ τοῖς Μεγαρικοῖς καὶ τοῖς Ἀττικοῖς ὄρεσιν, εἶτ' ἐπιστρέφων εἰς τὰ πεδία, παυόμενος δὲ περὶ τὴν Θηβαίαν. C.406

16 Τῶν δὲ πεδίων τούτων τὰ μὲν λιμνάζει, ποταμῶν ἀναχεομένων εἰς αὐτά, τῶν δ' ἐμπιπτόντων, εἶτα ἐκρύσεις λαμβανόντων· τὰ δ' ἀνέψυκται καὶ γεωργεῖται παντοδαπῶς διὰ τὴν εὐκαρπίαν. ὑπάντρου δὲ καὶ σηραγγώδους οὔσης κατὰ βάθους τῆς γῆς, σεισμοὶ γενόμενοι πολλάκις ἐξαίσιοι τοὺς μὲν ἔφραξαν τῶν πόρων τοὺς δὲ ἀνέῳξαν, τοὺς μὲν μέχρι τῆς ἐπιφανείας τοὺς δὲ δι' ὑπονόμων· συμβαίνει δὴ καὶ τοῖς ὕδασι τοῖς μὲν δι' ὑπονόμων φέρεσθαι τῶν ῥείθρων τοῖς δ' ἐπιπολῆς, τοῖς τε λιμναίοις καὶ τοῖς ποταμίοις. ἐγχωσθέντων δὲ κατὰ βάθους τῶν πόρων αὔξεσθαι τὰς λίμνας συμβαίνει μέχρι τῶν οἰκουμένων τόπων ὥστε καὶ πόλεις καταπίνεσθαι καὶ χώρας, ἀνοιχθέντων δὲ τῶν αὐτῶν ἢ ἄλλων ἀνακαλύπτεσθαι, καὶ τοὺς αὐτοὺς τόπους ποτὲ μὲν πλεῖσθαι ποτὲ δὲ πεζεύεσθαι, καὶ τὰς αὐ-

τὰς πόλεις ποτὲ μὲν ἐπὶ τῇ λίμνῃ ποτὲ δὲ ἄπωθεν κεῖσθαι.

17 Διττῶς δὲ τοῦτο γίνεται· καὶ γὰρ μενουσῶν ἀκινήτων τῶν πόλεων, ὅταν ἡ αὔξησις τῶν ὑδάτων ἥττων ᾖ τῆς ὑπερχύσεως διὰ ὕψος τῶν οἰκήσεων ἢ διὰ ἀπόστασιν, καὶ διὰ ἀνοικισμόν, ὅταν τῷ πλησιασμῷ κινδυνεύσαντες πολλάκις ἀπαλλαγὴν πορίσωνται τοῦ φόβου τὴν μετάληψιν τῶν χωρίων τῶν ἄπωθεν ἢ τῶν ἐν ὕψει. παρακολουθεῖ δὲ τοῖς οὕτως ἀνοικισθεῖσι τὸ τὴν αὐτὴν προσηγορίαν φυλάττουσιν, ἐτύμως πρότερον λεγομένοις ἀπὸ τοῦ συμβεβηκότος τοπικῶς, νῦν μη[κέτι] λέγεσθαι ἐτύμως· Πλαταιὰς γὰρ ἀπὸ τῆς πλάτης τῶν κωπῶν εἰρῆσθαι πιθανὸν καὶ Πλαταιέας τοὺς ἀπὸ κωπηλασίας ζῶντας, ἀλλὰ νῦν ἄπωθεν τῆς λίμνης οἰκοῦντες οὐκέτ᾽ ἂν προσαγορεύοιντο ἐτύμως. Ἕλος τε καὶ Ἑλεὼν καὶ Εἰλέσιον ἐκλήθη διὰ τὸ ἐπὶ τοῖς ἕλεσιν ἱδρῦσθαι· νῦν δὲ οὐχ ὁμοίως ἔχει ταῦτα, ἢ ἀνοικισθέντων ἢ τῆς λίμνης ἐπιπολὺ ταπεινωθείσης διὰ τὰς ὕστερον γενομένας ἐκρύσεις· καὶ γὰρ τοῦτο δυνατόν.

18 Δηλοῖ δὲ καὶ ὁ Κηφισσὸς τοῦτο μάλιστα τὴν Κωπαΐδα λίμνην πληρῶν. αὐξομένης γὰρ αὐτῆς ὥστε κινδυνεύειν καταποθῆναι τὰς Κώπας, [ἃς] ὅ τε ποιητὴς ὀνομάζει, καὶ ἀπ᾽ αὐτῶν ἡ λίμνη τὴν ἐπωνυμίαν εἴληφε, χάσμα γενηθὲν πρὸς τῇ λίμνῃ πλησίον τῶν Κωπῶν ἀνέῳξεν ὑπὸ γῆς ῥεῖθρον ὅσον τριάκοντα σταδίων καὶ ἐδέξατο τὸν ποταμόν, εἶτα ἐξέρρηξεν εἰς τὴν ἐπιφάνειαν κατὰ Λάρυμναν τῆς Λοκρίδος τὴν ἄνω· καὶ γὰρ ἑτέρα ἐστίν, ἧς [ἐμνήσθη]μεν, [ἡ] Βοιωτιακή, ἐπὶ τῇ θαλάττῃ, ᾗ προσέθεσαν Ῥωμαῖοι τὴν ἄνω. κα-
C.407 λεῖται δ᾽ ὁ τόπος Ἀγχόη· ἔστι δὲ καὶ λίμνη ὁμώνυμος· ἐντεῦθεν δ᾽ ἤδη ὁ Κηφισσὸς ἐκδίδωσιν ἐπὶ τὴν θάλατταν. τότε μὲν οὖν παυσαμένης τῆς πλημμυρίδος,

παῦλα καὶ τοῦ κινδύνου τοῖς παροικοῦσιν ὑπῆρξε, πλὴν τῶν ἤδη καταποθεισῶν πόλεων. πάλιν δ' ἐγχουμένων τῶν πόρων, ὁ μεταλλευτὴς Κράτης ἀνὴρ Χαλκιδεὺς ἀνακαθαίρειν τὰ ἐμφράγματα ἐπαύσατο στασιασάντων τῶν Βοιωτῶν, καίπερ, ὡς αὐτὸς ἐν τῇ πρὸς Ἀλέξανδρον ἐπιστολῇ φησιν, ἀνεψυγμένων ἤδη πολλῶν, ἐν οἷς οἱ μὲν τὸν Ὀρχομενὸν οἰκεῖσθαι τὸν ἀρχαῖον ὑπελάμβανον, οἱ δ' Ἐλευσῖνα καὶ Ἀθήνας παρὰ τὸν Τρίτωνα ποταμόν· λέγεται [δ' οἰκίσαι] Κέκροπα, ἡνίκα τῆς Βοιωτίας ἐπῆρξε καλουμένης τότε Ὠγυγίας, ἀφανισθῆναι δὲ ταύτας ἐπικλυσθείσας ὕστερον. γενέσθαι δέ φασιν καὶ κατὰ Ὀρχομενὸν χάσμα, καὶ δέξασθαι τὸν Μέλανα ποταμὸν τὸν ῥέοντα διὰ τῆς Ἁλιαρτίας καὶ ποιοῦντα ἐνταῦθα τὸ ἕλος τὸ φύον τὸν αὐλητικὸν κάλαμον. ἀλλ' οὗτος ἠφάνισται τελέως, εἴτε τοῦ χάσματος διαχέοντος αὐτὸν εἰς ἀδήλους πόρους, εἴτε τῶν περὶ Ἁλίαρτον ἑλῶν καὶ λιμνῶν προαναλισκόντων αὐτόν, ἀφ' ὧν ποιήεντα καλεῖ τὸν [τόπον] ὁ ποιητὴς „καὶ ποιήενθ' Ἁλίαρτον" λέγων.

Οὗτοι μὲν οὖν ἐκ τῶν Φωκικῶν ὀρῶν οἱ ποταμοὶ 19
καταφέρονται, ὧν ὁ Κηφισσὸς ἐκ Λιλαίας Φωκικῆς πόλεως τὴν ἀρχὴν λαμβάνει, καθάπερ καὶ Ὅμηρός φησιν „οἵ τε Λίλαιαν ἔχον πηγῆς ἔπι Κηφισσοῖο·" δι' Ἐλατείας δὲ ῥυεὶς μεγίστης τῶν ἐν Φωκεῦσι πόλεων, καὶ διὰ Παραποταμίων καὶ Φανοτέων ὁμοίως Φωκικῶν πολισμάτων, εἰς Χαιρώνειαν τῆς Βοιωτίας πρόεισιν, εἶτα διὰ τῆς Ὀρχομενίας καὶ τῆς Κορωνειακῆς εἰς τὴν Κωπαΐδα λίμνην ἐξίησι· καὶ ὁ Περμησσὸς δὲ καὶ ὁ Ὀλμειός, ἐκ τοῦ Ἑλικῶνος συμβάλλοντες ἀλλήλοις, εἰς τὴν αὐτὴν ἐμπίπτουσι λίμνην τὴν Κωπαΐδα τοῦ Ἁλιάρτου πλη[σίον· καὶ ἄλλα] δὲ ῥεύματα εἰς αὐτὴν ἐμβάλλει. ἔστι μὲν οὖν μεγάλη, τὴν περίμετρον

ἔχουσα ὀγδοήκοντα καὶ τριακοσίων σταδίων, αἱ δὲ ἐκρύσεις οὐδαμοῦ φαίνονται πλὴν τοῦ δεχομένου τὸν Κηφισσὸν χάσματος καὶ τῶν ἑλῶν.

20 [Τῶν δὲ περι]κειμένων λιμνῶν ἐστιν ἥ τε * Τρεφία καὶ ἡ Κ[ηφισσίς, ἧς] μέμνηται καὶ Ὅμηρος „ὅς ῥ' ἐν Ὕλῃ ναίεσκε μέγα πλούτοιο μεμηλώς, λίμνῃ κεκλιμένος Κηφισσίδι.“ οὐ γὰρ λίμνην τὴν Κωπαΐδα βούλεται λέγειν, ὡς οἴονταί τινες, ἀλλὰ τὴν Ὑλικὴν προσαγορευομένην ἀπὸ τῆς πλησίον κώμης ἣν καλοῦσιν Ὕλας, οὐδὲ Ὕδην, ὡς ἔνιοι γράφουσιν „ὅς ῥ' ἐν Ὕδῃ ναίεσκεν.“ ἡ μὲν γάρ ἐστιν ἐν Λυδίᾳ „Τμώλῳ C.408 ὑπὸ νιφόεντι, Ὕδης ἐν πίονι δήμῳ,“ ἡ δὲ Βοιωτιακή· ἐπιφέρει γοῦν τῷ „λίμνῃ κεκλιμένος Κηφισσίδι“ τὸ „πὰρ δὲ οἱ ἄλλοι ναῖον Βοιωτοί.“ ἡ μὲν γάρ ἐστι μεγάλη καὶ οὐκ ἐν τῇ Θηβαΐδι, ἡ δὲ μικρά, ἐκεῖθεν δι' ὑπονόμων πληρουμένη, κειμένη μεταξὺ Θηβῶν καὶ Ἀνθηδόνος. Ὅμηρος δ' ἑνικῶς ἐκφέρει τοτὲ μὲν ἐκτείνων τὴν πρώτην συλλαβήν, ὡς ἐν τῷ καταλόγῳ „ἠδ' Ὕλην καὶ Πετεῶνα,“ ποιητικῶς, τοτὲ δὲ συστέλλων „ὅς ῥ' ἐν Ὕλῃ ναίεσκε“ „σκυτοτόμων ὄχ' ἄριστος Ὕλῃ ἔνι οἰκία ναίων.“ οὐδ' ἐνταῦθα εὖ γραφόντων τινῶν Ὕδῃ ἔνι· οὐ γὰρ ὁ Αἴας ἐκ Λυδίας τὸ σάκος μετεπέμπετο.

21 [Αὗται δ' αἱ] λίμναι τὴν τάξιν τῶν ἐφεξῆς τόπω[ν ὑπογράφουσιν ὥστε] λόγῳ περιληφθῆναι σαφῶς, ὅτι ὁ [ποιητὴς ἀτάκτως χρῆται] τοῖς ὀνόμασι τῶν τόπων τῶν τε ἀξ[ιολόγων καὶ τῶν μή· καὶ] χαλεπὸν ἐν τοσούτοις καὶ ἀσήμοις τοῖς πλείστοις καὶ ἐν μεσογαίᾳ μηδαμοῦ τῇ τάξει διαπεσεῖν· ἡ παραλία δ' ἔχει τι πλεονέκτημα πρὸς τοῦτο· καὶ γνωριμώτεροι οἱ τόποι, καὶ

---

9. post προσαγορευομένην: τῇ προσῳδίᾳ ὡς λυρικὴν 10. post Ὕλας: ὡς λύρας καὶ θύρας 20. post ναίεσκε: Τύχιος

ἡ θάλαττα τό γε ἑξῆς ὑπαγορεύει βέλτιον· διόπερ καὶ ἡμεῖς ἐκεῖθεν πειρώμ[εθα περιοδεύειν]· ἐνταῦθα δ' ἐάσαντες τοῦτο τῷ π[οιητῇ ἀκολουθοῦντες ποιήσομεν τὴν] διαρίθμησιν, προστιθέντες ὅ τι ἂν χρήσιμον ᾖ [πρὸς τὴν ὑπόθεσι]ν ἡμῖν, ὑπ' ἐκείνου δὲ παραλειφθέν. ἄρχεται [δ' ἀπὸ τῆς Ὑρί]ης καὶ τῆς Αὐλίδος, περὶ ὧν εἰρήκαμεν.

Σχοῖνος δ' ἐστὶ χώρα τῆς Θηβαϊκῆς κατὰ τὴν ὁδὸν 22
τὴν ἐπὶ Ἀνθηδόνος, διέχουσα τῶν Θηβῶν ὅσον πεντήκοντα σταδίους· ῥεῖ δὲ καὶ ποταμὸς δι' αὐτῆς Σχοινοῦς.

Σκῶλος δ' ἐστὶ κώμη τῆς Παρασωπίας ὑπὸ τῷ 23
Κιθαιρῶνι, δυσοίκητος τόπος καὶ τραχύς, ἀφ' οὗ καὶ ἡ παροιμία „εἰς Σκῶλον μήτ' αὐτὸς ἴναι, μήτ' ἄλλῳ ἕπεσθαι.“ καὶ τὸν Πενθέα δὲ ἐνθένδε καταγόμενον διασπασθῆναί φασιν. ἦν δὲ καὶ τῶν περὶ Ὄλυνθον πόλεων ὁμώνυμος αὐτῇ Σκῶλος. εἴρηται δ' ὅτι Παρασώπιοι καὶ κώμη τις καλεῖται ἐν Ἡρακλείᾳ τῇ Τραχινίᾳ, παρ' ἣν ῥεῖ Ἀσωπὸς ποταμός, καὶ ὅτι ἐν Σικυωνίᾳ ἄλλος ἐστὶν Ἀσωπὸς καὶ ἡ χώρα Ἀσωπία, δι' ἧς ῥεῖ.

Ὁ Ἐτεωνὸς δὲ Σκάρφη μετωνομάσθη, καὶ αὕτη 24
δὲ τῆς Παρασωπίας. ὁ γὰρ Ἀσωπὸς καὶ ὁ Ἰσμηνὸς διὰ τοῦ πεδίου ῥέουσι τοῦ πρὸ τῶν Θηβῶν· ἔστι δὲ καὶ ἡ Δίρκη κρήνη καὶ Πότνιαι, ἐφ' ὧν μυθεύεται τὰ περὶ C.409
τὸν Ποτνιέα Γλαῦκον τὸν διασπασθέντα ὑπὸ τῶν Ποτνιάδων ἵππων τῆς πόλεως πλησίον, καὶ ὁ Κιθαιρὼν δὲ οὐκ ἄπωθεν τῶν Θηβῶν τελευτᾷ· παρ' αὐτὸν δὲ ὁ Ἀσωπὸς ῥεῖ, τὴν ὑπώρειαν αὐτοῦ κλύζων καὶ ποιῶν τοὺς Παρασωπίους εἰς κατοικίας πλείους διῃρημένους, ἅπαντας δ' ὑπὸ Θηβαίοις ὄντας (ἕτεροι δ' ἐν τῇ Πλα-

20. post ῥεῖ: εἰσὶ καὶ ἄλλοι ποταμοὶ ὁμώνυμοι τῷ ποταμῷ τούτῳ.

ταιέων φασὶ τόν τε Σκῶλον καὶ τὸν Ἐτεωνὸν καὶ τὰς Ἐρύθρας· καὶ γὰρ παρα[ρρεῖ] Πλαταιὰς καὶ παρὰ Τάναγραν ἐκδίδωσιν)· ἐν δὲ τῇ Θηβαίων εἰσὶ καὶ αἱ Θεράπναι καὶ ὁ Τευμησσός, ὃν ἐκόσμησεν Ἀντίμαχος διὰ πολλῶν ἐπῶν, τὰς μὴ προσούσας ἀρετὰς διαριθμούμενος „ἔστι τις ἠνεμόεις ὀλίγος λόφος.“ γνώριμα δὲ τὰ ἔπη.

25 *Θέσπειαν δὲ λέγει τὰς νῦν Θεσπιάς, πολλῶν ὀνομάτων τῶν μὲν ἀμφοτέρως λεγομένων καὶ ἑνικῶς καὶ πληθυντικῶς, καθάπερ καὶ ἀρρενικῶς καὶ θηλυκῶς, τῶν δ' ὁποτέρως. ἔστι δὲ πόλις πρὸς τῷ Ἑλικῶνι νοτιωτέρα αὐτοῦ, ἐπικειμένη δὲ τῷ Κρισαίῳ κόλπῳ καὶ αὐτὴ καὶ ὁ Ἑλικών· ἐπίνειον δ' ἔχουσιν αἱ Θεσπιαὶ Κρέουσαν, ἣν καὶ Κρεουσίδα καλοῦσιν. ἐν δὲ τῇ Θεσπιέων ἐστὶ καὶ ἡ Ἄσκρη κατὰ τὸ πρὸς Ἑλικῶνα μέρος, ἡ τοῦ Ἡσιόδου πατρίς· ἐν δεξιᾷ γάρ ἐστι τοῦ Ἑλικῶνος, ἐφ' ὑψηλοῦ καὶ τραχέος τόπου κειμένη, ἀπέχουσα τῶν Θεσπιῶν ὅσον τετταράκοντα σταδίους, ἣν καὶ κεκωμῴδηκεν αὐτὸς ἐ[πιλαβόμενος] τοῦ πατρός, ὅτι ἐκ Κύμης τῆς Αἰολίδος μ[ετέστη, θρασύ]τερον λέγων „νάσσατο δ' ἄγχ' Ἑλικῶνος ὀιζυρῇ [ἐνὶ κώμῃ], Ἄσκρῃ χεῖμα κακῇ, θέρει ἀργαλέῃ, οὐδέ ποτ' [ἐσθλῇ].“ ὁ δὲ Ἑλικὼν συνεχής ἐστι τῇ Φωκίδι ἐκ τῶν πρὸς ἄρκτον αὐτοῦ μερῶν· μικρὰ δὲ καὶ ἐκ τῶν πρὸς ἑσπέραν κατὰ τὸν ὕστατον λιμένα τῆς Φωκίδος, ὃν καλοῦσιν ἀπὸ τοῦ συμβεβηκότος μυχόν· ὑπέρκειται γὰρ κατὰ τοῦτον μάλιστα τὸν λιμένα τοῦ Κρισαίου κόλπου καὶ ὁ Ἑλικὼν καὶ ἡ Ἄσκρη καὶ ἔτι αἱ Θεσπιαὶ καὶ τὸ ἐπίνειον αὐτῆς ἡ Κρέουσα. τοῦτο δὲ καὶ κοιλότατον νομίζεται τὸ μέρος τοῦ Κρισαίου κόλπου καὶ ἁπλῶς τοῦ Κορινθιακοῦ· στάδιοι δ' εἰσὶ τῆς [παραλίας] τῆς ἀπὸ τοῦ μυχοῦ τοῦ λιμένος εἰς Κρέουσαν ἐνε[νήκοντα·] ἐντεῦ-*

θεν δὲ ἑκατὸν εἴκοσιν ἕως τῆς ἄκρας ἣν [Ὀλμιὰς] καλοῦσιν· ἐν δὲ τῷ κοιλοτάτῳ τοῦ κόλπου τοῦ [Κρισαίου συμ]βέβηκε τὰς Πηγὰς κεῖσθαι καὶ τὴν Οἰνόην, πε[ρὶ ὧν εἰ]ρήκαμεν. ὁ μὲν οὖν Ἑλικὼν οὐ πολὺ διεστηκὼς τοῦ Παρνασσοῦ ἐνάμιλλός ἐστιν ἐκείνῳ κατά τε ὕψος καὶ περίμετρον· ἄμφω γὰρ χιονόβολα τὰ ὄρη καὶ πε- C.410
τρώδη, περιγράφεται δ' οὐ πολλῇ χώρᾳ. ἐνταῦθα δ' ἐστὶ τό τε τῶν Μουσῶν ἱερὸν καὶ ἡ Ἵππου κρήνη καὶ τὸ τῶν Λειβηθρίδων νυμφῶν ἄντρον· ἐξ οὗ τεκμαίροιτ' ἄν τις Θρᾷκας εἶναι τοὺς τὸν Ἑλικῶνα ταῖς Μούσαις καθιερώσαντας, οἳ καὶ τὴν Πιερίδα καὶ τὸ Λείβηθρον καὶ τὴν Πίμπλειαν ταῖς αὐταῖς θεαῖς ἀνέδειξαν· ἐκαλοῦντο δὲ Πίερες· ἐκλιπόντων δ' ἐκείνων Μακεδόνες νῦν ἔχουσι τὰ χωρία ταῦτα. εἴρηται δ' ὅτι τὴν Βοιωτίαν ταύτην ἐπῴκησάν ποτε Θρᾷκες βιασάμενοι τοὺς Βοιωτοὺς καὶ Πελασγοὶ καὶ ἄλλοι βάρβαροι. αἱ δὲ Θεσπιαὶ πρότερον μὲν ἐγνωρίζοντο διὰ τὸν Ἔρωτα τὸν Πραξιτέλους, ὃν ἔγλυψε μὲν ἐκεῖνος, ἀνέθηκε δὲ Γλυκέρα ἡ ἑταίρα Θεσπιεῦσιν ἐκεῖθεν οὖσα τὸ γένος, λαβοῦσα δῶρον παρὰ τοῦ τεχνίτου. πρότερον μὲν οὖν ὀψόμενοι τὸν Ἔρωτά τινες ἀνέβαινον ἐπὶ τὴν Θέσπειαν ἄλλως οὐκ οὖσαν ἀξιοθέατον, νυνὶ δὲ μόνη συνέστηκε τῶν Βοιωτιακῶν πόλεων καὶ Τάναγρα· τῶν δ' ἄλλων ἐρείπια καὶ ὀνόματα λέλειπται.

[Μετ]ὰ δὲ Θεσπιὰς καταλέγει Γραῖαν καὶ Μυκα- 26
[λησσόν, περ]ὶ ὧν εἰρήκαμεν· ὡς δ' αὔτως καὶ περὶ τῶν [ἄλλων „οἵ τ'] ἀμφ' Ἅρμ' ἐνέμοντο καὶ Εἰλέσιον „καὶ Ἐρύθρας, [οἵ τ' Ἐλεῶν'] εἶχον ἠδ' Ὕλην καὶ Πε„τεῶνα.“ Πετεὼν δὲ κώμη τῆς Θηβαΐδος ἐγγὺς τῆς ἐπ' Ἀνθηδόνα ὁδοῦ, ἡ δ' Ὠκαλέη μέση Ἁλιάρτου καὶ Ἀλαλκομενίου ἑκατέρου τριάκοντα σταδίους ἀπέχουσα· παραρρεῖ δ' αὐτὴν ποτάμιον ὁμώνυμον. Μεδεὼν

δ' ὁ μὲν Φωκικὸς ἐν τῷ Κρισαίῳ κόλπῳ, διέχων Βοιωτίας σταδίους ἑκατὸν ἑξήκοντα, ὁ δὲ Βοιωτιακὸς ἀπ' ἐκείνου κέκληται, πλησίον δ' ἐστὶν Ὀγχηστοῦ ὑπὸ τῷ Φοινικίῳ ὄρει, ἀφ' οὗ καὶ μετωνόμασται Φοινικίς· τῆς δὲ Θηβαίας καὶ τοῦτο λέγεται, [ὑπ' ἐνί]ων δὲ τῆς Ἁλιαρτίας καὶ Μεδεὼν καὶ Ὠκαλέα.

27 Εἶτά φησι „Κώπας Εὔτρησίν τε πολυτρήρωνά τε „Θίσβην.“ περὶ μὲν οὖν Κωπῶν εἴρηται· προσάρκτιος δέ ἐστιν ἐπὶ τῇ Κωπαΐδι λίμνῃ· αἱ δ' ἄλλαι κύκλῳ εἰσὶν αἵδε, Ἀκραιφίαι Φοινικὶς Ὀγχηστὸς Ἁλίαρτος Ὠκαλέα Ἀλαλκομεναὶ Τιλφούσιον Κορώνεια. καὶ τό γε
C.411 παλαιὸν οὐκ ἦν τῆς λίμνης κοινὸν ὄνομα, ἀλλὰ καθ' ἑκάστην πρὸς αὐτῇ κατοικίαν ἐκείνης ἐπώνυμος ἐλέγετο, Κωπαῒς μὲν τῶν Κωπῶν, Ἁλιαρτὶς δὲ Ἁλιάρτου, καὶ οὕτως ἐπὶ τῶν ἄλλων, ὕστερον δ' ἡ πᾶσα Κωπαῒς ἐλέχθη κατ' ἐπικράτειαν· κοιλότατον γὰρ τοῦτο τὸ χωρίον. Πίνδαρος δὲ καὶ Κηφισσίδα καλεῖ ταύτην· παρατίθησι γοῦν τὴν Τιλφῶσσαν κρήνην ὑπὸ τῷ Τιλφωσσίῳ ὄρει ῥέουσαν πλησίον Ἁλιάρτου καὶ Ἀλαλκομενῶν, ἐφ' ᾗ τὸ Τειρεσίου μνῆμα· αὐτοῦ δὲ καὶ τὸ τοῦ Τιλ[φωσσίου Ἀπόλλω]νος ἱερόν.

28 Ὁ δὲ ποιητὴς ἐφεξῆς ταῖς Κώπαις Εὔτρησιν τίθησι κωμίον Θεσπιέων· ἐνταῦθά φασι Ζῆθον καὶ Ἀμφίονα οἰκῆσαι πρὶν βασιλεῦσαι Θηβῶν. ἡ δὲ Θίσβη Θίσβαι νῦν λέγονται, οἰκεῖται δὲ μικρὸν ὑπὲρ τῆς θαλάττης ὅμορον Θεσπιεῦσι τὸ χωρίον καὶ τῇ Κορωνειακῇ, ὑποπεπτωκὸς ἐκ τοῦ νοτίου μέρους τῷ Ἑλικῶνι καὶ αὐτό· ἐπίνειον δ' ἔχει πετρῶδες περιστερῶν μεστόν, ἐφ' οὗ φησιν ὁ ποιητὴς „πολυτρήρωνά τε Θί„σβην.“ πλοῦς δ' ἐστὶν ἐνθένδε εἰς Σικυῶνα σταδίων ἑκατὸν ἑξήκοντα.

29 Ἑξῆς δὲ Κορώνειαν καταλέγει καὶ Ἁλίαρτον καὶ

Πλαταιὰς καὶ Γλίσσαντα. ἡ μὲν οὖν Κορώνεια ἐγγὺς τοῦ Ἑλικῶνός ἐστιν ἐφ’ ὕψους ἱδρυμένη, κατελάβοντο δ’ αὐτὴν ἐπανιόντες ἐκ τῆς Θετταλικῆς Ἄρνης οἱ Βοιωτοὶ μετὰ τὰ Τρωικά, ὅτε περ καὶ τὸν Ὀρχομενὸν ἔσχον· κρατήσαντες δὲ τῆς Κορωνείας ἐν τῷ πρὸ αὐτῆς πεδίῳ τὸ τῆς Ἰτωνίας Ἀθηνᾶς ἱερὸν ἱδρύσαντο ὁμώνυμον τῷ Θετταλικῷ, καὶ τὸν παραρρέοντα ποταμὸν Κουάριον προσηγόρευσαν ὁμοφώνως τῷ ἐκεῖ. Ἀλκαῖος δὲ καλεῖ Κωράλιον λέγων „[ὦ ’ν]ασσ’ Ἀθανάα „πολε[μηδόκος], ἅ ποι Κορωνίας ἐπιλαΐω ναύω πάροι„θεν ἀμφι[βαίνεις] Κωραλίω ποταμῶ παρ’ ὄχθαις.“ ἐνταῦθα δὲ καὶ τὰ Παμβοιώτια συνετέλουν· συγκαθίδρυται δὲ τῇ Ἀθηνᾷ ὁ Ἅιδης κατά τινα, ὥς φασι, μυστικὴν αἰτίαν. οἱ μὲν οὖν ἐν τῇ Κορωνείᾳ Κορώνιοι λέγονται, οἱ δ’ ἐν τῇ Μεσσηνιακῇ Κορωναεῖς.

Ἁλίαρτος δὲ νῦν οὐκέτι ἐστὶ κατασκαφεῖσα ἐν τῷ 30 πρὸς Περσέα πολέμῳ, τὴν χώραν δ’ ἔχουσιν Ἀθηναῖοι δόντων Ῥωμαίων. ἔκειτο δὲ ἐν στενῷ χωρίῳ μεταξὺ ὑπερκειμένου ὄρους καὶ τῆς Κωπαΐδος λίμνης πλησίον τοῦ Περμησσοῦ καὶ τοῦ Ὀλμειοῦ καὶ τοῦ ἕλους τοῦ φύοντος τὸν αὐλητικὸν κάλαμον.

Πλαταιαὶ δέ, ἃς ἑνικῶς εἶπεν ὁ ποιητής, ὑπὸ τῷ 31 Κιθαιρῶνί εἰσι μεταξὺ αὐτοῦ καὶ Θηβῶν κατὰ τὴν ὁδὸν τὴν εἰς Ἀθήνας καὶ Μέγαρα ἐπὶ τῶν ὅρων τῶν C.412 τῆς Ἀττικῆς καὶ τῆς Βοιωτίας. [αἱ] γὰρ Ἐλευθεραὶ πλησίον, ἃς οἱ μὲν [τῆς Ἀττικῆς, οἱ δὲ] τῆς Βοιωτίας φασίν. εἴρηται δ’ ὅτι παραρρεῖ τὰς Πλαταιὰς ὁ Ἀσωπός. ἐνταῦθα Μαρδόνιον καὶ τὰς τριάκοντα μυριάδας Περσῶν αἱ τῶν Ἑλλήνων δυνάμεις ἄρδην ἠφάνισαν· ἱδρύσαντό τε ἐλευθερίου Διὸς ἱερὸν καὶ ἀγῶνα γυμνικὸν στεφανίτην ἀπέδειξαν, Ἐλευθέρια προσαγορεύσαντες· ταφή τε δείκνυται δημοσία τῶν τελευτησάντων ἐν τῇ

μάχη. ἔστι δὲ καὶ ἐν τῇ Σικυωνίᾳ δῆμος Πλαταιαί, ὅθενπερ ἦν Μνασάλκης ὁ ποιητής. Γλίσσαντα δὲ λέγει κατοικίαν ἐν τῷ Ὑπάτῳ ὄρει ὅ ἐστιν ἐν τῇ Θηβαΐκῇ πλησίον Τευμησσοῦ καὶ τῆς Καδμείας, ᾧ ὑποπ]ίπτει τὸ Ἀόνιον καλούμενον πεδίον, ὃ διατείνει [εἰς τὴν Καδμεία]ν ἀπὸ τοῦ Ὑπάτου ὄρους.

32 Τὸ δ' οὕτω ῥηθὲν „οἵ θ' ὑπὸ Θήβας εἶχον“ οἱ μὲν δέχονται πολίδιόν τι Ὑποθήβας καλούμενον, οἱ δὲ τὰς Ποτνίας· τὰς γὰρ Θήβας ἐκλελεῖφθαι διὰ τὴν τῶν Ἐπιγόνων στρατείαν καὶ μὴ μετασχεῖν τοῦ Τρωικοῦ πολέμου· οἱ δὲ μετασχεῖν μὲν οἰκεῖν δὲ ὑπὸ τῇ Καδμείᾳ τότε ἐν τοῖς ἐπιπέδοις χωρίοις μετὰ τὴν τῶν Ἐπιγόνων ἄφοδον, τὴν Καδμείαν ἀδυνατοῦντας ἀνακτίσαι· ἐπεὶ δὲ ἡ Καδμεία ἐκαλεῖτο Θῆβαι, ὑπὸ Θήβας εἰπεῖν ἀντὶ τοῦ ὑπὸ τῇ Καδμείᾳ οἰκοῦντας τὸν ποιητὴν τοὺς τότε Θηβαίους.

33 Ὀγχηστὸς δ' ἐστίν, ὅπου τὸ Ἀμφικτυονικὸν συνήγετο ἐν τῇ Ἁλιαρτίᾳ πρὸς τῇ Κωπαΐδι λίμνῃ καὶ τῷ Τηνερικῷ πεδίῳ, ἐν ὕψει κείμενος ψιλός, ἔχων Ποσειδῶνος ἱερὸν καὶ αὐτὸ ψιλόν. οἱ δὲ ποιηταὶ κοσμοῦσιν, ἄλση καλοῦντες τὰ ἱερὰ πάντα κἂν ᾖ ψιλά· τοιοῦτόν ἐστι καὶ τὸ τοῦ Πινδάρου περὶ τοῦ Ἀπόλλωνος λεγόμενον „[δι]νηθεὶς ἐπῄει γᾶν τε καὶ θάλασσαν, καὶ σκοπιαῖσιν „[μεγάλαι]ς ὀρέων ὕπερ ἔστα, καὶ μυχοὺς * δεινάσατο „βαλλό[μενος] κρηπῖδας ἀλσέων.“ οὐκ εὖ δ' ὁ Ἀλκαῖος, ὥσπερ τὸ τοῦ ποταμοῦ ὄνομα παρέτρεψε τοῦ Κουαρίου, οὕτω καὶ τοῦ Ὀγχηστοῦ κατέψευσται πρὸς ταῖς ἐσχατιαῖς τοῦ Ἑλικῶνος αὐτὸν τιθείς· ὁ δ' ἐστὶν
C.413 ἄπωθεν ἱκανῶς τούτου τοῦ ὄρους.

34 Τὸ δὲ Τηνερικὸν πεδίον ἀπὸ Τηνέρου προσηγό-

2. post ποιητής: Μνασάλκεος τὸ μνᾶμα τῶ Πλαταιάδα.
4. post Καδμείας: γεώλοφα καλεῖται δρία

ρευται· μυθεύεται δ' Ἀπόλλωνος υἱὸς ἐκ Μελίας, προφήτης τοῦ μαντείου κατὰ τὸ Πτῷον ὄρος, ὅ φησιν εἶναι τρικόρυφον ὁ αὐτὸς ποιητής „καί ποτε τὸν τρικάρανον Πτωίου κευθμῶνα κατέσχεθε·“ καὶ τὸν Τήνερον καλεῖ „ναοπόλον μάντιν δαπέδοισιν ὁμοκλέα.“ ὑπέρκειται δὲ τὸ Πτῷον τοῦ Τηνερικοῦ πεδίου καὶ τῆς Κωπαΐδος λίμνης πρὸς Ἀκραιφίῳ· Θηβαίων δ' ἦν τό τε μαντεῖον καὶ τὸ ὄρος· τὸ δ' Ἀκραίφιον καὶ αὐτὸ κεῖται ἐν ὕψει. φασὶ δὲ τοῦτο καλεῖσθαι Ἄρνην ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ, ὁμώνυμον τῇ Θετταλικῇ.

Οἵ δέ φασι καὶ τὴν Ἄρνην ὑπὸ τῆς λίμνης κατα- 35
ποθῆναι καὶ τὴν Μίδειαν. Ζηνόδοτος δὲ γράφων „οἳ δὲ πολυστάφυλον Ἄσκρην ἔχον,“ οὐκ ἔοικεν ἐντυχόντι τοῖς ὑπὸ Ἡσιόδου περὶ τῆς πατρίδος λεχθεῖσι καὶ τοῖς ὑπ' Εὐδόξου πολὺ χείρω λέγοντος περὶ τῆς Ἄσκρης. πῶς γὰρ ἄν τις πολυστάφυλον τὴν τοιαύτην ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ λέγεσθαι πιστεύσειεν; οὐκ εὖ δὲ οὐδὲ οἱ Τάρνην ἀντὶ τῆς Ἄρνης γράφοντες· οὐδὲ γὰρ μία δείκνυται Τάρνη παρὰ τοῖς Βοιωτοῖς, ἐν δὲ Λυδοῖς ἐστιν, ἧς καὶ Ὅμηρος μέμνηται „Ἰδομενεὺς δ' ἄρα Φαῖστον ἐνήρατο Μῄονος υἱὸν Βῶρον, ὃς ἐκ Τάρνης ἐριβώλακος εἰληλούθει.“ λοιπαὶ δ' εἰσὶ τῶν μὲν περικειμένων τῇ λίμνῃ αἵ τε Ἀλαλκομεναὶ καὶ τὸ Τιλφώσσιον, τῶν δ' ἄλλων Χαιρώνεια καὶ Λεβάδεια καὶ Λεῦκτρα, περὶ ὧν ἄξιον μνησθῆναι.

Ἀλαλκομενῶν τοίνυν μέμνηται ὁ ποιητής, ἀλλ' 36
οὐκ ἐν καταλόγῳ „Ἥρη τ' Ἀργείη καὶ Ἀλαλκομενηὶς Ἀθήνη.“ ἔχει δ' ἀρχαῖον ἱερὸν Ἀθηνᾶς σφόδρα τιμώμενον, καί φασί γε τὴν θεὸν γεγενῆσθαι ἐνθάδε, καθάπερ καὶ τὴν Ἥραν ἐν Ἄργει, καὶ διὰ τοῦτο τὸν ποιητὴν ὡς ἀπὸ πατρίδων τούτων ἀμφοτέρας οὕτως ὀνομάσαι. διὰ τοῦτο δ' ἴσως οὐδ' ἐν τῷ καταλόγῳ μέμνηται τῶν

ἐνταῦθα ἀνδρῶν, ἐπειδὴ ἱεροὶ ὄντες παρεῖντο τῆς στρατείας. καὶ γὰρ καὶ ἀπόρθητος ἀεὶ διετέλεσεν ἡ πόλις, οὔτε μεγάλη οὖσα οὔτ' ἐν εὐερκεῖ χωρίῳ κειμένη, ἀλλ' ἐν πεδίῳ· τὴν δὲ θεὸν σεβόμενοι πάντες ἀπείχοντο πάσης βίας, ὥστε καὶ Θηβαῖοι κατὰ τὴν τῶν Ἐπιγόνων στρατείαν ἐκλιπόντες τὴν πόλιν ἐκεῖσε λέγονται καταφεύγειν καὶ εἰς τὸ ὑπερκείμενον ὄρος ἐρυμνὸν τὸ Τιλφώσσιον, ὑφ' ᾧ Τιλφῶσσα κρήνη καὶ τὸ τοῦ Τειρεσίου μνῆμα ἐκεῖ τελευτήσαντος κατὰ τὴν
C.414 φυγήν.

37 Χαιρώνεια δ' ἐστὶν Ὀρχομενοῦ πλησίον, ὅπου Φίλιππος ὁ Ἀμύντου μάχῃ μεγάλῃ νικήσας Ἀθηναίους τε καὶ Βοιωτοὺς καὶ Κορινθίους κατέστη τῆς Ἑλλάδος κύριος· δείκνυται δὲ κἀνταῦθα ταφὴ τῶν πεσόντων ἐν τῇ μάχῃ δημοσίᾳ· περὶ δὲ τοὺς τόπους τοὺς αὐτοὺς καὶ Ῥωμαῖοι τὰς Μιθριδάτου δυνάμεις πολλῶν μυριάδων κατηγωνίσαντο, ὥστ' ὀλίγους ἐπὶ θάλατταν σωθέντας φυγεῖν ἐν ταῖς ναυσί, τοὺς δ' ἄλλους τοὺς μὲν ἀπολέσθαι τοὺς δὲ καὶ ἁλῶναι.

38 Λεβάδεια δ' ἐστίν, ὅπου Διὸς Τροφωνίου μαντεῖον ἵδρυται, χάσματος ὑπονόμου κατάβασιν ἔχον, καταβαίνει δ' αὐτὸς ὁ χρηστηριαζόμενος· κεῖται δὲ μεταξὺ τοῦ Ἑλικῶνος καὶ τῆς Χαιρωνείας, Κορωνείας πλησίον.

39 Τὰ δὲ Λεῦκτρά ἐστιν, ὅπου Λακεδαιμονίους μεγάλῃ μάχῃ νικήσας Ἐπαμεινώνδας ἀρχὴν εὕρετο τῆς καταλύσεως αὐτῶν· οὐκέτι γὰρ ἐξ ἐκείνου τὴν τῶν Ἑλλήνων ἡγεμονίαν ἀναλαβεῖν ἴσχυσαν ἣν εἶχον πρότερον, καὶ μάλιστ' ἐπειδὴ καὶ τῇ δευτέρᾳ συμβολῇ τῇ περὶ Μαντίνειαν κακῶς ἔπραξαν. τὸ μέντοι μὴ ὑφ' ἑτέροις εἶναι καίπερ οὕτως ἐπταικόσι συνέμεινε μέχρι τῆς Ῥωμαίων ἐπικρατείας· καὶ παρὰ τούτοις δὲ τιμώ-

μενοι διατελοῦσι διὰ τὴν τῆς πολιτείας ἀρετήν. δείκνυται δὲ ὁ τόπος οὗτος κατὰ τὴν ἐκ Πλαταιῶν εἰς Θεσπιὰς ὁδόν.

Ἑξῆς δ' ὁ ποιητὴς μέμνηται τοῦ τῶν Ὀρχομε- 40
νίων καταλόγου, χωρίζων αὐτοὺς ἀπὸ τοῦ Βοιωτιακοῦ ἔθνους. καλεῖ δὲ Μινύειον τὸν Ὀρχομενὸν ἀπὸ ἔθνους τοῦ Μινυῶν· ἐντεῦθεν δὲ ἀποικῆσαί τινας τῶν Μινυῶν εἰς Ἰωλκόν φασιν, ὅθεν τοὺς Ἀργοναύτας Μινύας λεχθῆναι. φαίνεται δὲ τὸ παλαιὸν καὶ πλουσία τις γεγονυῖα πόλις καὶ δυναμένη μέγα· τοῦ μὲν οὖν πλούτου μάρτυς καὶ Ὅμηρος· διαριθμούμενος γὰρ τοὺς τόπους τοὺς πολυχρηματήσαντάς φησιν „οὐδ' ὅσ' ἐς Ὀρχομενὸν ποτινίσσεται, „οὐδ' ὅσα Θήβας Αἰγυπτίας.“ τῆς δυνάμεως δέ, ὅτι Θηβαῖοι δασμὸν ἐτέλουν τοῖς Ὀρχομενίοις καὶ Ἐργίνῳ τῷ τυραννοῦντι αὐτῶν, ὃν ὑφ' Ἡρακλέους καταλυθῆναί φασιν. Ἐτεοκλῆς δέ, τῶν βασιλευσάντων ἐν Ὀρχομενῷ τις, Χαρίτων ἱερὸν ἱδρυσάμενος πρῶτος ἀμφότερα ἐμφαίνει, καὶ πλοῦτον καὶ δύναμιν, ὃς εἴτ' ἐν τῷ λαμβάνειν χάριτας εἴτ' ἐν τῷ διδόναι κατορθῶν εἴτε καὶ ἀμφότερα, τὰς θεὰς ἐτίμησε C.415
ταύτας. λέγουσι δὲ τὸ χωρίον, ὅπερ ἡ λίμνη κατέ-

---

22. post ταύτας: ἀνάγκη γὰρ πρὸς εὐεργεσίαν εὐφυῆ γενόμενον ἐκεῖνον πρὸς τὴν τῶν θεῶν τούτων ὁρμῆσαι τιμήν, ὥστε ταύτην μὲν ἐκέκτητο ἤδη τὴν δύναμιν. ἀλλὰ πρὸς ταύτῃ καὶ χρημάτων ἔδει· οὔτε γὰρ μὴ ἔχων τις πολλὰ διδοίη ἂν πολλά, ὅ τε [μὴ] λαμβάνων πολλὰ οὐκ ἂν ἔχοι πολλά· εἰ δ' ἀμφότερα συνέχει, τὴν ἀμοιβὴν ἔχει. τὸ γὰρ κενούμενον ἅμα καὶ πληρούμενον πρὸς τὴν χρείαν ἀεὶ πλῆρές ἐστιν, ὁ δὲ διδοὺς μὲν μὴ λαμβάνων δὲ οὐδ' ἂν ἐπὶ θάτερα κατορθοίη· παύσεται γὰρ διδοὺς ἐπιλείποντος τοῦ ταμείου, παύσονται δὲ καὶ οἱ διδόντες τῷ λαμβάνοντι μόνον, χαριζομένῳ δὲ μηδέν, ὥστ' οὐδ' οὗτος ἑτέρως ἂν κατορθοίη. ὅμοια δὲ καὶ περὶ δυνάμεως λέγοιτ' ἄν. χωρὶς δὲ τοῦ κοινοῦ λόγου διότι „τὰ χρήματ' ἀνθρώποισι τιμιώτατα, δύ„ναμίν τε πλείστην τῶν ἐν ἀνθρώποις ἔχει,“ καὶ ἐκ τῶν καθ'

χει νῦν ἡ Κωπαΐς, ἀνεψῦχθαι πρότερον καὶ γεωργεῖσθαι παντοδαπῶς ὑπὸ τοῖς Ὀρχομενίοις ὂν πλησίον οἰκοῦσι· καὶ τοῦτ' οὖν τεκμήριον τοῦ πλούτου τιθέασι.

41 *Τὴν δ' Ἀσπληδόνα χωρὶς τῆς πρώτης συλλαβῆς ἐκάλουν τινές· εἶτ' Εὐδείελος μετωνομάσθη καὶ αὐτὴ καὶ ἡ χώρα, τάχα τι ἰδίωμα προσφερομένη ἐκ τοῦ δειλινοῦ κλίματος οἰκεῖον τοῖς κατοικοῦσι, καὶ μάλιστα τὸ εὐχείμερον. διέχει δὲ τοῦ Ὀρχομενοῦ στάδια εἴκοσι· μεταξὺ δ' ὁ Μέλας ποταμός.*

C.416
42 *Ὑπέρκειται δ' Ὀρχομενίας ὁ Πανοπεύς, Φωκικὴ πόλις, καὶ Ὑάμπολις· τούτοις δ' ὁμορεῖ Ὀποῦς, ἡ τῶν Λοκρῶν μητρόπολις τῶν Ἐπικνημιδίων. πρότερον μὲν οὖν οἰκεῖσθαι τὸν Ὀρχομενόν φασιν ἐπὶ πεδίῳ, ἐπιπολαζόντων δὲ τῶν ὑδάτων ἀνοικισθῆναι πρὸς τὸ Ἀκόντιον ὄρος, παρατεῖνον ἐπὶ ἑξήκοντα σταδίους μέχρι Παραποταμίων τῶν ἐν τῇ Φωκίδι. ἱστοροῦσι δὲ τοὺς ἐν τῷ Πόντῳ καλουμένους Ἀχαιοὺς ἀποίκους Ὀρχομενίων εἶναι τῶν μετὰ Ἰαλμένου πλανηθέντων ἐκεῖσε μετὰ τὴν τῆς Τροίας ἅλωσιν. καὶ περὶ Κάρυστον δ' ἦν*

ἕκαστα σκοπεῖν δεῖ. μάλιστα γὰρ τοὺς βασιλέας δύνασθαί φαμεν· διόπερ καὶ δυνάστας προσαγορεύομεν. δύνανται δ' ἄγοντες ἐφ' ἃ βούλονται τὰ πλήθη διὰ πειθοῦς ἢ βίας. πείθουσι μὲν οὖν δι' εὐεργεσίας μάλιστα· οὐ γὰρ ἥ γε διὰ τῶν λόγων ἐστὶ βασιλική, ἀλλ' αὕτη μὲν ῥητορική· βασιλικὴν δὲ πειθὼ λέγομεν, ὅταν εὐεργεσίαις φέρωσι καὶ ἄγωσιν ἐφ' ἃ βούλονται· πείθουσι μὲν δὴ δι' εὐεργεσιῶν, βιάζονται δὲ διὰ τῶν ὅπλων. ταῦτα δ' ἄμφω χρημάτων ὤνιά ἐστι· καὶ γὰρ στρατιὰν ἔχει πλείστην ὁ [πλείστην] τρέφειν δυνάμενος, καὶ εὐεργετεῖν δύναται πλεῖστον ὁ πλεῖστα κεκτημένος.

9. post *εὐχείμερον: ψυχρότατα μὲν γὰρ τὰ ἄκρα τῆς ἡμέρας ἐστί, τούτων δὲ τὸ δειλινὸν τοῦ ἑωθινοῦ ψυχρότερον· εἰς ἐπίτασιν γὰρ ἄγει πλησιάζον τῇ νυκτί, τὸ δ' εἰς ἄνεσιν ἀφιστάμενον τῆς νυκτός. ἴαμα δὲ τοῦ ψύχους ὁ ἥλιος· τὸ οὖν ἡλιαζόμενον πλεῖστον ἐν τῷ ψυχροτάτῳ καιρῷ εὐχειμερώτατον.*

τις Ὀρχομενός. εὖ γὰρ τὴν τοιαύτην ὕλην ὑποβεβλήκασιν ἡμῖν οἱ τὰ περὶ τῶν νεῶν συγγράψαντες, οἷς ἀκολουθοῦμεν ὅταν οἰκεῖα λέγωσι πρὸς τὴν ἡμετέραν ὑπόθεσιν.

3 Μετὰ δὲ τὴν Βοιωτίαν καὶ τὸν Ὀρχομενὸν ἡ Φωκίς ἐστι πρὸς ἄρκτον παραβεβλημένη τῇ Βοιωτίᾳ παραπλησίως ἀπὸ θαλάττης εἰς θάλατταν τό γε παλαιόν. ὁ γὰρ Δαφνοῦς ἦν τότε τῆς Φωκίδος, σχίζων ἐφ' ἑκάτερα τὴν Λοκρίδα καὶ μέσος ταττόμενος τοῦ τε Ὀπουντίου κόλπου καὶ τῆς τῶν Ἐπικνημιδίων παραλίας· νῦν δὲ Λοκρῶν ἐστιν ἡ χώρα (τὸ δὲ πόλισμα κατέσκαπται), ὥστ' οὐδ' ἐκεῖ καθήκει οὐκέτι μέχρι τῆς πρὸς Εὐβοίᾳ θαλάττης ἡ Φωκίς, τῷ δὲ Κρισαίῳ κόλπῳ συνῆπται. αὐτὴ γὰρ ἡ Κρῖσα τῆς Φωκίδος ἐστὶν ἐπ' αὐτῆς ἱδρυμένη τῆς θαλάττης καὶ Κίρρα καὶ Ἀντικύρα καὶ τὰ ὑπὲρ αὐτῶν ἐν τῇ μεσογαίᾳ συνεχῆ κείμενα χωρία πρὸς τῷ Παρνασσῷ, Δελφοί τε καὶ Κίρφις καὶ Δαυλὶς καὶ αὐτὸς ὁ Παρνασσὸς τῆς τε Φωκίδος ὢν καὶ ἀφορίζων τὸ ἑσπέριον πλευρόν. ὃν τρόπον δ' ἡ Φωκὶς τῇ Βοιωτίᾳ παράκειται, τοῦτον καὶ ἡ Λοκρὶς τῇ Φωκίδι ἑκατέρα. διττὴ γάρ ἐστι διῃρημένη ὑπὸ τοῦ Παρνασσοῦ δίχα, ἡ μὲν ἐκ τοῦ ἑσπερίου μέρους παρακειμένη τῷ Παρνασσῷ καὶ μέρος αὐτοῦ νεμομένη, καθήκουσα δ' ἐπὶ τὸν Κρισαῖον κόλπον, ἡ δ' ἐκ τοῦ πρὸς ἕω τελευτῶσα ἐπὶ τὴν πρὸς Εὐβοίᾳ θάλατταν. καλοῦνται δ' οἱ μὲν ἑσπέριοι Λοκροὶ καὶ Ὀζόλαι, ἔχουσί τε ἐπὶ τῇ δημοσίᾳ σφραγῖδι τὸν ἕσπερον ἀστέρα ἐγκεχαραγμένον· οἱ δ' ἕτεροι δίχα πως καὶ αὐτοὶ διῃρημένοι, οἱ μὲν Ὀπούντιοι ἀπὸ τῆς μητροπόλεως, ὅμοροι Φωκεῦσι καὶ Βοιωτοῖς, οἱ δ' Ἐπικνημίδιοι ἀπὸ ὄρους Κνημῖδος, προσεχεῖς Οἰταίοις τε καὶ Μαλιεῦσιν. ἐν μέσῳ δὲ ἀμφοῖν τῶν τε Ἑσπερίων καὶ τῶν ἑτέρων Παρνασσός,

παραμήκης εἰς τὸ προσάρκτιον μέρος ἐκτεινόμενος C.417 ἀπὸ τῶν περὶ Δελφοὺς τόπων μέχρι τῆς συμβολῆς τῶν τε Οἰταίων ὀρῶν καὶ τῶν Αἰτωλικῶν καὶ τῶν ἀνὰ μέσον Δωριέων. πάλιν γὰρ ὥσπερ ἡ Λο[κρὶς διττὴ οὖ]σα τοῖς Φωκεῦσι παραβέβληται, οὕτω [καὶ ἡ πᾶσα Οἰταία] μετὰ τῆς Αἰτωλίας καί τινων ἀνὰ μέσον τ[όπων τῆς Δω]ρικῆς τετραπόλεως τῇ Λοκρίδι ἑκατέρᾳ [καὶ Παρνασ]σῷ καὶ τοῖς Δωριεῦσιν. ὑπὲρ τούτων δ' ἤδη [οἱ Θετταλοὶ] καὶ τῶν Αἰτωλῶν οἱ προσάρκτιοι καὶ Ἀκαρν[ᾶνες καί τινα] τῶν Ἠπειρωτικῶν ἐθνῶν καὶ τῶν Μακεδονικῶν· [δεῖ δέ,] ὅπερ ἔφαμεν καὶ πρότερον, παραλλήλους ὥσ[περ ταινίας] τινὰς τεταμένας ἀπὸ τῆς ἑσπέρας ἐπὶ τὰς ἀ[νατολὰς] νοῆσαι τὰς λεχθείσας χώρας. ἱεροπρεπὴς δ' ἐστὶ πᾶς ὁ Παρνασσός, ἔχων ἄντρα τε καὶ ἄλλα χωρία τιμώμενά τε καὶ ἁγιστευόμενα· ὧν ἐστι γνωριμώτατόν τε καὶ κάλλιστον τὸ Κωρύκιον νυμφῶν ἄντρον ὁμώνυμον τῷ Κιλικίῳ. τῶν δὲ πλευρῶν τοῦ Παρνασσοῦ τὸ μὲν ἑσπέριον νέμονται Λοκροί τε οἱ Ὀζόλαι καί τινες τῶν Δωριέων καὶ Αἰτωλοὶ κατὰ τὸν Κόρακα προσαγορευόμενον Αἰτωλικὸν ὄρος, τὸ δὲ Φωκεῖς καὶ Δωριεῖς οἱ πλείους, ἔχοντες τὴν Τετράπολιν περικειμένην πως τῷ Παρνασσῷ, πλεονάζουσαν δὲ τοῖς πρὸς ἕω. αἱ μὲν οὖν κατὰ τὸ μῆκος πλευ[ραὶ τῶν] λεχθεισῶν χωρῶν τε καὶ ταινιῶν ἑκάστης παρ[άλληλοι] ἅπασαί εἰσιν, ἡ μὲν οὖσα προσάρκτιος ἡ [δὲ πρὸς νότον]. αἱ δὲ λοιπαὶ ἑσπέριοι ταῖς ἑῴαις οὐκ εἰσὶ π[αράλληλοι· οὐ]δὲ ἡ παραλία ἑκατέρα, ἥ τε τοῦ Κρι[σαίου κόλπου μέ]χρι Ἀκτίου καὶ ἡ πρὸς Εὔβοιαν μέχρι τῆς [Θεσσαλονικείας] παράλληλοί ἀλλήλαις εἰσίν, εἰς ἃς τελ[ευτᾷ ταῦτα τὰ] ἔθνη· ἀλλ' οὕτω δέχεσθαι δεῖ τὰ σχήματα [τούτων τῶν χω]ρίων ὡς ἂν ἐν τριγώνῳ παρὰ τὴν [βάσιν τε-

ταμένων] γραμμῶν πλειόνων· τὰ γὰρ ἀποληφ[θέντα σχήματα πα]ράλληλα μὲν ἀλλήλοις ἔσται, καὶ τὰς [κατὰ μῆκος ἐναν]τίον πλευρὰς ἕξει παραλλήλους, τ[ὰς δὲ κατὰ πλάτος οὐ]κέτι. ὁ μὲν οὖν ὁλοσχερὴς τύπος οὗτος τῆς λοιπῆς καὶ ἐφεξῆς περιοδείας, τὰ καθ' ἕκαστα δ' ἑξῆς λέγωμεν ἀπὸ τῆς Φωκίδος ἀρξάμενοι.

2 Ταύτης δ' ἐπιφανέσταται δύο πόλεις Δελφοί τε καὶ Ἐλάτεια· Δελφοὶ μὲν διὰ τὸ ἱερὸν τοῦ Πυθίου Ἀπόλλωνος καὶ τὸ μαντεῖον ἀρχαῖον ὄν, εἴ γε Ἀγαμέμνων ἀπ' αὐτοῦ χρηστηριάσασθαι λέγεται ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ· ὁ γὰρ κιθαρῳδὸς ᾄδων εἰσάγεται „νεῖκος „Ὀδυσσῆος καὶ Πηλείδεω Ἀχιλῆος, ὥς ποτε δηρί„σαντο. — ἄναξ δ' ἀνδρῶν Ἀγαμέμνων χαῖρε νόῳ.“ „ὣς γάρ οἱ χρείων μυθήσατο Φοῖβος Ἀπόλλων Πυ- C.418 „θοῖ·“ Δελφοὶ μὲν δὴ διὰ ταῦτα, Ἐλάτεια δὲ ὅτι πασῶν μεγίστη τῶν ἐνταῦθα πόλεων καὶ ἐπικαιριωτάτη διὰ τὸ ἐπικεῖσθαι τοῖς στενοῖς καὶ τὸν ἔχοντα ταύτην ἔχειν τὰς εἰσβολὰς τὰς εἰς τὴν Φωκίδα καὶ τὴν Βοιωτίαν. ὄρη γάρ ἐστιν Οἰταῖα πρῶτον, ἔπειτα τὰ τῶν Λοκρῶν καὶ τῶν Φωκέων, οὐ πανταχοῦ στρατοπέδοις βάσιμα τοῖς ἐκ Θετταλίας ἐμβάλλουσιν, ἀλλ' ἔχει παρόδους στενὰς μὲν ἀφωρισμένας δέ, ἃς αἱ παρακείμεναι πόλεις φρουροῦσιν· ἁλουσῶν δ' ἐκείνων κρατεῖσθαι συμβαίνει καὶ τὰς παρόδους. ἐπεὶ δ' ἡ τοῦ ἱεροῦ ἐπιφάνεια τοῦ ἐν Δελφοῖς ἔχει πρεσβεῖον, καὶ ἅμα ἡ θέσις τῶν χωρίων ἀρχὴν ὑπαγορεύει φυσικήν (ταῦτα γάρ ἐστι τὰ ἑσπεριώτατα μέρη τῆς Φωκίδος), ἐντεῦθεν ἀρκτέον.

3 Εἴρηται δ' ὅτι καὶ ὁ Παρνασσὸς ἐπὶ τῶν ἑσπερίων ὅρων ἵδρυται τῆς Φωκίδος. τούτου δὴ τὸ μὲν πρὸς δύσιν πλευρὸν οἱ Λοκροὶ κατέχουσιν οἱ Ὀζόλαι, τὸ δὲ νότιον οἱ Δελφοί, πετρῶδες χωρίον θεατροειδές, κατὰ κορυφὴν ἔχον τὸ μαντεῖον καὶ τὴν πόλιν, στα-

δίων ἑκκαίδεκα κύκλον πληροῦσαν. ὑπέρκειται δ' αὐτῆς ἡ Λυκώρεια, ἐφ' οὗ τόπου πρότερον ἵδρυντο οἱ Δελφοὶ ὑπὲρ τοῦ ἱεροῦ· νῦν δ' ἐπ' αὐτῷ οἰκοῦσι περὶ τὴν κρήνην τὴν Κασταλίαν. πρόκειται δὲ τῆς πόλεως ἡ Κίρφις ἐκ τοῦ νοτίου μέρους, ὄρος ἀπότομον, νάπην ἀπολιπὸν μεταξύ, δι' ἧς Πλεῖστος διαρρεῖ ποταμός. ὑποπέπτωκε δὲ τῇ ὁ Κίρφει πόλις ἀρχαία Κίρρα, ἐπὶ τῇ θαλάττῃ ἱδρυμένη, ἀφ' ἧς ἀνάβασις εἰς Δελφοὺς ὀγδοήκοντά που σταδίων· ἵδρυται δ' ἀπαντικρὺ Σικυῶνος. πρόκειται δὲ τῆς Κίρρας τὸ Κρισαῖον πεδίον εὔδαιμον. πάλιν γὰρ ἐφεξῆς ἐστιν ἄλλη πόλις Κρῖσα, ἀφ' ἧς ὁ κόλπος Κρισαῖος· εἶτα Ἀντικύρα, ὁμώνυμος τῇ κατὰ τὸν Μαλιακὸν κόλπον καὶ τὴν Οἴτην. καὶ δή φασιν ἐκεῖ τὸν ἐλλέβορον φύεσθαι τὸν ἀστεῖον, ἐνταῦθα δὲ σκευάζεσθαι βέλτιον, καὶ διὰ τοῦτο ἀποδημεῖν δεῦρο πολλοὺς καθάρσεως καὶ θεραπείας χάριν· γίνεσθαι γάρ τι σησαμοειδὲς φάρμακον ἐν τῇ Φωκικῇ, μεθ' οὗ σκευάζεσθαι τὸν Οἰταῖον ἐλλέβορον.

4 Αὕτη μὲν οὖν συμμένει, ἡ δὲ Κίρρα καὶ ἡ Κρῖσα κατεσπάσθησαν, ἡ μὲν .... ὕστερον ὑπ' Εὐρυλόχου τοῦ Θετταλοῦ κατὰ τὸν Κρισαῖον πόλεμον· εὐτυχήσαντες γὰρ οἱ Κρισαῖοι διὰ τὰ ἐκ τῆς Σικελίας καὶ τῆς Ἰταλίας τέλη, πικρῶς ἐτελώνουν τοὺς ἐπὶ τὸ
C.419 ἱερὸν ἀφικνουμένους καὶ παρὰ τὰ προστάγματα τῶν Ἀμφικτυόνων. τὰ δ' αὐτὰ καὶ τοῖς Ἀμφισσεῦσι συνέβη. Λοκρῶν δ' εἰσὶν οὗτοι τῶν Ὀζολῶν. ἐπελθόντες γὰρ καὶ οὗτοι τήν τε Κρῖσαν ἀνέλαβον, καὶ τὸ πεδίον τὸ ὑπὸ τῶν Ἀμφικτυόνων ἀνιερωθὲν αὖθις κατεγεώργουν, καὶ χείρους ἦσαν περὶ τοὺς ξένους τῶν πάλαι Κρισαίων. καὶ τούτους οὖν ἐτιμωρήσαντο οἱ Ἀμφικτύονες, καὶ τῷ θεῷ τὴν χώραν ἀπέδοσαν. ὠλιγώρηται δ' ἱκανῶς καὶ τὸ ἱερόν, πρότερον δ' ὑπερβαλλόντως

[ἐτιμήθη]. δηλοῦσι δ' οἵ τε θησαυροὶ οὓς καὶ δῆμοι καὶ δυνάσται κατεσκεύασαν, εἰς οὓς καὶ χρήματα ἀνετίθεντο καθιερωμένα καὶ ἔργα τῶν ἀρίστων δημιουργῶν, καὶ ὁ ἀγὼν ὁ Πυθικὸς καὶ τὸ πλῆθος τῶν ἱστορουμένων χρησμῶν.

Φασὶ δ' εἶναι τὸ μαντεῖον ἄντρον κοῖλον κατὰ 5
βάθους οὐ μάλα εὐρύστομον, ἀναφέρεσθαι δ' ἐξ αὐτοῦ πνεῦμα ἐνθουσιαστικόν, ὑπερκεῖσθαι δὲ τοῦ στομίου τρίποδα ὑψηλόν, ἐφ' ὃν τὴν Πυθίαν ἀναβαίνουσαν δεχομένην τὸ πνεῦμα ἀποθεσπίζειν ἔμμετρά τε καὶ ἄμετρα· ἐντείνειν δὲ καὶ ταῦτα εἰς μέτρον ποιητάς τινας ὑπουργοῦντας τῷ ἱερῷ. πρώτην δὲ Φημονόην γενέσθαι φασὶ Πυθίαν, κεκλῆσθαι δὲ καὶ τὴν προφῆτιν οὕτω καὶ τὴν πόλιν ἀπὸ τοῦ πυθέσθαι, ἐκτετάσθαι δὲ τὴν πρώτην συλλαβήν, ὡς ἐπὶ τοῦ ἀθανάτου καὶ ἀκαμάτου καὶ διακόνου.

Ἡ μὲν οὖν ἐπὶ τὸ πλεῖον τιμὴ τῷ ἱερῷ τούτῳ διὰ 6
τὸ χρηστήριον συνέβη δόξαντι ἀψευδεστάτῳ τῶν πάντων ὑπάρξαι, προσέλαβε δέ τι καὶ ἡ θέσις τοῦ τόπου. τῆς γὰρ Ἑλλάδος ἐν μέσῳ πώς ἐστι τῆς συμπάσης, τῆς τε ἐντὸς Ἰσθμοῦ καὶ τῆς ἐκτός, ἐνομίσθη δὲ καὶ τῆς οἰκουμένης, καὶ ἐκάλεσαν τῆς γῆς ὀμφαλόν, προσπλάσαντες καὶ μῦθον ὅν φησι Πίνδαρος, ὅτι συμπέσοιεν ἐνταῦθα οἱ ἀετοὶ οἱ ἀφεθέντες ὑπὸ τοῦ Διός, ὁ μὲν
ἀπὸ τῆς δύσεως ὁ δ' ἀπὸ τῆς ἀνατολῆς· οἱ δὲ κόρακάς C.420

16. post διακόνου: ἡ μὲν οὖν ἐπίνοια αὕτη τῆς τε τῶν πόλεων κτίσεως καὶ τῆς τῶν κοινῶν ἱερῶν ἐκτιμήσεως. καὶ γὰρ κατὰ πόλεις συνήεσαν καὶ κατὰ ἔθνος, φυσικῶς κοινωνικοὶ ὄντες, καὶ ἅμα τῆς παρ' ἀλλήλων χρείας χάριν, καὶ εἰς τὰ ἱερὰ τὰ κοινὰ ἀπήντων διὰ τὰς αὐτὰς αἰτίας, ἑορτὰς καὶ πανηγύρεις συντελοῦντες. φιλικὸν γὰρ πᾶν τὸ τοιοῦτον, ἀπὸ τῶν ὁμοτραπέζων ἀρξάμενον καὶ ὁμοσπόνδων καὶ ὁμωροφίων. ὅσῳ δὲ πλεῖον καὶ ἐκ πλειόνων ἐπεδήμει, τοσῷδε μεῖζον καὶ τὸ ὄφελος ἐνομίζετο.

φασι. δείκνυται δὲ καὶ ὀμφαλός τις ἐν τῷ ναῷ τεταινιωμένος καὶ ἐπ᾿ αὐτῷ αἱ δύο εἰκόνες τοῦ μύθου.

7 Τοιαύτης δὲ τῆς εὐκαιρίας οὔσης τῆς περὶ τοὺς Δελφούς, συνῄεσάν τε ῥᾳδίως ἐκεῖσε, μάλιστα δ᾿ οἱ ἐγγύθεν, καὶ δὴ καὶ τὸ Ἀμφικτυονικὸν σύστημα ἐκ τούτων συνετάχθη περί τε τῶν κοινῶν βουλευσόμενον καὶ τοῦ ἱεροῦ τὴν ἐπιμέλειαν ἕξον κοινοτέραν, ἅτε καὶ χρημάτων ἀποκειμένων πολλῶν καὶ ἀναθημάτων φυλακῆς καὶ ἁγιστείας δεομένων μεγάλης. τὰ πάλαι μὲν οὖν ἀγνοεῖται, Ἀκρίσιος δὲ τῶν μνημονευομένων πρῶτος διατάξαι δοκεῖ τὰ περὶ τοὺς Ἀμφικτύονας καὶ πόλεις ἀφορίσαι τὰς μετεχούσας τοῦ συνεδρίου καὶ ψῆφον ἑκάστῃ δοῦναι, τῇ μὲν καθ᾿ αὑτὴν τῇ δὲ μεθ᾿ ἑτέρας ἢ μετὰ πλειόνων, ἀποδεῖξαι δὲ καὶ τὰς Ἀμφικτυονικὰς δίκας ὅσαι πόλεσι πρὸς πόλεις εἰσίν· ὕστερον δ᾿ ἄλλαι πλείους διατάξεις γεγόνασιν, ἕως κατελύθη καὶ τοῦτο τὸ σύνταγμα, καθάπερ τὸ τῶν Ἀχαιῶν. αἱ μὲν οὖν πρῶται δυοκαίδεκα συνελθεῖν λέγονται πόλεις· ἑκάστη δ᾿ ἔπεμπε πυλαγόραν, δὶς κατ᾿ ἔτος οὔσης τῆς συνόδου ἔαρός τε καὶ μετοπώρου· ὕστερον δὲ καὶ πλείους προσῆλθον πόλεις. τὴν δὲ σύνοδον Πυλαίαν ἐκάλουν τὴν μὲν ἐαρινὴν τὴν δὲ μετοπωρινήν, ἐπειδὴ ἐν Πύλαις συνήγοντο, ἃς καὶ Θερμοπύλας καλοῦσιν· ἔθυον δὲ τῇ Δήμητρι οἱ πυλαγόροι. τὸ μὲν οὖν ἐξ ἀρχῆς τοῖς ἐγγὺς μετῆν * καὶ τούτων καὶ τοῦ μαντείου, ὕστερον δὲ καὶ οἱ πόρρωθεν ἀφικνοῦντο καὶ ἐχρῶντο τῷ μαντείῳ καὶ ἔπεμπον δῶρα καὶ θησαυροὺς κατεσκεύαζον, καθάπερ Κροῖσος καὶ ὁ πατὴρ Ἀλυάττης καὶ Ἰταλιωτῶν τινες καὶ Σικελοί.

8 Ἐπίφθονος δ᾿ ὢν ὁ πλοῦτος δυσφύλακτός ἐστι κἂν ἱερὸς ᾖ. νυνί γέ τοι πενέστατόν ἐστι τὸ ἐν Δελφοῖς ἱερὸν χρημάτων γε χάριν, τῶν δ᾿ ἀναθημάτων τὰ μὲν

ἧρται τὰ δὲ πλείω μένει. πρότερον δὲ πολυχρήματον ἦν τὸ ἱερόν, καθάπερ Ὅμηρός τε εἴρηκεν „οὐδ' ὅσα „λάινος οὐδὸς ἀφήτορος ἐντὸς ἐέργει Φοίβου Ἀπόλ„λωνος Πυθοῖ ἐνὶ πετρηέσσῃ," καὶ οἱ θησαυροὶ δηλοῦσι καὶ ἡ σύλησις ἡ γενηθεῖσα ὑπὸ τῶν Φωκέων, ἐξ ἧς ὁ Φωκικὸς καὶ ἱερὸς καλούμενος ἐξήφθη πόλεμος. αὕτη μὲν οὖν ἡ σύλησις γεγένηται κατὰ Φίλιππον τὸν Ἀμύντου· προτέραν δ' ἄλλην ὑπονοοῦσιν ἀρχαίαν, ἣ τὸν ὑφ' Ὁμήρου λεγόμενον πλοῦτον ἐξεφόρησεν· οὐδὲ C.421
γὰρ ἴχνος αὐτοῦ σωθῆναι πρὸς τοὺς ὕστερον χρόνους ἐν οἷς οἱ περὶ Ὀνόμαρχον καὶ Φάυλλον ἐσύλησαν τὸ ἱερόν, ἀλλὰ τὰ μὲν .... ἀπενεχθέντα νεώτερα ἐκείνων εἶναι τῶν χρημάτων· ἀποκεῖσθαι γὰρ ἐν θησαυροῖς, ἀπὸ λαφύρων ἀνατεθέντα, ἐπιγραφὰς σώζοντα ἐν αἷς καὶ οἱ ἀναθέντες· „Γύγου" γὰρ καὶ „Κροίσου" καὶ „Συβαριτῶν" καὶ „Σπινητῶν τῶν περὶ τὸν Ἀδρίαν," καὶ οὕτως ἐπὶ τῶν ἄλλων. οὔτ .... ἥκοι τὰ παλαιὰ χρήματα ἀναμεμῖχθαι· [ὡς] καὶ ἄλλοι τόποι διασημαίνουσιν ὑπὸ τούτων σκευωρηθέντες τῶν ἀνδρῶν. ἔνιοι δὲ τὸν ἀφήτορα δεξάμενοι λέγεσθαι θησαυρόν, ἀφήτορος δ' οὐδὸν κατὰ γῆς θησαυρισμόν, ἐν τῷ ναῷ κατορωρύχθαι φασὶ τὸν πλοῦτον ἐκεῖνον, καὶ τοὺς περὶ τὸν Ὀνόμαρχον ἐπιχειρήσαντας ἀνασκάπτειν νύκτωρ σεισμῶν γενομένων μεγάλων ἔξω τοῦ ναοῦ φυγεῖν καὶ παύσασθαι τῆς ἀνασκαφῆς, ἐμβαλεῖν δὲ καὶ τοῖς ἄλλοις φόβον τῆς τοιαύτης ἐπιχειρήσεως.

Τῶν δὲ ναῶν τὸν μὲν πτέρινον εἰς τοὺς μύθους 9
τακτέον, τὸν δὲ δεύτερον Τροφωνίου καὶ Ἀγαμήδους ἔργον φασί, τὸν δὲ νῦν Ἀμφικτύονες κατεσκεύασαν. δείκνυται δ' ἐν τῷ τεμένει τάφος Νεοπτολέμου κατὰ χρησμὸν γενόμενος, Μαχαιρέως Δελφοῦ ἀνδρὸς ἀνελόντος αὐτόν, ὡς μὲν ὁ μῦθος, δίκας αἰτοῦντα τὸν

θεὸν τοῦ πατρῴου φόνου, ὡς δὲ τὸ εἰκός, ἐπιθέμενον τῷ ἱερῷ. τοῦ δὲ Μαχαιρέως ἀπόγονον Βράγχον φασὶ τὸν προστατήσαντα τοῦ ἐν Διδύμοις ἱεροῦ.

10 Ἀγὼν δὲ ὁ μὲν ἀρχαῖος ἐν Δελφοῖς κιθαρῳδῶν ἐγενήθη παιᾶνα ᾀδόντων εἰς τὸν θεόν· ἔθηκαν δὲ Δελφοί· μετὰ δὲ τὸν Κρισαῖον πόλεμον οἱ Ἀμφικτύονες ἱππικὸν καὶ γυμνικὸν ἐπ' Εὐρυλόχου διέταξαν στεφανίτην καὶ Πύθια ἐκάλεσαν. προσέθεσαν δὲ τοῖς κιθαρῳδοῖς αὐλητάς τε καὶ κιθαριστὰς χωρὶς ᾠδῆς, ἀποδώσοντάς τι μέλος ὃ καλεῖται νόμος Πυθικός. πέντε δ' αὐτοῦ μέρη ἐστίν, ἄγκρουσις ἄμπειρα κατακελευσμὸς ἴαμβοι καὶ δάκτυλοι σύριγγες. ἐμελοποίησε μὲν οὖν Τιμοσθένης, ὁ ναύαρχος τοῦ δευτέρου Πτολεμαίου ὁ καὶ τοὺς λιμένας συντάξας ἐν δέκα βίβλοις. βούλεται δὲ τὸν ἀγῶνα τοῦ Ἀπόλλωνος τὸν πρὸς τὸν δράκοντα διὰ τοῦ μέλους ὑμνεῖν, ἄγκρουσιν μὲν τὸ προοίμιον δηλῶν, ἄμπειραν δὲ τὴν πρώτην κατάπειραν τοῦ ἀγῶνος, κατακελευσμὸν δὲ αὐτὸν τὸν ἀγῶνα, ἴαμβον δὲ καὶ δάκτυλον τὸν ἐπιπαιανισμὸν τὸν [γινόμενον] ἐπὶ
C.422 τῇ νίκῃ μετὰ τοιούτων ῥυθμῶν, ὧν ὁ μὲν ὕμνοις ἐστὶν οἰκεῖος ὁ δ' ἴαμβος κακισμοῖς, σύριγγας δὲ τὴν ἔκλειψιν τοῦ θηρίου, μιμουμένων ὡς ἂν καταστρέφοντος ἐσχάτους τινὰς συριγμούς.

11 Ἔφορος δ', ᾧ τὸ πλεῖστον προσχρώμεθα διὰ τὴν περὶ ταῦτα ἐπιμέλειαν, καθάπερ καὶ Πολύβιος μαρτυρῶν τυγχάνει, ἀνὴρ ἀξιόλογος, δοκεῖ μοι τἀναντία ποιεῖν ἔσθ' ὅτε τῇ προαιρέσει καὶ ταῖς ἐξ ἀρχῆς ὑποσχέσεσιν. ἐπιτιμήσας γοῦν τοῖς φιλομυθοῦσιν ἐν τῇ τῆς ἱστορίας γραφῇ καὶ τὴν ἀλήθειαν ἐπαινέσας προστίθησι τῷ περὶ τοῦ μαντείου τούτου λόγῳ σεμνήν τινα ὑπόσχεσιν, ὡς πανταχοῦ μὲν ἄριστον νομίζει τἀληθές,

21. post κακισμοῖς: ὡς καὶ τὸ ἰαμβίζειν 23. ante ἐσχάτους: εἰς

μάλιστα δὲ κατὰ τὴν ὑπόθεσιν ταύτην. ἄτοπον γὰρ εἰ περὶ μὲν τῶν ἄλλων τὸν τοιοῦτον ἀεὶ τρόπον διώκομεν, φησί, περὶ δὲ τοῦ μαντείου λέγοντες, ὃ πάντων ἐστὶν ἀψευδέστατον, τοῖς οὕτως ἀπίστοις καὶ ψευδέσι χρησόμεθα λόγοις. ταῦτα δ' εἰπὼν ἐπιφέρει παραχρῆμα, ὅτι ὑπολαμβάνουσι κατασκευάσαι τὸ μαντεῖον Ἀπόλλωνα μετὰ Θέμιδος ὠφελῆσαι βουλόμενον τὸ γένος ἡμῶν. εἶτα τὴν ὠφέλειαν εἰπὼν ὅτι εἰς ἡμερότητα προὐκαλεῖτο καὶ ἐσωφρόνιζε, τοῖς μὲν χρηστηριάζων καὶ τὰ μὲν προστάττων τὰ δ' ἀπαγορεύων, τοὺς δ' οὐδ' ὅλως προσιέμενος, ταῦτα διοικεῖν νομίζουσι, φησίν, αὐτόν, οἱ μὲν αὐτὸν τὸν θεὸν σωματοειδῆ γινόμενον, οἱ δ' ἀνθρώποις ἔννοιαν παραδιδόντα τῆς ἑαυτοῦ βουλήσεως.

12 Ὑποβὰς δὲ περὶ τῶν Δελφῶν οἵτινές εἰσι διαλεγόμενος φησὶ τὸ παλαιὸν Παρνασσίους τινὰς αὐτόχθονας καλουμένους οἰκεῖν τὸν Παρνασσόν· καθ' ὃν χρόνον Ἀπόλλωνα τὴν γῆν ἐπιόντα ἡμεροῦν τοὺς ἀνθρώπους ἀπό τε τῶν ἡμέρων καρπῶν καὶ τῶν βίων, ἐξ Ἀθηνῶν δ' ὁρμηθέντα ἐπὶ Δελφοὺς ταύτην ἰέναι τὴν ὁδόν, ᾗ νῦν Ἀθηναῖοι τὴν Πυθιάδα πέμπουσι· γενόμενον δὲ κατὰ Πανοπέας Τιτυὸν καταλῦσαι ἔχοντα τὸν τόπον, βίαιον ἄνδρα καὶ παράνομον· τοὺς δὲ Παρνασσίους συμμίξαντας αὐτῷ καὶ ἄλλον μηνῦσαι χαλεπὸν ἄνδρα Πύθωνα τοὔνομα, ἐπίκλησιν δὲ Δράκοντα, κατατοξεύοντος δ' ἐπικελεύειν ἵε παιάν, ἀφ' οὗ τὸν παιανισμὸν οὕτως ἐξ ἔθους παραδοθῆναι τοῖς μέλλουσι συμπίπτειν εἰς παράταξιν· ἐμπρησθῆναι δὲ καὶ σκηνὴν τότε τοῦ Πύθωνος ὑπὸ τῶν Δελφῶν, καθάπερ καὶ νῦν ἔτι * καὶ ἀεὶ ὑπόμνημα ποιουμένους τῶν τότε γενομένων. τί δ' ἂν εἴη μυθωδέστερον ἢ Ἀπόλλων τοξεύων καὶ κολάζων Τιτυοὺς καὶ Πύθωνας καὶ C.423

ὁδεύων ἐξ Ἀθηνῶν εἰς Δελφοὺς καὶ γῆν πᾶσαν ἐπιών; εἰ δὲ ταῦτα μὴ ὑπελάμβανε μύθους εἶναι, τί ἐχρῆν τὴν μυθευομένην Θέμιν γυναῖκα καλεῖν, τὸν δὲ μυθευόμενον δράκοντα ἄνθρωπον; πλὴν εἰ συγχεῖν ἐβούλετο τόν τε τῆς ἱστορίας καὶ τὸν τοῦ μύθου τύπον. παραπλήσια τούτοις καὶ τὰ περὶ τῶν Αἰτωλῶν εἰρημένα. φήσας γὰρ ἀπορθήτους αὐτοὺς ἐκ παντὸς τοῦ χρόνου τοτὲ μὲν Αἰολέας φησὶν οἰκῆσαι τοὺς κατέχοντας βαρβάρους ἐκβαλόντας, τοτὲ δ' Αἰτωλὸν μετὰ τῶν ἐξ Ἤλιδος Ἐπειῶν .... τῶν ἐχθρῶν· τούτους δ' ὑπ' Ἀλκμέωνος καὶ Διομήδους. ἀλλ' ἐπάνειμι ἐπὶ τοὺς Φωκέας.

13 Ἑξῆς γὰρ ἐν τῇ παραλίᾳ μετὰ τὴν Ἀντικύραν πολίχνιόν ἐστιν Ὀπισθομάραθος· εἶτ' ἄκρα Φαρύγιον ἔχουσα ὕφορμον· εἶθ' ὁ λιμὴν ὕστατος ὁ προσαγορευθεὶς μυχὸς ἀπὸ τοῦ συμβεβηκότος, ὑπὸ τῷ Ἑλικῶνι καὶ τῇ Ἄσκρῃ κείμενος. οὐδ' αἱ Ἀβαὶ δὲ τὸ μαντεῖον ἄπωθεν τῶν τόπων τούτων ἐστίν, οὐδ' ἡ Ἄμβρυσος, [οὐδ' ἡ Με]δεὼν ὁμώνυμος τῇ Βοιωτιακῇ. ἔτι δὲ μᾶλλον ἐν τῇ μεσογαίᾳ μετὰ Δελφοὺς ὡς πρὸς τὴν ἕω Δαυλὶς πολίχνιον, ὅπου Τηρέα τὸν Θρᾷκά φασι δυναστεῦσαι· καὶ τὰ περὶ Φιλομήλαν καὶ Πρόκνην ἐκεῖ μυθεύουσι. τοὔνομα δὲ τῷ τόπῳ γεγονέναι ἀπὸ τοῦ δάσους· δαυλοὺς γὰρ καλοῦσι τὰ δάση. Ὅμηρος μὲν οὖν Δαυλίδα εἶπεν, οἱ δ' ὕστερον Δαυλίαν. καὶ τὸ „[οἳ] Κυπάρισσον ἔχον“ δέχονται διττῶς, οἱ μὲν ὁμωνύμως τῷ φυτῷ οἱ δὲ παρωνύμως κώμην ὑπὸ τῇ Λυκωρείᾳ.

14 Πανοπεὺς δ' ὁ νῦν Φανοτεύς, ὅμορος τοῖς περὶ Λεβάδειαν τόποις, ἡ τοῦ Ἐπειοῦ πατρίς. καὶ τὰ περὶ

---

23. post μυθεύουσι: Θουκυδίδης δ' ἐν Μεγάροις φησί

τὸν Τιτυὸν δὲ ἐνταῦθα μυθεύουσιν. Ὅμηρος δέ φησιν ὅτι οἱ Φαίηκες τὸν Ῥαδάμανθυν εἰς Εὔβοιαν „ἤγαγον, „ὀψόμενον Τιτυὸν γαιήϊον υἱόν.“ καὶ Ἐλάριόν τι σπήλαιον ἀπὸ τῆς Τιτυοῦ μητρὸς Ἐλάρας δείκνυται κατὰ τὴν νῆσον καὶ ἡρῷον τοῦ Τιτυοῦ καὶ τιμαί τινες. πλησίον δὲ Λεβαδείας καὶ ἡ Τραχίν, ὁμώνυμος τῇ Οἰταίᾳ, Φωκικὴ πολίχνη· οἱ δ' ἐνοικοῦντες Τραχίνιοι λέγονται.

Ἡ δ' Ἀνεμώρεια ὠνόμασται ἀπὸ τοῦ συμβαίνον- 15
τος πάθους· καταιγίζει γὰρ εἰς αὐτὴν ὁ καλούμενος Κατοπτήριος χῶρος, κρημνός τις ἀπὸ τοῦ Παρνασσοῦ διήκων· ὅριον δ' ἦν ὁ τόπος οὗτος Δελφῶν τε καὶ Φωκέων, ἡνίκα ἀπέστησαν τοὺς Δελφοὺς ἀπὸ τοῦ κοινοῦ συστήματος τῶν Φωκέων Λακεδαιμόνιοι καὶ ἐπέτρεψαν καθ' αὑτοὺς πολιτεύεσθαι· τινὲς δὲ Ἀνεμώλειαν C.424
καλοῦσιν. εἶθ' Ὑάμπολις (Ὕα μετὰ ταῦτα ἐκλήθη ὑπό τινων), εἰς ἣν ἐκ Βοιωτίας ἐκπεσεῖν ἔφαμεν τοὺς Ὕαντας· ἔστι δ' ἐν τῇ μεσογαίᾳ μάλιστα καὶ αὕτη, πλησίον τῶν Παραποταμίων, ἑτέρα οὖσα τῆς ἐν τῷ Παρνασσῷ Ὑαμπεί[ας], καὶ Ἐλάτεια ἡ μεγίστη πόλις τῶν Φωκικῶν, ἣν Ὅμηρος μὲν οὐκ οἶδε (νεωτέρα γάρ ἐστι τῆς ἡλικίας ἐκείνου), ἐπικαιρίως δ' ἵδρυται πρὸς τὰς ἐκ τῆς Θετταλίας εἰσβολάς. δηλοῖ δὲ τὴν εὐφυΐαν ταύτην καὶ Δημοσθένης, φράζων τὸν θόρυβον τὸν γενηθέντα Ἀθήνησιν αἰφνιδίως, ἐπειδὴ ἧκέ τις ἀπαγγέλλων ὡς τοὺς πρυτάνεις ὡς Ἐλάτεια κατείληπται.

Παραποτάμιοι δ' εἰσὶ κατοικία τις ἐπὶ τῷ Κηφισσῷ 16
ἱδρυμένη πλησίον Φανοτεῦσι καὶ Χαιρωνεῦσι καὶ Ἐλατείᾳ. φησὶ δὲ Θεόπομπος τὸν τόπον τοῦτον διέχειν τῆς μὲν Χαιρωνείας ὅσον τετταράκοντα σταδίους, διορίζειν δὲ τοὺς Ἀμβρυσέας καὶ Πανοπέας καὶ Δαυλιέας· κεῖσθαι δ' ἐπὶ τῆς ἐμβολῆς τῆς ἐκ Βοιωτίας εἰς Φωκέας ἐν λόφῳ μετρίως ὑψηλῷ, μεταξὺ τοῦ τε Παρνασσοῦ

καὶ τοῦ [Ἀδυλίου ὄ]ρους πενταστάδιον σχεδόν τι ἀπολειπόντων ἀν[ὰ μέσον χω]ρίον, διαιρεῖν δὲ τὸν Κηφισσὸν στενὴν ἑκατέρωθεν διδόντα πάροδον, τὰς μὲν ἀρχὰς ἐκ Λιλαίας ἔχοντα Φωκικῆς πόλεως (καθάπερ καὶ Ὅμηρός φησιν „οἵ τε Λίλαιαν ἔχον πηγῇς ἔπι Κη-„φισσοῖο“), εἰς δὲ τὴν Κωπαΐδα λίμνην ἐκδιδόντα· τὸ δὲ Ἀδύλιον παρατείνειν ἐφ' ἑξήκοντα σταδίους μέχρι τοῦ *Ὑφαντείου, ἐφ' ᾧ κεῖται ὁ Ὀρχομενός. καὶ Ἡσίοδος δ' ἐπὶ πλέον περὶ τοῦ ποταμοῦ λέγει καὶ τῆς ῥύσεως, ὡς δι' ὅλης ῥέοι τῆς Φωκίδος σκολιῶς καὶ δρακοντοειδῶς „παρὲκ Πανοπῆα διὰ Γλήχωνά τ' ἐρυμνὴν „καί τε δι' Ὀρχομενοῦ εἱλιγμένος εἶσι δράκων ὥς.“ τὰ δὲ στενὰ τὰ περὶ τοὺς Παραποταμίους ἢ τὴν Παραποταμίαν (λέγεται γὰρ ἀμφοτέρως) περιμάχητα ὑπῆρξεν ἐν τ[ῷ Φωκικῷ πολέ]μῳ, μίαν ἐχόντων ταύτην ἐμβολὴν [εἰς τὴν Φωκίδα]· ἔστι δὲ Κηφισσὸς ὅ τε Φωκικὸς καὶ ὁ Ἀθήνησι καὶ ὁ ἐν Σαλαμῖνι, τέταρτος δὲ καὶ πέμπτος ὁ ἐν Σικυῶνι καὶ ὁ ἐν Σκύρῳ, ἐν Ἀπολλωνίᾳ δὲ τῇ πρὸς Ἐπιδάμνῳ πηγή ἐστι κατὰ τὸ γυμνάσιον, ἣν καλοῦσι Κηφισσόν.

17 Δαφνοῦς δὲ νῦν μὲν κατέσκαπται· ἦν δέ ποτε τῆς Φωκίδος πόλις ἁπτομένη τῆς Εὐβοϊκῆς θαλάττης, διαιροῦσα τοὺς Ἐπικνημιδίους Λοκρούς, τοὺς μὲν ἐπὶ τὸ πρὸς Βοιω[τίαν μέρος τοὺς δὲ πρὸς] Φωκίδα τὴν
C.425 ἀπὸ θαλάττης καθήκ[ουσαν τότε ἐπὶ θάλατταν]. τεκμήριον δὲ τὸ ἐν αὐτῷ Σχεδιεῖον, ὅ φασιν εἶναι τάφον Σχεδίου. [εἴρη]ται δὲ ὁ Δαφνοῦς ἐφ' ἑκάτερα τὴν Λοκρίδα [σχίσαι, ὥστ]ε μηδαμοῦ ἅπτεσθαι ἀλλήλων τούς τ' Ἐπικνημι[δίους καὶ το]ὺς Ὀπουντίους· ὕστερον δὲ

---

18. post Σκύρῳ: ἔκτος δὲ ὁ ἐν Ἄργει τὰς πηγὰς ἔχων ἐκ Λυρκείου

προσωρίσθη τοῖς [Ὀπουντίοις ὁ τό]πος. περὶ μὲν δὴ τῆς Φωκίδος ἀπόχρη.

Ἐφεξῆς δ' ἐστὶν ἡ Λοκρίς, ὥστε περὶ ταύτης λε- 4
κτέον. διῄρηται δὲ δίχα· τὸ μὲν γὰρ αὐτῆς ἐστιν οἱ πρὸς Εὔβοιαν Λοκροί, [οὓς ἐλέ]γομεν σχίζεσθαί ποτε ἐφ' ἑκάτερα τοῦ Δαφνοῦντος· ἐπεκαλοῦντο δ' οἱ μὲν Ὀπούντιοι ἀπὸ τῆς μητροπόλεως, οἱ δ' Ἐπικνημίδιοι ἀπὸ ὄρους τινὸς Κνημῖδος· τὸ δὲ λοιπὸν οἱ ἑσπέριοί εἰσι Λοκροί, οἱ δ' αὐτοὶ καὶ Ὀζόλαι καλοῦνται. χωρίζει δ' αὐτοὺς ἀπὸ τῶν Ὀπουντίων καὶ τῶν Ἐπικνημιδίων ὅ τε Παρνασσὸς μεταξὺ ἱδρυμένος καὶ ἡ τῶν Δωριέων τετράπολις. ἀρκτέον δ' ἀπὸ τῶν Ὀπουντίων.

Ἐφεξῆς τοίνυν ταῖς Ἁλαῖς, εἰς ἃς κατέληγεν ἡ 2
Βοιωτιακὴ παραλία ἡ πρὸς Εὐβοίᾳ, τὸν Ὀπούντιον κόλπον κεῖσθαι συμβαίνει. ὁ δ' Ὀποῦς ἐστι μητρόπολις, καθάπερ καὶ τὸ ἐπίγραμμα δηλοῖ τὸ ἐπὶ τῇ πρώτῃ τῶν πέντε στηλῶν τῶν περὶ Θερμοπύλας ἐπιγεγραμμένον πρὸς τῷ πολυανδρίῳ „τούσδε ποθεῖ φθιμένους „ὑπὲρ Ἑλλάδος ἀντία Μήδων, μητρόπολις Λοκρῶν εὐ„θυνόμων Ὀπόεις.“ ἀπέχει δὲ τῆς θαλάττης περὶ πεντεκαίδεκα σταδίους, τοῦ δ' ἐπινείου καὶ ἑξήκοντα. Κῦνος δ' ἐστὶ τὸ ἐπίνειον, ἄκρα τερματίζουσα τὸν Ὀπούντιον κόλπον σταδίων ὄντα περὶ τετταράκοντα· μεταξὺ δὲ Ὀποῦντος καὶ Κύνου πεδίον εὔδαιμον· κεῖται δὲ κατὰ Αἴδηψὸν τῆς Εὐβοίας, ὅπου τὰ θερμὰ τὰ Ἡρακλέους, πορθμῷ διειργόμενος σταδίων ἑξήκοντα καὶ ἑκατόν. ἐν δὲ τῷ Κύνῳ Δευκαλίωνά φασιν οἰκῆσαι, καὶ τῆς Πύρρας αὐτόθι δείκνυται σῆμα, τοῦ δὲ Δευκαλίωνος Ἀθήνησι. διέχει δὲ τῆς Κνημῖδος ὁ Κῦνος ὅσον πεντήκοντα σταδίους. καὶ ἡ Ἀταλάντη δὲ νῆσος κατὰ Ὀποῦντα ἵδρυται, ὁμώνυμος τῇ πρὸ τῆς Ἀττικῆς. λέγεσθαι δ' Ὀπουντίους τινὰς καὶ ἐν τῇ Ἠλείᾳ

φασίν, ὧν οὐκ ἄξιον μεμνῆσθαι, πλὴν ὅτι συγγένειαν αὐτῶν ἐξανανεοῦνται τοῖς Ὀπουντίοις ὑπάρχουσαν. ὅτι δ' ἐξ Ὀποῦντος ἦν ὁ Πάτροκλος λέγει Ὅμηρος, καὶ διότι φόνον ἀκούσιον πράξας ἔφυγεν εἰς Πηλέα, ὁ δὲ πατὴρ Μενοίτιος ἔμεινεν ἐν τῇ πατρίδι· ἐκεῖσε γάρ φησιν ὁ Ἀχιλλεὺς ὑποσχέσθαι τῷ Μενοιτίῳ κατάξειν τὸν Πάτροκλον ἐκ τῆς στρατείας ἐπανελθόντα. οὐ μὴν ἐβασίλευέ γε ἐκεῖνος τῶν Ὀπουντίων, ἀλλ' Αἴας ὁ Λοκρός, πατρίδος ὤν, ὥς φασι, Ναρύκου. Αἰάνην δ' ὀνομάζουσι τὸν ἀναιρεθέντα ὑπὸ τοῦ Πατρόκλου, ἀφ' οὗ καὶ τέμενος Αἰάνειον δείκνυται καὶ κρήνη τις Αἰανίς.

C.426
3 Ἑξῆς μετὰ τὸν Κῦνον Ἀλόπη ἐστὶ καὶ ὁ Δαφνοῦς, ὃν ἔφαμεν κατεσπάσθαι· λιμὴν δ' ἐστὶν αὐτόθι διέχων Κύνου περὶ ἐνενήκοντα σταδίους, Ἐλατείας δὲ πεζεύοντι εἰς τὴν μεσόγαιαν ἑκατὸν εἴκοσιν. ἤδη δ' ἐστὶ ταῦτα τοῦ Μαλιακοῦ κόλπου· μετὰ γὰρ τὸν Ὀπούντιον συνεχής ἐστιν οὗτος.

4 Μετὰ δὲ Δαφνοῦντα Κνημῖδες χωρίον ἐρυμνὸν ὅσον σταδίους εἴκοσι πλεύσαντι· καθ' ὃ τὸ Κήναιον ἐκ τῆς Εὐβοίας ἀντίκειται ἄκρα βλέπουσα πρὸς ἑσπέραν καὶ τὸν Μαλιέα κόλπον, πορθμῷ διειργομένη σχεδὸν εἰκοσασταδίῳ. ταῦτα δ' ἤδη τῶν Ἐπικνημιδίων ἐστὶ Λοκρῶν. ἐνταῦθα καὶ αἱ Λιχάδες καλούμεναι τρεῖς νῆσοι πρόκεινται ἀπὸ Λίχα τοὔνομα ἔχουσαι. καὶ ἄλλαι δ' εἰσὶν ἐν τῷ λεχθέντι παράπλῳ, ἃς ἑκόντες παραλείπομεν. μετὰ δὲ εἴκοσι σταδίους ἀπὸ Κνημίδων λιμήν, ὑπὲρ οὗ κεῖται τὸ Θρόνιον ἐν σταδίοις τοῖς ἴσοις κατὰ τὴν μεσόγαιαν. εἶθ' ὁ Βοάγριος ποταμὸς ἐκδίδωσιν ὁ παραρρέων τὸ Θρόνιον, Μάνην δ' ἐπονομάζουσιν αὐτόν· ἔστι δὲ χειμάρρους ὥστ' ἀβρόχοις ἐμβαίνειν τοῖς ποσίν, ἄλλοτε δὲ καὶ δίπλεθρον ἴσχειν

πλάτος. μετὰ δὲ ταῦτα Σκάρφεια σταδίοις ὑπερκει-
μένη τῆς θαλάττης δέκα, διέχουσα δὲ τοῦ Θρονίου τρι-
άκοντα, ἐλάττοσι δὲ μικρῷ .... ἔπειτα Νίκαιά ἐστι
καὶ αἱ Θερμοπύλαι.

Τῶν δὲ λοιπῶν πόλεων τῶν μὲν ἄλλων οὐκ ἄξιον 5
μεμνῆσθαι· ὧν δ' Ὅμηρος μέμνηται Καλλίαρος μὲν
οὐκέτι οἰκεῖται, [εὐήροτον δὲ νῦν ἐσ]τι πεδίον· κα-
λοῦσι δ' οὕτως ἀπὸ τοῦ [συμβεβηκότος· καὶ Βῆσσα
δ'] οὐκ ἔστι, δρυμώδης τις τόπος· οὐδ' [αἱ Αὐγειαί,
τὴν δὲ χώ]ραν ἔχουσι Σκαρφιεῖς· ταύτην μὲν οὖν τὴν
Βῆσσαν ἐν τοῖς δυσὶ γραπτέον σίγμα (ἀπὸ γὰρ
τοῦ δρυμώδους ὠνόμασται ὁμωνύμως, ὥσπερ καὶ
Νάπη ἐν τῷ Μηθύμνης πεδίῳ, ἣν Ἑλλάνικος ἀγνο-
ῶν ..... Λάπην ὀνομάζει), τὸν δ' ἐν τῇ Ἀττικῇ δῆ-
μον, ἀφ' οὗ Βησαιεῖς οἱ δημόται λέγονται, ἐν τῷ ἑνὶ
σίγμα.

Ἡ δὲ Τάρφη κεῖται ἐφ' ὕψους, διέχουσα [Θρονίου] 6
σταδίους εἴκοσι, χώραν δ' εὔκαρπόν τε καὶ εὔδενδρον
ἔχει· ἤδη γὰρ καὶ αὕτη ἀπὸ τοῦ δάσους ὠνόμασται. κα-
λεῖται δὲ νῦν Φαρύγαι· ἵδρυται δ' αὐτόθι Ἥρας Φα-
ρυγαίας ἱερὸν ἀπὸ τῆς ἐν Φαρύγαις τῆς Ἀργείας· καὶ
δὴ καὶ ἄποικοί φασιν εἶναι Ἀργείων.

Τῶν γε μὴν ἑσπερίων Λοκρῶν Ὅμηρος οὐ μέμνη- 7
ται, ἢ οὐ ῥητῶς γε, ἀλλὰ μόνον τῷ δοκεῖν ἀντιδια-
στέλλεσθαι τούτοις ἐκείνους περὶ ὧν εἰρήκαμεν „Λο-
„κρῶν, οἳ ναίουσι πέρην ἱερῆς Εὐβοίης," ὡς καὶ ἑτέ-
ρων ὄντων. ἀλλ' οὐδ' ὑπὸ τῶν ἄλλων τεθρύληνται
πολλῶν· πόλεις δ' ἔσχον Ἄμφισσάν τε καὶ Ναύπα-
κτον, ὧν ἡ Ναύπακτος συμμένει τοῦ Ἀντιρρίου πλη-
σίον, ὠνόμασται δ' ἀπὸ τῆς ναυπηγίας τῆς ἐκεῖ γενο-
μένης, εἴτε τῶν Ἡρακλειδῶν ἐκεῖ ναυπηγησαμένων C.427
τὸν στόλον, εἴθ' (ὥς φησιν Ἔφορος) Λοκρῶν ἔτι πρό-

τερον παρασκευασάντων· ἔστι δὲ νῦν Αἰτωλῶν Φιλίππου προσκρίναντος.

8 Αὐτοῦ δὲ καὶ ἡ Χαλκίς, ἧς μέμνηται καὶ ὁ ποιητὴς ἐν τῷ Αἰτωλικῷ καταλόγῳ, ὑποκάτω Καλυδῶνος· αὐτοῦ δὲ καὶ ὁ Ταφιασσὸς λόφος, ἐν ᾧ τὸ τοῦ Νέσσου μνῆμα καὶ τῶν ἄλλων Κενταύρων, ὧν ἀπὸ τῆς σηπεδόνος φασὶ τὸ ὑπὸ τῇ ῥίζῃ τοῦ λόφου προχεόμενον δυσῶδες καὶ θρόμβους ἔχον ὕδωρ ῥεῖν· διὰ δὲ τοῦτο καὶ Ὀζόλας καλεῖσθαι τὸ ἔθνος. καὶ ἡ Μολύκρεια δ' ἐστὶ κατὰ τὸ Ἀντίρριον, Αἰτωλικὸν πολίχνιον. ἡ δ' Ἄμφισσα ἐπὶ τοῖς ἄκροις ἵδρυται τοῦ Κρισαίου πεδίου, κατέσπασαν δ' αὐτὴν οἱ Ἀμφικτύονες, καθάπερ εἰρήκαμεν· [καὶ Οἰάνθει]α δὲ καὶ Εὐπάλιον Λοκρῶν εἰσίν. ὁ δὲ πᾶς παράπλους ὁ Λοκρικὸς μικρὸν ὑπερβάλλει τῶν διακοσίων σταδίων.

9 Ἀλόπην δὲ καὶ ἐνταῦθα καὶ ἐν τοῖς Ἐπικνημιδίοις ὀνομάζουσι καὶ ἐν τῇ Φθιώτιδι· οὗτοι μὲν οὖν ἄποικοι τῶν Ἐπικνημιδίων εἰσίν, οἱ δ' Ἐπιζεφύριοι τούτων.

10 Τοῖς δὲ Λοκροῖς τοῖς μὲν ἑσπερίοις συνεχεῖς εἰσιν Αἰτωλοί, τοῖς δ' Ἐπικνημιδίοις Αἰνιᾶνες συνεχεῖς οἱ τὴν Οἴτην ἔχοντες, καὶ μέσοι Δωριεῖς. οὗτοι μὲν οὖν εἰσιν οἱ τὴν τετράπολιν οἰκήσαντες, ἥν φασιν εἶναι μητρόπολιν τῶν ἁπάντων Δωριέων, πόλεις δ' ἔσχον Ἐρινεὸν Βοῖον Πίνδον Κυτίνιον· ὑπέρκειται δ' ἡ Πίνδος τοῦ Ἐρινεοῦ, παραρρεῖ δ' αὐτὴν ὁμώνυμος ποταμὸς ἐμβάλλων εἰς τὸν Κηφισσὸν οὐ πολὺ τῆς Λιλαίας ἄπωθεν· τινὲς δ' Ἀκύφαντα λέγουσι τὴν Πίνδον. τούτων ὁ βασιλεὺς Αἰγίμιος ἐκπεσὼν τῆς ἀρχῆς κατήχθη πάλιν, ὡς ἱστοροῦσιν, ὑφ' Ἡρακλέους· ἀπεμνημόνευσεν οὖν αὐτῷ τὴν χάριν τελευτήσαντι περὶ τὴν Οἴτην· Ὕλλον γὰρ εἰσεποιήσατο τὸν πρεσβύτατον τῶν ἐκείνου παίδων, καὶ διεδέξατο ἐκεῖνος τὴν ἀρχὴν καὶ οἱ ἀπό-

γονοι. ἐντεῦθεν ὁρμηθεῖσι τοῖς Ἡρακλείδαις ὑπῆρξεν ἡ εἰς Πελοπόννησον κάθοδος.

Τέως μὲν οὖν ἦσαν ἐν ἀξιώματι αἱ πόλεις, καίπερ 11 *οὖσαι μικραὶ καὶ λυπρόχωροι, ἔπειτ' ὠλιγωρήθησαν· ἐν δὲ τῷ Φωκικῷ πολέμῳ καὶ τῇ Μακεδόνων ἐπικρατείᾳ καὶ Αἰτωλῶν καὶ Ἀθαμάνων θαυμαστὸν εἰ καὶ ἴχνος αὐτῶν εἰς Ῥωμαίους ἦλθε. τὰ δ' αὐτὰ πεπόνθασι καὶ Αἰνιᾶνες· καὶ γὰρ τούτους ἐξέφθειραν Αἰτωλοί τε καὶ Ἀθαμᾶνες, Αἰτωλοὶ μὲν μετὰ Ἀκαρνάνων πολεμοῦντες καὶ μέγα δυνάμενοι, Ἀθαμᾶνες δ' ὕστατοι τῶν Ἠπειρωτῶν εἰς ἀξίωμα προαχθέντες, ἤδη τῶν ἄλλων ἀπειρηκότων, καὶ μετ' Ἀμυνάνδρου τοῦ βασιλέως δύναμιν κατασκευασάμενοι. οὗτοι δὲ τὴν Οἴτην* C.428 *διακατεῖχον.*

Τὸ δ' ὄρος διατείνει ἀπὸ Θερμοπυλῶν καὶ τῆς 12 *ἀνατολῆς μέχρι πρὸς τὸν κόλπον τὸν Ἀμβρακικὸν καὶ τὴν ἑσπέραν· τρόπον δέ τινα καὶ πρὸς ὀρθὰς τέμνει τὴν ἀπὸ τοῦ Παρνασσοῦ μέχρι Πίνδου καὶ τῶν ὑπερκειμένων βαρβάρων ὀρεινὴν τὸ ὄρος τοῦτο. τούτου δὴ τὸ μὲν πρὸς Θερμοπύλας νενευκὸς μέρος Οἴτη καλεῖται σταδίων διακοσίων τὸ μῆκος, τραχὺ καὶ ὑψηλόν, ὑψηλότατον δὲ κατὰ τὰς Θερμοπύλας· κορυφοῦται γὰρ ἐνταῦθα καὶ τελευτᾷ πρὸς ὀξεῖς καὶ ἀποτόμους μέχρι τῆς θαλάττης κρημνούς, ὀλίγην δ' ἀπολείπει πάροδον τοῖς ἀπὸ τῆς παραλίας ἐμβάλλουσιν εἰς τοὺς Λοκροὺς ἐκ τῆς Θετταλίας.*

Τὴν μὲν οὖν πάροδον Πύλας καλοῦσι καὶ στενὰ 13 *καὶ Θερμοπύλας· ἔστι γὰρ καὶ θερμὰ πλησίον ὕδατα τιμώμενα ὡς Ἡρακλέους ἱερά· τὸ δ' ὑπερκείμενον ὄρος Καλλίδρομον· τινὲς δὲ καὶ τὸ λοιπὸν τὸ δι' Αἰτωλίας καὶ τῆς Ἀκαρνανίας διῆκον μέχρι τοῦ Ἀμβρακικοῦ κόλπου Καλλίδρομον προσαγορεύουσι. πρὸς δὲ*

ταῖς Θερμοπύλαις ἐστὶ φρούρια ἐντὸς τῶν στενῶν, Νίκαια μὲν ἐπὶ θάλατταν Λοκρῶν, Τειχιοῦς δὲ καὶ Ἡράκλεια ὑπὲρ αὐτῆς, ἡ Τραχὶν καλουμένη πρότερον, Λακεδαιμονίων κτίσμα· διέχει δὲ τῆς ἀρχαίας Τραχῖνος περὶ ἓξ σταδίους ἡ Ἡράκλεια· ἑξῆς δὲ ἡ Ῥοδουντία, χωρίον ἐρυμνόν.

14 Ποιεῖ δὲ δυσείσβολα τὰ χωρία ταῦτα ἥ τε τραχύτης καὶ τὸ πλῆθος τῶν ὑδάτων φάραγγας ποιούντων, ἃς διέξεισι. πρὸς γὰρ τῷ Σπερχειῷ τῷ παραρρέοντι τὴν Ἀντικύραν καὶ ὁ Δύρας ἐστίν, ὅν φασιν ἐπιχειρῆσαι τὴν Ἡρακλέους σβέσαι πυράν· καὶ ἄλλος Μέλας διέχων Τραχῖνος εἰς πέντε σταδίους. πρὸς δὲ μεσημβρίαν τῆς Τραχῖνος φησὶν Ἡρόδοτος εἶναι βαθεῖαν διασφάγα, δι᾽ ἧς Ἀσωπός, ὁμώνυμος τοῖς εἰρημένοις Ἀσωποῖς, εἰς τὴν θάλατταν ἐκπίπτει τὴν ἐκτὸς Πυλῶν, παραλαβὼν καὶ τὸν Φοίνικα ἐκ τῆς μεσημβρίας συμβάλλοντα αὐτῷ, ὁμώνυμον τῷ ἥρωι, οὗ καὶ τάφος πλησίον δείκνυται· στάδιοι δ᾽ εἰσὶν ἐπὶ Θερμοπύλας ἀπὸ τοῦ Ἀσωποῦ πεντεκαίδεκα.

15 Τότε μὲν οὖν ἦν ἐνδοξότατα τὰ χωρία ταῦτα, ἡνίκα τῶν κλείθρων ἐκυρίευε τῶν περὶ τὰ στενά, καὶ τοῖς ἔξω τῶν στενῶν πρὸς τοὺς ἐντὸς ἦσαν ἀγῶνες πρωτείων· καθάπερ καὶ πέδας ἐκάλει Φίλιππος τῆς Ἑλλάδος τὴν Χαλκίδα καὶ τὴν Κόρινθον, πρὸς τὰς ἐκ τῆς Μακεδονίας ἀφορμὰς βλέπων· ἐπιδέσμους δ᾽ οἱ ὕστερον προσηγόρευον ταύτας τε καὶ ἔτι τὴν Δημητριάδα· καὶ γὰρ αὕτη παρόδων ἦν κυρία τῶν περὶ τὰ
C.429 Τέμπη, τό τε Πήλιον ἔχουσα καὶ τὴν Ὄσσαν. ὕστερον δὲ πάντων ὑπὸ μίαν ἐξουσίαν ὑπηγμένων, ἅπαντ᾽ ἀτελεύεται πᾶσι καὶ ἀνέῳγε.

16 Περὶ δὲ τὰ στενὰ ταῦτα οἱ περὶ Λεωνίδαν μετὰ ὀλίγων τῶν ὁμόρων τοῖς τόποις ἀντέσχον πρὸς τὰς το-

σαύτας τῶν Περσῶν δυνάμεις, μέχρι περιελθόντες δι' ἀτραπῶν τὰ ὄρη κατέκοψαν αὐτοὺς οἱ βάρβαροι. καὶ νῦν τὸ πολυάνδριον ἐκείνων ἐστὶ καὶ στῆλαι καὶ ἡ θρυλουμένη ἐπιγραφὴ τῇ Λακεδαιμονίων στήλη οὕτως ἔχουσα „ὦ ξέν' ἀπάγγειλον Λακεδαιμονίοις ὅτι „τῇδε κείμεθα τοῖς κείνων πειθόμενοι νομίμοις."

Ἔστι δὲ καὶ λιμὴν μέγας αὐτόθι καὶ Δήμητρος ἱε- 17
ρόν, ἐν ᾧ κατὰ πᾶσαν Πυλαίαν θυσίαν ἐτέλουν οἱ Ἀμφικτύονες. ἐκ δὲ τοῦ λιμένος εἰς Ἡράκλειαν τὴν Τραχῖνα πεζῇ στάδιοι τετταράκοντα, πλοῦς δ' ἐπὶ τὸ Κήναιον ἑβδομήκοντα. ἔξω δὲ Πυλῶν εὐθὺς ὁ Σπερχειὸς ἐκδίδωσιν. ἐπὶ δὲ Πύλας ἀπὸ Εὐρίπου στάδιοι πεντακόσιοι τριάκοντα. καὶ ἡ μὲν Λοκρὶς τέλος ἔχει. τὰ δ' ἔξω Θετταλῶν ἐστι τὰ πρὸς ἕω καὶ τὸν Μαλιακὸν κόλπον, τὰ δὲ πρὸς δύσιν Αἰτωλῶν καὶ Ἀκαρνάνων. Ἀθαμᾶνες δὲ καὶ αὐτοὶ ἐκλελοίπασι.

Μέγιστον δὴ καὶ παλαιότατον τῶν Θετταλῶν σύ- 18
στημα, ὧν τὰ μὲν Ὅμηρος εἴρηκε τὰ δ' ἄλλοι πλείους. Αἰτωλοὺς δ' Ὅμηρος μὲν ἀεὶ ἑνὶ ὀνόματι λέγει, πόλεις οὐκ ἔθνη τάττων ὑπ' αὐτοῖς, πλὴν εἰ τοὺς Κουρῆτας, οὓς ἐν μέρει τακτέον Αἰτωλικῶν. ἀπὸ Θετταλῶν δ' ἀρκτέον, τὰ μὲν σφόδρα παλαιὰ καὶ μυθώδη καὶ οὐχ ὁμολογούμενα τὰ πολλὰ ἐῶντες, καθάπερ καὶ ἐν τοῖς ἄλλοις ἐποιήσαμεν, τὰ δὲ φαινόμενα ἡμῖν καίρια λέγοντες.

Ἔστι δ' αὐτῆς πρὸς θαλάττῃ μὲν ἡ ἀπὸ Θερμοπυ- 5
λῶν μέχρι τῆς ἐκβολῆς τοῦ Πηνειοῦ καὶ τῶν ἄκρων τοῦ Πηλίου παραλία βλέπουσα πρὸς ἕω καὶ πρὸς τὰ ἄκρα τῆς Εὐβοίας τὰ βόρεια. ἔχουσι δὲ τὰ μὲν πρὸς Εὐβοίᾳ καὶ Θερμοπύλαις Μαλιεῖς καὶ οἱ Φθιῶται Ἀχαιοί, τὰ δὲ πρὸς τῷ Πηλίῳ Μάγνητες. αὕτη μὲν οὖν ἡ πλευρὰ τῆς Θετταλίας ἑῴα λεγέσθω καὶ παραλία. ἑκατέρω-

θεν δ' ἀπὸ μὲν Πηλίου καὶ Πηνειοῦ πρὸς τὴν μεσόγαιαν Μακεδόνες παράκεινται μέχρι Παιονίας καὶ τῶν Ἠπειρωτικῶν ἐθνῶν, ἀπὸ δὲ τῶν Θερμοπυλῶν τὰ παράλληλα τοῖς Μακεδόσιν ὄρη τὰ Οἰταῖα καὶ Αἰτωλικά, τοῖς Δωριεῦσι καὶ τῷ Παρνασσῷ συνάπτοντα. καλείσθω δὲ τὸ μὲν πρὸς τοῖς Μακεδόσι πλευρὸν ἀρκτικόν, τὸ δ' ἕτερον νότιον. λοιπὸν δ' ἐστὶ τὸ ἑσπέριον, ὃ περικλείουσιν Αἰτωλοὶ καὶ Ἀκαρνᾶνες καὶ Ἀμφίλοχοι C.430 καὶ τῶν Ἠπειρωτῶν Ἀθαμᾶνες καὶ Μολοττοὶ καὶ ἡ τῶν Αἰθίκων ποτὲ λεγομένη γῆ καὶ ἁπλῶς ἡ περὶ Πίνδον ...... πλὴν τοῦ Πηλίου καὶ τῆς Ὄσσης. ταῦτ' ἐξῆρται μὲν ἱκανῶς, οὐ μήν γε πολλὴν περιλαμβάνει κύκλῳ χώραν, ἀλλ' εἰς τὰ πεδία τελευτᾷ.

2 Ταῦτα δ' ἐστὶ τὰ μέσα τῆς Θετταλίας, εὐδαιμονεστάτη χώρα πλὴν ὅση ποταμόκλυστός ἐστιν. ὁ γὰρ Πηνειὸς διὰ μέσης ῥέων καὶ πολλοὺς δεχόμενος ποταμοὺς ὑπερχεῖται πολλάκις· τὸ δὲ παλαιὸν καὶ ἐλιμνάζετο, ὡς λόγος, τὸ πεδίον ἔκ τε τῶν ἄλλων μερῶν ὄρεσι περιειργόμενον καὶ τῆς παραλίας μετεωρότερα τῶν πεδίων ἐχούσης τὰ χωρία. ὑπὸ δὲ σεισμῶν ῥήγματος γενομένου [κατὰ] τὰ νῦν καλούμενα Τέμπη καὶ τὴν Ὄσσαν ἀποσχίσαντος ἀπὸ τοῦ Ὀλύμπου, διεξέπεσε ταύτῃ πρὸς θάλατταν ὁ Πηνειὸς καὶ ἀνέψυξε τὴν χώραν ταύτην. ὑπολείπεται δ' ὅμως ἥ τε Νεσσωνὶς λίμνη μεγάλη καὶ ἡ Βοιβηὶς ἐλάττων ἐκείνης καὶ πλησιεστέρα τῇ παραλίᾳ.

3 Τοιαύτη δ' οὖσα εἰς τέτταρα μέρη διῄρητο· ἐκαλεῖτο δὲ τὸ μὲν Φθιῶτις τὸ δὲ Ἑστιαιῶτις τὸ δὲ Θετταλιῶτις τὸ δὲ Πελασγιῶτις. ἔχει δ' ἡ μὲν Φθιῶτις τὰ νότια τὰ παρὰ τὴν Οἴτην ἀπὸ τοῦ Μαλιακοῦ κόλπου καὶ Πυλαϊκοῦ μέχρι τῆς Δολοπίας καὶ τῆς Πίνδου διατείνοντα, πλατυνόμενα δὲ μέχρι Φαρσάλου καὶ τῶν

πεδίων τῶν Θετταλικῶν· ἡ δ' Ἑστιαιῶτις τὰ ἑσπέρια καὶ τὰ μεταξὺ Πίνδου καὶ τῆς ἄνω Μακεδονίας· τὰ δὲ λοιπὰ οἵ τε ὑπὸ τῇ Ἑστιαιώτιδι νεμόμενοι τὰ πεδία, καλούμενοι δὲ Πελασγιῶται, συνάπτοντες ἤδη τοῖς κάτω Μακεδόσι, καὶ οἱ ἐφεξῆς τὰ μέχρι Μαγνητικῆς παραλίας ἐκπληροῦντες χωρία. κἀνταῦθα δ' ἐνδόξων ὀνομάτων ἔσται ἀρίθμησις καὶ ἄλλως [καὶ] διὰ τὴν Ὁμήρου ποίησιν· τῶν δὲ πόλεων ὀλίγαι σώζουσι τὸ πάτριον ἀξίωμα, μάλιστα δὲ Λάρισα.

Ὁ δὲ ποιητὴς εἰς δέκα μέρη καὶ δυναστείας διελὼν 4 *τὴν σύμπασαν γῆν ἣν νῦν Θετταλίαν προσαγορεύομεν, προσλαβών τινα καὶ τῆς Οἰταίας καὶ τῆς Λοκρικῆς, ὡς δ' αὔτως καὶ τῆς ὑπὸ Μακεδόσιν νῦν τεταγμένης, ὑπογράφει τι κοινὸν καὶ πάσῃ χώρᾳ συμβαῖνον, τὸ μεταβάλλεσθαι καὶ τὰ ὅλα καὶ τὰ καθ' ἕκαστα παρὰ τὰς τῶν ἐπικρατούντων δυνάμεις.*

Πρώτους δὴ καταλέγει τοὺς ὑπ' Ἀχιλλεῖ τοὺς τὸ 5 *νότιον πλευρὸν κατέχοντας καὶ παρακειμένους τῇ τε Οἴτῃ καὶ τοῖς Ἐπικνημιδίοις Λοκροῖς „ὅσσοι τὸ Πελασ„γικὸν Ἄργος ἔναιον,“ „οἵ τ' Ἄλον οἵ τ' Ἀλόπην οἵ τε „Τρηχῖν' ἐνέμοντο,“ „οἵ τ' εἶχον Φθίην ἠδ' Ἑλλάδα „καλλιγύναικα,“ „Μυρμιδόνες δὲ καλεῦντο καὶ Ἕλλη„νες καὶ Ἀχαιοί.“ συζεύγνυσι δὲ τούτοις καὶ τοὺς ὑπὸ* C.431 *τῷ Φοίνικι καὶ κοινὸν ἀμφοῖν ποιεῖ τὸν στόλον. ὁ μὲν οὖν ποιητὴς οὐδαμοῦ μέμνηται Δολοπικῆς στρατιᾶς κατὰ τοὺς περὶ Ἴλιον ἀγῶνας· οὐδὲ γὰρ αὐτῶν τὸν ἡγεμόνα Φοίνικα πεποίηκεν εἰς τοὺς κινδύνους ἐξιόντα, καθάπερ τὸν Νέστορα· ἄλλοι δ' εἰρήκασι, καθάπερ καὶ Πίνδαρος μνησθεὶς τοῦ Φοίνικος „ὃς Δολόπων „ἄγαγε θρασὺν ὅμιλον σφενδονᾶσαι, ἱπποδάμων Δα-*

---

17. ante τοὺς: *καὶ*

„ναῶν βέλεσι πρόσφορον.“ τοῦτο δὴ καὶ παρὰ τῷ ποιητῇ κατὰ τὸ σιωπώμενον, ὡς εἰώθασι λέγειν οἱ γραμματικοί, συνυπακουστέον. γελοῖον γὰρ τὸ τὸν βασιλέα μετέχειν τῆς στρατείας, τοὺς δ' ὑπηκόους μὴ παρεῖναι [αὐτῷ]· οὐδὲ γὰρ συστρατεύειν ἂν τῷ Ἀχιλλεῖ δόξειεν, ἀλλὰ μόνον ἐπιστάτης καὶ ῥήτωρ ἕπεσθαι, εἰ δ' ἄρα, σύμβουλος. τὰ δ' ἔπη βούλεται καὶ τοῦτο δηλοῦν· τοιοῦτον γὰρ τὸ „μύθων τε ῥητῆρ' ἔμεναι πρηκτῆρά τε „ἔργων.“ .... ταῦτα λέγων.

6 . Εἴρηται τό τε ὑπὸ τῷ Ἀχιλλεῖ [καὶ τῷ Φοί]νικι· αὐτὰ δὲ λεχθέντα περὶ τῶν ὑπ' [Ἀχιλλεῖ] ἐν ἀντιλογίᾳ ἐστί. τό τε [γὰρ] Ἄργος τὸ Πελασγικὸν [οἱ μὲν] καὶ πόλιν δέχονται Θετταλικὴν περὶ Λάρισαν ἱδρυμένην ποτὲ νῦν δ' οὐκέτι οὖσαν· οἱ δ' οὐ πόλιν ἀλλὰ τὸ τῶν Θετταλῶν πεδίον οὕτως ὀνοματικῶς λεγόμενον, θεμένου τοὔνομα Ἄβαντος ἐξ Ἄργους δεῦρ' ἀποικήσαντος. Φθίαν τε οἱ μὲν τὴν αὐτὴν εἶναι τῇ Ἑλλάδι καὶ Ἀχαΐᾳ, ταύτας δ' εἶναι διατεμνομένης τῆς συμπάσης Θετταλίας θάτερον μέρος τὸ νότιον· οἱ δὲ διαιροῦσιν. ἔοικε δ' ὁ ποιητὴς δύο ποιεῖν τήν τε Φθίαν καὶ τὴν Ἑλλάδα ὅταν οὕτως φῇ „οἵ τ' εἶχον Φθίην ἠδ' Ἑλλάδα,“ ὡς δυεῖν οὐσῶν· καὶ ὅταν οὕτως „φεῦ[γον] ἔπειτ' ἀπά„νευθε δι' Ἑλλάδος εὐρυχόροιο, Φθίην δ' ἐξικόμην,“ καὶ ὅτι „πολλαὶ [Ἀχαιίδε]ς εἰσὶν ἀν' Ἑλλάδα τε Φθίην „τε.“ ὁ μὲν οὖν ποιητὴς δύο ποιεῖ, πότερον δὲ πόλεις ἢ χώρας οὐ δηλοῖ. οἱ δ' ὕστερον τὴν Ἑλλάδα οἱ μὲν εἰπόντες χώραν διατετάσθαι φασὶν [εἰς] τὰς Θήβας τὰς Φθιώτιδας ἀπὸ Παλαιφαρσάλου (ἐν δὲ τῇ χώρᾳ ταύτῃ καὶ τὸ Θετίδειον ἔστι πλησίον τῶν Φαρσάλων ἀμφοῖν τῆς τε παλαιᾶς καὶ τῆς νέας, κἀκ τοῦ Θετιδείου τεκμαι-

---

4. post στρατείας: ναῖον δ' ἐσχατιὴν Φθίης Δολόπεσσιν ἀνάσσων 6. post μόνον: ὀλίγων ἐστὶν

ῥόμενοι τῆς ὑπὸ τῷ Ἀχιλλεῖ μέρος εἶναι καὶ τήνδε τὴν χώραν), οἱ δ' εἰπόντες πόλιν Φαρσάλιοι μὲν δεικνύουσιν ἀπὸ ἑξήκοντα σταδίων τῆς ἑαυτῶν πόλεως κατεσκαμμένην πόλιν ἣν πεπιστεύκασιν εἶναι τὴν Ἑλλάδα C.432
καὶ δύο κρήνας πλησίον Μεσσηίδα καὶ Ὑπέρειαν, Μελιταιεῖς δ' ἄπωθεν ἑαυτῶν ὅσον δέκα σταδίους οἰκεῖσθαι τὴν Ἑλλάδα πέραν τοῦ Ἐνιπέως, ἡνίκα ἡ ἑαυτῶν πόλις Πύρρα ὠνομάζετο, ἐκ δὲ τῆς Ἑλλάδος ἐν ταπεινῷ χωρίῳ κειμένης εἰς τὴν ἑαυτῶν μετοικῆσαι τοὺς Ἕλληνας· μαρτύριον δ' εἶναι τὸν ἐν τῇ ἀγορᾷ τῇ σφετέρᾳ τάφον τοῦ Ἕλληνος τοῦ Δευκαλίωνος υἱοῦ καὶ Πύρρας. ἱστορεῖται γὰρ ὁ Δευκαλίων τῆς Φθιώτιδος ἄρξαι καὶ ἁπλῶς τῆς Θετταλίας· ὁ δ' Ἐνιπεὺς ἀπὸ τῆς Ὄθρυος παρὰ Φάρσαλον ῥυεὶς εἰς τὸν Ἀπιδανὸν παραβάλλει, ὁ δ' εἰς τὸν Πηνειόν. περὶ μὲν Ἑλλήνων ταῦτα.

Φθῖοι δὲ καλοῦνται οἵ τε ὑπ' Ἀχιλλεῖ καὶ ὑπὸ 7
Πρωτεσιλάῳ καὶ Φιλοκτήτῃ· ὁ δὲ ποιητὴς τούτου μάρτυς. εἰπὼν γὰρ ἐν τῷ καταλόγῳ τῶν ὑπ' Ἀχιλλεῖ „οἵ „τ' εἶχον Φθίην," ἐν τῇ ἐπὶ ναυσὶ μάχῃ τούτους μὲν ὑπομένοντας ἐν ταῖς ναυσὶ πεποίηκε μετὰ τοῦ Ἀχιλλέως καὶ καθ' ἡσυχίαν ὄντας, τοὺς δ' ὑπὸ Φιλοκτήτῃ μαχομένους ἔχοντας Μέδον[τα ἡγεμόνα] καὶ τοὺς ὑπὸ Πρωτεσιλάῳ, Ποδάρκους .... πε]ρὶ ὧν κοινῶς μὲν οὕτω φησίν „ἔνθα δὲ Βοιωτοὶ καὶ Ἰάονες „ἑλκεχίτωνες, Λοκροὶ καὶ Φθῖοι καὶ φαιδιμόεντες „Ἐπειοί·" ἰδίως δέ „πρὸ Φθίων δὲ Μέδων τε μενε„πτόλεμός τε Ποδάρκης. οἱ μὲν πρὸ Φθίων μεγαθύ„μων θωρηχθέντες ναῦφιν ἀμυνόμενοι [μετὰ Βοιω]„τῶν ἐμάχοντο." τάχα δὲ καὶ οἱ σὺν Εὐρυπύλῳ Φθῖοι ἐλέγοντο, ὅμοροι τούτοις ὄντες· νῦν μέντοι Μαγνησίας νομίζουσι τῆς τε ὑπ' Εὐρυπύλῳ τὰ περὶ Ὀρμένιον καὶ τὴν ὑπὸ Φιλοκτήτῃ πᾶσαν, τὴν δ' ὑπὸ [Πρωτε-

σιλάῳ] τῆς Φθίας ἀπὸ Δολοπίας καὶ τῆς Πίνδου μέχρι τῆς Μαγνητικῆς θαλάττης· μέχρι δὲ τῆς ὑπὸ Πρωτεσιλάῳ πόλεως Ἀντρῶνος, ἣ νῦν πληθυντικῶς λέγεται, τὸ πλάτος ἀφορίζεται τῆς ὑπὸ Πηλεῖ καὶ Ἀχιλλεῖ γ[ῆς, ἀπὸ] τῆς Τραχινίας καὶ τῆς Οἰταίας ἀρξαμένοις· [τὸ] δ' αὐτὸ σχεδόν τι μῆκός ἐστι τοῦ Μαλιακοῦ κ[όλπου].

8 Περὶ Ἅλου δὲ καὶ Ἀλόπης διαποροῦσι μὴ οὐ τούτους λέγει τοὺς τόπους οἳ νῦν ἐν τῷ Φθιωτικῷ τέλει φέρονται, ἀλλὰ τοὺς ἐν Λοκροῖς, μέχρι δεῦρο ἐπικρατοῦντος τοῦ Ἀχιλλέως, ὥσπερ καὶ μέχρι Τραχῖνος καὶ τῆς Οἰταίας. ἔστι γὰρ καὶ Ἅλος καὶ Ἁλιοῦς ἐν τῇ παραλίᾳ τῶν Λοκρῶν, καθάπερ καὶ Ἀλόπη. οἱ δὲ τὸν Ἁλιοῦντα ἀντὶ Ἀλόπης τιθέασι καὶ γράφουσιν οὕτως „οἵ θ' Ἅλον οἵ θ' Ἁλιοῦνθ' οἵ τε Τρηχῖν' ἐνέ-
C.433 „μοντο.“ ὁ δὲ Φθιωτικὸς Ἅλος ὑπὸ τῷ πέρατι κεῖται τῆς Ὄθρυος ὄρους πρὸς ἄρκτον κειμένου τῇ Φθιώτιδι, ὁμόρου δὲ τῷ Τυφρηστῷ καὶ τοῖς Δόλοψιν, κἀνθένδε παρατείνοντος εἰς τὰ πλησίον τοῦ Μαλιακοῦ κόλπου. ἀπέχει δὲ Ἰτώνου περὶ ἑξήκοντα σταδίους ὁ Ἅλος ἢ ἡ Ἅλος· λέγεται γὰρ ἀμφοτέρως. ᾤκισε δὲ ὁ Ἀθάμας τὴν Ἅλον, ἀφανισθεῖσαν [δὲ] συνῴ[κισαν Φαρσάλιοι] χρόνοις ὕστερον. ὑπέρκειται δὲ τοῦ Κροκίου πεδίου· ῥεῖ δὲ ποταμὸς Ἄμφρυσος πρὸς τῷ [τείχει]. ὑπὸ δὲ τῷ Κροκίῳ Θῆβαι εἰσὶν αἱ Φθιώτιδες, καὶ ἡ Ἅλος δὲ Φθιῶτις καλεῖται καὶ Ἀχαϊκή, συνάπτουσα τοῖς Μαλιεῦσιν, ὥσπερ καὶ οἱ τῆς Ὄθρυος πρόποδες. καθάπερ δὲ ἡ Φυλάκη ἡ ὑπὸ Πρωτεσιλάῳ τῆς Φθιώτιδός ἐστι τῆς προσχώρου τοῖς Μαλιεῦσιν, οὕτω καὶ ἡ Ἅλος· διέχει δὲ Θηβῶν περὶ ἑκατὸν σταδίους, ἐν μέσῳ δ' ἐστὶ Φαρσάλου καὶ Φθιωτῶν· Φίλιππος μέντοι Φαρσαλίοις προσένειμεν ἀφελόμενος τῶν Φθιωτῶν. οὕτω δὲ συμβαίνει τοὺς ὅρους καὶ τὰς συντάξεις τῶν τε ἐθνῶν καὶ

τῶν τόπων ἀλλάττεσθαι ἀεί, καθάπερ εἴπομεν. οὕτω καὶ Σοφοκλῆς τὴν Τραχῖνα Φθιῶτιν εἴρηκεν, Ἀρτεμίδωρος δὲ τὴν Ἅλον ἐν τῇ παραλίᾳ τίθησι, ἔξω μὲν τοῦ Μαλιακοῦ κόλπου κειμένην, Φθιῶτιν δέ. προϊὼν γὰρ ἐνθένδε ὡς ἐπὶ τὸν Πηνειὸν μετὰ τὸν Ἀντρῶνα τίθησι Πτελεόν, εἶτα τὸν Ἅλον ἀπὸ τοῦ Πτελεοῦ διέχοντα ἑκατὸν καὶ δέκα σταδίους. περὶ δὲ τῆς Τραχῖνος εἴρηται ὁποία τις· καὶ ὁ ποιητὴς κατονομάζει.

9 Τοῦ δὲ Σπερχειοῦ μεμνημένος πολλάκις ὡς ἐπιχωρίου ποταμοῦ, τὰς πηγὰς ἔχοντος ἐκ Τυφρηστοῦ Δρυοπικοῦ ὄρους, τοῦ καλουμένου . . . . . πρ]ότερον, ἐκδιδόντος δὲ πλησίον Θερμοπυλῶν μεταξὺ αὐτῶν καὶ Λαμίας, δηλοῖ ὅτι καὶ τὰ ἐντὸς πυλῶν ὅσα τοῦ Μαλιακοῦ κόλπου καὶ τὰ ἐκτὸς ὑπ' ἐκείνῳ ἦν· ἀπέχει δὲ Λαμίας ὁ Σπερχειὸς περὶ τριάκοντα σταδίους ὑπερκειμένης πεδίου τινὸς καθήκοντος ἐπὶ τὸν Μαλιακὸν κόλπον· ὅτι δ' ὁ Σπερχειὸς ἐπιχώριος, ἔκ τε τοῦ τρέφειν ἐκείνῳ τὴν κόμην φάσκειν καὶ τοῦ τὸν Μενέσθιον, ἕνα τῶν λοχαγῶν αὐτοῦ, Σπερχειοῦ λέγεσθαι παῖδα καὶ τῆς ἀδελφῆς τῆς Ἀχιλλέως. Μυρμιδόνας δ' εἰκὸς καλεῖσθαι πάντας τοὺς ὑπὸ τῷ Ἀχιλλεῖ καὶ τῷ Πατρόκλῳ, οἳ συνηκολούθησαν ἐξ Αἰγίνης φεύγοντι τῷ Πηλεῖ. Ἀχαιοὶ δ' ἐκαλοῦντο οἱ Φθιῶται πάντες.

10 Διαριθμοῦνται δὲ τὰς ὑπὸ τῷ Φθιωτικῷ τέλει τῷ ὑπ' Ἀχιλλεῖ κατοικίας [ἀπὸ] Μαλιέων ἀρξάμενοι πλείους μέν, ἐν δ' αὐταῖς Θήβας τὰς Φθιώτιδας Ἐχῖνον Λάμιαν, περὶ ἣν ὁ Λαμιακὸς συνέστη πόλεμος Μακεδόσι καὶ Ἀντιπάτρῳ πρὸς Ἀθηναίους· ἐν ᾧ Λεωσθένης τε ἔπεσε τῶν Ἀθηναίων στρατηγός, [καὶ Λεοννάτος] ὁ Ἀλεξάνδρου C.434 τοῦ βασιλέως ἑταῖρος. [ἔτι δὲ Ναρθάκ]ιον Ἐρινεὸν Κορώνειαν, ὁμώνυμον τῇ Βοιωτικῇ, Μελίταιαν Θαυμακοὺς Πρόερναν Φάρσαλον Ἐρέτριαν, ὁμώνυμον

τῇ Εὐβοϊκῇ, Παραχελωίτας καὶ τούτους ὁμωνύμους τοῖς Αἰτωλικοῖς· καὶ γὰρ ἐνταῦθά ἐστιν Ἀχελῷος ποταμὸς πλησίον Λαμίας, παρ᾽ ὃν οἰκοῦσιν οἱ Παραχελωῖται. παρέτεινε δ᾽ ἡ χώρα αὕτη πρὸς ἄρκτον μὲν τῇ τῶν Ἀσκληπ[ιαδῶν τῶν μά]λιστα προσεσπερίων καὶ τῇ Εὐρυπύλου καὶ [ἔτι τῇ] Πρωτεσιλάου, ταῖς πρὸς ἕω κεκλιμέναις, πρὸς νότον δὲ τῇ Οἰταίᾳ εἰς τετταρεσκαίδεκα δήμους διῃρημένῃ, Ἡράκλειάν τε καὶ τὴν Δρυοπίδα, τετράπολιν γεγονυῖάν ποτε καθάπερ καὶ τὴν Δωρίδα, μητρόπολιν δὲ τῶν ἐν Πελοποννήσῳ Δρυόπων νομιζομένην. τῆς δ᾽ Οἰταίας καὶ ὁ Ἀκύφας ἐστὶ καὶ Παρασωπιὰς καὶ Οἰνειάδαι καὶ Ἀντικύρα, ὁμώνυμος τῇ ἐν Λοκροῖς τοῖς ἑσπερίοις. λέγω δὲ τὰς διατάξεις ταύτας οὐκ ἀεὶ μεμενηκυίας τὰς αὐτάς, ἀλλὰ ποικίλως μεταβεβλημένας· αἱ δ᾽ ἐπισημόταται μάλιστα ἄξιαι μνήμης εἰσί.

11 Τοὺς δὲ Δόλοπας φράζει καὶ ὁ ποιητὴς ἱκανῶς ὅτι ἐπὶ ταῖς ἐσχατιαῖς εἰσι τῆς Φθίας, καὶ ὅτι ὑπὸ τῷ αὐτῷ ἡγεμόνι ἦσαν τῷ Πηλεῖ οὗτοί τε καὶ οἱ Φθιῶται· ἔναιον γάρ, φησίν, ἐσχατιὴν Φθίης Δολόπεσσιν ἀνάσσων, δόντος τοῦ Πηλέως. γειτνιᾷ δὲ τῇ Πίνδῳ καὶ τοῖς περὶ αὐτὴν χωρίοις Θετταλικοῖς οὖσι τοῖς πλείστοις. διὰ γὰρ τὴν ἐπιφάνειάν τε καὶ τὴν ἐπικράτειαν τῶν Θετταλῶν καὶ τῶν Μακεδόνων οἱ πλησιάζοντες αὐτοῖς μάλιστα τῶν Ἠπειρωτῶν, οἱ μὲν ἑκόντες οἱ δ᾽ ἄκοντες, μέρη καθίσταντο Θετταλῶν ἢ Μακεδόνων, καθάπερ Ἀθαμᾶνες καὶ Αἴθικες καὶ Τάλαρες Θετταλῶν, Ὀρέσται δὲ καὶ Πελαγόνες καὶ Ἐλιμιῶται Μακεδόνων.

12 Ἡ δὲ Πίνδος ὄρος ἐστὶ μέγα, πρὸς ἄρκτον μὲν τὴν

---

20. post Φθίης: ἢ Φοίνιξ

Μακεδόνων, πρὸς ἑσπέραν δὲ Περραιβοὺς μετανάστας ἀνθρώπους [ἔχον], πρὸς δὲ μεσημβρίαν Δόλοπας, [πρὸς ἕω δὲ . . . αὕτη δ' ἐστὶ τῆς Θετταλίας· ἐπ' αὐτῇ δὲ τῇ Πίνδῳ ᾤκουν Τάλαρες Μολοττικὸν φῦλον, τῶν περὶ τὸν Τόμαρον ἀπόσπασμα, καὶ Αἴθικες, [εἰς] οὓς ἐξελαθῆναί φησιν ὑπὸ Πειρίθου τοὺς Κενταύρους ὁ ποιητής· ἐκλελοιπέναι δὲ νῦν ἱστοροῦνται. τὴν δ' ἔκλειψιν διττῶς ἀκουστέον· ἢ γὰρ ἀφανισθέντων τῶν ἀνθρώπων καὶ τῆς χώρας τελέως ἠρημωμένης, ἢ τοῦ ὀνόματος τοῦ ἐθνικοῦ μηκέτι ὄντος, μηδὲ τοῦ συστήματος διαμένοντος τοιούτου. ὅταν οὖν ἄσημον τελέως C.435
ᾖ τὸ λειπόμενον νυνὶ σύστημα, οὐκ ἄξιον μνήμης τίθεμεν οὔτ' αὐτὸ οὔτε τοὔνομα τὸ μεταληφθέν, ὅταν δ' ἔχῃ τοῦ μεμνῆσθαι δικαίαν πρόφασιν, λέγειν ἀναγκαῖον τὴν μεταβολήν.

Λοιπὸν δ' εἰπεῖν τῆς παραλίας τὴν τάξιν τῆς ὑπὸ 13
*τῷ Ἀχιλλεῖ ἀπὸ Θερμοπυλῶν ἀρξαμένους· τὴν γὰρ Λοκρικὴν καὶ [τὴν Οἰταία]ν εἰρήκαμεν. αἱ τοίνυν Θερμοπύλαι τοῦ μὲν Κηναίου διεστήκασιν ἑβδομηκοντασταδίῳ πορθμῷ, παραπλέοντι δ' ἔξω Πυλῶν τοῦ Σπερχειοῦ ὡς σταδίους * δέκα· ἔνθεν δ' εἰς Φάλαρα εἴκοσι· τῶν δὲ Φαλάρων ἀπὸ θαλάττης ὑπέρκειται πεντήκοντα σταδίους ἡ τῶν [Λαμιέων πόλι]ς. εἶθ' ἑξῆς παραπλεύσαντι σταδίοις ἑκατὸν ὁ Ἐχῖνος ὑπέρκειται. τῆς δ' ἑξῆς παραλίας ἐν μεσογαίᾳ ἐστὶν ἡ Κρεμαστὴ Λάρισα εἴκοσι σταδίους αὐτῆς διέχουσα, ἡ δ' αὐτὴ καὶ Πελασγία λεγομένη Λάρισα. εἶτα Μυόννησος νησίον, εἶτ' Ἀντρών· ἦν δὲ αὕτη ὑπὸ Πρωτεσιλάῳ. τοσαῦτα μὲν περὶ τῆς ὑπὸ τῷ Ἀχιλλεῖ με[ρίδος].*

Ἐπεὶ δ' ὁ ποιητὴς εἰς πολλὰ καὶ γνώριμα μέρη 14
διε[λὼν δι]ὰ τὸ ὀνομάζειν τούς τε ἡγεμόνας καὶ τὰς ὑπ' αὐτοῖς [πόλεις] τὸν σύμπαντα τῆς Θετταλίας κύκλον

διέταξεν, [ἡμεῖς ἀκολ]ουθοῦντες τούτῳ πάλιν ὥσπερ ἐν τοῖς ἐπάνω [προ]σεκπληρώσομεν τὴν λοιπὴν περιοδείαν τῆς χώ[ρα]ς. καταλέγει τοίνυν ἐφεξῆς τοῖς ὑπ' Ἀχιλλεῖ τοὺς ὑπὸ Πρωτεσιλάῳ· οὗτοι δ' εἰσὶν οἱ καὶ ἐφεξῆς ὄντες τῇ ὑπὸ τῷ Ἀχιλλεῖ παραλίᾳ μέχρι Ἀντρῶνος. ὁριζομένη τοίνυν [τῆς ἐφ]εξῆς ἐστὶν ἡ ὑπὸ τῷ Πρωτεσιλάῳ, ἔξω μὲν οὖσα τοῦ [Μαλιακ]οῦ κόλπου, ἔτι δ' ἐντὸς τῆς Φθιώτιδος, οὐ μὴν τῆς [ὑπὸ τῷ Ἀχιλλεῖ]. ἡ μὲν οὖν Φυλάκη ἐγγὺς Θηβῶν ἐστι τῶν Φθιωτίδων, αἵπερ εἰσὶ καὶ αὐταὶ ὑπὸ τῷ Πρωτεσιλάῳ· καὶ Ἅλος δὲ καὶ Λάρισα ἡ Κρεμαστὴ καὶ τὸ Δημήτριον ὑπ' ἐκείνῳ, πᾶσαι πρὸς ἕω τῆς Ὄθρυος. τὸ δὲ Δημήτριον Δήμητρος εἴρηκε τέμενος καὶ ἐκάλεσε Πύρασον. ἦν δὲ πόλις εὐλίμενος ἡ Πύρασος ἐν δυσὶ σταδίοις, ἔχουσα Δήμητρος ἄλσος καὶ ἱερὸν ἅγιον, διέχουσα Θηβῶν σταδίους εἴκοσι· ὑπέρκεινται δὲ Πυράσου μὲν αἱ Θῆβαι. τῶν Θηβῶν δὲ ἐν τῇ μεσογαίᾳ τὸ Κρόκιον πεδίον πρὸς τῷ καταλήγοντι τῆς Ὄθρυος, δι' οὗ ὁ Ἄμφρυσος ῥεῖ. τούτου δ' ὑπέρκειται ὁ Ἴτωνος, ὅπου τὸ τῆς Ἰτωνίας ἱερόν, ἀφ' οὗ καὶ τὸ ἐν τῇ Βοιωτίᾳ, καὶ ὁ Κουάριος ποταμός· εἴρηται δὲ π[ερὶ τούτου καὶ] τῆς Ἄρνης ἐν τοῖς Βοιωτιακοῖς. ταῦτα δ' ἐστὶ τῆς Θετταλιώτιδος μιᾶς τῶν τεττάρων μερίδων τῆς συμπάσης Θετταλίας, ἧς καὶ τὰ ὑπ' Εὐρυπύλῳ καὶ ὁ Φύλλ[ος, ὅπου Ἀπόλλω]νος τοῦ Φυλλίου ἱερόν, καὶ Ἴχναι, ὅπου ἡ Θέμις Ἰχναία τιμᾶται. καὶ Κίερος δ' εἰς αὐτὴν συντελεῖ καὶ [τἄλλα μέχρι] τῆς Ἀθαμανίας. κατὰ δὲ τὸν Ἀντρῶνα ἕρμα ὕφαλον ἐν τῷ πρὸς Εὐβοίᾳ ἐστὶ πόρῳ καλούμενον ὄνος Ἀντρῶνος. εἶτα Πτελεὸν καὶ ὁ Ἅλος· εἶτα τὸ τῆς Δήμητρος ἱερὸν καὶ ὁ Πύρασος κατεσκαμμένος, ὑπὲρ αὐτὸν δὲ αἱ Θῆβαι· εἶτα ἄκρα Πύρρα καὶ

δύο νησία πλησίον, ὧν το μὲν Πύρρα τὸ δὲ Δευκαλίων καλεῖται· ἐνταῦθα δὲ καὶ ἡ Φθιῶτίς πως τελευτᾷ.

Ἑξῆς δὲ τοὺς ὑπὸ τῷ Εὐμήλῳ καταλέγει, τὴν συν- C.436 εχῆ παραλίαν, ἥπερ ἐστὶν ἤδη Μαγνησίας καὶ τῆς Πελασγιώτιδος γῆς. Φεραὶ μὲν οὖν εἰσι πέρας τῶν Πελασγικῶν πεδίων πρὸς τὴν Μαγνησίαν, ἃ παρατείνει μέχρι τοῦ Πηλίου σταδίους ἑκατὸν ἑξήκοντα. ἐπίνειον δὲ τῶν Φερῶν Παγασαὶ διέχον ἐνενήκοντα σταδίους αὐτῶν, Ἰωλκοῦ δὲ εἴκοσιν. ἡ δ' Ἰωλκὸς κατέσκαπται μὲν ἐκ παλαιοῦ, ἐντεῦθεν δ' ἔστειλε τὸν Ἰάσονα καὶ τὴν Ἀργὼ Πελίας· ἀπὸ δὲ τῆς ναυπηγίας τῆς Ἀργοῦς καὶ Παγασὰς λέγεσθαι μυθεύουσι τὸν τόπον, οἱ δὲ πιθανώτερον ἡγοῦνται τοὔνομα τῷ τόπῳ τεθῆναι τοῦτο ἀπὸ τῶν πηγῶν αἳ πολλαί τε καὶ δαψιλεῖς ῥέουσι· πλησίον δὲ καὶ Ἀφέται ὡς ἂν ἀφετήριόν τι τῶν Ἀργοναυτῶν. τῆς δὲ Δημητριάδος ἑπτὰ σταδίους ὑπέρκειται τῆς θαλάττης Ἰωλκός. ἔκτισε δὲ Δημήτριος ὁ πολιορκητὴς ἐπώνυμον ἑαυτοῦ τὴν Δημητριάδα μεταξὺ Νηλείας καὶ Παγασῶν ἐπὶ θαλάττῃ τὰς πλησίον πολίχνας εἰς αὐτὴν συνοικίσας, Νήλειάν τε καὶ Παγασὰς καὶ Ὀρμένιον, ἔτι δὲ Ῥιζοῦντα Σηπιάδα Ὀλιζῶνα Βοίβην Ἰωλκόν, αἳ δὴ νῦν εἰσι κῶμαι τῆς Δημητριάδος. καὶ δὴ καὶ ναύσταθμον ἦν τοῦτο καὶ βασίλειον μέχρι πολλοῦ τοῖς βασιλεῦσι τῶν Μακεδόνων, ἐπεκράτει δὲ καὶ τῶν Τεμπῶν καὶ τῶν ὀρῶν ἀμφοῖν, ὥσπερ εἴρηται, τοῦ τε Πηλίου καὶ τῆς Ὄσσης· νῦν δὲ συνέσταλται μέν, τῶν δ' ἐν τῇ Μαγνησίᾳ πασῶν ὅμως διαφέρει. ἡ δὲ Βοιβηὶς λίμνη πλησιάζει μὲν ταῖς Φεραῖς, συνάπτει δὲ καὶ τοῖς ἀπολήγουσι τοῦ Πηλίου πέρασι καὶ τῆς Μαγνησίας· Βοίβη δὲ χωρίον ἐπὶ τῇ λίμνῃ κείμενον. καθάπερ δὲ τὴν Ἰωλκὸν αὐξηθεῖσαν ἐπὶ πλέον κατέλυσαν αἱ στάσεις καὶ αἱ τυραννίδες, οὕτως καὶ τὰς Φερὰς

συνέστειλαν ἐξαρθείσας ποτὲ καὶ συγκαταλυθείσας τοῖς τυράννοις. πλησίον δὲ τῆς Δημητριάδος ὁ Ἄναυρος ῥεῖ. καλεῖται δὲ καὶ συνεχὴς αἰγιαλὸς Ἰωλκός· ἐνταῦθα δὲ καὶ τὴν * Πυλαϊκὴν πανήγυριν συνετέλουν. ὁ δ' Ἀρτεμίδωρος ἀπωτέρω τῆς Δημητριάδος τίθησι τὸν Παγασιτικὸν κόλπον εἰς τοὺς ὑπὸ Φιλοκτήτῃ τόπους· ἐν δὲ τῷ κόλπῳ φησὶν εἶναι τὴν Κικύνηθον νῆσον καὶ πολίχνην ὁμώνυμον.

16 Ἑξῆς δ' αἱ ὑπὸ Φιλοκτήτῃ πόλεις καταλέγονται. ἡ μὲν οὖν Μηθώνη ἑτέρα ἐστὶ τῆς Θρᾳκίας Μεθώνης, ἣν κατέσκαψε Φίλιππος· ἐμνήσθημεν δὲ καὶ πρότερον τῆς τῶν ὀνομάτων τούτων καὶ τῶν ἐν Πελοποννήσῳ .... τροπῆς· τἆλλα δὲ [δι]ηρίθμηται, ἥ τε Θαυμακία καὶ [ὁ Ὀλιζ]ὼν καὶ ἡ Μελίβοια, [ἃ] τῆς ἑξῆς παραλίας ἐστίν. πρόκεινται δὲ τῶν Μαγνήτων νῆσοι συχναὶ μέν, αἱ δ' ἐν ὀνόματι Σκίαθός τε καὶ Πεπάρηθος καὶ Ἰκὸς Ἁλόννησός τε καὶ Σκῦρος, ὁμωνύμους ἔχουσαι πόλεις. μάλιστα δ' ἐστὶν ἐν ὀνόματι Σκῦρος διὰ τὴν Λυκομήδους πρὸς Ἀχιλλέα οἰκειότητα καὶ τὴν Νεοπτολέμου
C.437 τοῦ Ἀχιλλέως ἐνταῦθα γένεσίν τε καὶ ἐκτροφήν. ὕστερον δὲ Φίλιππος αὐξηθείς, ὁρῶν Ἀθηναίους ἐπικρατοῦντας τῆς θαλάττης καὶ τῶν νήσων ἄρχοντας καὶ τούτων καὶ τῶν ἄλλων, ἐποίησε τὰς πλησίον ἑαυτῷ μάλιστα ἐνδόξους. πολεμῶν γὰρ περὶ τῆς ἡγεμονίας ἐπεχείρει πρώτοις ἀεὶ τοῖς ἐγγύθεν, καὶ καθάπερ αὐτῆς τῆς Μαγνήτιδος τὰ πολλὰ μέρη Μακεδονίαν ἐποίησε καὶ τῆς Θρᾴκης καὶ τῆς ἄλλης τῆς κύκλῳ γῆς, οὕτω καὶ τὰς πρὸ τῆς Μαγνησίας νήσους ἀφῃρεῖτο, καὶ τὰς ὑπ' οὐδενὸς γνωριζομένας πρότερον περιμαχήτους καὶ γνωρίμους ἐποίει. τὴν δ' οὖν Σκῦρον καὶ μάλιστα μὲν αἱ ἀρχαιολογίαι συνιστῶσιν, ἀλλὰ καὶ τὰ τοιαῦτα θρυλεῖσθαι ποιεῖ, οἷον αἱ τῶν αἰγῶν ἀρεταὶ τῶν Σκυρίων,

καὶ τὰ μέταλλα τῆς ποικίλης λίθου τῆς Σκυρίας, καθάπερ τῆς Καρυστίας καὶ τῆς * Δευκαλλίας καὶ τῆς Συνναδικῆς * Ἱεραπολιτικῆς. μονολίθους γὰρ κίονας καὶ πλάκας μεγάλας ὁρᾶν ἔστιν ἐν τῇ Ῥώμῃ τῆς ποικίλης λιθείας, ἀφ᾽ ἧς ἡ πόλις κοσμεῖται δημοσίᾳ τε καὶ ἰδίᾳ, πεποίηκέ τε τὰ λευκόλιθα οὐ πολλοῦ ἄξια.

Ὁ δ᾽ οὖν ποιητὴς μέχρι δεῦρο προελθὼν τῆς Μα- 17
γνητικῆς παραλίας ἐπάνεισιν ἐπὶ τὴν ἄνω Θετταλίαν· καὶ γὰρ τὰ παρατείνοντα τῇ Φ[θιώτιδι], ἀρξάμενος ἀπὸ τῆς Δολοπίας καὶ τῆς Πίνδου, [μέχρι τῆς] κάτω Θετταλίας διέξεισιν „οἳ δ᾽ εἶχον Τρίκκην καὶ Ἰθώμην „κλωμακόεσσαν.“ ταῦτα τὰ χωρία ἔστι μὲν τῆς Ἱστιαιώτιδος, ἐκαλεῖτο δ᾽, ὥς φασι, πρότερον Δωρίς· κατασχόντων δὲ τῶν Περραιβῶν αὐτήν, οἳ καὶ τῆς Εὐβοίας τὴν Ἱστιαιῶτιν κατεστρέψαντο καὶ τοὺς ἀνθρώπους εἰς τὴν ἤπειρον ἀνέσπασαν, διὰ τὸ πλῆθος τῶν ἐποικησάντων Ἱστιαίων τὴν χώραν ἀπ᾽ ἐκείνων οὕτως ἐκάλεσαν. καλοῦσι δὲ καὶ [αὐτὴν καὶ] τὴν Δολοπίαν τὴν ἄνω Θετταλίαν, ἐπ᾽ εὐθείας οὖσα[ν τῇ ἄνω] Μακεδονίᾳ, καθάπερ καὶ τὴν κάτω τῇ κάτω. ἔστι δ᾽ ἡ μὲν Τρίκκη, ὅπου τὸ ἱερὸν τοῦ Ἀσκληπιοῦ τὸ ἀρχαιότατον καὶ ἐπιφανέστατον, ὅμορος τοῖς τε Δόλοψιν καὶ τοῖς περὶ τὴν Πίνδον τόποις. τὴν δ᾽ Ἰθώμην ὁμωνύμως τῇ Μεσσηνιακῇ λεγομένην οὔ φασι δεῖν οὕτως ἐκφέρειν, ἀλλὰ τὴν πρώτην συλλαβὴν ἀφαιρεῖν· οὕτω γὰρ καλεῖσθαι πρότερον, νῦν δὲ * Θαμαὶ μετωνομάσθαι, χωρίον ἐρυμνὸν καὶ τῷ ὄντι κλωμακόεν, ἱδρυμένον μεταξὺ τεττάρων φρουρίων ὥσπερ ἐν τετραπλεύρῳ κειμένων, Τρίκκης τε καὶ Μητροπόλεως καὶ Πελινναίου καὶ Γόμφων. τῆς δὲ δὴ Μητροπολιτῶν ἐστι χώρας ἡ Ἰθώμη. ἡ δὲ Μητρόπολις πρότερον μὲν ἐκ τριῶν συνῴκιστο πολιχνίων ἀσήμων, ὕστερον δὲ καὶ πλείους

προσελήφθησαν, ὧν ἦν καὶ ἡ Ἰθώμη. Καλλίμαχος μὲν C.438 οὖν φησιν ἐν τοῖς ἰάμβοις τὰς Ἀφροδίτας (ἡ θεὸς γὰρ οὐ μία) τὴν Καστνιῆτιν ὑπερβάλλεσθαι πάσας τῷ φρονεῖν, ὅτι μόνη παραδέχεται τὴν τῶν ὑῶν θυσίαν. καὶ μὴν πολυίστωρ, εἴ τις ἄλλος, καὶ πάντα τὸν βίον, ὥς αὐτὸς εἴρηκεν, ὁ ταῦτα * μυθεῖσθαι βουλόμενος. οἱ δ' ὕστερον ἤλεγξαν οὐ μίαν Ἀφροδίτην μόνον ἀλλὰ καὶ πλείους ἀποδεδεγμένας τὸ ἔθος τοῦτο, ὧν εἶναι καὶ τὴν ἐν τῇ Μητροπόλει· ταύτῃ δὲ μίαν τῶν συνοικισθεισῶν εἰς αὐτὴν πόλεων παραδοῦναι τὸ ἔθος Ὀνθύριον. ἔστι δὲ καὶ Φαρκαδὼν ἐν τῇ Ἱστιαιώτιδι, καὶ ῥεῖ δι' αὐτῶν ὁ Πηνειὸς καὶ ὁ Κουράλιος· ὧν ὁ Κουράλιος ῥυεὶς παρὰ τὸ τῆς Ἰτωνίας Ἀθηνᾶς ἱερὸν εἰς τὸν Πηνειὸν ἐξίησιν, αὐτὸς δ' ὁ Πηνειὸς ἄρχεται μὲν ἐκ Πίνδου, καθάπερ εἴρηται, ἐν ἀριστερᾷ δ' ἀφεὶς Τρίκκην τε καὶ Πελινναῖον καὶ Φαρκαδόνα φέρεται παρά τε Ἄτρακα καὶ Λάρισαν, καὶ τοὺς ἐν τῇ Θετταλιώτιδι δεξάμενος ποταμοὺς πρόεισι διὰ τῶν Τεμπῶν ἐπὶ τὰς ἐκβολάς. τὴν δ' Οἰχαλίαν πόλιν Εὐρύτου λεγομένην ἔν τε τοῖς τόποις τούτοις ἱστοροῦσι καὶ ἐν Εὐβοίᾳ καὶ ἐν Ἀρκαδίᾳ, καὶ μετονομάζουσιν [ἄλλοι] ἄλλως, ὃ καὶ ἐν τοῖς Πελοποννησιακοῖς εἴρηται. περὶ δὲ τούτων ζητοῦσι καὶ μάλιστα τίς ἦν ἡ ὑπὸ Ἡρακλέους ἁλοῦσα, καὶ περὶ τίνος συνέγραψεν ὁ ποιήσας τὴν Οἰχαλίας ἅλωσιν. ταῦτα μὲν δὴ τὰ χωρία τοῖς Ἀσκληπιάδαις ὑπέταξεν.

18 Ἑξῆς δὲ λέγει τὴν ὑπ' Εὐρυπύλῳ „οἳ δ' ἔχον Ὀρμένιον οἵ τε κρήνην Ὑπέρειαν, οἵ τ' ἔχον Ἀστέριον Τιτάνοιό τε λευκὰ κάρηνα.“ τὸ μὲν οὖν Ὀρμένιον νῦν Ὀρμίνιον καλεῖται, ἔστι δ' ὑπὸ τῷ Πηλίῳ κώμη κατὰ τὸν Παγασιτικὸν κόλπον τῶν συνῳκισμένων εἰς τὴν Δημητριάδα πόλεων, ὡς εἴρηται. ἀνάγκη δὲ καὶ τὴν Βοιβηίδα

λίμνην εἶναι πλησίον, ἐπειδὴ καὶ ἡ Βοίβη τῶν περιοικίδων ἦν τῆς Δημητριάδος καὶ αὐτὸ τὸ Ὀρμένιον. τὸ μὲν οὖν Ὀρμένιον ἀπέχει τῆς Δημητριάδος πεζῇ σταδίους ἑπτὰ καὶ εἴκοσιν, ὁ δὲ τῆς Ἰωλκοῦ τόπος ἐν ὁδῷ κείμενος τῆς μὲν Δημητριάδος ἑπτὰ σταδίους διέστηκε, τοῦ δ' Ὀρμενίου τοὺς λοιποὺς σταδίους εἴκοσι. φησὶ δ' ὁ Σκήψιος ἐκ τοῦ Ὀρμενίου τὸν Φοίνικα εἶναι, καὶ φεύγειν αὐτὸν ἐνθένδε παρὰ τοῦ „πατρὸς Ἀμύντορος „Ὀρμενίδαο“ εἰς τὴν Φθίαν „ἐς Πηλῆα ἄνακτα.“ ἐκτίσθαι γὰρ ὑπὸ Ὀρμένου τὸ χωρίον τοῦτο τοῦ * Κερφίου τοῦ Αἰόλου· παῖδας δὲ τοῦ Ὀρμένου γενέσθαι τόν τε Ἀμύντορα καὶ Εὐαίμονα, ὧν τοῦ μὲν εἶναι Φοίνικα τοῦ C.439 δ' Εὐρύπυλον· φυλαχθῆναι δὲ τῷ Εὐρυπύλῳ τὴν διαδοχὴν κοινήν, ἅτε ἂν ἀπελθόντος τοῦ Φοίνικος ἐκ τῆς οἰκείας· καὶ δὴ καὶ γράφει οὕτως „οἷον ὅτε πρῶτον λί„πον Ὀρμένιον πολύμηλον,“ ἀντὶ τοῦ „λίπον Ἑλλάδα „καλλιγύναικα.“ Κράτης δὲ Φωκέα ποιεῖ τὸν Φοίνικα, τεκμαιρόμενος ἐκ τοῦ κράνους τοῦ Μέγητος ᾧ ἐχρήσατο ὁ Ὀδυσσεὺς κατὰ τὴν νυκτεγερσίαν, περὶ οὗ φησιν ὁ ποιητὴς ὅτι „ἐξ Ἐλεῶνος Ἀμύντορος Ὀρμενίδαο „ἐξέλετ' Αὐτόλυκος, πυκινὸν δόμον ἀντιτορήσας.“ τόν τε γὰρ Ἐλεῶνα ἐν τῷ Παρνασσῷ πολίχνιον εἶναι, τόν τε Ὀρμενίδην Ἀμύντορα οὐκ ἄλλον τινὰ λέγεσθαι ἢ τὸν τοῦ Φοίνικος πατέρα, καὶ τὸν Αὐτόλυκον οἰκοῦντα ἐν τῷ Παρνασσῷ τοιχωρυχεῖν τὰ τῶν γειτόνων, ὅπερ κοινόν ἐστι τοιχωρύχου παντός, οὐ τὰ τῶν πόρρωθεν. ὁ δὲ Σκήψιός φησι μήτε Ἐλεῶνα μηδένα τόπον τοῦ Παρνασσοῦ δείκνυσθαι, ἀλλὰ Νεῶνα, καὶ ταύτην οἰκισθεῖσαν μετὰ τὰ Τρωικά, μήτ' ἐκ γειτόνων τὰς τοιχωρυχίας γίνεσθαι μόνον. καὶ ἄλλα δ' ἐστὶν ἃ λέγοι τις ἄν, ἀλλ' οὖν ὀκνῶ διατρίβειν ἐπὶ πλέον. ἄλλοι δὲ γράφουσιν ἐξ Ἑλεῶνος· Ταναγρικὴ δέ ἐστιν αὕτη· καὶ

μᾶλλον ἐλέγχοι ἀτόπως ἂν λεγόμενον τό „φεῦγον ἔπειτ' „ἀπάνευθε δι' Ἑλλάδος, Φθίην δ' ἐξικόμην.“ ἡ δ' Ὑπέρεια κρήνη ἐν μέσῃ ἐστὶ τῇ Φεραίων πόλει Εὐμήλου οὔσῃ· ἄτοπον τοίνυν [δοῦναι Εὐρυπύ]λῳ. Τίτανος δ' ἀπὸ τοῦ συμβεβηκότος ὠνομάσθη· λευκόγεων γάρ ἐστι τὸ χωρίον Ἄρνης πλησίον καὶ [τῶν Ἀφε]τῶν· καὶ τὸ Ἀστέριον δ' οὐκ ἄπωθεν τούτων ἐστί.

19 Συνεχεῖς δὲ τῇ μερίδι ταύτῃ λέγονται οἱ ὑπὸ τῷ Πολυποίτῃ „οἳ δ' Ἄργισσαν ἔχον καὶ Γυρτώνην ἐνέ„μοντο, Ὄρθην Ἠλώνην τε πόλιν τ' Ὀλοοσσόνα λευ„κήν.“ ταύτην τὴν χώραν πρότερον μὲν ᾤκουν Περραιβοί, τὸ πρὸς θαλάττῃ μέρος νεμόμενοι καὶ τῷ Πηνειῷ μέχρι τῆς ἐκβολῆς αὐτοῦ καὶ Γυρτῶνος πόλεως Περραιβίδος. εἶτα ταπεινώσαντες ἐκείνους Λαπίθαι κατέσχον αὐτοὶ τὰ χωρία, Ἰξίων καὶ ὁ υἱὸς Πειρίθους, ὃς καὶ τὸ Πήλιον κατεκτήσατο βιασάμενος τοὺς κατασχόντας Κενταύρους, ἄγριόν τι φῦλον. τούτους μὲν οὖν „ἐκ Πηλίου ὦσε καὶ Αἰθίκεσσι πέλασσε,“ τοῖς δὲ C.440 Λαπίθαις τὰ πεδία παρέδωκε· τινὰ δ' αὐτῶν καὶ οἱ Περραιβοὶ κατεῖχον, τὰ πρὸς τῷ Ὀλύμπῳ· ἔστι δ' ὅπου καὶ ὅλοι ἀναμὶξ τοῖς Λαπίθαις ᾤκουν. ἡ μὲν οὖν Ἄργισσα, ἡ νῦν Ἄργουρα, ἐπὶ τῷ Πηνειῷ κεῖται· ὑπέρκειται δ' αὐτῆς Ἄτραξ ἐν τετταράκοντα σταδίοις, τῷ ποταμῷ πλησιάζουσα καὶ αὕτη· τὴν δ' ἀνὰ μέσον ποταμίαν εἶχον Περραιβοί. Ὄρθην δὲ τινὲς τὴν ἀκρόπολιν τῶν Φαλανναίων εἰρήκασιν· ἡ δὲ Φάλαννα Περραιβικὴ πόλις πρὸς τῷ Πηνειῷ πλησίον τῶν Τεμπῶν. οἱ μὲν οὖν Περραιβοὶ καταδυναστευθέντες ὑπὸ τῶν Λαπιθῶν εἰς τὴν ὀρεινὴν ἀπανέστησαν οἱ πλείους τὴν περὶ Πίνδον καὶ Ἀθαμᾶνας καὶ Δόλοπας, τὴν δὲ χώραν

---

14. post ἐκείνους: εἰς τὴν ἐν τῇ μεσογαίᾳ ποταμίαν

καὶ τοὺς ὑπολειφθέντας τῶν Περραιβῶν κατέσχον Λαρισαῖοι, πλησίον μὲν οἰκοῦντες τοῦ Πηνειοῦ, γειτνιῶντες δ' ἐκείνοις, νεμόμενοι δὲ τὰ εὐδαιμονέστατα μέρη τῶν πεδίων, πλὴν εἴ τι σφόδρα κοῖλον πρὸς τῇ λίμνῃ τῇ Νεσσωνίδι, εἰς ἣν ὑπερκλύζων ὁ ποταμὸς ἀφῃρεῖτό τι τῆς ἀροσίμου τοὺς Λαρισαίους· ἀλλ' ὕστερον παραχώμασιν ἐπηνώρθωσαν Λαρισαῖοι. οὗτοι δ' οὖν κατεῖχον τέως τὴν Περραιβίαν καὶ φόρους ἐπράττοντο, ἕως Φίλιππος κατέστη κύριος τῶν τόπων. Λάρισα δ' ἐστὶ καὶ ἐν τῇ Ὄσσῃ χωρίον· καὶ ἡ Κρεμαστή, ὑπό τινων δὲ Πελασγία λεγομένη· καὶ ἐν τῇ Κρήτῃ πόλις ἡ νῦν εἰς Ἱεράπυτναν συνοικισθεῖσα, ἀφ' ἧς καὶ τὸ ὑποκείμενον πεδίον νῦν Λαρίσιον καλεῖται· καὶ ἐν Πελοποννήσῳ ἥ τε τῶν Ἀργείων ἄκρα καὶ ὁ τὴν Ἠλείαν ἀπὸ Δύμης διορίζων Λάρισος ποταμός. Θεόπομπος δὲ καὶ πόλιν λέγει ἐν τῇ αὐτῇ μεθορίᾳ κειμένην Λάρισαν· καὶ ἐν τῇ Ἀσίᾳ ἥ τε Φρικωνὶς ἡ περὶ τὴν Κύμην καὶ ἡ κατὰ Ἁμαξιτὸν τῆς Τρῳάδος· καὶ ἡ Ἐφεσία Λάρισά ἐστι καὶ ἐν Συρίᾳ· τῆς δὲ Μιτυλήνης ἀπὸ πεντήκοντα σταδίων εἰσὶ Λαρισαῖαι πέτραι κατὰ τὴν ἐπὶ Μηθύμνης ὁδόν· καὶ ἐν τῇ Ἀττικῇ δ' ἐστὶ Λάρισα· καὶ τῶν Τράλλεων διέχουσα κώμη τριάκοντα σταδίους ὑπὲρ τῆς πόλεως ἐπὶ Καΰστρου πεδίον διὰ τῆς Μεσωγίδος ἰόντων κατὰ τὸ τῆς Ἰσοδρόμης Μητρὸς ἱερόν, ὁμοίαν τὴν θέσιν καὶ τὴν ἀρετὴν ἔχουσα τῇ Κρεμαστῇ Λαρίσῃ· καὶ γὰρ εὔυδρος καὶ ἀμπελόφυτος· ἴσως δὲ καὶ ὁ Λαρίσιος Ζεὺς ἐκεῖθεν ἐπωνόμασται· καὶ ἐν τοῖς ἀριστεροῖς δὲ τοῦ Πόντου κώμη τις καλεῖται Λάρισα μεταξὺ Ναυλό[χου καὶ Ὀδησσοῦ] πλησίον τῶν ἄκρων τοῦ Αἵμου.

Καὶ Ὀλοσσὼν δὲ λευκὴ προσαγορευθεῖσα ἀπὸ τοῦ λευκάργιλος εἶναι, καὶ Ἠλώνη Περραιβικαὶ πόλεις, καὶ Γόννος. ἡ δ' Ἠλώνη μετέβαλε τοὔνομα Λειμώνη

μετονομασθεῖσα· κατέσκαπται δὲ νῦν· ἄμφω δ' ὑπὸ C.441 τῷ Ὀλύμπῳ κεῖνται οὐ πολὺ ἄπωθεν τοῦ Εὐρώπου ποταμοῦ, ὃν ὁ ποιητὴς Τιταρήσιον καλεῖ.

20 Λέγει δὲ καὶ περὶ τούτου καὶ περὶ τῶν Περραιβῶν ἐν τοῖς ἑξῆς ὁ ποιητὴς ὅταν φῇ „Γουνεὺς δ' ἐκ Κύφου „ἦγε δύω καὶ εἴκοσι νῆας. τῷ δ' Ἐνιῆνες ἕποντο με„νεπτόλεμοί τε Περαιβοί, οἳ περὶ Δωδώνην δυσχείμε„ρον οἰκί' ἔθεντο, [οἵ τ'] ἀμφ' ἱμερτὸν Τιταρήσιον „ἔργ' ἐνέμοντο.“ λέγει μὲν οὖν τούτους τοὺς τόπους τῶν Περραιβῶν, ἀπὸ μέρους τῆς Ἑστιαιώτιδος ἐπειληφότας· ἦσαν δὲ καὶ ὑπὸ τῷ Πολυποίτῃ ἐκ μέρους Περραιβικαί, τοῖς μέντοι Λαπίθαις προσένειμε διὰ τὸ ἀναμὶξ οἰκεῖν καὶ τὰ μὲν πεδία κατέχειν τοὺς Λαπίθας καὶ τὸ ἐνταῦθα Περραιβικὸν ὑπὸ τούτοις τετάχθαι ὡς ἐπὶ πλέον, τὰ δ' ὀρεινότερα χωρία πρὸς τῷ Ὀλύμπῳ καὶ τοῖς Τέμπεσι τοὺς Περραιβούς, καθάπερ τὸν Κύφον καὶ τὴν Δωδώνην καὶ τὰ περὶ τὸν Τιταρήσιον, ὃς ἐξ ὄρους Τιταρίου συμφυοῦς τῷ Ὀλύμπῳ ῥέων εἰς τὰ πλησίον τῶν Τεμπῶν χωρία τῆς Περραιβίας αὐτοῦ που τὰς συμβολὰς ποιεῖται πρὸς τὸν Πηνειόν. τὸ μὲν οὖν τοῦ Πηνειοῦ καθαρόν ἐστιν ὕδωρ, τὸ δὲ τοῦ Τιταρησίου λιπαρὸν ἔκ τινος ὕλης ὥστ' οὐ συμμίσγεται „ἀλλά „τέ μιν καθύπερθεν ἐπιτρέχει ἠύτ' ἔλαιον.“ διὰ δὲ τὸ ἀναμὶξ οἰκεῖν Σιμωνίδης Περραιβοὺς καὶ Λαπίθας καλεῖ τοὺς Πελασγιώτας ἅπαντας, τοὺς τὰ ἑῷα κατέχοντας τὰ περὶ Γυρτῶνα καὶ τὰς ἐκβολὰς τοῦ Πηνειοῦ καὶ Ὄσσαν καὶ Πήλιον καὶ τὰ περὶ Δημητριάδα καὶ τὰ ἐν τῷ πεδίῳ, Λάρισαν Κραννῶνα Σκοτοῦσσαν Μόψιον Ἄτρακα, καὶ τὰ περὶ τὴν Νεσσωνίδα λίμνην καὶ [τὴν] Βοιβηίδα· ὧν ὁ ποιητὴς ὀλίγων μέμνηται διὰ τὸ μὴ οἰκισθῆναί πω τἆλλα ἢ φαύλως οἰκισθῆναι διὰ τοὺς κατακλυσμοὺς ἄλλοτ' ἄλλους γινομένους· ἐπεὶ οὐδὲ τῆς

Νεσσωνίδος μέμνηται λίμνης, ἀλλὰ τῆς Βοιβηίδος μόνον πολὺ ἐλάττονος οὔσης, ταύτης δὲ μόνης μενούσης, ἐκείνης δὲ ὡς εἰκὸς τοτὲ μὲν πληρουμένης ἀτάκτως, τοτὲ δ' ἐκλειπομένης. τῆς δὲ Σκοτούσσης ἐμνήσθημεν καὶ ἐν τοῖς περὶ Δωδώνης λόγοις καὶ τοῦ μαντείου τοῦ ἐν Θετταλίᾳ, διότι περὶ τοῦτον ὑπῆρξε τὸν τόπον. ἔστι δ' ἐν τῇ Σκοτούσσῃ χωρίον τι Κυνὸς κεφαλαὶ καλούμενον, περὶ ὃ Ῥωμαῖοι μετ' Αἰτωλῶν καὶ Τίτος Κοΐντιος ἐνίκων μάχῃ μεγάλῃ Φίλιππον τὸν Δημητρίου, Μακεδόνων βασιλέα.

Πέπονθε δέ τι τοιοῦτο καὶ ἡ Μαγνῆτις· κατη- 21
ριθμημένων γὰρ ἤδη πολλῶν αὐτῆς τόπων οὐδένας τούτων ὠνόμακε Μάγνητας Ὅμηρος, ἀλλ' ἐκείνους C.442
μόνους οὓς τυφλῶς καὶ οὐ γνωρίμως διασαφεῖ „οἳ περὶ „Πηνειὸν καὶ Πήλιον εἰνοσίφυλλον ναίεσκον.“ ἀλλὰ μὴν περὶ τὸν Πηνειὸν καὶ τὸ Πήλιον οἰκοῦσι καὶ οἱ τὴν Γυρτῶνα ἔχοντες, οὓς ἤδη κατέλεξε, καὶ τὸ Ὀρμένιον καὶ ἄλλοι πλείους, καὶ ἔτι ἀπωτέρω τοῦ Πηλίου ὅμως Μάγνητες ἦσαν ἀρξάμενοι ἀπὸ τῶν ὑπ' Εὐμήλῳ, κατά γε τοὺς ὕστερον ἀνθρώπους. ἐοίκασιν οὖν διὰ τὰς συνεχεῖς μεταστάσεις καὶ ἐξαλλάξεις τῶν πολιτειῶν καὶ ἐπιμίξεις συγχεῖν καὶ τὰ ὀνόματα καὶ τὰ ἔθνη, ὥστε τοῖς νῦν ἔσθ' ὅτε ἀπορίαν παρέχειν, καθάπερ τοῦτο τὸ πρῶτον μὲν ἐπὶ Κραννῶνος καὶ τῆς Γυρτῶνος γεγένηται. τοὺς μὲν γὰρ Γυρτωνίους Φλεγύας πρότερον ἐκάλουν ἀπὸ Φλεγύου τοῦ Ἰξίονος ἀδελφοῦ, τοὺς δὲ Κραννωνίους Ἐφύρους, ὥστε διαπορεῖν, ὅταν φῇ ὁ ποιητής „τὼ μὲν ἄρ' ἐκ Θρῄκης Ἐφύρους μέτα θω- „ρήσσοντο ἠὲ μετὰ Φλεγύας μεγαλήτορας,“ τίνας ποτὲ
βούλεται λέγειν· ἔπειτα τοῦτο καὶ ἐπὶ τῶν Περραιβῶν 22
καὶ τῶν Αἰνιάνων συνέβη· Ὅμηρος μὲν γὰρ συνέζευξεν αὐτοὺς ὡς πλησίον ἀλλήλων οἰκοῦντας· καὶ δὴ

καὶ λέγεται ὑπὸ τῶν ὕστερον ἐπὶ χρόνον συχνὸν ἡ οἴκησις τῶν Αἰνιάνων ἐν τῷ Δωτίῳ γενέσθαι πεδίῳ, τοῦτο δ' ἐστὶ πλησίον τῆς ἄρτι λεχθείσης Περραιβίας καὶ τῆς Ὄσσης καὶ ἔτι τῆς Βοιβηίδος λίμνης, ἐν μέσῃ μέν πως τῇ Θετταλίᾳ λόφοις δὲ ἰδίοις περικλειόμενον, περὶ οὗ Ἡσίοδος οὕτως εἴρηκεν „ἢ οἵη Διδύμους ἱε„ροὺς ναίουσα κολωνοὺς Δωτίῳ ἐν πεδίῳ, πολυβό„τρυος ἄντ' Ἀμύροιο, νίψατο Βοιβιάδος λίμνης πόδα „παρθένος ἀδμής." οἱ μὲν οὖν Αἰνιᾶνες οἱ πλείους εἰς τὴν Οἴτην ἐξηλάθησαν ὑπὸ τῶν Λαπιθῶν, κἀνταῦθα δὲ ἐδυνάστευσαν ἀφελόμενοι τῶν τε Δωριέων τινὰ μέρη καὶ τῶν Μαλιέων μέχρι Ἡρακλείας καὶ Ἐχίνου, τινὲς δ' αὐτῶν ἔμειναν περὶ Κύφον, Περραιβικὸν ὄρος ὁμώνυμον κατοικίαν ἔχον. οἱ δὲ Περραιβοὶ τινὲς μὲν συσταλέντες περὶ τὰ ἑσπέρια τοῦ Ὀλύμπου μέρη κατέμενον αὐτόθι πρόσχωροι ὄντες Μακεδόσι, τὸ δὲ πολὺ μέρος εἰς τὰ περὶ τὴν Ἀθαμανίαν ὄρη καὶ τὴν Πίνδον ἐξέπεσε· νυνὶ δὲ μικρὸν ἢ οὐδὲν αὐτῶν ἴχνος σώζεται. τοὺς δ' οὖν ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ λεχθέντας Μάγνητας ὑστάτους ἐν τῷ Θετταλικῷ καταλόγῳ νομιστέον τοὺς
C.443 ἐντὸς τῶν Τεμπῶν ἀπὸ τοῦ Πηνειοῦ καὶ τῆς Ὄσσης ἕως Πηλίου, Μακεδόνων τοῖς Πιεριώταις ὁμόρους τοῖς ἔχουσι τὴν τοῦ Πηνειοῦ περαίαν μέχρι τῆς θαλάττης. τὸ μὲν οὖν Ὁμόλιον ἢ τὴν Ὁμόλην (λέγεται γὰρ ἀμφοτέρως) ἀποδοτέον αὐτοῖς· εἴρηται δ' ἐν τοῖς Μακεδονικοῖς ὅτι ἐστὶ πρὸς τῇ Ὄσσῃ κατὰ τὴν ἀρχὴν τῆς τοῦ Πηνειοῦ διὰ τῶν Τεμπῶν διεκβολῆς. εἰ δὲ καὶ μέχρι τῆς παραλίας προϊτέον τῆς ἐγγυτάτω τοῦ Ὁμολίου, λόγον ἔχει ὥστε [καὶ] τὸν Ῥιζοῦντα προσνέμειν καὶ Ἐρυμνὰς ἐν τῇ ὑπὸ Φιλοκτήτῃ παραλίᾳ κειμένας καὶ τῇ ὑπὸ Εὐμήλῳ. τοῦτο μὲν οὖν ἐν ἀσαφεῖ κείσθω. καὶ ἡ τάξις δὲ τῶν ἐφεξῆς τόπων μέχρι Πηνειοῦ οὐ διαφα-

νῶς λέγεται, ἀδόξων δ' ὄντων τῶν τόπων οὐδ' ἡμῖν περὶ πολλοῦ θετέον. ἡ μέντοι Σηπιὰς ἀκτὴ καὶ τετραγῴδηται μετὰ ταῦτα καὶ ἐξύμνηται διὰ τὸν ἐνταῦθα ἀφανισμὸν τοῦ Περσικοῦ στόλου· ἔστι δ' αὕτη μὲν ἀκτὴ πετρώδης, μεταξὺ δ' αὐτῆς καὶ Κασθαναίας κώμης ὑπὸ τῷ Πηλίῳ κειμένης αἰγιαλός ἐστιν, ἐν ᾧ ὁ Ξέρξου στόλος ναυλοχῶν ἀπηλιώτου πολλοῦ πνεύσαντος ὁ μὲν εὐθὺς αὐτοῦ πρὸς τὸ ξηρὸν ἐξώκειλε καὶ διελύθη παραχρῆμα, ὁ δ' εἰς Ἰπνοὺς τόπον τραχὺν τῶν περὶ τὸ Πήλιον παρενεχθεὶς ὁ δ' εἰς Μελίβοιαν ὁ δ' εἰς τὴν Κασθαναίαν διεφθάρη. τραχὺς δ' ἐστὶν ὁ παράπλους πᾶς ὁ τοῦ Πηλίου ὅσον σταδίων ὀγδοήκοντα· τοσοῦτος δ' ἐστὶ καὶ τοιοῦτος καὶ ὁ τῆς Ὄσσης. μεταξὺ δὲ κόλπος σταδίων πλειόνων ἢ διακοσίων, ἐν ᾧ ἡ Μελίβοια. ὁ δὲ πᾶς ἀπὸ Δημητριάδος ἐγκολπίζοντι ἐπὶ τὸν Πηνειὸν μείζων τῶν χιλίων, [ἀπὸ δὲ Σπε]ρχειοῦ καὶ ἄλλων ὀκτακοσίων, ἀπὸ δὲ Εὐρίπου δισχιλίων τριακοσίων πεντήκοντα. Ἱερώνυμος δὲ τῆς πεδιάδος Θετταλίας καὶ Μαγνήτιδος τὸν κύκλον τρισχιλίων ἀποφαίνεται σταδίων, ᾠκῆσθαι δ' ὑπὸ Πελασγῶν, ἐξελαθῆναι δὲ τούτους εἰς τὴν Ἰταλίαν ὑπὸ Λαπιθῶν· εἶναι δὲ τὸ νῦν καλούμενον Πελασγικὸν πεδίον, ἐν [ᾧ] Λάρισα καὶ Γυρτώνη καὶ Φεραὶ καὶ Μόψιον καὶ Βοιβηὶς καὶ Ὄσσα καὶ Ὁμόλη καὶ Πήλιον καὶ Μαγνῆτις· Μόψιον δ' ὠνόμασται οὐκ ἀπὸ Μόψου τοῦ Μαντοῦς τῆς Τειρεσίου, ἀλλ' ἀπὸ τοῦ Λαπίθου τοῦ συμπλεύσαντος τοῖς Ἀργοναύταις· ἄλλος δ' ἐστὶ Μόψοπος, ἀφ' οὗ ἡ Ἀττικὴ Μοψοπία.

Τὰ καθ' ἕκαστα μὲν ταῦτα περὶ Θετταλίας, καθ' 23
ὅλου δ' ὅτι Πυρραία πρότερον ἐκαλεῖτο ἀπὸ Πύρρας τῆς Δευκαλίωνος γυναικός, Αἱμονία δὲ ἀπὸ Αἵμονος, Θετταλία δὲ ἀπὸ Θετταλοῦ τοῦ Αἵμονος. ἔνιοι δὲ διε-

λόντες δίχα τὴν μὲν πρὸς νότον λαχεῖν φασι Δευκαλίωνι καὶ καλέσαι Πανδώραν ἀπὸ τῆς μητρός, τὴν δ' C.444 ἑτέραν Αἵμονι, ἀφ' οὗ Αἱμονίαν λεχθῆναι· μετωνομάσθαι δὲ τὴν μὲν Ἑλλάδα ἀπὸ Ἕλληνος τοῦ Δευκαλίωνος, τὴν δὲ Θετταλίαν ἀπὸ τοῦ υἱοῦ Αἵμονος· τινὲς δὲ ἀπὸ Ἐφύρας τῆς Θεσπρωτίδος ἀπογόνους Ἀντίφου καὶ Φειδίππου, τῶν Θετταλοῦ τοῦ Ἡρακλέους, ἐπελθόντας ἀπὸ Θετταλοῦ τοῦ ἑαυτῶν προγόνου τὴν χώραν ὀνομάσαι. εἴρ[ηται] δὲ καὶ Νεσσωνὶς ὀνομασθῆναί ποτε ἀπὸ Νέσσωνος τοῦ Θετταλοῦ, καθάπερ καὶ ἡ λίμνη.

— I —

1 Ἐπεὶ δὲ ἡ Εὔβοια παρὰ πᾶσαν τὴν παραλίαν ταύτην παραβέβληται τὴν ἀπὸ Σουνίου μέχρι Θετταλίας, πλὴν τῶν ἄκρων ἑκατέρωθεν, οἰκεῖον ἂν εἴη συνάψαι τοῖς εἰρημένοις τὰ περὶ τὴν νῆσον, εἶθ' οὕτω μεταβῆναι πρός τε τὰ Αἰτωλικὰ καὶ τὰ Ἀκαρνανικά, ἅπερ λοιπά ἐστι τῶν τῆς Εὐρώπης μερῶν.

2 Παραμήκης μὲν τοίνυν ἐστὶν ἡ νῆσος ἐπὶ χιλίους σχεδόν τι καὶ διακοσίους σταδίους ἀπὸ Κηναίου πρὸς Γεραιστόν, τὸ δὲ πλάτος ἀνώμαλος, κατὰ δὲ τὸ πλέον ὅσον πεντήκοντα καὶ ἑκατὸν σταδίων. τὸ μὲν οὖν Κήναιον ἔστι κατὰ Θερμοπύλας καὶ τὰ ἔξω Θερμοπυλῶν ἐπ' ὀλίγον, Γεραιστὸς δὲ καὶ Πεταλία πρὸς Σουνίῳ. γίνεται οὖν ἀντίπορθμος τῇ τε Ἀττικῇ καὶ Βοιωτίᾳ καὶ Λοκρίδι καὶ τοῖς Μαλιεῦσι. διὰ δὲ τὴν στενότητα καὶ τὸ λεχθὲν μῆκος ὑπὸ τῶν παλαιῶν Μάκρις ὠνομάσθη. C.445 συνάπτει δὲ τῇ ἠπείρῳ κατὰ Χαλκίδα μάλιστα, κυρτὴ προπίπτουσα πρὸς τοὺς κατὰ τὴν Αὐλίδα τόπους τῆς Βοιωτίας καὶ ποιοῦσα τὸν Εὔριπον, περὶ οὗ διὰ πλειόνων εἰρήκαμεν, σχεδὸν δέ τι καὶ περὶ τῶν ἀντιπόρθμων ἀλλήλοις τόπων κατά τε τὴν ἤπειρον καὶ κατὰ

τὴν νῆσον ἐφ' ἑκάτερα τοῦ Εὐρίπου, τά τε ἐντὸς καὶ τὰ ἐκτός. εἰ δέ τι ἐλλέλειπται, νῦν προσδιασαφήσομεν. καὶ πρῶτον, ὅτι τῆς Εὐβοίας τὰ Κοῖλα λέγουσι τὰ μεταξὺ Αὐλίδος καὶ τῶν περὶ Γεραιστὸν τόπων· κολποῦται γὰρ ἡ παραλία, πλησιάζουσα δὲ τῇ Χαλκίδι κυρτοῦται πάλιν πρὸς τὴν ἤπειρον.

Οὐ μόνον δὲ Μάκρις ἐκλήθη ἡ νῆσος, ἀλλὰ καὶ 3
Ἀβαντίς. Εὔβοιαν γοῦν εἰπὼν ὁ ποιητὴς τοὺς ἀπ' αὐτῆς Εὐβοέας οὐδέποτε εἴρηκεν, ἀλλ' Ἄβαντας ἀεί „οἳ δ' „Εὔβοιαν ἔχον μένεα πνείοντες Ἄβαντες.“ „τῷ δ' ἅμ' „Ἄβαντες ἕποντο.“ φησὶ δ' Ἀριστοτέλης ἐξ Ἄβας τῆς Φωκικῆς Θρᾷκας ὁρμηθέντας ἐποικῆσαι τὴν νῆσον καὶ ἐπονομάσαι Ἄβαντας τοὺς ἔχοντας αὐτήν· οἱ δ' ἀπὸ ἥρωός φασι, καθάπερ καὶ Εὔβοιαν ἀπὸ ἡρωίνης. τάχα δ' ὥσπερ βοὸς αὐλὴ λέγεταί τι ἄντρον ἐν τῇ πρὸς [τὸν] Αἰγαῖον τετραμμένῃ παραλίᾳ, ὅπου τὴν Ἰώ φασι τεκεῖν Ἔπαφον, καὶ ἡ νῆσος ἀπὸ τῆς αὐτῆς αἰτίας ἔσχε τοῦτο τοὔνομα. καὶ Ὄχη δὲ ἐκαλεῖτο ἡ νῆσος, καὶ ἔστιν ὁμώνυμον αὐτῇ τὸ μέγιστον τῶν ἐνταῦθα ὀρῶν. καὶ Ἐλλοπία δ' ὠνομάσθη ἀπὸ Ἔλλοπος τοῦ Ἴωνος· οἱ δὲ Αἰκλου καὶ Κόθου ἀδελφόν φασιν, ὃς καὶ τὴν Ἐλλοπίαν κτίσαι λέγεται, χωρίον ἐν τῇ Ὠρείᾳ καλουμένῃ τῆς Ἱστιαιώτιδος πρὸς τῷ Τελεθρίῳ ὄρει, καὶ τὴν Ἱστίαιαν προσκτήσασθαι καὶ τὴν πεδιάδα καὶ Κήρινθον καὶ Αἰδηψὸν καὶ Ὀροβίας, ἐν ᾧ μαντεῖον ἦν ἀψευδέστατον· ἦν δὲ μαντεῖον τοῦ Σελινουντίου Ἀπόλλωνος· μετῴκησαν δ' εἰς τὴν Ἱστίαιαν οἱ Ἐλλοπιεῖς, καὶ ηὔξησαν τὴν πόλιν Φιλιστίδου τοῦ τυράννου βιασαμένου μετὰ τὰ Λευκτρικά. Δημοσθένης δ' ὑπὸ Φιλίππου καταστάθῆναι τύραννόν φησι καὶ τῶν Ὠρειτῶν τὸν Φιλι-

26. ante τοῦ: καὶ

*στίδην· οὕτω γὰρ ὠνομάσθησαν ὕστερον οἱ Ἱστιαι-
εῖς, καὶ ἡ πόλις ἀντὶ Ἱστιαίας Ὠρεός· ἔνιοι δ' ὑπ' Ἀθη-
ναίων ἀποικισθῆναί φασι τὴν Ἱστίαιαν ἀπὸ τοῦ δήμου
τοῦ Ἱστιαιέων, ὡς καὶ ἀπὸ τοῦ Ἐρετριέων τὴν Ἐρέ-
τριαν. Θεόπομπος δέ φησι Περικλέους χειρουμένου
Εὔβοιαν τοὺς Ἱστιαιεῖς καθ' ὁμολογίας εἰς Μακεδονίαν
μεταστῆναι, δισχιλίους δ' ἐξ Ἀθηναίων ἐλθόντας τὸν
Ὠρεὸν οἰκῆσαι, δῆμον ὄντα πρότερον τῶν Ἱστιαιέων.
4 κεῖται δ' ὑπὸ τῷ Τελεθρίῳ ὄρει ἐν τῷ Δρυμῷ κα-
C.446 λουμένῳ παρὰ τὸν Κάλλαντα ποταμὸν ἐπὶ πέτρας
ὑψηλῆς, ὥστε τάχα καὶ διὰ τὸ τοὺς Ἐλλοπιεῖς ὀρείους
εἶναι τοὺς προοικήσαντας ἐτέθη τοὔνομα τοῦτο τῇ πό-
λει· δοκεῖ δὲ καὶ ὁ Ὠρίων ἐνταῦθα τραφεὶς οὕτως ὀνο-
μασθῆναι· ἔνιοι δὲ τοὺς Ὠρείτας πόλιν ἔχοντας ἰδίαν
φασὶ πολεμουμένους ὑπὸ τῶν Ἐλλοπιέων μεταβῆναι
καὶ συνοικῆσαι τοῖς Ἱστιαιεῦσι, μίαν δὲ γενηθεῖσαν πό-
λιν ἀμφοτέροις χρήσασθαι τοῖς ὀνόμασι, καθάπερ Λα-
κεδαίμων τε καὶ Σπάρτη ἡ αὐτή. εἴρηται δ' ὅτι καὶ ἐν
Θετταλίᾳ Ἱστιαιῶτις ἀπὸ τῶν ἀνασπασθέντων ἐνθένδε
ὑπὸ Περραιβῶν ὠνόμασται.*

5 *Ἐπεὶ δ' ἡ Ἐλλοπία τὴν ἀρχὴν ἀπὸ τῆς Ἱστιαίας
καὶ τοῦ Ὠρεοῦ προσηγάγετο ἡμᾶς ποιήσασθαι, τὰ συν-
εχῆ λέγωμεν τοῖς τόποις τούτοις. ἔστι δ' ἐν τῷ Ὠρεῷ
τούτῳ τό τε Κήναιον πλησίον καὶ ἐπ' αὐτῷ τὸ Δῖον καὶ
Ἀθῆναι αἱ Διάδες, κτίσμα Ἀθηναίων, ὑπερκείμενον
τοῦ ἐπὶ Κῦνον πορθμοῦ· ἐκ δὲ τοῦ Δίου Κάναι τῆς
Αἰολίδος ἀπῳκίσθησαν· ταῦτά τε δὴ τὰ χωρία περὶ
τὴν Ἱστίαιάν ἐστι καὶ ἔτι Κήρινθος πολίδιον ἐπὶ τῇ θα-
λάττῃ· ἐγγὺς δὲ Βούδορος ποταμὸς ὁμώνυμος τῷ κατὰ
τὴν Σαλαμῖνα ὄρει τῷ πρὸς τῇ Ἀττικῇ.*

6 *Κάρυστος δέ ἐστιν ὑπὸ τῷ ὄρει τῇ Ὄχῃ· πλησίον
δὲ τὰ Στύρα καὶ τὸ Μαρμάριον, ἐν ᾧ τὸ λατόμιον τῶν*

Καρυστίων κιόνων, ἱερὸν ἔχον Ἀπόλλωνος Μαρμαρίνου, ὅθεν διάπλους εἰς Ἁλὰς τὰς Ἀραφηνίδας. ἐν δὲ τῇ Καρύστῳ καὶ ἡ λίθος φύεται ἡ ξαινομένη καὶ ὑφαινομένη, ὥστε τὰ ὕφη χειρόμακτρα γίνεσθαι, ῥυπωθέντα δ' εἰς φλόγα βάλλεσθαι καὶ ἀποκαθαίρεσθαι τῇ πλύσει τῶν λίνων παραπλησίως· ᾠκίσθαι δὲ τὰ χωρία ταῦτά φασιν ὑπὸ τῶν ἐκ τετραπόλεως τῆς περὶ Μαραθῶνα καὶ Στειριέων· κατεστράφη δὲ τὰ Στύρα ἐν τῷ Λαμιακῷ πολέμῳ ὑπὸ Φαίδρου τοῦ Ἀθηναίων στρατηγοῦ· τὴν δὲ χώραν ἔχουσιν Ἐρετριεῖς. Κάρυστος δέ ἐστι καὶ ἐν τῇ Λακωνικῇ τόπος τῆς Αἴγυος πρὸς Ἀρκαδίαν, ἀφ' οὗ Καρύστιον οἶνον Ἀλκμὰν εἴρηκε.

Γεραιστὸς δ' ἐν μὲν τῷ καταλόγῳ τῶν νεῶν οὐκ 7
εἴρηται, μέμνηται δ' ὁ ποιητὴς ὅμως αὐτοῦ „ἐς δὲ Γεραιστὸν ἐννύχιοι κατάγοντο,“ καὶ δηλοῖ διότι τοῖς διαίρουσιν ἐκ τῆς Ἀσίας εἰς τὴν Ἀττικὴν ἐπικαιρίως κεῖται τῷ Σουνίῳ πλησιάζον τὸ χωρίον· ἔχει δ' ἱερὸν Ποσειδῶνος ἐπισημότατον τῶν ταύτῃ καὶ κατοικίαν ἀξιόλογον.

Μετὰ δὲ τὸν Γεραιστὸν Ἐρέτρια πόλις μεγίστη τῆς 8
Εὐβοίας μετὰ Χαλκίδα, ἔπειθ' ἡ Χαλκὶς μητρόπολις τῆς νήσου τρόπον τινά, ἐπ' αὐτῷ τῷ Εὐρίπῳ ἱδρυμένη· ἀμφότεραι δὲ πρὸ τῶν Τρωικῶν ὑπ' Ἀθηναίων C 447
ἐκτίσθαι λέγονται, καὶ μετὰ τὰ Τρωικὰ Ἄικλος καὶ Κόθος ἐξ Ἀθηνῶν ὁρμηθέντες ὁ μὲν τὴν Ἐρέτριαν ᾤκισε Κόθος δὲ τὴν Χαλκίδα· καὶ τῶν Αἰολέων δέ τινες ἀπὸ τῆς Πενθίλου στρατιᾶς κατέμειναν ἐν τῇ νήσῳ, τὸ δὲ παλαιὸν καὶ Ἄραβες οἱ Κάδμῳ συνδιαβάντες. αἱ δ' οὖν πόλεις αὗται διαφερόντως αὐξηθεῖσαι καὶ ἀποικίας ἔστειλαν ἀξιολόγους εἰς Μακεδονίαν· Ἐρέτρια μὲν γὰρ συνῴκισε τὰς περὶ Παλλήνην καὶ τὸν Ἄθῳ πόλεις, ἡ δὲ Χαλκὶς τὰς ὑπὸ Ὀλύνθῳ, ἃς Φίλιππος

διελυμήνατο. καὶ τῆς Ἰταλίας δὲ καὶ Σικελίας πολλὰ χωρία Χαλκιδέων ἐστίν· ἐστάλησαν δὲ αἱ ἀποικίαι αὗται, καθάπερ εἴρηκεν Ἀριστοτέλης, ἡνίκα ἡ τῶν Ἱπποβοτῶν καλουμένη ἐπεκράτει πολιτεία· προέστησαν γὰρ αὐτῆς ἀπὸ τιμημάτων ἄνδρες ἀριστοκρατικῶς ἄρχοντες. κατὰ δὲ τὴν Ἀλεξάνδρου διάβασιν καὶ τὸν περίβολον τῆς πόλεως ηὔξησαν, ἐντὸς τείχους λαβόντες τόν τε Κάνηθον καὶ τὸν Εὔριπον, ἐπιστήσαντες τῇ γεφύρᾳ πύργους καὶ πύλας καὶ τεῖχος.

9 Ὑπέρκειται δὲ τῆς τῶν Χαλκιδέων πόλεως τὸ Λήλαντον καλούμενον πεδίον. ἐν δὲ τούτῳ θερμῶν τε ὑδάτων εἰσὶν ἐκβολαὶ πρὸς θεραπείαν νόσων εὐφυεῖς, οἷς ἐχρήσατο καὶ Σύλλας Κορνήλιος ὁ τῶν Ῥωμαίων ἡγεμών· καὶ μέταλλον δ' ὑπῆρχε θαυμαστὸν χαλκοῦ καὶ σιδήρου κοινόν, ὅπερ οὐχ ἱστοροῦσιν ἀλλαχοῦ συμβαῖνον· νυνὶ μέντοι ἀμφότερα ἐκλέλοιπεν, [ὥσπερ καὶ Ἀθήνησι τἀργυρεῖα.] ἔστι δὲ καὶ ἅπασα μὲν ἡ Εὔβοια εὔσειστος, μάλιστα δ' ἡ περὶ τὸν πορθμόν, καὶ δεχομένη πνευμάτων ὑποφοράς, καθάπερ καὶ ἡ Βοιωτία καὶ ἄλλοι τόποι, περὶ ὧν ἐμνήσθημεν διὰ πλειόνων πρότερον. ὑπὸ τοιοῦδε πάθους καὶ ἡ ὁμώνυμος τῇ νήσῳ πόλις καταποθῆναι λέγεται, ἧς μέμνηται καὶ Αἰσχύλος ἐν τῷ Ποντίῳ Γλαύκῳ „Εὐβοΐδα καμπτὴν ἀμφὶ „Κηναίου Διὸς ἀκτήν, κατ' αὐτὸν τύμβον ἀθλίου „Λίχα.“ Χαλκὶς δ' ὁμωνύμως λέγεται καὶ ἐν Αἰτωλίᾳ „Χαλκίδα τ' ἀγχίαλον, Καλυδῶνά τε πετρήεσσαν,“ καὶ ἐν τῇ νῦν Ἠλείᾳ „βὰν δὲ παρὰ Κρουνοὺς καὶ Χαλ„κίδα πετρήεσσαν“ οἱ περὶ Τηλέμαχον ἀπιόντες παρὰ Νέστορος εἰς τὴν οἰκείαν.

10 Ἐρέτριαν δ' οἱ μὲν ἀπὸ Μακίστου τῆς Τριφυλίας ἀποικισθῆναί φασιν ὑπ' Ἐρετριέως, οἱ δ' ἀπὸ τῆς Ἀθήνησιν Ἐρετρίας, ἣ νῦν ἐστιν ἀγορά· ἔστι δὲ καὶ

περὶ Φάρσαλον Ἐρέτρια, ἱερὰ τοῦ Ἀπόλλωνος. Ἀδμήτου δ' ἵδρυμα λέγεται τὸ ἱερόν, παρ' ᾧ θητεῦσαι λέγουσι τὸν θεὸν * αὐτόν. Μελανηὶς δ' ἐκαλεῖτο πρότερον ἡ Ἐρέτρια καὶ Ἀρότρια· ταύτης δ' ἐστὶ κώμη ἡ C.448 Ἀμάρυνθος ἀφ' ἑπτὰ σταδίων τοῦ τείχους. τὴν μὲν οὖν ἀρχαίαν πόλιν κατέσκαψαν Πέρσαι, σαγηνεύσαντες, ὥς φησιν Ἡρόδοτος, τοὺς ἀνθρώπους τῷ πλήθει, περιχυθέντων τῶν βαρβάρων τῷ τείχει· καὶ δεικνύουσιν ἔτι τοὺς θεμελίους, καλοῦσι δὲ παλαιὰν Ἐρέτριαν, ἡ δὲ νῦν ἐπέκτισται. τὴν δὲ δύναμιν τὴν Ἐρετριέων ἣν ἔσχον ποτὲ μαρτυρεῖ ἡ στήλη, ἣν ἀνέθεσάν ποτε ἐν τῷ ἱερῷ τῆς Ἀμαρυνθίας Ἀρτέμιδος· γέγραπται δ' ἐν αὐτῇ τρισχιλίοις μὲν ὁπλίταις ἑξακοσίοις δ' ἱππεῦσιν ἑξήκοντα δ' ἅρμασι ποιεῖν τὴν πομπήν· ἐπῆρχον δὲ καὶ Ἀνδρίων καὶ Τηνίων καὶ Κείων καὶ ἄλλων νήσων. ἐποίκους δ' ἔσχον ἀπ' Ἤλιδος, ἀφ' οὗ καὶ τῷ γράμματι τῷ ῥῶ πολλῷ χρησάμενοι οὐκ ἐπὶ τέλει μόνον τῶν ῥημάτων ἀλλὰ καὶ ἐν μέσῳ κεκωμῴδηνται. ἐν δὲ τῇ Ἐρετρικῇ πόλις ἦν Τάμυναι πλησίον τοῦ πορθμοῦ. ἔστι δὲ καὶ Οἰχαλία κώμη τῆς Ἐρετρικῆς, λείψανον τῆς ἀναιρεθείσης πόλεως ὑπὸ Ἡρακλέους, ὁμώνυμος τῇ Τραχινίᾳ καὶ τῇ περὶ Τρίκκην καὶ τῇ Ἀρκαδικῇ, ἣν Ἀνδανίαν οἱ ὕστερον ἐκάλεσαν, καὶ τῇ ἐν Αἰτωλίᾳ περὶ τοὺς Εὐρυτᾶνας.

11 Νυνὶ μὲν οὖν ὁμολογουμένως ἡ Χαλκὶς φέρεται τὰ πρωτεῖα καὶ μητρόπολις αὕτη λέγεται τῶν Εὐβοέων, δευτερεύει δ' ἡ Ἐρέτρια. ἀλλὰ καὶ πρότερον αὗται μέγα εἶχον ἀξίωμα καὶ πρὸς πόλεμον καὶ πρὸς εἰρήνην, ὥστε καὶ φιλοσόφοις ἀνδράσι παρασχεῖν διαγωγὴν ἡδεῖαν καὶ ἀθόρυβον. μαρτυρεῖ δ' ἥ τε τῶν Ἐρετρικῶν φιλοσόφων σχολὴ τῶν περὶ Μενέδημον ἐν τῇ Ἐρετρίᾳ γενομένη, καὶ ἔτι πρότερον ἡ Ἀριστοτέλους

ἐν τῇ Χαλκίδι διατριβῇ, ὅς γε κἀκεῖ κατέλυσε τὸν βίον.

12 Τὸ μὲν οὖν πλέον ὡμολόγουν ἀλλήλαις αἱ πόλεις αὗται, περὶ δὲ Ληλάντου διενεχθεῖσαι .... οὐδ᾽ οὕτω τελέως ἐπαύσαντο ...... ὥστ᾽ ἐν τῷ πολέμῳ κατὰ αὐθάδειαν δρᾶν ἕκαστα, ἀλλὰ συνέθεντο ἐφ᾽ οἷς συστήσονται τὸν ἀγῶνα. δηλοῖ δὲ καὶ τοῦτο ἐν τῷ Ἀμαρυνθίῳ στήλη τις φράζουσα μὴ χρῆσθαι τηλεβόλοις.

13 Οἱ δ᾽ Εὐβοεῖς ἀγαθοὶ πρὸς μάχην ὑπῆρξαν τὴν σταδίαν, ἣ καὶ συστάδην λέγεται καὶ ἐκ χειρός. δόρασι δ᾽ ἐχρῶντο τοῖς ὀρεκτοῖς, ὥς φησιν ὁ ποιητής „αἰχμη- C.449 „ταὶ μεμαῶτες ὀρεκτῇσι μελίῃσι θώρηκας ῥήσσειν.“ ἀλλοίων ἴσως ὄντων τῶν παλτῶν, οἵαν εἰκὸς εἶναι τὴν Πηλιάδα μελίην ἥν, ὥς φησιν ὁ ποιητής „οἷος ἐπί- „στατο πῆλαι Ἀχιλλεύς“ καὶ ὁ εἰπών „δουρὶ δ᾽ ἀκον- „τίζω, ὅσον οὐκ ἄλλος τις ὀιστῷ,“ τῷ παλτῷ λέγει δόρατι. καὶ οἱ μονομαχοῦντες τοῖς παλτοῖς χρώμενοι δόρασιν εἰσάγονται πρότερον, εἶτα ἐπὶ τὰ ξίφη βαδίζοντες· ἀγχέμαχοι δ᾽ εἰσὶν οὐχ οἱ ξίφει χρώμενοι μόνον, ἀλλὰ καὶ δόρατι ἐκ χειρός, ὥς φησιν „οὔτησε ξυστῷ „χαλκήρεϊ, λῦσε δὲ γυῖα.“ τοὺς μὲν οὖν Εὐβοέας τούτῳ τῷ τρόπῳ χρωμένους εἰσάγει, περὶ δὲ Λοκρῶν τἀναντία λέγει ὡς „οὔ σφιν σταδίῃς ὑσμίνης ἔργα μέμηλεν, „ἀλλ᾽ ἄρα τόξοισι καὶ ἐυστρόφῳ οἰὸς ἀώτῳ Ἴλιον εἰς „ἅμ᾽ ἕποντο.“ περιφέρεται δὲ καὶ χρησμὸς ἐκδοθεὶς

8. post τηλεβόλοις: καὶ γὰρ δὴ καὶ τῶν πολεμικῶν ἐθῶν καὶ τῶν ὁπλισμῶν οὐχ ἓν οὔτ᾽ ἔστιν οὔτ᾽ ἦν ἔθος· ἀλλ᾽ οἱ μὲν τηλεβόλοις χρῶνται, καθάπερ οἱ τοξόται καὶ οἱ σφενδονῆται καὶ οἱ ἀκοντισταί, οἱ δ᾽ ἀγχεμάχοις, καθάπερ οἱ ξίφει καὶ δόρατι τῷ ὀρεκτῷ χρώμενοι· διττὴ γὰρ ἡ τῶν δοράτων χρῆσις, ἡ μὲν ἐκ χειρὸς ἡ δ᾽ ὡς παλτοῖς, καθάπερ καὶ ὁ κοντὸς ἀμφοτέρας τὰς χρείας ἀποδίδωσι· καὶ γὰρ συστ᾽δην ..... καὶ κοντοβολούντων· ὅπερ καὶ ἡ σάρισσα δύναται καὶ ὁ ὑσσός.

Αἰγιεῦσιν „ἵππον Θεσσαλικόν, Λακεδαιμονίαν δὲ γυ-
„ναῖκα, ἄνδρας θ' οἳ πίνουσιν ὕδωρ ἱερῆς Ἀρεθού-
„σης," τοὺς Χαλκιδέας λέγων ὡς ἀρίστους· ἐκεῖ γὰρ ἡ
Ἀρέθουσα.

Εἰσὶ δὲ νῦν Εὐβοῖται ποταμοὶ Κηρεὺς καὶ Νηλεύς, 14
ὧν ἀφ' οὗ μὲν πίνοντα τὰ πρόβατα λευκὰ γίνεται, ἀφ'
οὗ δὲ μέλανα· καὶ περὶ τὸν Κρᾶθιν δὲ εἴρηται τοιοῦ-
τόν τι συμβαῖνον.

Τῶν δ' ἐκ Τροίας ἐπανιόντων Εὐβοέων τινὲς εἰς 15
Ἰλλυριοὺς ἐκπεσόντες, ἀποβαίνοντες οἴκαδε διὰ τῆς
Μακεδονίας περὶ Ἔδεσσαν ἔμειναν συμπολεμήσαντες
τοῖς ὑποδεξαμένοις, καὶ ἔκτισαν πόλιν Εὔβοιαν· ἦν
δὲ καὶ ἐν Σικελίᾳ Εὔβοια Χαλκιδέων τῶν ἐκεῖ κτίσμα,
ἣν Γέλων ἐξανέστησε, καὶ ἐγένετο φρούριον Συρακου-
σίων· καὶ ἐν Κερκύρᾳ δὲ καὶ ἐν Λήμνῳ τόπος ἦν Εὔ-
βοια καὶ ἐν τῇ Ἀργείᾳ λόφος τις.

Ἐπεὶ δὲ τοῖς Θετταλοῖς καὶ Οἰταίοις πρὸς ἑσπέραν 16
Αἰτωλοὶ καὶ Ἀκαρνᾶνές εἰσι καὶ Ἀθαμᾶνες, εἰ χρὴ καὶ
τούτους Ἕλληνας εἰπεῖν, λοιπὸν ἐξηγήσασθαι περὶ τού-
των, ἵν' ἔχωμεν τὴν περίοδον ἅπασαν τὴν τῆς Ἑλλά-
δος· προσθεῖναι δὲ καὶ τὰς νήσους τὰς προσχώρους
μάλιστα τῇ Ἑλλάδι καὶ οἰκουμένας ὑπὸ τῶν Ἑλλήνων
ὅσας μὴ περιωδεύκαμεν.

Αἰτωλοὶ μὲν τοίνυν καὶ Ἀκαρνᾶνες ὁμοροῦσιν **2**
ἀλλήλοις, μέσον ἔχοντες τὸν Ἀχελῶον ποταμὸν ῥέοντα
ἀπὸ τῶν ἄρκτων καὶ τῆς Πίνδου πρὸς νότον διά τε
Ἀγραίων Αἰτωλικοῦ ἔθνους καὶ Ἀμφιλόχων, Ἀκαρ- C.450
νᾶνες μὲν τὸ πρὸς ἑσπέραν μέρος ἔχοντες τοῦ ποταμοῦ
μέχρι τοῦ Ἀμβρακικοῦ κόλπου τοῦ κατὰ Ἀμφιλόχους
καὶ τὸ ἱερὸν τοῦ Ἀκτίου Ἀπόλλωνος, Αἰτωλοὶ δὲ τὸ
πρὸς ἕω μέχρι τῶν Ὀζολῶν Λοκρῶν καὶ τοῦ Παρνασ-
σοῦ καὶ τῶν Οἰταίων. ὑπέρκεινται δ' ἐν τῇ μεσογαίᾳ

καὶ τοῖς προσβορείοις μέρεσι τῶν μὲν Ἀκαρνάνων Ἀμφίλοχοι, τούτων δὲ Δόλοπες καὶ ἡ Πίνδος, τῶν δ' Αἰτωλῶν Περραιβοί τε καὶ Ἀθαμᾶνες καὶ Αἰνιάνων τι μέρος τῶν τὴν Οἴτην ἐχόντων· τὸ δὲ νότιον πλευρόν, τό τε Ἀκαρνανικὸν ὁμοίως καὶ τὸ Αἰτωλικόν, κλύζεται τῇ ποιούσῃ θαλάττῃ τὸν Κορινθιακὸν κόλπον, εἰς ὃν καὶ ὁ Ἀχελῶος ποταμὸς ἐξίησιν, ὁρίζων τὴν τῶν Αἰτωλῶν παραλίαν καὶ τὴν Ἀκαρνανικήν· ἐκαλεῖτο δὲ Θόας ὁ Ἀχελῶος πρότερον. ἔστι δὲ καὶ ὁ παρὰ Δύμην ὁμώνυμος τούτῳ, καθάπερ εἴρηται, καὶ ὁ περὶ Λάμιαν. εἴρηται δὲ καὶ ὅτι ἀρχὴν τοῦ Κορινθιακοῦ κόλπου τὸ στόμα τοῦδε τοῦ ποταμοῦ φασι.

2 Πόλεις δ' εἰσὶν ἐν μὲν τοῖς Ἀκαρνᾶσιν Ἀνακτόριόν τε ἐπὶ χερρονήσου ἱδρυμένον Ἀκτίου πλησίον, ἐμπόριον τῆς νῦν ἐκτισμένης ἐφ' ἡμῶν Νικοπόλεως, καὶ Στράτος, ἀνάπλουν ἔχουσα τῷ Ἀχελώῳ πλειόνων ἢ διακοσίων σταδίων, καὶ Οἰνειάδαι, καὶ αὐτὴ ἐπὶ τῷ ποταμῷ, ἡ μὲν παλαιὰ οὐ κατοικουμένη, ἴσον ἀπέχουσα τῆς τε θαλάττης καὶ τοῦ Στράτου, ἡ δὲ νῦν ὅσον ἑβδομήκοντα σταδίους ὑπὲρ τῆς ἐκβολῆς διέχουσα· καὶ ἄλλαι δ' εἰσί, Πάλαιρός τε καὶ Ἀλυζία καὶ Λευκὰς καὶ Ἄργος τὸ Ἀμφιλοχικὸν καὶ Ἀμβρακία, ὧν αἱ πλεῖσται περιοικίδες γεγόνασιν ἢ καὶ πᾶσαι τῆς Νικοπόλεως· κεῖται δ' ὁ Στράτος κατὰ μέσην τὴν ἐξ Ἀλυζίας ὁδὸν εἰς Ἀνακτόριον.

3 Αἰτωλῶν δ' εἰσὶ Καλυδών τε καὶ Πλευρών, νῦν μὲν τεταπεινωμέναι, τὸ δὲ παλαιὸν πρόσχημα τῆς Ἑλλάδος ἦν ταῦτα τὰ κτίσματα. καὶ δὴ καὶ διῃρῆσθαι συνέβαινε δίχα τὴν Αἰτωλίαν, καὶ τὴν μὲν ἀρχαίαν λέγεσθαι τὴν δ' ἐπίκτητον· ἀρχαίαν μὲν τὴν ἀπὸ τοῦ Ἀχελώου μέχρι Καλυδῶνος παραλίαν ἐπὶ πολὺ καὶ τῆς μεσογαίας ἀνήκουσαν εὐκάρπου τε καὶ πεδιάδος, ἣ

ἐστὶ καὶ Στράτος καὶ τὸ Τριχώνιον ἀρίστην ἔχον γῆν· ἐπίκτητον δὲ τὴν τοῖς Λοκροῖς συνάπτουσαν ὡς ἐπὶ Ναύπακτόν τε καὶ Εὐπάλιον, τραχυτέραν τε οὖσαν καὶ λυπροτέραν, μέχρι τῆς Οἰταίας καὶ τῆς Ἀθαμάνων καὶ τῶν ἐφεξῆς ἐπὶ τὴν ἄρκτον ἤδη περιισταμένων ὀρῶν τε καὶ ἐθνῶν.

4 Ἔχει δὲ καὶ ἡ Αἰτωλία ὄρος μέγιστον μὲν τὸν Κόρακα, συνάπτοντα τῇ Οἴτῃ, τῶν δ' ἄλλων ἐν μέσῳ μὲν μᾶλλον τὸν Ἀράκυνθον, περὶ ὃν τὴν νεωτέραν C.451 Πλευρῶνα συνῴκισαν ἀφέντες τὴν παλαιὰν ἐγγὺς κειμένην Καλυδῶνος οἱ οἰκήτορες, εὔκαρπον οὖσαν καὶ πεδιάδα, πορθοῦντος τὴν χώραν Δημητρίου τοῦ ἐπικληθέντος Αἰτωλικοῦ· ὑπὲρ δὲ τῆς Μολυκρείας Ταφιασσὸν καὶ Χαλκίδα, ὄρη ἱκανῶς ὑψηλά, ἐφ' οἷς πολίχνια ἵδρυτο Μακυνία τε καὶ Χαλκίς, ὁμώνυμος τῷ ὄρει, ἣν καὶ Ὑποχαλκίδα καλοῦσι· Κούριον δὲ πλησίον τῆς παλαιᾶς Πλευρῶνος, ἀφ' οὗ τοὺς Πλευρωνίους Κουρῆτας ὀνομασθῆναί τινες ὑπέλαβον.

5 Ὁ δ' Εὔηνος ποταμὸς ἄρχεται μὲν ἐκ Βωμιέων τῶν ἐν Ὀφιεῦσιν Αἰτωλικῷ ἔθνει (καθάπερ καὶ οἱ Εὐρυτᾶνες καὶ Ἀγραῖοι καὶ Κουρῆτες καὶ ἄλλοι), ῥεῖ δ' οὐ διὰ τῆς Κουρητικῆς κατ' ἀρχάς, ἥτις ἐστὶν ἡ αὐτὴ τῇ Πλευρωνίᾳ, ἀλλὰ διὰ τῆς προσεῴας μᾶλλον παρὰ τὴν Χαλκίδα καὶ Καλυδῶνα· εἶτ' ἀνακάμψας ἐπὶ τὰ τῆς Πλευρῶνος πεδία τῆς παλαιᾶς καὶ παραλλάξας εἰς δύσιν ἐπιστρέφει πρὸς τὰς ἐκβολὰς καὶ τὴν μεσημβρίαν· ἐκαλεῖτο δὲ Λυκόρμας πρότερον· καὶ ὁ Νέσσος ἐνταῦθα λέγεται πορθμεὺς ἀποδεδειγμένος ὑφ' Ἡρακλέους ἀποθανεῖν, ἐπειδὴ πορθμεύων τὴν Δηιάνειραν ἐπεχείρει βιάσασθαι.

6 Καὶ Ὤλενον δὲ καὶ Πυλήνην ὀνομάζει πόλεις ὁ ποιητὴς Αἰτωλικάς, ὧν τὴν μὲν Ὤλενον ὁμωνύμως τῇ

Ἀχαϊκῇ λεγομένην Αἰολεῖς κατέσκαψαν, πλησίον οὖσαν τῆς νεωτέρας Πλευρῶνος, τῆς δὲ χώρας ἠμφισβήτουν Ἀκαρνᾶνες· τὴν δὲ Πυλήνην μετενέγκαντες εἰς τοὺς ἀνώτερον τόπους ἤλλαξαν αὐτῆς καὶ τοὔνομα Πρόσχιον καλέσαντες. Ἑλλάνικος δ' οὐδὲ τὴν περὶ ταύτας ἱστορίαν οἶδεν, ἀλλ' ὡς ἔτι καὶ αὐτῶν οὐσῶν ἐν τῇ ἀρχαίᾳ καταστάσει μέμνηται, τὰς δ' ὕστερον καὶ τῆς τῶν Ἡρακλειδῶν καθόδου κτισθείσας Μακυνίαν καὶ Μολύκρειαν ἐν ταῖς ἀρχαίαις καταλέγει, πλείστην εὐχέρειαν ἐπιδεικνύμενος ἐν πάσῃ σχεδόν τι τῇ γραφῇ.

7 Καθόλου μὲν οὖν ταῦτα περὶ τῆς χώρας ἐστὶ τῆς τῶν Ἀκαρνάνων καὶ τῶν Αἰτωλῶν, περὶ δὲ τῆς παραλίας καὶ τῶν προκειμένων νήσων ἔτι καὶ ταῦτα προσληπτέον· ἀπὸ γὰρ τοῦ στόματος ἀρξαμένοις τοῦ Ἀμβρακικοῦ κόλπου πρῶτόν ἐστιν Ἀκαρνάνων χωρίον τὸ Ἄκτιον. ὁμωνύμως δὲ λέγεται τό τε ἱερὸν τοῦ Ἀκτίου Ἀπόλλωνος καὶ ἡ ἄκρα ἡ ποιοῦσα τὸ στόμα τοῦ κόλπου, ἔχουσα καὶ λιμένα ἐκτός. τοῦ δ' ἱεροῦ τετταράκοντα μὲν σταδίους ἀπέχει τὸ Ἀνακτόριον ἐν τῷ κόλπῳ ἱδρυμένον, διακοσίους δὲ καὶ τετταράκοντα ἡ Λευκάς.

8 Αὕτη δ' ἦν τὸ παλαιὸν μὲν χερρόνησος τῆς Ἀκαρνάνων γῆς, καλεῖ δ' ὁ ποιητὴς αὐτὴν ἀκτὴν ἠπείροιο, τὴν περαίαν τῆς Ἰθάκης καὶ τῆς Κεφαλληνίας ἤπειρον
C.452 καλῶν· αὕτη δ' ἐστὶν ἡ Ἀκαρνανία· ὥστε, ὅταν φῇ ἀκτὴν ἠπείροιο, τῆς Ἀκαρνανίας ἀκτὴν δέχεσθαι δεῖ. τῆς δὲ Λευκάδος ἥ τε Νήριτος, ἥν φησιν ἑλεῖν ὁ Λαέρτης „ἦ μὲν Νήριτον εἷλον ἐυκτίμενον πτολίεθρον, „ἀκτὴν ἠπείροιο, Κεφαλλήνεσσιν ἀνάσσων,“ καὶ ἃς ἐν καταλόγῳ φησί „καὶ Κροκύλει' ἐνέμοντο καὶ Αἰγίλιπα „τρηχεῖαν.“ Κορίνθιοι δὲ πεμφθέντες ὑπὸ Κυψέλου καὶ Γόργου ταύτην τε κατέσχον τὴν ἀκτὴν καὶ μέχρι τοῦ Ἀμβρακικοῦ κόλπου προῆλθον, καὶ ἥ τε Ἀμβρακία

συνῳκίσθη καὶ Ἀνακτόριον, καὶ τῆς χερρονήσου διορύξαντες τὸν ἰσθμὸν ἐποίησαν νῆσον τὴν Λευκάδα, καὶ μετενέγκαντες τὴν Νήριτον ἐπὶ τὸν τόπον, ὃς ἦν ποτὲ μὲν ἰσθμὸς νῦν δὲ πορθμὸς γεφύρᾳ ζευκτός, μετωνόμασαν Λευκάδα, ἐπώνυμον δοκῶ μοι τοῦ Λευκάτα· πέτρα γάρ ἐστι λευκὴ τὴν χρόαν, προκειμένη τῆς Λευκάδος εἰς τὸ πέλαγος καὶ τὴν Κεφαλληνίαν, ὥς ἐντεῦθεν τοὔνομα λαβεῖν.

Ἔχει δὲ τὸ τοῦ Λευκάτα Ἀπόλλωνος ἱερὸν καὶ τὸ 9
ἅλμα τὸ τοὺς ἔρωτας παύειν πεπιστευμένον· „οὗ δὴ λέγεται πρώτη Σαπφὼ“ ὥς φησιν ὁ Μένανδρος „τὸν ὑπέρκομπον θηρῶσα Φάων’ οἰστρῶντι πόθῳ ῥῖψαι πέτρας ἀπὸ τηλεφανοῦς ἅλμα κατ’ εὐχὴν σήν, δέσποτ’ ἄναξ.“ ὁ μὲν οὖν Μένανδρος πρώτην ἁλέσθαι λέγει τὴν Σαπφώ, οἱ δ’ ἔτι ἀρχαιολογικώτεροι Κέφαλόν φασιν ἐρασθέντα Πτερέλα τὸν Δηιονέως. ἦν δὲ καὶ πάτριον τοῖς Λευκαδίοις κατ’ ἐνιαυτὸν ἐν τῇ θυσίᾳ τοῦ Ἀπόλλωνος ἀπὸ τῆς σκοπῆς ῥιπτεῖσθαί τινα τῶν ἐν αἰτίαις ὄντων ἀποτροπῆς χάριν, ἐξαπτομένων ἐξ αὐτοῦ παντοδαπῶν πτερῶν καὶ ὀρνέων ἀνακουφίζειν δυναμένων τῇ πτήσει τὸ ἅλμα, ὑποδέχεσθαι δὲ κάτω μικραῖς ἁλιάσι κύκλῳ περιεστῶτας πολλοὺς καὶ περισώζειν εἰς δύναμιν τῶν ὅρων ἔξω τὸν ἀναληφθέντα.

Ὁ δὲ τὴν Ἀλκμαιονίδα γράψας, Ἰκαρίου τοῦ Πηνελόπης πατρὸς υἱεῖς γενέσθαι δύο, Ἀλυζέα καὶ Λευκάδιον, δυναστεῦσαι δ’ ἐν τῇ Ἀκαρνανίᾳ τούτους μετὰ τοῦ πατρός· τούτων οὖν ἐπωνύμους τὰς πόλεις Ἔφορος λέγεσθαι δοκεῖ.

Κεφαλλῆνας δὲ νῦν μὲν τοὺς ἐκ τῆς νήσου τῆς 10
Κεφαλληνίας λέγουσιν, Ὅμηρος δὲ πάντας τοὺς ὑπὸ τῷ Ὀδυσσεῖ, ὧν εἰσι καὶ οἱ Ἀκαρνᾶνες· εἰπὼν γὰρ „αὐτὰρ Ὀδυσσεὺς ἦγε Κεφαλλῆνας, οἵ ῥ’ Ἰθάκην εἶχον

„καὶ Νήριτον εἰνοσίφυλλον“ (τὸ ἐν ταύτῃ ὄρος ἐπιφα-
C.453 νές, ὡς καί „οἳ δ' ἐκ Δουλιχίοιο Ἐχινάων θ' ἱεράων“ καὶ αὐτοῦ τοῦ Δουλιχίου τῶν Ἐχινάδων ὄντος· καί „οἳ δ' ἄρα Βουπράσιόν τε καὶ Ἤλιδα“ καὶ τοῦ Βουπρασίου ἐν Ἤλιδι ὄντος· [καί] „οἳ δ' Εὔβοιαν ἔχον καὶ „Χαλκίδα τ' Εἰρέτριάν τε“ καὶ τούτων ἐν Εὐβοίᾳ οὐσῶν· καί „Τρῶες καὶ Λύκιοι καὶ Δάρδανοι“ ὡς καὶ ἐκείνων Τρώων ὄντων)· πλὴν μετά γε Νήριτον φησί „καὶ Κροκύλει' ἐνέμοντο καὶ Αἰγίλιπα τρηχεῖαν, οἵ τε „Ζάκυνθον ἔχον ἠδ' οἳ Σάμον ἀμφενέμοντο, οἵ τ' „ἤπειρον ἔχον ἠδ' ἀντιπέραι' ἐνέμοντο.“ ἤπειρον μὲν οὖν τὰ ἀντιπέρα τῶν νήσων βούλεται λέγειν, ἅμα τῇ Λευκάδι καὶ τὴν ἄλλην Ἀκαρνανίαν συμπεριλαβεῖν βουλόμενος, περὶ ἧς καὶ οὕτω λέγει „δώδεκ' ἐν ἠπείρῳ ἀγέλαι, τόσα πώεα μήλων,“ τάχα τῆς Ἠπειρώτιδος τὸ παλαιὸν μέχρι δεῦρο διατεινούσης καὶ ὀνόματι κοινῷ ἠπείρου λεγομένης· Σάμον δὲ τὴν νῦν Κεφαλληνίαν, ὡς καὶ ὅταν φῇ „ἐν πορθμῷ Ἰθάκης τε Σάμοιό τε παιπαλοέσσης.“ τῷ γὰρ ἐπιθέτῳ τὴν ὁμωνυμίαν διέσταλται, ὡς οὐκ ἐπὶ τῆς πόλεως ἀλλ' ἐπὶ τῆς νήσου τιθεὶς τοὔνομα. τετραπόλεως γὰρ οὔσης τῆς νήσου μία τῶν τεττάρων ἐστὶν ἡ καὶ Σάμος καὶ Σάμη καλουμένη καθ' ἑκάτερον τοὔνομα, ὁμωνυμοῦσα τῇ νήσῳ. ὅταν δ' εἴπῃ „ὅσσοι γὰρ νήσοισιν ἐπικρατέουσιν ἄριστοι „Δουλιχίῳ τε Σάμῃ τε καὶ ὑλήεντι Ζακύνθῳ,“ τῶν νήσων ἀριθμὸν ποιῶν δῆλός ἐστι καὶ Σάμην καλῶν τὴν νῆσον, ἣν πρότερον Σάμον ἐκάλεσεν. Ἀπολλόδωρος δὲ τοτὲ μὲν τῷ ἐπιθέτῳ λέγων διεστάλθαι τὴν ἀμφιβολίαν εἰπόντα „Σάμοιό τε παιπαλοέσσης,“ ὡς τὴν νῆσον λέγοντα, τοτὲ δὲ γράφεσθαι δεῖν „Δουλιχίῳ τε „Σάμῳ τε“ ἀλλὰ μή „Σάμῃ τε“ δῆλός ἐστι τὴν μὲν πόλιν Σάμην καὶ Σάμον συνωνύμως ὑπολαμβάνων

ἐκφέρεσθαι, τὴν δὲ νῆσον Σάμον μόνον· ὅτι γὰρ Σάμη λέγεται ἡ πόλις δῆλον εἶναι ἔκ τε τοῦ διαριθμούμενον τοὺς ἐξ ἑκάστης πόλεως μνηστῆρας φάναι „ἐκ δὲ Σάμης πίσυρές τε καὶ εἴκοσι φῶτες ἔασι,“ καὶ ἐκ τοῦ περὶ τῆς Κτιμένης λόγου „τὴν μὲν ἔπειτα Σάμηνδ' „ἔδοσαν.“ ἔχει δὲ ταῦτα λόγον. οὐ γὰρ εὐκρινῶς ἀπο- C.454 δίδωσιν ὁ ποιητὴς οὔτε περὶ τῆς Κεφαλληνίας οὔτε περὶ τῆς Ἰθάκης καὶ τῶν ἄλλων πλησίον τόπων, ὥστε καὶ οἱ ἐξηγούμενοι διαφέρονται καὶ οἱ ἱστοροῦντες.

11 Αὐτίκα γὰρ ἐπὶ τῆς Ἰθάκης ὅταν φῇ „οἵ ῥ' Ἰθάκην εἶχον καὶ Νήριτον εἰνοσίφυλλον,“ ὅτι μὲν τὸ Νήριτον ὄρος λέγει τῷ ἐπιθέτῳ δηλοῖ. ἐν ἄλλοις δὲ καὶ ῥητῶς ὄρος „ναιετάω δ' Ἰθάκην εὐδείελον· ἐν δ' „ὄρος αὐτῇ, Νήριτον εἰνοσίφυλλον ἀριπρεπές.“ Ἰθάκην δ' εἴτε τὴν πόλιν εἴτε τὴν νῆσον λέγει, οὐ δῆλον ἐν τούτῳ γε τῷ ἔπει „οἵ ῥ' Ἰθάκην εἶχον καὶ Νήριτον.“ κυρίως μὲν γὰρ ἀκούων τις τὴν πόλιν δέξαιτ' ἄν, ὡς καὶ Ἀθήνας καὶ Λυκαβηττὸν εἴ τις λέγοι, καὶ Ῥόδον καὶ Ἀτάβυριν, καὶ ἔτι Λακεδαίμονα καὶ Ταΰγετον· ποιητικῶς δὲ τοὐναντίον. ἐν μέντοι τῷ „ναιετάω δ' „Ἰθάκην εὐδείελον· ἐν δ' ὄρος αὐτῇ Νήριτον“ [δῆλον]· ἐν γὰρ τῇ νήσῳ οὐκ ἐν τῇ πόλει τὸ ὄρος. ὅταν δὲ οὕτω φῇ „ἡμεῖς ἐξ Ἰθάκης ὑπὸ Νηίου εἰλήλουθ- „μεν,“ ἄδηλον, εἴτε τὸ αὐτὸ τῷ Νηρίτῳ λέγει τὸ Νήιον εἴτε ἕτερον ἢ ὄρος ἢ χωρίον.

12 Καὶ τοῦτο δὲ δοκεῖ ὑπεναντιότητά τινα δηλοῦν „αὐτὴ δὲ χθαμαλὴ πανυπερτάτη εἰν ἁλὶ κεῖται.“ χθαμαλὴ μὲν γὰρ ἡ ταπεινὴ καὶ χαμηλή, πανυπερτάτη δὲ

---

25. post χωρίον: ὁ μέντοι ἀντὶ Νηρίτου γράφων Νήρικον, ἢ ἀνάπαλιν, παραπαίει τελέως· τὸ μὲν γὰρ εἰνοσίφυλλον καλεῖ ὁ ποιητής, τὸ δ' ἐυκτίμενον πτολίεθρον, καὶ τὸ μὲν ἐν Ἰθάκῃ, τὸ δ' ἀκτὴν ἠπείροιο.

ἡ ὑψηλή, οἵαν διὰ πλειόνων σημαίνει, Κραναὴν καλῶν· καὶ τὴν ὁδὸν τὴν ἐκ τοῦ λιμένος „τρηχεῖαν ἀταρ-„πὸν χῶρον ἀν' ὑλήεντα“ καί „οὐ γάρ τις νήσων εὐ-„δείελος, οὐδ' εὐλείμων, αἵ θ' ἁλὶ κεκλίαται· Ἰθάκη „δέ τε καὶ περὶ πασέων.“ ἔχει μὲν οὖν ἀπεμφάσεις τοιαύτας ἡ φράσις, ἐξηγοῦνται δὲ οὐ κακῶς· οὔτε γὰρ χθαμαλὴν δέχονται ταπεινὴν ἐνταῦθα, ἀλλὰ πρόσχωρον τῇ ἠπείρῳ ἐγγυτάτω οὖσαν αὐτῆς· οὔτε πανυπερτάτην ὑψηλοτάτην ἀλλὰ πανυπερτάτην πρὸς ζόφον, οἷον ὑπὲρ πάσας ἐσχάτην τετραμμένην πρὸς ἄρκτον· τοῦτο γὰρ βούλεται λέγειν τὸ πρὸς ζόφον, τὸ δ' ἐναν-
C.455 τίον πρὸς νότον „αἱ δέ τ' ἄνευθε πρὸς ἠῶ τ' ἠέλιόν τε.“ τὸ γὰρ ἄνευθε πόρρω καὶ χωρίς ἐστιν, ὡς τῶν μὲν ἄλλων πρὸς νότον κεκλιμένων καὶ ἀπωτέρω τῆς ἠπείρου, τῆς δ' Ἰθάκης ἐγγύθεν καὶ πρὸς ἄρκτον. ὅτι δ' οὕτω λέγει τὸ νότιον μέρος καὶ ἐν τοῖσδε φανερόν „εἴτ' ἐπὶ „δεξί' ἴωσι, πρὸς ἠῶ τ' ἠέλιόν τε, εἴτ' ἐπ' ἀριστερὰ τοίγε, „ποτὶ ζόφον ἠερόεντα“ καὶ ἔτι μᾶλλον ἐν τοῖσδε „ὦ φί-„λοι, οὐ γάρ τ' ἴδμεν, ὅπη ζόφος, οὐδ' ὅπη ἠώς, οὐδ' ὅπη „ἠέλιος φαεσίμβροτος εἶσ' ὑπὸ γαῖαν, οὐδ' ὅπη ἀννεῖ-„ται.“ ἔστι μὲν γὰρ δέξασθαι τὰ τέτταρα κλίματα τὴν ἠῶ δεχομένους τὸ νότιον μέρος, ἔχει τέ τινα τοῦτ' ἔμφασιν· ἀλλὰ βέλτιον τὸ κατὰ τὴν πάροδον τοῦ ἡλίου νοεῖν ἀντιτιθέμενον τῷ ἀρκτικῷ μέρει· ἐξάλλαξιν γάρ τινα τῶν οὐρανίων πολλὴν βούλεται σημαίνειν ὁ λόγος, οὐχὶ ψιλὴν ἐπίκρυψιν τῶν κλιμάτων. δεῖ γὰρ κατὰ πάντα συννεφῆ καιρόν, ἄν θ' ἡμέρας ἄν τε νύκτωρ συμβῇ, παρακολουθεῖν· τὰ δ' οὐράνια ἐξαλλάττει ἐπὶ πλέον τῷ πρὸς μεσημβρίαν μᾶλλον ἢ ἧττον παραχωρεῖν ἡμᾶς ἢ εἰς τοὐναντίον. τοῦτο δὲ οὐ δύσεως καὶ ἀνατολῆς ἐγκαλύψεις ποιεῖ (καὶ γὰρ αἰθρίας οὔσης συμβαίνει), ἀλλὰ μεσημβρίας καὶ ἄρκτου. μάλιστα

γὰρ ἀρκτικός ἐστιν ὁ πόλος· τούτου δὲ κινουμένου, καὶ ποτὲ μὲν κατὰ κορυφὴν ἡμῖν γινομένου ποτὲ δὲ ὑπὸ γῆς ὄντος, καὶ οἱ ἀρκτικοὶ συμμεταβάλλουσι, ποτὲ δὲ συνεκλείπουσι κατὰ τὰς τοιαύτας παραχωρήσεις, ὥστε οὐκ ἂν εἰδείης ὅπου ἐστὶ τὸ ἀρκτικὸν κλίμα, οὐδ' εἰ ἀρχὴν ἐστίν· εἰ δὲ τοῦτο, οὐδὲ τοὐναντίον ἂν γνοίης.

Κύκλος δὲ τῆς Ἰθάκης ἐστὶν ὡς ὀγδοήκοντα σταδίων. περὶ μὲν Ἰθάκης ταῦτα.

13 Τὴν δὲ Κεφαλληνίαν τετράπολιν οὖσαν οὔτ' αὐτὴν εἴρηκε τῷ νῦν ὀνόματι οὔτε τῶν πόλεων οὐδεμίαν, πλὴν μιᾶς εἴτε Σάμης εἴτε Σάμου, ἣ νῦν μὲν οὐκέτ' ἐστίν, ἴχνη δ' αὐτῆς δείκνυται κατὰ μέσον τὸν πρὸς Ἰθάκῃ πορθμόν· οἱ δ' ἀπ' αὐτῆς Σαμαῖοι καλοῦνται· αἱ δ' ἄλλαι καὶ νῦν εἰσὶν ἔτι μικραὶ πόλεις τινές, [Παλεῖς] Πρώνησος καὶ Κράνιοι. ἐφ' ἡμῶν δὲ καὶ ἄλλην προσέκτισε Γάιος Ἀντώνιος, ὁ θεῖος Μάρκου Ἀντωνίου, ἡνίκα φυγὰς γενόμενος μετὰ τὴν ὑπατείαν, ἣν συνῆρξε Κικέρωνι τῷ ῥήτορι, ἐν τῇ Κεφαλληνίᾳ διέτριψε καὶ τὴν ὅλην νῆσον ὑπήκοον ἔσχεν ὡς ἴδιον κτῆμα· οὐκ ἔφθη μέντοι συνοικίσας, ἀλλὰ καθόδου τυχὼν πρὸς ἄλλοις μείζοσιν ὢν κατέλυσε τὸν βίον.

14 Οὐκ ὤκνησαν δέ τινες τὴν Κεφαλληνίαν τὴν αὐτὴν τῷ Δουλιχίῳ φάναι, οἱ δὲ τῇ Τάφῳ, καὶ Ταφίους C.456 τοὺς Κεφαλληνίους, τοὺς δ' αὐτοὺς καὶ Τηλεβόας, καὶ τὸν Ἀμφιτρύωνα δεῦρο στρατεῦσαι μετὰ Κεφάλου τοῦ Δηιονέως ἐξ Ἀθηνῶν φυγάδος παραληφθέντος, κατασχόντα δὲ τὴν νῆσον παραδοῦναι τῷ Κεφάλῳ, καὶ ταύτην μὲν ἐπώνυμον ἐκείνου γενέσθαι τὰς δὲ πόλεις τῶν παίδων αὐτοῦ. ταῦτα δ' οὐχ ὁμηρικά· οἱ μὲν γὰρ Κεφαλλῆνες ὑπὸ Ὀδυσσεῖ καὶ Λαέρτῃ, ἡ δὲ Τάφος ὑπὸ τῷ Μέντῃ „Μέντης Ἀγχιάλοιο δαΐφρονος εὔχομαι „εἶναι υἱός, ἀτὰρ Ταφίοισι φιληρέτμοισιν ἀνάσσω.“

καλεῖται δὲ νῦν Ταφιὰς ἡ Τάφος. οὐδ' Ἑλλάνικος ὁμηρικὸς Δουλίχιον τὴν Κεφαλληνίαν λέγων. τὸ μὲν γὰρ ὑπὸ Μέγητι εἴρηται καὶ αἱ λοιπαὶ Ἐχινάδες, οἵ τε ἐνοικοῦντες Ἐπειοὶ ἐξ Ἤλιδος ἀφιγμένοι· διόπερ καὶ τὸν Ὦτον τὸν Κυλλήνιον „Φυλείδεω ἕταρον μεγαθύμων „ἀρχὸν Ἐπειῶν" καλεῖ. „αὐτὰρ Ὀδυσσεὺς ἦγε Κεφαλ„λῆνας μεγαθύμους." οὔτ' οὖν Δουλίχιον ἡ Κεφαλληνία καθ' Ὅμηρον οὔτε τῆς Κεφαλληνίας τὸ Δουλίχιον, ὡς Ἄνδρων φησί· τὸ μὲν γὰρ Ἐπειοὶ κατεῖχον, τὴν δὲ Κεφαλληνίαν ὅλην Κεφαλλῆνες ὑπὸ Ὀδυσσεῖ, οἱ δ' ὑπὸ Μέγητι. οὐδὲ Παλεῖς Δουλίχιον ὑφ' Ὁμήρου λέγονται, ὡς γράφει Φερεκύδης. μάλιστα δ' ἐναντιοῦται Ὁμήρῳ ὁ τὴν Κεφαλληνίαν τὴν αὐτὴν τῷ Δουλιχίῳ λέγων, εἴπερ τῶν μνηστήρων „ἐκ μὲν Δουλιχίοιο „δύω καὶ πεντήκοντα" ἦσαν, ἐκ δὲ Σάμης „πίσυρές τε „καὶ εἴκοσιν." οὐ γὰρ τοῦτ' ἂν εἴη λέγων, ἐξ ὅλης μὲν τόσους ἐκ δὲ μιᾶς τῶν τεττάρων παρὰ δύο τοὺς ἡμίσεις. εἰ δ' ἄρα τοῦτο δώσει τις, ἐρησόμεθα τίς ἂν εἴη ἡ Σάμη, ὅταν οὕτω φῇ „Δουλίχιόν τε Σάμην τ' ἠδ' „ὑλήεντα Ζάκυνθον."

15 Κεῖται δ' ἡ Κεφαλληνία κατὰ Ἀκαρνανίαν, διέχουσα τοῦ Λευκάτα περὶ πεντήκοντα (οἱ δὲ τετταράκοντά φασι) σταδίους, τοῦ δὲ Χελωνάτα περὶ ὀγδοήκοντα. αὐτὴ δ' ἐστὶν ὡς τριακοσίων τὴν περίμετρον, μακρὰ δ' ἀνήκουσα πρὸς εὖρον, ὀρεινή· μέγιστον δ' ὄρος ἐν αὐτῇ ἐν ᾧ τὸ Διὸς Αἰνησίου ἱερόν· καθ' ὃ δὲ στενωτάτη ἐστὶν ἡ νῆσος, ταπεινὸν ἰσθμὸν ποιεῖ ὥσθ' ὑπερκλύζεσθαι πολλάκις ἐκ θαλάττης εἰς θάλατταν· πλησίον δ' εἰσὶ τῶν στενῶν ἐν κόλπῳ Κράνιοί τε καὶ Παλεῖς.

---

10. ante ὑπὸ: καὶ

Μεταξὺ δὲ τῆς Ἰθάκης καὶ τῆς Κεφαλληνίας ἡ 16 Ἀστερία νησίον (Ἀστερὶς δ' ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ λέγεται) ἣν ὁ μὲν Σκήψιος μὴ μένειν τοιαύτην οἵαν φησὶν ὁ ποιητής „λιμένες δ' ἔνι ναύλοχοι αὐτῇ ἀμφίδυμοι." ὁ δὲ Ἀπολλόδωρος μένειν καὶ νῦν, καὶ πολίχνιον λέγει C.457 ἐν αὐτῇ Ἀλαλκομενὰς τὸ ἐπ' αὐτῷ τῷ ἰσθμῷ κείμενον.

Καλεῖ δ' ὁ ποιητὴς Σάμον καὶ τὴν Θρᾳκίαν, ἣν 17 νῦν Σαμοθρᾴκην καλοῦμεν. τὴν δ' Ἰωνικὴν οἶδε μέν, ὡς εἰκός· καὶ γὰρ τὴν Ἰωνικὴν ἀποικίαν εἰδέναι φαίνεται· οὐκ [ἂν] ἀντιδιέστειλε δὲ τὴν ὁμωνυμίαν, περὶ τῆς Σαμοθρᾴκης λέγων, τοτὲ μὲν τῷ ἐπιθέτῳ „ὑψοῦ ἐπ' ἀκροτάτης κορυφῆς Σάμου ὑληέσσης, Θρηικίης" τοτὲ δὲ τῇ συζυγίᾳ τῶν πλησίον νήσων „ἐς Σάμον ἔς τ' Ἴμβρον καὶ Λῆμνον ἀμιχθαλόεσσαν" καὶ πάλιν „μεσσηγύς τε Σάμοιο καὶ Ἴμβρου παιπαλοέσσης." ᾔδει μὲν οὖν, οὐκ ὠνόμακε δ' αὐτήν· οὐδ' ἐκαλεῖτο τῷ αὐτῷ ὀνόματι πρότερον, ἀλλὰ Μελάμφυλλος, εἶτ' Ἀνθεμίς, εἶτα Παρθενία ἀπὸ τοῦ ποταμοῦ τοῦ Παρθενίου, ὃς Ἴμβρασος μετωνομάσθη. ἐπεὶ οὖν κατὰ τὰ Τρωικὰ Σάμος μὲν καὶ ἡ Κεφαλληνία ἐκαλεῖτο καὶ ἡ Σαμοθρᾴκη (οὐ γὰρ ἂν Ἑκάβη εἰσήγετο λέγουσα ὅτι τοὺς παῖδας αὐτῆς „πέρνασχ' ὅν κε λάβοι ἐς Σάμον ἔς τ' Ἴμβρον"), Ἰωνικὴ δ' οὐκ ἀπῴκιστό πω, δῆλον ὅτι ἀπὸ τῶν προτέρων τινὸς τὴν ὁμωνυμίαν ἔσχεν· ἐξ ὧν κἀκεῖνο δῆλον, ὅτι παρὰ τὴν ἀρχαίαν ἱστορίαν ὃ λέγουσιν οἱ φήσαντες, μετὰ τὴν Ἰωνικὴν ἀποικίαν καὶ τὴν Τεμβρίωνος παρουσίαν ἀποίκους ἐλθεῖν ἐκ Σάμου καὶ ὀνομάσαι Σάμον τὴν Σαμοθρᾴκην, ὡς οἱ Σάμιοι τοῦτ' ἐπλάσαντο δόξης χάριν. πιθανώτεροι δ' εἰσὶν [οἱ] ἀπὸ τοῦ σάμους καλεῖσθαι τὰ ὕψη φήσαντες εὑρῆσθαι τοῦτο τοὔνομα τὴν νῆσον· ἐντεῦθεν γὰρ „ἐφαίνετο πᾶσα μὲν Ἴδη, φαίνετο δὲ Πριάμοιο πόλις καὶ

„νῆες Ἀχαιῶν.“ τινὲς δὲ Σάμον καλεῖσθαί φασιν ἀπὸ Σαΐων, τῶν οἰκούντων Θρᾳκῶν πρότερον, οἳ καὶ τὴν ἤπειρον ἔσχον τὴν προσεχῆ, εἴτε οἱ αὐτοὶ τοῖς Σαπαίοις ὄντες ἢ τοῖς Σιντοῖς, οὓς Σίντιας καλεῖ ὁ ποιητής, εἴθ᾽ ἕτεροι. μέμνηται δὲ τῶν Σαΐων Ἀρχίλοχος „ἀσπίδα μὲν Σαΐων τις ἀνείλετο, τὴν παρὰ θάμνῳ ἔντος „ἀμώμητον κάλλιπον οὐκ ἐθέλων.“

18 Λοιπὴ δ᾽ ἐστὶ τῶν ὑπὸ τῷ Ὀδυσσεῖ τεταγμένων νήσων ἡ Ζάκυνθος, μικρῷ πρὸς ἑσπέραν μᾶλλον τῆς
458 Κεφαλληνίας κεκλιμένη τῆς Πελοποννήσου, συνάπτουσα δ᾽ αὐτῇ πλέον. ἔστι δ᾽ ὁ κύκλος τῆς Ζακύνθου σταδίων ἑκατὸν ἑξήκοντα· διέχει δὲ καὶ τῆς Κεφαλληνίας ὅσον ἑξήκοντα σταδίους, ὑλώδης μὲν εὔκαρπος δέ· καὶ ἡ πόλις ἀξιόλογος, ὁμώνυμος. ἐντεῦθεν εἰς Ἑσπερίδας τῆς Λιβύης στάδιοι τρισχίλιοι ἑξακόσιοι.

19 Καὶ ταύτης δὲ καὶ τῆς Κεφαλληνίας πρὸς ἕω τὰς Ἐχινάδας ἱδρῦσθαι νήσους συμβέβηκεν, ὧν τό τε Δουλίχιόν ἐστι (καλοῦσι δὲ νῦν Δολίχαν) καὶ αἱ Ὀξεῖαι καλούμεναι, ἃς Θοὰς ὁ ποιητὴς εἶπε· καὶ ἡ μὲν Δολίχα κεῖται κατὰ Οἰνιάδας καὶ τὴν ἐκβολὴν τοῦ Ἀχελώου, διέχουσα Ἀράξου τῆς τῶν Ἠλείων ἄκρας ἑκατόν, αἱ λοιπαὶ δ᾽ Ἐχινάδες (πλείους δ᾽ εἰσί, πᾶσαι λυπραὶ καὶ τραχεῖαι) πρὸ τῆς ἐκβολῆς τοῦ Ἀχελώου, πεντεκαίδεκα σταδίους ἀφεστῶσα ἡ ἀπωτάτω, ἡ δ᾽ ἐγγυτάτω πέντε, πελαγίζουσαι πρότερον, ἀλλ᾽ ἡ χοῦς τὰς μὲν ἐξηπείρωκεν αὐτῶν ἤδη, τὰς δὲ μέλλει πολλὴ καταφερομένη· ἥπερ καὶ τὴν Παραχελωῗτιν καλουμένην χώραν, ἣν ὁ ποταμὸς ἐπικλύζει, περιμάχητον ἐποίει τὸ παλαιὸν τοὺς ὅρους συγχέουσα ἀεὶ τοὺς ἀποδεικνυμένους τοῖς Ἀκαρνᾶσι καὶ τοῖς Αἰτωλοῖς· ἐκρίνοντο γὰρ τοῖς ὅπλοις

---

10. ante τῆς: καὶ 21. ante αἱ: καὶ 23. ante πρὸ: καὶ

οὐκ ἔχοντες διαιτητάς, ἐνίκων δ' οἱ πλέον δυνάμενοι· ἀφ' ἧς αἰτίας καὶ μῦθος ἐπλάσθη τις, ὡς Ἡρακλέους καταπολεμήσαντος τὸν Ἀχελῷον καὶ ἐνεγκαμένου τῆς νίκης ἆθλον τὸν Δηιανείρας γάμον τῆς Οἰνέως θυγατρός, ἣν πεποίηκε Σοφοκλῆς τοιαῦτα λέγουσαν „μνηστὴρ γὰρ ἦν μοι ποταμός, Ἀχελῷον λέγω, ὅς μ' „ἐν τρισὶν μορφαῖσιν ἐξῄτει πατρός, φοιτῶν ἐναργὴς „ταῦρος, ἄλλοτ' αἰόλος δράκων ἑλικτός, ἄλλοτ' ἀνδρείῳ κύτει βούπρῳρος.“ προστιθέασι δ' ἔνιοι καὶ τὸ τῆς Ἀμαλθείας τοῦτ' εἶναι λέγοντες κέρας, ὃ ἀπέκλασεν ὁ Ἡρακλῆς τοῦ Ἀχελῴου καὶ ἔδωκεν Οἰνεῖ τῶν γάμων ἕδνον· οἱ δ' εἰκάζοντες ἐξ αὐτῶν τἀληθὲς ταύρῳ μὲν ἐοικότα λέγεσθαι τὸν Ἀχελῷόν φασι, καθάπερ καὶ τοὺς ἄλλους ποταμούς, ἀπό τε τῶν ἤχων καὶ τῶν κατὰ τὰ ῥεῖθρα καμπῶν, ἃς καλοῦσι κέρατα, δράκοντι δὲ διὰ τὸ μῆκος καὶ τὴν σκολιότητα, βούπρῳρον δὲ διὰ τὴν αὐτὴν αἰτίαν δι' ἣν καὶ ταυρωπόν· τὸν Ἡρακλέα δὲ καὶ ἄλλως εὐεργετικὸν ὄντα καὶ τῷ Οἰνεῖ κηδεύσοντα παραχώμασί τε καὶ διοχετείαις βιάσασθαι τὸν ποταμὸν πλημμελῶς ῥέοντα καὶ πολλὴν τῆς Παραχελωίτιδος C.459 ἀναψύξαι χαριζόμενον τῷ Οἰνεῖ· καὶ τοῦτ' εἶναι τὸ τῆς Ἀμαλθείας κέρας. τῶν μὲν οὖν Ἐχινάδων καὶ τῶν Ὀξειῶν κατὰ τὰ Τρωικὰ Μέγητα ἄρχειν φησὶν Ὅμηρος „ὃν τίκτε Διὶ φίλος ἱππότα Φυλεύς, ὅς ποτε „Δουλίχιόνδ' ἀπενάσσατο, πατρὶ χολωθείς.“ πατὴρ δ' ἦν Αὐγέας ὁ τῆς Ἠλείας καὶ τῶν Ἐπειῶν ἄρχων· ὥστ' Ἐπειοὶ τὰς νήσους ταύτας εἶχον οἱ συνεξάραντες εἰς τὸ Δουλίχιον τῷ Φυλεῖ.

Αἱ δὲ τῶν Ταφίων νῆσοι, πρότερον δὲ Τηλεβοῶν, 20 ὧν ἦν καὶ ἡ Τάφος νῦν δὲ Ταφιὰς καλουμένη, χωρὶς ἦσαν τούτων οὐ τοῖς διαστήμασιν (ἐγγὺς γὰρ κεῖνται) ἀλλὰ ὑφ' ἑτέροις ἡγεμόσι ταττόμεναι, Ταφίοις καὶ

Τηλεβόαις· πρότερον μὲν οὖν Ἀμφιτρύων ἐπιστρατεύσας αὐτοῖς μετὰ Κεφάλου τοῦ Δηιονέως ἐξ Ἀθηνῶν φυγάδος, ἐκείνῳ τὴν ἀρχὴν παρέδωκεν αὐτῶν· ὁ δὲ ποιητὴς ὑπὸ Μέντῃ τετάχθαι φησὶ λῃστὰς καλῶν αὐτούς, καθάπερ καὶ τοὺς Τηλεβόας ἅπαντάς φασι. τὰ μὲν περὶ τὰς νήσους τὰς πρὸ τῆς Ἀκαρνανίας ταῦτα.

21 Μεταξὺ δὲ Λευκάδος καὶ τοῦ Ἀμβρακικοῦ κόλπου λιμνοθάλαττά ἐστι Μυρτούντιον λεγομένη. ἀπὸ δὲ Λευκάδος ἑξῆς Πάλαιρος καὶ Ἀλυζία τῆς Ἀκαρνανίας εἰσὶ πόλεις, ὧν ἡ Ἀλυζία πεντεκαίδεκα ἀπὸ θαλάττης διέχει σταδίους, καθ᾿ ἣν ἐστι λιμὴν Ἡρακλέους ἱερὸς καὶ τέμενος, ἐξ οὗ τοὺς Ἡρακλέους ἄθλους, ἔργα Λυσίππου, μετήνεγκεν εἰς Ῥώμην τῶν ἡγεμόνων τις, παρὰ τόπον κειμένους διὰ τὴν ἐρημίαν. εἶτα ἄκρα Κριθώτη καὶ [αἱ] Ἐχινάδες καὶ πόλις Ἀστακός, ὁμώνυμος τῇ περὶ Νικομήδειαν καὶ τὸν Ἀστακηνὸν κόλπον (καὶ ἡ Κριθώτη δ᾿ ὁμώνυμος πολίχνῃ τῶν ἐν τῇ Θρᾳκίᾳ Χερρονήσῳ)· πάντα δ᾿ εὐλίμενα τὰ μεταξύ· εἶτ᾿ Οἰνιάδαι καὶ ὁ Ἀχελῶος· εἶτα λίμνη τῶν Οἰνιαδῶν Μελίτη καλουμένη, μῆκος μὲν ἔχουσα τριάκοντα σταδίων πλάτος δὲ εἴκοσι, καὶ ἄλλη Κυνία διπλασία ταύτης καὶ μῆκος καὶ πλάτος, τρίτη δ᾿ Οὐρία πολλῷ τούτων μικροτέρα· ἡ μὲν οὖν Κυνία καὶ ἐκδίδωσιν εἰς τὴν θάλατταν, αἱ λοιπαὶ δ᾿ ὑπέρκεινται ὅσον ἡμιστάδιον· εἶθ᾿ ὁ Εὔηνος, εἰς ὃν ἀπὸ τοῦ Ἀκτίου στάδιοι ἑξακόσιοι ἑβδομήκοντα· μετὰ δὲ τὸν Εὔηνον τὸ ὄρος ἡ Χαλκίς, ἣν Χαλκίαν εἴρηκεν Ἀρτεμίδωρος· εἶθ᾿ ἡ Πλευρών, εἶθ᾿ ἡ Ἁλίκυρνα κώμη, ἧς ὑπέρκειται Καλυδὼν ἐν τῇ μεσογαίᾳ σταδίοις τριάκοντα· περὶ δὲ τὴν Καλυδῶνά ἐστι τὸ τοῦ Λαφρίου Ἀπόλλωνος ἱερόν· εἶθ᾿ ὁ Ταφιασ-

---

16. post κόλπον: ἑνικῶς λεγομένη

σὸς τὸ ὄρος, εἶτα Μακυνία πόλις, εἶτα Μολύκρεια καὶ C.460 πλησίον τὸ Ἀντίρριον τὸ τῆς Αἰτωλίας ὅριον καὶ τῆς Λοκρίδος, εἰς ὃ ἀπὸ τοῦ Εὐήνου στάδιοι περὶ ἑκατὸν εἴκοσιν. Ἀρτεμίδωρος μὲν [οὐχ] οὕτω περὶ τῆς εἴτε Χαλκίδος εἴτε Χαλκίας τοῦ ὄρους, μεταξὺ τοῦ Ἀχελώου καὶ τῆς Πλευρῶνος ἱδρύων αὐτήν, Ἀπολλόδωρος δέ, ὡς πρότερον εἶπον, ὑπὲρ τῆς Μολυκρείας καὶ τὴν Χαλκίδα καὶ τὸν Ταφιασσόν· καὶ τὴν δὲ Καλυδῶνα μεταξὺ ἱδρῦσθαί φησι τῆς τε Πλευρῶνος καὶ τῆς Χαλκίδος· εἰ μὴ ἄρα ἕτερον θετέον τὸ πρὸς Πλευρῶνι ὄρος Χαλκίαν καλούμενον, ἕτερον δὲ τὴν Χαλκίδα τὴν πρὸς Μολυκρείᾳ. ἔστι δέ τις καὶ πρὸς τῇ Καλυδῶνι λίμνη μεγάλη καὶ εὔοψος, ἣν ἔχουσιν οἱ ἐν Πάτραις Ῥωμαῖοι.

22 Τῆς δὲ μεσογαίας κατὰ μὲν τὴν Ἀκαρνανίαν Ἐρυσιχαίους τινάς φησιν Ἀπολλόδωρος λέγεσθαι, ὧν Ἀλκμὰν μέμνηται „οὐδ' Ἐρυσιχαῖος, οὐδὲ ποιμήν, ἀλλὰ „Σαρδίων ἀπ' ἀκρᾶν.“ κατὰ δὲ τὴν Αἰτωλίαν ἦν Ὤλενος, ἧς ἐν τῷ Αἰτωλικῷ καταλόγῳ μέμνηται Ὅμηρος, ἴχνη δ' αὐτῆς λείπεται μόνον ἐγγὺς τῆς Πλευρῶνος ὑπὸ τῷ Ἀρακύνθῳ· ἦν δὲ καὶ Λυσιμάχεια πλησίον, ἠφανισμένη καὶ αὐτή, κειμένη πρὸς τῇ λίμνῃ τῇ νῦν μὲν Λυσιμαχείᾳ πρότερον δ' Ὕδρᾳ, μεταξὺ Πλευρῶνος καὶ Ἀρσινόης πόλεως, ἣ κώμη μὲν ἦν πρότερον καλουμένη Κωνώπα, κτίσμα δ' ὑπῆρξεν Ἀρσινόης τῆς Πτολεμαίου τοῦ δευτέρου γυναικὸς ἅμα καὶ ἀδελφῆς, εὐφυῶς ἐπικειμένη πως τῇ τοῦ Ἀχελώου διαβάσει· παραπλήσιον δέ τι καὶ ἡ Πυλήνη τῷ Ὠλένῳ πέπονθεν. ὅταν δὲ φῇ τὴν Καλυδῶνα αἰπεῖάν τε καὶ πετρήεσσαν, ἀπὸ τῆς χώρας δεκτέον· εἴρηται γὰρ ὅτι τὴν χώραν

17. post Ἐρυσιχαῖος: Καλυδωναί

δίχα διελόντες τὴν μὲν ὀρεινὴν καὶ ἐπίκτητον τῇ Καλυδῶνι προσένειμαν, τὴν πεδιάδα δὲ τῇ Πλευρῶνι.

23 Νυνὶ μὲν οὖν ἐκπεπόνηται καὶ ἀπηγόρευκεν ὑπὸ τῶν συνεχῶν πολέμων ἥ τ' Ἀκαρνανία καὶ Αἰτωλοί, καθάπερ καὶ πολλὰ τῶν ἄλλων ἐθνῶν· πλεῖστον μέντοι χρόνον συνέμειναν Αἰτωλοὶ μετὰ τῶν Ἀκαρνάνων πρός τε τοὺς Μακεδόνας καὶ τοὺς ἄλλους Ἕλληνας, ὕστατα δὲ καὶ πρὸς Ῥωμαίους περὶ τῆς αὐτονομίας ἀγωνιζόμενοι. ἐπεὶ δὲ καὶ Ὅμηρος αὐτῶν ἐπὶ πολὺ μέμνηται καὶ οἱ ἄλλοι ποιηταί τε καὶ συγγραφεῖς, τὰ μὲν εὐσήμως τε καὶ ὁμολογουμένως, τὰ δ' ἧττον γνωρίμως (καθάπερ τοῦτο καὶ ἐν τοῖς ἤδη λεχθεῖσι περὶ αὐτῶν ἀποδέδεικται), προσληπτέον καὶ τῶν παλαιοτέρων τινὰ τῶν ἀρχῆς ἐχόντων τάξιν ἢ διαπορουμένων.

C.461
24 Εὐθὺς ἐπὶ τῆς Ἀκαρνανίας ὅτι μὲν αὐτὴν ὁ Λαέρτης καὶ οἱ Κεφαλλῆνες κατεκτήσαντο εἴρηται ἡμῖν, τίνων δὲ κατεχόντων πρότερον πολλοὶ μὲν εἰρήκασιν· οὐχ ὁμολογούμενα δὲ εἰπόντων ἐπιφανῆ δέ, ἀπολείπεταί τις λόγος ἡμῖν διαιτητικὸς περὶ αὐτῶν. φασὶ γὰρ τοὺς Ταφίους τε καὶ Τηλεβόας λεγομένους οἰκεῖν τὴν Ἀκαρνανίαν πρότερον, καὶ τὸν ἡγεμόνα αὐτῶν Κέφαλον τὸν κατασταθέντα ὑπὸ Ἀμφιτρύωνος κύριον τῶν περὶ τὴν Τάφον νήσων κυριεῦσαι καὶ ταύτης τῆς χώρας· ἐντεῦθεν δὲ καὶ τὸ ἀπὸ τοῦ Λευκάτα νομιζόμενον ἅλμα τούτῳ πρώτῳ προσμυθεύουσιν, ὡς προείρηται. ὁ δὲ ποιητὴς ὅτι μὲν ἦρχον οἱ Τάφιοι τῶν Ἀκαρνάνων πρὶν ἢ τοὺς Κεφαλλῆνας καὶ τὸν Λαέρτην ἐπελθεῖν οὐ λέγει, διότι δ' ἦσαν φίλοι τοῖς Ἰθακησίοις λέγει, ὥστ' ἢ οὐδ' ὅλως ἐπῆρξαν τῶν τόπων κατ' αὐτόν, ἢ ἑκόντες παρεχώρησαν ἢ καὶ σύνοικοι ἐγένοντο. φαίνονται δὲ καὶ ἐκ Λακεδαίμονός τινες ἐποικῆσαι τὴν Ἀκαρνανίαν, οἱ μετ' Ἰκαρίου τοῦ Πηνελό-

πης πατρός· καὶ γὰρ τοῦτον καὶ τοὺς ἀδελφοὺς αὐτῆς ζῶντας παραδίδωσιν ὁ ποιητὴς κατὰ τὴν Ὀδύσσειαν „οἳ πατρὸς μὲν ἐς οἶκον ἀπερρίγασι νέεσθαι Ἰκαρίου, „ὥς κ' αὐτὸς ἐεδνώσαιτο θύγατρα.“ καὶ περὶ τῶν ἀδελφῶν „ἤδη γάρ ῥα πατήρ τε κασίγνητοί τε κέλονται Εὐρυμάχῳ γήμασθαι.“ οὔτε γὰρ ἐν Λακεδαίμονι πιθανὸν αὐτοὺς οἰκεῖν (οὐ γὰρ ἂν ὁ Τηλέμαχος παρὰ Μενελάῳ κατήγετο ἀφιγμένος ἐκεῖσε), οὔτ' ἄλλην οἴκησιν παρειλήφαμεν αὐτῶν. φασὶ δὲ Τυνδάρεων καὶ τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ τὸν Ἰκάριον ἐκπεσόντας ὑπὸ Ἱπποκόωντος τῆς οἰκείας ἐλθεῖν παρὰ Θέστιον τὸν τῶν Πλευρωνίων ἄρχοντα, καὶ συγκατακτήσασθαι τὴν πέραν τοῦ Ἀχελώου πολλὴν ἐπὶ μέρει· τὸν μὲν οὖν Τυνδάρεων ἐπανελθεῖν οἴκαδε γήμαντα Λήδαν τὴν τοῦ Θεστίου θυγατέρα, τὸν δ' Ἰκάριον ὑπομεῖναι τῆς Ἀκαρνανίας ἔχοντα μέρος, καὶ τεκνοποιήσασθαι τήν τε Πηνελόπην ἐκ Πολυκάστης τῆς Λυγαίου θυγατρὸς καὶ τοὺς ἀδελφοὺς αὐτῆς. ἡμεῖς μὲν οὖν ἀπεδείξαμεν ἐν τῷ καταλόγῳ τῶν νεῶν καὶ τοὺς Ἀκαρνᾶνας καταριθμουμένους καὶ μετασχόντας τῆς ἐπὶ Ἴλιον στρατείας, ἐν οἷς κατωνομάζοντο οἵ τε τὴν ἀκτὴν οἰκοῦντες καὶ ἔτι „οἵ τ' ἤπειρον ἔχον ἠδ' ἀντιπέραι' ἐνέμοντο.“ οὔτε δ' ἡ ἤπειρος Ἀκαρνανία ὠνομάζετό πω οὔθ' ἡ ἀκτὴ Λευκάς.

Ἔφορος δ' οὔ φησι συστρατεῦσαι· Ἀλκμέωνα γὰρ C.462
τὸν Ἀμφιάρεω στρατεύσαντα μετὰ Διομήδους καὶ τῶν ἄλλων Ἐπιγόνων καὶ κατορθώσαντα τὸν πρὸς Θηβαίους πόλεμον συνελθεῖν Διομήδει καὶ τιμωρήσασθαι μετ' αὐτοῦ τοὺς Οἰνέως ἐχθρούς, παραδόντα δ' ἐκείνοις τὴν Αἰτωλίαν αὐτὸν εἰς τὴν Ἀκαρνανίαν παρελθεῖν καὶ ταύτην καταστρέφεσθαι. Ἀγαμέμνονα δ' ἐν τούτῳ τοῖς Ἀργείοις ἐπιθέμενον κρατῆσαι ῥᾳδίως, τῶν

πλείστων τοῖς περὶ Διομήδη συνακολουθησάντων. μικρὸν δ' ὕστερον ἐπιπεσούσης τῆς ἐπ' Ἴλιον ἐξόδου, δείσαντα μὴ ἀπόντος αὐτοῦ κατὰ τὴν στρατείαν ἐπανελθόντες οἴκαδε οἱ περὶ τὸν Διομήδη (καὶ γὰρ ἀκούεσθαι μεγάλην περὶ αὐτὸν συνεστραμμένην δύναμιν) κατάσχοιεν τὴν μάλιστα προσήκουσαν αὐτοῖς ἀρχήν (τὸν μὲν γὰρ Ἀδράστου τὸν δὲ τοῦ πατρὸς εἶναι κληρονόμον), ταῦτα δὴ διανοηθέντα καλεῖν αὐτοὺς ἐπί τε τὴν τοῦ Ἄργους ἀπόληψιν καὶ τὴν κοινωνίαν τοῦ πολέμου· τὸν μὲν οὖν Διομήδη πεισθέντα μετασχεῖν τῆς στρατείας, τὸν δὲ Ἀλκμέωνα ἀγανακτοῦντα μὴ φροντίσαι· διὰ δὲ τοῦτο μηδὲ κοινωνῆσαι τῆς στρατείας μόνους τοὺς Ἀκαρνᾶνας τοῖς Ἕλλησι· τούτοις δ', ὡς εἰκός, τοῖς λόγοις ἐπακολουθήσαντες οἱ Ἀκαρνᾶνες σοφίσασθαι λέγονται Ῥωμαίους καὶ τὴν αὐτονομίαν παρ' αὐτῶν ἐξανύσασθαι, λέγοντες ὡς οὐ μετάσχοιεν μόνοι τῆς ἐπὶ τοὺς προγόνους τοὺς ἐκείνων στρατείας· οὔτε γὰρ ἐν τῷ Αἰτωλικῷ καταλόγῳ φράζοιντο οὔτε ἰδίᾳ· οὐδὲ γὰρ ὅλως τοὔνομα τοῦτ' ἐμφέροιτο ἐν τοῖς ἔπεσιν.

26 Ὁ μὲν οὖν Ἔφορος πρὸ τῶν Τρωικῶν ἤδη τὴν Ἀκαρνανίαν ὑπὸ τῷ Ἀλκμέωνι ποιήσας, τό τε Ἄργος τὸ Ἀμφιλοχικὸν ἐκείνου κτίσμα ἀποφαίνει, καὶ τὴν Ἀκαρνανίαν ὠνομάσθαι φησὶν ἀπὸ τοῦ παιδὸς αὐτοῦ Ἀκαρνᾶνος, Ἀμφιλόχους δὲ ἀπὸ τοῦ ἀδελφοῦ Ἀμφιλόχου· ὥστε ἐκπίπτει εἰς τὰ παρὰ τὴν ὁμηρικὴν ἱστορίαν λεγόμενα. Θουκυδίδης δὲ καὶ ἄλλοι τὸν Ἀμφίλοχον ἀπὸ τῆς στρατείας τῆς Τρωικῆς ἐπανιόντα, οὐκ ἀρεσκόμενον τοῖς ἐν Ἄργει, ταύτην οἰκῆσαί φασι τὴν χώραν, οἱ μὲν κατὰ διαδοχὴν ἥκοντα τῆς τοῦ ἀδελφοῦ δυναστείας, οἱ δ' ἄλλως. καὶ ἰδίᾳ μὲν περὶ Ἀκαρνάνων ταῦτα λέγοιτ' ἄν, κοινῇ δ' ὅσα καὶ τοῖς Αἰτωλικοῖς ἐπιπλέκεται νῦν

ἐροῦμεν, τὰ Αἰτωλικὰ λέγοντες ἐφεξῆς ὅσα προσλαβεῖν τοῖς εἰρημένοις ἔγνωμεν.

3 Τοὺς δὲ Κουρῆτας τῶν μὲν Ἀκαρνᾶσι τῶν δ' Αἰτωλοῖς προσνεμόντων, καὶ τῶν μὲν ἐκ Κρήτης τῶν δ' ἐξ Εὐβοίας τὸ γένος εἶναι φασκόντων, ἐπειδὴ καὶ Ὅμηρος αὐτῶν μέμνηται, τὰ παρ' ἐκείνου πρῶτον ἐπισκε- C.463
πτέον. οἴονται δ' αὐτὸν λέγειν Αἰτωλοὺς μᾶλλον ἢ Ἀκαρνᾶνας, εἴπερ οἱ Πορθαονίδαι ἦσαν „Ἄγριος ἠδὲ „Μέλας, τρίτατος δ' ἦν ἱππότα Οἰνεύς· ᾤκεον δ' ἐν „Πλευρῶνι καὶ αἰπεινῇ Καλυδῶνι.“ αὗται δ' εἰσὶν Αἰτωλικαὶ πόλεις ἀμφότεραι καὶ φέρονται ἐν τῷ Αἰτωλικῷ καταλόγῳ ὥστε, ἐπεὶ τὴν Πλευρῶνα οἰκοῦντες φαίνονται καὶ κατ' αὐτὸν οἱ Κουρῆτες, Αἰτωλοὶ ἂν εἶεν. οἱ δ' ἀντιλέγοντες τῷ τρόπῳ τῆς φράσεως παράγονται ὅταν φῇ „Κουρῆτές τ' ἐμάχοντο καὶ Αἰτωλοὶ „μενεχάρμαι ἀμφὶ πόλιν Καλυδῶνα.“ οὐδὲ γὰρ ἂν κυρίως εἶπεν οὕτως „ἐμάχοντο Βοιωτοὶ καὶ Θηβαῖοι πρὸς ἀλλήλους“ οὐδ' „Ἀργεῖοι καὶ Πελοποννήσιοι.“ ἐδείχθη δ' ἐν τοῖς ἔμπροσθεν ὅτι ἐστὶ καὶ ὁμηρικὸν τὸ ἔθος τοῦτο τῆς φράσεως καὶ ὑπὸ τῶν ἄλλων ποιητῶν τετριμμένον· τοῦτο μὲν οὖν εὐαπολόγητον. ἐκεῖνοι δὲ λεγέτωσαν πῶς ἂν μὴ ὁμοεθνεῖς ὄντας μηδ' Αἰτωλοὺς τοὺς Πλευρωνίους ἐν τοῖς Αἰτωλοῖς κατέλεγεν.

2 Ἔφορος δὲ τοὺς Αἰτωλοὺς εἰπὼν ἔθνος εἶναι μηδεπώποτε γεγενημένον ὑφ' ἑτέροις, ἀλλὰ πάντα τὸν μνημονευόμενον χρόνον μεμενηκὸς ἀπόρθητον διά τε τὰς δυσχωρίας τῶν τόπων καὶ διὰ τὴν περὶ τὸν πόλεμον ἄσκησιν, ἐξ ἀρχῆς μέν φησιν ἅπασαν τὴν χώραν Κουρῆτας κατασχεῖν, ἀφικομένου δ' ἐξ Ἤλιδος Αἰτωλοῦ τοῦ Ἐνδυμίωνος καὶ τοῖς πολέμοις κρατοῦντος αὐτῶν, τοὺς μὲν Κουρῆτας εἰς τὴν νῦν καλουμένην Ἀκαρνανίαν ὑποχωρῆσαι, τοὺς δ' Αἰτωλοὺς συγκατελθόν-

τας Ἐπειοῖς τὰς ἀρχαιοτάτας κτίσαι τῶν ἐν Αἰτωλίᾳ πόλεων, δεκάτῃ δ' ὕστερον γενεᾷ τὴν Ἦλιν ὑπὸ Ὀξύλου τοῦ Αἵμονος συνοικισθῆναι περαιωθέντος ἐκ τῆς Αἰτωλίας. παρατίθησι δὲ τούτων μαρτύρια τὰ ἐπιγράμματα, τὸ μὲν ἐν Θέρμοις τῆς Αἰτωλίας, ὅπου τὰς ἀρχαιρεσίας ποιεῖσθαι πάτριον αὐτοῖς ἐστιν, ἐγκεχαραγμένον τῇ βάσει τῆς Αἰτωλοῦ εἰκόνος „χώρης οἰκιστῆρα, παρ' Ἀλφειοῦ ποτε δίναις θρεφθέντα, σταδίων γείτον' Ὀλυμπιάδος, Ἐνδυμίωνος παῖδ' Αἰτωλὸν τόνδ' ἀνέθηκαν Αἰτωλοί, σφετέρας μνῆμ' ἀρετῆς ἐσορᾶν.“ τὸ δ' ἐν τῇ ἀγορᾷ τῶν Ἠλείων ἐπὶ τῷ Ὀξύλου ἀνδριάντι „Αἰτωλός ποτε τόνδε λιπὼν αὐτόχθονα δῆμον κτήσατο Κουρῆτιν γῆν δορὶ πολλὰ καC.464 μών· τῆς δ' αὐτῆς γενεᾶς δεκατόσπορος Αἵμονος υἱός Ὄξυλος ἀρχαίην ἔκτισε τήνδε πόλιν.“

3 Τὴν μὲν οὖν συγγένειαν τὴν πρὸς ἀλλήλους τῶν τε Ἠλείων καὶ τῶν Αἰτωλῶν ὀρθῶς ἐπισημαίνεται διὰ τῶν ἐπιγραμμάτων, ἐξομολογουμένων ἀμφοῖν οὐ τὴν συγγένειαν μόνον ἀλλὰ καὶ τὸ ἀρχηγέτας ἀλλήλων εἶναι· δι' οὗ καλῶς ἐξελέγχει ψευδομένους τοὺς φάσκοντας τῶν μὲν Αἰτωλῶν ἀποίκους εἶναι τοὺς Ἠλείους, μὴ μέντοι τῶν Ἠλείων τοὺς Αἰτωλούς. τὴν δ' ἀνομολογίαν τῆς γραφῆς καὶ τῆς ἀποφάσεως φαίνεται τὴν αὐτὴν ἐπιδεδειγμένος κἀνταῦθα ἥνπερ ἐπὶ τοῦ μαντείου τοῦ ἐν Δελφοῖς παρεστήσαμεν. εἰπὼν γὰρ ἀπόρθητον ἐκ τοῦ μνημονευομένου χρόνου παντὸς τὴν Αἰτωλίαν, εἰπὼν δὲ καὶ ἐξ ἀρχῆς τὴν χώραν ταύτην τοὺς Κουρῆτας κατασχεῖν ὤφειλε μὲν τοῖς εἰρημένοις ἀκόλουθον τοῦτο [ἐπι]φέρειν, ὅτι οἱ Κουρῆτες διέμειναν ἕως εἰς αὐτὸν κατέχοντες τὴν Αἰτωλίαν γῆν· οὕτω γὰρ

28. post μὲν: τοίγε

ἔμελλεν ἀπόρθητός τε καὶ οὐδέποτε ὑπ' ἄλλοις γεγονυῖα ὀρθῶς λεχθήσεσθαι· ὁ δ' ἐκλαθόμενος τῆς ὑποσχέσεως οὐ τοῦτ' ἐπιφέρει ἀλλὰ τοὐναντίον, ὡς ἀφικομένου ἐξ Ἤλιδος Αἰτωλοῦ καὶ τοῖς πολέμοις κρατοῦντος αὐτῶν οἱ Κουρῆτες ἀπῆλθον εἰς τὴν Ἀκαρνανίαν· τί οὖν ἄλλο πορθήσεως ἴδιον ἢ τῷ πολέμῳ κρατηθῆναι καὶ τὴν χώραν ἐκλιπεῖν; τοῦτο δὲ καὶ τὸ ἐπίγραμμα μυρτυρεῖ τὸ παρὰ τοῖς Ἠλείοις· ὁ γὰρ „Αἰτωλός“ φησί „κτήσατο Κουρῆτιν γῆν δορὶ πολλὰ καμών.“

Ἴσως δή τις ἂν φαίη λέγειν αὐτὸν ἀπόρθητον τὴν 4 Αἰτωλίαν ἀφ' οὗ τοὔνομα τοῦτ' ἔσχε μετὰ τὴν Αἰτωλοῦ παρουσίαν· ἀλλ' ἀφῄρηται καὶ [τούτου] τοῦ νοήματος τὸν λόγον, φήσας ἐν τοῖς ἐφεξῆς τὸ μὲν πλεῖστον τοῦ λαοῦ τοῦ διαμένοντος ἐν τοῖς Αἰτωλοῖς τοῦτο εἶναι τὸ τῶν Ἐπειῶν, συμμιχθέντων δ' αὐτοῖς ὕστερον Αἰολέων τῶν ἅμα Βοιωτοῖς ἐκ Θετταλίας ἀναστάντων κοινῇ μετὰ τούτων τὴν χώραν κατασχεῖν. ἆρ' οὖν ἔστι [πιστὸν] χωρὶς πολέμου τὴν ἀλλοτρίαν ἐπελθόντας συγκατανείμασθαι τοῖς ἔχουσι μηδὲν δεομένοις κοινωνίας τοιαύτης; ἢ τοῦτο μὲν οὐ πιστόν, τὸ δὲ κρατουμένοις τοῖς ὅπλοις ἐπ' ἴσοις συμβῆναι πιστόν; τί οὖν ἄλλο πόρθησις ἢ τὸ κρατεῖσθαι τοῖς ὅπλοις; καὶ Ἀπολλόδωρος δ' εἴρηκεν ἐκ τῆς Βοιωτίας ἐπελθόντας Ὕαντας ἱστορεῖσθαι καὶ ἐποίκους τοῖς Αἰτωλοῖς γενομένους· ὁ δ' ὥσπερ κατωρθωκὼς ἐπιλέγει διότι ταῦτα καὶ τὰ τοιαῦτα διακριβοῦν εἰώθαμεν, ὅταν ᾖ τι τῶν πραγμάτων ἢ παντελῶς ἀπορούμενον ἢ ψευδῆ δόξαν ἔχον.

Τοιοῦτος δ' ὢν Ἔφορος ἑτέρων ὅμως κρείττων C.465 5

16. post Ἐπειῶν: λέγων

ἐστί· καὶ αὐτὸς ὁ ἐσπουδασμένως οὕτως ἐπαινέσας αὐτὸν Πολύβιος καὶ φήσας περὶ τῶν Ἑλληνικῶν καλῶς μὲν Εὔδοξον, κάλλιστα δ' Ἔφορον ἐξηγεῖσθαι περὶ κτίσεων συγγενειῶν μεταναστάσεων ἀρχηγετῶν „ἡμεῖς „δέ“ φησί „τὰ νῦν ὄντα δηλώσομεν καὶ περὶ θέσεως „τόπων καὶ διαστημάτων· τοῦτο γάρ ἐστιν οἰκειότα„τον χωρογραφίᾳ.“ ἀλλὰ μὴν σύ γε, ὦ Πολύβιε, ὁ τὰς λαοδογματικὰς ἀποφάσεις περὶ τῶν διαστημάτων εἰσάγων οὐκ ἐν τοῖς ἔξω τῆς Ἑλλάδος μόνον, ἀλλὰ καὶ ἐν τοῖς Ἑλληνικοῖς, * καὶ διδοῖς εὐθύνας τὰς μὲν Ποσειδωνίῳ τὰς δ' Ἀρτεμιδώρῳ τὰς δ' ἄλλοις πλείοσι. καὶ ἡμῖν οὖν συγγνώμην .... καὶ οὐ δυσχεραίνειν δεῖ παρὰ τῶν τοιούτων μεταφέρουσι τὴν πολλὴν ἱστορίαν ἐάν τι πταίωμεν, ἀλλ' ἀγαπᾶν ἐὰν τὰ πλείω τῶν εἰρημένων ἑτέροις ἄμεινον λέγωμεν ἢ τὰ παραλειφθέντα κατ' ἄγνοιαν προστιθῶμεν.

6 Περὶ δὲ Κουρήτων ἔτι καὶ τοιαῦτα λέγεται, τὰ μὲν ἐγγυτέρω ὄντα τῆς περὶ Αἰτωλῶν καὶ Ἀκαρνάνων ἱστορίας τὰ δ' ἀπωτέρω· ἐγγυτέρω μὲν τὰ τοιαῦτα οἷα προείρηται, ὅτι τὴν χώραν ἣ νῦν Αἰτωλία καλεῖται Κουρῆτες ᾤκουν, ἐλθόντες δ' οἱ Αἰτωλοὶ μετὰ Αἰτωλοῦ τούτους ἐξέβαλον εἰς τὴν Ἀκαρνανίαν· καὶ ἔτι τὰ τοιαῦτα, ὅτι τὴν Πλευρωνίαν ὑπὸ Κουρήτων οἰκουμένην καὶ Κουρῆτιν προσαγορευομένην Αἰολεῖς ἐπελθόντες ἀφείλοντο, τοὺς δὲ κατέχοντας ἐξέβαλον. Ἀρχέμαχος δ' ὁ Εὐβοεύς φησι τοὺς Κουρῆτας ἐν Χαλκίδι συνοικῆσαι, συνεχῶς δὲ περὶ τοῦ Ληλάντου πεδίου πολεμοῦντας, ἐπειδὴ οἱ πολέμιοι τῆς κόμης ἐδράττοντο τῆς ἔμπροσθεν καὶ κατέσπων αὐτούς, ὄπισθεν κομῶντας γενέσθαι, τὰ δ' ἔμπροσθεν κείρεσθαι· διὸ καὶ Κουρῆτας ἀπὸ τῆς κουρᾶς κληθῆναι· μετοικῆσαι δ' εἰς τὴν Αἰτωλίαν, καὶ κατασχόντας τὰ περὶ Πλευ-

ρῶνα χωρία τοὺς πέραν οἰκοῦντας τοῦ Ἀχελώου διὰ τὸ ἀκούρους φυλάττειν τὰς κεφαλὰς Ἀκαρνᾶνας καλέσαι· ἔνιοι δ' ἀπὸ ἥρωος τοὔνομα σχεῖν ἑκάτερον τὸ φῦλον· οἱ δ' ἀπὸ τοῦ ὄρους τοῦ Κουρίου τοὺς Κουρῆτας ὀνομασθῆναι τοῦ ὑπερκειμένου τῆς Πλευρῶνος, εἶναί τε φῦλόν τι Αἰτωλικὸν τοῦτο, ὡς Ὀφιεῖς καὶ Ἀγραίους καὶ Εὐρυτᾶνας καὶ ἄλλα πλείω. ὡς δ' εἴρηται, τῆς Αἰτωλίας δίχα διῃρημένης τὰ μὲν περὶ Καλυδῶνα τὸν Οἰνέα ἔχειν φασί, τῆς δὲ Πλευρωνίας μέρος μέν τι καὶ τοὺς Πορθαονίδας ἔχειν τοὺς περὶ τὸν Ἄγριον, εἴπερ „ᾤκεον ἐν Πλευρῶνι καὶ αἰπεινῇ Καλυδῶνι.“ ἐπι- C.466
κρατεῖν μέντοι Θέστιον τῆς Πλευρωνίας, τὸν πενθερὸν τοῦ Οἰνέως Ἀλθαίας δὲ πατέρα, ἡγούμενον τῶν Κουρήτων· πολέμου δ' ἐμπεσόντος τοῖς Θεστιάδαις πρὸς Οἰνέα καὶ Μελέαγρον, ὡς μὲν ὁ ποιητής „ἀμφὶ συὸς κεφαλῇ καὶ δέρματι“ κατὰ τὴν περὶ τοῦ κάπρου μυθολογίαν, ὡς δὲ τὸ εἰκὸς περὶ μέρος τῆς χώρας, οὕτω δὴ λέγεται „Κουρῆτές τ' ἐμάχοντο καὶ Αἰτωλοὶ „μενεχάρμαι.“ ταῦτα μὲν τὰ ἐγγυτέρω.

Τὰ δ' ἀπωτέρω τῆς ὑποθέσεως ταύτης, ἄλλως δὲ 7
διὰ τὴν ὁμωνυμίαν εἰς ταὐτὸν ὑπὸ τῶν ἱστορικῶν ἀγόμενα, ἅπερ Κουρητικὰ μὲν καὶ περὶ Κουρήτων λέγεται, ὁμοίως ὥσπερ καὶ τὰ περὶ τῶν τὴν Αἰτωλίαν καὶ τὴν Ἀκαρνανίαν οἰκησάντων, ἐκείνων μὲν διαφέρει, ἔοικε δὲ μᾶλλον τῷ περὶ Σατύρων καὶ Σειληνῶν καὶ Βακχῶν καὶ Τιτύρων λόγῳ· τοιούτους γάρ τινας δαίμονας ἢ προπόλους θεῶν τοὺς Κουρῆτάς φασιν οἱ παραδόντες τὰ Κρητικὰ καὶ τὰ Φρύγια, ἱερουργίαις τισὶν ἐμπεπλεγμένα ταῖς μὲν μυστικαῖς ταῖς δ' ἄλλαις περί τε τὴν τοῦ Διὸς παιδοτροφίαν τὴν ἐν Κρήτῃ καὶ τοὺς τῆς μητρὸς τῶν θεῶν ὀργιασμοὺς ἐν τῇ Φρυγίᾳ καὶ τοῖς περὶ τὴν Ἴδην τὴν Τρωικὴν τόποις. τοσαύτη δ'

ἐστὶν ἐν τοῖς λόγοις τούτοις ποικιλία, τῶν μὲν τοὺς αὐτοὺς τοῖς Κουρῆσι τοὺς Κορύβαντας καὶ Καβείρους καὶ Ἰδαίους δακτύλους καὶ Τελχῖνας ἀποφαινόντων, τῶν δὲ συγγενεῖς ἀλλήλων καὶ μικράς τινας αὐτῶν πρὸς ἀλλήλους διαφορὰς διαστελλομένων, ὡς δὲ τύπῳ εἰπεῖν καὶ κατὰ τὸ πλέον, ἅπαντας ἐνθουσιαστικούς τινας καὶ βακχικοὺς καὶ ἐνοπλίῳ κινήσει μετὰ θορύβου καὶ ψόφου καὶ κυμβάλων καὶ τυμπάνων καὶ ὅπλων, ἔτι δ' αὐλοῦ καὶ βοῆς ἐκπλήττοντας κατὰ τὰς ἱερουργίας ἐν σχήματι διακόνων, [ὥσ]τε καὶ τὰ ἱερὰ τρόπον τινὰ κοινοποιεῖσθαι ταῦτά τε καὶ τῶν Σαμοθράκων καὶ τὰ ἐν Λήμνῳ καὶ ἄλλα πλείω διὰ τὸ τοὺς προπόλους λέγεσθαι τοὺς αὐτούς. ἔστι μὲν οὖν θεολογικὸς πᾶς ὁ τοιοῦτος τρόπος τῆς ἐπισκέψεως καὶ οὐκ ἀλλότριος τῆς τοῦ φιλοσόφου θεωρίας.

8 Ἐπεὶ δὲ δι' ὁμωνυμίαν τῶν Κουρήτων καὶ οἱ ἱστορικοὶ συνήγαγον εἰς ἓν τὰ ἀνόμοια, οὐδ' ἂν αὐτὸς ὀκνήσαιμ' ἂν εἰπεῖν περὶ αὐτῶν ἐπὶ πλέον ἐν παραβάσει, προσθεὶς τὸν οἰκεῖον τῇ ἱστορίᾳ φυσικὸν λόγον. καίτοι τινὲς καὶ συνοικειοῦν βούλονται ταῦτ' ἐκείνοις, καὶ τυχὸν ἴσως ἔχονταί τινος πιθανοῦ· θηλυστολοῦντας γὰρ ὡς αἱ κόραι τοὔνομα σχεῖν τοῦτο τοὺς περὶ τὴν Αἰτωλίαν φασίν· εἶναι γὰρ καί τινα τοιοῦτον ζῆλον ἐν τοῖς Ἕλλησι, καὶ Ἰάονας ἑλκεχίτωνας εἰρῆσθαι
C.467 [καὶ κρώβυλον καὶ τέττιγα ἐμπλέκεσθαι], καὶ τοὺς περὶ Λεωνίδαν κτενιζομένους, ὅτ' ἐξῄεσαν εἰς τὴν μάχην, καταφρονηθῆναι λέγουσιν ὑπὸ τῶν Περσῶν, ἐν δὲ τῇ μάχῃ θαυμασθῆναι. ἁπλῶς δ' ἡ περὶ τὰς κόμας φιλοτεχνία συνέστηκε περί τε θρέψιν καὶ κουρὰν τριχός, ἄμφω δὲ κόραις καὶ κόροις ἐστὶν οἰκεῖα, ὥστε πλεοναχῶς τὸ ἐτυμολογεῖν τοὺς Κουρῆτας ἐν εὐπόρῳ κεῖται. εἰκὸς δὲ καὶ τὴν ἐνόπλιον ὄρχησιν ὑπὸ τῶν ἠσκημένων

οὕτω περὶ κόμην καὶ στολὴν πρῶτον εἰσαχθεῖσαν, ἐκείνων Κουρήτων καλουμένων, παρασχεῖν πρόφασιν καὶ τοῖς στρατιωτικωτέροις ἑτέρων καὶ τὸν βίον ἐνόπλιον ἔχουσιν, ὥσθ' ὁμωνύμως καὶ αὐτοὺς Κουρῆτας λεχθῆναι, τοὺς ἐν Εὐβοίᾳ λέγω καὶ Αἰτωλίᾳ καὶ Ἀκαρνανίᾳ. καὶ Ὅμηρος δὲ τοὺς νέους στρατιώτας οὕτω προσηγόρευσε „κρινάμενος κούρητας ἀριστῆας Παναχαιῶν, δῶ„ρα θοῆς παρὰ νηὸς ἐνεγκεῖν, ὅσσ' Ἀχιλῆι χθιζοὶ ὑπέ„στημεν“ καὶ πάλιν „δῶρα φέρον κούρητες Ἀχαιοί.“ περὶ μὲν οὖν τῆς τῶν Κουρήτων ἐτυμολογίας ταῦτα.

Τὸ δ' εἰς ἓν συμφέρεσθαι τὰ τοσαῦτα ὀνόματα καὶ 9
τὴν ἐνοῦσαν θεολογίαν ἐν τῇ περὶ αὐτῶν ἱστορίᾳ νῦν ἐπισκεπτέον. κοινὸν δὴ τοῦτο καὶ τῶν Ἑλλήνων καὶ τῶν βαρβάρων ἐστὶ τὸ τὰς ἱεροποιίας μετὰ ἀνέσεως ἑορταστικῆς ποιεῖσθαι, τὰς μὲν σὺν ἐνθουσιασμῷ τὰς δὲ χωρίς, καὶ τὰς μὲν μετὰ μουσικῆς τὰς δὲ μή, καὶ τὰς μὲν μυστικῶς τὰς δὲ ἐν φανερῷ· καὶ τοῦθ' ἡ φύσις οὕτως ὑπαγορεύει. ἥ τε γὰρ ἄνεσις τὸν νοῦν ἀπάγει ἀπὸ τῶν ἀνθρωπικῶν ἀσχολημάτων, * τὸν δὲ ὄντως νοῦν τρέπει πρὸς τὸ θεῖον· ὅ τε ἐνθουσιασμὸς ἐπίπνευσίν τινα θείαν ἔχειν δοκεῖ καὶ τῷ μαντικῷ γένει πλησιάζειν· ἥ τε κρύψις ἡ μυστικὴ τῶν ἱερῶν σεμνοποιεῖ τὸ θεῖον, μιμουμένη τὴν φύσιν αὐτοῦ φεύγουσαν ἡμῶν τὴν αἴσθησιν· ἥ τε μουσικὴ περί τε ὄρχησιν οὖσα καὶ ῥυθμὸν καὶ μέλος ἡδονῇ τε ἅμα καὶ καλλιτεχνίᾳ πρὸς τὸ θεῖον ἡμᾶς συνάπτει κατὰ τοιαύτην αἰτίαν. εὖ μὲν γὰρ εἴρηται καὶ τοῦτο, τοὺς ἀνθρώπους τότε μάλιστα μιμεῖσθαι τοὺς θεοὺς ὅταν εὐεργετῶσιν· ἄμεινον δ' ἂν λέγοι τις, ὅταν εὐδαιμονῶσι· τοιοῦτον

---

10. post ταῦτα: ἡ δὲ ἐνόπλιος ὄρχησις στρατιωτική, καὶ ἡ πυρρίχη δηλοῖ καὶ ὁ Πύρριχος, ὅν φασιν εὑρετὴν εἶναι τῆς τοιαύτης ἀσκήσεως τῶν νέων καὶ τὰ στρατιωτικά.

δὲ τὸ χαίρειν καὶ τὸ ἑορτάζειν καὶ τὸ φιλοσοφεῖν καὶ μουσικῆς ἅπτεσθαι· μὴ γάρ εἴ τις ἔκπτωσις πρὸς τὸ χεῖρον [γε]γένηται, τῶν μουσικῶν εἰς ἡδυπαθείας τρε-
C.468 πόντων τὰς τέχνας ἐν τοῖς συμποσίοις καὶ θυμέλαις καὶ σκηναῖς καὶ ἄλλοις τοιούτοις, διαβαλλέσθω τὸ πρᾶγμα, ἀλλ' ἡ φύσις ἡ τῶν παιδευμάτων ἐξεταζέσθω τὴν ἀρχὴν ἐνθένδε ἔχουσα.

10 Καὶ διὰ τοῦτο μουσικὴν ἐκάλεσε Πλάτων καὶ ἔτι πρότερον οἱ Πυθαγόρειοι τὴν φιλοσοφίαν, καὶ καθ' ἁρμονίαν τὸν κόσμον συνεστάναι φασί, πᾶν τὸ μουσικὸν εἶδος θεῶν ἔργον ὑπολαμβάνοντες. οὕτω δὲ καὶ αἱ Μοῦσαι θεαὶ καὶ Ἀπόλλων μουσηγέτης καὶ ἡ ποιητικὴ πᾶσα ὑμνητική. ὡσαύτως δὲ καὶ τὴν τῶν ἠθῶν κατασκευὴν τῇ μουσικῇ προσνέμουσιν, ὡς πᾶν τὸ ἐπανορθωτικὸν τοῦ νοῦ τοῖς θεοῖς ἐγγὺς ὄν. οἱ μὲν οὖν Ἕλληνες οἱ πλεῖστοι τῷ Διονύσῳ προσέθεσαν καὶ τῷ Ἀπόλλωνι καὶ τῇ Ἑκάτῃ καὶ ταῖς Μούσαις καὶ Δήμητρι, νὴ Δία, τὸ ὀργιαστικὸν πᾶν καὶ τὸ βακχικὸν καὶ τὸ χορικὸν καὶ τὸ περὶ τὰς τελετὰς μυστικόν, Ἴακχόν τε καὶ τὸν Διόνυσον καλοῦσι καὶ τὸν ἀρχηγέτην τῶν μυστηρίων, τῆς Δήμητρος δαίμονα· δενδροφορίαι τε καὶ χορεῖαι καὶ τελεταὶ κοιναὶ τῶν θεῶν εἰσι τούτων· αἱ δὲ Μοῦσαι καὶ ὁ Ἀπόλλων αἱ μὲν τῶν χορῶν προεστᾶσιν ὁ δὲ καὶ τούτων καὶ τῶν κατὰ μαντικήν· πρόπολοι δὲ τῶν Μουσῶν οἱ πεπαιδευμένοι πάντες, καὶ ἰδίως οἱ μουσικοί, τοῦ δ' Ἀπόλλωνος οὗτοί τε καὶ οἱ περὶ μαντικήν, Δήμητρος δὲ οἵ τε μύσται καὶ δᾳδοῦχοι καὶ ἱεροφάνται, Διονύσου δὲ Σειληνοί τε καὶ Σάτυροι καὶ Τίτυροι καὶ Βάκχαι, Λῆναί τε καὶ Θυῖαι καὶ Μιμαλλόνες καὶ Ναΐδες καὶ Νύμφαι προσαγορευόμεναι.

11 Ἐν δὲ τῇ Κρήτῃ καὶ ταῦτα καὶ τὰ τοῦ Διος ἱερὰ ἰδίως ἐπετελεῖτο μετ' ὀργιασμοῦ καὶ τοιούτων προπό-

λων οἷοι περὶ τὸν Διόνυσόν εἰσιν οἱ Σάτυροι· τούτους δ' ὠνόμαζον Κουρῆτας, νέους τινὰς ἐνόπλιον κίνησιν μετ' ὀρχήσεως ἀποδιδόντας, προστησάμενοι μῦθον τὸν περὶ τῆς τοῦ Διὸς γενέσεως, ἐν ᾧ τὸν μὲν Κρόνον εἰσάγουσιν εἰθισμένον καταπίνειν τὰ τέκνα ἀπὸ τῆς γενέσεως εὐθύς, τὴν δὲ Ῥέαν πειρωμένην ἐπικρύπτεσθαι τὰς ὠδῖνας καὶ τὸ γεννηθὲν βρέφος ἐκποδὼν ποιεῖν καὶ περισώζειν εἰς δύναμιν, πρὸς δὲ τοῦτο συνεργοὺς λαβεῖν τοὺς Κουρῆτας, οἳ μετὰ τυμπάνων καὶ τοιούτων ἄλλων ψόφων καὶ ἐνοπλίου χορείας καὶ θορύβου περιέποντες τὴν θεὸν ἐκπλήξειν ἔμελλον τὸν Κρόνον καὶ λήσειν ὑποσπάσαντες αὐτοῦ τὸν παῖδα, τῇ δ' αὐτῇ ἐπιμελείᾳ καὶ τρεφόμενον ὑπ' αὐτῶν παραδίδοσθαι· ὥσθ' οἱ Κουρῆτες ἤτοι διὰ τὸ νέοι καὶ κόροι ὄντες ὑπουργεῖν ἢ διὰ τὸ κουροτροφεῖν τὸν Δία (λέγεται γὰρ ἀμφοτέρως) ταύτης ἠξιώθησαν τῆς προσηγορίας, οἱονεὶ Σάτυροί τινες ὄντες περὶ τὸν Δία. οἱ μὲν C.469 οὖν Ἕλληνες τοιοῦτοι περὶ τοὺς ὀργιασμούς.

Οἱ δὲ Βερέκυντες Φρυγῶν τι φῦλον καὶ ἁπλῶς οἱ 12 Φρύγες καὶ τῶν Τρώων οἱ περὶ τὴν Ἴδην κατοικοῦντες Ῥέαν μὲν καὶ αὐτοὶ τιμῶσι καὶ ὀργιάζουσι ταύτῃ, μητέρα καλοῦντες θεῶν καὶ Ἄγδιστιν καὶ Φρυγίαν θεὸν μεγάλην, ἀπὸ δὲ τῶν τόπων Ἰδαίαν καὶ Δινδυμήνην καὶ Σιπυληνὴν καὶ Πεσσινουντίδα καὶ Κυβέλην [καὶ Κυβήβην]. οἱ δ' Ἕλληνες τοὺς προπόλους αὐτῆς ὁμωνύμως Κουρῆτας λέγουσιν, οὐ μήν γε ἀπὸ τῆς αὐτῆς μυθοποιίας, ἀλλ' ἑτέρους ὡς ἂν ὑπουργούς τινας, τοῖς Σατύροις ἀνὰ λόγον· τοὺς δ' αὐτοὺς καὶ Κορύβαντας καλοῦσι.

Μάρτυρες δ' οἱ ποιηταὶ τῶν τοιούτων ὑπονοιῶν· 13 ὅ τε γὰρ Πίνδαρος ἐν τῷ διθυράμβῳ οὗ ἡ ἀρχή „πρὶν „μὲν εἷρπε σχοινοτένεια τ' ἀοιδὰ διθυράμβων,“ μνη-

σθεὶς τῶν περὶ τὸν Διόνυσον ὕμνων τῶν τε παλαιῶν καὶ τῶν ὕστερον, μεταβὰς ἀπὸ τούτων φησί „σοὶ μὲν „κατάρχειν, μᾶτερ μεγάλα, πάρα ῥόμβοι κυμβάλων, „ἐν δὲ κεχλάδειν κρόταλ᾽, αἰθομένα τε δὰς ὑπὸ ξαν„θαῖσι πεύκαις,“ τὴν κοινωνίαν τῶν περὶ τὸν Διόνυσον ἀποδειχθέντων νομίμων παρὰ τοῖς Ἕλλησι καὶ τῶν παρὰ τοῖς Φρυξὶ περὶ τὴν μητέρα τῶν θεῶν συνοικειῶν ἀλλήλοις. Εὐριπίδης τε ἐν ταῖς Βάκχαις τὰ παραπλήσια ποιεῖ, τοῖς Φρυγίοις ἅμα καὶ τὰ Λύδια συμφέρων διὰ τὸ ὅμορον „ἀλλ᾽ ὦ λιποῦσαι Τμῶλον, ἔρυμα „Λυδίας, θίασος ἐμὸς γυναῖκες, [ἃς ἐκ βαρβάρων ἐκό„μισα παρέδρους καὶ ξυνεμπόρους ἐμοί, αἴρεσθε τἀ„πιχώρι᾽ ἐν πόλει Φρυγῶν τύμπανα, Ῥέας τε μητρὸς „ἐμά θ᾽ εὑρήματα.“] καὶ πάλιν „ὦ μάκαρ, ὅστις εὐδαί„μων [τελετὰς θεῶν εἰδώς], βιοτὰν ἁγιστεύει. τά τε „ματρὸς μεγάλας ὄργια Κυβέλας θεμιστεύων ἀνὰ θύρ„σον τε τινάσσων, κισσῷ [τε] στεφανωθεὶς [Διόνυ„σον] θεραπεύει. ἴτε Βάκχαι, [ἴτε Βάκχαι,] βρόμιον „παῖδα θεὸν θεοῦ Διόνυσον κατάγουσαι Φρυγίων ἐξ „ὀρέων Ἑλλάδος εἰς εὐρυχόρους ἀγυιάς.“ πάλιν δ᾽ ἐν τοῖς ἑξῆς καὶ τὰ Κρητικὰ συμπλέκει τούτοις „ὦ θα„λάμευμα Κουρήτων, ζάθεοί τε Κρήτας διογενέτορες „ἔναυλοι, ἔνθα τρικόρυθες ἄντροις βυρσότονον κύ-
C.470 „κλωμα τόδε μοι Κορύβαντες εὗρον. ἀνὰ δὲ βακχεῖα „συντόνῳ κέρασαν ἁδυβόᾳ Φρυγίων αὐλῶν πνεύματι, „ματρός τε Ῥέας εἰς χέρα θῆκαν κτύπον εὐάσμασι „Βακχᾶν, παρὰ δὲ μαινόμενοι Σάτυροι ματέρος ἐξα„νύσαντο Ῥέας. εἰς δὲ χορεύματα προσῆψαν τριετη„ρίδων, αἷς χαίρει Διόνυσος.“ καὶ ἐν Παλαμήδει φησὶν ὁ χορός „οὐ σὺν Διονύσῳ * κωμᾶν, ὃς ἀν᾽ Ἴδαν „τέρπεται σὺν ματρὶ φίλᾳ τυμπάνων ἰάκχοις.“

14 Καὶ Σειληνὸν καὶ Μαρσύαν καὶ Ὄλυμπον συνά-

γοντες εἰς ἓν καὶ εὑρετὰς αὐλῶν ἱστοροῦντες πάλιν καὶ οὕτως τὰ Διονυσιακὰ καὶ Φρύγια εἰς ἓν συμφέρουσι, τήν τε Ἴδην καὶ τὸν Ὄλυμπον συγκεχυμένως πολλάκις ὡς τὸ αὐτὸ ὄρος κτυποῦσιν. εἰσὶ μὲν οὖν λόφοι τέτταρες Ὄλυμποι καλούμενοι τῆς Ἴδης κατὰ τὴν Ἀντανδρίαν, ἔστι δὲ καὶ ὁ Μυσὸς Ὄλυμπος, ὅμορος μὲν οὐχ ὁ αὐτὸς δὲ τῇ Ἴδῃ. ὁ δ' οὖν Σοφοκλῆς ποιήσας τὸν Μενέλαον ἐκ τῆς Τροίας ἀπαίρειν σπεύδοντα ἐν τῇ Πολυξένῃ, τὸν δ' Ἀγαμέμνονα μικρὸν ὑπολειφθῆναι βουλόμενον τοῦ ἐξιλάσασθαι τὴν Ἀθηνᾶν χάριν, εἰσάγει λέγοντα τὸν Μενέλαον „σὺ δ' αὖθι μίμνων που κατ' Ἰδαίαν χθόνα ποίμνας Ὀλύμπου συναγαγὼν θυηπόλει.“

15 Τῷ δ' αὐλῷ καὶ κτύπῳ κροτάλων τε καὶ κυμβάλων καὶ τυμπάνων καὶ ταῖς ἐπιβοήσεσι καὶ εὐασμοῖς καὶ ποδοκρουστίαις οἰκεῖα ἐξεύροντο καί τινα τῶν ὀνομάτων, ἃ τοὺς προπόλους καὶ χορευτὰς καὶ θεραπευτὰς τῶν ἱερῶν ἐκάλουν, Καβείρους καὶ Κορύβαντας καὶ Πᾶνας καὶ Σατύρους καὶ Τιτύρους καὶ τὸν θεὸν Βάκχον καὶ τὴν Ῥέαν Κυβέλην καὶ Κυβήβην καὶ Δινδυμήνην κατὰ τοὺς τόπους αὐτούς. καὶ ὁ Σαβάζιος δὲ τῶν Φρυγιακῶν ἐστι καὶ τρόπον τινὰ τῆς μητρὸς τὸ παιδίον παραδοὺς τὰ τοῦ Διονύσου καὶ αὐτός.

16 Τούτοις δ' ἔοικε καὶ τὰ παρὰ τοῖς Θρᾳξὶ τά τε Κοτύττια καὶ τὰ Βενδίδεια, παρ' οἷς καὶ τὰ Ὀρφικὰ τὴν καταρχὴν ἔσχε. τῆς μὲν οὖν Κότυος τῆς ἐν τοῖς Ἠδωνοῖς Αἰσχύλος μέμνηται καὶ τῶν περὶ αὐτὴν ὀργάνων. εἰπὼν γὰρ „σεμνὰ Κότυς“ ἐν τοῖς Ἠδωνοῖς „ὄρεια δ' ὄργαν' ἔχοντες,“ τοὺς περὶ τὸν Διόνυσον εὐθέως ἐπιφέρει „ὁ μὲν ἐν χερσὶν βόμβυκας ἔχων, τόρνου κάματον, δακτυλόδικτον πίμπλησι μέλος, μανίας ἐπαγωγὸν ὁμοκλάν· ὁ δὲ χαλκοδέτοις κοτύλαις ὀτο-

C.471 „βεῖ.“ καὶ πάλιν „ψαλμὸς δ' ἀλαλάζει· ταυρόφθογγοι „δ' ὑπομυκῶνται ποθὲν ἐξ ἀφανοῦς φοβεροὶ μῖμοι, „τυπάνου δ' εἰκὼν ὥσθ' ὑπογαίου βροντῆς φέρεται „βαρυταρβής.“ ταῦτα γὰρ ἔοικε τοῖς Φρυγίοις· καὶ οὐκ ἀπεικός γε, ὥσπερ αὐτοὶ οἱ Φρύγες Θρᾳκῶν ἄποικοί εἰσιν, οὕτω καὶ τὰ ἱερὰ ἐκεῖθεν μετενηνέχθαι. καὶ τὸν Διόνυσον δὲ καὶ τὸν Ἠδωνὸν Λυκοῦργον συνάγοντες εἰς ἓν τὴν ὁμοιοτροπίαν τῶν ἱερῶν αἰνίττονται.

17 Ἀπὸ δὲ τοῦ μέλους καὶ τοῦ ῥυθμοῦ καὶ τῶν ὀργάνων καὶ ἡ μουσικὴ πᾶσα Θρᾳκία καὶ Ἀσιᾶτις νενόμισται. δῆλον δ' ἔκ τε τῶν τόπων ἐν οἷς αἱ Μοῦσαι τετίμηνται· Πιερία γὰρ καὶ Ὄλυμπος καὶ Πίμπλα καὶ Λείβηθρον τὸ παλαιὸν ἦν Θρᾴκια χωρία καὶ ὄρη, νῦν δὲ ἔχουσι Μακεδόνες· τόν τε Ἑλικῶνα καθιέρωσαν ταῖς Μούσαις Θρᾷκες οἱ τὴν Βοιωτίαν ἐποικήσαντες, οἵπερ καὶ τὸ τῶν Λειβηθριάδων νυμφῶν ἄντρον καθιέρωσαν. οἵ τ' ἐπιμεληθέντες τῆς ἀρχαίας μουσικῆς Θρᾷκες λέγονται, Ὀρφεύς τε καὶ Μουσαῖος καὶ Θάμυρις, καὶ τῷ Εὐμόλπῳ δὲ τοὔνομα ἐνθένδε, καὶ οἱ τῷ Διονύσῳ τὴν Ἀσίαν ὅλην καθιερώσαντες μέχρι τῆς Ἰνδικῆς ἐκεῖθεν καὶ τὴν πολλὴν μουσικὴν μεταφέρουσι· καὶ ὁ μέν τίς φησιν „κιθάραν Ἀσιᾶτιν ῥάσσων,“ ὁ δὲ τοὺς αὐλοὺς Βερεκυντίους καλεῖ καὶ Φρυγίους· καὶ τῶν ὀργάνων ἔνια βαρβάρως ὠνόμασται νάβλας καὶ σαμβύκη καὶ βάρβιτος καὶ μαγάδις καὶ ἄλλα πλείω.

18 Ἀθηναῖοι δ' ὥσπερ περὶ τὰ ἄλλα φιλοξενοῦντες διατελοῦσιν, οὕτω καὶ περὶ τοὺς θεούς. πολλὰ γὰρ τῶν ξενικῶν ἱερῶν παρεδέξαντο ὥστε καὶ ἐκωμῳδήθησαν· καὶ δὴ καὶ τὰ Θρᾴκια καὶ τὰ Φρύγια. τῶν μὲν γὰρ Βενδιδείων Πλάτων μέμνηται, τῶν δὲ Φρυγίων Δημοσθένης διαβάλλων τὴν Αἰσχίνου μητέρα καὶ αὐτὸν ὡς τελούσῃ τῇ μητρὶ συνόντα καὶ συνθιασεύοντα

καὶ ἐπιφθεγγόμενον „εὐοῖ σαβοῖ“ πολλάκις καὶ „ὕης „ἄττης [ἄττης] ὕης.“ ταῦτα γάρ ἐστι σαβάζια καὶ μητρῷα.

Ἔτι δ᾽ ἄν τις καὶ ταῦτα [εὕροι] περὶ τῶν δαιμόνων 19
τούτων καὶ τῆς τῶν ὀνομάτων ποικιλίας, καὶ ὅτι οὐ πρόπολοι θεῶν μόνον ἀλλὰ καὶ αὐτοὶ θεοὶ προσηγορεύθησαν. Ἡσίοδος μὲν γὰρ *Ἑκατέρω καὶ τῆς Φορωνέως θυγατρὸς πέντε γενέσθαι θυγατέρας φησίν „ἐξ ὧν οὔρειαι Νύμφαι θεαὶ [ἐξ]εγένοντο, καὶ γένος „οὐτιδανῶν Σατύρων καὶ ἀμηχανοεργῶν, Κουρῆτές „τε θεοὶ φιλοπαίγμονες ὀρχηστῆρες.“ ὁ δὲ τὴν Φορωνίδα γράψας αὐλητὰς καὶ Φρύγας τοὺς Κουρῆτας C.472
λέγει, ἄλλοι δὲ γηγενεῖς καὶ χαλκάσπιδας· οἱ δ᾽ οὐ τοὺς Κουρῆτας, ἀλλὰ τοὺς Κορύβαντας Φρύγας, ἐκείνους δὲ Κρῆτας, περιθέσθαι δ᾽ ὅπλα χαλκᾶ πρώτους ἐν Εὐβοίᾳ· διὸ καὶ Χαλκιδέας αὐτοὺς κληθῆναι· οἱ δ᾽ ὑπὸ Τιτάνων Ῥέᾳ δοθῆναι προπόλους ἐνόπλους τοὺς Κορύβαντας ἐκ τῆς Βακτριανῆς ἀφιγμένους, οἱ δ᾽ ἐκ Κόλχων φασίν. ἐν δὲ τοῖς Κρητικοῖς λόγοις οἱ Κουρῆτες Διὸς τροφεῖς λέγονται καὶ φύλακες, εἰς Κρήτην ἐκ Φρυγίας μεταπεμφθέντες ὑπὸ τῆς Ῥέας· οἱ δὲ Τελχίνων ἐν Ῥόδῳ ἐννέα ὄντων τοὺς Ῥέᾳ συνακολουθήσαντας εἰς Κρήτην καὶ τὸν Δία κουροτροφήσαντας Κουρῆτας ὀνομασθῆναι· Κύρβαντα δὲ τούτων ἑταῖρον Ἱεραπύτνης ὄντα κτίστην παρὰ τοῖς Ῥοδίοις παρασχεῖν πρόφασιν τοῖς Πρασίοις ὥστε λέγειν, ὡς εἶεν Κορύβαντες δαίμονές τινες Ἀθηνᾶς καὶ Ἡλίου παῖδες. ἔτι δὲ Κρόνου τινές, ἄλλοι δὲ Διὸς καὶ Καλλιόπης φασὶ τοὺς Κορύβαντας τοὺς αὐτοὺς τοῖς Καβείροις ὄντας, ἀπελθεῖν δὲ τούτους εἰς Σαμοθρᾴκην

---

28. post τινὲς: τοὺς Κορύβαντας

καλουμένην πρότερον Μελίτην, τὰς δὲ πράξεις αὐτῶν μυστικὰς εἶναι.

20 Ταῦτα δ' οὐκ ἀποδεξάμενος ὁ Σκήψιος ὁ τοὺς μύθους συναγαγὼν τούτους, ὡς μηδενὸς ἐν Σαμοθρᾴκῃ μυστικοῦ λόγου περὶ Καβείρων λεγομένου, παρατίθησιν ὁμοίως καὶ Στησιμβρότου τοῦ Θασίου δόξαν, ὡς τὰ ἐν Σαμοθρᾴκῃ ἱερὰ τοῖς Καβείροις ἐπιτελοῖτο· καλεῖσθαι δέ φησιν αὐτοὺς ἐκεῖνος ἀπὸ τοῦ ὄρους τοῦ ἐν τῇ Βερεκυντίᾳ Καβείρου. οἱ δ' Ἑκάτης προπόλους νομίζουσι τοὺς Κουρῆτας τοὺς αὐτοὺς τοῖς Κορύβασιν ὄντας. φησὶ δὲ πάλιν ὁ Σκήψιος ἐν τῇ Κρήτῃ τὰς τῆς Ῥέας τιμὰς μὴ νομίζεσθαι μηδὲ ἐπιχωριάζειν, ὑπεναντιούμενος τῷ τοῦ Εὐριπίδου λόγῳ, ἀλλ' ἐν τῇ Φρυγίᾳ μόνον καὶ τῇ Τρῳάδι, τοὺς δὲ λέγοντας μυθολογεῖν μᾶλλον ἢ ἱστορεῖν, πρὸς τοῦτο δὲ καὶ τὴν τῶν τόπων ὁμωνυμίαν συμπρᾶξαι τυχὸν ἴσως αὐτοῖς· Ἴδη γὰρ τὸ ὄρος τό τε Τρωικὸν καὶ τὸ Κρητικόν, καὶ Δίκτη τόπος ἐν τῇ Σκηψίᾳ καὶ ὄρος ἐν Κρήτῃ· τῆς δὲ Ἴδης λόφος Πύτνα... ἀφ' οὗ Ἱεράπυτνα ἡ πόλις, Ἱπποκόρωνά τε τῆς Ἀδραμυττηνῆς καὶ Ἱπποκορώνιον ἐν Κρήτῃ, Σαμώνιόν τε τὸ ἑωθινὸν ἀκρωτήριον τῆς νήσου καὶ πεδίον ἐν τῇ Νεανδρίδι καὶ τῇ Ἀλεξανδρέων.

21 Ἀκουσίλαος δ' ὁ Ἀργεῖος ἐκ Καβειροῦς καὶ Ἡφαίστου Κάμιλλον λέγει, τοῦ δὲ τρεῖς Καβείρους, * οἷς νύμφας Καβειρίδας· Φερεκύδης δ' ἐξ Ἀπόλλωνος καὶ Ῥητίας Κύρβαντας ἐννέα, οἰκῆσαι δ' αὐτοὺς ἐν Σαμοθρᾴκῃ· ἐκ δὲ Καβειροῦς τῆς Πρωτέως καὶ Ἡφαίστου Καβείρους τρεῖς καὶ νύμφας τρεῖς Καβειρίδας, C.473 ἑκατέροις δ' ἱερὰ γίνεσθαι. μάλιστα μὲν οὖν ἐν Ἴμβρῳ καὶ Λήμνῳ τοὺς Καβείρους τιμᾶσθαι συμβέβηκεν, ἀλλὰ καὶ ἐν Τροίᾳ κατὰ πόλεις· τὰ δ' ὀνόματα αὐτῶν ἐστι μυστικά. Ἡρόδοτος δὲ καὶ ἐν Μέμφει λέ-

γει τῶν Καβείρων ἱερὰ καθάπερ καὶ τοῦ Ἡφαίστου, διαφθεῖραι δ' αὐτὰ Καμβύσην. ἔστι δ' ἀοίκητα τὰ χωρία τῆς τῶν δαιμόνων τούτων τιμῆς, τό τε Κορυβαντεῖον τὸ ἐν τῇ Ἁμαξιτίᾳ τῆς νῦν Ἀλεξανδρέων χώρας ἐγγὺς τοῦ Σμινθίου, καὶ ἡ Κορύβισσα ἐν τῇ Σκηψίᾳ περὶ ποταμὸν Εὐρήεντα καὶ κώμην ὁμώνυμον καὶ ἔτι χείμαρρον Αἰθαλόεντα. πιθανὸν δέ φησιν ὁ Σκήψιος, Κουρῆτας μὲν καὶ Κορύβαντας εἶναι τοὺς αὐτούς, οἳ περὶ τὰς τῆς μητρὸς τῶν θεῶν ἁγιστείας πρὸς ἐνόπλιον ὄρχησιν ἤθεοι καὶ κόροι τυγχάνουσι παρειλημμένοι. καὶ Κορύβαντες δὲ ἀπὸ τοῦ κορύπτοντας βαίνειν ὀρχηστικῶς, οὓς καὶ βητάρμονας λέγει ὁ ποιητής „δεῦτ' ἄγε Φαιήκων βητάρμονες, ὅσσοι ἄριστοι.“ τῶν δὲ Κορυβάντων ὀρχηστικῶν καὶ ἐνθουσιαστικῶν ὄντων καὶ τοὺς μανικῶς κινουμένους κορυβαντιᾶν φαμεν.

Δακτύλους δ' Ἰδαίους φασί τινες κεκλῆσθαι τοὺς 22
πρώτους οἰκήτορας τῆς κατὰ τὴν Ἴδην ὑπωρείας· πόδας μὲν γὰρ λέγεσθαι τὰς ὑπωρείας, κορυφὰς δὲ τὰ ἄκρα τῶν ὀρῶν· αἱ οὖν κατὰ μέρος ἐσχατιαὶ καὶ πᾶσαι τῆς μητρὸς τῶν θεῶν ἱεραὶ περὶ τὴν Ἴδην .... Σοφοκλῆς δὲ οἴεται πέντε τοὺς πρώτους ἄρσενας γενέσθαι, οἳ σίδηρόν τε ἐξεῦρον καὶ εἰργάσαντο πρῶτοι καὶ ἄλλα πολλὰ τῶν πρὸς τὸν βίον χρησίμων, πέντε δὲ καὶ ἀδελφὰς τούτων, ἀπὸ δὲ τοῦ ἀριθμοῦ δακτύλους κληθῆναι. ἄλλοι δ' ἄλλως μυθεύουσιν ἀπόροις ἄπορα συνάπτοντες, διαφόροις δὲ καὶ τοῖς ὀνόμασι καὶ τοῖς ἀριθμοῖς χρῶνται, ὧν Κέλμιν ὀνομάζουσί τινα καὶ Δαμναμενέα καὶ Ἡρακλέα καὶ Ἄκμονα· καὶ οἱ μὲν ἐπιχωρίους τῆς Ἴδης οἱ δὲ ἐποίκους, πάντες δὲ σίδηρον εἰργάσθαι ὑπὸ τούτων ἐν Ἴδῃ πρῶτόν φασι, πάντες δὲ καὶ γόητας ὑπειλήφασι καὶ περὶ τὴν μητέρα

τῶν θεῶν καὶ ἐν Φρυγίᾳ ᾠκηκότας περὶ τὴν Ἴδην, Φρυγίαν τὴν Τρῳάδα καλοῦντες διὰ τὸ τοὺς Φρύγας ἐπικρατῆσαι πλησιοχώρους ὄντας τῆς Τροίας ἐκπεπορθημένης. ὑπονοοῦσι δὲ τῶν Ἰδαίων δακτύλων ἐκγόνους εἶναι τούς τε Κουρῆτας καὶ τοὺς Κορύβαντας· τοὺς γοῦν πρώτους γεννηθέντας ἐν Κρήτῃ ἑκατὸν ἄνδρας Ἰδαίους δακτύλους κληθῆναι, τούτων δ' ἀπογόνους φασὶ Κουρῆτας ἐννέα γενέσθαι, τούτων δ' ἕκαστον δέκα παῖδας τεκνῶσαι τοὺς Ἰδαίους καλουμένους δακτύλους.

C.474 23 Προήχθημεν δὲ διὰ πλειόνων εἰπεῖν περὶ τούτων καίπερ ἥκιστα φιλομυθοῦντες, ὅτι τοῦ θεολογικοῦ γένους ἐφάπτεται τὰ πράγματα ταῦτα. πᾶς δὲ ὁ περὶ τῶν θεῶν λόγος ἀρχαίας ἐξετάζει δόξας καὶ μύθους, αἰνιττομένων τῶν παλαιῶν ἃς εἶχον ἐννοίας φυσικὰς περὶ τῶν πραγμάτων καὶ προστιθέντων ἀεὶ τοῖς λόγοις τὸν μῦθον. ἅπαντα μὲν οὖν τὰ αἰνίγματα λύειν ἐπ' ἀκριβὲς οὐ ῥᾴδιον, τοῦ δὲ πλήθους τῶν μυθευομένων ἐκτεθέντος εἰς τὸ μέσον, τῶν μὲν ὁμολογούντων ἀλλήλοις τῶν δ' ἐναντιουμένων, εὐπορώτερον ἂν τις δύναιτο εἰκάζειν ἐξ αὐτῶν τἀληθές· οἷον τὰς ὀρειβασίας τῶν περὶ τὸ θεῖον σπουδαζόντων καὶ αὐτῶν τῶν θεῶν καὶ τοὺς ἐνθουσιασμοὺς εἰκότως μυθεύουσι κατὰ τὴν αὐτὴν αἰτίαν καθ' ἣν καὶ οὐρανίους νομίζουσι τοὺς θεοὺς καὶ προνοητικοὺς τῶν τε ἄλλων καὶ τῶν προσημασιῶν· τῇ μὲν οὖν ὀρειβασίᾳ τὸ μεταλλευτικὸν καὶ τὸ θηρευτικὸν [καὶ] ζητητικὸν τῶν πρὸς τὸν βίον χρησίμων ἐφάνη συγγενές, τῶν δ' ἐνθουσιασμῶν καὶ θρησκείας καὶ μαντικῆς τὸ ἀγυρτικὸν καὶ γοητεία ἐγγύς. τοιοῦτον δὲ καὶ τὸ φιλότεχνον μάλιστα τὸ περὶ τὰς Διονυσιακὰς τέχνας καὶ τὰς Ὀρφικάς. ἀλλ' ἀπόχρη περὶ αὐτῶν.

4 Ἐπεὶ δὲ πρῶτον περὶ τῶν τῆς Πελοποννήσου νήσων τῶν τε ἄλλων διῆλθον καὶ τῶν ἐν τῷ Κορινθιακῷ κόλπῳ καὶ τῶν πρὸ αὐτοῦ, περὶ τῆς Κρήτης ἐφεξῆς ῥητέον (καὶ γὰρ αὕτη τῆς Πελοποννήσου ἐστί) καὶ εἴ τις περὶ τὴν Κρήτην· ἐν δὲ ταύταις αἵ τε Κυκλάδες εἰσὶ καὶ αἱ Σποράδες, αἱ μὲν ἄξιαι μνήμης αἱ δ' ἀσημότεραι.

2 Νυνὶ δὲ περὶ τῆς Κρήτης πρῶτον λέγωμεν. Εὔδοξος μὲν οὖν ἐν τῷ Αἰγαίῳ φησὶν αὐτὴν ἱδρῦσθαι· δεῖ δὲ μὴ οὕτως, ἀλλὰ κεῖσθαι μὲν μεταξὺ τῆς Κυρηναίας καὶ τῆς Ἑλλάδος τῆς ἀπὸ Σουνίου μέχρι τῆς Λακωνικῆς, ἐπὶ μῆκος ταύταις ταῖς χώραις παράλληλον ἀπὸ τῆς ἑσπέρας ἐπὶ τὴν ἕω· κλύζεσθαι δὲ ἀπὸ μὲν τῶν ἄρκτων τῷ Αἰγαίῳ πελάγει καὶ τῷ Κρητικῷ, ἀπὸ δὲ τοῦ νότου τῷ Λιβυκῷ τῷ συνάπτοντι πρὸς τὸ Αἰγύπτιον πέλαγος. τῶν δὲ ἄκρων τὸ μὲν ἑσπέριόν ἐστι τὸ περὶ Φαλάσαρνα, πλάτος ἔχον διακοσίων που σταδίων καὶ εἰς δύο ἀκρωτήρια μεριζόμενον (ὧν τὸ μὲν νότιον καλεῖται Κριοῦ μέτωπον τὸ δ' ἀρκτικὸν Κίμαρος), τὸ δ' ἑῷον τὸ Σαμώνιόν ἐστιν ὑπερπῖπτον τοῦ Σουνίου οὐ πολὺ πρὸς ἕω.

3 Μέγεθος δὲ Σωσικράτης μέν, ὅν φησιν ἀκριβοῦν Ἀπολλόδωρος τὰ περὶ τὴν νῆσον, ἀφορίζεται μήκει μὲν πλειόνων ἢ δισχιλίων σταδίων καὶ τριακοσίων, C.475 πλάτει δὲ * ὑπὸ τὸ μέγεθος, ὥσθ' ὁ κύκλος κατὰ τοῦτον γίνοιτ' ἂν πλέον ἢ πεντακισχίλιοι στάδιοι· Ἀρτεμίδωρος δὲ τετρακισχιλίους καὶ ἑκατόν φησιν. Ἱερώνυμος δὲ μῆκος δισχιλίων φήσας τὸ δὲ πλάτος ἀνώμαλον, πλειόνων ἂν εἴη λέγων τὸν κύκλον ἢ ὅσων Ἀρτεμίδωρος. κατὰ δὲ τὸ τρίτον μέρος τοῦ μήκους . . .

. . . .

τὸ δὲ ἔνθεν ἰσθμός ἐστιν ὡς ἑκατὸν σταδίων ἔχων κα-

τοικίαν πρὸς μὲν τῇ βορείῳ θαλάττῃ Ἀμφίμαλλαν, πρὸς δὲ τῇ νοτίῳ Φοίνικα τὸν Λαμπέων· πλατυτάτη δὲ κατὰ τὸ μέσον ἐστί, πάλιν δ' ἐντεῦθεν εἰς στενώτερον τοῦ προτέρου συμπίπτουσιν ἰσθμὸν αἱ ᾐόνες περὶ ἑξήκοντα σταδίων, τὸν ἀπὸ Μινώας τῆς Λυττίων εἰς Ἱεράπυτναν καὶ τὸ Λιβυκὸν πέλαγος· ἐν κόλπῳ δ' ἐστὶν ἡ πόλις. εἶτα πρόεισιν εἰς ὀξὺ ἀκρωτήριον τὸ Σαμώνιον ἐπὶ τὴν Αἴγυπτον νεῦον καὶ τὰς Ῥοδίων νήσους.

4 Ἔστι δ' ὀρεινὴ καὶ δασεῖα ἡ νῆσος, ἔχει δ' αὐλῶνας εὐκάρπους. τῶν δ' ὀρῶν τὰ μὲν πρὸς δύσιν καλεῖται Λευκά, οὐ λειπόμενα τοῦ Ταϋγέτου κατὰ τὸ ὕψος, ἐπὶ τὸ μῆκος δ' ἐκτεταμένα ὅσον τριακοσίων σταδίων καὶ ποιοῦντα ῥάχιν τελευτῶσάν πως ἐπὶ τὰ στενά. ἐν μέσῳ δ' ἐστὶ κατὰ τὸ εὐρυχωρότατον τῆς νήσου τὸ Ἰδαῖον ὄρος ὑψηλότατον τῶν ἐκεῖ, περιφερὲς δ' ἐν κύκλῳ σταδίων ἑξακοσίων· περιοικεῖται δ' ὑπὸ τῶν ἀρίστων πόλεων. ἄλλα δ' ἐστὶ πάρισα τοῖς Λευκοῖς, τὰ μὲν ἐπὶ νότον τὰ δ' ἐπὶ τὴν ἕω λήγοντα.

5 Ἔστι δ' ἀπὸ τῆς Κυρηναίας ἐπὶ τὸ Κριοῦ μέτωπον δυεῖν ἡμερῶν καὶ νυκτῶν πλοῦς, ἀπὸ δὲ Κιμάρου [ἐπὶ Ταίναρον] εἰσὶ στάδιοι ἑπτακόσιοι (μεταξὺ δὲ Κύθηρα), ἀπὸ δὲ τοῦ Σαμωνίου πρὸς Αἴγυπτον τεττάρων ἡμερῶν καὶ νυκτῶν πλοῦς, οἱ δὲ τριῶν φασι· σταδίων δ' εἶναι τοῦτόν τινες πεντακισχιλίων εἰρήκασιν, οἱ δὲ ἔτι ἐλαττόνων. Ἐρατοσθένης δ' ἀπὸ μὲν τῆς Κυρηναίας μέχρι Κριοῦ μετώπου δισχιλίους φησίν, ἔνθεν δ' εἰς Πελοπόννησον ἐλάττους.....

6 „Ἄλλη δ' ἄλλων γλῶσσα μεμιγμένη“ φησὶν ὁ ποιητής „ἐν μὲν Ἀχαιοί, ἐν δ' Ἐτεόκρητες μεγαλήτο„ρες, ἐν δὲ Κύδωνες, Δωριέες τε τριχάικες δῖοί τε „Πελασγοί.“ τούτων φησὶ Στάφυλος τὸ μὲν πρὸς ἕω Δωριεῖς κατέχειν, τὸ δὲ δυσμικὸν Κύδωνας, τὸ [δὲ]

νότιον Ἐτεόκρητας, ὧν εἶναι πολίχνιον Πρᾶσον, ὅπου τὸ τοῦ Δικταίου Διὸς ἱερόν· τοὺς δ' ἄλλους ἰσχύοντας πλέον οἰκῆσαι τὰ πεδία. τοὺς μὲν οὖν Ἐτεόκρητας καὶ τοὺς Κύδωνας αὐτόχθονας ὑπάρξαι εἰκός, τοὺς δὲ λοιποὺς ἐπήλυδας, οὓς ἐκ Θετταλίας φησὶν ἐλθεῖν Ἄνδρων τῆς Δωρίδος μὲν πρότερον νῦν δὲ Ἑστιαιώτιδος λεγομένης· ἐξ ἧς ὡρμήθησαν, ὥς φησιν, οἱ περὶ τὸν Παρνασσὸν οἰκήσαντες Δωριεῖς καὶ ἔκτισαν τήν τε C.476 Ἐρινεὸν καὶ Βοιὸν καὶ Κυτίνιον, ἀφ' οὗ καὶ τριχάικες ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ λέγονται. οὐ πάνυ δὲ τὸν τοῦ Ἄνδρωνος λόγον ἀποδέχονται, τὴν μὲν τετράπολιν Δωρίδα τρίπολιν ἀποφαίνοντος, τὴν δὲ μητρόπολιν τῶν Δωριέων ἄποικον Θετταλῶν· τριχάικας δὲ δέχονται ἤτοι ἀπὸ τῆς τριλοφίας ἢ ἀπὸ τοῦ τριχίνους εἶναι τοὺς λόφους.

7 Πόλεις δ' εἰσὶν ἐν τῇ Κρήτῃ πλείους μέν, μέγισται δὲ καὶ ἐπιφανέσταται τρεῖς, Κνωσσὸς Γόρτυνα Κυδωνία. διαφερόντως δὲ τὴν Κνωσσὸν καὶ Ὅμηρος ὑμνεῖ μεγάλην καλῶν καὶ βασίλειον τοῦ Μίνω καὶ οἱ ὕστερον. καὶ δὴ καὶ διετέλεσε μέχρι πολλοῦ φερομένη τὰ πρῶτα, εἶτα ἐταπεινώθη καὶ πολλὰ τῶν νομίμων ἀφῃρέθη, μετέστη δὲ τὸ ἀξίωμα εἴς τε Γόρτυναν καὶ Λύττον, ὕστερον δ' ἀνέλαβε πάλιν τὸ παλαιὸν σχῆμα τὸ τῆς μητροπόλεως. κεῖται δ' ἐν πεδίῳ κύκλον ἔχουσα ἡ Κνωσσὸς τὸν ἀρχαῖον τριάκοντα σταδίων, μεταξὺ τῆς Λυκτίας καὶ τῆς Γορτυνίας, [διέχουσα τῆς μὲν Γορτύνης] σταδίους διακοσίους, τῆς δὲ Λύττου, ἣν ὁ ποιητὴς Λύκτον ὠνόμασεν, ἑκατὸν εἴκοσι· τῆς δὲ θαλάττης Κνωσσὸς μὲν τῆς βορείου πέντε καὶ εἴκοσι, Γόρτυνα δὲ τῆς Λιβυκῆς ἐνενήκοντα, Λύττος δὲ καὶ αὐτὴ

15. post λόφους: εὐαμισολόφος.

τῆς Λιβυκῆς ὀγδοήκοντα. ἔχει δ' ἐπίνειον τὸ Ἡράκλειον ἡ Κνωσσός.

8 Μίνω δέ φασιν ἐπινείῳ χρήσασθαι τῷ Ἀμνισῷ, ὅπου τὸ τῆς Εἰλειθυίας ἱερόν. ἐκαλεῖτο δ' ἡ Κνωσσὸς Καίρατος πρότερον ὁμώνυμος τῷ παραρρέοντι ποταμῷ. ἱστόρηται δ' ὁ Μίνως νομοθέτης γενέσθαι σπουδαῖος θαλαττοκρατῆσαί τε πρῶτος, τριχῇ δὲ διελὼν τὴν νῆσον ἐν ἑκάστῳ τῷ μέρει κτίσαι πόλιν, τὴν μὲν Κνωσσὸν ἐν τῷ . . . .

. . . .

. . . .

καταντικρὺ τῆς Πελοποννήσου· καὶ αὐτὴ δ' ἐστὶ προσβόρειος. ὡς δ' εἴρηκεν Ἔφορος, ζηλωτὴς ὁ Μίνως ἀρχαίου τινὸς Ῥαδαμάνθυος δικαιοτάτου ἀνδρὸς ὁμωνύμου τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ, ὃς πρῶτος τὴν νῆσον ἐξημερῶσαι δοκεῖ νομίμοις καὶ συνοικισμοῖς πόλεων καὶ πολιτείαις, σκηψάμενος παρὰ Διὸς φέρειν ἕκαστα τῶν τιθεμένων δογμάτων εἰς μέσον. τοῦτον δὴ μιμούμενος καὶ ὁ Μίνως δι' ἐννέα ἐτῶν, ὡς ἔοικεν, ἀναβαίνων ἐπὶ τὸ τοῦ Διὸς ἄντρον καὶ διατρίβων ἐνθάδε, ἀπήει συντεταγμένα ἔχων παραγγέλματά τινα, ἃ ἔφασκεν εἶναι προστάγματα τοῦ Διός· ἀφ' ἧς αἰτίας καὶ τὸν ποιητὴν οὕτως εἰρηκέναι „ἐνθάδε Μίνως ἐννέω-„ρος βασίλευε Διὸς μεγάλου ὀαριστής.“ τοιαῦτα δ' εἰπόντος οἱ ἀρχαῖοι περὶ αὐτοῦ πάλιν ἄλλους εἰρήκασι λόγους ὑπεναντίους τούτοις, ὡς τυραννικός τε γέ-
C.477 νοιτο καὶ βίαιος καὶ δασμολόγος, τραγῳδοῦντες τὰ περὶ τὸν Μινώταυρον καὶ τὸν λαβύρινθον καὶ τὰ Θησεῖ συμβάντα καὶ Δαιδάλῳ.

9 Ταῦτα μὲν οὖν ὁποτέρως ἔχει χαλεπὸν εἰπεῖν. ἔστι δὲ καὶ ἄλλος λόγος οὐχ ὁμολογούμενος, τῶν μὲν ξένον τῆς νήσου τὸν Μίνω λεγόντων τῶν δ' ἐπιχώριον.

ὁ μέντοι ποιητὴς τῇ δευτέρᾳ δοκεῖ μᾶλλον συνηγορεῖν ἀποφάσει, ὅταν φῇ ὅτι [Ζεὺς] „πρῶτον Μίνωα τέκε „Κρήτῃ ἐπίουρον.“ ὑπὲρ τῆς Κρήτης ὁμολογεῖται διότι κατὰ τοὺς παλαιοὺς χρόνους ἐτύγχανεν εὐνομουμένη καὶ ζηλωτὰς ἑαυτῆς τοὺς ἀρίστους τῶν Ἑλλήνων ἀπέφηνεν, ἐν δὲ τοῖς πρώτοις Λακεδαιμονίους, καθάπερ Πλάτων τε ἐν τοῖς νόμοις δηλοῖ καὶ Ἔφορος ἐν τῇ Εὐρώπῃ ἀναγέγραφεν· ὕστερον δὲ πρὸς τὸ χεῖρον μετέβαλεν ἐπὶ πλεῖστον. μετὰ γὰρ τοὺς Τυρρηνούς, οἳ μάλιστα ἐδῄωσαν τὴν καθ' ἡμᾶς θάλατταν, οὗτοί εἰσιν οἱ διαδεξάμενοι τὰ λῃστήρια· τούτους δ' ἐπόρθησαν ὕστερον οἱ Κίλικες· κατέλυσαν δὲ πάντας Ῥωμαῖοι τήν τε Κρήτην ἐκπολεμήσαντες καὶ τὰ πειρατικὰ τῶν Κιλίκων φρούρια. νῦν δὲ Κνωσσὸς καὶ Ῥωμαίων ἀποικίαν ἔχει.

Περὶ μὲν οὖν Κνωσσοῦ ταῦτα, πόλεως οὐκ ἀλλο- 10
τρίας ἡμῖν, διὰ δὲ τἀνθρώπινα καὶ τὰς ἐν αὐτοῖς μεταβολὰς καὶ συντυχίας ἐκλελειμμένων τῶν συμβολαίων τῶν ὑπαρξάντων ἡμῖν πρὸς τὴν πόλιν. Δορύλαος γὰρ ἦν ἀνὴρ τακτικός, τῶν Μιθριδάτου τοῦ Εὐεργέτου φίλων· οὗτος διὰ τὴν ἐν τοῖς πολεμικοῖς ἐμπειρίαν ξενολογεῖν ἀποδειχθεὶς πολὺς ἦν ἔν τε τῇ Ἑλλάδι καὶ τῇ Θρᾴκῃ, πολὺς δὲ καὶ τοῖς παρὰ τῆς Κρήτης ἰοῦσιν, οὔπω τὴν νῆσον ἐχόντων Ῥωμαίων, συχνοῦ δὲ ὄντος ἐν αὐτῇ τοῦ μισθοφορικοῦ καὶ στρατιωτικοῦ πλήθους, ἐξ οὗ καὶ τὰ λῃστήρια πληροῦσθαι συνέβαινεν. ἐπιδημοῦντος δὲ τοῦ Δορυλάου κατὰ τύχην ἐνέστη πόλεμος τοῖς Κνωσσίοις πρὸς τοὺς Γορτυνίους· αἱρεθεὶς δὲ στρατηγὸς καὶ κατορθώσας διὰ ταχέων ἤρατο τιμὰς τὰς μεγίστας, καὶ ἐπειδὴ μικρὸν

8. post Εὐρώπῃ: τῇ πολιτείᾳ 19. ante τῶν: καὶ

ὕστερον ἐξ ἐπιβουλῆς δολοφονηθέντα ἔγνω τὸν Εὐεργέτην ὑπὸ τῶν φίλων ἐν Σινώπῃ, τὴν διαδοχὴν δὲ εἰς γυναῖκα καὶ παιδία ἥκουσαν, ἀπογνοὺς τῶν ἐκεῖ κατέμεινεν [ἐν] τῇ Κνωσσῷ· τεκνοποιεῖται δ' ἐκ Μακέτιδος γυναικὸς Στερόπης τοὔνομα δύο μὲν υἱεῖς Λαγέταν καὶ Στρατάρχαν, ὧν τὸν Στρατάρχαν ἐσχατόγηρων καὶ ἡμεῖς ἤδη εἴδομεν, θυγατέρα δὲ μίαν. δυεῖν δὲ ὄντων υἱῶν τοῦ Εὐεργέτου διεδέξατο τὴν βασιλείαν Μιθριδάτης ὁ προσαγορευθεὶς Εὐπάτωρ ἕνδεκα ἔτη γεγονώς· τούτῳ σύντροφος ὑπῆρξεν ὁ τοῦ Φιλεταί-
C.478 ρου Δορύλαος· ἦν δ' ὁ Φιλέταιρος ἀδελφὸς τοῦ τακτικοῦ Δορυλάου. ἀνδρωθεὶς δ' ὁ βασιλεὺς ἐπὶ τοσοῦτο ἥρητο τῇ συντροφίᾳ τῇ πρὸς τὸν Δορύλαον ὥστ' οὐκ ἐκεῖνον μόνον εἰς τιμὰς ἦγε τὰς μεγίστας, ἀλλὰ καὶ τῶν συγγενῶν ἐπεμελεῖτο καὶ τοὺς ἐν Κνωσσῷ μετεπέμπετο· ἦσαν δ' οἱ περὶ Λαγέταν, τοῦ μὲν πατρὸς ἤδη τετελευτηκότος, αὐτοὶ δ' ἠνδρωμένοι, καὶ ἧκον ἀφέντες τὰ ἐν Κνωσσῷ· τοῦ δὲ Λαγέτα θυγάτηρ ἦν ἡ μήτηρ τῆς ἐμῆς μητρός. εὐτυχοῦντος μὲν δὴ ἐκείνου συνευτυχεῖν καὶ τούτοις συνέβαινε, καταλυθέντος δὲ (ἐφωράθη γὰρ ἀφιστὰς τοῖς Ῥωμαίοις τὴν βασιλείαν ἐφ' ᾧ αὐτὸς εἰς τὴν ἀρχὴν καταστήσεται) συγκατελύθη καὶ τὰ τούτων καὶ ἐταπεινώθησαν· ὠλιγωρήθη δὲ καὶ τὰ πρὸς τοὺς Κνωσσίους συμβόλαια καὶ αὐτοὺς μυρίας μεταβολὰς δεξαμένους.

11 Ἀλλὰ γὰρ ὁ μὲν περὶ τῆς Κνωσσοῦ λόγος τοιοῦτος. μετὰ δὲ ταύτην δευτερεῦσαι δοκεῖ κατὰ τὴν δύναμιν ἡ τῶν Γορτυνίων πόλις. συμπράττουσαί τε γὰρ ἀλλήλαις ἅπαντας ὑπηκόους εἶχον αὗται τοὺς ἄλλους, στασιάσασαί τε διέστησαν τὰ κατὰ τὴν νῆσον· προσθήκη δ' ἦν ἡ Κυδωνία μεγίστη ὁποτέροις προσγένοιτο. κεῖται δ' ἐν πεδίῳ καὶ ἡ τῶν Γορτυνίων πόλις,

τὸ παλαιὸν μὲν ἴσως τετειχισμένη (καθάπερ καὶ Ὅμηρος εἴρηκε „Γόρτυνά τε τειχήεσσαν“), ὕστερον δ' ἀποβαλοῦσα τὸ τεῖχος ἐκ θεμελίων καὶ πάντα τὸν χρόνον μείνασα ἀτείχιστος· καὶ γὰρ ὁ Φιλοπάτωρ Πτολεμαῖος ἀρξάμενος τειχίζειν ὅσον ἐπὶ ὀγδοήκοντα σταδίους παρῆλθε μόνον· ἀξιόλογον δ' οὖν ἐξεπλήρου ποτὲ κύκλον ἡ οἴκησις ὅσον πεντήκοντα σταδίων· διέχει δὲ τῆς Λιβυκῆς θαλάττης κατὰ Λεβῆνα τὸ ἐμπόριον αὐτῆς ἐνενήκοντα· ἔχει δέ τι καὶ ἄλλο ἐπίνειον τὸ Μάταλον, διέχει δ' αὐτῆς ἑκατὸν τριάκοντα. διαρρεῖ δ' αὐτὴν ὅλην ὁ Ληθαῖος ποταμός.

Ἐκ δὲ Λεβῆνος ἦν Λευκοκόμας τε καὶ ὁ ἐραστὴς 12
αὐτοῦ Εὐξύνθετος, οὓς ἱστορεῖ Θεόφραστος ἐν τῷ περὶ ἔρωτος λόγῳ, ἄθλων ὧν ὁ Λευκοκόμας τῷ Εὐξυνθέτῳ προσέταξεν ἕνα φήσας εἶναι τοῦτον, τὸν ἐν Πράσῳ κύνα ἀναγαγεῖν αὐτῷ· ὅμοροι δ' εἰσὶν αὐτοῖς οἱ Πράσιοι, τῆς μὲν θαλάττης ἑβδομήκοντα Γόρτυνος δὲ διέχοντες ἑκατὸν καὶ ὀγδοήκοντα. εἴρηται δὲ ὅτι τῶν Ἐτεοκρήτων ὑπῆρχεν ἡ Πρᾶσος καὶ διότι ἐνταῦθα τὸ τοῦ Δικταίου Διὸς ἱερόν· καὶ γὰρ ἡ Δίκτη πλησίον, οὐχ ὡς Ἄρατος „ὄρεος σχεδὸν Ἰδαίοιο.“ καὶ γὰρ χιλίους ἡ Δίκτη τῆς Ἴδης ἀπέχει, πρὸς ἀνίσχοντα ἥλιον ἀπ' αὐτῆς κειμένη, τοῦ δὲ Σαμωνίου ἑκατόν. μεταξὺ δὲ τοῦ Σαμωνίου καὶ τῆς Χερρονήσου ἡ Πρᾶσος ἵδρυτο ὑπὲρ τῆς θαλάττης ἑξήκοντα σταδίοις· κα- C.479
τέσκαψαν δ' Ἱεραπύτνιοι. οὐκ εὖ δὲ οὐδὲ τὸν Καλλίμαχον λέγειν φασίν, ὡς ἡ Βριτόμαρτις φεύγουσα τὴν Μίνω βίαν ἀπὸ τῆς Δίκτης ἅλοιτο εἰς ἁλιέων δίκτυα, καὶ διὰ τοῦτο αὐτὴ μὲν Δίκτυννα ὑπὸ τῶν Κυδωνιατῶν προσαγορευθείη, Δίκτη δὲ τὸ ὄρος· οὐδὲ γὰρ ὅλως ἐκ γειτόνων ἐστὶ τοῖς τόποις τούτοις ἡ Κυδωνία, πρὸς δὲ τοῖς ἑσπερίοις κεῖται τῆς νήσου πέρασι. τῆς

μέντοι Κυδωνίας ὅρος ἐστὶ Τίτυρος, ἐν ᾧ ἱερόν ἐστιν οὐ Δικταῖον ἀλλὰ Δικτύνναιον.

13 Κυδωνία δ' ἐπὶ θαλάττῃ μὲν ἵδρυται βλέπουσα πρὸς τὴν Λακωνικήν, διέχει δ' ἑκατέρας τὸ ἴσον τῆς τε Κνωσσοῦ καὶ τῆς Γόρτυνος οἷον ὀκτακοσίους σταδίους, Ἀπτέρας δὲ ὀγδοήκοντα, τῆς ταύτῃ δὲ θαλάττης τετταράκοντα. Ἀπτέρας δ' ἐπίνειόν ἐστι Κίσαμος· πρὸς ἑσπέραν δ' ὅμοροι τοῖς Κυδωνιάταις Πολυρρήνιοι, παρ' οἷς ἐστι τὸ τῆς Δικτύννης ἱερόν· ἀπέχουσι δὲ τῆς θαλάττης ὡς τριάκοντα σταδίους, Φαλασάρνης δὲ ἑξήκοντα. κωμηδὸν δ' ᾤκουν πρότερον· εἶτ' Ἀχαιοὶ καὶ Λάκωνες συνῴκησαν τειχίσαντες ἐρυμνὸν χωρίον βλέπον πρὸς μεσημβρίαν.

14 Τῶν δ' ὑπὸ Μίνω συνῳκισμένων τριῶν τὴν λοιπὴν (Φαιστὸς δ' ἦν αὕτη) κατέσκαψαν Γορτύνιοι, τῆς μὲν Γόρτυνος διέχουσαν ἑξήκοντα, τῆς δὲ θαλάττης εἴκοσι, τοῦ δὲ Ματάλου τοῦ ἐπινείου τετταράκοντα· τὴν δὲ χώραν ἔχουσιν οἱ κατασκάψαντες. Γορτυνίων δ' ἐστὶ καὶ τὸ Ῥύτιον σὺν τῇ Φαιστῷ „Φαιστόν τε Ῥύτιόν τε.“ ἐκ δὲ τῆς Φαιστοῦ τὸν τοὺς καθαρμοὺς ποιήσαντα διὰ τῶν ἐπῶν Ἐπιμενίδην φασὶν εἶναι. καὶ ὁ Λισσὴν δὲ τῆς Φαιστίας. Λύττου δέ, ἧς ἐμνήσθημεν καὶ πρότερον, ἐπίνειόν ἐστιν ἡ λεγομένη Χερρόνησος, ἐν ᾗ τὸ τῆς Βριτομάρτεως ἱερόν· αἱ δὲ συγκαταλεχθεῖσαι πόλεις οὐκέτ' εἰσὶ Μίλητός τε καὶ Λύκαστος, τὴν δὲ χώραν τὴν μὲν ἐνείμαντο Λύττιοι τὴν δὲ Κνώσσιοι κατασκάψαντες τὴν πόλιν.

15 Τοῦ δὲ ποιητοῦ τὸ μὲν ἑκατόμπολιν λέγοντος τὴν Κρήτην τὸ δὲ ἐνενηκοντάπολιν, Ἔφορος μὲν ὕστερον ἐπικτισθῆναι τὰς δέκα φησὶ μετὰ τὰ Τρωικὰ ὑπὸ τῶν

---

15. ante κατέσκαψαν: ἦν

Ἀλθαιμένει τῷ Ἀργείῳ συνακολουθησάντων Δωριέων· τὸν μὲν οὖν Ὀδυσσέα λέγει ἐνενηκοντάπολιν ὀνομάσαι· οὗτος μὲν οὖν πιθανός ἐστιν ὁ λόγος. ἄλλοι δ' ὑπὸ τῶν Ἰδομενέως ἐχθρῶν κατασκαφῆναί φασι τὰς δέκα· ἀλλ' οὔτε κατὰ τὰ Τρωικά φησιν ὁ ποιητὴς ἑκατοντάπολιν ὑπάρξαι τὴν Κρήτην, ἀλλὰ μᾶλλον κατ' αὐτόν (ἐκ γὰρ τοῦ ἰδίου προσώπου λέγει· εἰ δ' ἐκ τῶν τότε ὄντων τινὸς ἦν ὁ λόγος, καθάπερ ἐν τῇ Ὀδυσσείᾳ, C.480 ἡνίκα ἐνενηκοντάπολιν φράζει, καλῶς εἶχεν [ἂν] οὕτω δέχεσθαι), οὔτ' εἰ συγχωρήσαιμεν τοῦτό γε, ὁ ἑξῆς λόγος σώζοιτ' ἄν. οὔτε γὰρ κατὰ τὴν στρατείαν οὔτε μετὰ τὴν ἐπάνοδον τὴν ἐκεῖθεν τοῦ Ἰδομενέως εἰκός ἐστιν ὑπὸ τῶν ἐχθρῶν αὐτοῦ τὰς πόλεις ἠφανίσθαι ταύτας· ὁ γὰρ ποιητὴς φήσας „πάντας δ' Ἰδομενεὺς „Κρήτην εἰσήγαγ' ἑταίρους, οἳ φύγον ἐκ πολέμου, „πόντος δέ οἱ οὔτιν' ἀπηύρα,“ καὶ τούτου τοῦ πάθους ἐμέμνητ' ἄν· οὐ γὰρ δήπου Ὀδυσσεὺς μὲν ἔγνω τὸν ἀφανισμὸν τῶν πόλεων ὁ μηδενὶ συμμίξας τῶν Ἑλλήνων μήτε κατὰ τὴν πλάνην μήθ' ὕστερον, ὁ δὲ καὶ συστρατεύσας τῷ Ἰδομενεῖ καὶ συνανασωθεὶς οὐκ ἔγνω τὰ συμβάντα οἴκοι αὐτῷ. ἀλλὰ μὴν οὐδὲ μετὰ τὴν ἐπάνοδον· εἰ γὰρ μετὰ πάντων ἐσώθη τῶν ἑταίρων, ἰσχυρὸς ἐπανῆλθεν, ὥστ' οὐκ ἔμελλον ἰσχύσειν οἱ ἐχθροὶ τοσοῦτον ὅσον δέκα ἀφαιρεῖσθαι πόλεις αὐτόν.

Τῆς μὲν οὖν χώρας τῶν Κρητῶν τοιαύτη τις ἡ πε- 16 ριοδεία. τῆς δὲ πολιτείας ἧς Ἔφορος ἀνέγραψε τὰ κυριώτατα ἐπιδραμεῖν ἀποχρώντως ἂν ἔχοι. δοκεῖ δέ, φησίν, ὁ νομοθέτης μέγιστον ὑποθέσθαι ταῖς πόλεσιν ἀγαθὸν τὴν ἐλευθερίαν· μόνην γὰρ ταύτην ἴδια ποιεῖν τῶν κτησαμένων τὰ ἀγαθά, τὰ δ' ἐν δουλείᾳ τῶν ἀρ-

12. ante εἰκός: ὡς 21. post αὐτῷ: κατὰ τὴν στρατείαν οὔτε τὴν ἐπάνοδον τὴν ἐκεῖθεν.

χόντων ἀλλ᾽ οὐχὶ τῶν ἀρχομένων εἶναι· τοῖς δ᾽ ἔχουσι ταύτην φυλακῆς δεῖν· τὴν μὲν οὖν ὁμόνοιαν διχοστασίας αἰρομένης ἀπαντᾶν, ἣ γίνεται διὰ πλεονεξίαν καὶ τρυφήν· σωφρόνως γὰρ καὶ λιτῶς ζῶσιν ἅπασιν οὔτε φθόνον οὔθ᾽ ὕβριν οὔτε μῖσος ἀπαντᾶν πρὸς τοὺς ὁμοίους· διόπερ τοὺς μὲν παῖδας εἰς τὰς ὀνομαζομένας ἀγέλας κελεῦσαι φοιτᾶν, τοὺς δὲ τελείους ἐν τοῖς συσσιτίοις ἃ καλοῦσιν ἀνδρεῖα συσσιτεῖν, ὅπως τῶν ἴσων μετάσχοιεν τοῖς εὐπόροις οἱ πενέστεροι δημοσίᾳ τρεφόμενοι· πρὸς δὲ τὸ μὴ δειλίαν ἀλλ᾽ ἀνδρείαν κρατεῖν ἐκ παίδων ὅπλοις καὶ πόνοις συντρέφειν, ὥστε καταφρονεῖν καύματος καὶ ψύχους καὶ τραχείας ὁδοῦ καὶ ἀνάντους καὶ πληγῶν τῶν ἐν γυμνασίοις καὶ μάχαις ταῖς κατὰ σύνταγμα· ἀσκεῖν δὲ καὶ τοξικῇ καὶ ἐνοπλίῳ ὀρχήσει, ἣν καταδεῖξαι Κουρῆτα πρῶτον, ὕστερον δὲ καὶ συντάξαντα τὴν κληθεῖσαν ἀπ᾽ αὐτοῦ πυρρίχην, ὥστε μηδὲ τὴν παιδιὰν ἄμοιρον εἶναι τῶν πρὸς πόλεμον χρησίμων· ὡς δ᾽ αὔτως καὶ τοῖς ῥυθμοῖς Κρητικοῖς χρῆσθαι κατὰ τὰς ᾠδὰς συντονωτάτοις οὖσιν
C.481 οὓς Θάλητα ἀνευρεῖν, ᾧ καὶ τοὺς παιᾶνας καὶ τὰς ἄλλας τὰς ἐπιχωρίους ᾠδὰς ἀνατιθέασι καὶ πολλὰ τῶν νομίμων· καὶ ἐσθῆτι δὲ καὶ ὑποδέσει πολεμικῇ χρῆσθαι, καὶ τῶν δώρων τιμιώτατα αὐτοῖς εἶναι τὰ ὅπλα.

17 Λέγεσθαι δ᾽ ὑπό τινων ὡς Λακωνικὰ εἴη τὰ πολλὰ τῶν νομιζομένων Κρητικῶν, τὸ δ᾽ ἀληθὲς εὑρῆσθαι μὲν ὑπ᾽ ἐκείνων, ἠκριβωκέναι δὲ τοὺς Σπαρτιάτας, τοὺς δὲ Κρῆτας ὀλιγωρῆσαι, κακωθεισῶν τῶν πόλεων καὶ μάλιστα τῆς Κνωσσίων, τῶν πολεμικῶν· μεῖναι δέ τινα τῶν νομίμων παρὰ Λυττίοις καὶ Γορτυνίοις καὶ ἄλλοις τισὶ πολιχνίοις μᾶλλον ἢ παρ᾽ ἐκείνοις· καὶ δὴ καὶ τὰ Λυττίων νόμιμα ποιεῖσθαι μαρτύρια τοὺς τὰ Λακωνικὰ πρεσβύτερα ἀποφαίνοντας· ἀποίκους γὰρ

ὄντας φυλάττειν τὰ τῆς μητροπόλεως ἔθη, ἐπεὶ ἄλλως γε εὔηθες εἶναι τὸ τοὺς βέλτιον συνεστῶτας καὶ πολιτευομένους τῶν χειρόνων ζηλωτὰς ἀποφαίνειν· οὐκ εὖ δὲ ταῦτα λέγεσθαι· οὔτε γὰρ ἐκ τῶν νῦν καθεστηκότων τὰ παλαιὰ τεκμηριοῦσθαι δεῖν, εἰς τἀναντία ἑκατέρων μεταπεπτωκότων· καὶ γὰρ ναυκρατεῖν πρότερον τοὺς Κρῆτας, ὥστε καὶ παροιμιάζεσθαι πρὸς τοὺς προσποιουμένους μὴ εἰδέναι ἃ ἴσασιν „ὁ Κρὴς „ἀγνοεῖ τὴν θάλατταν,“ νῦν δ᾽ ἀποβεβληκέναι τὸ ναυτικόν· [οὔτε] ὅτι ἄποικοί τινες τῶν πόλεων γεγόνασι τῶν ἐν Κρήτῃ Σπαρτιατῶν, ἐν τοῖς ἐκείνων νομίμοις διαμένειν ἐπηναγκάσθαι· πολλὰς γοῦν τῶν ἀποικίδων μὴ φυλάττειν τὰ πάτρια, πολλὰς δὲ καὶ τῶν μὴ ἀποικίδων ἐν Κρήτῃ τὰ αὐτὰ ἔχειν τοῖς ἀποίκοις ἔθη.

Τῶν τε Σπαρτιατῶν τὸν νομοθέτην Λυκοῦργον 18 *πέντε γενεαῖς νεώτερον Ἀλθαιμένους εἶναι τοῦ στείλαντος τὴν εἰς Κρήτην ἀποικίαν· τὸν μὲν γὰρ ἱστορεῖσθαι Κίσσου παῖδα τοῦ τὸ Ἄργος κτίσαντος περὶ τὸν αὐτὸν χρόνον ἡνίκα Προκλῆς τὴν Σπάρτην συνῴκιζε, Λυκοῦργον δ᾽ ὁμολογεῖσθαι παρὰ πάντων ἕκτον ἀπὸ Προκλέους γεγονέναι· τὰ δὲ μιμήματα μὴ εἶναι πρότερα τῶν παραδειγμάτων μηδὲ τὰ νεώτερα τῶν πρεσβυτέρων· τήν τε ὄρχησιν τὴν παρὰ τοῖς Λακεδαιμονίοις ἐπιχωριάζουσαν καὶ τοὺς ῥυθμοὺς καὶ παιᾶνας τοὺς κατὰ νόμον ᾀδομένους καὶ ἄλλα πολλὰ τῶν νομίμων Κρητικὰ καλεῖσθαι παρ᾽ αὐτοῖς ὡς ἂν ἐκεῖθεν ὁρμώμενα· τῶν δ᾽ ἀρχείων τὰ μὲν καὶ τὰς διοικήσεις ἔχειν τὰς αὐτὰς καὶ τὰς ἐπωνυμίας, ὥσπερ καὶ τὴν τῶν γερόντων ἀρχὴν καὶ τὴν τῶν ἱππέων (πλὴν ὅτι τοὺς ἐν Κρήτῃ ἱππέας καὶ ἵππους κεκτῆσθαι συμβέβηκεν·* C.482 *ἐξ οὗ τεκμαίρονται πρεσβυτέραν εἶναι τῶν ἐν Κρήτῃ*

ἱππέων τὴν ἀρχήν· σώζειν γὰρ τὴν ἐτυμότητα τῆς προσηγορίας· τοὺς δὲ μὴ ἱπποτροφεῖν), τοὺς ἐφόρους δὲ τὰ αὐτὰ τοῖς ἐν Κρήτῃ κόσμοις διοικοῦντας ἑτέρως ὠνομάσθαι· τὰ δὲ συσσίτια ἀνδρεῖα παρὰ μὲν τοῖς Κρησὶν καὶ νῦν ἔτι καλεῖσθαι, παρὰ δὲ τοῖς Σπαρτιάταις μὴ διαμεῖναι καλούμενα ὁμοίως πρότερον· παρ' Ἀλκμᾶνι γοῦν οὕτω κεῖσθαι „φοίναις δὲ καὶ ἐν θιάσοισιν ἀνδρείων παρὰ δαιτυμόνεσσι πρέπει παιᾶνα κατάρχειν.“

19 Λέγεσθαι δ' ὑπὸ τῶν Κρητῶν ὡς καὶ παρ' αὐτοὺς ἀφίκοιτο Λυκοῦργος κατὰ τοιαύτην αἰτίαν· ἀδελφὸς ἦν πρεσβύτερος τοῦ Λυκούργου Πολυδέκτης· οὗτος τελευτῶν ἔγκυον κατέλιπε τὴν γυναῖκα· τέως μὲν οὖν ἐβασίλευεν ὁ Λυκοῦργος ἀντὶ τοῦ ἀδελφοῦ, γενομένου δὲ παιδὸς ἐπετρόπευεν ἐκεῖνον, εἰς ὃν ἡ ἀρχὴ καθήκουσα ἐτύγχανε· λοιδορούμενος δή τις αὐτῷ σαφῶς εἶπεν εἰδέναι διότι βασιλεύσοι· λαβὼν δ' ὑπόνοιαν ἐκεῖνος ὡς ἐκ τοῦ λόγου τούτου διαβάλλοιτο ἐπιβουλὴ ἐξ αὐτοῦ τοῦ παιδός, δείσας μὴ ἐκ τύχης ἀποθανόντος αἰτίαν αὐτὸς ἔχοι παρὰ τῶν ἐχθρῶν, ἀπῆρεν εἰς Κρήτην. ταύτην μὲν δὴ λέγεσθαι τῆς ἀποδημίας αἰτίαν· ἐλθόντα δὲ πλησιάσαι Θάλητι μελοποιῷ ἀνδρὶ καὶ νομοθετικῷ, ἱστορήσαντα δὲ παρ' αὐτοῦ τὸν τρόπον ὃν Ῥαδάμανθύς τε πρότερον καὶ ὕστερον Μίνως, ὡς παρὰ τοῦ Διός, τοὺς νόμους ἐκφέροι εἰς ἀνθρώπους, γενόμενον δὲ καὶ ἐν Αἰγύπτῳ καὶ καταμαθόντα καὶ τὰ ἐκεῖ νόμιμα, ἐντυχόντα δ', ὥς φασί τινες, καὶ Ὁμήρῳ διατρίβοντι ἐν Χίῳ, κατᾶραι πάλιν εἰς τὴν οἰκείαν, καταλαβεῖν δὲ τὸν τοῦ ἀδελφοῦ υἱὸν τὸν Πολυδέκτου Χαρίλαον βασιλεύοντα· εἶθ' ὁρμῆσαι διαθεῖναι τοὺς νόμους φοιτῶντα ὡς τὸν θεὸν τὸν ἐν Δελφοῖς, κἀκεῖθεν κομίζοντα τὰ προστάγματα, καθά-

περ οἱ περὶ Μίνω ἐκ τοῦ ἄντρου τοῦ Διὸς παραπλήσια
ἐκείνοις τὰ πλείω.

Τῶν Κρητικῶν τὰ κυριώτατα τῶν καθ' ἕκαστα 20
τοιαῦτα εἴρηκε. γαμεῖν μὲν ἅμα πάντες ἀναγκάζονται
παρ' αὐτοῖς οἱ κατὰ τὸν αὐτὸν χρόνον ἐκ τῆς τῶν παί-
δων ἀγέλης ἐκκριθέντες, οὐκ εὐθὺς δ' ἄγονται παρ'
ἑαυτοὺς τὰς γαμηθείσας παῖδας, ἀλλ' ἐπὰν ἤδη διοι-
κεῖν ἱκαναὶ ὦσι τὰ περὶ τοὺς οἴκους· φερνὴ δ' ἐστίν,
ἂν ἀδελφοὶ ὦσι, τὸ ἥμισυ τῆς τοῦ ἀδελφοῦ μερίδος·
παῖδας δὲ γράμματά τε μανθάνειν καὶ τὰς ἐκ τῶν νό-
μων ᾠδὰς καί τινα εἴδη τῆς μουσικῆς. τοὺς μὲν οὖν ἔτι C.483
νεωτέρους εἰς τὰ συσσίτια ἄγουσι τὰ ἀνδρεῖα· χαμαὶ
δὲ καθήμενοι διαιτῶνται μετ' ἀλλήλων ἐν φαύλοις
τριβωνίοις καὶ χειμῶνος καὶ θέρους τὰ αὐτά, διακο-
νοῦσί τε καὶ ἑαυτοῖς καὶ τοῖς ἀνδράσι· συμβάλλουσι
δ' εἰς μάχην καὶ οἱ ἐκ τοῦ αὐτοῦ συσσιτίου πρὸς ἀλλή-
λους, καὶ πρὸς ἕτερα συσσίτια· καθ' ἕκαστον δὲ ἀν-
δρεῖον ἐφέστηκε παιδονόμος· οἱ δὲ μείζους εἰς τὰς ἀγέ-
λας ἄγονται· τὰς δ' ἀγέλας συνάγουσιν οἱ ἐπιφανέ-
στατοι τῶν παίδων καὶ δυνατώτατοι ἕκαστος ὅσους
πλείστους οἷός τέ ἐστιν ἀθροίζων· ἑκάστης δὲ τῆς ἀγέ-
λης ἄρχων ἐστὶν ὡς τὸ πολὺ ὁ πατὴρ τοῦ συναγαγόν-
τος, κύριος ὢν ἐξάγειν ἐπὶ θήραν καὶ δρόμους, τὸν δ'
ἀπειθοῦντα κολάζειν· τρέφονται δὲ δημοσίᾳ· τακταῖς
δέ τισιν ἡμέραις ἀγέλη πρὸς ἀγέλην συμβάλλει μετὰ
αὐλοῦ καὶ λύρας εἰς μάχην ἐν ῥυθμῷ, ὥσπερ καὶ ἐν
τοῖς πολεμικοῖς εἰώθασιν, ἐκφέρουσι δὲ καὶ τὰς πλη-
γὰς τὰς μὲν διὰ χειρὸς τὰς δὲ καὶ δι' ὅπλων σιδηρῶν.

Ἴδιον δ' αὐτοῖς τὸ περὶ τοὺς ἔρωτας νόμιμον· οὐ 21
γὰρ πειθοῖ κατεργάζονται τοὺς ἐρωμένους ἀλλ' ἁρ-
παγῇ· προλέγει τοῖς φίλοις πρὸ τριῶν ἢ πλειόνων ἡμε-
ρῶν ὁ ἐραστὴς ὅτι μέλλει τὴν ἁρπαγὴν ποιεῖσθαι· τοῖς

δ' ἀποκρύπτειν μὲν τὸν παῖδα ἢ μὴ ἐᾶν πορεύεσθαι τὴν τεταγμένην ὁδὸν τῶν αἰσχίστων ἐστίν, ὡς ἐξομολογουμένοις ὅτι ἀνάξιος ὁ παῖς εἴη τοιούτου ἐραστοῦ τυγχάνειν· συνιόντες δ', ἂν μὲν τῶν ἴσων ἢ τῶν ὑπερεχόντων τις ᾖ τοῦ παιδὸς τιμῇ καὶ τοῖς ἄλλοις ὁ ἁρπάζων, ἐπιδιώκοντες ἀνθήψαντο μόνον μετρίως τὸ νόμιμον ἐκπληροῦντες, τἆλλα δ' ἐπιτρέπουσιν ἄγειν χαίροντες· ἂν δ' ἀνάξιος, ἀφαιροῦνται· πέρας δὲ τῆς ἐπιδιώξεώς ἐστιν ἕως ἂν ἀχθῇ ὁ παῖς εἰς τὸ τοῦ ἁρπάσαντος ἀνδρεῖον. ἐράσμιον δὲ νομίζουσιν οὐ τὸν κάλλει διαφέροντα, ἀλλὰ τὸν ἀνδρείᾳ καὶ κοσμιότητι..... καὶ δωρησάμενος ἀπάγει τὸν παῖδα τῆς χώρας εἰς ὃν βούλεται τόπον· ἐπακολουθοῦσι δὲ τῇ ἁρπαγῇ οἱ παραγενόμενοι, ἑστιαθέντες δὲ καὶ συνθηρεύσαντες δίμηνον (οὐ γὰρ ἔξεστι πλείω χρόνον κατέχειν τὸν παῖδα) εἰς τὴν πόλιν καταβαίνουσιν. ἀφίεται δ' ὁ παῖς δῶρα λαβὼν στολὴν πολεμικὴν καὶ βοῦν καὶ ποτήριον. ταῦτα μὲν τὰ κατὰ τὸν νόμον δῶρα .... καὶ ἄλλα πλείω καὶ πολυτελῆ, ὥστε συνερανίζειν τοὺς φίλους διὰ τὸ πλῆθος τῶν ἀναλωμάτων. τὸν μὲν οὖν βοῦν θύει τῷ Διὶ καὶ ἑστιᾷ τοὺς συγκαταβαίνοντας, εἶτ' ἀποφαίνεται περὶ τῆς πρὸς τὸν ἐραστὴν ὁμιλίας εἴτ' ἀσμενίζων
C.484 τετύχηκεν εἴτε μή, τοῦ νόμου τοῦτ' ἐπιτρέψαντος, ἵν' εἴ τις αὐτῷ βία προσενήνεκται κατὰ τὴν ἁρπαγήν, ἐνταῦθα παρῇ τιμωρεῖν ἑαυτῷ καὶ ἀπαλλάττεσθαι. τοῖς δὲ καλοῖς τὴν ἰδέαν καὶ προγόνων ἐπιφανῶν [αἰσχρὸν] ἐραστῶν μὴ τυχεῖν, ὡς διὰ τὸν τρόπον τοῦτο παθοῦσιν. ἔχουσι δὲ τιμὰς οἱ παρασταθέντες (οὕτω γὰρ καλοῦσι τοὺς ἁρπαγέντας)· ἔν τε γὰρ τοῖς χοροῖς καὶ τοῖς δρόμοις ἔχουσι τὰς ἐντιμοτάτας χώρας, τῇ τε στολῇ κοσμεῖσθαι διαφερόντως τῶν ἄλλων ἐφίεται τῇ δοθείσῃ παρὰ τῶν ἐραστῶν, καὶ οὐ τότε μόνον ἀλλὰ καὶ

τέλειοι γενόμενοι διάσημον ἐσθῆτα φέρουσιν, ἀφ᾽ ἧς
γνωσθήσεται ἕκαστος κλεινὸς γενόμενος· τὸν μὲν γὰρ
ἐρώμενον καλοῦσι κλεινὸν τὸν δ᾽ ἐραστὴν φιλήτορα.
ταῦτα μὲν τὰ περὶ τοὺς ἔρωτας νόμιμα. ἄρχοντας δὲ 22
δέκα αἱροῦνται· περὶ δὲ τῶν μεγίστων συμβούλοις
χρῶνται τοῖς γέρουσι καλουμένοις· καθίστανται δ᾽ εἰς
τοῦτο τὸ συνέδριον οἱ τῆς τῶν κόσμων ἀρχῆς ἠξιωμέ-
νοι καὶ τἆλλα δόκιμοι κρινόμενοι. ἀξίαν δ᾽ ἀναγρα-
φῆς τὴν τῶν Κρητῶν πολιτείαν ὑπέλαβον διά τε τὴν
ἰδιότητα καὶ τὴν δόξαν· οὐ πολλὰ δὲ διαμένει τούτων
τῶν νομίμων, ἀλλὰ τοῖς Ῥωμαίων διατάγμασι τὰ πλεῖ-
στα διοικεῖται, καθάπερ καὶ ἐν ταῖς ἄλλαις ἐπαρχίαις
συμβαίνει.

Περὶ δὲ τὴν Κρήτην εἰσὶ νῆσοι, Θήρα μὲν ἡ τῶν 5
Κυρηναίων μητρόπολις, ἄποικος Λακεδαιμονίων, καὶ
πλησίον ταύτης Ἀνάφη, ἐν ᾗ τὸ τοῦ Αἰγλήτου Ἀπόλ-
λωνος ἱερόν. λέγει δὲ καὶ Καλλίμαχος τοτὲ μὲν οὕτως
„Αἰγλήτην Ἀνάφην τε Λακωνίδι γείτονα Θήρῃ,“ τοτὲ
δὲ τῆς Θήρας μνησθείς „μήτηρ εὐίππου πατρίδος ἡμε-
„τέρης.“ ἔστι δὲ μακρὰ ἡ Θήρα, διακοσίων οὖσα τὴν
περίμετρον σταδίων, κειμένη δὲ κατὰ Δίαν νῆσον τὴν
πρὸς Ἡρακλείῳ τῷ Κνωσσίῳ, διέχει δὲ τῆς Κρήτης εἰς
ἑπτακοσίους· πλησίον δ᾽ αὐτῆς ἥ τε Ἀνάφη καὶ Θηρα-
σία. ταύτης δ᾽ εἰς ἑκατὸν ἀπέχει νησίδιον Ἴος, ἐν ᾧ
κεκηδεῦσθαί τινές φασι τὸν ποιητὴν Ὅμηρον· ἀπὸ δὲ
τῆς Ἴου πρὸς ἑσπέραν ἰόντι Σίκινος καὶ Λάγουσα καὶ
Φολέγανδρος, ἣν Ἄρατος σιδηρείην ὀνομάζει διὰ τὴν
τραχύτητα· ἐγγὺς δὲ τούτων Κίμωλος, ὅθεν ἡ γῆ ἡ
Κιμωλία· ἔνθεν ἡ Σίφνος ἐν ὄψει ἐστίν, ἐφ᾽ ᾗ λέγουσι
Σίφνιον ἀστράγαλον διὰ τὴν εὐτέλειαν. ἔτι δ᾽ ἐγγυ-
τέρω καὶ τῆς Κιμώλου καὶ τῆς Κρήτης ἡ Μῆλος ἀξιο-
λογωτέρα τούτων, διέχουσα τοῦ Ἑρμιονικοῦ ἀκρωτη-

ρίου τοῦ Σκυλλαίου σταδίους ἑπτακοσίους· τοσούτους δὲ σχεδόν τι καὶ τοῦ Δικτυνναίου· Ἀθηναῖοι δέ ποτε πέμψαντες στρατείαν ἡβηδὸν κατέσφαξαν τοὺς πλείους. C.485 αὗται μὲν οὖν ἐν τῷ Κρητικῷ πελάγει, ἐν δὲ τῷ Αἰγαίῳ μᾶλλον αὐτή τε ἡ Δῆλος καὶ αἱ περὶ αὐτὴν Κυκλάδες καὶ αἱ ταύταις προσκείμεναι Σποράδες, ὧν εἰσι καὶ αἱ λεχθεῖσαι περὶ τὴν Κρήτην.

2 Ἡ μὲν οὖν Δῆλος ἐν πεδίῳ κειμένην ἔχει τὴν πόλιν καὶ τὸ ἱερὸν τοῦ Ἀπόλλωνος καὶ τὸ Λητῷον· ὑπέρκειται δὲ τῆς πόλεως ὄρος ψιλὸν ὁ Κύνθος καὶ τραχύ, ποταμὸς δὲ διαρρεῖ τὴν νῆσον Ἰνωπὸς οὐ μέγας· καὶ γὰρ ἡ νῆσος μικρά. τετίμηται δὲ ἐκ παλαιοῦ διὰ τοὺς θεοὺς ἀπὸ τῶν ἡρωικῶν χρόνων ἀρξαμένη· μυθεύεται γὰρ ἐνταῦθα ἡ Λητὼ τὰς ὠδῖνας ἀποθέσθαι τοῦ τε Ἀπόλλωνος καὶ τῆς Ἀρτέμιδος. „ἦν γὰρ τοπάροιθε „φορητά“ φησὶν ὁ Πίνδαρος „κυμάτεσσιν παντοδα„πῶν τ' ἀνέμων ῥιπαῖσιν· ἀλλ' ἁ Κοιογενὴς ὁπότ' „ὠδίνεσσι θύοισ' ἀγχιτόκοις ἐπέβα νιν, δὴ τότε τέσ„σαρες ὀρθαὶ πρέμνων ἀπώρουσαν χθονίων, ἂν δ' „ἐπικράνοις σχέθον πέτραν ἀδαμαντοπέδιλοι κίονες· „ἔνθα τεκοῖσ' εὐδαίμον' ἐπόψατο γένναν.“ ἔνδοξον δ' ἐποίησαν αὐτὴν αἱ περιοικίδες νῆσοι, καλούμεναι Κυκλάδες, κατὰ τιμὴν πέμπουσαι δημοσίᾳ θεωρούς τε καὶ θυσίας καὶ χοροὺς παρθένων πανηγύρεις τε ἐν αὐτῇ συνάγουσαι μεγάλας.

3 Κατ' ἀρχὰς μὲν οὖν δώδεκα λέγονται· προσεγένοντο δὲ καὶ πλείους. Ἀρτεμίδωρος γοῦν [πεντεκαίδεκα] διαριθμεῖται, περὶ τῆς Ἑλένης εἰπὼν ὅτι ἀπὸ Θορίκου μέχρι Σουνίου παράκειται μακρὰ σταδίων ὅσον ἑξήκοντα τὸ μῆκος, ἀπὸ ταύτης γάρ, φησίν, αἱ καλούμεναι Κυκλάδες εἰσίν· ὀνομάζει δὲ Κέω τὴν ἐγγυτάτω τῇ Ἑλένῃ, καὶ μετὰ ταύτην Κύθνον καὶ Σέριφον καὶ Μη-

λον καὶ Σίφνον καὶ Κίμωλον καὶ Πρεπέσινθον καὶ Ὠλίαρον, καὶ πρὸς ταύταις Πάρον Νάξον Σῦρον Μύκονον Τῆνον Ἄνδρον Γύαρον. τὰς μὲν οὖν ἄλλας τῶν δώδεκα νομίζω, τὴν δὲ Πρεπέσινθον καὶ Ὠλίαρον καὶ Γύαρον ἧττον· ὧν τῇ Γυάρῳ προσορμισθεὶς ἔγνων κωμίον ὑπὸ ἁλιέων συνοικούμενον· ἀπαίροντες δ' ἐδεξάμεθα πρεσβευτὴν ἐνθένδε ὡς Καίσαρα προκεχειρισμένον τῶν ἁλιέων τινά (ἦν δ' ἐν Κορίνθῳ Καῖσαρ βαδίζων ἐπὶ τὸν θρίαμβον τὸν Ἀκτιακόν)· συμπλέων δὴ ἔλεγε πρὸς τοὺς πυθομένους ὅτι πρεσβεύοι περὶ κουφισμοῦ τοῦ φόρου· τελοῖεν γὰρ δραχμὰς ἑκατὸν πεντήκοντα καὶ τὰς ἑκατὸν χαλεπῶς ἂν τελοῦντες. C.486 δηλοῖ δὲ τὰς ἀπορίας αὐτῶν καὶ Ἄρατος ἐν τοῖς κατὰ λεπτόν „ὦ Λητοῖ, σὺ μὲν ἤ με σιδηρείῃ Φολεγάνδρῳ „δειλὴν ἢ Γυάρῳ παρελεύσεαι αὐτίχ' ὁμοίην."

4 Τὴν μὲν οὖν Δῆλον ἔνδοξον γενομένην οὕτως ἔτι μᾶλλον ηὔξησε κατασκαφεῖσα ὑπὸ Ῥωμαίων Κόρινθος· ἐκεῖσε γὰρ μετεχώρησαν οἱ ἔμποροι, καὶ τῆς ἀτελείας τοῦ ἱεροῦ προκαλουμένης αὐτοὺς καὶ τῆς εὐκαιρίας τοῦ λιμένος· ἐν καλῷ γὰρ κεῖται τοῖς ἐκ τῆς Ἰταλίας καὶ τῆς Ἑλλάδος εἰς τὴν Ἀσίαν πλέουσιν· ἥ τε πανήγυρις ἐμπορικόν τι πρᾶγμά ἐστι, καὶ συνήθεις ἦσαν αὐτῇ καὶ Ῥωμαῖοι τῶν ἄλλων μάλιστα, καὶ ὅτε συνειστήκει ἡ Κόρινθος· Ἀθηναῖοί τε λαβόντες τὴν νῆσον καὶ τῶν ἱερῶν ἅμα καὶ τῶν ἐμπόρων ἐπεμελοῦντο ἱκανῶς· ἐπελθόντες δ' οἱ τοῦ Μιθριδάτου στρατηγοὶ καὶ ὁ ἀποστήσας τύραννος αὐτὴν διελυμήναντο πάντα, καὶ παρέλαβον ἐρήμην οἱ Ῥωμαῖοι πάλιν τὴν νῆσον, ἀναχωρήσαντος εἰς τὴν οἰκείαν τοῦ βασιλέως, καὶ διετέλεσε μέχρι νῦν ἐνδεῶς πράττουσα. ἔχουσι δ' αὐτὴν Ἀθηναῖοι.

5 Ῥήναια δ' ἔρημον νησίδιόν ἐστιν ἐν τέτταρσι τῆς Δήλου σταδίοις, ὅπου τὰ μνήματα τοῖς Δηλίοις

ἐστίν. οὐ γὰρ ἔξεστιν ἐν αὐτῇ τῇ Δήλῳ θάπτειν οὐδὲ καίειν νεκρόν. οὐκ ἔξεστι δὲ οὐδὲ κύνα ἐν Δήλῳ τρέφειν. ὠνομάζετο δὲ καὶ Ὀρτυγία πρότερον.

6 Κέως δὲ τετράπολις μὲν ὑπῆρξε, λείπονται δὲ δύο, ἥ τε Ἰουλὶς καὶ ἡ Καρθαία, εἰς ἃς συνεπολίσθησαν αἱ λοιπαί, ἡ μὲν Ποιήεσσα εἰς τὴν Καρθαίαν ἡ δὲ Κορησία εἰς τὴν Ἰουλίδα. ἐκ δὲ τῆς Ἰουλίδος ὅ τε Σιμωνίδης ἦν ὁ μελοποιὸς καὶ Βακχυλίδης ἀδελφιδοῦς ἐκείνου, καὶ μετὰ ταῦτα Ἐρασίστρατος ὁ ἰατρὸς καὶ τῶν ἐκ τοῦ περιπάτου φιλοσόφων Ἀρίστων ὁ τοῦ Βορυσθενίτου Βίωνος ζηλωτής. παρὰ τούτοις δὲ δοκεῖ τεθῆναί ποτε νόμος, οὗ μέμνηται καὶ Μένανδρος „καλὸν τὸ Κείων „νόμιμόν ἐστι, Φανία· ὁ μὴ δυνάμενος ζῆν καλῶς οὐ „ζῇ κακῶς.“ προσέταττε γάρ, ὡς ἔοικεν, ὁ νόμος τοὺς ὑπὲρ ἑξήκοντα ἔτη γεγονότας κωνειάζεσθαι καὶ τοῦ διαρκεῖν τοῖς ἄλλοις τὴν τροφήν· καὶ πολιορκουμένους δέ ποτε ὑπ᾽ Ἀθηναίων ψηφίσασθαί φασι τοὺς πρεσβυτάτους ἐξ αὐτῶν ἀποθανεῖν, ὁρισθέντος πλήθους ἐτῶν, τοὺς δὲ παύσασθαι πολιορκοῦντας. κεῖται δ᾽ ἐν ὄρει τῆς θαλάττης διέχουσα ἡ πόλις ὅσον πέντε καὶ εἴκοσι σταδίους, ἐπίνειον δ᾽ ἐστὶν αὐτῆς τὸ χωρίον ἐν ᾧ ἵδρυτο ἡ Κορησία κατοικίαν οὐδὲ κώμης ἔχουσα.
C.487 ἔστι δὲ καὶ πρὸς τῇ Κορησίᾳ Σμινθαίου Ἀπόλλωνος ἱερὸν καὶ πρὸς Ποιηέσσῃ, μεταξὺ δὲ τοῦ ἱεροῦ καὶ τῶν τῆς Ποιηέσσης ἐρειπίων τὸ τῆς Νεδουσίας Ἀθηνᾶς ἱερόν, ἱδρυσαμένου Νέστορος κατὰ τὴν ἐκ Τροίας ἐπάνοδον. ἔστι δὲ καὶ Ἕλιξος ποταμὸς περὶ τὴν Κορησίαν.

7 Μετὰ δὲ ταύτην Νάξος καὶ Ἄνδρος ἀξιόλογοι καὶ Πάρος· ἐντεῦθεν ἦν Ἀρχίλοχος ὁ ποιητής. ὑπὸ δὲ Παρίων ἐκτίσθη Θάσος καὶ Πάριον ἐν τῇ Προποντίδι πόλις. ἐν ταύτῃ μὲν οὖν ὁ βωμὸς λέγεται θέας ἄξιος, στα-

διαίας ἔχων τὰς πλευράς· ἐν δὲ τῇ Πάρῳ ἡ Παρία λίθος λεγομένη ἀρίστη πρὸς τὴν μαρμαρογλυφίαν.

Σῦρος δ' ἐστὶ μηκύνουσι τὴν πρώτην συλλαβήν, 8
ἐξ ἧς Φερεκύδης ὁ Βάβυος ἦν· νεώτερος δ' ἐστὶν ὁ Ἀθηναῖος ἐκείνου. ταύτης δοκεῖ μνημονεύειν ὁ ποιητὴς Συρίην καλῶν „νῆσός τις Συρίη κικλήσκεται Ὀρ„τυγίης καθύπερθε."

Μύκονος δ' ἐστὶν ὑφ' ᾗ μυθεύουσι κεῖσθαι τῶν 9
γιγάντων τοὺς ὑστάτους ὑφ' Ἡρακλέους καταλυθέντας, ἀφ' ὧν ἡ παροιμία „πάνθ' ὑπὸ μίαν Μύκονον" ἐπὶ τῶν ὑπὸ μίαν ἐπιγραφὴν ἀγόντων καὶ τὰ διῃρτημένα τῇ φύσει. καὶ τοὺς φαλακροὺς δέ τινες Μυκονίους καλοῦσιν ἀπὸ τοῦ τὸ πάθος τοῦτο ἐπιχωριάζειν τῇ νήσῳ.

Σέριφος δ' ἐστὶν ἐν ᾗ τὰ περὶ τὸν Δίκτυν μεμύ- 10
θευται τὸν ἀνελκύσαντα τὴν λάρνακα τοῖς δικτύοις τὴν περιέχουσαν τὸν Περσέα καὶ τὴν μητέρα Δανάην, καταπεποντωμένους ὑπ' Ἀκρισίου τοῦ πατρὸς τῆς Δανάης· τραφῆναί τε γὰρ ἐνταῦθα τὸν Περσέα φασί, καὶ κομίσαντα τὴν τῆς Γοργόνος κεφαλήν, δείξαντα τοῖς Σεριφίοις ἀπολιθῶσαι πάντας· τοῦτο δὲ πρᾶξαι τιμωροῦντα τῇ μητρί, ὅτι αὐτὴν Πολυδέκτης ὁ βασιλεὺς ἄκουσαν ἄγεσθαι προείλετο πρὸς γάμον συμπραττόντων ἐκείνων οὕτω δ' ἐστὶ πετρώδης ἡ νῆσος ὥστε ὑπὸ τῆς Γοργόνος τοῦτο παθεῖν αὐτήν φασιν οἱ κωμῳδοῦντες.

Τῆνος δὲ πόλιν μὲν οὐ μεγάλην ἔχει, τὸ δ' ἱερὸν 11
τοῦ Ποσειδῶνος μέγα ἐν ἄλσει τῆς πόλεως ἔξω θέας ἄξιον, ἐν ᾧ καὶ ἑστιατόρια πεποίηται μεγάλα, σημεῖον τοῦ συνέρχεσθαι πλῆθος ἱκανὸν τῶν συνθυόντων αὐτοῖς ἀστυγειτόνων τὰ Ποσειδώνια.

Ἔστι δὲ καὶ Ἀμοργὸς τῶν Σποράδων, ὅθεν ἦν 12

Σιμωνίδης ὁ τῶν ἰάμβων ποιητής, καὶ Λέβινθος καὶ Λέρος .... „καὶ τόδε Φωκυλίδου· Λέριοι κακοί, οὐχ „ὁ μὲν ὃς δ' οὔ, πάντες, πλὴν Προκλέους, καὶ Προ-
C.488 *„κλέης Λέριος.“ διεβέβληντο γὰρ ὡς κακοήθεις οἱ ἐνθένδε ἄνθρωποι.*

13 *Πλησίον δ' ἐστὶ καὶ ἡ Πάτμος καὶ Κορασσίαι πρὸς δύσιν κείμεναι τῇ Ἰκαρίᾳ, αὕτη δὲ Σάμῳ. ἡ μὲν οὖν Ἰκαρία ἔρημός ἐστι, νομὰς δ' ἔχει καὶ χρῶνται αὐταῖς Σάμιοι· τοιαύτη δ' οὖσα ἔνδοξος ὅμως ἐστί, καὶ ἀπ' αὐτῆς Ἰκάριον καλεῖται τὸ προκείμενον πέλαγος, ἐν ᾧ καὶ αὐτὴ καὶ Σάμος καὶ Κῶς ἐστι καὶ αἱ ἄρτι λεχθεῖσαι Κορασσίαι καὶ Πάτμος καὶ Λέρος. συνάπτει δὲ τῷ Ἰκαρίῳ τὸ Καρπάθιον πέλαγος πρὸς νότον, τούτῳ δὲ τὸ Αἰγύπτιον, πρὸς δὲ δύσιν τό τε Κρητικὸν καὶ τὸ Λιβυκόν.*

14 *Καὶ ἐν τῷ Καρπαθίῳ δ' εἰσὶ πολλαὶ τῶν Σποράδων μεταξὺ τῆς Κῶ μάλιστα καὶ Ῥόδου καὶ Κρήτης· ὧν εἰσιν Ἀστυπάλαιά τε καὶ Τῆλος καὶ Χαλκία καὶ ἃς Ὅμηρος ὀνομάζει ἐν τῷ καταλόγῳ „οἳ δ' ἄρα Νίσυρόν τ' εἶχον „Κράπαθόν τε Κάσον τε καὶ Κῶν, Εὐρυπύλοιο πό- „λιν, νήσους τε Καλύδνας.“ ἔξω γὰρ τῆς Κῶ καὶ τῆς Ῥόδου, περὶ ὧν ἐροῦμεν ὕστερον, τάς τε ἄλλας ἐν ταῖς Σποράσι τίθεμεν καὶ δὴ καὶ ἐνταῦθα μεμνήμεθα αὐτῶν, καίπερ τῆς Ἀσίας οὐ τῆς Εὐρώπης ἐγγὺς οὐσῶν, ἐπειδὴ τῇ Κρήτῃ καὶ ταῖς Κυκλάσι καὶ τὰς Σποράδας συμπεριλαβεῖν ἠπείγετό πως ὁ λόγος· ἐν δὲ τῇ τῆς Ἀσίας περιοδείᾳ τὰς προσεχεῖς αὐτῇ τῶν ἀξιολόγων νήσων προσπεριοδεύσομεν, Κύπρον καὶ Ῥόδον καὶ Κῶν καὶ τὰς ἐν τῇ ἐφεξῆς παραλίᾳ κειμένας, Σάμον*

---

12. post *Λέρος: ἔνδοξον δὲ καὶ τὸ ἐν αὐτῇ ὄρος ὁ Κερκετεύς, μᾶλλον τῆς Ἀμπέλου· αὕτη δ' ὑπέρκειται τῆς Σαμίων πόλεως.*

Χίου Λέσβου Τένεδον· νῦν δὲ τὰς Σποράδας ὧν ἄξιον μνησθῆναι λοιπὸν ἔπιμεν.

15 *Ἡ μὲν οὖν Ἀστυπάλαια ἱκανῶς ἐστι πελαγία, πόλιν ἔχουσα. ἡ δὲ Τῆλος ἐκτέταται παρὰ τὴν Κνιδίαν μακρὰ ὑψηλὴ στενή, τὴν περίμετρον ὅσον ἑκατὸν καὶ τετταράκοντα σταδίων, ἔχουσα ὕφορμον. ἡ δὲ Χαλκία τῆς Τήλου διέχει σταδίους ὀγδοήκοντα, Καρπάθου δὲ τετρακοσίους, Ἀστυπαλαίας δὲ περὶ διπλασίους· ἔχει δὲ καὶ κατοικίαν ὁμώνυμον καὶ ἱερὸν Ἀπόλλωνος καὶ λιμένα.*

16 *Νίσυρος δὲ πρὸς ἄρκτον μέν ἐστι Τήλου διέχουσα αὐτῆς ὅσον ἑξήκοντα σταδίους ὅσους καὶ Κῶ διέχει, στρογγύλη δὲ καὶ ὑψηλὴ καὶ πετρώδης τοῦ μυλίου λίθου· τοῖς γοῦν ἀστυγείτοσιν ἐκεῖθέν ἐστιν ἡ τῶν μύλων εὐπορία. ἔχει δὲ καὶ πόλιν ὁμώνυμον καὶ λιμένα καὶ θερμὰ καὶ Ποσειδῶνος ἱερόν· περίμετρον δὲ αὐτῆς ὀγδοήκοντα στάδιοι. ἔστι δὲ καὶ νησία πρὸς αὐτῇ Νισυρίων* C.489 *λεγόμενα. φασὶ δὲ τὴν Νίσυρον ἀπόθραυσμα εἶναι τῆς Κῶ, προσθέντες καὶ μῦθον, ὅτι Ποσειδῶν διώκων ἕνα τῶν γιγάντων Πολυβώτην ἀποθραύσας τῇ τριαίνῃ τρύφος τῆς Κῶ ἐπ' αὐτὸν βάλοι, καὶ γένοιτο νῆσος τὸ βληθὲν ἡ Νίσυρος ὑποκείμενον ἔχουσα ἐν αὐτῇ τὸν γίγαντα· τινὲς δὲ αὐτὸν ὑποκεῖσθαι τῇ Κῷ φασιν.*

17 *Ἡ δὲ Κάρπαθος, ἣν Κράπαθον εἶπεν ὁ ποιητής, ὑψηλή ἐστι, κύκλον ἔχουσα σταδίων διακοσίων. τετράπολις δ' ὑπῆρξε καὶ ὄνομα εἶχεν ἀξιόλογον, ἀφ' οὗ καὶ τῷ πελάγει τοὔνομα ἐγένετο. μία δὲ τῶν πόλεων ἐκαλεῖτο Νίσυρος ὁμώνυμος τῇ τῶν Νισυρίων νήσῳ. κεῖται δὲ τῆς Λιβύης κατὰ Λευκὴν ἀκτήν, ἣ τῆς μὲν Ἀλεξανδρείας περὶ χιλίους διέχει σταδίους, τῆς δὲ Καρπάθου περὶ τετρακισχιλίους.*

18 *Κάσος δὲ ταύτης μὲν ἀπὸ ἑβδομήκοντά ἐστι στα-*

δίων, τοῦ δὲ Σαμωνίου τοῦ ἄκρου τῆς Κρήτης διακοσίων πεντήκοντα· κύκλον δὲ ἔχει σταδίων ὀγδοήκοντα. ἔστι δ' ἐν αὐτῇ καὶ πόλις ὁμώνυμος, καὶ Κασίων νῆσοι καλούμεναι πλείους περὶ αὐτήν.

19 Νήσους δὲ Καλύδνας τὰς Σποράδας λέγειν φασὶ τὸν ποιητήν, ὧν μίαν εἶναι Κάλυμναν· εἰκὸς δ' ὡς ἐκ τῶν Νισυρίων λέγονται καὶ Κασίων αἱ ἐγγὺς καὶ ὑπήκοοι, οὕτως καὶ τὰς τῇ Καλύμνῃ περικειμένας ἴσως τότε λεγομένῃ Καλύδνῃ· τινὲς δὲ δύο εἶναι Καλύδνας φασὶ Λέρον καὶ Κάλυμναν, ἅσπερ καὶ λέγειν τὸν ποιητήν. ὁ δὲ Σκήψιος πληθυντικῶς ὠνομάσθαι τὴν νῆσον Καλύμνας φησίν, ὡς Ἀθήνας καὶ Θήβας, δεῖν δὲ ὑπερβατῶς δέξασθαι τὸ τοῦ ποιητοῦ· οὐ γὰρ νήσους Καλύδνας λέγειν, ἀλλ' „οἳ δ' ἄρα νήσους Νίσυρόν τ' „εἶχον Κράπαθόν τε Κάσον τε καὶ Κῶν, Εὐρυπύλοιο „πόλιν, Καλύδνας τε.“ ἅπαν μὲν οὖν τὸ νησιωτικὸν μέλι ὡς ἐπὶ τὸ πολὺ ἀστεῖόν ἐστι καὶ ἐνάμιλλον τῷ Ἀττικῷ, τὸ δ' ἐν ταῖσδε ταῖς νήσοις διαφερόντως, μάλιστα δὲ τὸ Καλύμνιον.

C.490

— ΙΑ —

1 Τῇ δ' Εὐρώπῃ συνεχής ἐστιν ἡ Ἀσία κατὰ τὸν Τάναϊν συνάπτουσα αὐτῇ· περὶ ταύτης οὖν ἐφεξῆς ῥητέον διελόντας φυσικοῖς τισιν ὅροις τοῦ σαφοῦς χάριν. ὅπερ οὖν Ἐρατοσθένης ἐφ' ὅλης τῆς οἰκουμένης ἐποίησε, τοῦθ' ἡμῖν ἐπὶ τῆς Ἀσίας ποιητέον.

2 Ὁ γὰρ Ταῦρος μέσην πως διέζωκε ταύτην τὴν ἤπειρον ἀπὸ τῆς ἑσπέρας ἐπὶ τὴν ἕω τεταμένος, τὸ μὲν αὐτῆς ἀπολείπων πρὸς βορρᾶν τὸ δὲ μεσημβρινόν. καλοῦσι δὲ αὐτῶν οἱ Ἕλληνες τὸ μὲν ἐντὸς τοῦ Ταύρου τὸ δὲ ἐκτός. εἴρηται δὲ ταῦθ' ἡμῖν καὶ πρότερον, ἀλλ' εἰρήσθω καὶ νῦν ὑπομνήσεως χάριν.

3 Πλάτος μὲν οὖν ἔχει τὸ ὄρος πολλαχοῦ καὶ τρισχιλίων σταδίων, μῆκος δ' ὅσον καὶ τὸ τῆς Ἀσίας, τεττάρων που μυριάδων καὶ πεντακισχιλίων, ἀπὸ τῆς Ῥοδίων περαίας ἐπὶ τὰ ἄκρα τῆς Ἰνδικῆς καὶ Σκυθίας πρὸς τὰς ἀνατολάς.

4 Διῄρηται δ' εἰς μέρη πολλὰ καὶ ὀνόματα περιγραφαῖς καὶ μείζοσι καὶ ἐλάττοσιν ἀφωρισμένα. ἐπεὶ δ' ἐν τῷ τοσούτῳ πλάτει τοῦ ὄρους ἀπολαμβάνεταί τινα ἔθνη, τὰ μὲν ἀσημότερα τὰ δὲ καὶ παντελῶς γνώριμα C.491 (καθάπερ ἡ Παρθυαία καὶ Μηδία καὶ Ἀρμενία καὶ Καππαδοκῶν τινες καὶ Κίλικες καὶ Πισίδαι), τὰ μὲν * πλεονάζοντα τοῖς προσβόρροις μέρεσιν ἐνταῦθα τακτέον, τὰ δ' ἐν τοῖς νοτίοις εἰς τὰ νότια, καὶ τὰ ἐν μέσῳ δὲ τῶν ὀρῶν κείμενα διὰ τὰς τῶν ἀέρων ὁμοιότητας πρὸς βορρᾶν πως θετέον· ψυχροὶ γάρ εἰσιν, οἱ δὲ νότιοι θερμοί. καὶ τῶν ποταμῶν δὲ αἱ ῥύσεις ἐνθένδε ἰοῦσαι πᾶσαι σχεδόν τι εἰς τἀναντία αἱ μὲν εἰς τὰ βόρεια αἱ δ' εἰς τὰ νότια μέρη (τά γε πρῶτα, κἂν ὕστερόν τινες ἐπιστρέφωσι πρὸς ἀνατολὰς ἢ δύσεις), ἔχουσί τι εὐφυὲς πρὸς τὸ τοῖς ὄρεσιν ὁρίοις χρῆσθαι κατὰ τὴν εἰς δύο μέρη διαίρεσιν τῆς Ἀσίας· καθάπερ καὶ ἡ θάλαττα ἡ ἐντὸς στηλῶν, ἐπ' εὐθείας πως οὖσα ἡ πλείστη τοῖς ὄρεσι τούτοις, ἐπιτηδεία γεγένηται πρὸς τὸ δύο ποιεῖν ἠπείρους, τήν τε Εὐρώπην καὶ τὴν Λιβύην, ὅριον ἀμφοῖν οὖσα ἀξιόλογον.

5 Τοῖς δὲ μεταβαίνουσιν ἀπὸ τῆς Εὐρώπης ἐπὶ τὴν Ἀσίαν ἐν τῇ γεωγραφίᾳ τὰ πρὸς βορρᾶν ἐστι πρῶτα τῆς εἰς δύο διαιρέσεως, ὥστε ἀπὸ τούτων ἀρκτέον. αὐτῶν δὲ τούτων πρῶτά ἐστι τὰ περὶ τὸν Τάναϊν, ὅνπερ τῆς Εὐρώπης καὶ τῆς Ἀσίας ὅριον ὑπεθέμεθα. ἔστι δὲ ταῦτα τρόπον τινὰ χερρονησίζοντα· περιέχεται γὰρ ἐκ μὲν τῆς ἑσπέρας τῷ ποταμῷ τῷ Ταναΐδι καὶ τῇ

Μαιώτιδι μέχρι τοῦ Βοσπόρου καὶ τῆς τοῦ Εὐξείνου παραλίας τῆς τελευτώσης εἰς τὴν Κολχίδα· ἐκ δὲ τῶν ἄρκτων τῷ Ὠκεανῷ μέχρι τοῦ στόματος τῆς Κασπίας θαλάττης· ἕωθεν δὲ αὐτῇ ταύτῃ τῇ θαλάττῃ μέχρι τῶν μεθορίων τῆς τε Ἀλβανίας καὶ τῆς Ἀρμενίας, καθ' ἃ ὁ Κῦρος καὶ ὁ Ἀράξης ἐκδιδοῦσι ποταμοί, ῥέοντες ὁ μὲν διὰ τῆς Ἀρμενίας Κῦρος δὲ διὰ τῆς Ἰβηρίας καὶ τῆς Ἀλβανίας· ἐκ νότου δὲ τῇ ἀπὸ τῆς ἐκβολῆς τοῦ Κύρου μέχρι τῆς Κολχίδος, ὅσον τρισχιλίων οὔσῃ σταδίων ἀπὸ θαλάττης ἐπὶ θάλατταν, δι' Ἀλβανῶν καὶ Ἰβήρων, ὥστε ἰσθμοῦ λόγον ἔχειν. οἱ δ' ἐπὶ τοσοῦτον συναγαγόντες τὸν ἰσθμὸν ἐφ' ὅσον Κλείταρχος, ἐπίκλυστον φήσας ἐξ ἑκατέρου τοῦ πελάγους, οὐδ' ἂν λόγου ἀξιοῖντο. Ποσειδώνιος δὲ χιλίων καὶ πεντακοσίων εἴρηκε τὸν ἰσθμόν, ὅσον καὶ τὸν ἀπὸ Πηλουσίου ἰσθμὸν εἰς τὴν Ἐρυθράν. „δοκῶ δέ“ φησί „μὴ πολὺ διαφέρειν μηδὲ τὸν ἀπὸ τῆς Μαιώτιδος εἰς τὸν Ὠκεανόν.“

6 Οὐκ οἶδα δὲ πῶς ἄν τις περὶ τῶν ἀδήλων αὐτῷ πιστεύσειε μηδὲν εἰκὸς ἔχοντι εἰπεῖν περὶ αὐτῶν, ὅταν περὶ τῶν φανερῶν οὕτω παραλόγως λέγῃ, καὶ ταῦτα φίλος Πομπηίῳ γεγονὼς τῷ στρατεύσαντι ἐπὶ C.492 τοὺς Ἴβηρας καὶ τοὺς Ἀλβανοὺς μέχρι τῆς ἐφ' ἑκάτερα θαλάττης τῆς τε Κασπίας καὶ τῆς Κολχικῆς. φασὶ γοῦν ἐν Ῥόδῳ γενόμενον τὸν Πομπήιον, ἡνίκα ἐπὶ τὸν λῃστρικὸν πόλεμον ἐξῆλθεν (εὐθὺς δ' ἔμελλε καὶ ἐπὶ Μιθριδάτην ὁρμήσειν καὶ τὰ μέχρι τῆς Κασπίας ἔθνη), παρατυχεῖν διαλεγομένῳ τῷ Ποσειδωνίῳ, ἀπιόντα δ' ἐρέσθαι εἴ τι προστάττει, τὸν δ' εἰπεῖν „αἰὲν ἀριστεύειν καὶ ὑπείροχον ἔμμεναι ἄλλων.“ προστίθει δὲ τούτοις ὅτι καὶ τὴν ἱστορίαν συνέγραψε τὴν περὶ αὐτόν. διὰ δὴ ταῦτα ἐχρῆν φροντίσαι τἀληθοῦς πλέον τι.

7 Δεύτερον δ' ἂν εἴη μέρος τὸ ὑπὲρ τῆς Ὑρκανίας θαλάττης, ἣν [καὶ] Κασπίαν καλοῦμεν, μέχρι τῶν κατ' Ἰνδοὺς Σκυθῶν. τρίτον δὲ μέρος τὸ συνεχὲς τῷ λεχθέντι ἰσθμῷ καὶ τὰ ἑξῆς τούτῳ καὶ ταῖς Κασπίαις πύλαις, τῶν ἐντὸς τοῦ Ταύρου καὶ τῆς Εὐρώπης ἐγγυτάτω· ταῦτα δ' ἐστὶ Μηδία καὶ Ἀρμενία καὶ Καππαδοκία καὶ τὰ μεταξύ. τέταρτον δ' ἡ ἐντὸς Ἅλυος γῆ καὶ τὰ ἐν αὐτῷ τῷ Ταύρῳ καὶ ἐκτὸς ὅσα εἰς τὴν χερρόνησον ἐμπίπτει, ἣν ποιεῖ ὁ διείργων ἰσθμὸς τήν τε Ποντικὴν καὶ τὴν Κιλικίαν θάλατταν. τῶν δὲ ἄλλων τῶν ἔξω τοῦ Ταύρου τήν τε Ἰνδικὴν τίθεμεν καὶ τὴν Ἀριανὴν μέχρι τῶν ἐθνῶν τῶν καθηκόντων πρός τε τὴν κατὰ Πέρσας θάλατταν καὶ τὸν Ἀράβιον κόλπον καὶ τὸν Νεῖλον καὶ πρὸς τὸ Αἰγύπτιον πέλαγος καὶ τὸ Ἰσσικόν.

2 Οὕτω δὲ διακειμένων τὸ πρῶτον μέρος οἰκοῦσιν ἐκ μὲν τῶν πρὸς ἄρκτον μερῶν καὶ τὸν Ὠκεανὸν Σκυθῶν τινὲς νομάδες καὶ ἁμάξοικοι, ἐνδοτέρω δὲ τούτων Σαρμάται, καὶ οὗτοι Σκύθαι, Ἄορσοι καὶ Σιρακοὶ μέχρι τῶν Καυκασίων ὀρῶν ἐπὶ μεσημβρίαν τείνοντες, οἱ μὲν νομάδες οἱ δὲ καὶ σκηνῖται καὶ γεωργοί, περὶ δὲ τὴν λίμνην Μαιῶται· πρὸς δὲ τῇ θαλάττῃ τοῦ Βοσπόρου τὰ κατὰ τὴν Ἀσίαν ἐστὶ καὶ ἡ Σινδική· μετὰ δὲ ταύτην Ἀχαιοὶ καὶ Ζυγοὶ καὶ Ἡνίοχοι Κερκέται τε καὶ Μακροπώγωνες. ὑπέρκειται δὲ τούτων καὶ τὰ τῶν Φθειροφάγων στενά· μετὰ δὲ τοὺς Ἡνιόχους ἡ Κολχὶς ὑπὸ τοῖς Καυκασίοις ὄρεσι κειμένη καὶ τοῖς Μοσχικοῖς. ἐπεὶ δ' ὅριον ὑπόκειται τῆς Εὐρώπης καὶ τῆς Ἀσίας ὁ Τάναϊς ποταμός, ἐντεῦθεν ἀρξάμενοι τὰ καθ' ἕκαστα ὑπογράψομεν.

---

4. post καὶ : ἀεὶ

2 Φέρεται μὲν οὖν ἀπὸ τῶν ἀρκτικῶν μερῶν, οὐ μὴν ὡς ἂν κατὰ διάμετρον ἀντίρρους τῷ Νείλῳ, καθάπερ νομίζουσιν οἱ πολλοί, ἀλλὰ ἑωθινώτερος ἐκεί-
C.493 νου, παραπλησίως ἐκείνῳ τὰς ἀρχὰς ἀδήλους ἔχων· ἀλλὰ τοῦ μὲν πολὺ τὸ φανερὸν χώραν διεξιόντος πᾶσαν εὐεπίμικτον καὶ μακροὺς ἀνάπλους ἔχοντος, τοῦ δὲ Ταναΐδος τὰς μὲν ἐκβολὰς ἴσμεν (δύο δ' εἰσὶν εἰς τὰ ἀρκτικώτατα μέρη τῆς Μαιώτιδος ἑξήκοντα σταδίους ἀλλήλων διέχουσαι), τοῦ δ' ὑπὲρ τῶν ἐκβολῶν ὀλίγον τὸ γνώριμόν ἐστι διὰ τὰ ψύχη καὶ τὰς ἀπορίας τῆς χώρας, ἃς οἱ μὲν αὐτόχθονες δύνανται φέρειν σαρξὶ καὶ γάλακτι τρεφόμενοι νομαδικῶς, οἱ δ' ἀλλοεθνεῖς οὐχ ὑπομένουσιν. ἄλλως τε οἱ νομάδες δυσεπίμικτοι τοῖς ἄλλοις ὄντες καὶ πλήθει καὶ βίᾳ διαφέροντες ἀποκεκλείκασιν εἰ καί τι πορεύσιμον τῆς χώρας ἐστὶν ἢ εἴ τινας τετύχηκεν ἀνάπλους ἔχων ὁ ποταμός. ἀπὸ δὲ τῆς αἰτίας ταύτης οἱ μὲν ὑπέλαβον τὰς πηγὰς ἔχειν αὐτὸν ἐν τοῖς Καυκασίοις ὄρεσι, πολὺν δ' ἐνεχθέντα ἐπὶ τὰς ἄρκτους εἶτ' ἀναστρέψαντα ἐκβάλλειν εἰς τὴν Μαιῶτιν (τούτοις δὲ ὁμοδοξεῖ καὶ Θεοφάνης ὁ Μιτυληναῖος), οἱ δ' ἀπὸ τῶν ἄνω μερῶν τοῦ Ἴστρου φέρεσθαι· σημεῖον δὲ φέρουσιν οὐδὲν τῆς πόρρωθεν οὕτω ῥύσεως καὶ ἀπ' ἄλλων κλιμάτων, ὥσπερ οὐ δυνατὸν ὂν καὶ ἐγγύθεν καὶ ἀπὸ τῶν ἄρκτων.

3 Ἐπὶ δὲ τῷ ποταμῷ καὶ τῇ λίμνῃ πόλις ὁμώνυμος οἰκεῖται Τάναϊς, κτίσμα τῶν τὸν Βόσπορον ἐχόντων Ἑλλήνων. νεωστὶ μὲν οὖν ἐξεπόρθησεν αὐτὴν Πολέμων ὁ βασιλεὺς ἀπειθοῦσαν, ἦν δ' ἐμπόριον κοινὸν τῶν τε Ἀσιανῶν καὶ τῶν Εὐρωπαίων νομάδων καὶ τῶν ἐκ τοῦ Βοσπόρου τὴν λίμνην πλεόντων, τῶν μὲν ἀνδράποδα ἀγόντων καὶ δέρματα καὶ εἴ τι ἄλλο τῶν νομαδικῶν, τῶν δ' ἐσθῆτα καὶ οἶνον καὶ τἆλλα ὅσα

τῆς ἡμέρου διαίτης οἰκεῖα ἀντιφορτιζομένων. πρόκειται δ' ἐν ἑκατὸν σταδίοις τοῦ ἐμπορίου νῆσος Ἀλωπεκία, κατοικία μιγάδων ἀνθρώπων· ἔστι δὲ καὶ ἄλλα νησίδια πλησίον ἐν τῇ λίμνῃ. διέχει δὲ τοῦ στόματος τῆς Μαιώτιδος εὐθυπλοοῦσιν ἐπὶ τὰ βόρεια δισχιλίους καὶ διακοσίους σταδίους ὁ Τάναϊς, οὐ πολὺ δὲ πλείους εἰσὶ παραλεγομένῳ τὴν γῆν.

Ἐν δὲ τῷ παράπλῳ τῷ παρὰ γῆν πρῶτον μέν 4
ἐστιν ἀπὸ τοῦ Τανάιδος προϊοῦσιν ἐν ὀκτακοσίοις σταδίοις ὁ μέγας καλούμενος Ῥομβίτης, ἐν ᾧ τὰ πλεῖστα ἁλιεύματα τῶν εἰς ταριχείας ἰχθύων· ἔπειτα ἐν ἄλλοις ὀκτακοσίοις ὁ ἐλάττων Ῥομβίτης [καὶ] ἄκρα ἔχουσα καὶ αὐτὴ ἁλιείας ἐλάττους· ἔχουσι δὲ οἱ μὲν .... πρότερον νησία ὁρμητήρια, οἱ δ' ἐν τῷ μικρῷ Ῥομβίτῃ αὐτοί εἰσιν οἱ Μαιῶται ἐργαζόμενοι· οἰκοῦσι γὰρ ἐν τῷ παράπλῳ τούτῳ παντὶ οἱ Μαιῶται, γεωργοὶ μὲν C.494
οὐχ ἧττον δὲ τῶν νομάδων πολεμισταί. διῄρηνται δὲ εἰς ἔθνη πλείω τὰ μὲν πλησίον τοῦ Τανάιδος ἀγριώτερα, τὰ δὲ συνάπτοντα τῷ Βοσπόρῳ χειροήθη μᾶλλον. ἀπὸ δὲ τοῦ μικροῦ Ῥομβίτου στάδιοί εἰσιν ἑξακόσιοι ἐπὶ Τυράμβην καὶ τὸν Ἀντικείτην ποταμόν· εἶθ' ἑκατὸν καὶ εἴκοσιν ἐπὶ τὴν κώμην τὴν Κιμμερικήν, ἥτις ἐστὶν ἀφετήριον τοῖς τὴν λίμνην πλέουσιν· ἐν δὲ τῷ παράπλῳ τούτῳ καὶ σκοπαί τινες λέγονται Κλαζομενίων.

Τὸ δὲ Κιμμερικὸν πόλις ἦν πρότερον ἐπὶ χερρο- 5
νήσου ἱδρυμένη, τὸν ἰσθμὸν τάφρῳ καὶ χώματι κλείουσα· ἐκέκτηντο δ' οἱ Κιμμέριοι μεγάλην ποτὲ ἐν τῷ Βοσπόρῳ δύναμιν, διόπερ καὶ Κιμμερικὸς Βόσπορος ὠνομάσθη. οὗτοι δ' εἰσὶν οἱ τοὺς τὴν μεσόγαιαν οἰκοῦντας ἐν τοῖς δεξιοῖς μέρεσι τοῦ Πόντου μέχρι Ἰωνίας ἐπιδραμόντες. τούτους μὲν οὖν ἐξήλασαν ἐκ τῶν

τόπων Σκύθαι, τοὺς δὲ Σκύθας Ἕλληνες οἱ Παντικάπαιον καὶ τὰς ἄλλας οἰκίσαντες πόλεις τὰς ἐν Βοσπόρῳ.

6 Εἶτ' ἐπὶ τὴν Ἀχίλλειον κώμην εἴκοσιν, ἐν ᾗ τὸ Ἀχιλλέως ἱερόν· ἐνταῦθα δ' ἐστὶν ὁ στενώτατος πορθμὸς τοῦ στόματος τῆς Μαιώτιδος ὅσον εἴκοσι σταδίων ἢ πλειόνων, ἔχων ἐν τῇ περαίᾳ κώμην τὸ Μυρμήκιον (πλησίον δ' ἐστὶ τοῦ Ἡρακλείου) καὶ τὸ Παρθένιον.

7 Ἐντεῦθεν δ' ἐπὶ τὸ Σατύρου μνῆμα ἐνενήκοντα στάδιοι· τοῦτο δ' ἐστὶν ἐπ' ἄκρας τινὸς χωστὸν ἀνδρὸς τῶν ἐπιφανῶς δυναστευσάντων τοῦ Βοσπόρου.

8 Πλησίον δὲ κώμη Πατραεύς, ἀφ' ἧς ἐπὶ κώμην Κοροκονδάμην ἑκατὸν τριάκοντα· αὕτη δ' ἐστὶ τοῦ Κιμμερικοῦ καλουμένου Βοσπόρου πέρας. καλεῖται δὲ οὕτως ὁ στενωπὸς ἐπὶ τοῦ στόματος τῆς Μαιώτιδος ἀπὸ τῶν κατὰ τὸ Ἀχίλλειον καὶ τὸ Μυρμήκιον στενῶν διατείνων μέχρι πρὸς τὴν Κοροκονδάμην καὶ τὸ ἀντικείμενον αὐτῇ κωμίον τῆς Παντικαπαίων γῆς ὄνομα Ἄκραν ἑβδομήκοντα σταδίων διειργόμενον πορθμῷ· μέχρι γὰρ δεῦρο καὶ ὁ κρύσταλλος διατείνει, πηττομένης τῆς Μαιώτιδος κατὰ τοὺς κρυμοὺς ὥστε πεζεύεσθαι. ἅπας δ' ἐστὶν εὐλίμενος ὁ στενωπὸς οὗτος.

9 Ὑπέρκειται δὲ τῆς Κοροκονδάμης εὐμεγέθης λίμνη, ἣν καλοῦσιν ἀπ' αὐτῆς Κοροκονδαμῖτιν· ἐκδίδωσι δ' ἀπὸ δέκα σταδίων τῆς κώμης εἰς τὴν θάλατταν· ἐμβάλλει δὲ εἰς τὴν λίμνην ἀπορρώξ τις τοῦ Ἀντικείτου ποταμοῦ, καὶ ποιεῖ νῆσον περίκλυστόν τινα ταύτῃ τε τῇ λίμνῃ καὶ τῇ Μαιώτιδι καὶ τῷ ποταμῷ. τινὲς δὲ καὶ τοῦτον τὸν ποταμὸν Ὕπανιν προσαγορεύουσι, καθάπερ καὶ τὸν πρὸς τῷ Βορυσθένει.

10 *Εἰσπλεύσαντι δ' εἰς τὴν Κοροκονδαμῖτιν ἥ τε Φαναγόρειά ἐστι πόλις ἀξιόλογος καὶ Κῆποι καὶ Ἑρμώ-* C.495 *νασσα καὶ τὸ Ἀπάτουρον τὸ τῆς Ἀφροδίτης ἱερόν· ὧν ἡ Φαναγόρεια καὶ οἱ Κῆποι κατὰ τὴν λεχθεῖσαν νῆσον ἵδρυνται εἰσπλέοντι ἐν ἀριστερᾷ, αἱ δὲ λοιπαὶ πόλεις ἐν δεξιᾷ πέραν Ὑπάνιος ἐν τῇ Σινδικῇ. ἔστι δὲ καὶ Γοργιπία ἐν τῇ Σινδικῇ, τὸ βασίλειον τῶν Σινδῶν πλησίον θαλάττης, καὶ Ἀβοράκη. τοῖς δὲ τοῦ Βοσπόρου δυνάσταις ὑπήκοοι ὄντες ἅπαντες Βοσπορανοὶ καλοῦνται· καὶ ἔστι τῶν μὲν Εὐρωπαίων Βοσπορανῶν μητρόπολις τὸ Παντικάπαιον, τῶν δ' Ἀσιανῶν τὸ Φαναγόρειον (καλεῖται γὰρ καὶ οὕτως ἡ πόλις), καὶ δοκεῖ τῶν μὲν ἐκ τῆς Μαιώτιδος καὶ τῆς ὑπερκειμένης βαρβάρου κατακομιζομένων ἐμπόριον εἶναι τὰ Φαναγόρεια, τῶν δ' ἐκ τῆς θαλάττης ἀναφερομένων ἐκεῖσε τὸ Παντικάπαιον. ἔστι δὲ καὶ ἐν τῇ Φαναγορείᾳ τῆς Ἀφροδίτης ἱερὸν ἐπίσημον τῆς Ἀπατούρου· ἐτυμολογοῦσι δὲ τὸ ἐπίθετον τῆς θεοῦ μῦθόν τινα προστησάμενοι, ὡς ἐπιθεμένων ἐνταῦθα τῇ θεῷ τῶν γιγάντων ἐπικαλεσαμένη τὸν Ἡρακλέα κρύψειεν ἐν κευθμῶνί τινι, εἶτα τῶν γιγάντων ἕκαστον δεχομένη καθ' ἕνα τῷ Ἡρακλεῖ παραδιδοίη δολοφονεῖν ἐξ ἀπάτης.*

11 *Τῶν Μαιωτῶν δ' εἰσὶν αὐτοί τε οἱ Σινδοὶ καὶ Δανδάριοι καὶ Τορέται καὶ Ἄγροι καὶ Ἀρρηχοί, ἔτι δὲ Τάρπητες Ὀβιδιακηνοὶ Σιττακηνοὶ Δόσκοι, ἄλλοι πλείους· τούτων δ' εἰσὶ καὶ οἱ Ἀσπουργιανοὶ μεταξὺ Φαναγορείας οἰκοῦντες καὶ Γοργιπίας ἐν πεντακοσίοις σταδίοις, οἷς ἐπιθέμενος Πολέμων ὁ βασιλεὺς ἐπὶ προσποιήσει φιλίας οὐ λαθὼν ἀντεστρατηγήθη καὶ ζωγρίᾳ ληφθεὶς ἀπέθανε. τῶν τε συμπάντων Μαιωτῶν τῶν Ἀσιανῶν οἱ μὲν ὑπήκουον τῶν τὸ ἐμπόριον ἐχόντων τὸ ἐν τῷ Τανάιδι οἱ δὲ τῶν Βοσπορανῶν· τοτὲ δ' ἀφί-*

σταντο ἄλλοτ' ἄλλοι. πολλάκις δ' οἱ τῶν Βοσπορανῶν ἡγεμόνες καὶ τὰ μέχρι τοῦ Τανάιδος κατεῖχον καὶ μάλιστα οἱ ὕστατοι, Φαρνάκης καὶ Ἄσανδρος καὶ Πολέμων. Φαρνάκης δέ ποτε καὶ τὸν Ὕπανιν τοῖς Δανδαρίοις ἐπαγαγεῖν λέγεται διά τινος παλαιᾶς διώρυγος ἀνακαθάρας αὐτὴν [καὶ] κατακλύσαι τὴν χώραν.

12 Μετὰ δὲ τὴν Σινδικὴν καὶ τὴν Γοργιπίαν ἐπὶ τῇ θαλάττῃ ἡ τῶν Ἀχαιῶν καὶ Ζυγῶν καὶ Ἡνιόχων παραλία τὸ πλέον ἀλίμενος καὶ ὀρεινή, τοῦ Καυκάσου μέρος οὖσα. ζῶσι δὲ ἀπὸ τῶν κατὰ θάλατταν ληστηρίων, ἀκάτια ἔχοντες λεπτὰ στενὰ καὶ κοῦφα, ὅσον ἀνθρώπους πέντε καὶ εἴκοσι δεχόμενα, σπάνιον δὲ τριάκοντα δέξασθαι τοὺς πάντας δυνάμενα· καλοῦσι δ' αὐτὰ οἱ Ἕλληνες καμάρας. φασὶ δ' ἀπὸ τῆς Ἰάσονος στρατιᾶς τοὺς μὲν Φθιώτας Ἀχαιοὺς τὴν ἐνθάδε
C.496 Ἀχαΐαν οἰκίσαι, Λάκωνας δὲ τὴν Ἡνιοχίαν, ὧν ἦρχον Κρέκας καὶ Ἀμφίστρατος οἱ τῶν Διοσκούρων ἡνίοχοι, καὶ τοὺς Ἡνιόχους ἀπὸ τούτων εἰκὸς ὠνομάσθαι. τῶν δ' οὖν καμαρῶν στόλους κατασκευαζόμενοι καὶ ἐπιπλέοντες τοτὲ μὲν ταῖς ὁλκάσι τοτὲ δὲ χώρᾳ τινὶ ἢ καὶ πόλει θαλαττοκρατοῦσι. προσλαμβάνουσι δ' ἔσθ' ὅτε καὶ οἱ τὸν Βόσπορον ἔχοντες ὑφόρμους χορηγοῦντες καὶ ἀγορὰν καὶ διάθεσιν τῶν ἁρπαζομένων· ἐπανιόντες δὲ εἰς τὰ οἰκεῖα χωρία, ναυλοχεῖν οὐκ ἔχοντες, ἀναθέμενοι τοῖς ὤμοις τὰς καμάρας ἀναφέρουσιν ἐπὶ τοὺς δρυμοὺς ἐν οἷσπερ καὶ οἰκοῦσι, λυπρὰν ἀροῦντες γῆν· καταφέρουσι δὲ πάλιν ὅταν ᾖ καιρὸς τοῦ πλεῖν. τὸ δ' αὐτὸ ποιοῦσι καὶ ἐν τῇ ἀλλοτρίᾳ γνώριμα ἔχοντες ὑλώδη χωρία, ἐν οἷς ἀποκρύψαντες τὰς καμάρας αὐτοὶ πλανῶνται πεζῇ νύκτωρ καὶ μεθ' ἡμέραν ἀνδραποδισμοῦ χάριν. ἃ δ' ἂν λάβωσιν ἐπίλυτρα ποιοῦσι ῥᾳδίως μετὰ τοὺς ἀνάπλους

μηνύοντες τοῖς ἀπολέσασιν. ἐν μὲν οὖν τοῖς δυναστευομένοις τόποις ἐστί τις βοήθεια ἐκ τῶν ἡγεμόνων τοῖς ἀδικουμένοις· ἀντεπιτίθενται γὰρ πολλάκις καὶ κατάγουσιν αὐτάνδρους τὰς καμάρας· ἡ δ' ὑπὸ Ῥωμαίοις ἀβοηθητοτέρα ἐστὶ διὰ τὴν ὀλιγωρίαν τῶν πεμπομένων.

13 Τοιοῦτος μὲν ὁ τούτων βίος· δυναστεύονται δὲ καὶ οὗτοι ὑπὸ τῶν καλουμένων Σκηπτούχων· καὶ αὐτοὶ δὲ οὗτοι ὑπὸ τυράννοις ἢ βασιλεῦσίν εἰσιν. οἱ γοῦν Ἡνίοχοι τέτταρας εἶχον βασιλέας, ἡνίκα Μιθριδάτης ὁ Εὐπάτωρ φεύγων ἐκ τῆς προγονικῆς εἰς Βόσπορον διήει τὴν χώραν αὐτῶν· καὶ αὕτη μὲν ἦν πορεύσιμος αὐτῷ, τῆς δὲ τῶν Ζυγῶν ἀπογνοὺς διά τε δυσχερείας καὶ ἀγριότητας τῇ παραλίᾳ χαλεπῶς ᾔει, τὰ πολλὰ ἐμβαίνων ἐπὶ τὴν θάλατταν, ἕως ἐπὶ τὴν τῶν Ἀχαιῶν ἧκε· καὶ προσλαβόντων τούτων ἐξετέλεσε τὴν ὁδὸν τὴν ἐκ Φάσιδος οὐ πολὺ τῶν τετρακισχιλίων λείπουσαν σταδίων.

14 Εὐθὺς δ' οὖν ἀπὸ τῆς Κοροκονδάμης πρὸς ἕω μὲν ὁ πλοῦς ἐστιν. ἐν δὲ σταδίοις ἑκατὸν ὀγδοήκοντα ὁ Σινδικός ἐστι λιμὴν καὶ πόλις, εἶτα ἐν τετρακοσίοις τὰ καλούμενα Βατὰ κώμη καὶ λιμήν, καθ' ὃ μάλιστα ἀντικεῖσθαι δοκεῖ πρὸς νότον ἡ Σινώπη ταύτῃ τῇ παραλίᾳ, καθάπερ ἡ Κάραμβις εἴρηται τοῦ Κριοῦ μετώπῳ· ἀπὸ δὲ τῶν Βατῶν ὁ μὲν Ἀρτεμίδωρος τὴν Κερκετῶν λέγει παραλίαν ὑφόρμους ἔχουσαν καὶ κώμας ὅσον ἐπὶ σταδίους ὀκτακοσίους καὶ πεντήκοντα, εἶτα τὴν τῶν Ἀχαιῶν σταδίων πεντακοσίων, εἶτα τὴν τῶν Ἡνιόχων χιλίων, εἶτα τὸν Πιτυοῦντα τὸν μέγαν τριακοσίων ἑξήκοντα μέχρι Διοσκουριάδος· οἱ δὲ τὰ C.497 Μιθριδατικὰ συγγράψαντες, οἷς μᾶλλον προσεκτέον, Ἀχαιοὺς λέγουσι πρώτους, εἶτα Ζυγούς, εἶτα Ἡνιό-

χους, εἶτα Κερκέτας καὶ Μόσχους καὶ Κόλχους καὶ τοὺς ὑπὲρ τούτων Φθειροφάγους καὶ Σοάνας καὶ ἄλλα μικρὰ ἔθνη τὰ περὶ τὸν Καύκασον. κατ' ἀρχὰς μὲν οὖν ἡ παραλία, καθάπερ εἶπον, ἐπὶ τὴν ἕω τείνει καὶ βλέπει πρὸς νότον, ἀπὸ δὲ τῶν Βατῶν ἐπιστροφὴν λαμβάνει κατὰ μικρόν, εἶτ' ἀντιπρόσωπος γίνεται τῇ δύσει καὶ τελευτᾷ πρὸς τὸν Πιτυοῦντα καὶ τὴν Διοσκουριάδα· ταῦτα γὰρ τὰ χωρία τῆς Κολχίδος συνάπτει τῇ λεχθείσῃ παραλίᾳ. μετὰ δὲ τὴν Διοσκουριάδα ἡ λοιπὴ τῆς Κολχίδος ἐστὶ παραλία καὶ ἡ συνεχὴς Τραπεζοῦς καμπὴν ἀξιόλογον ποιήσασα, εἶτα εἰς εὐθεῖαν ταθεῖσά πως πλευρὰν τὴν τὰ δεξιὰ τοῦ Πόντου ποιοῦσαν τὰ βλέποντα πρὸς ἄρκτον. ἅπασα δ' ἡ τῶν Ἀχαιῶν καὶ τῶν ἄλλων παραλία μέχρι Διοσκουριάδος καὶ τῶν ἐπ' εὐθείας πρὸς νότον ἐν τῇ μεσογαίᾳ τόπων ὑποπέπτωκε τῷ Καυκάσῳ.

15 Ἔστι δ' ὄρος τοῦτο ὑπερκείμενον τοῦ πελάγους ἑκατέρου τοῦ τε Ποντικοῦ καὶ τοῦ Κασπίου, διατειχίζον τὸν ἰσθμὸν τὸν διείργοντα αὐτά. ἀφορίζει δὲ πρὸς νότον μὲν τήν τε Ἀλβανίαν καὶ τὴν Ἰβηρίαν, πρὸς ἄρκτον δὲ τὰ τῶν Σαρματῶν πεδία· εὔδενδρον δ' ἐστὶν ὕλῃ παντοδαπῇ τῇ τε ἄλλῃ καὶ τῇ ναυπηγησίμῳ. φησὶ δ' Ἐρατοσθένης ὑπὸ τῶν ἐπιχωρίων καλεῖσθαι Κάσπιον τὸν Καύκασον, ἴσως ἀπὸ τῶν Κασπίων παρονομασθέντα. ἀγκῶνες δέ τινες αὐτοῦ προπίπτουσιν ἐπὶ τὴν μεσημβρίαν, οἳ τήν τε Ἰβηρίαν περιλαμβάνουσι μέσην καὶ τοῖς Ἀρμενίων ὄρεσι συνάπτουσι καὶ τοῖς Μοσχικοῖς καλουμένοις, ἔτι δὲ τῷ Σκυδίσῃ καὶ τῷ Παρυάδρῃ· ταῦτα δ' ἐστὶ μέρη τοῦ Ταύρου πάντα τοῦ ποιοῦντος τὸ νότιον τῆς Ἀρμενίας πλευρόν, ἀπερρωγότα πως ἐκεῖθεν πρὸς ἄρκτον καὶ προσπίπτοντα μέχρι τοῦ Καυκάσου καὶ τῆς τοῦ Εὐξείνου

παραλίας τῆς ἐπὶ Θεμίσκυραν διατεινούσης ἀπὸ τῆς Κολχίδος.

Ἡ δ' οὖν Διοσκουριὰς ἐν κόλπῳ τοιούτῳ κειμένη 16 καὶ τὸ ἑωθινώτατον σημεῖον ἐπέχουσα τοῦ σύμπαντος πελάγους, μυχός τε τοῦ Εὐξείνου λέγεται καὶ ἔσχατος πλοῦς· τό τε παροιμιακῶς λεχθὲν οὕτω δεῖ δέξασθαι „εἰς Φᾶσιν ἔνθα ναυσὶν ἔσχατος δρόμος," οὐχ ὡς τὸν ποταμὸν λέγοντος τοῦ ποιήσαντος τὸ ἰαμβεῖον, οὐδὲ δὴ ὡς τὴν ὁμώνυμον αὐτῷ πόλιν κειμένην ἐπὶ τῷ ποταμῷ, ἀλλ' ὡς τὴν Κολχίδα ἀπὸ μέρους, ἐπεὶ ἀπό γε τοῦ ποταμοῦ καὶ τῆς πόλεως οὐκ ἐλάττων ἑξακοσίων σταδίων λείπεται πλοῦς ἐπ' εὐθείας εἰς τὸν μυχόν. ἡ δ' αὐτὴ Διοσκουριάς ἐστι καὶ ἀρχὴ τοῦ ἰσθμοῦ τοῦ C.498 μεταξὺ τῆς Κασπίας καὶ τοῦ Πόντου καὶ ἐμπόριον τῶν ὑπερκειμένων καὶ σύνεγγυς ἐθνῶν κοινόν· συνέρχεσθαι γοῦν εἰς αὐτὴν ἑβδομήκοντα, οἱ δὲ καὶ τριακόσια ἔθνη φασίν, οἷς οὐδὲν τῶν ὄντων μέλει, πάντα δὲ ἑτερόγλωττα διὰ τὸ σποράδην καὶ ἀμίκτως οἰκεῖν ὑπὸ αὐθαδείας καὶ ἀγριότητος· Σαρμάται δ' εἰσὶν οἱ πλείους, πάντες δὲ Καυκάσιοι. ταῦτα μὲν δὴ τὰ περὶ τὴν Διοσκουριάδα.

Καὶ ἡ λοιπὴ δὲ Κολχὶς ἐπὶ τῇ θαλάττῃ ἡ πλείων 17 ἐστί· διαρρεῖ δ' αὐτὴν ὁ Φᾶσις, μέγας ποταμὸς ἐξ Ἀρμενίας τὰς ἀρχὰς ἔχων, δεχόμενος τόν τε Γλαῦκον καὶ τὸν Ἵππον ἐκ τῶν πλησίον ὀρῶν ἐκπίπτοντας· ἀναπλεῖται δὲ μέχρι Σαραπανῶν ἐρύματος δυναμένου δέξασθαι καὶ πόλεως συνοικισμόν, ὅθεν πεζεύουσιν ἐπὶ τὸν Κῦρον ἡμέραις τέτταρσι δι' ἁμαξιτοῦ. ἐπίκειται δὲ τῷ Φάσιδι ὁμώνυμος πόλις, ἐμπόριον τῶν Κόλχων, τῇ μὲν προβεβλημένη τὸν ποταμὸν τῇ δὲ λίμνην τῇ δὲ τὴν θάλατταν. ἐντεῦθεν δὲ πλοῦς ἐπ' Ἀμισοῦ καὶ Σινώπης * τριῶν ἡμερῶν ἢ δύο διὰ τὸ τοὺς αἰγιαλοὺς

μαλακοὺς εἶναι καὶ τὰς τῶν ποταμῶν ἐκβολάς. ἀγαθὴ δ' ἐστὶν ἡ χώρα καὶ καρποῖς πλὴν τοῦ μέλιτος (πικρίζει γὰρ τὸ πλέον) καὶ τοῖς πρὸς ναυπηγίαν πᾶσιν· ὕλην τε γὰρ καὶ φύει καὶ ποταμοῖς κατακομίζει, λίνον τε ποιεῖ πολὺ καὶ κάνναβιν καὶ κηρὸν καὶ πίτταν. ἡ δὲ λινουργία καὶ τεθρύληται· καὶ γὰρ εἰς τοὺς ἔξω τόπους ἐξεκόμιζον, καί τινες βουλόμενοι συγγένειάν τινα τοῖς Κόλχοις πρὸς τοὺς Αἰγυπτίους ἐμφανίζειν ἀπὸ τούτων πιστοῦνται. ὑπέρκειται δὲ τῶν λεχθέντων ποταμῶν ἐν τῇ Μοσχικῇ τὸ τῆς Λευκοθέας ἱερὸν Φρίξου ἵδρυμα, καὶ μαντεῖον ἐκείνου, ὅπου κριὸς οὐ θύεται, πλούσιόν ποτε ὑπάρξαν, συληθὲν δὲ ὑπὸ Φαρνάκου καθ' ἡμᾶς καὶ μικρὸν ὕστερον ὑπὸ Μιθριδάτου τοῦ Περγαμηνοῦ. κακωθείσης γὰρ χώρας „νοσεῖ τὰ τῶν θεῶν οὐδὲ τι-„μᾶσθαι θέλει," φησὶν Εὐριπίδης.

18 *Τὸ μὲν γὰρ παλαιὸν ὅσην ἐπιφάνειαν ἔσχεν ἡ χώρα αὕτη δηλοῦσιν οἱ μῦθοι, τὴν Ἰάσονος στρατείαν αἰνιττόμενοι προελθόντος μέχρι καὶ Μηδίας, ἔτι δὲ πρότερον τὴν Φρίξου. μετὰ δὲ ταῦτα διαδεξάμενοι βασιλεῖς εἰς σκηπτουχίας διῃρημένην ἔχοντες τὴν χώραν μέσως ἔπραττον· αὐξηθέντος δὲ ἐπὶ πολὺ Μιθριδάτου τοῦ Εὐπάτορος, εἰς ἐκεῖνον ἡ χώρα περιέστη· ἐπέμ-*
C.499 *πετο δ' ἀεί τις τῶν φίλων ὕπαρχος καὶ διοικητὴς τῆς χώρας. τούτων δὲ ἦν καὶ Μοαφέρνης, ὁ τῆς μητρὸς ἡμῶν θεῖος πρὸς πατρός· ἦν δ' ἔνθεν ἡ πλείστη τῷ βασιλεῖ πρὸς τὰς ναυτικὰς δυνάμεις ὑπουργία. καταλυθέντος δὲ Μιθριδάτου συγκατελύθη καὶ ἡ ὑπ' αὐτῷ πᾶσα καὶ διενεμήθη πολλοῖς· ὕστατα δὲ Πολέμων ἔσχε τὴν Κολχίδα, κἀκείνου τελευτήσαντος ἡ γυνὴ Πυθοδωρὶς κρατεῖ, βασιλεύουσα καὶ Κόλχων καὶ Τραπεζοῦντος καὶ Φαρνακίας καὶ τῶν ὑπερκειμένων βαρβάρων, περὶ ὧν ἐροῦμεν ἐν τοῖς ὕστερον. ἡ δ' οὖν Μο-*

σχική, ἐν ᾗ τὸ ἱερόν, τριμερής ἐστι· τὸ μὲν γὰρ ἔχουσιν αὐτῆς Κόλχοι τὸ δὲ Ἴβηρες τὸ δὲ Ἀρμένιοι. ἔστι δὲ καὶ πολίχνιον ἐν τῇ Ἰβηρίᾳ Φρίξου πόλις ἡ νῦν Ἰδήεσσα, εὐερκὲς χωρίον ἐν μεθορίοις τῆς Κολχίδος.

Τῶν δὲ συνερχομένων ἐθνῶν εἰς τὴν Διοσκουρι- 19
άδα καὶ οἱ Φθειροφάγοι εἰσίν, ἀπὸ τοῦ αὐχμοῦ καὶ τοῦ πίνου λαβόντες τοὔνομα. πλησίον δὲ καὶ οἱ Σοάνες, οὐδὲν βελτίους τούτων τῷ πίνῳ δυνάμει δὲ βελτίους, σχεδὸν δέ τι καὶ κράτιστοι κατὰ ἀλκὴν καὶ δύναμιν· δυναστεύουσι γοῦν τῶν κύκλῳ τὰ ἄκρα τοῦ Καυκάσου κατέχοντες τὰ ὑπὲρ τῆς Διοσκουριάδος· βασιλέα δ' ἔχουσι καὶ συνέδριον ἀνδρῶν τριακοσίων, συνάγουσι δ' ὥς φασι στρατιὰν καὶ εἴκοσι μυριάδων· ἅπαν γάρ ἐστι τὸ πλῆθος μάχιμον, οὐ συντεταγμένον [δέ]. παρὰ τούτοις δὲ λέγεται καὶ χρυσὸν καταφέρειν τοὺς χειμάρρους, ὑποδέχεσθαι δ' αὐτὸν τοὺς βαρβάρους φάτναις κατατετρημέναις καὶ μαλλωταῖς δοραῖς· ἀφ' οὗ δὴ μεμυθεῦσθαι καὶ τὸ χρυσόμαλλον δέρος· * εἰ μὴ καὶ Ἴβηρας ὁμωνύμως τοῖς ἑσπερίοις καλοῦσιν ἀπὸ τῶν ἑκατέρωθι χρυσείων. χρῶνται δ' οἱ Σοάνες φαρμάκοις πρὸς τὰς ἀκίδας * θαυμαστῶς καὶ τοὺς ἀφαρμάκτοις τετρωμένους βέλεσι λυπεῖ κατὰ τὴν ὀσμήν. τὰ μὲν οὖν ἄλλα ἔθνη τὰ πλησίον τὰ περὶ τὸν Καύκασον λυπρὰ καὶ μικρόχωρα, τὸ δὲ τῶν Ἀλβανῶν ἔθνος καὶ τὸ τῶν Ἰβήρων, ἃ δὴ πληροῖ μάλιστα τὸν λεχθέντα ἰσθμόν, Καυκάσια [μὲν] καὶ αὐτὰ λέγοιτ' ἄν, εὐδαίμονα δὲ χώραν ἔχει καὶ σφόδρα καλῶς οἰκεῖσθαι δυναμένην.

Καὶ δή κ' ἥ γε Ἰβηρία κατοικεῖται καλῶς τὸ πλέον 3
πόλεσί τε καὶ ἐποικίοις, ὥστε καὶ κεραμωτὰς εἶναι στέ-

4. post Κολχίδος: περὶ τὴν Διοσκουριάδα ῥεῖ ὁ Χάρης ποταμός.

γας καὶ ἀρχιτεκτονικὴν τὴν τῶν οἰκήσεων κατασκευὴν καὶ ἀγορὰς καὶ τἆλλα κοινά.

2 Τῆς δὲ χώρας τὰ μὲν κύκλῳ τοῖς Καυκασίοις ὄρεσι C.500 περιέχεται· προπεπτώκασι γάρ, ὡς εἶπον, ἀγκῶνες ἐπὶ τὴν μεσημβρίαν εὔκαρποι, περιλαμβάνοντες τὴν σύμπασαν Ἰβηρίαν καὶ συνάπτοντες πρός τε τὴν Ἀρμενίαν καὶ τὴν Κολχίδα· ἐν μέσῳ δ' ἐστὶ πεδίον ποταμοῖς διάρρυτον, μεγίστῳ δὲ τῷ Κύρῳ, ὃς τὴν ἀρχὴν ἔχων ἀπὸ τῆς Ἀρμενίας, εἰσβαλὼν εὐθὺς εἰς τὸ πεδίον τὸ λεχθέν, παραλαβὼν καὶ τὸν Ἄραγον ἐκ τοῦ Καυκάσου ῥέοντα καὶ ἄλλα ὕδατα διὰ στενῆς ποταμίας εἰς τὴν Ἀλβανίαν ἐκπίπτει· μεταξὺ δὲ ταύτης τε καὶ τῆς Ἀρμενίας ἐνεχθεὶς πολὺς διὰ πεδίων εὐβοτουμένων σφόδρα, δεξάμενος καὶ [ἄλλους] πλείους ποταμούς, ὧν ἐστιν ὅ τε Ἀλαζόνιος καὶ ὁ Σανδοβάνης καὶ ὁ Ῥοιτάκης καὶ Χάνης πλωτοὶ πάντες εἰς τὴν Κασπίαν ἐμβάλλει θάλατταν. ἐκαλεῖτο δὲ πρότερον Κόρος.

3 Τὸ μὲν οὖν πεδίον τῶν Ἰβήρων οἱ γεωργικώτεροι καὶ πρὸς εἰρήνην νενευκότες οἰκοῦσιν ἀρμενιστί τε καὶ μηδιστὶ ἐσκευασμένοι, τὴν δ' ὀρεινὴν οἱ πλείους καὶ μάχιμοι κατέχουσι Σκυθῶν δίκην ζῶντες καὶ Σαρματῶν, ὧνπερ καὶ ὅμοροι καὶ συγγενεῖς εἰσιν· ἅπτονται δ' ὅμως καὶ γεωργίας, πολλάς τε μυριάδας συνάγουσιν καὶ ἐξ ἑαυτῶν καὶ ἐξ ἐκείνων, ἐπειδάν τι συμπέσῃ θορυβῶδες.

4 Τέτταρες δ' εἰσὶν εἰς τὴν χώραν εἰσβολαί· μία μὲν διὰ Σαραπανῶν φρουρίου Κολχικοῦ καὶ τῶν κατ' αὐτὸ στενῶν, δι' ὧν ὁ Φᾶσις γεφύραις ἑκατὸν καὶ εἴκοσι περατὸς γινόμενος διὰ τὴν σκολιότητα καταρρεῖ τραχὺς καὶ βίαιος εἰς τὴν Κολχίδα, πολλοῖς χειμάρροις κατὰ τὰς ἐπομβρίας ἐκχαραδρουμένων τῶν τόπων. γεννᾶται δ' ἐκ τῶν ὑπερκειμένων ὀρῶν πολλαῖς συμ-

πληρούμενος πηγαῖς, ἐν δὲ τοῖς πεδίοις καὶ ἄλλους προσλαμβάνει ποταμούς, ὧν ἐστιν ὅ τε Γλαῦκος καὶ ὁ Ἵππος· πληρωθεὶς δὲ καὶ γενόμενος πλωτὸς ἐξίησιν εἰς τὸν Πόντον καὶ ἔχει πόλιν ὁμώνυμον ἐφ' αὐτῷ καὶ λίμνην πλησίον. ἡ μὲν οὖν ἐκ τῆς Κολχίδος εἰς τὴν Ἰβηρίαν ἐμβολὴ τοιαύτη, πέτραις καὶ ἐρύμασι καὶ ποταμοῖς χαραδρώδεσι διακεκλεισμένη.

Ἐκ δὲ τῶν πρὸς ἄρκτον νομάδων ἐπὶ τρεῖς ἡμέρας 5
ἀνάβασις χαλεπή, καὶ μετὰ ταύτην ποταμία στενὴ ἐπὶ τοῦ Ἀράγου ποταμοῦ τεττάρων ἡμερῶν ὁδὸν ἔχουσα ἐφ' ἕνα, φρουρεῖ δὲ τὸ πέρας τῆς ὁδοῦ τεῖχος δύσμαχον· ἀπὸ δὲ τῆς Ἀλβανίας διὰ πέτρας πρῶτον λατομητὴ εἴσοδος, εἶτα διὰ τέλματος ὃ ποιεῖ ὁ ποταμὸς [Ἀλαζόνιος] ἐκ τοῦ Καυκάσου καταπίπτων. ἀπὸ δὲ τῆς Ἀρμενίας τὰ ἐπὶ τῷ Κύρῳ στενὰ καὶ τὰ ἐπὶ τῷ *Ἀράγῳ· πρὶν γὰρ εἰς ἀλλήλους συμπεσεῖν, ἔχουσιν ἐπικειμένας πόλεις ἐρυμνὰς ἐπὶ πέτραις διεχούσαις ἀλλήλων C.501
ὅσον ἑκκαίδεκα σταδίους, ἐπὶ μὲν τῷ Κύρῳ τὴν Ἁρμοζικὴν ἐπὶ δὲ θατέρῳ Σευσάμορα. ταύταις δὲ ἐχρήσατο ταῖς εἰσβολαῖς πρότερον Πομπήιος ἐκ τῶν Ἀρμενίων ὁρμηθείς, καὶ μετὰ ταῦτα Κανίδιος.

Τέτταρα δὲ καὶ γένη τῶν ἀνθρώπων οἰκεῖ τὴν 6
χώραν· ἓν μὲν καὶ πρῶτον ἐξ οὗ τοὺς βασιλέας καθιστᾶσι κατ' ἀγχιστείαν τε καὶ ἡλικίαν τὸν πρεσβύτατον, ὁ δὲ δεύτερος δικαιοδοτεῖ καὶ στρατηλατεῖ. δεύτερον δὲ τὸ τῶν ἱερέων οἳ ἐπιμελοῦνται καὶ τῶν πρὸς τοὺς ὁμόρους δικαίων. τρίτον δὲ τὸ τῶν στρατευομένων καὶ γεωργούντων. τέταρτον δὲ τὸ τῶν λαῶν, οἳ βασιλικοὶ δοῦλοί εἰσι καὶ πάντα διακονοῦνται τὰ πρὸς τὸν βίον. κοιναὶ δ' εἰσὶν αὐτοῖς αἱ κτήσεις κατὰ συγγένειαν, ἄρχει δὲ καὶ ταμιεύει ἑκάστην ὁ πρεσβύτατος. τοιοῦτοι μὲν οἱ Ἴβηρες καὶ ἡ χώρα αὐτῶν.

4 Ἀλβανοὶ δὲ ποιμενικώτεροι καὶ τοῦ νομαδικοῦ γένους ἐγγυτέρω, πλὴν ἀλλ' οὐκ ἄγριοι· ταύτῃ δὲ καὶ πολεμικοὶ μετρίως. οἰκοῦσι δὲ μεταξὺ τῶν Ἰβήρων καὶ τῆς Κασπίας θαλάττης, πρὸς ἕω μὲν ἁπτόμενοι τῆς θαλάττης, πρὸς δύσιν δὲ ὁμοροῦντες τοῖς Ἴβηρσι· τῶν δὲ λοιπῶν πλευρῶν τὸ μὲν βόρειον φρουρεῖται τοῖς Καυκασίοις ὄρεσι (ταῦτα γὰρ ὑπέρκειται τῶν πεδίων, καλεῖται δὲ τὰ πρὸς τῇ θαλάττῃ μάλιστα Κεραύνια), τὸ δὲ νότιον ποιεῖ ἡ Ἀρμενία παρήκουσα, πολλὴ μὲν πεδιὰς πολλὴ δὲ καὶ ὀρεινή, καθάπερ ἡ Καμβυσηνή, καθ' ἣν ἅμα καὶ τοῖς Ἴβηρσι καὶ τοῖς Ἀλβανοῖς οἱ Ἀρμένιοι συνάπτουσιν.

2 Ὁ δὲ Κῦρος ὁ διαρρέων τὴν Ἀλβανίαν καὶ οἱ ἄλλοι ποταμοὶ οἱ πληροῦντες ἐκεῖνον ταῖς μὲν τῆς γῆς ἀρεταῖς προσλαμβάνουσι, τὴν δὲ θάλατταν ἀλλοτριοῦσιν. ἡ γὰρ χοῦς προσπίπτουσα πολλὴ πληροῖ τὸν πόρον, ὥστε καὶ τὰς ἐπικειμένας νησῖδας ἐξηπειροῦσθαι καὶ τενάγη ποιεῖν ἀνώμαλα καὶ δυσφύλακτα· τὴν δ' ἀνωμαλίαν ἐπιτείνουσιν αἱ ἐκ τῶν πλημμυρίδων ἀνακοπαί. καὶ δὴ καὶ εἰς στόματα δώδεκά φασι μεμερίσθαι τὰς ἐκβολάς, τὰ μὲν τυφλὰ τὰ δὲ παντελῶς *ἐπιγελῶντα καὶ μηδὲ ὕφορμον ἀπολείποντα· ἐπὶ πλείους γοῦν ἢ ἑξήκοντα σταδίους ἀμφικλύστου τῆς ᾐόνος οὔσης τῇ θαλάττῃ καὶ τοῖς ποταμοῖς, ἅπαν εἶναι μέρος αὐτῆς ἀπροσπέλαστον, τὴν δὲ χοῦν καὶ μέχρι πεντακοσίων παρήκειν σταδίων θινώδη ποιοῦσαν τὸν αἰγιαλόν. πλησίον δὲ καὶ ὁ Ἀράξης ἐμβάλλει τραχὺς ἐκ τῆς Ἀρμενίας ἐκπίπτων· ἣν δὲ ἐκεῖνος προωθεῖ χοῦν πορευτὸν ποιῶν τὸ ῥεῖθρον, ταύτην ὁ Κῦρος ἀναπληροῖ.

3 Τάχα μὲν οὖν τῷ τοιούτῳ γένει τῶν ἀνθρώπων
C.502 οὐδὲν δεῖ θαλάττης· οὐδὲ γὰρ τῇ γῇ χρῶνται κατ' ἀξίαν, πάντα μὲν ἐκφερούσῃ καρπὸν καὶ τὸν ἡμερώτατον,

πᾶν δὲ φυτόν· καὶ γὰρ τὰ ἀειθαλῆ φέρει· τυγχάνει δ' ἐπιμελείας οὐδὲ μικρᾶς „ἀλλὰ τάγ' ἄσπαρτα καὶ ἀνήροτα πάντα φύονται,“ καθάπερ οἱ στρατεύσαντές φασι, Κυκλώπειόν τινα διηγούμενοι βίον· πολλαχοῦ γὰρ σπαρεῖσαν ἅπαξ δὶς ἐκφέρειν καρπὸν ἢ καὶ τρίς, τὸν δὲ πρῶτον καὶ πεντηκοντάχουν, ἀνέαστον καὶ ταῦτα οὐδὲ σιδήρῳ τμηθεῖσαν ἀλλ' αὐτοξύλῳ ἀρότρῳ. ποτίζεται δὲ πᾶν τὸ πεδίον τοῦ Βαβυλωνίου καὶ τοῦ Αἰγυπτίου μᾶλλον τοῖς ποταμοῖς καὶ τοῖς ἄλλοις ὕδασιν ὥστ' ἀεὶ ποώδη φυλάττειν τὴν ὄψιν· διὰ δὲ τοῦτο καὶ εὔβοτόν ἐστι· πρόσεστι δὲ καὶ τὸ εὐάερον ἐκείνων μᾶλλον. ἄσκαφοι δ' αἱ ἄμπελοι μένουσαι διὰ τέλους, τεμνόμεναι δὲ διὰ πενταετηρίδος, νέαι μὲν διετεῖς ἐκφέρουσιν ἤδη καρπόν, τέλειαι δ' ἀποδιδόασι τοσοῦτον ὥστ' ἀφιᾶσιν ἐν τοῖς κλήμασι πολὺ μέρος. εὐερνῆ δ' ἐστὶ καὶ τὰ βοσκήματα παρ' αὐτοῖς τά τε ἥμερα καὶ τὰ ἄγρια.

Καὶ οἱ ἄνθρωποι κάλλει καὶ μεγέθει διαφέροντες, 4 ἁπλοῖ δὲ καὶ οὐ καπηλικοί· οὐδὲ γὰρ νομίσματι τὰ πολλὰ χρῶνται, οὐδὲ ἀριθμὸν ἴσασι μείζω τῶν ἑκατόν, ἀλλὰ φορτίοις τὰς ἀμοιβὰς ποιοῦνται· καὶ πρὸς τἆλλα δὲ τὰ τοῦ βίου ῥαθύμως ἔχουσιν. ἄπειροι δ' εἰσὶ καὶ μέτρων τῶν ἐπ' ἀκριβὲς καὶ σταθμῶν, καὶ πολέμου δὲ καὶ πολιτείας καὶ γεωργίας ἀπρονοήτως ἔχουσιν· ὅμως δὲ καὶ πεζοὶ καὶ ἀφ' ἵππων ἀγωνίζονται, ψιλοί τε καὶ κατάφρακτοι, καθάπερ Ἀρμένιοι. στέλλουσι δὲ μείζω 5 τῆς Ἰβήρων στρατιάν. ὁπλίζουσι γὰρ καὶ ἓξ μυριάδας πεζῶν, ἱππέας δὲ μυρίους καὶ δισχιλίους, ὅσοις πρὸς Πομπήιον διεκινδύνευσαν. καὶ τούτοις δὲ συμπολεμοῦσιν οἱ νομάδες πρὸς τοὺς ἔξωθεν, ὥσπερ τοῖς Ἴβηρσι, κατὰ τὰς αὐτὰς αἰτίας. ἄλλως δ' ἐπιχειροῦσι τοῖς ἀνθρώποις πολλάκις ὥστε καὶ γεωργεῖν κωλύουσιν. ἀκον-

τισταὶ δέ εἰσι καὶ τοξόται, θώρακας ἔχοντες καὶ θυρεούς, περίκρανα δὲ θήρεια παραπλησίως τοῖς Ἴβηρσιν.

Ἔστι δὲ τῆς Ἀλβανῶν χώρας καὶ ἡ Κασπιανή, τοῦ Κασπίου ἔθνους ἐπώνυμος, οὗπερ καὶ ἡ θάλαττα, ἀφανοῦς ὄντος νυνί. ἡ δ' ἐκ τῆς Ἰβηρίας εἰς τὴν Ἀλβανίαν εἰσβολὴ διὰ τῆς Καμβυσηνῆς ἀνύδρου τε καὶ τραχείας ἐπὶ τὸν Ἀλαζόνιον ποταμόν.

Θηρευτικοὶ δὲ καὶ αὐτοὶ καὶ οἱ κύνες αὐτῶν εἰς ὑπερβολήν, οὐ τέχνῃ μᾶλλον ἢ σπουδῇ τῇ περὶ τοῦτο.

C.503 6 Διαφέρουσι δὲ καὶ οἱ βασιλεῖς· νυνὶ μὲν οὖν εἷς ἁπάντων ἄρχει, πρότερον δὲ καὶ καθ' ἑκάστην γλῶτταν ἰδίᾳ ἐβασιλεύοντο ἕκαστοι. γλῶτται δ' εἰσὶν ἓξ καὶ εἴκοσιν αὐτοῖς διὰ τὸ μὴ εὐεπίμικτον πρὸς ἀλλήλους.

Φέρει δ' ἡ γῆ καὶ τῶν ἑρπετῶν ἔνια τῶν θανασίμων καὶ σκορπίους καὶ φαλάγγια· τῶν δὲ φαλαγγίων τὰ μὲν ποιεῖ γελῶντας ἀποθνήσκειν, τὰ δὲ κλαίοντας πόθῳ τῶν οἰκείων.

7 Θεοὺς δὲ τιμῶσιν ἥλιον καὶ δία καὶ σελήνην, διαφερόντως δὲ τὴν σελήνην. ἔστι δ' αὐτῆς τὸ ἱερὸν τῆς Ἰβηρίας πλησίον· ἱερᾶται δ' ἀνὴρ ἐντιμότατος μετά γε τὸν βασιλέα, προεστὼς τῆς ἱερᾶς χώρας, πολλῆς καὶ εὐάνδρου, καὶ αὐτῆς καὶ τῶν ἱεροδούλων, ὧν ἐνθουσιῶσι πολλοὶ καὶ προφητεύουσιν· ὃς δ' ἂν αὐτῶν ἐπὶ πλέον κατάσχετος γενόμενος πλανᾶται κατὰ τὰς ὕλας μόνος, τοῦτον συλλαβὼν ὁ ἱερεὺς ἁλύσει δήσας ἱερᾷ τρέφει πολυτελῶς τὸν ἐνιαυτὸν ἐκεῖνον, ἔπειτα προαχθεὶς εἰς τὴν θυσίαν τῆς θεοῦ, σὺν ἄλλοις ἱερείοις θύεται μυρισθείς. τῆς δὲ θυσίας ὁ τρόπος οὗτος· ἔχων τις ἱερὰν λόγχην ᾗπέρ ἐστι νόμος ἀνθρωποθυτεῖν, παρελθὼν ἐκ τοῦ πλήθους παίει διὰ τῆς πλευρᾶς εἰς τὴν καρδίαν, οὐκ ἄπειρος τοιούτου· πεσόντος δὲ σημειοῦνται μαντεῖά τινα ἐκ τοῦ πτώματος

καὶ εἰς τὸ κοινὸν ἀποφαίνουσι, κομισθέντος δὲ τοῦ
σώματος εἴς τι χωρίον ἐπιβαίνουσιν ἅπαντες καθαρ-
σίῳ χρώμενοι.

Ὑπερβαλλόντως δὲ τὸ γῆρας τιμῶσιν Ἀλβανοὶ καὶ 8
τὸ τῶν ἄλλων, οὐ τῶν γονέων μόνον· τεθνηκότων δὲ
οὐχ ὅσιον φροντίζειν οὐδὲ μεμνῆσθαι. συγκατορύτ-
τουσι μέντοι τὰ χρήματα αὐτοῖς, καὶ διὰ τοῦτο πένη-
τες ζῶσιν οὐδὲν πατρῷον ἔχοντες. ταῦτα μὲν περὶ
Ἀλβανῶν.

Λέγεται δ' Ἰάσονα μετὰ Ἀρμένου τοῦ Θετταλοῦ
κατὰ τὸν πλοῦν τὸν ἐπὶ τοὺς Κόλχους ὁρμῆσαι μέχρι
τῆς Κασπίας θαλάττης, καὶ τήν τε Ἰβηρίαν καὶ τὴν Ἀλ-
βανίαν ἐπελθεῖν καὶ πολλὰ τῆς Ἀρμενίας καὶ τῆς Μη-
δίας, ὡς μαρτυρεῖ τά τε Ἰασόνια καὶ ἄλλα ὑπομνήματα
πλείω. τὸν δὲ Ἄρμενον εἶναι ἐξ Ἀρμενίου πόλεως τῶν
περὶ τὴν Βοιβηίδα λίμνην μεταξὺ Φερῶν καὶ Λαρίσης,
τοὺς σὺν αὐτῷ τε οἰκίσαι τήν τε Ἀκιλισηνὴν καὶ τὴν
Συσπιρῖτιν ἕως Καλαχανῆς καὶ Ἀδιαβηνῆς, καὶ δὴ καὶ
τὴν Ἀρμενίαν ἐπώνυμον καταλιπεῖν.

Ἐν δὲ τοῖς ὑπὲρ τῆς Ἀλβανίας ὄρεσι καὶ τὰς Ἀμα- 5
ζόνας οἰκεῖν φασι. Θεοφάνης μὲν οὖν ὁ συστρατεύσας
τῷ Πομπηίῳ καὶ γενόμενος ἐν τοῖς Ἀλβανοῖς, μεταξὺ
τῶν Ἀμαζόνων καὶ τῶν Ἀλβανῶν φησι Γήλας οἰκεῖν
καὶ Λήγας Σκύθας, καὶ ῥεῖν ἐνταῦθα τὸν Μερμάδαλιν
ποταμὸν τούτων τε καὶ τῶν Ἀμαζόνων ἀνὰ μέσον. ἄλ- C.504
λοι δέ, ὧν καὶ ὁ Σκήψιος Μητρόδωρος καὶ Ὑψικράτης,
οὐδὲ αὐτοὶ ἄπειροι τῶν τόπων γεγονότες, Γαργαρεῦ-
σιν ὁμόρους αὐτὰς οἰκεῖν φασιν ἐν ταῖς ὑπωρείαις ταῖς
πρὸς ἄρκτον τῶν Καυκασίων ὀρῶν ἃ καλεῖται Κεραύ-
νια, τὸν μὲν ἄλλον χρόνον καθ' αὑτάς, αὐτουργούσας
ἕκαστα τά τε πρὸς ἄροτον καὶ φυτουργίαν καὶ τὰ πρὸς

τὰς νομὰς καὶ μάλιστα τῶν ἵππων, τὰς δ' ἀλκιμωτάτας κυνηγεσίαις πλεονάζειν καὶ τὰ πολέμια ἀσκεῖν· ἁπάσας δ' ἐπικεκαῦσθαι τὸν δεξιὸν μαστὸν ἐκ νηπίων, ὥστε εὐπετῶς χρῆσθαι τῷ βραχίονι πρὸς ἑκάστην χρείαν, ἐν δὲ τοῖς πρώτοις πρὸς ἀκοντισμόν· χρῆσθαι δὲ καὶ τόξῳ καὶ σαγάρει καὶ πέλτῃ, δορὰς δὲ θηρίων ποιεῖσθαι περίκρανά τε καὶ σκεπάσματα καὶ διαζώματα· δύο δὲ μῆνας ἐξαιρέτους ἔχειν τοῦ ἔαρος, καθ' οὓς ἀναβαίνουσιν εἰς τὸ πλησίον ὄρος τὸ διορίζον αὐτάς τε καὶ τοὺς Γαργαρέας. ἀναβαίνουσι δὲ κἀκεῖνοι κατὰ ἔθος τι παλαιόν, συνθύσοντές τε καὶ συνεσόμενοι ταῖς γυναιξὶ τεκνοποιίας χάριν ἀφανῶς τε καὶ ἐν σκότει, ὁ τυχὼν τῇ τυχούσῃ, ἐγκύμονας δὲ ποιήσαντες ἀποπέμπουσιν· αἱ δ' ὅ τι μὲν ἂν θῆλυ τέκωσι κατέχουσιν αὐταί, τὰ δ' ἄρρενα κομίζουσιν ἐκείνοις ἐκτρέφειν· ᾠκείωται δ' ἕκαστος πρὸς ἕκαστον νομίζων υἱὸν διὰ τὴν ἄγνοιαν.

2 Ὁ δὲ Μερμόδας καταράττων ἀπὸ τῶν ὀρῶν διὰ τῆς τῶν Ἀμαζόνων καὶ τῆς Σιρακηνῆς καὶ ὅση μεταξὺ ἔρημος, εἰς τὴν Μαιῶτιν ἐκδίδωσι. τοὺς δὲ Γαργαρέας συναναβῆναι μὲν ἐκ Θεμισκύρας φασὶ ταῖς Ἀμαζόσιν εἰς τούσδε τοὺς τόπους, εἶτ' ἀποστάντας αὐτῶν πολεμεῖν μετὰ Θρᾳκῶν καὶ Εὐβοέων τινῶν πλανηθέντων μέχρι δεῦρο πρὸς αὐτάς, ὕστερον δὲ καταλυσαμένους τὸν πρὸς αὐτὰς πόλεμον ἐπὶ τοῖς λεχθεῖσι ποιήσασθαι συμβάσεις, ὥστε τέκνων συγκοινωνεῖν μόνον, ζῆν δὲ καθ' αὑτοὺς ἑκατέρους.

3 Ἴδιον δέ τι συμβέβηκε τῷ λόγῳ [τῷ] περὶ τῶν Ἀμαζόνων· οἱ μὲν γὰρ ἄλλοι τὸ μυθῶδες καὶ τὸ ἱστορικὸν διωρισμένον ἔχουσι· τὰ γὰρ παλαιὰ καὶ ψευδῆ καὶ τε-

---

1. post ἀλκιμωτάτας: τῶν ἵππων

ρατώδη μῦθοι καλοῦνται, ἡ δ' ἱστορία βούλεται τἀληθές, ἄν τε παλαιὸν ἄν τε νέον, καὶ τὸ τερατῶδες ἢ οὐκ ἔχει ἢ σπάνιον· περὶ δὲ τῶν Ἀμαζόνων τὰ αὐτὰ λέγεται καὶ νῦν καὶ πάλαι, τερατώδη τε ὄντα καὶ πίστεως πόρρω. τίς γὰρ ἂν πιστεύσειεν, ὡς γυναικῶν στρατὸς ἢ πόλις ἢ ἔθνος συσταίη ἄν ποτε χωρὶς ἀνδρῶν; καὶ οὐ μόνον γε συσταίη, ἀλλὰ καὶ ἐφόδους ποιήσαιτο ἐπὶ τὴν ἀλλοτρίαν καὶ κρατήσειεν οὐ τῶν ἐγγὺς μόνον ὥστε καὶ μέχρι τῆς νῦν Ἰωνίας προελθεῖν, ἀλλὰ καὶ διαπόν- C.505
τιον στείλαιτο στρατείαν μέχρι τῆς Ἀττικῆς; τοῦτο γὰρ ὅμοιον ὡς ἂν εἴ τις λέγοι, τοὺς μὲν ἄνδρας γυναῖκας γεγονέναι τοὺς τότε τὰς δὲ γυναῖκας ἄνδρας. ἀλλὰ μὴν ταὐτά γε αὐτὰ καὶ νῦν λέγεται περὶ αὐτῶν. ἐπιτείνει δὲ τὴν ἰδιότητα καὶ τὸ πιστεύεσθαι τὰ παλαιὰ μᾶλλον ἢ τὰ νῦν· κτίσεις γοῦν πόλεων καὶ ἐπωνυμίαι λέγον- 4
ται, καθάπερ Ἐφέσου καὶ Σμύρνης καὶ Κύμης καὶ Μυρίνης, καὶ τάφοι καὶ ἄλλα ὑπομνήματα· τὴν δὲ Θεμίσκυραν καὶ τὰ περὶ τὸν Θερμώδοντα πεδία καὶ τὰ ὑπερκείμενα ὄρη ἅπαντες Ἀμαζόνων καλοῦσι, καί φασιν ἐξελαθῆναι αὐτὰς ἐνθένδε. ὅπου δὲ νῦν εἰσίν, ὀλίγοι τε καὶ ἀναποδείκτως καὶ ἀπίστως ἀποφαίνονται· καθάπερ καὶ περὶ Θαληστρίας, ἣν Ἀλεξάνδρῳ συμμῖξαί φασιν ἐν τῇ Ὑρκανίᾳ καὶ συγγενέσθαι τεκνοποιίας χάριν, δυναστεύουσαν τῶν Ἀμαζόνων· οὐ γὰρ ὁμολογεῖται τοῦτο· ἀλλὰ τῶν συγγραφέων τοσούτων ὄντων οἱ μάλιστα τῆς ἀληθείας φροντίσαντες οὐκ εἰρήκασιν, οὐδ' οἱ πιστευόμενοι μάλιστα οὐδενὸς μέμνηνται τοιούτου, οὐδ' οἱ εἰπόντες τὰ αὐτὰ εἰρήκασι· Κλείταρχος δέ φησι τὴν Θαληστρίαν ἀπὸ Κασπίων πυλῶν καὶ Θερμώδοντος ὁρμηθεῖσαν ἐλθεῖν πρὸς Ἀλέξανδρον· εἰσὶ δ' ἀπὸ Κασπίας εἰς Θερμώδοντα στάδιοι πλείους ἑξακισχιλίων.

5 Καὶ τὰ πρὸς τὸ ἔνδοξον θρυληθέντα οὐκ ἀνωμολόγηται παρὰ πάντων, οἱ δὲ πλάσαντες ἦσαν οἱ κολακείας μᾶλλον ἢ ἀληθείας φροντίζοντες· οἷον τὸ τὸν Καύκασον μετενεγκεῖν εἰς τὰ Ἰνδικὰ ὄρη καὶ τὴν πλησιάζουσαν ἐκείνοις ἑῴαν θάλατταν ἀπὸ τῶν ὑπερκειμένων τῆς Κολχίδος καὶ τοῦ Εὐξείνου ὀρῶν· ταῦτα γὰρ οἱ Ἕλληνες καὶ Καύκασον ὠνόμαζον, διέχοντα τῆς Ἰνδικῆς πλείους ἢ τρισμυρίους σταδίους, καὶ ἐνταῦθα ἐμύθευσαν τὰ περὶ Προμηθέα καὶ τὸν δεσμὸν αὐτοῦ· ταῦτα γὰρ τὰ ὕστατα πρὸς ἕω ἐγνώριζον οἱ τότε. ἡ δὲ ἐπὶ Ἰνδοὺς στρατεία Διονύσου καὶ Ἡρακλέους ὑστερογενῆ τὴν μυθοποιίαν ἐμφαίνει, ἅτε τοῦ Ἡρακλέους καὶ τὸν Προμηθέα λῦσαι λεγομένου χιλιάσιν ἐτῶν ὕστερον. καὶ ἦν μὲν ἐνδοξότερον τὸ τὸν Ἀλέξανδρον μέχρι τῶν Ἰνδικῶν ὀρῶν καταστρέψασθαι τὴν Ἀσίαν ἢ μέχρι τοῦ μυχοῦ τοῦ Εὐξείνου καὶ τοῦ Καυκάσου· ἀλλ' ἡ δόξα τοῦ ὄρους καὶ τοὔνομα καὶ τὸ τοὺς περὶ Ἰάσονα δοκεῖν μακροτάτην στρατείαν τελέσαι τὴν μέ-
C.506 χρι τῶν πλησίον Καυκάσου καὶ τὸ τὸν Προμηθέα παραδεδόσθαι δεδεμένον ἐπὶ τοῖς ἐσχάτοις τῆς γῆς ἐν τῷ Καυκάσῳ ...... χαριεῖσθαί τι τῷ βασιλεῖ ὑπέλαβον τοὔνομα τοῦ ὄρους μετενέγκαντες εἰς τὴν Ἰνδικήν.

6 Τὰ μὲν οὖν ὑψηλότατα τοῦ ὄντως Καυκάσου τὰ νοτιώτατά ἐστι τὰ πρὸς Ἀλβανίᾳ καὶ Ἰβηρίᾳ καὶ Κόλχοις καὶ Ἡνιόχοις· οἰκοῦσι δὲ οὓς εἶπον τοὺς συνερχομένους εἰς τὴν Διοσκουριάδα· συνέρχονται δὲ τὸ πλεῖστον ἁλῶν χάριν. τούτων δ' οἱ μὲν τὰς ἀκρωρείας κατέχουσιν, οἱ δὲ ἐν νάπαις αὐλίζονται καὶ ζῶσιν ἀπὸ θηρείων σαρκῶν τὸ πλέον καὶ καρπῶν ἀγρίων καὶ γάλακτος. αἱ δὲ κορυφαὶ χειμῶνος μὲν ἄβατοι, θέρους δὲ προσβαίνουσιν ὑποδούμενοι κεντρωτὰ ὠμοβόινα δίκην τυμπάνων πλατεῖα διὰ τὰς χιόνας καὶ τοὺς κρυ-

στάλλους. καταβαίνουσι δ' ἐπὶ δορᾶς κείμενοι σὺν τοῖς
φορτίοις καὶ κατολισθαίνοντες, ὅπερ καὶ κατὰ τὴν
Ἀτροπατίαν Μηδίαν καὶ κατὰ τὸ Μάσιον ὄρος τὸ ἐν
Ἀρμενίᾳ συμβαίνει· ἐνταῦθα δὲ καὶ τροχίσκοι ξύλινοι
κεντρωτοὶ τοῖς πέλμασιν ὑποτίθενται. τοῦ γοῦν Καυ-
κάσου τὰ μὲν ἄκρα τοιαῦτα. καταβαίνοντι δ' εἰς τὰς 7
ὑπωρείας ἀρκτικώτερα μέν ἐστι τὰ κλίματα, ἡμερώ-
τερα δέ· ἤδη γὰρ συνάπτει τοῖς πεδίοις τῶν Σιράκων.
εἰσὶ δὲ καὶ τρωγλοδύται τινὲς ἐν φωλεοῖς οἰκοῦντες
διὰ τὰ ψύχη, παρ' οἷς ἤδη καὶ ἀλφίτων ἐστὶν εὐπορία·
μετὰ δὲ τοὺς τρωγλοδύτας καὶ χαμαικοῖται καὶ πολυ-
φάγοι τινὲς καλούμενοι καὶ αἱ τῶν Εἰσαδίκων κῶμαι,
δυναμένων γεωργεῖν διὰ τὸ μὴ παντελῶς ὑποπεπτω-
κέναι ταῖς ἄρκτοις.

Οἱ δ' ἐφεξῆς ἤδη νομάδες οἱ μεταξὺ τῆς Μαιώτι- 8
δος καὶ τῆς Κασπίας Ναβιανοὶ καὶ * Πανξανοὶ καὶ ἤδη
τὰ τῶν Σιράκων καὶ Ἀόρσων φῦλα. δοκοῦσι δ' οἱ Ἄορ-
σοι καὶ οἱ Σίρακες φυγάδες εἶναι τῶν ἀνωτέρω .... καὶ
προσάρκτιοι μᾶλλον Ἀόρσων. Ἀβέακος μὲν οὖν ὁ τῶν
Σιράκων βασιλεύς, ἡνίκα Φαρνάκης τὸν Βόσπορον
εἶχε, δύο μυριάδας ἱππέων ἔστελλε, Σπαδίνης δ' ὁ τῶν
Ἀόρσων καὶ * εἴκοσιν, οἱ δὲ ἄνω Ἄορσοι καὶ πλείονας·
καὶ γὰρ ἐπεκράτουν πλείονος γῆς καὶ σχεδόν τι τῆς
Κασπίων παραλίας τῆς πλείστης ἦρχον, ὥστε καὶ ἐνε-
πορεύοντο καμήλοις τὸν Ἰνδικὸν φόρτον καὶ τὸν Βα-
βυλώνιον παρά τε Ἀρμενίων καὶ Μήδων διαδεχόμε-
νοι· ἐχρυσοφόρουν δὲ διὰ τὴν εὐπορίαν. οἱ μὲν οὖν
Ἄορσοι τὸν Τάναϊν παροικοῦσιν, οἱ Σίρακες δὲ τὸν
Ἀχαρδέον, ὃς ἐκ τοῦ Καυκάσου ῥέων ἐκδίδωσιν εἰς τὴν
Μαιῶτιν.

Ἡ δὲ δευτέρα μερὶς ἄρχεται μὲν ἀπὸ τῆς Κασπίας 6
θαλάττης, εἰς ἣν κατέπαυεν ἡ προτέρα· καλεῖται δ' ἡ C.507

αὐτὴ θάλαττα καὶ Ὑρκανία. δεῖ δὲ περὶ τῆς θαλάττης εἰπεῖν πρότερον ταύτης καὶ τῶν προσοίκων ἐθνῶν. ἔστι δ' ὁ κόλπος ἀνέχων ἐκ τοῦ ὠκεανοῦ πρὸς μεσημβρίαν κατ' ἀρχὰς μὲν ἱκανῶς στενός, ἐνδοτέρω δὲ πλατύνεται προϊών, καὶ μάλιστα κατὰ τὸν μυχὸν ἐπὶ σταδίους που καὶ πεντακισχιλίους· ὁ δ' εἴσπλους μέχρι τοῦ μυχοῦ μικρῷ πλειόνων ἂν εἴη συνάπτων πως ἤδη τῇ ἀοικήτῳ. φησὶ δ' Ἐρατοσθένης τὸν ὑπὸ τῶν Ἑλλήνων γνωριζόμενον περίπλουν τῆς θαλάττης ταύτης τὸν μὲν παρὰ τοὺς Ἀλβανοὺς καὶ τοὺς Καδουσίους εἶναι πεντακισχιλίων καὶ τετρακοσίων, τὸν δὲ παρὰ τὴν Ἀναριακῶν καὶ Μάρδων καὶ Ὑρκανῶν μέχρι τοῦ στόματος τοῦ Ὤξου ποταμοῦ τετρακισχιλίων καὶ ὀκτακοσίων· ἔνθεν δ' ἐπὶ τοῦ Ἰαξάρτου δισχιλίων τετρακοσίων. δεῖ δὲ περὶ τῶν ἐν τῇ μερίδι ταύτῃ καὶ τοῖς ἐπὶ τοσοῦτον ἐκτετοπισμένοις ἁπλούστερον ἀκούειν, καὶ μάλιστα περὶ τῶν διαστημάτων.

2 Εἰσπλέοντι δ' ἐν δεξιᾷ μὲν τοῖς Εὐρωπαίοις οἱ συνεχεῖς Σκύθαι νέμονται καὶ Σαρμάται οἱ μεταξὺ τοῦ Τανάιδος καὶ τῆς θαλάττης ταύτης, νομάδες οἱ πλείους, περὶ ὧν εἰρήκαμεν· ἐν ἀριστερᾷ δ' οἱ πρὸς ἕω Σκύθαι, νομάδες καὶ οὗτοι, μέχρι τῆς ἑῴας θαλάττης καὶ τῆς Ἰνδικῆς παρατείνοντες. ἅπαντας μὲν δὴ τοὺς προσβόρρους κοινῶς οἱ παλαιοὶ τῶν Ἑλλήνων συγγραφεῖς Σκύθας καὶ Κελτοσκύθας ἐκάλουν· οἱ δ' ἔτι πρότερον διελόντες τοὺς μὲν ὑπὲρ τοῦ Εὐξείνου καὶ Ἴστρου καὶ τοῦ Ἀδρίου κατοικοῦντας Ὑπερβορέους ἔλεγον καὶ Σαυρομάτας καὶ Ἀριμασπούς, τοὺς δὲ πέραν τῆς Κασπίας θαλάττης τοὺς μὲν Σάκας τοὺς δὲ Μασσαγέτας ἐκάλουν, οὐκ ἔχοντες ἀκριβὲς λέγειν περὶ αὐτῶν οὐδέν, καίπερ πρὸς Μασσαγέτας τοῦ Κύρου πόλεμον ἱστοροῦντες. ἀλλ' οὔτε περὶ τούτων οὐδὲν

ἠκρίβωτο πρὸς ἀλήθειαν, οὔτε τὰ παλαιὰ τῶν Περσι-
κῶν οὔτε τῶν Μηδικῶν ἢ Συριακῶν ἐς πίστιν ἀφι-
κνεῖτο μεγάλην διὰ τὴν τῶν συγγραφέων ἁπλότητα
καὶ τὴν φιλομυθίαν.
Ὁρῶντες γὰρ τοὺς φανερῶς μυθογράφους εὐδο- 3
κιμοῦντας ᾠήθησαν καὶ αὐτοὶ παρέξεσθαι τὴν γραφὴν
ἡδεῖαν, ἐὰν ἐν ἱστορίας σχήματι λέγωσιν ἃ μηδέποτε
[μήτε] εἶδον μήτε ἤκουσαν ἢ οὐ παρά γε ἰδόντων, σκο-
ποῦντες δὲ αὐτὸ μόνον τοῦτο ὅ τι ἀκρόασιν ἡδεῖαν ἔχει
καὶ θαυμαστήν. ῥᾷον δ' ἄν τις Ἡσιόδῳ καὶ Ὁμήρῳ πι- C.508
στεύσειεν ἡρωολογοῦσι καὶ τοῖς τραγικοῖς ποιηταῖς ἢ
Κτησίᾳ τε καὶ Ἡροδότῳ καὶ Ἑλλανίκῳ καὶ ἄλλοις τοι-
ούτοις. οὐδὲ τοῖς περὶ Ἀλεξάνδρου δὲ συγγράψασιν 4
ῥάδιον πιστεύειν τοῖς πολλοῖς· καὶ γὰρ οὗτοι ῥαδιουρ-
γοῦσι διά τε τὴν δόξαν τὴν Ἀλεξάνδρου καὶ διὰ τὸ τὴν
στρατείαν πρὸς τὰς ἐσχατιὰς γεγονέναι τῆς Ἀσίας πόρ-
ρω ἀφ' ἡμῶν· τὸ δὲ πόρρω δυσέλεγκτον. ἡ δὲ τῶν
Ῥωμαίων ἐπικράτεια καὶ ἡ τῶν Παρθυαίων πλεῖόν τι
προσεκκαλύπτει τῶν παραδεδομένων πρότερον· οἱ γὰρ
περὶ ἐκείνων συγγράφοντες καὶ τὰ χωρία καὶ τὰ ἔθνη,
ἐν οἷς αἱ πράξεις, πιστότερον λέγουσιν ἢ οἱ πρὸ αὐτῶν·
μᾶλλον γὰρ κατωπτεύκασι.

Τοὺς δ' οὖν ἐν ἀριστερᾷ εἰσπλέοντι τὸ Κάσπιον 7
πέλαγος παροικοῦντας νομάδας Δάας οἱ νῦν προσαγο-
ρεύουσι τοὺς ἐπονομαζομένους Πάρνους· εἶτ' ἔρημος
πρόκειται μεταξύ, καὶ ἐφεξῆς ἡ Ὑρκανία, καθ' ἣν ἤδη
πελαγίζει μέχρι τοῦ συνάψαι τοῖς Μηδικοῖς ὄρεσι καὶ
τοῖς Ἀρμενίων. τούτων δ' ἐστὶ μηνοειδὲς τὸ σχῆμα
κατὰ τὰς ὑπωρείας, αἳ τελευτῶσαι πρὸς θάλατταν ποι-
οῦσι τὸν μυχὸν τοῦ κόλπου. οἰκεῖ δὲ τὴν παρώρειαν

14. ante ῥάδιον: οὐ

ταύτην μέχρι τῶν ἄκρων ἀπὸ θαλάττης ἀρξαμένοις ἐπὶ μικρὸν μὲν τῶν Ἀλβανῶν τι μέρος καὶ τῶν Ἀρμενίων, τὸ δὲ πλέον Γῆλαι καὶ Καδούσιοι καὶ Ἄμαρδοι καὶ Οὐίτιοι καὶ Ἀναριάκαι. φασὶ δὲ Παρρασίων τινὰς συνοικῆσαι τοῖς Ἀναριάκαις, οὓς καλεῖσθαι νῦν Παρσίους· Αἰνιᾶνας δ' ἐν τῇ Οὐιτίᾳ τειχίσαι πόλιν ἣν * Αἰνιάνα καλεῖσθαι, καὶ δείκνυσθαι ὅπλα τε Ἑλληνικὰ ἐνταῦθα καὶ σκεύη χαλκᾶ καὶ ταφάς· ἐνταῦθα δὲ καὶ πόλιν Ἀναριάκην, ἐν ᾗ, φασί, δείκνυται μαντεῖον ἐγκοιμωμένων .... καὶ ἄλλα τινὰ ἔθνη ληστρικὰ καὶ μάχιμα μᾶλλον ἢ γεωργικά· ποιεῖ δὲ τοῦτο ἡ τραχύτης τῶν τόπων. τὸ μέντοι πλέον τῆς περὶ τὴν ὀρεινὴν παραλίας Καδούσιοι νέμονται, σχεδὸν δέ τι ἐπὶ πεντακισχιλίους σταδίους, ὥς φησι Πατροκλῆς, ὃς καὶ πάρισον ἡγεῖται τὸ πέλαγος τοῦτο τῷ Ποντικῷ. ταῦτα μὲν οὖν τὰ χωρία λυπρά.

2 Ἡ δ' Ὑρκανία σφόδρα εὐδαίμων καὶ πολλὴ καὶ τὸ πλέον πεδιὰς πόλεσί τε ἀξιολόγοις διειλημμένη, ὧν ἐστι Ταλαβρόκη καὶ Σαμαριανὴ καὶ Κάρτα καὶ τὸ βασίλειον Τάπη, ὅ φασι μικρὸν ὑπὲρ τῆς θαλάττης ἱδρυμένον διέχειν τῶν Κασπίων πυλῶν σταδίους χιλίους τετρακοσίους. σημεῖα δὲ τῆς εὐδαιμονίας· ἡ μὲν γὰρ ἄμπελος μετρητὴν οἴνου φέρει, ἡ δὲ συκῆ μεδίμνους ἑξήκοντα, ὁ δὲ σῖτος ἐκ τοῦ ἐκπεσόντος καρ-
C.509 ποῦ τῆς καλάμης φύεται, ἐν δὲ τοῖς δένδρεσι σμηνουργεῖται καὶ τῶν φύλλων ἀπορρεῖ μέλι· τοῦτο δὲ γίνεται καὶ τῆς Μηδίας ἐν τῇ Ματιανῇ καὶ τῆς Ἀρμενίας ἐν τῇ Σακασηνῇ καὶ τῇ Ἀραξηνῇ. τῆς μέντοι προσηκούσης ἐπιμελείας οὐκ ἔτυχεν οὔτε αὐτὴ οὔτε ἡ ἐπώνυμος αὐτῇ θάλαττα ἄπλους τε οὖσα καὶ ἀργός· νῆσοί τέ εἰσιν οἰκεῖσθαι δυνάμεναι, ὡς δ' εἰρήκασί τινες καὶ χρυσῖτιν ἔχουσαι γῆν. αἴτιον δ' ὅτι καὶ οἱ ἡγεμόνες οἵ τ' ἐξ

ἀρχῆς ἐτύγχανον βάρβαροι ὄντες οἱ τῶν Ὑρκανῶν, Μῆδοί τε καὶ Πέρσαι καὶ οἱ ὕστατοι Παρθυαῖοι, χείρους ἐκείνων ὄντες, καὶ ἡ γείτων ἅπασα χώρα λῃστῶν καὶ νομάδων μεστὴ καὶ ἐρημίας. Μακεδόνες δ' ὀλίγον μὲν χρόνον ἐπῆρξαν, ἀλλ' ἐν πολέμοις ὄντες καὶ τὰ πόρρω σκοπεῖν οὐ δυνάμενοι. φησὶ δ' Ἀριστόβουλος ὑλώδη οὖσαν τὴν Ὑρκανίαν δρῦν ἔχειν, πεύκην δὲ καὶ ἐλάτην καὶ πίτυν μὴ φύειν, τὴν δ' Ἰνδικὴν πληθύειν τούτοις. τῆς δὲ Ὑρκανίας ἐστὶ καὶ ἡ Νησαία· τινὲς δὲ καὶ καθ' αὑτὴν τιθέασι τὴν Νησαίαν.

Διαρρεῖται δὲ καὶ ποταμοῖς ἡ Ὑρκανία τῷ τε Ὤχῳ 3
καὶ Ὤξῳ μέχρι τῆς εἰς θάλατταν ἐκβολῆς, ὧν ὁ Ὦχος καὶ διὰ τῆς Νησαίας ῥεῖ· ἔνιοι δὲ τὸν Ὦχον εἰς τὸν Ὦξον ἐμβάλλειν φασίν. Ἀριστόβουλος δὲ καὶ μέγιστον ἀποφαίνει τὸν Ὦξον τῶν ἑωραμένων ὑφ' ἑαυτοῦ κατὰ τὴν Ἀσίαν πλὴν τῶν Ἰνδικῶν· φησὶ δὲ καὶ εὔπλουν εἶναι καὶ οὗτος καὶ Ἐρατοσθένης παρὰ Πατροκλέους λαβών, καὶ πολλὰ τῶν Ἰνδικῶν φορτίων κατάγειν εἰς τὴν Ὑρκανίαν θάλατταν, ἐντεῦθεν δ' εἰς τὴν Ἀλβανίαν περαιοῦσθαι καὶ διὰ τοῦ Κύρου καὶ τῶν ἑξῆς τόπων εἰς τὸν Εὔξεινον καταφέρεσθαι. οὐ πάνυ δὲ ὑπὸ τῶν παλαιῶν ὁ Ὦχος ὀνομάζεται· Ἀπολλόδωρος μέντοι ὁ τὰ Παρθικὰ γράψας συνεχῶς αὐτὸν ὀνομάζει ὡς ἐγγυτάτω τοῖς Παρθυαίοις ῥέοντα.

Προσεδοξάσθη δὲ καὶ περὶ τῆς θαλάττης ταύτης 4
πολλὰ ψευδῆ διὰ τὴν Ἀλεξάνδρου φιλοτιμίαν· ἐπειδὴ γὰρ ὡμολόγητο ἐκ πάντων ὅτι διείργει τὴν Ἀσίαν ἀπὸ τῆς Εὐρώπης ὁ Τάναϊς ποταμός, τὸ δὲ μεταξὺ τῆς θαλάττης καὶ τοῦ Τανάιδος πολὺ μέρος τῆς Ἀσίας ὂν οὐχ ὑπέπιπτε τοῖς Μακεδόσι, στρατηγεῖν δ' ἔγνωστο ὥστε τῇ φήμῃ γε κἀκείνων δόξαι τῶν μερῶν κρατεῖν

τὸν Ἀλέξανδρον, εἰς ἓν συνῆγον τήν τε Μαιῶτιν λίμνην τὴν δεχομένην τὸν Τάναϊν καὶ τὴν Κασπίαν θάλατταν, λίμνην καὶ ταύτην καλοῦντες καὶ συντετρῆσθαι φάσκοντες πρὸς ἀλλήλας ἀμφοτέρας, ἑκατέραν δὲ εἶναι μέρος τῆς ἑτέρας. Πολύκλειτος δὲ καὶ πίστεις προφέρεται περὶ τοῦ λίμνην εἶναι τὴν θάλατταν ταύ-
C 510 την, ὄφεις τε γὰρ ἐκτρέφειν καὶ ὑπόγλυκυ εἶναι τὸ ὕδωρ· ὅτι δὲ καὶ οὐχ ἑτέρα τῆς Μαιώτιδός ἐστι, τεκμαιρόμενος ἐκ τοῦ τὸν Τάναϊν εἰς αὐτὴν ἐμβάλλειν· ἐκ γὰρ τῶν αὐτῶν ὀρῶν τῶν Ἰνδικῶν ἐξ ὧν ὅ τε Ὦχος καὶ ὁ Ὦξος καὶ ἄλλοι πλείους φέρεται καὶ ὁ Ἰαξάρτης ἐκδίδωσί τε ὁμοίως ἐκείνοις εἰς τὸ Κάσπιον πέλαγος πάντων ἀρκτικώτατος. τοῦτον οὖν ὠνόμασαν Τάναϊν, καὶ προσέθεσάν γε τούτῳ πίστιν, ὡς εἴη Τάναϊς ὃν εἴρηκεν ὁ Πολύκλειτος· τὴν γὰρ περαίαν τοῦ ποταμοῦ τούτου φέρειν ἐλάτην καὶ οἰστοῖς ἐλατίνοις χρῆσθαι τοὺς ταύτῃ Σκύθας· τοῦτο δὲ καὶ τεκμήριον τοῦ τὴν χώραν τὴν πέραν τῆς Εὐρώπης εἶναι, μὴ τῆς Ἀσίας· τὴν γὰρ Ἀσίαν τὴν ἄνω καὶ τὴν πρὸς ἕω μὴ φύειν ἐλάτην. Ἐρατοσθένης δέ φησι καὶ ἐν τῇ Ἰνδικῇ φύεσθαι ἐλάτην καὶ ἐντεῦθεν ναυπηγήσασθαι τὸν στόλον Ἀλέξανδρον· πολλὰ δὲ καὶ ἄλλα τοιαῦτα συγκρούειν Ἐρατοσθένης πειρᾶται, ἡμῖν δ᾽ ἀποχρώντως εἰρήσθω περὶ αὐτῶν.

5 Καὶ τοῦτο δ᾽ ἐκ τῶν κατὰ τὴν Ὑρκανίαν ἱστορουμένων παραδόξων ἐστὶν ὑπὸ Εὐδόξου καὶ ἄλλων, ὅτι πρόκεινταί τινες ἀκταὶ τῆς θαλάττης ὕπαντροι, τούτων δὲ μεταξὺ καὶ τῆς θαλάττης ὑπόκειται ταπεινὸς αἰγιαλός, ἐκ δὲ τῶν ὕπερθεν κρημνῶν ποταμοὶ ῥέοντες τοσαύτῃ προφέρονται βίᾳ ὥστε ταῖς ἀκταῖς συνά-

1. post ἓν: οὖν

ψαντες ἐξακοντίζουσι τὸ ὕδωρ εἰς τὴν θάλατταν, ἄρραντον φυλάττοντες τὸν αἰγιαλὸν ὥστε καὶ στρατοπέδοις ὁδεύσιμον εἶναι σκεπαζομένοις τῷ ῥεύματι, οἱ δ' ἐπιχώριοι κατάγονται πολλάκις εὐωχίας καὶ θυσίας χάριν εἰς τὸν τόπον, καὶ ποτὲ μὲν ὑπὸ τοῖς ἄντροις κατακλίνονται, ποτὲ δ' ὑπ' αὐτῷ τῷ ῥεύματι ἡλιαζόμενοι ἄλλως ἄλλοι τέρπονται, παραφαινομένης ἅμα καὶ τῆς θαλάττης ἑκατέρωθεν καὶ τῆς ᾐόνος ποώδους καὶ ἀνθηρᾶς οὔσης διὰ τὴν ἰκμάδα.

Ἀπὸ δὲ τῆς Ὑρκανίας θαλάττης προϊόντι ἐπὶ τὴν 8 ἕω δεξιὰ μέν ἐστι τὰ ὄρη μέχρι τῆς Ἰνδικῆς θαλάττης παρατείνοντα, ἅπερ οἱ Ἕλληνες ὀνομάζουσι Ταῦρον, ἀρξάμενα ἀπὸ τῆς Παμφυλίας καὶ τῆς Κιλικίας καὶ μέχρι δεῦρο προϊόντα ἀπὸ τῆς ἑσπέρας συνεχῆ καὶ τυγχάνοντα ἄλλων καὶ ἄλλων ὀνομάτων. προσοικοῦσι δ' αὐτοῦ τὰ προσάρκτια μέρη πρῶτοι μὲν οἱ Γῆλαι καὶ Καδούσιοι καὶ Ἄμαρδοι, καθάπερ εἴρηται, καὶ τῶν Ὑρκανίων τινές, ἔπειτα τὸ τῶν Παρθυαίων ἔθνος καὶ τὸ τῶν Μαργιανῶν καὶ τῶν Ἀρίων καὶ ἡ ἔρημος, ἣν ἀπὸ τῆς Ὑρκανίας ὁρίζει ὁ Σάρνιος ποταμὸς πρὸς C.511 ἕω βαδίζουσι καὶ ἐπὶ τὸν Ὦχον. καλεῖται δὲ τὸ μέχρι δεῦρο ἀπὸ τῆς Ἀρμενίας διατεῖνον ἢ μικρὸν ἀπολεῖπον Παραχοάθρας. ἔστι δὲ ἀπὸ τῆς Ὑρκανίας θαλάττης εἰς τοὺς Ἀρίους περὶ ἑξακισχιλίους σταδίους· εἶθ' ἡ Βακτριανή ἐστι καὶ ἡ Σογδιανή, τελευταῖοι δὲ Σκύθαι νομάδες. τὰ δ' ὄρη Μακεδόνες μὲν ἅπαντα τὰ ἐφεξῆς ἀπὸ Ἀρίων Καύκασον ἐκάλεσαν, παρὰ δὲ τοῖς βαρβάροις * τά τε ἄκρα καὶ τοῦ Παροπαμίσου τὰ προσβόρεια καὶ τὰ Ἠμωδὰ καὶ τὸ Ἴμαον καὶ ἄλλα τοιαῦτα ὀνόματα ἑκάστοις μέρεσιν ἐπέκειτο.

Ἐν ἀριστερᾷ δὲ τούτοις ἀντιπαράκειται [τὰ] Σκυ- 2 θικὰ ἔθνη καὶ τὰ νομαδικὰ ἅπασαν ἐκπληροῦντα τὴν

βόρειον πλευράν. οἱ μὲν δὴ πλείους τῶν Σκυθῶν ἀπὸ τῆς Κασπίας θαλάττης ἀρξάμενοι Δᾶαι προσαγορεύονται, τοὺς δὲ προσεῴους τούτων μᾶλλον Μασσαγέτας καὶ Σάκας ὀνομάζουσι, τοὺς δ' ἄλλους κοινῶς μὲν Σκύθας ὀνομάζουσιν ἰδίᾳ δ' ὡς ἑκάστους· ἅπαντες δ' ὡς ἐπὶ τὸ πολὺ νομάδες. μάλιστα δὲ γνώριμοι γεγόνασι τῶν νομάδων οἱ τοὺς Ἕλληνας ἀφελόμενοι τὴν Βακτριανήν, Ἄσιοι καὶ * Πασιανοὶ καὶ Τόχαροι καὶ Σακάραυλοι, ὁρμηθέντες ἀπὸ τῆς περαίας τοῦ Ἰαξάρτου τῆς κατὰ Σάκας καὶ Σογδιανούς, ἣν κατεῖχον Σάκαι. καὶ τῶν Δαῶν οἱ μὲν προσαγορεύονται Ἄπαρνοι οἱ δὲ Ξάνθιοι οἱ δὲ Πίσσουροι. οἱ μὲν οὖν Ἄπαρνοι πλησιαίτατα τῇ Ὑρκανίᾳ παράκεινται καὶ τῇ κατ' αὐτὴν θαλάττῃ, οἱ δὲ λοιποὶ διατείνουσι καὶ μέχρι τῆς ἀντιπαρηκούσης τῇ Ἀρίᾳ.

3 Μεταξὺ δ' αὐτῶν καὶ τῆς Ὑρκανίας καὶ τῆς Παρθυαίας μέχρι Ἀρίων ἔρημος πρόκειται πολλὴ καὶ ἄνυδρος, ἣν διεξιόντες μακραῖς ὁδοῖς κατέτρεχον τήν τε Ὑρκανίαν καὶ τὴν Νησαίαν καὶ τὰ τῶν Παρθυαίων πεδία· οἱ δὲ συνέθεντο φόρους· φόρος δ' ἦν τὸ ἐπιτρέπειν τακτοῖς τισι χρόνοις τὴν χώραν κατατρέχειν καὶ φέρεσθαι λείαν. ἐπιπολαζόντων δ' αὐτῶν παρὰ τὰ συγκείμενα ἐπολεμεῖτο, καὶ πάλιν διαλύσεις καὶ ἀναπολεμήσεις ὑπῆρχον. τοιοῦτος δὲ καὶ ὁ τῶν ἄλλων νομάδων βίος, ἀεὶ τοῖς πλησίον ἐπιτιθεμένων τοτὲ δ' αὖ διαλλαττομένων.

4 Σάκαι μέντοι παραπλησίας ἐφόδους ἐποιήσαντο τοῖς Κιμμερίοις καὶ Τρήρεσι, τὰς μὲν μακροτέρας τὰς δὲ καὶ ἐγγύθεν· καὶ γὰρ τὴν Βακτριανὴν κατέσχον καὶ τῆς Ἀρμενίας κατεκτήσαντο τὴν ἀρίστην γῆν, ἣν καὶ ἐπώνυμον ἑαυτῶν κατέλιπον τὴν Σακασηνήν, καὶ μέ-
C.512 χρι Καππαδόκων καὶ μάλιστα τῶν πρὸς Εὐξείνῳ οὓς

Ποντικοὺς νῦν καλοῦσι, προῆλθον. ἐπιθέμενοι δ' αὐτοῖς πανηγυρίζουσιν ἀπὸ τῶν λαφύρων οἱ ταύτῃ τότε τῶν Περσῶν στρατηγοὶ νύκτωρ ἄρδην αὐτοὺς ἠφάνισαν. ἐν δὲ τῷ πεδίῳ πέτραν τινὰ προσχώματι συμπληρώσαντες εἰς βουνοειδὲς σχῆμα ἐπέθηκαν τεῖχος καὶ τὸ τῆς Ἀναΐτιδος καὶ τῶν συμβώμων θεῶν ἱερὸν ἱδρύσαντο, Ὠμανοῦ καὶ Ἀναδάτου Περσικῶν δαιμόνων, ἀπέδειξάν τε πανήγυριν κατ' ἔτος ἱεράν, τὰ Σάκαια, ἣν μέχρι νῦν ἐπιτελοῦσιν οἱ τὰ Ζῆλα ἔχοντες· οὕτω γὰρ καλοῦσι τὸν τόπον· ἔστι δὲ ἱεροδούλων πόλισμα τὸ πλέον· Πομπήιος δὲ προσθεὶς χώραν ἀξιόλογον καὶ τοὺς ἐν αὐτῇ συνοικίσας εἰς τὸ τεῖχος μίαν τῶν πόλεων ἀπέφηνεν ὧν διέταξε μετὰ τὴν Μιθριδάτου κατάλυσιν.

Οἱ μὲν [οὖν] οὕτω λέγουσι περὶ τῶν Σακῶν, οἱ 5
δ' ὅτι Κῦρος ἐπιστρατεύσας τοῖς Σάκαις ἡττηθεὶς τῇ μάχῃ φεύγει, στρατοπεδευσάμενος δ' ἐν ᾧ χωρίῳ τὰς παρασκευὰς ἀπολελοίπει πλήρεις ἀφθονίας ἁπάσης καὶ μάλιστα οἴνου, διαναπαύσας μικρὰ τὴν στρατιάν, ἤλαυνεν ἀφ' ἑσπέρας ὡς φεύγων, πλήρεις ἀφεὶς τας σκηνάς· προελθὼν δ' ὅσον ἐδόκει συμφέρειν ἱδρύθη· ἐπιόντες δ' ἐκεῖνοι καὶ καταλαβόντες ἔρημον ἀνδρῶν τὸ στρατόπεδον τῶν δὲ πρὸς ἀπόλαυσιν μεστόν, ανέδην ἐνεπίμπλαντο· ὁ δ' ὑποστρέψας ἐξοίνους κατέλαβε καὶ παραπλῆγας, ὥσθ' οἱ μὲν ἐν κάρῳ κείμενοι καὶ ὕπνῳ κατεκόπτοντο, οἱ δ' ὀρχούμενοι καὶ βακχεύοντες γυμνοὶ περιέπιπτον τοῖς τῶν πολεμίων ὅπλοις, ὀλίγου δ' ἀπώλοντο ἅπαντες. ὁ δὲ θεῖον νομίσας τὸ εὐτύχημα, τὴν ἡμέραν ἐκείνην ἀνιερώσας τῇ πατρίῳ θεῷ προσηγόρευσε Σάκαια· ὅπου δ' ἂν ᾖ τῆς θεοῦ ταύτης ἱερόν, ἐνταῦθα νομίζεται καὶ ἡ τῶν Σακαίων ἑορτὴ βακχεία τις μεθ' ἡμέραν καὶ νύκτωρ, διεσκευ-

ασμένων σκυθιστί, πινόντων ἅμα καὶ πληκτιζομένων πρὸς ἀλλήλους ἅμα τε καὶ τὰς συμπινούσας γυναῖκας.

6 Μασσαγέται δ' ἐδήλωσαν τὴν σφετέραν ἀρετὴν ἐν τῷ πρὸς Κῦρον πολέμῳ, περὶ οὗ θρυλοῦσι πολλοί, καὶ δεῖ πυνθάνεσθαι παρ' ἐκείνων. λέγεται δὲ καὶ τοιαῦτα περὶ τῶν Μασσαγετῶν, ὅτι κατοικοῦσιν οἱ μὲν ὄρη τινὲς δ' αὐτῶν πεδία οἱ δὲ ἕλη ἃ ποιοῦσιν οἱ ποταμοί, οἱ δὲ τὰς ἐν τοῖς ἕλεσι νήσους. μάλιστα δέ φασι τὸν Ἀράξην ποταμὸν κατακλύζειν τὴν χώραν πολλαχῇ σχιζόμενον, ἐκπίπτοντα δὲ τοῖς μὲν ἄλλοις C.513 στόμασιν εἰς τὴν ἄλλην τὴν πρὸς ἄρκτοις θάλατταν, ἑνὶ δὲ μόνῳ πρὸς τὸν κόλπον τὸν Ὑρκάνιον. θεὸν δὲ ἥλιον μόνον ἡγοῦνται, τούτῳ δὲ ἱπποθυτοῦσι· γαμεῖ δ' ἕκαστος μίαν, χρῶνται δὲ καὶ ταῖς ἀλλήλων οὐκ ἀφανῶς, ὁ δὲ μιγνύμενος τῇ ἀλλοτρίᾳ τὴν φαρέτραν ἐξαρτήσας ἐκ τῆς ἁμάξης φανερῶς μίγνυται· θάνατος δὲ νομίζεται παρ' αὐτοῖς ἄριστος, ὅταν γηράσαντες κατακοπῶσι μετὰ προβατείων κρεῶν καὶ ἀναμὶξ βρωθῶσι· τοὺς δὲ νόσῳ θανόντας ῥίπτουσιν ὡς ἀσεβεῖς καὶ ἀξίους ὑπὸ θηρίων βεβρῶσθαι. ἀγαθοὶ δὲ ἱππόται καὶ πεζοί, τόξοις δὲ χρῶνται καὶ μαχαίραις καὶ θώραξι καὶ σαγάρεσι χαλκαῖς, ζῶναι δὲ αὐτοῖς εἰσι χρυσαῖ καὶ διαδήματα ἐν ταῖς μάχαις· οἵ τε ἵπποι χρυσοχάλινοι, καὶ μασχαλιστῆρες δὲ χρυσοῖ· ἄργυρος δ' οὐ γίνεται παρ' αὐτοῖς, σίδηρος δ' ὀλίγος, χαλκὸς δὲ καὶ χρυσὸς ἄφθονος.

7 Οἱ μὲν οὖν ἐν ταῖς νήσοις οὐκ ἔχοντες σπόριμα ῥιζοφαγοῦσι καὶ ἀγρίοις χρῶνται καρποῖς, ἀμπέχονται δὲ τοὺς τῶν δένδρων φλοιούς (οὐδὲ γὰρ βοσκήματα ἔχουσι), πίνουσι δὲ τὸν ἐκ τῶν δένδρων καρπὸν ἐκθλίβοντες· οἱ δ' ἐν τοῖς ἕλεσιν ἰχθυοφαγοῦσιν, ἀμπέχονται δὲ τὰ τῶν φωκῶν δέρματα τῶν ἐκ θαλάττης

ἀνατρεχουσῶν· οἱ δ' ὄρειοι τοῖς ἀγρίοις τρέφονται καὶ αὐτοὶ καρποῖς· ἔχουσι δὲ καὶ πρόβατα ὀλίγα ὥστ' οὐδὲ κατακόπτουσι φειδόμενοι τῶν ἐρίων χάριν καὶ τοῦ γάλακτος· τὴν δ' ἐσθῆτα ποικίλλουσιν ἐπιχρίστοις φαρμάκοις δυσεξίτηλον ἔχουσι τὸ ἄνθος. οἱ δὲ πεδινοὶ καίπερ ἔχοντες χώραν οὐ γεωργοῦσιν, ἀλλὰ ἀπὸ προβάτων καὶ ἰχθύων ζῶσι νομαδικῶς καὶ Σκυθικῶς. ἔστι γάρ τις καὶ κοινὴ δίαιτα πάντων τῶν τοιούτων ἣν πολλάκις λέγω, καὶ ταφαὶ δ' εἰσὶ παραπλήσιαι καὶ ἤθη καὶ ὁ σύμπας βίος, αὐθέκαστος μὲν σκαιός τε καὶ ἄγριος καὶ πολεμικός, πρὸς δὲ τὰ συμβόλαια ἁπλοῦς καὶ ἀκάπηλος.

Τοῦ δὲ τῶν Μασσαγετῶν καὶ τῶν Σακῶν ἔθνους 8
καὶ οἱ Ἀττάσιοι καὶ οἱ Χωράσμιοι, εἰς οὓς ἀπὸ τῶν
Βακτριανῶν καὶ τῶν Σογδιανῶν ἔφυγε Σπιταμένης,
εἷς ἐκ τῶν ἀποδράντων Περσῶν τὸν Ἀλέξανδρον, καθάπερ καὶ Βῆσσος· καὶ ὕστερον δὲ Ἀρσάκης τὸν Καλλίνικον φεύγων Σέλευκον εἰς τοὺς Ἀπασιάκας ἐχώρησε. φησὶ δ' Ἐρατοσθένης τοὺς Ἀραχωτοὺς καὶ Μασσαγέτας τοῖς Βακτρίοις παρακεῖσθαι* πρὸς δύσιν παρὰ τὸν Ὦξον, καὶ Σάκας μὲν καὶ Σογδιανοὺς τοῖς ὅλοις ἐδάφεσιν ἀντικεῖσθαι τῇ Ἰνδικῇ, Βακτρίους δ' ἐπ' ὀλίγον· τὸ γὰρ πλέον τῷ Παροπαμισῷ παρακεῖσθαι· δι- C.514
είργειν δὲ Σάκας μὲν καὶ Σογδιανοὺς τὸν Ἰαξάρτην, καὶ Σογδιανοὺς δὲ καὶ Βακτριανοὺς τὸν Ὦξον, μεταξὺ δὲ Ὑρκανῶν καὶ Ἀρίων Ταπύρους οἰκεῖν· κύκλῳ δὲ περὶ τὴν θάλατταν μετὰ τοὺς Ὑρκανοὺς Ἀμάρδους τε καὶ Ἀναριάκας καὶ Καδουσίους καὶ Ἀλβανοὺς καὶ Κασπίους καὶ Οὐιτίους, τάχα δὲ καὶ ἑτέρους μέχρι Σκυθῶν, ἐπὶ θάτερα δὲ μέρη τῶν Ὑρκανῶν Δέρβικας, τοὺς δὲ Καδουσίους συμψαύειν Μήδων καὶ Ματιανῶν ὑπὸ τὸν Παραχοάθραν.

9 Τὰ δὲ διαστήματα οὕτω λέγει· ἀπὸ μὲν τοῦ Κασπίου ἐπὶ τὸν Κῦρον ὡς χιλίους ὀκτακοσίους σταδίους, ἔνθεν δ' ἐπὶ Κασπίας πύλας πεντακισχιλίους ἑξακοσίους, εἶτ' εἰς Ἀλεξάνδρειαν τὴν ἐν Ἀρίοις ἑξακισχιλίους τετρακοσίους, εἶτ' εἰς Βάκτραν τὴν πόλιν, ἣ καὶ Ζαριάσπα καλεῖται, τρισχιλίους ὀκτακοσίους ἑβδομήκοντα, εἶτ' ἐπὶ τὸν Ἰαξάρτην ποταμόν, ἐφ' ὃν Ἀλέξανδρος ἧκεν, ὡς πεντακισχιλίους· ὁμοῦ δισμύριοι δισχίλιοι ἑξακόσιοι ἑβδομήκοντα. λέγει δὲ καὶ οὕτω τὰ διαστήματα ἀπὸ Κασπίων πυλῶν εἰς Ἰνδούς· εἰς μὲν Ἑκατόμπυλον χιλίους ἐνακοσίους ἑξήκοντά φασιν, εἰς δ' Ἀλεξάνδρειαν τὴν ἐν Ἀρίοις τετρακισχιλίους πεντακοσίους τριάκοντα, εἶτ' εἰς Προφθασίαν τὴν ἐν Δραγγῇ χιλίους ἑξακοσίους, οἱ δὲ πεντακοσίους, εἶτ' εἰς Ἀραχωτοὺς τὴν πόλιν τετρακισχιλίους ἑκατὸν εἴκοσιν, εἶτ' εἰς Ὀρτόσπανα ἐπὶ τὴν ἐκ Βάκτρων τρίοδον δισχιλίους, εἶτ' εἰς τὰ ὅρια τῆς Ἰνδικῆς χιλίους· ὁμοῦ μύριοι πεντακισχίλιοι τριακόσιοι. ἐπ' εὐθείας δὲ τῷ διαστήματι τούτῳ τὸ συνεχὲς δεῖ νοεῖν, τὸ ἀπὸ τοῦ Ἰνδοῦ μέχρι τῆς ἑῴας θαλάττης μῆκος τῆς Ἰνδικῆς. ταῦτα μὲν τὰ περὶ τοὺς Σάκας.

9 Ἡ δὲ Παρθυαία πολλὴ μὲν οὐκ ἔστι· συνετέλει γοῦν μετὰ τῶν Ὑρκανῶν [κατὰ] τὰ Περσικὰ καὶ μετὰ ταῦτα τῶν Μακεδόνων κρατούντων ἐπὶ χρόνον πολύν. πρὸς δὲ τῇ σμικρότητι δασεῖα καὶ ὀρεινή ἐστι καὶ ἄπορος, ὥστε διὰ τοῦτο δρόμῳ διεξιᾶσι τὸν ἑαυτῶν οἱ βασιλεῖς ὄχλον, οὐ δυναμένης τρέφειν τῆς χώρας οὐδ' ἐπὶ μικρόν· ἀλλὰ νῦν ηὔξηται. μέρη δ' ἐστὶ τῆς Παρθυηνῆς ἥ τε Κωμισηνὴ καὶ ἡ Χωρήνη, σχεδὸν δέ τι καὶ τὰ μέχρι πυλῶν Κασπίων καὶ Ῥαγῶν καὶ Ταπύρων ὄντα τῆς Μηδίας πρότερον. ἔστι δ' Ἀπάμεια καὶ Ἡράκλεια, πόλεις περὶ τὰς Ῥάγας. εἰσὶ δ' ἀπὸ Κασπίων

πυλῶν εἰς μὲν Ῥάγας στάδιοι πεντακόσιοι, ὥς φησιν Ἀπολλόδωρος, εἰς δ' Ἑκατόμπυλον τὸ τῶν Παρθυαίων βασίλειον χίλιοι διακόσιοι ἑξήκοντα· τοὔνομα δὲ ταῖς Ῥάγαις ἀπὸ τῶν γενομένων σεισμῶν γενέσθαι φασίν, ὑφ' ὧν πόλεις τε συχναὶ καὶ κῶμαι δισχίλιαι, ὡς Ποσειδώνιός φησι, ἀνετράπησαν. τοὺς δὲ Ταπύρους οἰκεῖν φασι μεταξὺ Δερβίκων τε καὶ Ὑρκανῶν. ἱστοροῦσι δὲ περὶ τῶν Ταπύρων ὅτι αὐτοῖς εἴη νόμιμον τὰς γυναῖκας C.515
ἐκδιδόναι τὰς γαμετὰς ἑτέροις ἀνδράσιν, ἐπειδὰν ἐξ αὐτῶν ἀνέλωνται δύο ἢ τρία τέκνα, καθάπερ καὶ Κάτων Ὁρτησίῳ δεηθέντι ἐξέδωκε τὴν Μαρκίαν ἐφ' ἡμῶν κατὰ παλαιὸν Ῥωμαίων ἔθος.

Νεωτερισθέντων δὲ τῶν ἔξω τοῦ Ταύρου διὰ τὸ 2
πρὸς ἄλλοις εἶναι τοὺς τῆς Συρίας καὶ τῆς Μηδίας βασιλέας τοὺς ἔχοντας καὶ ταῦτα, πρῶτον μὲν τὴν Βακτριανὴν ἀπέστησαν οἱ πεπιστευμένοι καὶ τὴν ἐγγὺς αὐτῆς πᾶσαν οἱ περὶ Εὐθύδημον. ἔπειτ' Ἀρσάκης ἀνὴρ Σκύθης τῶν Δαῶν τινας ἔχων τοὺς Πάρνους καλουμένους νομάδας παροικοῦντας τὸν Ὦχον, ἐπῆλθεν ἐπὶ τὴν Παρθυαίαν καὶ ἐκράτησεν αὐτῆς. κατ' ἀρχὰς μὲν οὖν ἀσθενὴς ἦν διαπολεμῶν πρὸς τοὺς ἀφαιρεθέντας τὴν χώραν καὶ αὐτὸς καὶ οἱ διαδεξάμενοι ἐκεῖνον, ἔπειθ' οὕτως ἴσχυσαν ἀφαιρούμενοι τὴν πλησίον ἀεὶ διὰ τὰς ἐν τοῖς πολέμοις κατορθώσεις ὥστε τελευτῶντες ἁπάσης τῆς ἐντὸς Εὐφράτου κύριοι κατέστησαν. ἀφείλοντο δὲ καὶ τῆς Βακτριανῆς μέρος βιασάμενοι τοὺς Σκύθας καὶ ἔτι πρότερον τοὺς περὶ Εὐκρατίδαν, καὶ νῦν ἐπάρχουσι τοσαύτης γῆς καὶ τοσούτων ἐθνῶν ὥστε ἀντίπαλοι τοῖς Ῥωμαίοις τρόπον τινὰ γεγόνασι κατὰ μέγεθος τῆς ἀρχῆς. αἴτιος δ' ὁ βίος αὐτῶν καὶ τὰ ἔθη τὰ ἔχοντα πολὺ μὲν τὸ βάρβα-

ρον καὶ τὸ Σκυθικόν, πλέον μέντοι τὸ χρήσιμον πρὸς ἡγεμονίαν καὶ τὴν ἐν τοῖς πολέμοις κατόρθωσιν.

3 Φασὶ δὲ τοὺς Πάρνους Δάας μετανάστας εἶναι ἐκ τῶν ὑπὲρ τῆς Μαιώτιδος Δαῶν, οὓς Ξανδίους ἢ Παρίους καλοῦσιν· οὐ πάνυ δ' ὡμολόγηται Δάας εἶναί τινας τῶν ὑπὲρ τῆς Μαιώτιδος Σκυθῶν· ἀπὸ τούτων δ' οὖν ἕλκειν φασὶ τὸ γένος τὸν Ἀρσάκην, οἱ δὲ Βακτριανὸν λέγουσιν αὐτόν, φεύγοντα δὲ τὴν αὔξησιν τῶν περὶ Διόδοτον ἀποστῆσαι τὴν Παρθυαίαν. εἰρηκότες δὲ πολλὰ περὶ τῶν Παρθικῶν νομίμων ἐν τῇ ἕκτῃ τῶν ἱστορικῶν ὑπομνημάτων βίβλῳ, δευτέρᾳ δὲ τῶν μετὰ Πολύβιον, παραλείψομεν ἐνταῦθα μὴ ταυτολογεῖν δόξωμεν, τοσοῦτον εἰπόντες μόνον ὅτι τῶν Παρθυαίων συνέδριόν φησιν εἶναι Ποσειδώνιος διττόν, τὸ μὲν συγγενῶν τὸ δὲ σοφῶν καὶ μάγων, ἐξ ὧν ἀμφοῖν τοὺς βασιλεῖς καθίστασθαι.

10 Ἡ δ' Ἀρία καὶ ἡ Μαργιανὴ κράτιστα χωρία ἐστὶ ταύτῃ, τῇ μὲν ὑπὸ τῶν ὀρῶν ἐγκλειόμενα τῇ δ' ἐν πεδίοις τὰς οἰκήσεις ἔχοντα. τὰ μὲν οὖν ὄρη νέμονται σκηνῖταί τινες, τὰ δὲ πεδία ποταμοῖς διαρρεῖται· ποτίζουσι δ' αὐτὰ τὰ μὲν τῷ Ἀρίῳ τὰ δὲ Μάργῳ. ὁμορεῖ
C.516 δὲ ἡ Ἀρία τῇ Βακτριανῇ * καὶ τὴν ὑποστᾶσαν ὄρει τῷ ἔχοντι τὴν Βακτριανήν· διέχει δὲ τῆς Ὑρκανίας περὶ ἑξακισχιλίους σταδίους. συντελὴς δ' ἦν αὐτῇ καὶ ἡ Δραγγιανὴ μέχρι Καρμανίας, τὸ μὲν πλέον τοῖς νοτίοις μέρεσι τῶν ὀρῶν ὑποπεπτωκυῖα, ἔχουσα μέντοι τινὰ τῶν μερῶν καὶ τοῖς ἀρκτικοῖς πλησιάζοντα τοῖς κατὰ τὴν Ἀρίαν· καὶ ἡ Ἀραχωσία δὲ οὐ πολὺ ἄπωθέν ἐστι, καὶ αὕτη τοῖς νοτίοις μέρεσι τῶν ὀρῶν ὑποπεπτωκυῖα καὶ μέχρι τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ τεταμένη, μέρος οὖσα τῆς Ἀριανῆς. μῆκος δὲ τῆς Ἀρίας ὅσον δισχίλιοι στάδιοι, πλάτος δὲ τριακόσιοι τοῦ πεδίου· πό-

λεις δὲ Ἀρτακάηνα καὶ Ἀλεξάνδρεια καὶ Ἀχαΐα, ἐπώνυμοι τῶν κτισάντων. εὐοινεῖ δὲ σφόδρα ἡ γῆ· καὶ γὰρ εἰς τριγονίαν παραμένει ἐν ἀπιττώτοις ἄγγεσι.

Παραπλησία δ' ἐστὶ καὶ ἡ Μαργιανή, ἐρημίαις δὲ 2
περιέχεται τὸ πεδίον. θαυμάσας δὲ τὴν εὐφυΐαν ὁ Σωτὴρ Ἀντίοχος τείχει περιέβαλε κύκλον ἔχοντι χιλίων καὶ πεντακοσίων σταδίων, πόλιν δὲ ἔκτισεν Ἀντιόχειαν. εὐάμπελος δὲ καὶ αὕτη ἡ γῆ· φασὶ γοῦν τὸν πυθμένα εὑρίσκεσθαι πολλάκις δυσὶν ἀνδράσι περιληπτόν, τὸν δὲ βότρυν δίπηχυν.

Τῆς δὲ Βακτρίας μέρη μέν τινα τῇ Ἀρίᾳ παραβέ- 11
βληται πρὸς ἄρκτον, τὰ πολλὰ δ' ὑπέρκειται πρὸς ἕω· πολλὴ δ' ἐστὶ καὶ πάμφορος πλὴν ἐλαίου. τοσοῦτον δὲ ἴσχυσαν οἱ ἀποστήσαντες Ἕλληνες αὐτὴν διὰ τὴν ἀρετὴν τῆς χώρας ὥστε τῆς τε Ἀριανῆς ἐπεκράτουν καὶ τῶν Ἰνδῶν, ὥς φησιν Ἀπολλόδωρος ὁ Ἀρταμιτηνός, καὶ πλείω ἔθνη κατεστρέψαντο ἢ Ἀλέξανδρος, καὶ μάλιστα Μένανδρος (εἴ γε καὶ τὸν Ὕπανιν διέβη πρὸς ἕω καὶ μέχρι τοῦ Ἰμάου προῆλθε) τὰ μὲν αὐτὸς τὰ δὲ Δημήτριος ὁ Εὐθυδήμου υἱὸς τοῦ Βακτρίων βασιλέως· οὐ μόνον δὲ τὴν Παταληνὴν κατέσχον ἀλλὰ καὶ τῆς ἄλλης παραλίας τήν τε Σαραόστου καλουμένην καὶ τὴν Σιγέρδιδος βασιλείαν. καθ' ὅλου δέ φησιν ἐκεῖνος τῆς συμπάσης Ἀριανῆς πρόσχημα εἶναι τὴν Βακτριανήν· καὶ δὴ καὶ μέχρι Σηρῶν καὶ Φρυνῶν ἐξέτεινον τὴν ἀρχήν.

Πόλεις δ' εἶχον τά τε Βάκτρα ἥνπερ καὶ Ζαριά- 2
σπαν καλοῦσιν, ἣν διαρρεῖ ὁμώνυμος ποταμὸς ἐκβάλλων εἰς τὸν Ὦξον, καὶ Ἄδραψα καὶ ἄλλας πλείους· τούτων δ' ἦν καὶ ἡ Εὐκρατίδεια τοῦ ἄρξαντος ἐπώνυ-

---

19. post μὲν: γὰρ

μος. οἱ δὲ κατασχόντες αὐτὴν Ἕλληνες καὶ εἰς σατρα-
C.517 πείας διῃρήκασιν, ὧν τήν τε Ἀσπιώνου καὶ τὴν Ταπυρίαν ἀφῄρηντο Εὐκρατίδην οἱ Παρθυαῖοι. ἔσχον δὲ καὶ τὴν Σογδιανὴν ὑπερκειμένην πρὸς ἕω τῆς Βακτριανῆς μεταξὺ τοῦ τε Ὤξου ποταμοῦ, ὃς ὁρίζει τήν τε τῶν Βακτρίων καὶ τὴν τῶν Σογδίων, καὶ τοῦ Ἰαξάρτου· οὗτος δὲ καὶ τοὺς Σογδίους ὁρίζει καὶ τοὺς νομάδας.

3 Τὸ μὲν οὖν παλαιὸν οὐ πολὺ διέφερον τοῖς βίοις καὶ τοῖς ἔθεσι τῶν νομάδων οἵ τε Σογδιανοὶ καὶ οἱ Βακτριανοί, μικρὸν δ' ὅμως ἡμερώτερα ἦν τὰ τῶν Βακτριανῶν, ἀλλὰ καὶ περὶ τούτων οὐ τὰ βέλτιστα λέγουσιν οἱ περὶ Ὀνησίκριτον· τοὺς γὰρ ἀπειρηκότας διὰ γῆρας ἢ νόσον ζῶντας παραβάλλεσθαι τρεφομένοις κυσὶν ἐπίτηδες πρὸς τοῦτο, οὓς ἐνταφιαστὰς καλεῖσθαι τῇ πατρῴᾳ γλώττῃ, καὶ ὁρᾶσθαι τὰ μὲν ἔξω τείχους τῆς μητροπόλεως τῶν Βάκτρων καθαρά, τῶν δ' ἐντὸς τὸ πλέον ὀστέων πλῆρες ἀνθρωπίνων· καταλῦσαι δὲ τὸν νόμον Ἀλέξανδρον. τοιαῦτα δέ πως καὶ τὰ περὶ τοὺς Κασπίους ἱστοροῦσι· τοὺς γὰρ γονέας, ἐπειδὰν ὑπὲρ ἑβδομήκοντα ἔτη γεγονότες τυγχάνωσιν, ἐγκλεισθέντας λιμοκτονεῖσθαι. τοῦτο μὲν οὖν ἀνεκτότερον καὶ τῷ Κείων νόμῳ παραπλήσιον καίπερ ὂν σκυθικόν, πολὺ μέντοι σκυθικώτερον τὸ τῶν Βακτριανῶν. καὶ δὴ διαπορεῖν ἄξιον ἦν, ἡνίκα Ἀλέξανδρος τοιαῦτα κατελάμβανε τἀνταῦθα, τί χρὴ * ποιεῖν τὰ ἐπὶ τῶν πρώτων Περσῶν καὶ τῶν ἔτι πρότερον ἡγεμόνων ὁποῖα εἰκὸς ἦν παρ' αὐτοῖς νενομίσθαι.

4 Φασὶ δ' οὖν ὀκτὼ πόλεις τὸν Ἀλέξανδρον ἔν τε τῇ Βακτριανῇ καὶ τῇ Σογδιανῇ κτίσαι, τινὰς δὲ κατασκάψαι, ὧν Καριάτας μὲν τῆς Βακτριανῆς, ἐν ᾗ Καλλισθένης συνελήφθη καὶ παρεδόθη φυλακῇ, Μαράκανδα

δὲ τῆς Σογδιανῆς καὶ τὰ Κῦρα, ἔσχατον ὂν Κύρου κτίσμα ἐπὶ τῷ Ἰαξάρτῃ ποταμῷ κείμενον, ὅπερ ἦν ὅριον τῆς Περσῶν ἀρχῆς· κατασκάψαι δὲ τὸ κτίσμα τοῦτο καίπερ ὄντα φιλόκυρον διὰ τὰς πυκνὰς ἀποστάσεις· ἑλεῖν δὲ καὶ πέτρας ἐρυμνὰς σφόδρα ἐκ προδοσίας τήν τε ἐν τῇ Βακτριανῇ τὴν Σισιμίθρου ἐν ᾗ εἶχεν Ὀξυάρτης τὴν θυγατέρα Ῥωξάνην, καὶ τὴν ἐν τῇ Σογδιανῇ τὴν τοῦ Ὤξου, οἱ δ' Ἀριαμάζου φασί. τὴν μὲν οὖν Σισιμίθρου πεντεκαίδεκα σταδίων ἱστοροῦσι τὸ ὕψος, ὀγδοήκοντα δὲ τὸν κύκλον, ἄνω δ' ἐπίπεδον καὶ εὔγεων ὅσον πεντακοσίους ἄνδρας τρέφειν δυναμένην, ἐν ᾗ καὶ ξενίας τυχεῖν πολυτελοῦς καὶ γάμους ἀγαγεῖν Ῥωξάνης τῆς Ὀξυάρτου θυγατρὸς τὸν Ἀλέξανδρον· τὴν δὲ τῆς Σογδιανῆς διπλασίαν τὸ ὕψος φασί. περὶ τούτους δὲ τοὺς τόπους καὶ τὸ τῶν Βραγχιδῶν ἄστυ ἀνελεῖν, οὓς Ξέρξην μὲν ἱδρῦσαι C.518
αὐτόθι συναπάραντας αὐτῷ ἑκόντας ἐκ τῆς οἰκείας διὰ τὸ παραδοῦναι τὰ χρήματα τοῦ θεοῦ τὰ ἐν Διδύμοις καὶ τοὺς θησαυρούς, ἐκεῖνον δ' ἀνελεῖν μυσαττόμενον τὴν ἱεροσυλίαν καὶ τὴν προδοσίαν.

Τὸν δὲ διὰ τῆς Σογδιανῆς ῥέοντα ποταμὸν * καὶ 5
..... Πολυτίμητον Ἀριστόβουλος, τῶν Μακεδόνων [τοὔνομα] θεμένων, καθάπερ καὶ ἄλλα πολλὰ τὰ μὲν καινὰ ἔθεσαν τὰ δὲ παρωνόμασαν· ἄρδοντα δὲ τὴν χώραν ἐκπίπτειν εἰς ἔρημον καὶ ἀμμώδη γῆν καταπίνεσθαί τε εἰς τὴν ἄμμον, ὡς καὶ τὸν Ἄριον τὸν δι' Ἀρίων ῥέοντα. τοῦ δὲ Ὤχου ποταμοῦ πλησίον ὀρύττοντας εὑρεῖν ἐλαίου πηγὴν λέγουσιν· εἰκὸς δέ, ὥσπερ νιτρώδη τινὰ καὶ στύφοντα ὑγρὰ καὶ ἀσφαλτώδη καὶ θειώδη διαρρεῖ τὴν γῆν, οὕτω καὶ λιπαρὰ εὑρίσκεσθαι, τὸ δὲ σπάνιον ποιεῖ τὴν παραδοξίαν. ῥεῖν δὲ τὸν Ὦχον οἱ μὲν διὰ τῆς Βακτριανῆς φασιν οἱ δὲ παρ'

αὐτήν, καὶ οἱ μὲν ἕτερον τοῦ Ὤξου μέχρι τῶν ἐκβολῶν νοτιώτερον ἐκείνου, ἀμφοτέρων δ' ἐν τῇ Ὑρκανίᾳ τὰς εἰς τὴν θάλατταν ὑπάρχειν ἐκρύσεις, οἱ δὲ κατ' ἀρχὰς μὲν ἕτερον συμβάλλειν δ' εἰς ἓν τὸ τοῦ Ὤξου ῥεῖθρον, πολλαχοῦ καὶ ἓξ καὶ ἑπτὰ σταδίων ἔχοντα τὸ πλάτος. ὁ μέντοι Ἰαξάρτης ἀπ' ἀρχῆς μέχρι τέλους ἕτερός ἐστι τοῦ Ὤξου, καὶ εἰς μὲν τὴν αὐτὴν τελευτῶν θάλατταν, αἱ δ' ἐμβολαὶ διέχουσιν ἀλλήλων, ὥς φησι Πατροκλῆς, παρασάγγας ὡς ὀγδοήκοντα· τὸν δὲ παρασάγγην τὸν περσικὸν οἱ μὲν ἑξήκοντα σταδίων φασίν, οἱ δὲ τριάκοντα ἢ τετταράκοντα. ἀναπλεόντων δ' ἡμῶν τὸν Νεῖλον ἄλλοτ' ἄλλοις μέτροις χρώμενοι τὰς σχοίνους ὠνόμαζον ἀπὸ πόλεως ἐπὶ πόλιν, ὥστε τὸν αὐτὸν τῶν σχοίνων ἀριθμὸν ἀλλαχοῦ μὲν μείζω παρέχειν πλοῦν ἀλλαχοῦ δὲ βραχύτερον· οὕτως ἐξ ἀρχῆς παραδεδομένον καὶ φυλαττόμενον μέχρι νῦν.

6 Μέχρι μὲν δὴ τῆς Σογδιανῆς πρὸς ἀνίσχοντα ἥλιον ἰόντι ἀπὸ τῆς Ὑρκανίας γνώριμα ὑπῆρξε τὰ ἔθνη καὶ τοῖς Πέρσαις πρότερον τὰ εἴσω τοῦ Ταύρου καὶ τοῖς Μακεδόσι μετὰ ταῦτα καὶ τοῖς Παρθυαίοις. τὰ δ' ἐπέκεινα ἐπ' εὐθείας ὅτι μὲν Σκυθικά ἐστιν, ἐκ τῆς ὁμοειδείας εἰκάζεται, στρατεῖαι δ' οὐ γεγόνασιν ἐπ' αὐτοὺς ἡμῖν γνώριμοι, καθάπερ οὐδὲ ἐπὶ τοὺς βορειοτάτους τῶν νομάδων, ἐφ' οὓς ἐπεχείρησε μὲν ὁ Ἀλέξανδρος ἄγειν στρατείαν, ὅτε τὸν Βῆσσον μετήει καὶ τὸν Σπιταμένην, ζωγρίᾳ δ' ἀναχθέντος τοῦ Βήσσου, τοῦ δὲ Σπιταμένους ὑπὸ τῶν βαρβάρων διαφθαρέντος, ἐπαύσατο τῆς ἐπιχειρήσεως. οὐχ ὁμολογοῦσι δ' ὅτι περιέπλευσάν τινες ἀπὸ τῆς Ἰνδικῆς ἐπὶ τὴν Ὑρκανίαν· ὅτι δὲ δυνατόν, Πατροκλῆς εἴρηκε.

C.519
7 Λέγεται δὲ διότι τοῦ Ταύρου τὸ τελευταῖον, ὃ

καλοῦσιν Ἴμαιον, τῇ Ἰνδικῇ θαλάττῃ ξυνάπτον, οὐδὲν οὔτε προὔχει πρὸς ἕω τῆς Ἰνδικῆς μᾶλλον οὔτ᾽ εἰσέχει· παριόντι δ᾽ εἰς τὸ βόρειον πλευρὸν ἀεί τι τοῦ μήκους ὑφαιρεῖ καὶ τοῦ πλάτους ἡ θάλαττα, ὥστ᾽ ἀποφαίνειν μύουρον πρὸς ἕω τὴν νῦν ὑπογραφομένην μερίδα τῆς Ἀσίας, ἣν ὁ Ταῦρος ἀπολαμβάνει πρὸς τὸν ὠκεανὸν τὸν πληροῦντα τὸ Κάσπιον πέλαγος. μῆκος δ᾽ ἐστὶ ταύτης τῆς μερίδος τὸ μέγιστον ἀπὸ τῆς Ὑρκανίας θαλάττης ἐπὶ τὸν ὠκεανὸν τὸν κατὰ τὸ Ἴμαιον τρισμυρίων που σταδίων, παρὰ τὴν ὀρεινὴν τοῦ Ταύρου τῆς πορείας οὔσης, πλάτος δ᾽ ἔλαττον τῶν μυρίων. εἴρηται γὰρ ὅτι περὶ τετρακισμυρίους σταδίους ἐστὶ τὸ ἀπὸ τοῦ Ἰσσικοῦ κόλπου μέχρι τῆς ἑῴας θαλάττης τῆς κατὰ Ἰνδούς, ἐπὶ δ᾽ Ἰσσὸν ἀπὸ τῶν ἑσπερίων ἄκρων τῶν κατὰ στήλας ἄλλοι τρισμύριοι· ἔστι δὲ ὁ μυχὸς τοῦ Ἰσσικοῦ κόλπου μικρὸν ἢ οὐδὲν Ἀμισοῦ ἑωθινώτερος, τὸ δὲ ἀπὸ Ἀμισοῦ ἐπὶ τὴν Ὑρκανίαν γῆν περὶ μυρίους ἐστὶ σταδίους, παράλληλον ὂν τῷ ἀπὸ τοῦ Ἰσσοῦ λεχθέντι ἐπὶ τοὺς Ἰνδούς. λείπεται δὴ τὸ λεχθὲν μῆκος ἐπὶ τὴν ἕω τῆς περιωδευμένης νυνὶ μερίδος οἱ τρισμύριοι στάδιοι. πάλιν δὲ τοῦ πλάτους τοῦ μεγίστου τῆς οἰκουμένης ὄντος περὶ τρισμυρίους σταδίους, χλαμυδοειδοῦς οὔσης, τὸ διάστημα τοῦτο ἐγγὺς ἂν εἴη τοῦ μεσημβρινοῦ τοῦ διὰ τῆς Ὑρκανίας θαλάττης γραφομένου καὶ τῆς Περσικῆς, εἴπερ ἐστὶ τὸ μῆκος τῆς οἰκουμένης ἑπτὰ μυριάδες· εἰ οὖν ἀπὸ τῆς Ὑρκανίας ἐπὶ Ἀρτεμίταν τὴν ἐν τῇ Βαβυλωνίᾳ στάδιοί εἰσιν ὀκτακισχίλιοι, καθάπερ εἴρηκεν Ἀπολλόδωρος ὁ ἐκ τῆς Ἀρτεμίτας, ἐκεῖθεν δ᾽ ἐπὶ τὸ στόμα τῆς κατὰ Πέρσας θαλάττης ἄλλο τοσοῦτόν ἐστι, καὶ πάλιν τοσοῦτον ἢ μικρὸν ἀπολεῖπον εἰς τὰ ἀνταίροντα τοῖς ἄκροις τῆς Αἰθιοπίας, λοιπὸν ἂν εἴη τοῦ πλάτους τῆς οἰκουμένης

τοῦ λεχθέντος ἀπὸ τοῦ μυχοῦ τῆς Ὑρκανίας θαλάττης ἐπὶ τοῦ στόματος αὐτῆς ὅσον εἰρήκαμεν. μυούρου δ᾽ ὄντος τοῦ τμήματος τούτου τῆς γῆς ἐπὶ τὰ πρὸς ἕω μέρη, γίνοιτ᾽ ἂν τὸ σχῆμα προσόμοιον μαγειρικῇ κοπίδι, τοῦ μὲν ὄρους ἐπ᾽ εὐθείας ὄντος καὶ νοουμένου κατὰ τὴν ἀκμὴν τῆς κοπίδος, τῆς δ᾽ ἀπὸ τοῦ στόματος τοῦ Ὑρκανίου παραλίας ἐπὶ Τάμαρον κατὰ θάτερον πλευρὸν εἰς περιφερῆ καὶ μύουρον γραμμὴν ἀπολῆγον.

8 Ἐπιμνηστέον δὲ καὶ τῶν παραδόξων ἐνίων ἃ θρυλοῦσι περὶ τῶν τελέως βαρβάρων, οἷον τῶν περὶ τὸν Καύκασον καὶ τὴν ἄλλην ὀρεινήν. τοῖς μὲν γὰρ νόμι-
C.520 μον εἶναί φασι τὸ τοῦ Εὐριπίδου „τὸν φύντα θρηνεῖν „εἰς ὅσ᾽ ἔρχεται κακά, τὸν δ᾽ αὖ θανόντα καὶ πόνων „πεπαυμένον χαίροντας εὐφημοῦντας ἐκπέμπειν δό„μων.“ ἑτέροις δὲ μηδένα ἀποκτείνειν τῶν ἐξαμαρτόντων τὰ μέγιστα, ἀλλ᾽ ἐξορίζειν μόνον μετὰ τῶν τέκνων, ὑπεναντίως τοῖς Δέρβιξι· καὶ γὰρ ἐπὶ μικροῖς οὗτοι σφάττουσι. σέβονται δὲ γῆν οἱ Δέρβικες· θύουσι δ᾽ οὐδὲν θῆλυ οὐδὲ ἐσθίουσι· τοὺς δὲ ὑπὲρ ἑβδομήκοντα ἔτη γεγονότας σφάττουσιν, ἀναλίσκουσι δὲ τὰς σάρκας οἱ ἄγχιστα γένους· τὰς δὲ γραίας ἀπάγχουσιν, εἶτα θάπτουσι· τοὺς δὲ ἐντὸς ἑβδομήκοντα ἐτῶν ἀποθανόντας οὐκ ἐσθίουσιν ἀλλὰ θάπτουσι. Σίγιννοι δὲ τἆλλα μὲν περσίζουσιν, ἱππαρίοις δὲ χρῶνται μικροῖς δασέσιν, ἅπερ ἱππότην ὀχεῖν μὲν οὐ δύναται, τέθριππα δὲ ζευγνύουσιν· ἡνιοχοῦσι δὲ γυναῖκες ἐκ παίδων ἠσκημέναι, ἡ δ᾽ ἄριστα ἡνιοχοῦσα συνοικεῖ ᾧ βούλεται· τινὰς δ᾽ ἐπιτηδεύειν φασὶν ὅπως ὡς μακροκεφαλώτατοι φανοῦνται καὶ προπεπτωκότες τοῖς μετώποις ὥσθ᾽ ὑπερκύπτειν τῶν γενείων. Ταπύρων δ᾽ ἔστι καὶ τὸ τους μὲν ἄνδρας μελανειμονεῖν καὶ μακρο-

κομεῖν, τὰς δὲ γυναῖκας λευχειμονεῖν καὶ βραχυκομεῖν. καὶ ὁ ἀνδρειότατος κριθεὶς γαμεῖ ἣν βούλεται. Κάσπιοι δὲ τοὺς ὑπὲρ ἑβδομήκοντα ἔτη λιμοκτονήσαντες εἰς τὴν ἐρημίαν ἐκτιθέασιν, ἄπωθεν δὲ σκοπεύοντες ἐὰν μὲν ὑπ' ὀρνίθων κατασπωμένους ἀπὸ τῆς κλίνης ἴδωσιν, εὐδαιμονίζουσιν, ἐὰν δὲ ὑπὸ θηρίων ἢ κυνῶν, ἧττον, ἐὰν δ' ὑπὸ μηδενός, κακοδαιμονίζουσι.

12 Ἐπεὶ δὲ τὰ βόρεια μέρη τῆς Ἀσίας ποιεῖ ὁ Ταῦρος, ἃ δὴ καὶ ἐντὸς τοῦ Ταύρου καλοῦσιν, εἰπεῖν προειλόμεθα πρῶτον [περὶ τούτων]· τούτων δ' ἐστὶ καὶ τὰ ἐν τοῖς ὄρεσιν αὐτοῖς ἢ ὅλα ἢ τὰ πλεῖστα. ὅσα μὲν [οὖν] τῶν Κασπίων πυλῶν ἑωθινώτερά ἐστιν, ἁπλουστέραν ἔχει τὴν περιήγησιν διὰ τὴν ἀγριότητα, οὐ πολύ τε ἂν διαφέροι τοῦδε ἢ τοῦδε τοῦ κλίματος συγκαταλεχθέντα· τὰ δ' ἑσπέρια πάντα δίδωσιν εὐπορίαν τοῦ λέγειν περὶ αὐτῶν, ὥστε δεῖ προάγειν ἐπὶ τὰ παρακείμενα ταῖς Κασπίαις πύλαις. παράκειται δὲ ἡ Μηδία πρὸς δύσιν, χώρα καὶ πολλὴ καὶ δυναστεύσασά ποτε καὶ ἐν μέσῳ τῷ Ταύρῳ κειμένη, πολυσχιδεῖ κατὰ ταῦτα ὑπάρχοντι τὰ μέρη καὶ αὐλῶνας ἐμπεριλαμβάνοντι μεγάλους, καθάπερ καὶ τῇ Ἀρμενίᾳ τοῦτο συμβέβηκε.

2 Τὸ γὰρ ὄρος τοῦτο ἄρχεται μὲν ἀπὸ τῆς Καρίας καὶ Λυκίας, ἀλλ' ἐνταῦθα μὲν οὔτε πλάτος οὔτε ὕψος ἀξιόλογον δείκνυσιν· ἐξαίρεται δὲ πολὺ πρῶτον κατὰ τὰς Χελιδονίας (αὗται δ' εἰσὶ νῆσοι κατὰ τὴν ἀρχὴν τῆς Παμφύλων παραλίας), ἐπὶ δὲ τὰς ἀνατολὰς ἐκτεινόμενον C.521 αὐλῶνας μακροὺς ἀπολαμβάνει τοὺς τῶν Κιλίκων· εἶτα τῇ μὲν τὸ Ἀμανὸν ἀπ' αὐτοῦ σχίζεται τῇ δὲ ὁ Ἀντίταυρος, ἐν ᾧ τὰ Κόμανα ἵδρυται τὰ ἐν τοῖς ἄνω λεγομένοις Καππάδοξιν. οὗτος μὲν οὖν ἐν τῇ Κα-

2. post βραχυκομεῖν: οἰκοῦσι δὲ μεταξὺ Δερβίκων καὶ Ὑρκανῶν

ταονίᾳ τελευτᾷ, τὸ δὲ Ἀμανὸν ὄρος μέχρι τοῦ Εὐφράτου καὶ τῆς Μελιτηνῆς πρόεισι, καθ' ἣν ἡ Κομμαγηνὴ τῇ Καππαδοκίᾳ παράκειται· ἐκδέχεται δὲ τὰ πέραν τοῦ Εὐφράτου ὄρη, συνεχῆ μὲν τοῖς προειρημένοις πλὴν ὅσον διακόπτει ῥέων διὰ μέσων ὁ ποταμός, πολλὴν δ' ἐπίδοσιν λαμβάνει εἰς τὸ ὕψος καὶ τὸ πλάτος καὶ τὸ πολυσχιδές. τὸ δ' οὖν νοτιώτατον μάλιστά ἐστιν ὁ Ταῦρος ὁρίζων τὴν Ἀρμενίαν ἀπὸ τῆς Μεσοποταμίας.

3 Ἐντεῦθεν δὲ ἀμφότεροι ῥέουσιν οἱ τὴν Μεσοποταμίαν ἐγκυκλούμενοι ποταμοὶ καὶ συνάπτοντες ἀλλήλοις ἐγγὺς κατὰ τὴν Βαβυλωνίαν, εἶτα ἐκδιδόντες εἰς τὴν κατὰ Πέρσας θάλατταν, ὅ τε Εὐφράτης καὶ Τίγρις. ἔστι δὲ καὶ μείζων ὁ Εὐφράτης καὶ πλείω διέξεισι χώραν σκολιῷ τῷ ῥείθρῳ, τὰς πηγὰς ἔχων ἐν τῷ προσβορείῳ μέρει τοῦ Ταύρου, ῥέων δ' ἐπὶ δύσιν διὰ τῆς Ἀρμενίας τῆς μεγάλης καλουμένης μέχρι τῆς μικρᾶς, ἐν δεξιᾷ ἔχων ταύτην ἐν ἀριστερᾷ δὲ τὴν Ἀκιλισηνήν· εἶτ' ἐπιστρέφει πρὸς νότον, συνάπτει δὲ κατὰ τὴν ἐπιστροφὴν τοῖς Καππαδόκων ὁρίοις· δεξιᾷ δὲ ταῦτα ἀφεὶς καὶ τὰ τῶν Κομμαγηνῶν, ἀριστερᾷ δὲ τὴν Ἀκιλισηνὴν καὶ Σωφηνὴν τῆς μεγάλης Ἀρμενίας πρόεισιν ἐπὶ τὴν Συρίαν καὶ λαμβάνει πάλιν ἄλλην ἐπιστροφὴν εἰς τὴν Βαβυλωνίαν καὶ τὸν Περσικὸν κόλπον. ὁ δὲ Τίγρις ἐκ τοῦ νοτίου μέρους τοῦ αὐτοῦ ὄρους ἐνεχθεὶς ἐπὶ τὴν Σελεύκειαν συνάπτει τῷ Εὐφράτῃ πλησίον καὶ ποιεῖ τὴν Μεσοποταμίαν πρὸς αὐτόν, εἶτ' ἐκδίδωσι καὶ αὐτὸς εἰς τὸν αὐτὸν κόλπον. διέχουσι δὲ ἀλλήλων αἱ πηγαὶ τοῦ τε Εὐφράτου καὶ τοῦ Τίγριος περὶ δισχιλίους καὶ πεντακοσίους σταδίους.

4 Ἀπὸ δ' οὖν τοῦ Ταύρου πρὸς ἄρκτον ἀποσχίδες πολλαὶ γεγόνασι, μία μὲν ἡ τοῦ καλουμένου Ἀντιταύρου· καὶ γὰρ ἐνταῦθα οὕτως ὠνομάζετο ὁ τὴν Σωφη-

νὴν ἀπολαμβάνων ἐν αὐλῶνι μεταξὺ κειμένῳ αὐτοῦ τε καὶ τοῦ Ταύρου. πέραν δὲ τοῦ Εὐφράτου κατὰ τὴν μικρὰν Ἀρμενίαν ἐφεξῆς τῷ Ἀντιταύρῳ πρὸς ἄρκτον ἐπεκτείνεται μέγα ὄρος καὶ πολυσχιδές· καλοῦσι δὲ τὸ μὲν αὐτοῦ Παρυάδρην τὸ δὲ Μοσχικὰ ὄρη τὸ δ' ἄλλοις ὀνόμασι· ταῦτα δ' ἀπολαμβάνει τὴν Ἀρμενίαν ὅλην μέχρι Ἰβήρων καὶ Ἀλβανῶν. εἶτ' ἄλλ' ἐπανίσταται πρὸς ἕω, τὰ ὑπερκείμενα τῆς Κασπίας θαλάττης μέχρι Μηδίας τῆς τε Ἀτροπατίου καὶ τῆς μεγάλης· κα- C.522
λοῦσι δὲ καὶ ταῦτα τὰ μέρη πάντα τῶν ὀρῶν Παραχοάθραν καὶ τὰ μέχρι τῶν Κασπίων πυλῶν καὶ ἐπέκεινα ἔτι πρὸς ταῖς ἀνατολαῖς τὰ συνάπτοντα τῇ Ἀρίᾳ. τὰ μὲν δὴ πρόσβορρα ὄρη οὕτω καλοῦσι, τὰ δὲ νότια τὰ πέραν τοῦ Εὐφράτου τῆς Καππαδοκίας καὶ τῆς Κομμαγηνῆς πρὸς ἕω τείνοντα κατ' ἀρχὰς μὲν αὐτὸ τοῦτο καλεῖται Ταῦρος, διορίζων τὴν Σωφηνὴν καὶ τὴν ἄλλην Ἀρμενίαν ἀπὸ τῆς Μεσοποταμίας· τινὲς δὲ Γορδυαῖα ὄρη καλοῦσιν. ἐν δὲ τούτοις ἐστὶ καὶ τὸ Μάσιον, τὸ ὑπερκείμενον τῆς Νισίβιος ὄρος καὶ τῶν Τιγρανοκέρτων. ἔπειτα ἐξαίρεται πλέον καὶ καλεῖται Νιφάτης· ἐνταῦθα δέ που καὶ τοῦ Τίγριος πηγαὶ κατὰ τὸ νότιον τῆς ὀρεινῆς πλευρόν· εἶτ' ἀπὸ τοῦ Νιφάτου μᾶλλον ἔτι καὶ μᾶλλον ἡ ῥάχις ἐκτεινομένη τὸ Ζάγριον ὄρος ποιεῖ τὸ διορίζον τὴν Μηδίαν καὶ τὴν Βαβυλωνίαν· μετὰ δὲ τὸ Ζάγριον ἐκδέχεται ὑπὲρ μὲν τῆς Βαβυλωνίας ἥ τε τῶν Ἐλυμαίων ὀρεινὴ καὶ ἡ τῶν Παραιτακηνῶν, ὑπὲρ δὲ τῆς Μηδίας ἡ τῶν Κοσσαίων· ἐν μέσῳ δ' ἐστὶν ἡ Μηδία καὶ ἡ Ἀρμενία, πολλὰ μὲν ὄρη περιλαμβάνουσα πολλὰ δὲ ὀροπέδια, ὡσαύτως δὲ πεδία καὶ αὐλῶνας μεγάλους, συχνὰ δὲ καὶ ἔθνη τὰ περιοικοῦντα, μικρὰ ὀρεινὰ καὶ ληστρικὰ τὰ πλείω. οὕτω μὲν τοί-

νυν τίθεμεν ἐντὸς τοῦ Ταύρου τήν τε Μηδίαν, ἧς εἰσι
καὶ αἱ Κάσπιοι πύλαι, καὶ τὴν Ἀρμενίαν.

5 Καθ' ἡμᾶς μὲν τοίνυν προσάρκτια ἂν εἴη τὰ ἔθνη
ταῦτα, ἐπειδὴ καὶ ἐντὸς τοῦ Ταύρου, Ἐρατοσθένης δὲ
πεποιημένος τὴν διαίρεσιν εἰς τὰ νότια μέρη καὶ τὰ
προσάρκτια καὶ τὰς ὑπ' αὐτοῦ λεγομένας σφραγῖδας,
τὰς μὲν βορείους καλῶν τὰς δὲ νοτίους, ὅρια ἀποφαί-
νει τῶν κλιμάτων ἀμφοῖν τὰς Κασπίους πύλας· εἰκό-
τως οὖν τὰ νοτιώτερα τῶν Κασπίων πυλῶν νότια ἂν
ἀποφαίνοι, ὧν ἐστι καὶ ἡ Μηδία καὶ ἡ Ἀρμενία, τὰ δὲ
βορειότερα πρόσβορρα, κατ' ἄλλην καὶ ἄλλην διάτα-
ξιν τούτου συμβαίνοντος. τάχα δὲ οὐκ ἐπέβαλε τούτῳ,
διότι ἔξω τοῦ Ταύρου πρὸς νότον οὐδέν ἐστιν οὔτε τῆς
Ἀρμενίας μέρος οὔτε τῆς Μηδίας.

13 Ἡ δὲ Μηδία δίχα διῄρηται· καλοῦσι δὲ τὴν μὲν
μεγάλην, ἧς μητρόπολις τὰ Ἐκβάτανα, μεγάλη πόλις
καὶ τὸ βασίλειον ἔχουσα τῆς Μήδων ἀρχῆς· διατελοῦσι
δὲ καὶ νῦν οἱ Παρθυαῖοι τούτῳ χρώμενοι βασιλείῳ,
καὶ θερίζουσί γε ἐνταῦθα οἱ βασιλεῖς· ψυχρὰ γὰρ ἡ
Μηδία· τὸ δὲ χειμάδιόν ἐστιν αὐτοῖς ἐν Σελευκείᾳ τῇ
ἐπὶ τῷ Τίγριδι πλησίον Βαβυλῶνος. ἡ δ' ἑτέρα μερίς
C.523 ἐστιν ἡ Ἀτροπάτιος Μηδία· τοὔνομα δ' ἔσχεν ἀπὸ τοῦ
ἡγεμόνος Ἀτροπάτου, ὃς ἐκώλυσεν ὑπὸ τοῖς Μακεδόσι
γίνεσθαι καὶ ταύτην μέρος οὖσαν μεγάλης Μηδίας·
καὶ δὴ καὶ βασιλεὺς ἀναγορευθεὶς ἰδίᾳ συνέταξε καθ'
αὑτὴν τὴν χώραν ταύτην, καὶ ἡ διαδοχὴ σώζεται μέχρι
νῦν ἐξ ἐκείνου, πρός τε τοὺς Ἀρμενίων βασιλέας ποιη-
σαμένων ἐπιγαμίας τῶν ὕστερον καὶ Σύρων καὶ μετὰ
2 ταῦτα Παρθυαίων. κεῖται δὲ ἡ χώρα τῇ μὲν Ἀρμενίᾳ

9. post νοτιώτερα: πρὸς ἕω τείνοντα 29. post Ἀρμενίᾳ: καὶ τῇ Ματιανῇ

πρὸς ἕω τῇ δὲ μεγάλῃ Μηδίᾳ πρὸς δύσιν, πρὸς ἄρκτον δ' ἀμφοτέραις· τοῖς δὲ περὶ τὸν μυχὸν τῆς Ὑρκανίας θαλάττης καὶ τῇ Ματιανῇ ἀπὸ νότου παράκειται. ἔστι δ' οὐ μικρὰ κατὰ τὴν δύναμιν, ὥς φησιν Ἀπολλωνίδης, ἥ γε καὶ * κατὰ μυρίους ἱππέας δύναται παρέχεσθαι, πεζῶν δὲ τέτταρας μυριάδας. λίμνην δ' ἔχει τὴν * Σπαῦταν, ἐν ᾗ ἅλες ἐπανθοῦντες πήττονται· εἰσὶ δὲ κνησμώδεις καὶ ἐπαλγεῖς· ἔλαιον δὲ τοῦ πάθους ἄκος, ὕδωρ δὲ γλυκὺ τοῖς καπυρωθεῖσιν ἱματίοις, εἴ τις κατ' ἄγνοιαν βάψειεν εἰς αὐτὴν πλύσεως χάριν. ἔχουσι δ' ἰσχυροὺς γείτονας τοὺς Ἀρμενίους καὶ τοὺς Παρθυαίους, ὑφ' ὧν περικόπτονται πολλάκις· ἀντέχουσι δ' ὅμως καὶ ἀπολαμβάνουσι τὰ ἀφαιρεθέντα, καθάπερ τὴν Συμβάκην ἀπέλαβον παρὰ τῶν Ἀρμενίων ὑπὸ Ῥωμαίοις γεγονότων, καὶ αὐτοὶ προσεληλύθασι τῇ φιλίᾳ τῇ πρὸς Καίσαρα· θεραπεύουσι δ' ἅμα καὶ τοὺς Παρθυαίους.

Βασίλειον δ' αὐτῶν θερινὸν μὲν ἐν πεδίῳ ἱδρυμέ- 3
νον Γάζακα, [χειμερινὸν δὲ] ἐν φρουρίῳ ἐρυμνῷ Οὐέρα, ὅπερ Ἀντώνιος ἐπολιόρκησε κατὰ τὴν ἐπὶ Παρθυαίους στρατείαν. διέχει δὲ τοῦτο τοῦ Ἀράξου ποταμοῦ τοῦ ὁρίζοντος τήν τε Ἀρμενίαν καὶ τὴν Ἀτροπατηνὴν σταδίους δισχιλίους καὶ τετρακοσίους, ὥς φησιν ὁ Δέλλιος ὁ τοῦ Ἀντωνίου φίλος, συγγράψας τὴν ἐπὶ Παρθυαίους αὐτοῦ στρατείαν ἐν ᾗ παρῆν καὶ αὐτὸς ἡγεμονίαν ἔχων. ἔστι δὲ τῆς χώρας ταύτης τὰ μὲν ἄλλα εὐδαίμονα χωρία, ἡ δὲ προσάρκτιος ὀρεινὴ καὶ τραχεῖα καὶ ψυχρά, Καδουσίων κατοικία τῶν ὀρεινῶν καὶ Ἀμάρδων καὶ Ταπύρων καὶ Κυρτίων καὶ ἄλλων τοιούτων, οἳ μετανάσται εἰσὶ καὶ λῃστρικοί. καὶ γὰρ ὁ Ζάγρος καὶ ὁ Νιφάτης κατεσπαρμένα ἔχουσι τὰ ἔθνη ταῦτα, καὶ οἱ ἐν τῇ Περσίδι Κύρτιοι καὶ Μάρδοι (καὶ γὰρ οὕτω λέγον-

ται οἱ Ἄμαρδοι) καὶ οἱ ἐν τῇ Ἀρμενίᾳ μέχρι νῦν ὁμωνύμως προσαγορευόμενοι τῆς αὐτῆς εἰσὶν ἰδέας.

4 Οἱ δ' οὖν Καδούσιοι πλήθει τῷ πεζῷ μικρὸν ἀπολείπονται τῶν Ἀριανῶν, ἀκοντισταὶ δ' εἰσὶν ἄριστοι, ἐν δὲ τοῖς τραχέσιν ἀνθ' ἱππέων πεζοὶ διαμάχονται. C.524 Ἀντωνίῳ δὲ χαλεπὴν τὴν στρατείαν ἐποίησεν οὐχ ἡ τῆς χώρας φύσις, ἀλλ' ὁ τῶν ὁδῶν ἡγεμών, ὁ τῶν Ἀρμενίων βασιλεὺς Ἀρταυάσδης, ὃν εἰκῇ ἐκεῖνος ἐπιβουλεύοντα αὐτῷ σύμβουλον ἐποιεῖτο καὶ κύριον τῆς περὶ τοῦ πολέμου γνώμης· ἐτιμωρήσατο μὲν οὖν αὐτόν, ἀλλ' ὀψέ, ἡνίκα πολλῶν αἴτιος κατέστη κακῶν Ῥωμαίοις καὶ αὐτὸς καὶ ἐκεῖνος, ὅστις τὴν ἀπὸ τοῦ Ζεύγματος ὁδὸν τοῦ κατὰ τὸν Εὐφράτην μέχρι τοῦ ἅψασθαι τῆς Ἀτροπατηνῆς ὀκτακισχιλίων σταδίων ἐποίησε, πλέον ἢ διπλασίαν τῆς εὐθείας, διὰ ὀρῶν καὶ ἀνοδιῶν καὶ κυκλοπορίας.

5 Ἡ δὲ μεγάλη Μηδία τὸ μὲν παλαιὸν τῆς Ἀσίας ἡγήσατο πάσης καταλύσασα τὴν τῶν Σύρων ἀρχήν· ὕστερον δ' ὑπὸ Κύρου καὶ Περσῶν ἀφαιρεθεῖσα τὴν τοσαύτην ἐξουσίαν ἐπὶ Ἀστυάγου διεφύλαττεν ὅμως πολὺ τοῦ πατρίου ἀξιώματος, καὶ ἦν τὰ Ἐκβάτανα * χειμάδιον τοῖς Πέρσαις· ὁμοίως δὲ καὶ τοῖς ἐκείνους καταλύσασι Μακεδόσι τοῖς τὴν Συρίαν ἔχουσι, καὶ νῦν ἔτι τοῖς Παρθυαίων βασιλεῦσι τὴν αὐτὴν παρέχεται χρείαν τε καὶ ἀσφάλειαν.

6 Ὁρίζεται δ' ἀπὸ μὲν τῆς ἕω τῇ τε Παρθυαίᾳ καὶ τοῖς Κοσσαίων ὄρεσι λῃστρικῶν ἀνθρώπων, οἳ τοξότας μυρίους καὶ τρισχιλίους παρέσχοντό ποτε Ἐλυμαίοις συμμαχοῦντες ἐπὶ Σουσίους καὶ Βαβυλωνίους. Νέαρχος δέ φησι τεττάρων ὄντων λῃστρικῶν ἐθνῶν, ὧν Μάρδοι μὲν Πέρσαις προσεχεῖς ἦσαν, Οὔξιοι δὲ καὶ Ἐλυμαῖοι τούτοις τε καὶ Σουσίοις, Κοσσαῖοι δὲ Μήδοις, πάν-

τας μὲν φόρους πράττεσθαι τοὺς βασιλέας, Κοσσαίους δὲ καὶ δῶρα λαμβάνειν, ἡνίκα ὁ βασιλεὺς θερίσας ἐν Ἐκβατάνοις εἰς τὴν Βαβυλωνίαν καταβαίνοι· καταλῦσαι δ' αὐτῶν τὴν πολλὴν τόλμαν Ἀλέξανδρον ἐπιθέμενον χειμῶνος. τούτοις τε δὴ ἀφορίζεται πρὸς ἕω καὶ ἔτι τοῖς Παραιτακηνοῖς, οἳ συνάπτουσι Πέρσαις ὀρεινοὶ καὶ αὐτοὶ καὶ λῃστρικοί· ἀπὸ δὲ τῶν ἄρκτων τοῖς ὑπεροικοῦσι τῆς Ὑρκανίας θαλάττης Καδουσίοις καὶ τοῖς ἄλλοις, οὓς ἄρτι διήλθομεν· πρὸς νότον δὲ τῇ Ἀπολλωνιάτιδι, ἣν Σιτακηνὴν ἐκάλουν οἱ παλαιοί, καὶ τῷ Ζάγρῳ, καθ' ὃ ἡ Μασσαβατικὴ κεῖται τῆς Μηδίας οὖσα, οἱ δὲ τῆς Ἐλυμαίας φασί· πρὸς δύσιν δὲ τοῖς Ἀτροπατίοις καὶ τῶν Ἀρμενίων τισίν. εἰσὶ δὲ καὶ Ἑλληνίδες πόλεις κτίσματα τῶν Μακεδόνων ἐν τῇ Μηδίᾳ, ὧν Λαοδίκειά τε καὶ Ἀπάμεια καὶ ἡ πρὸς Ῥάγαις [Ἡράκλεια] καὶ αὐτὴ Ῥάγα, τὸ τοῦ Νικάτορος κτίσμα, ὃ ἐκεῖνος μὲν Εὔρωπον ὠνόμασε, Πάρθοι δὲ Ἀρσακίαν, νοτιωτέραν οὖσαν τῶν Κασπίων πυλῶν πεντακοσίοις που σταδίοις, ὥς φησιν Ἀπολλόδωρος Ἀρτε- C.525
μιτηνός.

Ἡ πολλὴ μὲν οὖν ὑψηλή ἐστι καὶ ψυχρά· τοιαῦτα 7
δὲ καὶ τὰ ὑπερκείμενα τῶν Ἐκβατάνων ὄρη καὶ τὰ περὶ τὰς Ῥάγας καὶ τὰς Κασπίους πύλας καὶ καθόλου τὰ προσάρκτια μέρη τὰ ἐντεῦθεν μέχρι πρὸς τὴν Ματιανὴν καὶ τὴν Ἀρμενίαν. ἡ δ' ὑπὸ ταῖς Κασπίοις πύλαις ἐν ταπεινοῖς ἐδάφεσι καὶ κοίλοις οὖσα εὐδαίμων σφόδρα ἐστὶ καὶ πάμφορος πλὴν ἐλαίας· εἰ δὲ καὶ φύεταί που, ἀλιπής τέ ἐστι καὶ ξηρά· ἱππόβοτος δὲ καὶ αὕτη ἐστὶ διαφερόντως καὶ ἡ Ἀρμενία· καλεῖται δέ τις καὶ λειμὼν ἱππόβοτος, ὃν καὶ διεξίασιν οἱ ἐκ τῆς Περσίδος καὶ Βαβυλῶνος εἰς Κασπίους πύλας ὁδεύοντες, ἐν ᾧ πέντε μυριάδας ἵππων θηλείων νέμεσθαί φασιν ἐπὶ

τῶν Περσῶν, εἶναι δὲ τὰς ἀγέλας ταύτας βασιλικάς. τοὺς δὲ Νησαίους ἵππους, οἷς ἐχρῶντο οἱ βασιλεῖς ἀρίστοις οὖσι καὶ μεγίστοις, οἱ μὲν ἐνθένδε λέγουσι τὸ γένος, οἱ δ' ἐξ Ἀρμενίας· ἰδιόμορφοι δέ εἰσιν, ὥσπερ καὶ οἱ Παρθικοὶ λεγόμενοι νῦν, παρὰ τοὺς Ἑλλαδικοὺς καὶ τοὺς ἄλλους τοὺς παρ' ἡμῖν. καὶ τὴν βοτάνην δὲ τὴν μάλιστα τρέφουσαν τοὺς ἵππους ἀπὸ τοῦ πλεονάζειν ἐνταῦθα ἰδίως μηδίκην καλοῦμεν. φέρει δὲ καὶ σίλφιον ἡ χώρα, ἀφ' οὗ ὁ Μηδικὸς καλούμενος ὀπός, πολὺ λειπόμενος τοῦ Κυρηναϊκοῦ· ἔστι δ' ὅτε καὶ διαφέρων ἐκείνου, εἴτε παρὰ τὰς τῶν τόπων διαφορὰς εἴτε τοῦ φυτοῦ κατ' εἶδος ἐξαλλάττοντος, εἴτε καὶ παρὰ τοὺς ὀπίζοντας καὶ σκευάζοντας ὥστε συμμένειν πρὸς τὴν ἀπόθεσιν καὶ τὴν χρείαν.

8 Τοιαύτη μέν τις ἡ χώρα· τὸ δὲ μέγεθος πάρισός πώς ἐστιν εἰς πλάτος καὶ μῆκος· δοκεῖ δὲ μέγιστον εἶναι μῆκος τῆς Μηδίας τὸ ἀπὸ τῆς τοῦ Ζάγρου ὑπερθέσεως, ἥπερ καλεῖται Μηδικὴ πύλη, εἰς Κασπίους πύλας διὰ τῆς Σιγριανῆς σταδίων τετρακισχιλίων ἑκατόν. τῷ δὲ μεγέθει καὶ τῇ δυνάμει τῆς χώρας ὁμολογεῖ καὶ ἡ περὶ τῶν φόρων ἱστορία· τῆς γὰρ Καππαδοκίας παρεχούσης τοῖς Πέρσαις κατ' ἐνιαυτὸν πρὸς τῷ ἀργυρικῷ τέλει ἵππους χιλίους καὶ πεντακοσίους, ἡμιόνους δὲ δισχιλίους, προβάτων δὲ πέντε μυριάδας, διπλάσια σχεδόν τι τούτων ἐτέλουν οἱ Μῆδοι.

9 Ἔθη δὲ τὰ πολλὰ μὲν τὰ αὐτὰ τούτοις τε καὶ τοῖς Ἀρμενίοις διὰ τὸ καὶ τὴν χώραν παραπλησίαν εἶναι. τοὺς μέντοι Μήδους ἀρχηγέτας εἶναί φασι καὶ τούτοις καὶ ἔτι πρότερον Πέρσαις τοῖς ἔχουσιν αὐτοὺς καὶ διαδεξαμένοις τὴν τῆς Ἀσίας ἐξουσίαν. ἡ γὰρ νῦν λεγομένη Περσικὴ στολὴ καὶ ὁ τῆς τοξικῆς καὶ ἱππικῆς ζῆλος καὶ ἡ περὶ τοὺς βασιλέας θεραπεία καὶ κόσμος καὶ

σεβασμὸς θεοπρεπὴς παρὰ τῶν ἀρχομένων εἰς τοὺς C.526 Πέρσας παρὰ Μήδων ἀφῖκται. καὶ ὅτι τοῦτ' ἀληθὲς ἐκ τῆς ἐσθῆτος μάλιστα δῆλον· τιάρα γάρ τις καὶ κίταρις καὶ πῖλος καὶ χειριδωτοὶ χιτῶνες καὶ ἀναξυρίδες ἐν μὲν τοῖς ψυχροῖς τόποις καὶ προσβόρροις ἐπιτήδειά ἐστι φορήματα, οἷοί εἰσιν οἱ Μηδικοί, ἐν δὲ τοῖς νοτίοις ἥκιστα· οἱ δὲ Πέρσαι τὴν πλείστην οἴκησιν ἐπὶ τῇ Ἐρυθρᾷ θαλάττῃ κέκτηνται, μεσημβρινώτεροι καὶ Βαβυλωνίων ὄντες καὶ Σουσίων· μετὰ δὲ τὴν κατάλυσιν τὴν τῶν Μήδων προσεκτήσαντό τινα καὶ τῶν προσαπτομένων Μηδίᾳ. ἀλλ' οὕτως ἐφάνη σεμνὰ καὶ τοῦ βασιλικοῦ προσχήματος οἰκεῖα τὰ ἔθη τοῖς νικήσασι τὰ τῶν νικηθέντων, ὥστ' ἀντὶ γυμνητῶν καὶ ψιλῶν θηλυστολεῖν ὑπέμειναν, καὶ κατηρεφεῖς εἶναι τοῖς σκεπάσμασι.

Τινὲς δὲ Μήδειαν καταδεῖξαι τὴν ἐσθῆτα ταύτην 10 φασὶ δυναστεύσασαν ἐν τοῖς τόποις, καθάπερ καὶ Ἰάσονα, καὶ ἐπικρυπτομένην τὴν ὄψιν ὅτε ἀντὶ τοῦ βασιλέως ἐξίοι· τοῦ μὲν [οὖν] Ἰάσονος ὑπομνήματα εἶναι τὰ Ἰασόνια ἡρῷα τιμώμενα σφόδρα ὑπὸ τῶν βαρβάρων (ἔστι δὲ καὶ ὄρος μέγα ὑπὲρ τῶν Κασπίων πυλῶν ἐν ἀριστερᾷ καλούμενον Ἰασόνιον), τῆς δὲ Μηδείας τὴν ἐσθῆτα καὶ τοὔνομα τῆς χώρας. λέγεται δὲ καὶ Μῆδος υἱὸς αὐτῆς διαδέξασθαι τὴν ἀρχὴν καὶ τὴν χώραν ἐπώνυμον αὐτοῦ καταλιπεῖν. ὁμολογεῖ δὲ τούτοις καὶ τὰ κατὰ τὴν Ἀρμενίαν Ἰασόνια καὶ τὸ τῆς χώρας ὄνομα καὶ ἄλλα πλείω περὶ ὧν ἐροῦμεν.

Καὶ τοῦτο δὲ Μηδικὸν τὸ βασιλέα αἱρεῖσθαι τὸν 11 ἀνδρειότατον, ἀλλ' οὐ πᾶσιν ἀλλὰ τοῖς ὀρείοις· μᾶλλον δὲ τὸ τοῖς βασιλεῦσιν πολλὰς εἶναι γυναῖκας· τοῖς

12. ante τά: καί

*δ' ὀρείοις τῶν Μήδων καὶ πᾶσιν ἔθος τοῦτο, ἐλάττους δὲ τῶν πέντε οὐκ ἔξεστιν· ὡς δ' αὔτως τὰς γυναῖκάς φασιν ἐν καλῷ τίθεσθαι ὅτι πλείστας * νέμειν ἄνδρας, τῶν πέντε δὲ ἐλάττους συμφορὰν ἡγεῖσθαι. τῆς δ' ἄλλης Μηδίας εὐδαιμονούσης τελέως λυπρά ἐστιν ἡ προσάρκτιος ὀρεινή· σιτοῦνται γοῦν ἀπὸ ἀκροδρύων, ἔκ τε μήλων ξηρῶν κοπέντων ποιοῦνται μάζας, ἀπὸ δ' ἀμυγδάλων φωχθέντων ἄρτους, ἐκ δὲ ῥιζῶν τινων οἶνον ἐκθλίβουσι, κρέασι δὲ χρῶνται θηρείοις, ἥμερα δὲ οὐ τρέφουσι θρέμματα. τοσαῦτα καὶ περὶ Μήδων φαμέν· περὶ δὲ τῶν νομίμων κοινῇ τῆς συμπάσης Μηδίας, ἐπειδὴ ταὐτὰ τοῖς Περσικοῖς γεγένηται διὰ τὴν τῶν Περσῶν ἐπικράτειαν, ἐν τῷ περὶ ἐκείνων λόγῳ φήσομεν.*

14 *Τῆς δ' Ἀρμενίας τὰ μὲν νότια προβέβληται τὸν Ταῦρον, διείργοντα αὐτὴν ἀφ' ὅλης τῆς μεταξὺ Εὐ-*
C.527 *φράτου καὶ τοῦ Τίγριος, ἣν Μεσοποταμίαν καλοῦσι, τὰ δὲ ἑωθινὰ τῇ Μηδίᾳ συνάπτει τῇ μεγάλῃ καὶ τῇ Ἀτροπατηνῇ· προσάρκτια δέ ἐστι τὰ ὑπερκείμενα τῆς Κασπίας θαλάττης ὄρη τὰ τοῦ Παραχοάθρα καὶ Ἀλβανοὶ καὶ Ἴβηρες καὶ ὁ Καύκασος ἐγκυκλούμενος τὰ ἔθνη ταῦτα καὶ συνάπτων τοῖς Ἀρμενίοις, συνάπτων δὲ καὶ τοῖς Μοσχικοῖς ὄρεσι καὶ Κολχικοῖς μέχρι τῶν καλουμένων Τιβαρανῶν· ἀπὸ δὲ τῆς ἑσπέρας ταῦτά ἐστι τὰ ἔθνη καὶ ὁ Παρυάδρης καὶ ὁ Σκυδίσης μέχρι τῆς μικρᾶς Ἀρμενίας καὶ τῆς τοῦ Εὐφράτου ποταμίας, ἣ διείργει τὴν Ἀρμενίαν ἀπὸ τῆς Καππαδοκίας καὶ τῆς Κομμαγηνῆς.*

2 *Ὁ γὰρ Εὐφράτης ἀπὸ τῆς βορείου πλευρᾶς τοῦ Ταύρου τὰς ἀρχὰς ἔχων τὸ μὲν πρῶτον ῥεῖ πρὸς δύσιν διὰ τῆς Ἀρμενίας, εἶτ' ἐπιστρέφει πρὸς νότον καὶ διακόπτει τὸν Ταῦρον μεταξὺ τῶν Ἀρμενίων τε καὶ Καπ-*

παδόκων καὶ Κομμαγηνῶν, ἐκπεσὼν δ' ἔξω καὶ γενόμενος κατὰ τὴν Συρίαν ἐπιστρέφει πρὸς χειμερινὰς ἀνατολὰς μέχρι Βαβυλῶνος καὶ ποιεῖ τὴν Μεσοποταμίαν πρὸς τὸν Τίγριν· ἀμφότεροι δὲ τελευτῶσιν εἰς τὸν Περσικὸν κόλπον. τὰ μὲν δὴ κύκλῳ τοιαῦτα, ὀρεινὰ σχεδόν τι πάντα καὶ τραχέα πλὴν τῶν πρὸς τὴν Μηδίαν κεκλιμένων ὀλίγων. πάλιν δὲ τοῦ λεχθέντος Ταύρου τὴν ἀρχὴν λαμβάνοντος ἀπὸ τῆς περαίας τῶν Κομμαγηνῶν καὶ τῶν Μελιτηνῶν ἣν ὁ Εὐφράτης ποιεῖ, Μάσιον μέν ἐστι τὸ ὑπερκείμενον ὄρος τῶν ἐν τῇ Μεσοποταμίᾳ Μυγδόνων ἐκ νότου, ἐν οἷς ἡ Νίσιβίς ἐστιν· ἐκ δὲ τῶν πρὸς ἄρκτον μερῶν ἡ Σωφηνὴ κεῖται μεταξὺ τοῦ τε Μασίου καὶ τοῦ Ἀντιταύρου. οὗτος δ' ἀπὸ τοῦ Εὐφράτου καὶ τοῦ Ταύρου τὴν ἀρχὴν λαβὼν τελευτᾷ πρὸς τὰ ἑῷα τῆς Ἀρμενίας ἀπολαμβάνων μέσην τὴν Σωφηνήν, ἐκ θατέρου δὲ μέρους ἔχων τὴν Ἀκιλισηνὴν μεταξὺ ἱδρυμένην τοῦ Ταύρου τε καὶ τῆς τοῦ Εὐφράτου ποταμίας πρὶν ἢ κάμπτειν αὐτὴν ἐπὶ νότον. βασίλειον δὲ τῆς Σωφηνῆς Καρκαθιόκερτα. τοῦ δὲ Μασίου ὑπέρκειται πρὸς ἕω πολὺ κατὰ τὴν Γορδυηνὴν ὁ Νιφάτης, εἶθ' ὁ Ἄβος, ἀφ' οὗ καὶ ὁ Εὐφράτης ῥεῖ καὶ ὁ Ἀράξης, ὁ μὲν πρὸς δύσιν ὁ δὲ πρὸς ἀνατολάς· εἶθ' ὁ Νίβαρος μέχρι τῆς Μηδίας παρατείνει.

Ὁ μὲν οὖν Εὐφράτης εἴρηται ὃν τρόπον ῥεῖ· ὁ δὲ 3
Ἀράξης πρὸς τὰς ἀνατολὰς ἐνεχθεὶς μέχρι τῆς Ἀτροπατηνῆς κάμπτει πρὸς δύσιν καὶ πρὸς ἄρκτους καὶ παραρρεῖ τὰ Ἄζαρα πρῶτον, εἶτ' Ἀρτάξατα, πόλεις Ἀρμενίων· ἔπειτα διὰ τοῦ Ἀραξηνοῦ πεδίου πρὸς τὸ Κάσπιον ἐκδίδωσι πέλαγος.

Ἐν αὐτῇ δὲ τῇ Ἀρμενίᾳ πολλὰ μὲν ὄρη πολλὰ δὲ C.528 4
ὀροπέδια, ἐν οἷς οὐδ' ἄμπελος φύεται ῥᾳδίως, πολλοὶ δ' αὐλῶνες οἱ μὲν μέσως οἱ δὲ καὶ σφόδρα εὐδαίμονες

καθάπερ τὸ Ἀραξηνὸν πεδίον, δι' οὗ ὁ Ἀράξης ποταμὸς ῥέων εἰς τὰ ἄκρα τῆς Ἀλβανίας καὶ τὴν Κασπίαν ἐκπίπτει θάλατταν, καὶ μετὰ ταῦτα ἡ Σακασηνὴ καὶ αὐτὴ τῇ Ἀλβανίᾳ πρόσχωρος καὶ τῷ Κύρῳ ποταμῷ, εἶθ' ἡ Γωγαρηνή· πᾶσα γὰρ ἡ χώρα αὕτη καρποῖς τε καὶ τοῖς ἡμέροις δένδρεσι καὶ τοῖς ἀειθαλέσι πληθύει, φέρει δὲ καὶ ἐλαίαν. ἔστι δὲ καὶ ἡ * Φαυηνὴ τῆς Ἀρμενίας ἐπαρχία καὶ ἡ Κωμισηνὴ καὶ Ὀρχιστηνὴ πλείστην ἱππείαν παρέχουσα· ἡ δὲ Χορζηνὴ καὶ Καμβυσηνὴ προσβορρόταταί εἰσι καὶ νιφόβολοι μάλιστα, συνάπτουσαι τοῖς Καυκασίοις ὄρεσι καὶ τῇ Ἰβηρίᾳ καὶ τῇ Κολχίδι· ὅπου φασὶ κατὰ τὰς ὑπερβολὰς τῶν ὀρῶν πολλάκις καὶ συνοδίας ὅλας * τῶν ὀρῶν ἐν τῇ χιόνι καταπίνεσθαι νιφετῶν γινομένων ἐπὶ πλέον· ἔχειν δὲ καὶ βακτηρίας πρὸς τοὺς τοιούτους κινδύνους, [ἃς] παρεξαίροντας εἰς τὴν ἐπιφάνειαν ἀναπνοῆς τε χάριν καὶ τοῦ διαμηνύειν τοῖς ἐπιοῦσιν ὥστε βοηθείας τυγχάνειν, ἀνορύττεσθαι καὶ σώζεσθαι. ἐν δὲ τῇ χιόνι βώλους πήγνυσθαί φασι κοίλας περιεχούσας χρηστὸν ὕδωρ ὡς ἐν χιτῶνι, καὶ ζῷα δὲ ἐν αὐτῇ γεννᾶσθαι· καλεῖ δὲ σκώληκας Ἀπολλωνίδης, Θεοφάνης δὲ θρῖπας· κἀν τούτοις ἀπολαμβάνεσθαι χρηστὸν ὕδωρ, περισχισθέντων δὲ τῶν χιτώνων πίνεσθαι· τὴν δὲ γένεσιν τῶν ζῴων τοιαύτην εἰκάζουσιν οἵαν τὴν τῶν κωνώπων ἐκ τῆς ἐν τοῖς μετάλλοις φλογὸς καὶ τοῦ φεψάλου.

5 Ἱστοροῦσι δὲ τὴν Ἀρμενίαν μικρὰν πρότερον οὖσαν αὐξηθῆναι διὰ τῶν περὶ Ἀρταξίαν καὶ Ζαρίαδριν, οἳ πρότερον μὲν ἦσαν Ἀντιόχου τοῦ μεγάλου στρατηγοί, βασιλεύσαντες δ' ὕστερον μετὰ τὴν ἐκείνου ἧτταν ὁ μὲν τῆς Σωφηνῆς καὶ τῆς * Ἀκισηνῆς καὶ Ὀδομαντίδος καὶ ἄλλων τινῶν ὁ δὲ τῆς περὶ Ἀρτάξατα, συνηύξησαν ἐκ τῶν περικειμένων ἐθνῶν ἀποτεμόμενοι

μέρη, ἐκ Μήδων μὲν τήν τε Κασπιανὴν καὶ Φαυνῖτιν καὶ Βασοροπέδαν, Ἰβήρων δὲ τήν τε παρώρειαν τοῦ Παρυάδρου καὶ τὴν Χορζηνὴν καὶ Γωγαρηνήν, πέραν οὖσαν τοῦ Κύρου, Χαλύβων δὲ καὶ Μοσυνοίκων Καρηνῖτιν καὶ Ξερξήνην, ἃ τῇ μικρᾷ Ἀρμενίᾳ ἐστὶν ὅμορα ἢ καὶ μέρη αὐτῆς ἐστι, Καταόνων δὲ Ἀκιλισηνὴν καὶ τὴν περὶ τὸν Ἀντίταυρον, Σύρων δὲ Ταρωνῖτιν, ὥστε πάντας ὁμογλώττους εἶναι.

6 Πόλεις δ' εἰσὶν τῆς Ἀρμενίας Ἀρτάξατά τε (ἣν καὶ Ἀρταξιάσατα καλοῦσιν, Ἀννίβα κτίσαντος Ἀρταξίᾳ τῷ βασιλεῖ) καὶ Ἄρξατα, ἀμφότεραι ἐπὶ τῷ Ἀράξῃ, ἡ C.529 μὲν Ἄρξατα πρὸς τοῖς ὅροις τῆς Ἀτροπατίας, ἡ δὲ Ἀρτάξατα πρὸς τῷ Ἀραξηνῷ πεδίῳ συνῳκισμένη καλῶς καὶ βασίλειον οὖσα τῆς χώρας. κεῖται δ' ἐπὶ χερρονησιάζοντος ἀγκῶνος τὸ τεῖχος [ἔχουσα] κύκλῳ προβεβλημένον τὸν ποταμὸν πλὴν τοῦ ἰσθμοῦ, τὸν ἰσθμὸν δ' ἔχει τάφρῳ καὶ χάρακι κεκλεισμένον. οὐ πολὺ δ' ἄπωθεν τῆς πόλεώς ἐστι τὰ Τιγράνου καὶ Ἀρταυάσδου γαζοφυλάκια, φρούρια ἐρυμνά, Βάβυρσά τε καὶ Ὀλανή· ἦν δὲ καὶ ἄλλα ἐπὶ τῷ Εὐφράτῃ. Ἀρτάγειρα δὲ ἀπέστησε μὲν Ἄδων ὁ φρούραρχος, ἐξεῖλον δ' οἱ Καίσαρος στρατηγοὶ πολιορκήσαντες πολὺν χρόνον, καὶ τὰ τείχη περιεῖλον.

7 Ποταμοὶ δὲ πλείους μέν εἰσιν ἐν τῇ χώρᾳ, γνωριμώτατοι δὲ Φᾶσις μὲν καὶ Λύκος εἰς τὴν Ποντικὴν ἐκπίπτοντες θάλατταν (Ἐρατοσθένης δ' ἀντὶ τοῦ Λύκου τίθησι Θερμώδοντα οὐκ εὖ), εἰς δὲ τὴν Κασπίαν Κῦρος καὶ Ἀράξης, εἰς δὲ τὴν Ἐρυθρὰν ὅ τε Εὐφράτης καὶ ὁ Τίγρις.

8 Εἰσὶ δὲ καὶ λίμναι κατὰ τὴν Ἀρμενίαν μεγάλαι, μία μὲν ἡ Μαντιανή, Κυανῆ ἑρμηνευθεῖσα, μεγίστη, ὥς φασι, μετὰ τὴν Μαιῶτιν, ἁλμυροῦ ὕδατος, διήκουσα μέχρι τῆς Ἀτροπατίας, ἔχουσα καὶ ἁλοπήγια· ἡ δὲ Ἀρ-

σηνή, ἣν καὶ Θωπῖτιν καλοῦσιν· ἔστι δὲ νιτρῖτις, τὰς δ' ἐσθῆτας ῥήττει καὶ διαξαίνει· διὰ δὲ τοῦτο καὶ ἄποτόν ἐστι τὸ ὕδωρ. φέρεται δὲ δι' αὐτῆς ὁ Τίγρις ἀπὸ τῆς κατὰ τὸν Νιφάτην ὀρεινῆς ὁρμηθείς, ἄμικτον φυλάττων τὸ ῥεῦμα διὰ τὴν ὀξύτητα, ἀφ' οὗ καὶ τοὔνομα, Μήδων τίγριν καλούντων τὸ τόξευμα· καὶ οὗτος μὲν ἔχει πολυειδεῖς ἰχθῦς, οἱ δὲ λιμναῖοι ἑνὸς εἴδους εἰσί· κατὰ δὲ τὸν μυχὸν τῆς λίμνης εἰς βάραθρον ἐμπεσὼν ὁ ποταμὸς καὶ πολὺν τόπον ἐνεχθεὶς ὑπὸ γῆς ἀνατέλλει κατὰ τὴν Χαλωνῖτιν· ἐκεῖθεν δ' ἤδη πρὸς τὴν Ὦπιν καὶ τὸ τῆς Σεμιράμιδος καλούμενον διατείχισμα ἐκεῖνός τε καταφέρεται τοὺς Γορδυαίους ἐν δεξιᾷ ἀφεὶς καὶ τὴν Μεσοποταμίαν ὅλην, καὶ ὁ Εὐφράτης τοὐναντίον ἐν ἀριστερᾷ ἔχων τὴν αὐτὴν χώραν· πλησιάσαντες δὲ ἀλλήλοις καὶ ποιήσαντες τὴν Μεσοποταμίαν ὁ μὲν διὰ Σελευκείας φέρεται πρὸς τὸν Περσικὸν κόλπον, ὁ δὲ διὰ Βαβυλῶνος, καθάπερ εἴρηταί που ἐν τοῖς πρὸς Ἐρατοσθένην καὶ Ἵππαρχον λόγοις.

9 Μέταλλα δ' ἐν μὲν τῇ Συσπιρίτιδί ἐστι χρυσοῦ κατὰ τὰ Κάβαλλα, ἐφ' ἃ Μένωνα ἔπεμψεν Ἀλέξανδρος μετὰ στρατιωτῶν, ἀπήγχθη δ' ὑπὸ τῶν ἐγχωρίων· καὶ ἄλλα δ' ἐστὶ μέταλλα, καὶ δὴ τῆς σάνδικος καλουμένης, ἣν δὴ καὶ Ἀρμένιον καλοῦσι χρῶμα, ὅμοιον κάλχῃ. οὕτω δ' ἐστὶν ἱπποβότος σφόδρα ἡ χώρα καὶ οὐχ ἧτ-
C.530 τον τῆς Μηδίας, ὥστε οἱ Νησαῖοι ἵπποι καὶ ἐνταῦθα γίνονται, οἷσπερ οἱ Περσῶν βασιλεῖς ἐχρῶντο, καὶ ὁ σατράπης τῆς Ἀρμενίας τῷ Πέρσῃ κατ' ἔτος δισμυρίους πώλους τοῖς * Μιθρακίνοις ἔπεμπεν. Ἀρταυάσδης δὲ Ἀντωνίῳ χωρὶς τῆς ἄλλης ἱππείας αὐτὴν τὴν κατάφρακτον ἑξακισχιλίαν ἵππον ἐκτάξας ἐπέδειξεν, ἡνίκα εἰς τὴν Μηδίαν ἐνέβαλε σὺν αὐτῷ. ταύτης δὲ τῆς ἱππείας οὐ Μῆδοι μόνοι καὶ Ἀρμένιοι ζηλωταὶ

γεγόνασιν, ἀλλὰ καὶ Ἀλβανοί· καὶ γὰρ ἐκεῖνοι καταφράκτοις χρῶνται.

Τοῦ δὲ πλούτου καὶ τῆς δυνάμεως τῆς χώρας ση- 10
μεῖον οὐ μικρὸν ὅτι Πομπηίου Τιγράνῃ τῷ πατρὶ τῷ Ἀρταυάσδου τάλαντα ἐπιγράψαντος ἑξακισχίλια ἀργυρίου, διένειμεν αὐτίκα ταῖς δυνάμεσι τῶν Ῥωμαίων, στρατιώτῃ μὲν κατ' ἄνδρα πεντήκοντα δραχμὰς ἑκατοντάρχῃ δὲ χιλίας ἱππάρχῳ δὲ καὶ χιλιάρχῳ τάλαντον.

Μέγεθος δὲ τῆς χώρας Θεοφάνης ἀποδίδωσιν εὖ- 11
ρος μὲν σχοίνων ἑκατὸν μῆκος δὲ διπλάσιον, τιθεὶς τὴν σχοῖνον τετταράκοντα σταδίων· πρὸς ὑπερβολὴν δ' εἴρηκεν· ἐγγυτέρω δ' ἐστὶ τῆς ἀληθείας μῆκος μὲν θέσθαι τὸ ὑπ' ἐκείνου λεχθὲν [εὖρος], εὖρος δὲ τὸ ἥμισυ ἢ μικρῷ πλεῖον. ἡ μὲν δὴ φύσις τῆς Ἀρμενίας καὶ δύναμις τοιαύτη.

Ἀρχαιολογία δέ τίς ἐστι περὶ τοῦ ἔθνους τοῦδε 12
τοιαύτη· Ἄρμενος ἐξ Ἀρμενίου πόλεως Θετταλικῆς, ἣ κεῖται μεταξὺ Φερῶν καὶ Λαρίσης ἐπὶ τῇ Βοίβῃ, καθάπερ εἴρηται, συνεστράτευσεν Ἰάσονι εἰς τὴν Ἀρμενίαν· τούτου φασὶν ἐπώνυμον τὴν Ἀρμενίαν οἱ περὶ Κυρσίλον τὸν Φαρσάλιον καὶ Μήδιον τὸν Λαρισαῖον, ἄνδρες συνεστρατευκότες Ἀλεξάνδρῳ· τῶν δὲ μετὰ τοῦ Ἀρμένου τοὺς μὲν τὴν Ἀκιλισηνὴν οἰκῆσαι τὴν ὑπὸ τοῖς Σωφηνοῖς πρότερον οὖσαν, τοὺς δὲ ἐν τῇ Συσπιρίτιδι ἕως τῆς Καλαχηνῆς καὶ τῆς Ἀδιαβηνῆς ἔξω τῶν Ἀρμενιακῶν ὅρων. καὶ τὴν ἐσθῆτα δὲ τὴν Ἀρμενιακὴν Θετταλικήν φασιν, οἷον τοὺς βαθεῖς χιτῶνας οὓς καλοῦσιν Θετταλικοὺς ἐν ταῖς τραγῳδίαις, καὶ ζωνύουσι περὶ τὰ στήθη καὶ ἐφαπτίδας, ὡς καὶ τῶν τραγῳδῶν μιμησαμένων τοὺς Θετταλούς· ἔδει μὲν γὰρ

---

7. post *δραχμὰς: καὶ ἑκατὸν*

αὐτοῖς ἐπιθέτου κόσμου τοιούτου τινός, οἱ δὲ Θετταλοὶ μάλιστα βαθυστολοῦντες, ὡς εἰκός, διὰ τὸ πάντων εἶναι Ἑλλήνων βορειοτάτους καὶ ψυχροτάτους νέμεσθαι τόπους ἐπιτηδειοτάτην παρέσχοντο μίμησιν τῇ τῶν ὑποκριτῶν διασκευῇ ἐν τοῖς ἀναπλάσμασιν· καὶ τὸν
C.531 τῆς ἱππικῆς ζῆλόν φασιν εἶναι Θετταλικὸν καὶ τούτοις ὁμοίως καὶ Μήδοις. τὴν δὲ Ἰάσονος στρατείαν καὶ τὰ Ἰασόνια μαρτυρεῖ, ὧν τινα οἱ δυνάσται κατεσκεύασαν παραπλησίως ὥσπερ τὸν ἐν Ἀβδήροις νεὼν τοῦ Ἰάσονος Παρμενίων.

13 Τὸν δὲ Ἀράξην κληθῆναι νομίζουσι κατὰ τὴν ὁμοιότητα τὴν πρὸς τὸν Πηνειὸν ὑπὸ τῶν περὶ τὸν Ἄρμενον ὁμωνύμως ἐκείνῳ· καλεῖσθαι γὰρ Ἀράξην κἀκεῖνον διὰ τὸ ἀπαράξαι τὴν Ὄσσαν ἀπὸ τοῦ Ὀλύμπου ῥήξαντα τὰ Τέμπη· καὶ τὸν ἐν Ἀρμενίᾳ δὲ ἀπὸ τῶν ὀρῶν καταβάντα πλατύνεσθαί φασι τὸ παλαιόν, καὶ πελαγίζειν ἐν τοῖς ὑποκειμένοις πεδίοις οὐκ ἔχοντα διέξοδον, Ἰάσονα δὲ μιμησάμενον τὰ Τέμπη ποιῆσαι τὴν διασφάγα, δι' ἧς καταράττει νυνὶ τὸ ὕδωρ εἰς τὴν Κασπίαν θάλατταν· ἐκ δὲ τούτου γυμνωθῆναι τὸ Ἀραξηνὸν πεδίον, δι' οὗ τυγχάνει ῥέων ἐπὶ τὸν καταράκτην ὁ ποταμός. οὗτος μὲν οὖν ὁ λόγος περὶ τοῦ Ἀράξου ποταμοῦ λεγόμενος ἔχει τι πιθανόν, ὁ δὲ Ἡροδότειος οὐ πάνυ· φησὶ γὰρ ἐκ Ματιηνῶν αὐτὸν ῥέοντα εἰς τετταράκοντα ποταμοὺς σχίζεσθαι, μερίζειν δὲ Σκύθας καὶ Βακτριανούς· καὶ Καλλισθένης δὲ ἠκολούθησεν αὐτῷ.

14 Λέγονται δὲ καὶ τῶν Αἰνιάνων τινὲς οἱ μὲν τὴν Οὐιτίαν οἰκῆσαι οἱ δ' ὕπερθε τῶν Ἀρμενίων ὑπὲρ τὸν Ἄβον καὶ τὸν Νίβαρον (μέρη δ' ἐστὶ τοῦ Ταύρου ταῦτα), ὧν ὁ Ἄβος ἐγγύς ἐστι τῆς ὁδοῦ τῆς εἰς Ἐκβάτανα φερούσης παρὰ τὸν τῆς Βάριδος νεών. φασὶ δὲ καὶ

Θρᾳκῶν τινας, τοὺς προσαγορευομένους Σαραπάρας οἷον κεφαλοτόμους, οἰκῆσαι ὑπὲρ τῆς Ἀρμενίας πλησίον Γουρανίων καὶ Μήδων, θηριώδεις ἀνθρώπους καὶ ἀπειθεῖς ὀρεινοὺς περισκυθιστάς τε καὶ ἀποκεφαλιστάς· τοῦτο γὰρ δηλοῦσιν οἱ Σαραπάραι. εἴρηται δὲ καὶ τὰ περὶ τῆς Μηδείας ἐν τοῖς Μηδικοῖς· ὥστ' ἐκ πάντων τούτων εἰκάζουσι καὶ τοὺς Μήδους καὶ Ἀρμενίους συγγενεῖς πως τοῖς Θετταλοῖς εἶναι καὶ τοῖς ἀπὸ Ἰάσονος καὶ Μηδείας.

Ὁ μὲν δὴ παλαιὸς λόγος οὗτος, ὁ δὲ τούτου νεώ- 15
τερος καὶ κατὰ Πέρσας εἰς τὸ ἐφεξῆς μέχρι εἰς ἡμᾶς ὡς ἐν κεφαλαίῳ πρέποι ἂν μέχρι τοσούτου λεχθείς, ὅτι κατεῖχον τὴν Ἀρμενίαν Πέρσαι καὶ Μακεδόνες, μετὰ ταῦτα οἱ τὴν Συρίαν ἔχοντες καὶ τὴν Μηδίαν· τελευταῖος δ' ὑπῆρξεν Ὀρόντης ἀπόγονος Ὑδάρνου τῶν ἑπτὰ Περσῶν ἑνός· εἶθ' ὑπὸ τῶν Ἀντιόχου τοῦ μεγάλου στρατηγῶν τοῦ πρὸς Ῥωμαίους πολεμήσαντος διῃρέθη δίχα, Ἀρταξίου τε καὶ Ζαριάδριος· καὶ ἦρχον οὗτοι τοῦ βασιλέως ἐπιτρέψαντος· ἡττηθέντος δ' ἐκείνου προσθέμενοι Ῥωμαίοις καθ' αὑτοὺς ἐτάττοντο βασιλεῖς προσαγορευθέντες. τοῦ μὲν οὖν Ἀρταξίου C.532
Τιγράνης ἦν ἀπόγονος καὶ εἶχε τὴν ἰδίως λεγομένην Ἀρμενίαν (αὕτη δ' ἦν προσεχὴς τῇ τε Μηδίᾳ καὶ Ἀλβανοῖς καὶ Ἴβηρσι μέχρι Κολχίδος καὶ τῆς ἐπὶ τῷ Εὐξείνῳ Καππαδοκίας), τοῦ δὲ Ζαριάδριος ὁ Σωφηνὸς Ἀρτάνης ἔχων τὰ νότια μέρη καὶ τούτων τὰ πρὸς δύσιν μᾶλλον. κατελύθη δ' οὗτος ὑπὸ τοῦ Τιγράνου, καὶ πάντων κατέστη κύριος ἐκεῖνος. τύχαις δ' ἐχρήσατο ποικίλαις· κατ' ἀρχὰς μὲν γὰρ ὡμήρευσε παρὰ Πάρθοις, ἔπειτα δι' ἐκείνων ἔτυχε καθόδου, λαβόντων μισθὸν ἑβδομήκοντα αὐλῶνας τῆς Ἀρμενίας· αὐξηθεὶς δὲ καὶ ταῦτα ἀπέλαβε τὰ χωρία καὶ τὴν ἐκεί-

νων ἐπόρθησε τήν τε περὶ Νίνου καὶ τὴν περὶ Ἄρβηλα· ὑπηκόους δ' ἔσχε καὶ τὸν Ἀτροπατηνὸν καὶ τὸν Γορδυαῖον, μεθ' ὧν καὶ τὴν λοιπὴν Μεσοποταμίαν, ἔτι δὲ τὴν Συρίαν αὐτὴν καὶ Φοινίκην διαβὰς τὸν Εὐφράτην ἀνὰ κράτος εἷλεν. ἐπὶ τοσοῦτον δ' ἐξαρθεὶς καὶ πόλιν ἔκτισε πλησίον τῆς * Ἰβηρίας μεταξὺ ταύτης τε καὶ τοῦ κατὰ τὸν Εὐφράτην Ζεύγματος, ἣν ὠνόμασε Τιγρανόκερτα, ἐκ δώδεκα ἐρημωθεισῶν ὑπ' αὐτοῦ πόλεων Ἑλληνίδων ἀνθρώπους συναγαγών. ἔφθη δ' ἐπελθὼν Λεύκολλος ὁ τῷ Μιθριδάτῃ πολεμήσας καὶ τοὺς μὲν οἰκήτορας εἰς τὴν οἰκείαν ἑκάστου ἀπέλυσε, τὸ δὲ κτίσμα ἡμιτελὲς ἔτι ὂν κατέσπασε προσβαλὼν καὶ μικρὰν κώμην κατέλιπεν, ἐξήλασε δὲ καὶ τῆς Συρίας αὐτὸν καὶ τῆς Φοινίκης. διαδεξάμενος δ' Ἀρταυάσδης ἐκεῖνον τέως μὲν ηὐτύχει φίλος ὢν Ῥωμαίοις, Ἀντώνιον δὲ προδιδοὺς Παρθυαίοις ἐν τῷ πρὸς αὐτοὺς πολέμῳ δίκας ἔτισεν· ἀναχθεὶς γὰρ εἰς Ἀλεξάνδρειαν ὑπ' αὐτοῦ, δέσμιος πομπευθεὶς διὰ τῆς πόλεως τέως μὲν ἐφρουρεῖτο, ἔπειτ' ἀνῃρέθη συνάπτοντος τοῦ Ἀκτιακοῦ πολέμου. μετ' ἐκεῖνον δὲ πλείους ἐβασίλευσαν ὑπὸ Καίσαρι καὶ Ῥωμαίοις ὄντες· καὶ νῦν ἔτι συνέχεται τὸν αὐτὸν τρόπον.

16 Ἅπαντα μὲν οὖν τὰ τῶν Περσῶν ἱερὰ καὶ Μῆδοι καὶ Ἀρμένιοι τετιμήκασι, τὰ δὲ τῆς Ἀναΐτιδος διαφερόντως Ἀρμένιοι, ἔν τε ἄλλοις ἱδρυσάμενοι τόποις καὶ δὴ καὶ ἐν τῇ Ἀκιλισηνῇ. ἀνατιθέασι δ' ἐνταῦθα δούλους καὶ δούλας· καὶ τοῦτο μὲν οὐ θαυμαστόν, ἀλλὰ καὶ θυγατέρας οἱ ἐπιφανέστατοι τοῦ ἔθνους ἀνιεροῦσι παρθένους, αἷς νόμος ἐστὶ καταπορνευθείσαις πολὺν χρόνον παρὰ τῇ θεῷ μετὰ ταῦτα δίδοσθαι πρὸς γάμον, οὐκ ἀπαξιοῦντος τῇ τοιαύτῃ συνοικεῖν οὐδε-
C.533 νός. τοιοῦτον δέ τι καὶ Ἡρόδοτος λέγει τὸ περὶ τὰς

Λυδάς· πορνεύειν γὰρ ἁπάσας. οὕτω δὲ φιλοφρόνως χρῶνται τοῖς ἐρασταῖς ὥστε καὶ ξενίαν παρέχουσι καὶ δῶρα ἀντιδιδόασι πλείω πολλάκις ἢ λαμβάνουσιν, ἅτ' ἐξ εὐπόρων οἴκων ἐπιχορηγούμεναι· δέχονται δὲ οὐ τοὺς τυχόντας τῶν ξένων, ἀλλὰ μάλιστα τοὺς ἀπὸ ἴσου ἀξιώματος.

— IB —

.... καὶ ἡ Καππαδοκία δ' ἐστὶ πολυμερής τε 1
καὶ συχνὰς δεδεγμένη μεταβολάς. οἱ δ' οὖν ὁμόγλωττοι μάλιστά εἰσιν οἱ ἀφοριζόμενοι πρὸς νότον μὲν τῷ Κιλικίῳ λεγομένῳ Ταύρῳ, πρὸς ἕω δὲ τῇ Ἀρμενίᾳ καὶ τῇ Κολχίδι καὶ τοῖς μεταξὺ ἑτερογλώττοις ἔθνεσι, πρὸς ἄρκτον δὲ τῷ Εὐξείνῳ μέχρι τῶν ἐκβολῶν τοῦ Ἅλυος, πρὸς δύσιν δὲ τῷ τε τῶν Παφλαγόνων ἔθνει καὶ Γαλατῶν τῶν τὴν Φρυγίαν ἐποικησάντων μέχρι Λυκαόνων καὶ Κιλίκων τῶν τὴν τραχεῖαν Κιλικίαν νεμομένων.

Καὶ αὐτῶν δὲ τῶν ὁμογλώττων οἱ παλαιοὶ τοὺς 2
Κατάονας καθ' αὑτοὺς ἔταττον, ἀντιδιαιροῦντες τοῖς Καππάδοξιν ὡς ἑτεροεθνέσι, καὶ ἐν τῇ διαριθμήσει τῶν ἐθνῶν μετὰ τὴν Καππαδοκίαν ἐτίθεσαν τὴν Καταονίαν, εἶτα τὸν Εὐφράτην καὶ τὰ πέραν ἔθνη, ὥστε καὶ τὴν Μελιτηνὴν ὑπὸ τῇ Καταονίᾳ τάττειν, ἣ μεταξὺ κεῖται ταύτης τε καὶ τοῦ Εὐφράτου συνάπτουσα τῇ Κομμαγηνῇ, μέρος τε τῆς Καππαδοκίας ἐστὶ δέκατον κατὰ τὴν εἰς δέκα στρατηγίας διαίρεσιν τῆς χώρας. οὕτω γὰρ δὴ οἱ καθ' ἡμᾶς βασιλεῖς οἱ πρὸ Ἀρ- C.534
χελάου διατεταγμένην εἶχον τὴν ἡγεμονίαν τῆς Καππαδοκίας· δέκατον δ' ἐστὶ μέρος καὶ ἡ Καταονία. καθ' ἡμᾶς δὲ εἶχε στρατηγὸν ἑκατέρα ἴδιον· οὔτε δ' ἐκ τῆς

διαλέκτου διαφορᾶς τινος ἐν τούτοις πρὸς τοὺς ἄλλους Καππάδοκας ἐμφαινομένης οὔτε ἐκ τῶν ἄλλων ἐθῶν, θαυμαστὸν πῶς ἠφάνισται τελέως τὰ σημεῖα τῆς ἀλλοεθνίας. ἦσαν δ' οὖν διωρισμένοι, προσεκτήσατο δ' αὐτοὺς Ἀριαράθης ὁ πρῶτος προσαγορευθεὶς Καππαδόκων βασιλεύς.

3 Ἔστι δ' ὥσπερ χερρονήσου μεγάλης ἰσθμὸς οὗτος, σφιγγόμενος θαλάτταις δυσὶ τῇ τε τοῦ Ἰσσικοῦ κόλπου μέχρι τῆς τραχείας Κιλικίας καὶ τῇ τοῦ Εὐξείνου μεταξὺ Σινώπης τε καὶ τῆς τῶν Τιβαρηνῶν παραλίας· ἐντὸς δὲ τοῦ ἰσθμοῦ λέγομεν χερρόνησον τὴν προσεσπέριον τοῖς Καππάδοξιν ἅπασαν, ἣν Ἡρόδοτος μὲν ἐντὸς Ἅλυος καλεῖ· αὕτη γάρ ἐστιν ἧς ἦρξεν ἁπάσης Κροῖσος· λέγει δ' αὐτὸν ἐκεῖνος τύραννον ἐθνέων τῶν ἐντὸς Ἅλυος ποταμοῦ. οἱ δὲ νῦν τὴν ἐντὸς τοῦ Ταύρου καλοῦσιν Ἀσίαν, ὁμωνύμως τῇ ὅλῃ ἠπείρῳ ταύτην Ἀσίαν προσαγορεύοντες. περιέχεται δ' ἐν αὐτῇ πρῶτα μὲν ἔθνη τὰ ἀπὸ τῆς ἀνατολῆς Παφλαγόνες τε καὶ Φρύγες καὶ Λυκάονες, ἔπειτα Βιθυνοὶ καὶ Μυσοὶ καὶ ἡ Ἐπίκτητος, ἔτι δὲ Τρῳὰς καὶ Ἑλλησποντία, μετὰ δὲ τούτους ἐπὶ θαλάττῃ μὲν Ἑλλήνων οἵ τε Αἰολεῖς καὶ Ἴωνες τῶν δ' ἄλλων Κᾶρές τε καὶ Λύκιοι, ἐν δὲ τῇ μεσογαίᾳ Λυδοί.

4 Περὶ μὲν οὖν τῶν ἄλλων ἐροῦμεν ὕστερον. τὴν δὲ Καππαδοκίαν εἰς δύο σατραπείας μερισθεῖσαν ὑπὸ τῶν Περσῶν παραλαβόντες Μακεδόνες περιεῖδον τὰ μὲν ἑκόντες τὰ δ' ἄκοντες εἰς βασιλείας ἀντὶ σατραπειῶν περιστᾶσαν· ὧν τὴν μὲν ἰδίως Καππαδοκίαν ὠνόμασαν καὶ πρὸς τῷ Ταύρῳ καὶ νὴ Δία μεγάλην Καππαδοκίαν, τὴν δὲ Πόντον, οἱ δὲ τὴν πρὸς τῷ

2. post ἐκ: τῆς

Πόντῳ Καππαδοκίαν. τῆς δὲ μεγάλης Καππαδοκίας νῦν μὲν οὐκ ἴσμεν πω τὴν διάταξιν· τελευτήσαντος γὰρ τὸν βίον Ἀρχελάου τοῦ βασιλεύσαντος, ἔγνω Καῖσάρ τε καὶ ἡ σύγκλητος ἐπαρχίαν εἶναι Ῥωμαίων αὐτήν. ἐπ' ἐκείνου δὲ καὶ τῶν πρὸ αὐτοῦ βασιλέων εἰς δέκα στρατηγίας διῃρημένης τῆς χώρας, πέντε μὲν ἐξητάζοντο αἱ πρὸς τῷ Ταύρῳ, Μελιτηνὴ Καταονία Κιλικία Τυανῖτις Γαρσαυρῖτις, πέντε δὲ λοιπαὶ Λαουιανσηνὴ Σαργαραυσηνὴ Σαραουηνὴ Χαμανηνὴ Μοριμηνή. προσεγένετο δ' ὕστερον παρὰ Ῥωμαίων ἐκ τῆς Κιλικίας τοῖς πρὸ Ἀρχελάου καὶ ἑνδεκάτη στρατηγία, ἡ περὶ Καστάβαλά τε καὶ Κύβιστρα μέχρι τῆς Ἀντιπάτρου C.535 τοῦ λῃστοῦ Δέρβης, τῷ δὲ Ἀρχελάῳ καὶ ἡ τραχεῖα περὶ Ἐλαιοῦσσαν Κιλικία καὶ πᾶσα ἡ τὰ πειρατήρια συστησαμένη.

2 Ἔστι δ' ἡ μὲν Μελιτηνὴ παραπλησία τῇ Κομμαγηνῇ· πᾶσα γάρ ἐστι τοῖς ἡμέροις δένδροις κατάφυτος, μόνη τῆς ἄλλης Καππαδοκίας, ὥστε καὶ ἔλαιον φέρειν καὶ τὸν Μοναρίτην οἶνον τοῖς Ἑλληνικοῖς ἐνάμιλλον· ἀντίκειται δὲ τῇ Σωφηνῇ, μέσον ἔχουσα τὸν Εὐφράτην ποταμὸν καὶ αὐτὴ [καὶ] ἡ Κομμαγηνὴ ὅμορος οὖσα. ἔστι δὲ φρούριον ἀξιόλογον τῶν Καππαδόκων ἐν τῇ περαίᾳ Τόμισα· τοῦτο δ' ἐπράθη μὲν τῷ Σωφηνῷ ταλάντων ἑκατόν, ὕστερον δὲ ἐδωρήσατο Λεύκολλος τῷ Καππάδοκι συστρατεύσαντι ἀριστεῖον κατὰ τὸν πρὸς Μιθριδάτην πόλεμον.

2 Ἡ δὲ Καταονία πλατὺ καὶ κοῖλόν ἐστι πεδίον πάμφορον πλὴν τῶν ἀειθαλῶν. περίκειται δ' ὄρη ἄλλα τε καὶ Ἀμανὸς ἐκ τοῦ πρὸς νότον μέρους ἀπόσπασμα ὂν τοῦ Κιλικίου Ταύρου, καὶ ὁ Ἀντίταυρος εἰς τἀναντία ἀπερρωγώς. ὁ μὲν γὰρ Ἀμανὸς ἐπὶ τὴν Κιλικίαν καὶ τὴν Συριακὴν ἐκτείνεται θάλατταν πρὸς τὴν ἑσπέραν

ἀπὸ τῆς Καταονίας καὶ τὸν νότον· τῇ δὲ τοιαύτῃ διαστάσει περικλείει τὸν Ἰσσικὸν κόλπον ἅπαντα καὶ τὰ μεταξὺ τῶν Κιλίκων πεδία πρὸς τὸν Ταῦρον· ὁ δ' Ἀντίταυρος ἐπὶ τὰς ἄρκτους ἐγκέκλιται καὶ μικρὸν ἐπιλαμβάνει τῶν ἀνατολῶν, εἶτ' εἰς τὴν μεσόγαιαν τελευτᾷ.

3 *Ἐν δὲ τῷ Ἀντιταύρῳ τούτῳ βαθεῖς καὶ στενοί εἰσιν αὐλῶνες, ἐν οἷς ἵδρυται τὰ Κόμανα καὶ τὸ τῆς Ἐνυοῦς ἱερὸν ἣν ἐκεῖνοι Μᾶ ὀνομάζουσι· πόλις δ' ἐστὶν ἀξιόλογος, πλεῖστον μέντοι τὸ τῶν θεοφορήτων πλῆθος καὶ τὸ τῶν ἱεροδούλων ἐν αὐτῇ. Κατάονες δέ εἰσιν οἱ ἐνοικοῦντες, ἄλλως μὲν ὑπὸ τῷ βασιλεῖ τεταγμένοι, τοῦ δὲ ἱερέως ὑπακούοντες τὸ πλέον· ὁ δὲ τοῦ θ' ἱεροῦ κύριός ἐστι καὶ τῶν ἱεροδούλων, οἳ κατὰ τὴν ἡμετέραν ἐπιδημίαν πλείους ἦσαν τῶν ἑξακισχιλίων, ἄνδρες ὁμοῦ γυναιξί. πρόσκειται δὲ τῷ ἱερῷ καὶ χώρα πολλή, καρποῦται δ' ὁ ἱερεὺς τὴν πρόσοδον, καὶ ἔστιν οὗτος δεύτερος κατὰ τιμὴν [ἐν] τῇ Καππαδοκίᾳ μετὰ τὸν βασιλέα· ὡς δ' ἐπὶ τὸ πολὺ τοῦ αὐτοῦ γένους ἦσαν οἱ ἱερεῖς τοῖς βασιλεῦσι. τὰ δὲ ἱερὰ ταῦτα δοκεῖ Ὀρέστης μετὰ τῆς ἀδελφῆς Ἰφιγενείας κομίσαι δεῦρο ἀπὸ τῆς Ταυρικῆς Σκυθίας, τὰ τῆς Ταυροπόλου Ἀρτέμιδος, ἐνταῦθα δὲ καὶ τὴν πένθιμον κόμην ἀποθέσθαι, ἀφ' ἧς καὶ τοὔνομα τῇ πόλει. διὰ μὲν οὖν*
C.536 *τῆς πόλεως ταύτης ὁ Σάρος ῥεῖ ποταμός, καὶ διὰ τῶν συναγκειῶν τοῦ Ταύρου διεκπεραιοῦται πρὸς τὰ τῶν*
4 *Κιλίκων πεδία καὶ τὸ ὑποκείμενον πέλαγος. διὰ δὲ τῆς Καταονίας ὁ Πύραμος, πλωτός, ἐκ μέσου τοῦ πεδίου τὰς πηγὰς ἔχων· ἔστι δὲ βόθρος ἀξιόλογος, δι' οὗ καθορᾶν ἔστι τὸ ὕδωρ ὑποφερόμενον κρυπτῶς μέχρι πολλοῦ διαστήματος ὑπὸ γῆς, εἶτ' ἀνατέλλον εἰς τὴν ἐπιφάνειαν· τῷ δὲ καθιέντι ἀκόντιον ἄνωθεν εἰς*

τὸν βόθρον ἡ βία τοῦ ὕδατος ἀντιπράττει τοσοῦτον ὥστε μόλις βαπτίζεσθαι· ἀπλέτῳ δὲ βάθει καὶ πλάτει πολὺς ἐνεχθεὶς ἐπειδὰν συνάψῃ τῷ Ταύρῳ, παράδοξον λαμβάνει τὴν συναγωγήν· παράδοξος δὲ καὶ ἡ διακοπὴ τοῦ ὄρους ἐστὶ δι' ἧς ἄγεται τὸ ῥεῖθρον· καθάπερ γὰρ ἐν ταῖς ῥῆγμα λαβούσαις πέτραις καὶ σχισθείσαις δίχα τὰς κατὰ τὴν ἑτέραν ἐξοχὰς ὁμολόγους εἶναι συμβαίνει ταῖς κατὰ τὴν ἑτέραν εἰσοχαῖς ὥστε κἂν συναρμοσθῆναι δύνασθαι, οὕτως εἴδομεν καὶ τὰς ὑπερκειμένας τοῦ ποταμοῦ πέτρας ἑκατέρωθεν σχεδόν τι μέχρι τῶν ἀκρωρειῶν ἀνατεινούσας ἐν διαστάσει δυεῖν ἢ τριῶν πλέθρων ἀντικείμενα ἐχούσας τὰ κοῖλα ταῖς ἐξοχαῖς· τὸ δὲ ἔδαφος τὸ μεταξὺ πᾶν πέτρινον, βαθύ τι καὶ στενὸν τελέως, ἔχον διὰ μέσου ῥῆγμα ὥστε καὶ κύνα καὶ λαγὼ διάλλεσθαι. τοῦτο δ' ἐστὶ τὸ ῥεῖθρον τοῦ ποταμοῦ ἄχρι χείλους πλῆρες, ὀχετῷ πλατεῖ προσεοικός, διὰ δὲ τὴν σκολιότητα καὶ τὴν ἐκ τοσούτου συναγωγὴν καὶ τὸ τῆς φάραγγος βάθος εὐθὺς τοῖς πόρρωθεν προσιοῦσιν ὁ ψόφος βροντῇ προσπίπτει παραπλήσιος· διεκβαίνων δὲ τὰ ὄρη τοσαύτην κατάγει χοῦν ἐπὶ θάλατταν, τὴν μὲν ἐκ τῆς Καταονίας τὴν δὲ ἐκ τῶν Κιλίκων πεδίων, ὥστε ἐπ' αὐτῷ καὶ χρησμὸς ἐκπεπτωκὼς φέρεται τοιοῦτος „ἔσσεται ἐσσομένοις, ὅτε Πύραμος ἀργυροδίνης ἠιόνα προχέων ἱερὴν ἐς Κύπρον ἵκηται.“ παραπλήσιον γάρ τι κἀκεῖ συμβαίνει καὶ ἐν Αἰγύπτῳ, τοῦ Νείλου προσεξηπειροῦντος ἀεὶ τὴν θάλατταν τῇ προσχώσει· καθὸ καὶ Ἡρόδοτος μὲν δῶρον τοῦ ποταμοῦ τὴν Αἴγυπτον εἶπεν, ὁ ποιητὴς δὲ τὴν Φάρον πελαγίαν ὑπάρξαι πρότερον οὐχ ὡς νυνὶ πρόσγειον οὖσαν τῇ Αἰγύπτῳ.

---

18. post τὸ: διὰ

C.537
5 Πόλιν δ' οὔτε τὸ τῶν Καταόνων ἔχει πεδίον οὔθ' ἡ Μελιτηνή, φρούρια δ' ἐρυμνὰ ἐπὶ τῶν ὀρῶν τά τε Ἀζάμορα καὶ τὸ Δάσταρκον, ὃ περιρρεῖται τῷ Καρμάλᾳ ποταμῷ. ἔχει δὲ καὶ ἱερὸν τὸ τοῦ Καταόνος Ἀπόλλωνος καθ' ὅλην τιμώμενον τὴν Καππαδοκίαν, ποιησαμένων ἀφιδρύματα ἀπ' αὐτοῦ. οὐδὲ αἱ ἄλλαι στρατηγίαι πόλεις ἔχουσι πλὴν δυεῖν· τῶν δὲ λοιπῶν στρατηγιῶν ἐν μὲν τῇ Σαργαραυσηνῇ πολίχνιόν ἐστιν Ἥρπα καὶ ποταμὸς Καρμάλας, ὃς καὶ αὐτὸς εἰς τὴν Κιλικίαν ἐκδίδωσιν· ἐν δὲ ταῖς ἄλλαις ὅ τε Ἄργος ἔρυμα ὑψηλὸν πρὸς τῷ Ταύρῳ, καὶ τὰ Νῶρα ὃ νῦν καλεῖται Νηροασσός, ἐν ᾧ Εὐμένης πολιορκούμενος ἀντέσχε πολὺν χρόνον· καθ' ἡμᾶς δὲ Σισίνου ὑπῆρξε χρηματοφυλάκιον τοῦ ἐπιθεμένου τῇ Καππαδόκων ἀρχῇ. τούτου δ' ἦν καὶ τὰ Κάδηνα, βασίλειον καὶ πόλεως κατασκευὴν ἔχον· ἔστι δὲ καὶ ἐπὶ τῶν ὅρων τῶν Λυκαονικῶν τὰ Γαρσαύιρα κωμόπολις· λέγεται δ' ὑπάρξαι ποτὲ καὶ αὕτη μητρόπολις τῆς χώρας. ἐν δὲ τῇ Μοριμηνῇ τὸ ἱερὸν τοῦ ἐν Οὐηνάσοις Διός, ἱεροδούλων κατοικίαν ἔχον τρισχιλίων σχεδόν τι καὶ χώραν ἱερὰν εὔκαρπον, παρέχουσαν πρόσοδον ἐνιαύσιον ταλάντων πεντεκαίδεκα τῷ ἱερεῖ· καὶ οὗτος δ' ἐστὶ διὰ βίου, καθάπερ καὶ ὁ ἐν Κομάνοις, καὶ δευτερεύει κατὰ τιμὴν μετ' ἐκεῖνον.
6 τρίτη δ' ἐστὶν ἱερωσύνη Διὸς Ἀσβαμαίου λειπομένη ταύτης, ἀξιόλογος δ' ὅμως. ἐνταῦθα δ' ἐστὶ λάκκος ἁλμυροῦ ὕδατος, ἀξιολόγου λίμνης ἔχων περίμετρον, ὀφρύσι κλειόμενος ὑψηλαῖς τε καὶ ὀρθίαις ὥστ' ἔχειν κατάβασιν κλιμακώδη· τὸ δ' ὕδωρ οὔτ' αὔξεσθαί φασιν οὔτ' ἀπόρρυσιν ἔχειν οὐδαμοῦ φανεράν.

7 Δύο δὲ μόναι στρατηγίαι πόλεις ἔχουσιν, ἡ μὲν Τυανῖτις τὰ Τύανα ὑποπεπτωκυῖαν τῷ Ταύρῳ τῷ κα-

τὰ τὰς Κιλικίας πύλας, καθ' ἃς εὐπετέσταται καὶ κοινόταται πᾶσίν εἰσιν αἱ εἰς τὴν Κιλικίαν καὶ τὴν Συρίαν ὑπερβολαί· καλεῖται δὲ Εὐσέβεια ἡ πρὸς τῷ Ταύρῳ..... ἀγαθὴ δὲ καὶ πεδιὰς ἡ πλείστη. τὰ δὲ Τύανα ἐπίκειται χώματι Σεμιράμιδος τετειχισμένῳ καλῶς. οὐ πολὺ δ' ἄπωθεν ταύτης ἐστὶ τά τε Καστάβαλα καὶ τὰ Κύβιστρα, ἔτι μᾶλλον τῷ ὄρει πλησιάζοντα πολίσματα· ὧν ἐν τοῖς Κασταβάλοις ἐστὶ τὸ τῆς Περασίας Ἀρτέμιδος ἱερόν, ὅπου φασὶ τὰς ἱερείας γυμνοῖς τοῖς ποσὶ δι' ἀνθρακιᾶς βαδίζειν ἀπαθεῖς· κἀνταῦθα δέ τινες τὴν αὐτὴν θρυλοῦσιν ἱστορίαν τὴν περὶ τοῦ Ὀρέστου καὶ τῆς Ταυροπόλου, Περασίαν κεκλῆσθαι φάσκοντες διὰ τὸ πέραθεν κομισθῆναι. ἐν μὲν δὴ τῇ Τυανίτιδι στρατηγίᾳ τῶν λεχθεισῶν δέκα ἔστι πόλισμα τὰ Τύανα (τὰς δ' ἐπικτήτους οὐ συναριθμῶ ταύταις, τὰ Καστάβαλα καὶ τὰ Κύβιστρα καὶ τὰ ἐν τῇ τραχείᾳ Κιλικίᾳ, ἐν ᾗ τὴν Ἐλαιοῦσσαν νησίον εὔκαρπον συνέκτισεν Ἀρχέλαος ἀξιολόγως, καὶ τὸ πλέον ἐνταῦθα διέτριβεν), ἐν δὲ τῇ Κιλικίᾳ καλουμένῃ τὰ Μάζακα ἡ μητρόπολις τοῦ ἔθνους· καλεῖται C.538 δ' Εὐσέβεια καὶ αὕτη ἐπίκλησιν ἡ πρὸς τῷ Ἀργαίῳ· κεῖται γὰρ ὑπὸ τῷ Ἀργαίῳ ὄρει πάντων ὑψηλοτάτῳ καὶ ἀνέκλειπτον χιόνι τὴν ἀκρώρειαν ἔχοντι, ἀφ' ἧς φασιν οἱ ἀναβαίνοντες (οὗτοι δ' εἰσὶν ὀλίγοι) κατοπτεύεσθαι ταῖς αἰθρίαις ἄμφω τὰ πελάγη τό τε Ποντικὸν καὶ τὸ Ἰσσικόν. τὰ μὲν οὖν ἄλλα ἀφυῆ πρὸς συνοικισμὸν ἔχει πόλεως· ἄνυδρός τε γάρ ἐστι καὶ ἀνώχυρος διὰ τὴν ὀλιγωρίαν τῶν ἡγεμόνων καὶ ἀτείχιστος, τάχα δὲ καὶ ἐπίτηδες, ἵνα μὴ ὡς ἐρύματι πεποιθότες τῷ τείχει σφόδρα λῃστεύοιεν πεδίον οἰκοῦντες λόφους ὑπερδεξίους ἔχον* καὶ ἐμβελεῖς. καὶ τὰ κύκλῳ δὲ χωρία ἔχει τελέως ἄφορα καὶ ἀγεώργητα καίπερ ὄντα πε-

δινά, ἀλλ' ἔστιν ἀμμώδη καὶ ὑπόπετρα. μικρὸν δ' ἔτι προϊοῦσι καὶ πυρίληπτα πεδία καὶ μεστὰ βόθρων πυρὸς ἐπὶ σταδίους πολλοὺς ὥστε πόρρωθεν ἡ κομιδὴ τῶν ἐπιτηδείων, καὶ τὸ δοκοῦν δὲ πλεονέκτημα παρακείμενον ἔχει κίνδυνον· ἀξύλου γὰρ ὑπαρχούσης σχεδόν τι τῆς συμπάσης Καππαδοκίας ὁ Ἀργαῖος ἔχει περικείμενον δρυμὸν ὥστε ἐγγύθεν ὁ ξυλισμὸς πάρεστιν, ἀλλ' οἱ ὑποκείμενοι τῷ δρυμῷ τόποι καὶ αὐτοὶ πολλαχοῦ πυρὰ ἔχουσιν, ἅμα δὲ καὶ ὕφυδροί εἰσι ψυχρῷ ὕδατι, οὔτε τοῦ πυρὸς οὔτε τοῦ ὕδατος εἰς τὴν ἐπιφάνειαν ἐκκύπτοντος, ὥστε καὶ ποάζειν τὴν πλείστην· ἔστι δ' ὅπου καὶ ἑλῶδές ἐστι τὸ ἔδαφος καὶ νύκτωρ ἐξάπτονται φλόγες ἀπ' αὐτοῦ. οἱ μὲν οὖν ἔμπειροι φυλαττόμενοι τὸν ξυλισμὸν ποιοῦνται, τοῖς δὲ πολλοῖς κίνδυνός ἐστι, καὶ μάλιστα τοῖς κτήνεσιν ἐμπίπτουσιν εἰς ἀδήλους βόθρους πυρός.

8 Ἔστι δὲ καὶ ποταμὸς ἐν τῷ πεδίῳ τῷ πρὸ τῆς πόλεως Μέλας καλούμενος, ὅσον τετταράκοντα σταδίους διέχων τῆς πόλεως, ἐν ταπεινοτέρῳ τῆς πόλεως χωρίῳ τὰς πηγὰς ἔχων. ταύτῃ μὲν οὖν ἄχρηστος αὐτοῖς ἐστιν οὐχ ὑπερδέξιον ἔχων τὸ ῥεῦμα, εἰς ἕλη δὲ καὶ λίμνας διαχεόμενος κακοῖ τὸν ἀέρα τοῦ θέρους τὸν περὶ τὴν πόλιν, καὶ τὸ λατομεῖον δὲ ποιεῖ δύσχρηστον καίπερ εὔχρηστον ὄν· πλαταμῶνες γάρ εἰσίν, ἀφ' ὧν τὴν λιθείαν ἔχειν ἄφθονον συμβαίνει τοῖς Μαζακηνοῖς πρὸς τὰς οἰκοδομίας, καλυπτόμεναι δ' ὑπὸ τῶν ὑδάτων αἱ πλάκες ἀντιπράττουσι. καὶ ταῦτα δ' ἐστὶ τὰ ἕλη πανταχοῦ πυρίληπτα. Ἀριαράθης δ' ὁ βασιλεὺς τοῦ Μέλανος κατά τινα στενὰ ἔχοντος τὴν εἰς τὸν Ἅλυν διέξοδον ἐμφράξας ταῦτα λίμνην πελαγίαν ἀπέδειξε τὸ πλησίον πεδίον, ἐνταῦθα δὲ νησῖδάς τινας ὡς τὰς Κυκλάδας ἀπολαβόμενος διατριβὰς ἐν αὐταῖς

ἐποιεῖτο μειρακιώδεις· ἐκραγὲν δ' ἀθρόως τὸ ἔμφραγ- C.539
μα ἐξέκλυσε πάλιν τὸ ὕδωρ, πληρωθεὶς δ' ὁ Ἅλυς
τῆς τε τῶν Καππαδόκων πολλὴν παρέσυρε καὶ κατοι-
κίας καὶ φυτείας ἠφάνισε πολλὰς τῆς τε τῶν Γαλα-
τῶν τῶν τὴν Φρυγίαν ἐχόντων οὐκ ὀλίγην ἐλυμήνατο·
ἀντὶ δὲ τῆς βλάβης ἐπράξαντο ζημίαν αὐτὸν τάλαντα
τριακόσια Ῥωμαίοις ἐπιτρέψαντες τὴν κρίσιν. τὸ δ'
αὐτὸ συνέβη καὶ περὶ Ἧρπα· καὶ γὰρ ἐκεῖ τὸ τοῦ Καρ-
μάλα ῥεῦμα ἐνέφραξεν, εἶτ' ἐκραγέντος τοῦ στομίου
καὶ τῶν Κιλίκων τινὰ χωρία τὰ περὶ Μαλλὸν διαφθεί-
ραντος τοῦ ὕδατος, δίκας ἔτισεν τοῖς ἀδικηθεῖσιν.

Ἀφεὶς δ' οὖν κατὰ πολλὰ τὸ τῶν Μαζακηνῶν χω- 9
ρίον ὂν πρὸς κατοικίαν μάλιστα οἱ βασιλεῖς ἑλέσθαι
δοκοῦσιν, ὅτι τῆς χώρας ἁπάσης τόπος ἦν μεσαίτατος
οὗτος τῶν ξύλα ἐχόντων ἅμα καὶ λίθον πρὸς τὰς οἰκο-
δομίας καὶ χόρτον, οὗ πλεῖστον ἐδέοντο κτηνοτρο-
φοῦντες· τρόπον γάρ τινα στρατόπεδον ἦν αὐτοῖς ἡ
πόλις. τὴν δ' ἄλλην ἀσφάλειαν τὴν αὐτῶν τε καὶ σω-
μάτων καὶ τῶν χρημάτων εἶχον ἐν τοῖς φρουρίοις, ἃ
πολλὰ ὑπάρχει τὰ μὲν βασιλικὰ τὰ δὲ τῶν φίλων. ἀφέ-
στηκε δὲ τὰ Μάζακα τοῦ μὲν Πόντου περὶ ὀκτακοσίους
σταδίους πρὸς νότον, τοῦ δ' Εὐφράτου μικρὸν ἐλάτ-
τους ἢ διπλασίους, τῶν Κιλικίων δὲ πυλῶν ὁδὸν ἡμε-
ρῶν ἓξ καὶ τοῦ Κύρου στρατοπέδου διὰ Τυάνων· κατὰ
μέσην δὲ τὴν ὁδὸν κεῖται τὰ Τύανα, διέχει δὲ Κυβίσ-
τρων τριακοσίους σταδίους. χρῶνται δὲ οἱ Μαζακη-
νοὶ τοῖς Χαρώνδα νόμοις, αἱρούμενοι καὶ νομῳδόν,
ὅς ἐστιν αὐτοῖς ἐξηγητὴς τῶν νόμων, καθάπερ οἱ πα-
ρὰ Ῥωμαίοις νομικοί. διέθηκε δὲ φαύλως αὐτοὺς Τι-
γράνης ὁ Ἀρμένιος, ἡνίκα τὴν Καππαδοκίαν κατέδρα-
μεν· ἅπαντας γὰρ ἀναστάτους ἐποίησεν εἰς τὴν Μεσο-
ποταμίαν, καὶ τὰ Τιγρανόκερτα ἐκ τούτων συνῴκισε

τὸ πλέον· ὕστερον δ' ἐπανῆλθον οἱ δυνάμενοι μετὰ τὴν τῶν Τιγρανοκέρτων ἅλωσιν.

10 Μέγεθος δὲ τῆς χώρας κατὰ πλάτος μὲν τὸ ἀπὸ τοῦ Πόντου πρὸς τὸν Ταῦρον ὅσον χίλιοι καὶ ὀκτακόσιοι στάδιοι, μῆκος δὲ ἀπὸ τῆς Λυκαονίας καὶ Φρυγίας μέχρι Εὐφράτου πρὸς τὴν ἕω καὶ τὴν Ἀρμενίαν περὶ τρισχιλίους. ἀγαθὴ δὲ καρποῖς, μάλιστα δὲ σίτῳ καὶ βοσκήμασι παντοδαποῖς· νοτιωτέρα δ' οὖσα τοῦ Πόντου ψυχροτέρα ἐστίν· ἡ δὲ Βαγαδανία καίπερ πεδιὰς οὖσα καὶ νοτιωτάτη πασῶν (ὑποπέπτωκε γὰρ τῷ Ταύρῳ) μόλις τῶν καρπίμων τι φέρει δένδρων, ὀναγροβότος δ' ἐστὶ καὶ αὕτη καὶ ἡ πολλὴ τῆς ἄλλης, C.540 καὶ μάλιστα ἡ περὶ Γαρσαύιρα καὶ Λυκαονίαν καὶ Μοριμηνήν. ἐν δὲ τῇ Καππαδοκίᾳ γίνεται καὶ ἡ λεγομένη Σινωπικὴ μίλτος ἀρίστη τῶν πασῶν· ἐνάμιλλος δ' ἐστὶν αὐτῇ καὶ ἡ Ἰβηρική· ὠνομάσθη δὲ Σινωπικὴ διότι κατάγειν ἐκεῖσε εἰώθεσαν οἱ ἔμποροι πρὶν ἢ τὸ τῶν Ἐφεσίων ἐμπόριον μέχρι τῶν ἐνθάδε ἀνθρώπων διῖχθαι. λέγεται δὲ καὶ κρυστάλλου πλάκας καὶ ὀνυχίτου λίθου πλησίον τῆς τῶν Γαλατῶν ὑπὸ τῶν Ἀρχελάου μεταλλευτῶν εὑρῆσθαι. ἦν δέ τις τόπος καὶ λίθου λευκοῦ τῷ ἐλέφαντι κατὰ τὴν χρόαν ἐμφεροῦς ὥσπερ ἀκόνας τινὰς οὐ μεγάλας ἐκφέρων, ἐξ ὧν τὰ λαβία τοῖς μαχαιρίοις κατεσκεύαζον· ἄλλος δὲ εἰς διόπτρας βώλους μεγάλας ἐκδιδούς, ὥστε καὶ ἔξω κομίζεσθαι. ὅριον δ' ἐστὶ τοῦ Πόντου καὶ τῆς Καππαδοκίας ὀρεινή τις παράλληλος τῷ Ταύρῳ, τὴν ἀρχὴν ἔχουσα ἀπὸ τῶν ἑσπερίων ἄκρων τῆς Χαμμανηνῆς, ἐφ' ἧς ἵδρυται φρούριον ἀπότομον Δασμένδα, μέχρι τῶν ἑωθινῶν τῆς Λαβιανσηνῆς. στρατηγίαι δ' εἰσὶ τῆς Καππαδοκίας ἥ τε Χαμμανηνὴ καὶ ἡ Λαβιανσηνή.

11 Συνέβη δέ, ἡνίκα πρῶτον Ῥωμαῖοι τὰ κατὰ τὴν

Ἀσίαν διῴκουν νικήσαντες Ἀντίοχον, καὶ φιλίας καὶ συμμαχίας ἐποιοῦντο πρός τε τὰ ἔθνη καὶ τοὺς βασιλέας, τοῖς μὲν ἄλλοις βασιλεῦσιν αὐτοῖς καθ' ἑαυτοὺς δοθῆναι τὴν τιμὴν ταύτην, τῷ δὲ Καππάδοκι καὶ αὐτῷ δὲ τῷ ἔθνει κοινῇ. ἐκλιπόντος δὲ τοῦ βασιλικοῦ γένους οἱ μὲν Ῥωμαῖοι συνεχώρουν αὐτοῖς αὐτονομεῖσθαι κατὰ τὴν συγκειμένην φιλίαν τε καὶ συμμαχίαν πρὸς τὸ ἔθνος, οἱ δὲ πρεσβευσάμενοι τὴν μὲν ἐλευθερίαν παρῃτοῦντο (οὐ γὰρ δύνασθαι φέρειν αὐτὴν ἔφασαν), βασιλέα δ' ἠξίουν αὐτοῖς ἀποδειχθῆναι. οἱ δὲ θαυμάσαντες εἴ τινες οὕτως εἶεν ἀπειρηκότες πρὸς τὴν ἐλευθερίαν .... ἐπέτρεψαν δ' οὖν αὐτοῖς ἐξ ἑαυτῶν ἑλέσθαι κατὰ χειροτονίαν ὃν ἂν βούλωνται· καὶ εἵλοντο Ἀριοβαρζάνην· εἰς τριγονίαν δὲ προελθόντος τοῦ γένους ἐξέλιπε, κατεστάθη δ' ὁ Ἀρχέλαος οὐδὲν προσήκων αὐτοῖς Ἀντωνίου καταστήσαντος. ταῦτα καὶ περὶ τῆς μεγάλης Καππαδοκίας· περὶ δὲ τῆς τραχείας Κιλικίας τῆς προστεθείσης αὐτῇ βέλτιόν ἐστιν ἐν τῷ περὶ τῆς ὅλης Κιλικίας λόγῳ διελθεῖν.

3 Τοῦ δὲ Πόντου καθίστατο μὲν Μιθριδάτης ὁ Εὐπάτωρ βασιλεύς. εἶχε δὲ τὴν ἀφοριζομένην τῷ Ἅλυϊ μέχρι Τιβαρανῶν καὶ Ἀρμενίων καὶ τῆς ἐντὸς Ἅλυος τὰ μέχρι Ἀμάστρεως καὶ τινῶν τῆς Παφλαγονίας μερῶν. C.541 προσεκτήσατο δ' οὗτος καὶ τὴν μέχρι Ἡρακλείας παραλίαν ἐπὶ τὰ δυσμικὰ μέρη, τῆς Ἡρακλείδου τοῦ Πλατωνικοῦ πατρίδος, ἐπὶ δὲ τἀναντία μέχρι Κολχίδος καὶ τῆς μικρᾶς Ἀρμενίας, ἃ δὴ καὶ προσέθηκε τῷ Πόντῳ. καὶ δὴ καὶ Πομπήιος καταλύσας ἐκεῖνον ἐν τούτοις τοῖς ὅροις οὖσαν τὴν χώραν ταύτην παρέλαβε· τὰ μὲν πρὸς Ἀρμενίαν καὶ τὰ περὶ τὴν Κολχίδα τοῖς συναγωνισαμένοις δυνάσταις κατένειμε, τὰ δὲ λοιπὰ εἰς ἕνδεκα πολιτείας διεῖλε καὶ τῇ Βιθυνίᾳ προσ-

ἔθηκεν ὥστ' ἐξ ἀμφοῖν ἐπαρχίαν γενέσθαι μίαν· μεταξὺ δὲ τῶν Παφλαγόνων τῶν μεσογαίων τινὰς βασιλεύεσθαι παρέδωκε τοῖς ἀπὸ Πυλαιμένους, καθάπερ καὶ τοὺς Γαλάτας τοῖς ἀπὸ γένους τετράρχαις. ὕστερον δ' οἱ τῶν Ῥωμαίων ἡγεμόνες ἄλλους καὶ ἄλλους ἐποιήσαντο μερισμούς, βασιλέας τε καὶ δυνάστας καθιστάντες καὶ πόλεις τὰς μὲν ἐλευθεροῦντες τὰς δὲ ἐγχειρίζοντες τοῖς δυνάσταις τὰς δ' ὑπὸ τῷ δήμῳ τῷ Ῥωμαίων ἐῶντες. ἡμῖν δ' ἐπιοῦσι τὰ καθ' ἕκαστα ὡς νῦν ἔχει λεγέσθω, μικρὰ καὶ τῶν προτέρων ἐφαπτομένοις ὅπου τοῦτο χρήσιμον. ἀρξόμεθα δὲ ἀπὸ Ἡρακλείας, ἥπερ δυσμικωτάτη ἐστὶ τούτων τῶν τόπων.

2 *Εἰς δὴ τὸν Εὔξεινον πόντον εἰσπλέουσιν ἐκ τῆς Προποντίδος ἐν ἀριστερᾷ μὲν τὰ προσεχῆ τῷ Βυζαντίῳ κεῖται· Θρᾳκῶν δ' ἐστί, καλεῖται δὲ τὰ ἀριστερὰ τοῦ Πόντου· ἐν δεξιᾷ δὲ τὰ προσεχῆ Χαλκηδόνι· Βιθυνῶν δ' ἐστὶ τὰ πρῶτα, εἶτα Μαριανδυνῶν (τινὲς δὲ καὶ Καυκώνων φασίν), εἶτα Παφλαγόνων μέχρι Ἅλυος, εἶτα Καππαδόκων τῶν πρὸς τῷ Πόντῳ καὶ τῶν ἑξῆς μέχρι Κολχίδος· ταῦτα δὲ πάντα καλεῖται τὰ δεξιὰ τοῦ Εὐξείνου πόντου. ταύτης δὲ τῆς παραλίας ἁπάσης ἐπῆρξεν Εὐπάτωρ ἀρξάμενος ἀπὸ τῆς Κολχίδος μέχρι Ἡρακλείας, τὰ δ' ἐπέκεινα τὰ μέχρι τοῦ στόματος καὶ τῆς Χαλκηδόνος τῷ Βιθυνῶν βασιλεῖ συνέμενε. καταλυθέντων δὲ τῶν βασιλέων ἐφύλαξαν οἱ Ῥωμαῖοι τοὺς αὐτοὺς ὅρους, ὥστε τὴν Ἡράκλειαν προσκεῖσθαι τῷ Πόντῳ, τὰ δ' ἐπέκεινα Βιθυνοῖς προσχωρεῖν.*

3 *Οἱ μὲν οὖν Βιθυνοὶ διότι πρότερον Μυσοὶ ὄντες μετωνομάσθησαν οὕτως ἀπὸ τῶν Θρᾳκῶν τῶν ἐποικησάντων, Βιθυνῶν τε καὶ Θυνῶν, ὁμολογεῖται παρὰ τῶν πλείστων, καὶ σημεῖα τίθενται τοῦ μὲν τῶν Βιθυνῶν ἔθνους τὸ μέχρι νῦν ἐν τῇ Θρᾴκῃ λέγεσθαί τι-*

νας Βιθυνούς, τοῦ δὲ τῶν Θυνῶν τὴν Θυνιάδα ἀκτὴν τὴν πρὸς Ἀπολλωνίᾳ καὶ Σαλμυδησσῷ. καὶ οἱ Βέβρυκες δὲ οἱ τούτων προεποικήσαντες τὴν Μυσίαν Θρᾷκες, ὡς εἰκάζω ἐγώ. εἴρηται δ' ὅτι καὶ αὐτοὶ οἱ Μυσοὶ C.542 Θρᾳκῶν ἄποικοί εἰσι τῶν νῦν λεγομένων Μοισῶν.

4 Ταῦτα μὲν οὕτω λέγεται. τοὺς δὲ Μαριανδυνοὺς καὶ τοὺς Καύκωνας οὐχ ὁμοίως ἅπαντες λέγουσι· τὴν γὰρ δὴ Ἡράκλειαν ἐν τοῖς Μαριανδυνοῖς ἱδρῦσθαί φασι Μιλησίων κτίσμα· τίνες δὲ καὶ πόθεν οὐδενὶ εἴρηται· οὐδὲ διάλεκτος οὐδ' ἄλλη διαφορὰ ἐθνικὴ περὶ τοὺς ἀνθρώπους φαίνεται, παραπλήσιοι δ' εἰσὶ τοῖς Βιθυνοῖς· ἔοικεν οὖν καὶ τοῦτο Θρᾴκιον ὑπάρξαι τὸ φῦλον. Θεόπομπος δὲ Μαριανδυνόν φησι μέρους τῆς Παφλαγονίας ἄρξαντα ὑπὸ πολλῶν δυναστευομένης, ἐπελθόντα τὴν τῶν Βεβρύκων κατασχεῖν, ἣν δ' ἐξέλιπεν ἐπώνυμον ἑαυτοῦ καταλιπεῖν. εἴρηται δὲ καὶ τοῦτο ὅτι πρῶτοι τὴν Ἡράκλειαν κτίσαντες Μιλήσιοι τοὺς Μαριανδυνοὺς εἱλωτεύειν ἠνάγκασαν τοὺς προκατέχοντας τὸν τόπον, ὥστε καὶ πιπράσκεσθαι ὑπ' αὐτῶν, μὴ εἰς τὴν ὑπερορίαν δέ (συμβῆναι γὰρ ἐπὶ τούτοις), καθάπερ Κρησὶ μὲν ἐθήτευεν ἡ Μνῴα καλουμένη σύνοδος, Θετταλοῖς δὲ οἱ Πενέσται.

5 Τοὺς δὲ Καύκωνας, οὓς ἱστοροῦσι τὴν ἐφεξῆς οἰκῆσαι παραλίαν τοῖς Μαριανδυνοῖς μέχρι τοῦ Παρθενίου ποταμοῦ πόλιν ἔχοντας τὸ Τίειον, οἱ μὲν Σκύθας φασὶν οἱ δὲ τῶν Μακεδόνων τινὰς οἱ δὲ τῶν Πελασγῶν· εἴρηται δέ που καὶ περὶ τούτων πρότερον. Καλλισθένης δὲ καὶ ἔγραφε τὰ ἔπη ταῦτα εἰς τὸν διάκοσμον, μετὰ τὸ „Κρῶμνάν τ' Αἰγιαλόν τε καὶ ὑψηλοὺς Ἐρυ„θίνους“ τιθεὶς „Καύκωνας δ' αὖτ' ἦγε Πολυκλέος „υἱὸς ἀμύμων, οἳ περὶ Παρθένιον ποταμὸν κλυτὰ δώ„ματ' ἔναιον.“ παρήκειν γὰρ ἀφ' Ἡρακλείας καὶ Μα-

ριανδυνῶν μέχρι Λευκοσύρων, οὓς ἡμεῖς Καππάδοκας προσαγορεύομεν, τό τε τῶν Καυκώνων γένος τὸ περὶ τὸ Τίειον μέχρι Παρθενίου καὶ τὸ τῶν Ἐνετῶν τὸ συνεχὲς μετὰ τὸν Παρθένιον τῶν ἐχόντων τὸ Κύτωρον· καὶ νῦν δ' ἔτι Καυκωνίτας εἶναί τινας περὶ τὸν Παρθένιον.

6 *Ἡ μὲν οὖν Ἡράκλεια πόλις ἐστὶν εὐλίμενος καὶ ἄλλως ἀξιόλογος, ἥ γε καὶ ἀποικίας ἔστελλεν· ἐκείνης γὰρ ἥ τε Χερρόνησος ἄποικος καὶ ἡ Κάλλατις· ἦν τε αὐτόνομος, εἶτ' ἐτυραννήθη χρόνους τινάς, εἶτ' ἠλευθέρωσεν ἑαυτὴν πάλιν· ὕστερον δ' ἐβασιλεύθη γενομένη ὑπὸ τοῖς Ῥωμαίοις· ἐδέξατο δ' ἀποικίαν Ῥωμαίων ἐπὶ μέρει τῆς πόλεως καὶ τῆς χώρας. λαβὼν δὲ παρ' Ἀν-*
C.543 *τωνίου τὸ μέρος τοῦτο τῆς πόλεως Ἀδιατόριξ ὁ Δομνεκλείου τετράρχου Γαλατῶν υἱός, ὃ κατεῖχον οἱ Ἡρακλειῶται, μικρὸν πρὸ τῶν Ἀκτιακῶν ἐπέθετο νύκτωρ τοῖς Ῥωμαίοις καὶ ἀπέσφαξεν αὐτούς, ἐπιτρέψαντος, ὡς ἔφασκεν ἐκεῖνος, Ἀντωνίου· θριαμβευθεὶς δὲ μετὰ τὴν ἐν Ἀκτίῳ νίκην ἐσφάγη μεθ' υἱοῦ· ἡ δὲ πόλις ἐστὶ τῆς Ποντικῆς ἐπαρχίας τῆς συντεταγμένης τῇ Βιθυνίᾳ.*

7 *Μεταξὺ δὲ Χαλκηδόνος καὶ Ἡρακλείας ῥέουσι ποταμοὶ πλείους, ὧν εἰσιν ὅ τε Ψίλλις καὶ ὁ Κάλπας καὶ ὁ Σαγγάριος οὗ μέμνηται καὶ ὁ ποιητής. ἔχει δὲ τὰς πηγὰς κατὰ Σαγγίαν κώμην ἀφ' ἑκατὸν καὶ πεντήκοντά που σταδίων οὗτος Πεσσινοῦντος· διέξεισι δὲ τῆς ἐπικτήτου Φρυγίας τὴν πλείω, μέρος δέ τι καὶ τῆς Βιθυνίας ὥστε καὶ τῆς Νικομηδείας ἀπέχειν μικρὸν πλείους ἢ τριακοσίους σταδίους, καθ' ὃ συμβάλλει ποταμὸς αὐτῷ Γάλλος ἐκ Μόδρων τὰς ἀρχὰς ἔχων τῆς ἐφ' Ἑλλησπόντῳ Φρυγίας. αὕτη δ' ἐστὶν ἡ αὐτὴ τῇ ἐπικτήτῳ, καὶ εἶχον αὐτὴν οἱ Βιθυνοὶ πρότερον. αὐξηθεὶς*

δὲ καὶ γενόμενος πλωτός, καίπερ πάλαι ἄπλωτος ὤν, τὴν Βιθυνίαν ὁρίζει πρὸς ταῖς ἐκβολαῖς. πρόκειται δὲ τῆς παραλίας ταύτης καὶ ἡ Θυνία νῆσος. ἐν δὲ τῇ Ἡρακλειώτιδι γίνεται τὸ ἀκόνιτον· διέχει δὲ ἡ πόλις αὕτη τοῦ ἱεροῦ τοῦ Χαλκηδονίου σταδίους χιλίους που καὶ πεντακοσίους, τοῦ δὲ Σαγγαρίου πεντακοσίους.

8 Τὸ δὲ Τίειόν ἐστι πολίχνιον οὐδὲν ἔχον μνήμης ἄξιον πλὴν ὅτι Φιλέταιρος ἐντεῦθεν ἦν, ὁ ἀρχηγέτης τοῦ τῶν Ἀτταλικῶν βασιλέων γένους· εἶθ' ὁ Παρθένιος ποταμὸς διὰ χωρίων ἀνθηρῶν φερόμενος καὶ διὰ τοῦτο τοῦ ὀνόματος τούτου τετυχηκώς, ἐν αὐτῇ τῇ Παφλαγονίᾳ τὰς πηγὰς ἔχων· ἔπειτα ἡ Παφλαγονία καὶ οἱ Ἐνετοί. ζητοῦσι δὲ τίνας λέγει τοὺς Ἐνετοὺς ὁ ποιητὴς ὅταν φῇ „Παφλαγόνων δ' ἡγεῖτο Πυλαιμένεος „λάσιον κῆρ ἐξ Ἐνετῶν, ὅθεν ἡμιόνων γένος ἀγροτε-„ράων.“ οὐ γὰρ δείκνυσθαί φασι νῦν Ἐνετοὺς ἐν τῇ Παφλαγονίᾳ· οἱ δὲ κώμην ἐν τῷ Αἰγιαλῷ φασι δέκα σχοίνους ἀπὸ Ἀμάστρεως διέχουσαν. Ζηνόδοτος δὲ „ἐξ „Ἐνετῆς“ γράφει, καὶ φησὶ δηλοῦσθαι τὴν νῦν Ἀμισόν· ἄλλοι δὲ φῦλόν τι τοῖς Καππάδοξιν ὅμορον στρατεῦσαι μετὰ Κιμμερίων, εἶτ' ἐκπεσεῖν εἰς τὸν Ἀδρίαν. τὸ δὲ μάλισθ' ὁμολογούμενόν ἐστιν ὅτι ἀξιολογώτατον ἦν τῶν Παφλαγόνων φῦλον οἱ Ἐνετοί, ἐξ οὗ ὁ Πυλαιμένης ἦν· καὶ δὴ καὶ συνεστράτευσαν οὗτοι αὐτῷ πλεῖστοι; ἀποβαλόντες δὲ τὸν ἡγεμόνα διέβησαν εἰς τὴν Θρᾴκην μετὰ τὴν Τροίας ἅλωσιν, πλανώμενοι δ' εἰς τὴν νῦν Ἐνετικὴν ἀφίκοντο. τινὲς δὲ καὶ Ἀντήνορα καὶ τοὺς παῖδας αὐτοῦ κοινωνῆσαι τοῦ στόλου τούτου C.544 φασὶ καὶ ἱδρυθῆναι κατὰ τὸν μυχὸν τοῦ Ἀδρίου, καθάπερ ἐμνήσθημεν ἐν τοῖς Ἰταλικοῖς. τοὺς μὲν οὖν

Ἐνετοὺς διὰ τοῦτ᾿ ἐκλιπεῖν εἰκὸς καὶ μὴ δείκνυσθαι ἐν τῇ Παφλαγονίᾳ.

9 Τοὺς δὲ Παφλαγόνας πρὸς ἕω μὲν ὁρίζει ὁ Ἅλυς ποταμός „[ὃς] ῥέων ἀπὸ μεσημβρίης μεταξὺ Σύρων „τε καὶ Παφλαγόνων ἐξίει“ κατὰ τὸν Ἡρόδοτον „ἐς „τὸν Εὔξεινον καλεόμενον πόντον,“ Σύρους λέγοντα τοὺς Καππάδοκας· καὶ γὰρ ἔτι καὶ νῦν Λευκόσυροι καλοῦνται, Σύρων καὶ τῶν ἔξω τοῦ Ταύρου λεγομένων· κατὰ δὲ τὴν πρὸς τοὺς ἐντὸς τοῦ Ταύρου σύγκρισιν, ἐκείνων ἐπικεκαυμένων τὴν χρόαν τούτων δὲ μή, τοιαύτην τὴν ἐπωνυμίαν γενέσθαι συνέβη· καὶ Πίνδαρός φησιν ὅτι αἱ Ἀμαζόνες „Σύριον εὐρυαίχμαν „δίεπον στρατόν,“ τὴν ἐν τῇ Θεμισκύρᾳ κατοικίαν οὕτω δηλῶν. ἡ δὲ Θεμίσκυρά ἐστιν τῶν Ἀμισηνῶν, αὕτη δὲ Λευκοσύρων τῶν μετὰ τὸν Ἅλυν. πρὸς ἕω μὲν τοίνυν ὁ Ἅλυς ὅριον τῶν Παφλαγόνων, πρὸς νότον δὲ Φρύγες καὶ οἱ ἐποικήσαντες Γαλάται, πρὸς δύσιν δὲ Βιθυνοὶ καὶ Μαριανδυνοί (τὸ γὰρ τῶν Καυκώνων γένος ἐξέφθαρται τελέως πάντοθεν), πρὸς ἄρκτον δὲ ὁ Εὔξεινός ἐστι. τῆς δὲ χώρας ταύτης διῃρημένης εἴς τε τὴν μεσόγαιαν καὶ τὴν ἐπὶ θαλάττῃ διατείνουσαν ἀπὸ τοῦ Ἅλυος μέχρι Βιθυνίας, ἑκατέραν τὴν μὲν παραλίαν ἕως τῆς Ἡρακλείας εἶχεν ὁ Εὐπάτωρ, τῆς δὲ μεσογαίας τὴν μὲν ἐγγυτάτω ἔσχεν, ἧς τινα καὶ πέραν τοῦ Ἅλυος διέτεινε (καὶ μέχρι δεῦρο τοῖς Ῥωμαίοις ἡ Ποντικὴ ἐπαρχία ἀφώρισται), τὰ λοιπὰ δ᾿ ἦν ὑπὸ δυνάσταις καὶ μετὰ τὴν Μιθριδάτου κατάλυσιν. περὶ μὲν δὴ τῶν ἐν τῇ μεσογαίᾳ Παφλαγόνων ἐροῦμεν ὕστερον τῶν μὴ ὑπὸ τῷ Μιθριδάτῃ, νῦν δὲ πρόκειται τὴν ὑπ᾿ ἐκείνῳ χώραν, κληθεῖσαν δὲ Πόντον, διελθεῖν.

5. ante ἐξίει: καὶ

10 Μετὰ δὴ τὸν Παρθένιον ποταμὸν ἔστιν Ἄμαστρις ὁμώνυμος τῆς συνῳκικυίας πόλις· ἵδρυται δ' ἐπὶ χερρονήσου λιμένας ἔχουσα τοῦ ἰσθμοῦ ἑκατέρωθεν· ἦν δ' ἡ Ἄμαστρις γυνὴ μὲν Διονυσίου τοῦ Ἡρακλείας τυράννου, θυγάτηρ δὲ Ὀξυάθρου τοῦ Δαρείου ἀδελφοῦ τοῦ κατὰ Ἀλέξανδρον. ἐκείνη μὲν οὖν ἐκ τεττάρων κατοικιῶν συνῴκισε τὴν πόλιν, ἔκ τε Σησάμου καὶ Κυτώρου καὶ Κρώμνης (ὧν καὶ Ὅμηρος μέμνηται ἐν τῷ Παφλαγονικῷ διακόσμῳ), τετάρτης δὲ τῆς Τίου· ἀλλ' αὕτη μὲν ταχὺ ἀπέστη τῆς κοινωνίας, αἱ δὲ ἄλλαι συνέμειναν, ὧν ἡ Σήσαμος ἀκρόπολις τῆς Ἀμάστρεως λέγεται. τὸ δὲ Κύτωρον ἐμπόριον ἦν ποτε Σινωπέων, ὠνόμασται δ' ἀπὸ Κυτώρου τοῦ Φρίξου παιδός, ὡς Ἔφορός φησι. πλείστη δὲ καὶ ἀρίστη πύξος φύεται κατὰ C.545 τὴν Ἀμαστριανήν, καὶ μάλιστα περὶ τὸ Κύτωρον. ὁ δὲ Αἰγιαλὸς ἔστι μὲν ἠὼν μακρὰ πλειόνων ἢ ἑκατὸν σταδίων, ἔχει δὲ καὶ κώμην ὁμώνυμον, ἧς μέμνηται ὁ ποιητὴς ὅταν φῇ „Κρῶμνάν τ' Αἰγιαλόν τε καὶ ὑψηλοὺς „Ἐρυθίνους.“ γράφουσι δέ τινες „Κρῶμναν Κωβίαλόν „τε.“ Ἐρυθίνους δὲ λέγεσθαί φασι τοὺς νῦν Ἐρυθρίνους ἀπὸ τῆς χρόας· δύο δ' εἰσὶ σκόπελοι. μετὰ δὲ Αἰγιαλὸν Κάραμβις, ἄκρα μεγάλη πρὸς τὰς ἄρκτους ἀνατεταμένη καὶ τὴν Σκυθικὴν χερρόνησον. ἐμνήσθημεν δ' αὐτῆς πολλάκις καὶ τοῦ ἀντικειμένου αὐτῇ Κριοῦ μετώπου, διθάλαττον ποιοῦντος τὸν Εὔξεινον πόντον. μετὰ δὲ Κάραμβιν Κίνωλις καὶ Ἀντικίνωλις καὶ Ἀβώνου τεῖχος πολίχνιον, καὶ Ἀρμένη ἐφ' ᾗ παροιμιάζονται „ὅστις ἔργον οὐδὲν εἶχεν Ἀρμένην ἐτείχισεν.“ ἔστι δὲ κώμη τῶν Σινωπέων ἔχουσα λιμένα.

11 Εἶτ' αὐτὴ Σινώπη, σταδίους πεντήκοντα τῆς Ἀρ-

16. post πλειόνων: μὲν

μένης διέχουσα, ἀξιολογωτάτη τῶν ταύτῃ πόλεων. ἔκτισαν μὲν οὖν αὐτὴν Μιλήσιοι, κατασκευασαμένη δὲ ναυτικὸν ἐπῆρχε τῆς ἐντὸς Κυανέων θαλάττης, καὶ ἔξω δὲ πολλῶν ἀγώνων μετεῖχε τοῖς Ἕλλησιν· αὐτονομηθεῖσα δὲ πολὺν χρόνον οὐδὲ διὰ τέλους ἐφύλαξε τὴν ἐλευθερίαν, ἀλλ' ἐκ πολιορκίας ἑάλω καὶ ἐδούλευσε Φαρνάκῃ πρῶτον, ἔπειτα τοῖς διαδεξαμένοις ἐκεῖνον μέχρι τοῦ Εὐπάτορος καὶ τῶν καταλυσάντων Ῥωμαίων ἐκεῖνον. ὁ δὲ Εὐπάτωρ καὶ ἐγεννήθη ἐκεῖ καὶ ἐτράφη· διαφερόντως δὲ ἐτίμησεν αὐτὴν μητρόπολίν τε τῆς βασιλείας ὑπέλαβεν. ἔστι δὲ καὶ φύσει καὶ προνοίᾳ κατεσκευασμένη καλῶς· ἵδρυται γὰρ ἐπὶ αὐχένι χερρονήσου τινός, ἑκατέρωθεν δὲ τοῦ ἰσθμοῦ λιμένες καὶ ναύσταθμα καὶ πηλαμυδεῖα θαυμαστά, περὶ ὧν εἰρήκαμεν ὅτι δευτέραν θήραν οἱ Σινωπεῖς ἔχουσι, τρίτην δὲ Βυζάντιοι· καὶ κύκλῳ δ' ἡ χερρόνησος προβέβληται ῥαχιώδεις ἀκτὰς ἐχούσας καὶ κοιλάδας τινὰς ὡσανεὶ βόθρους πετρίνους, οὓς καλοῦσι χοινικίδας· πληροῦνται δὲ οὗτοι μετεωρισθείσης τῆς θαλάττης, ὡς καὶ διὰ τοῦτο οὐκ εὐπρόσιτον τὸ χωρίον καὶ διὰ τὸ πᾶσαν τὴν τῆς πέτρας ἐπιφάνειαν ἐχινώδη καὶ ἀνεπίβατον εἶναι γυμνῷ ποδί· ἄνωθεν μέντοι καὶ ὑπὲρ τῆς πόλεως εὔγεών ἐστι τὸ ἔδαφος καὶ ἀγροκηπίοις κε-
C.546 κόσμηται πυκνοῖς, πολὺ δὲ μᾶλλον τὰ προάστεια. αὐτὴ δ' ἡ πόλις τετείχισται καλῶς, καὶ γυμνασίῳ δὲ καὶ ἀγορᾷ καὶ στοαῖς κεκόσμηται λαμπρῶς. τοιαύτη δὲ οὖσα δὶς ὅμως ἑάλω, πρότερον μὲν τοῦ Φαρνάκου παρὰ δόξαν αἰφνιδίως ἐπιπεσόντος, ὕστερον δὲ ὑπὸ Λευκόλλου καὶ τοῦ ἐγκαθημένου τυράννου καὶ ἐντὸς ἅμα καὶ ἐκτὸς πολιορκουμένη· ὁ γὰρ ἐγκατασταθεὶς ὑπὸ τοῦ βασιλέως φρούραρχος Βακχίδης ὑπονοῶν ἀεί τινα προδοσίαν ἐκ τῶν ἔνδοθεν καὶ πολλὰς αἰκίας καὶ σφα-

γὰς ποιῶν, ἀπαγορεῦσαι τοὺς ἀνθρώπους ἐποίησε πρὸς ἄμφω μήτ' ἀμύνασθαι δυναμένους γενναίως μήτε προσθέσθαι κατὰ συμβάσεις. ἑάλωσαν δ' οὖν· καὶ τὸν μὲν ἄλλον κόσμον τῆς πόλεως διεφύλαξεν ὁ Λεύκολλος, τὴν δὲ τοῦ Βιλλάρου σφαῖραν ἦρε καὶ τὸν Αὐτόλυκον, Σθένιδος ἔργον, ὃν ἐκεῖνοι οἰκιστὴν ἐνόμιζον καὶ ἐτίμων ὡς θεόν· ἦν δὲ καὶ μαντεῖον αὐτοῦ· δοκεῖ δὲ τῶν Ἰάσονι συμπλευσάντων εἶναι καὶ κατασχεῖν τοῦτον τὸν τόπον. εἶθ' ὕστερον Μιλήσιοι τὴν εὐφυΐαν ἰδόντες καὶ τὴν ἀσθένειαν τῶν ἐνοικούντων ἐξιδιάσαντο καὶ ἐποίκους ἔστειλαν· νυνὶ δὲ καὶ Ῥωμαίων ἀποικίαν δέδεκται, καὶ μέρος τῆς πόλεως καὶ τῆς χώρας ἐκείνων ἐστί. διέχει δὲ τοῦ μὲν Ἱεροῦ τρισχιλίους καὶ πεντακοσίους, ἀφ' Ἡρακλείας δὲ δισχιλίους, Καράμβεως δὲ ἑπτακοσίους σταδίους. ἄνδρας δὲ ἐξήνεγκεν ἀγαθούς, τῶν μὲν φιλοσόφων Διογένη τὸν κυνικὸν καὶ Τιμόθεον τὸν Πατρίωνα, τῶν δὲ ποιητῶν Δίφιλον τὸν κωμικόν, τῶν δὲ συγγραφέων Βάτωνα τὸν πραγματευθέντα τὰ Περσικά.

Ἐντεῦθεν δ' ἐφεξῆς ἡ τοῦ Ἅλυος ἐκβολὴ ποταμοῦ· ὠνόμασται δ' ἀπὸ τῶν ἁλῶν ἃς παραρρεῖ· ἔχει δὲ τὰς πηγὰς ἐν τῇ μεγάλῃ Καππαδοκίᾳ τῆς Ποντικῆς πλησίον κατὰ τὴν Καμισηνήν, ἐνεχθεὶς δ' ἐπὶ δύσιν πολύς, εἶτ' ἐπιστρέψας πρὸς τὴν ἄρκτον διά τε Γαλατῶν καὶ Παφλαγόνων ὁρίζει τούτους τε καὶ τοὺς Λευκοσύρους. ἔχει δὲ καὶ ἡ Σινωπῖτις καὶ πᾶσα ἡ μέχρι Βιθυνίας ὀρεινὴ ἡ ὑπερκειμένη τῆς λεχθείσης παραλίας ναυπηγήσιμον ὕλην ἀγαθὴν καὶ εὐκατακόμιστον. ἡ δὲ Σινωπῖτις καὶ σφένδαμνον φύει καὶ ὀροκάρυον, ἐξ ὧν τὰς τραπέζας τέμνουσιν· ἅπασα δὲ καὶ ἐλαιόφυτός ἐστιν ἡ μικρὸν ὑπὲρ τῆς θαλάττης γεωργουμένη. 12

Μετὰ δὲ τὴν ἐκβολὴν τοῦ Ἅλυος ἡ Γαζηλωνῖτίς 13

ἐστι μέχρι τῆς Σαραμηνῆς, εὐδαίμων χώρα καὶ πεδιὰς πᾶσα καὶ πάμφορος· ἔχει δὲ καὶ προβατείαν ὑποδιφθέρου καὶ μαλακῆς ἐρέας, ἧς καθ' ὅλην τὴν Καππαδοκίαν καὶ τὸν Πόντον σφόδρα πολλὴ σπάνις ἐστί· γί-
C.547 νονται δὲ καὶ ζόρκες, ὧν ἀλλαχοῦ σπάνις ἐστί. ταύτης δὲ τῆς χώρας τὴν μὲν ἔχουσιν Ἀμισηνοί, τὴν δ' ἔδωκε Δηιοτάρῳ Πομπήιος, καθάπερ καὶ τὰ περὶ Φαρνακίαν καὶ τὴν Τραπεζουσίαν μέχρι Κολχίδος καὶ τῆς μικρᾶς Ἀρμενίας· καὶ τούτων ἀπέδειξεν αὐτὸν βασιλέα, ἔχοντα καὶ τὴν πατρῴαν τετραρχίαν τῶν Γαλατῶν, τοὺς Τολιστοβωγίους. ἀποθανόντος δ' ἐκείνου πολλαὶ διαδοχαὶ τῶν ἐκείνου γεγόνασι.

14 Μετὰ δὲ τὴν Γαζηλῶνα ἡ Σαραμηνὴ καὶ Ἀμισὸς πόλις ἀξιόλογος, διέχουσα τῆς Σινώπης περὶ ἐνακοσίους σταδίους. φησὶ δ' αὐτὴν Θεόπομπος πρώτους Μιλησίους κτίσαι........ Καππαδόκων ἄρχοντα, τρίτον δ' ὑπ' Ἀθηνοκλέους καὶ Ἀθηναίων ἐποικισθεῖσαν Πειραιᾶ μετονομασθῆναι. καὶ ταύτην δὲ κατέσχον οἱ βασιλεῖς, ὁ δ' Εὐπάτωρ ἐκόσμησεν ἱεροῖς καὶ προσέκτισε μέρος. Λεύκολλος δὲ καὶ ταύτην ἐπολιόρκησεν, εἶθ' ὕστερον Φαρνάκης ἐκ Βοσπόρου διαβάς· ἐλευθερωθεῖσαν δ' ὑπὸ Καίσαρος τοῦ θεοῦ παρέδωκεν Ἀντώνιος βασιλεῦσιν· εἶθ' ὁ τύραννος Στράτων κακῶς αὐτὴν διέθηκεν· εἶτ' ἠλευθερώθη πάλιν μετὰ τὰ Ἀκτιακὰ ὑπὸ Καίσαρος τοῦ Σεβαστοῦ, καὶ νῦν εὖ συνέστηκεν. ἔχει δὲ τήν τε ἄλλην χώραν καλὴν καὶ τὴν Θεμίσκυραν τὸ τῶν Ἀμαζόνων οἰκητήριον, καὶ τὴν Σιδήνην.

15 Ἔστι δὲ ἡ Θεμίσκυρα πεδίον τῇ μὲν ὑπὸ τοῦ πελάγους κλυζόμενον, ὅσον ἑξήκοντα σταδίους τῆς πόλεως διέχον, τῇ δ' ὑπὸ τῆς ὀρεινῆς εὐδένδρου καὶ διαρρύτου ποταμοῖς αὐτόθεν τὰς πηγὰς ἔχουσιν. ἐκ μὲν

οὖν τούτων πληρούμενος ἁπάντων εἷς ποταμὸς διέξεισι τὸ πεδίον Θερμώδων καλούμενος· ἄλλος δὲ τούτῳ πάρισος ῥέων ἐκ τῆς καλουμένης Φαναροίας τὸ αὐτὸ διέξεισι πεδίον· καλεῖται δὲ Ἶρις. ἔχει δὲ τὰς πηγὰς ἐν αὐτῷ τῷ Πόντῳ, ῥυεὶς δὲ διὰ πόλεως μέσης Κομάνων τῶν Ποντικῶν καὶ διὰ τῆς Δαζιμωνίτιδος εὐδαίμονος πεδίου πρὸς δύσιν, εἶτ' ἐπιστρέφει πρὸς τὰς ἄρκτους παρ' αὐτὰ τὰ Γαζίουρα, παλαιὸν βασίλειον, νῦν δ' ἔρημον· εἶτα ἀνακάμπτει πάλιν πρὸς ἕω παραλαβὼν τόν τε Σκύλακα καὶ ἄλλους ποταμούς, καὶ παρ' αὐτὸ τὸ τῆς Ἀμασείας ἐνεχθεὶς τεῖχος, τῆς ἡμετέρας πατρίδος, πόλεως ἐρυμνοτάτης, εἰς τὴν Φανάροιαν πρόεισιν· ἐνταῦθα δὲ συμβαλὼν ὁ Λύκος αὐτῷ τὰς ἀρχὰς ἐξ Ἀρμενίας ἔχων γίνεται καὶ αὐτὸς Ἶρις· εἶθ' ἡ Θεμίσκυρα ὑποδέχεται τὸ ῥεῦμα καὶ τὸ Ποντικὸν πέλαγος. διὰ δὲ τοῦτο ἔνδροσόν ἐστι καὶ ποάζον ἀεὶ τὸ πεδίον τοῦτο τρέφειν ἀγέλας βοῶν τε ὁμοίως καὶ ἵππων δυνάμενον, σπόρον δὲ πλεῖστον δέχεται τὸν ἐκ τῆς ἐλύμου καὶ κέγχρου, μᾶλλον δὲ ἀνέκλειπτον· αὐχμοῦ γάρ ἐστι κρείττων ἡ εὐυδρία παντός, ὥστ' οὐδὲ λιμὸς κα- C.548 θικνεῖται τῶν ἀνθρώπων τούτων οὐδ' ἅπαξ· τοσαύτην δ' ὀπώραν ἐκδίδωσιν ἡ παρόρειος τὴν αὐτοφυῆ καὶ ἀγρίαν σταφυλῆς τε καὶ ὄχνης καὶ μήλου καὶ τῶν καρυωδῶν ὥστε κατὰ πᾶσαν τοῦ ἔτους ὥραν ἀφθόνως εὐπορεῖν τοὺς ἐξιόντας ἐπὶ τὴν ὕλην, τοτὲ μὲν ἔτι κρεμαμένων τῶν καρπῶν ἐν τοῖς δένδρεσι, τοτὲ δ' ἐν τῇ πεπτωκυίᾳ φυλλάδι καὶ ὑπ' αὐτῇ κειμένων βαθείᾳ καὶ πολλῇ κεχυμένῃ. συχναὶ δὲ καὶ θῆραι παντοίων ἀγρευμάτων διὰ τὴν εὐπορίαν τῆς τροφῆς.

16 Μετὰ δὲ τὴν Θεμίσκυράν ἐστιν ἡ Σιδήνη, πεδίον εὔδαιμον, οὐχ ὁμοίως δὲ κατάρρυτον, ἔχον χωρία ἐρυμνὰ ἐπὶ τῇ παραλίᾳ, τήν τε Σίδην ἀφ' ἧς ὠνομά-

σθη Σιδήνη, καὶ Χάβακα καὶ Φάβδα· μέχρι μὲν δὴ δεῦρο Ἀμισηνή. ἄνδρες δὲ γεγόνασιν ἄξιοι μνήμης κατὰ παιδείαν ἐνταῦθα μαθηματικοὶ μὲν Δημήτριος ὁ τοῦ Ῥαθηνοῦ καὶ Διονυσόδωρος ὁμώνυμος τῷ Μηλίῳ γεωμέτρῃ, γραμματικὸς δὲ Τυραννίων οὗ ἡμεῖς ἠκροασάμεθα.

17 Μετὰ δὲ τὴν Σιδήνην ἡ Φαρνακία ἐστὶν ἐρυμνὸν πόλισμα, καὶ μετὰ ταῦτα ἡ Τραπεζοῦς πόλις Ἑλληνίς, εἰς ἣν ἀπὸ τῆς Ἀμισοῦ περὶ δισχιλίους καὶ διακοσίους σταδίους ἐστὶν ὁ πλοῦς· εἶτ' ἔνθεν εἰς Φᾶσιν χίλιοί που καὶ τετρακόσιοι, ὥστε οἱ σύμπαντες ἀπὸ τοῦ Ἱεροῦ μέχρι Φάσιδος περὶ ὀκτακισχιλίους σταδίους εἰσὶν ἢ μικρῷ πλείους ἢ ἐλάττους. ἐν δὲ τῇ παραλίᾳ ταύτῃ ἀπὸ Ἀμισοῦ πλέουσιν ἡ Ἡράκλειος ἄκρα πρῶτον ἔστιν, εἶτ' ἄλλη ἄκρα Ἰασόνιον καὶ ὁ Γενήτης, εἶτα Κοτύωρα πολίχνη ἐξ ἧς συνῳκίσθη ἡ Φαρνακία, εἶτ' Ἰσχόπολις κατερηριμμένη, εἶτα κόλπος ἐν ᾧ Κερασοῦς τε καὶ Ἑρμώνασσα κατοικίαι μέτριαι, εἶτα τῆς Ἑρμωνάσσης πλησίον ἡ Τραπεζοῦς, εἶθ' ἡ Κολχίς· ἐνταῦθα δέ που ἐστὶ καὶ Ζυγόπολίς τις λεγομένη κατοικία. περὶ μὲν οὖν τῆς Κολχίδος εἴρηται καὶ τῆς ὑπερκειμένης παραλίας.

18 Τῆς δὲ Τραπεζοῦντος ὑπέρκεινται καὶ τῆς Φαρνακίας Τιβαρανοί τε καὶ Χαλδαῖοι καὶ Σάννοι, οὓς πρότερον ἐκάλουν Μάκρωνας, καὶ ἡ μικρὰ Ἀρμενία· καὶ οἱ Ἀππαῖται δέ πως πλησιάζουσι τοῖς χωρίοις τούτοις οἱ πρότερον Κερκῖται. διήκει δὲ διὰ τούτων ὅ τε Σκυδίσης ὄρος τραχύτατον συνάπτον τοῖς Μοσχικοῖς ὄρεσι τοῖς ὑπὲρ τῆς Κολχίδος, οὗ τὰ ἄκρα κατέχουσιν οἱ Ἑπτακωμῆται, καὶ ὁ Παρυάδρης ὁ μέχρι τῆς μικρᾶς Ἀρμενίας ἀπὸ τῶν κατὰ Σιδήνην καὶ Θεμίσκυραν τόπων διατείνων καὶ ποιῶν τὸ ἑωθινὸν τοῦ Πόντου πλευ-

ρόν. εἰσὶ δ' ἅπαντες μὲν οἱ ὄρειοι τούτων ἄγριοι τε- C.549
λέως, ὑπερβέβληνται δὲ τοὺς ἄλλους οἱ Ἑπτακωμῆται· τινὲς δὲ καὶ ἐπὶ δένδρεσιν ἢ πυργίοις οἰκοῦσι, διὸ καὶ Μοσυνοίκους ἐκάλουν οἱ παλαιοί, τῶν πύργων μοσύνων λεγομένων. ζῶσι δ' ἀπὸ θηρείων σαρκῶν καὶ τῶν ἀκροδρύων, ἐπιτίθενται δὲ καὶ τοῖς ὁδοιποροῦσι καταπηδήσαντες ἀπὸ τῶν ἰκρίων. οἱ δὲ Ἑπτακωμῆται τρεῖς Πομπηίου σπείρας κατέκοψαν διεξιούσας τὴν ὀρεινήν, κεράσαντες κρατῆρας ἐν ταῖς ὁδοῖς τοῦ μαινομένου μέλιτος, ὃ φέρουσιν οἱ ἀκρεμόνες τῶν δένδρων· πιοῦσι γὰρ καὶ παρακόψασιν ἐπιθέμενοι ῥᾳδίως διεχειρίσαντο τοὺς ἀνθρώπους. ἐκαλοῦντο δὲ τούτων τινὲς τῶν βαρβάρων καὶ Βύζηρες.

Οἱ δὲ νῦν Χαλδαῖοι Χάλυβες τὸ παλαιὸν ὠνομάζοντο, καθ' οὓς μάλιστα ἡ Φαρνακία ἵδρυται, κατὰ θάλατταν μὲν ἔχουσα εὐφυΐαν τὴν ἐκ τῆς πηλαμυδείας (πρώτιστα γὰρ ἁλίσκεται ἐνταῦθα τὸ ὄψον τοῦτο), ἐκ δὲ τῆς γῆς τὰ μέταλλα νῦν μὲν σιδήρου πρότερον δὲ καὶ ἀργύρου. ὅλως δὲ κατὰ τοὺς τόπους τούτους ἡ παραλία στενὴ τελέως ἐστίν· ὑπέρκειται γὰρ εὐθὺς τὰ ὄρη μετάλλων πλήρη καὶ δρυμῶν, γεωργεῖται δ' οὐ πολλά· λείπεται δὴ τοῖς μὲν μεταλλευταῖς ἐκ τῶν μετάλλων ὁ βίος, τοῖς δὲ θαλαττουργοῖς ἐκ τῆς ἁλιείας καὶ μάλιστα τῶν πηλαμύδων καὶ τῶν δελφίνων· ἐπακολουθοῦντες γὰρ ταῖς ἀγέλαις τῶν ἰχθύων, κορδύλης τε καὶ θύννης καὶ αὐτῆς τῆς πηλαμύδος, πιαίνονταί τε καὶ εὐάλωτοι γίνονται διὰ τὸ πλησιάζειν τῇ γῇ προαλέστερον δελεαζόμενοι * οὓς μόνοι οὗτοι κατακόπτουσι τοὺς δελφῖνας καὶ τῷ στέατι πολλῷ χρῶνται πρὸς ἅπαντα. 19

Τούτους οὖν οἶμαι λέγειν τὸν ποιητὴν Ἁλιζώνους ἐν τῷ μετὰ τοὺς Παφλαγόνας καταλόγῳ „αὐτὰρ Ἁλι„ζώνων Ὀδίος καὶ Ἐπίστροφος ἦρχον τηλόθεν ἐξ Ἀλύ- 20

„βης, ὅθεν ἀργύρου ἐστὶ γενέθλη.“ ἤτοι τῆς γραφῆς
μετατεθείσης ἀπὸ τοῦ „τηλόθεν ἐκ Χαλύβης,“ ἢ τῶν
ἀνθρώπων πρότερον Ἀλύβων λεγομένων ἀντὶ Χαλύ-
βων· οὐ γὰρ νῦν μὲν δυνατὸν γέγονεν ἐκ Χαλύβων
Χαλδαίους λεχθῆναι, πρότερον δ' οὐκ ἐνῆν ἀντὶ Ἀλύ-
βων Χάλυβας, καὶ ταῦτα τῶν ὀνομάτων μεταπτώσεις
πολλὰς δεχομένων καὶ μάλιστα ἐν τοῖς βαρβάροις·
Σίντιες γὰρ ἐκαλοῦντό τινες τῶν Θρᾳκῶν, εἶτα Σιντοί,
εἶτα Σάιοι, παρ' οἷς φησιν Ἀρχίλοχος τὴν ἀσπίδα ῥῖ-
ψαι „ἀσπίδα μὲν Σαΐων τις ἀνείλετο, τὴν παρὰ θά-
„μνῳ ἔντος ἀμώμητον κάλλιπον οὐκ ἐθέλων.“ οἱ δ'
C.550 αὐτοὶ οὗτοι Σαπαῖοι νῦν ὀνομάζονται· πάντες γὰρ
οὗτοι περὶ Ἄβδηρα τὴν οἴκησιν εἶχον καὶ τὰς περὶ Λῆ-
μνον νήσους· ὁμοίως δὲ καὶ Βρῦγοι καὶ Βρύγες καὶ
Φρύγες οἱ αὐτοί, καὶ Μυσοὶ καὶ Μαίονες καὶ Μῄονες·
οὐ χρεία δὲ πλεονάζειν. ὑπονοεῖ δὲ καὶ ὁ Σκήψιος τὴν
τοῦ ὀνόματος μετάπτωσιν ἐξ Ἀλύβων εἰς Χάλυβας, τὰ
δ' ἑξῆς καὶ τὰ συνῳδὰ οὐ νοῶν, καὶ μάλιστα ἐκ τίνος
Ἁλιζώνους εἴρηκε τοὺς Χάλυβας, ἀποδοκιμάζει τὴν
δόξαν· ἡμεῖς δ' ἀντιπαραθέντες τῇ ἡμετέρᾳ τὴν ἐκεί-
21 νου καὶ τὰς τῶν ἄλλων ὑπολήψεις σκοπῶμεν. οἱ μὲν
[οὖν] μεταγράφουσιν „Ἀλαζώνων“ οἱ δ' „Ἀμαζώνων“
ποιοῦντες, τὸ δ' „ἐξ Ἀλύβης“ „ἐξ Ἀλόπης“ ἢ „ἐξ Ἀλό-
„βης,“ τοὺς μὲν Σκύθας Ἀλαζῶνας φάσκοντες ὑπὲρ
τὸν Βορυσθένη καὶ Καλλιπίδας καὶ ἄλλα ὀνόματα,
ἅπερ Ἑλλάνικός τε καὶ Ἡρόδοτος καὶ Εὔδοξος κατε-
φλυάρησαν ἡμῶν, τοὺς δ' Ἀμαζῶνας μεταξὺ Μυσίας
καὶ Καρίας καὶ Λυδίας, καθάπερ Ἔφορος νομίζει, πλη-
σίον Κύμης τῆς πατρίδος αὐτοῦ· καὶ τοῦτο μὲν ἔχε-
ταί τινος λόγου τυχὸν ἴσως· εἴη γὰρ ἂν λέγων τὴν ὑπὸ

---

15 post *Μυσοί*: *καὶ Μέρονες*

τῶν Αἰολέων καὶ Ἰώνων οἰκισθεῖσαν ὕστερον, πρότερον δ' ὑπὸ Ἀμαζόνων, [ὧν] καὶ ἐπωνύμους πόλεις τινὰς εἶναί φασι· καὶ γὰρ Ἔφεσον καὶ Σμύρναν καὶ Κύμην καὶ Μύριναν. ἡ δὲ Ἀλύβη ἢ ὥς τινες Ἀλόπη ἢ Ἀλόβη πῶς ἂν ἐν τοῖς τόποις τούτοις ἐξητάζετο; πῶς δὲ τηλόθεν; πῶς δ' ἡ τοῦ ἀργύρου γενέθλη;

Ταῦτα μὲν ἀπολύεται τῇ μεταγραφῇ· γράφει γὰρ 22
οὕτως „αὐτὰρ Ἀμαζώνων Ὀδίος καὶ Ἐπίστροφος ἦρχον, ἐλθόντ' ἐξ Ἀλόπης, ὅθ' Ἀμαζονίδων γένος ἐστί." ταῦτα δ' ἀπολυσάμενος εἰς ἄλλο ἐμπέπτωκε πλάσμα· οὐδαμοῦ γὰρ ἐνθάδε εὑρίσκεται Ἀλόπη· καὶ ἡ μεταγραφὴ δὲ παρὰ τὴν τῶν ἀντιγράφων τῶν ἀρχαίων πίστιν καινοτομουμένη ἐπὶ τοσοῦτον σχεδιασμῷ ἔοικεν. ὁ δὲ Σκήψιος οὔτε τὴν τούτου δόξαν ἔοικεν ἀποδεξάμενος οὔτε τῶν περὶ τὴν Παλλήνην τοὺς Ἁλιζώνους ὑπολαβόντων, ὧν ἐμνήσθημεν ἐν τοῖς Μακεδονικοῖς. ὁμοίως διαπορεῖ καὶ πῶς ἐκ τῶν ὑπὲρ τὸν Βορυσθένην νομάδων ἀφῖχθαι συμμαχίαν τοῖς Τρωσί τις νομίσειεν, ἐπαινεῖ δὲ μάλιστα τὴν Ἑκαταίου τοῦ Μιλησίου καὶ Μενεκράτους τοῦ Ἐλαΐτου τῶν Ξενοκράτους γνωρίμων ἀνδρὸς δόξαν καὶ τὴν Παλαιφάτου, ὧν ὁ μὲν ἐν γῆς περιόδῳ φησίν „ἐπὶ δ' Ἀλαζίᾳ πόλι ποταμὸς Ὀδρύσης ῥέων διὰ Μυγδονίης πεδίου ἀπὸ δύσιος ἐκ τῆς λίμνης τῆς Δασκυλίτιδος ἐς Ῥύνδακον ἐσβάλλει." ἔρη- C.551
μον δὲ εἶναι νῦν τὴν Ἀλαζίαν λέγει, κώμας δὲ πολλὰς τῶν Ἀλαζώνων οἰκεῖσθαι, δι' ὧν Ὀδρύσης ῥεῖ, ἐν δὲ ταύταις τὸν Ἀπόλλωνα τιμᾶσθαι διαφερόντως, καὶ μάλιστα κατὰ τὴν ἐφορίαν τῶν Κυζικηνῶν. ὁ δὲ Μενεκράτης ἐν τῇ Ἑλλησποντιακῇ περιόδῳ ὑπερκεῖσθαι λέγει τῶν περὶ τὴν Μύρλειαν τόπων ὀρεινὴν συνεχῆ, ἣν κατῴκει τὸ τῶν Ἁλιζώνων ἔθνος· δεῖ δέ, φησί, γράφειν ἐν τοῖς δύο λάβδα, τὸν δὲ ποιητὴν ἐν τῷ ἑνὶ

γράφειν διὰ τὸ μέτρον. ὁ δὲ Παλαίφατός φησιν ἐξ Ἀλαζώνων τῶν ἐν τῇ Ἀλόπῃ οἰκούντων, νῦν δὲ Ζελείᾳ, τὸν Ὀδίον καὶ τὸν Ἐπίστροφον στρατεῦσαι. τί οὖν ἄξιον ἐπαινεῖν τὰς τούτων δόξας; χωρὶς γὰρ τοῦ τὴν ἀρχαίαν γραφὴν καὶ τούτους κινεῖν οὔτε τὰ ἀργυρεῖα δεικνύουσιν, οὔτε ποῦ τῆς Μυρλεάτιδος Ἀλόπη ἐστίν, οὔτε πῶς οἱ ἐνθένδε ἀφιγμένοι εἰς Ἴλιον τηλόθεν ἦσαν, εἰ καὶ δοθείη Ἀλόπην τινὰ γεγονέναι ἢ Ἀλαζίαν· πολὺ γὰρ δὴ ταῦτα ἐγγυτέρω ἐστὶ τῇ Τρῳάδι ἢ τὰ περὶ Ἔφεσον. ἀλλ' ὅμως τοὺς περὶ Πύγελα λέγοντας τοὺς Ἀμαζῶνας μεταξὺ Ἐφέσου καὶ Μαγνησίας καὶ Πριήνης φλυαρεῖν φησὶν ὁ Δημήτριος· τὸ γὰρ „τηλόθεν" οὐκ ἐφαρμόττειν τῷ τόπῳ· πόσῳ οὖν μᾶλλον οὐκ ἐφαρμόττει τῷ περὶ Μυσίαν καὶ Τευθρανίαν;

23 Νὴ Δία, ἀλλά φησι δεῖν ἔνια καὶ ἀκύρως προστιθέμενα δέχεσθαι, ὡς καὶ „τῆλ' ἐξ Ἀσκανίης" καὶ „Ἀρ„ναῖος δ' ὄνομ' ἔσκε, τὸ γὰρ θέτο πότνια μήτηρ," καὶ „εἵλετο δὲ κληῖδ' εὐκαμπέα χειρὶ παχείῃ Πηνελόπη." δεδόσθω δὴ καὶ τοῦτο· ἀλλ' ἐκεῖνα οὐ δοτέα, οἷς προσέχων ὁ Δημήτριος οὐδὲ τοῖς ὑπολαβοῦσι δεῖν ἀκούειν „τηλόθεν ἐκ Χαλύβης" πιθανῶς ἀντείρηκε. συγχωρήσας γὰρ ὅτι, εἰ καὶ μὴ ἔστι νῦν ἐν τοῖς Χάλυψι τὰ ἀργυρεῖα, ὑπάρξαι γε ἐνεδέχετο, ἐκεῖνό γε οὐ συγχωρεῖ ὅτι καὶ ἔνδοξα ἦν καὶ ἄξια μνήμης, καθάπερ τὰ σιδηρεῖα. τί δὲ κωλύει, φαίη τις ἄν, καὶ ἔνδοξα εἶναι, καθάπερ καὶ τὰ σιδηρεῖα; ἢ σιδήρου μὲν εὐπορία τόπον ἐπιφανῆ δύναται ποιεῖν, ἀργύρου δ' οὔ; τί δ' εἰ μὴ κατὰ τοὺς ἥρωας, ἀλλὰ καθ' Ὅμηρον εἰς δόξαν ἀφῖκτο τὰ ἀργυρεῖα, ἆρα μέμψαιτό τις ἂν τὴν ἀπόφασιν τοῦ ποιητοῦ; πῶς οὖν εἰς τὸν ποιητὴν ἡ δόξα ἀφίκετο; πῶς

25. ante καὶ: ἢ

δ' ἡ τοῦ ἐν τῇ Τεμέσῃ χαλκοῦ τῇ Ἰταλιώτιδι; πῶς δ' ἡ τοῦ Θηβαϊκοῦ πλούτου τοῦ κατ' Αἴγυπτον; καίτοι διπλάσιον σχεδόν τι διέχοντα τῶν Αἰγυπτίων Θηβῶν ἢ τῶν Χαλδαίων. ἀλλ' οὐδ' οἷς συνηγορεῖ, τούτοις ὁμολογεῖ· τὰ γὰρ περὶ τὴν Σκῆψιν τοποθετῶν τὴν C.552 ἑαυτοῦ πατρίδα, πλησίον τῆς Σκήψεως καὶ τοῦ Αἰσήπου Νέαν κώμην καὶ Ἀργυρίαν λέγει καὶ Ἀλαζονίαν. ταῦτα μὲν οὖν εἰ καὶ ἔστι, πρὸς ταῖς πηγαῖς ἂν εἴη τοῦ Αἰσήπου. ὁ δὲ Ἑκαταῖος λέγει ἐπέκεινα τῶν ἐκβολῶν αὐτοῦ, ὅ τε Παλαίφατος πρότερον μὲν Ἀλόπην οἰκεῖν φήσας νῦν δὲ Ζέλειαν, οὐδὲν ὅμοιον λέγει τούτοις. εἰ δ' ἄρα ὁ Μενεκράτης, καὶ οὐδ' οὗτος τὴν Ἀλόπην ἢ Ἀλόβην ἢ ὅπως ποτὲ βούλονται γράφειν φράζει ἥτις ἐστίν, οὐδ' αὐτὸς ὁ Δημήτριος.

Πρὸς Ἀπολλόδωρον δὲ περὶ τῶν αὐτῶν ἐν τῷ 24 Τρωικῷ διακόσμῳ διαλεγόμενον πολλὰ μὲν εἴρηται πρότερον, καὶ νῦν δὲ λεκτέον. οὐ γὰρ οἴεται δεῖν δέχεσθαι τοὺς Ἁλιζώνους ἐκτὸς τοῦ Ἅλυος· μηδεμίαν γὰρ συμμαχίαν ἀφῖχθαι τοῖς Τρωσὶν ἐκ τῆς περαίας τοῦ Ἅλυος. πρῶτον τοίνυν ἀπαιτήσομεν αὐτὸν τίνες εἰσὶν οἱ ἐντὸς τοῦ Ἅλυος Ἁλίζωνοι, οἱ καὶ „τηλόθεν ἐξ Ἀλύ„βης, ὅθεν ἀργύρου ἐστὶ γενέθλη.“ οὐ γὰρ ἕξει λέγειν· ἔπειτα τὴν αἰτίαν δι' ἣν οὐ συγχωρεῖ καὶ ἐκ τῆς περαίας ἀφῖχθαί τινα συμμαχίαν· καὶ γὰρ εἰ τὰς ἄλλας ἐντὸς εἶναι τοῦ ποταμοῦ πάσας συμβαίνει πλὴν τῶν Θρᾳκῶν, μίαν γε ταύτην οὐδὲν ἐκώλυε πέραθεν ἀφῖχθαι ἐκ τῆς ἐπέκεινα τῶν Λευκοσύρων. ἢ πολεμήσοντας μὲν ἦν δυνατὸν διαβαίνειν ἐκ τῶν τόπων τούτων καὶ τῶν ἐπέκεινα, καθάπερ τὰς Ἀμαζόνας καὶ Τρῆρας καὶ Κιμμερίους φασί, συμμαχήσοντας δ' ἀδύνατον; αἱ μὲν οὖν Ἀμαζόνες οὐ συνεμάχουν διὰ τὸ τὸν Πρίαμον πολεμῆσαι πρὸς αὐτὰς συμμαχοῦντα τοῖς Φρυξὶν „ἤματι τῷ

„ὅτε τ' ἦλθον Ἀμαζόνες ἀντιάνειραι“ φησὶν ὁ Πρίαμος „καὶ γὰρ ἐγὼν ἐπίκουρος ἐὼν μετὰ τοῖσιν ἐλέγμην.“ οἱ δ' ὁμοροῦντες αὐταῖς, οὔθ' οὕτως ἄπωθεν ὄντες ὥστε χαλεπὴν εἶναι τὴν ἐκεῖθεν μετάπεμψιν οὔτ' ἔχθρας ὑποκειμένης, οὐδὲν ἐκωλύοντο οἶμαι συμμαχεῖν.

25 Ἀλλ' οὐδὲ δόξαν ἔχει τοιαύτην τῶν παλαιῶν εἰπεῖν ὡς συμφωνούντων ἁπάντων μηδένας ἐκ τῆς περαίας τοῦ Ἅλυος κοινωνῆσαι τοῦ Τρωικοῦ πολέμου. πρὸς τοὐναντίον δὲ μᾶλλον εὕροι τις ἂν μαρτυρίας· Μαιάνδριος γοῦν ἐκ τῶν Λευκοσύρων φησὶ τοὺς Ἐνετοὺς ὁρμηθέντας συμμαχῆσαι τοῖς Τρωσίν, ἐκεῖθεν δὲ μετὰ τῶν Θρᾳκῶν ἀπᾶραι καὶ οἰκῆσαι περὶ τὸν τοῦ Ἀδρίου μυχόν, τοὺς δὲ μὴ μετασχόντας τῆς στρατείας Ἐνετοὺς Καππάδοκας γενέσθαι. συνηγορεῖν δ' ἂν δόξειε τῷ λόγῳ τούτῳ, διότι πᾶσα ἡ πλησίον τοῦ Ἅλυος
C.553 Καππαδοκία ὅση παρατείνει τῇ Παφλαγονίᾳ ταῖς δυσὶ χρῆται διαλέκτοις καὶ τοῖς ὀνόμασι πλεονάζει τοῖς Παφλαγονικοῖς, Βάγας καὶ Βιάσας καὶ Αἰνιάτης καὶ Ῥατώτης καὶ Ζαρδώκης καὶ Τίβιος καὶ Γάσυς καὶ Ὀλίγασυς καὶ Μάνης· ταῦτα γὰρ ἔν τε τῇ Φαζημωνίτιδι καὶ τῇ Πιμωλισίτιδι καὶ τῇ Γαζηλωνίτιδι καὶ Γαζακηνῇ καὶ ἄλλαις πλείσταις χώραις ἐπιπολάζει τὰ ὀνόματα. αὐτὸς δὲ ὁ Ἀπολλόδωρος παρατίθησι τὸ τοῦ Ζηνοδότου ὅτι γράφει „ἐξ Ἐνετῆς, ὅθεν ἡμιόνων γένος „ἀγροτεράων.“ ταύτην δέ φησιν Ἑκαταῖον τὸν Μιλήσιον δέχεσθαι τὴν Ἀμισόν· ἡ δ' Ἀμισὸς εἴρηται διότι τῶν Λευκοσύρων ἐστὶ καὶ ἐκτὸς τοῦ Ἅλυος.

26 Εἴρηται δ' αὐτῷ που καὶ διότι ὁ ποιητὴς ἱστορίαν εἶχε τῶν Παφλαγόνων τῶν ἐν τῇ μεσογαίᾳ παρὰ τῶν πεζῇ διελθόντων τὴν χώραν, τὴν παραλίαν δ' ἠγνόει, καθάπερ καὶ τὴν ἄλλην τὴν Ποντικήν· ὠνόμαζε γὰρ [ἂν] αὐτήν. τοὐναντίον δ' ἔστιν ἀναστρέψαντα εἰπεῖν

ἐκ τῆς περιοδείας ὁρμηθέντα τῆς ἀποδοθείσης νυνί, ὡς τὴν μὲν παραλίαν πᾶσαν ἐπελήλυθε καὶ οὐδὲν τῶν ὄντων τότε ἀξίων μνήμης παραλέλοιπεν· εἰ δ' Ἡράκλειαν καὶ Ἄμαστριν καὶ Σινώπην οὐ λέγει τὰς μήπω συνῳκισμένας οὐδὲν θαυμαστόν· τὴν δὲ μεσόγαιαν οὐδὲν ἄτοπον εἰ μὴ εἴρηκε. καὶ τὸ μὴ ὀνομάζειν δὲ πολλὰ τῶν γνωρίμων οὐκ ἀγνοίας ἐστὶ σημεῖον, ὅπερ καὶ ἐν τοῖς ἔμπροσθεν ἐπεσημηνάμεθα· ἀγνοεῖν γὰρ αὐτὸν πολλὰ τῶν ἐνδόξων ἔφη περὶ τὸν Πόντον, οἷον ποταμοὺς καὶ ἔθνη· ὀνομάσαι γὰρ ἄν. τοῦτο δ' ἐπὶ μέν τινων σφόδρα σημειωδῶν δοίη τις ἄν, οἷον Σκύθας καὶ Μαιῶτιν καὶ Ἴστρον. οὐ γὰρ διὰ σημείων μὲν τοὺς νομάδας εἴρηκε γαλακτοφάγους ἀβίους τε, δικαιοτάτους ἀνθρώπους, καὶ ἔτι ἀγαυοὺς ἱππημολγούς, Σκύθας δὲ οὐκ ἂν εἶπεν ἢ Σαυρομάτας ἢ Σαρμάτας, εἰ δὴ οὕτως ὠνομάζοντο [τότε] ὑπὸ τῶν Ἑλλήνων· οὐδ' ἂν Θρᾳκῶν τε καὶ Μυσῶν μνησθεὶς τῶν πρὸς τῷ Ἴστρῳ αὐτὸν παρεσίγησε μέγιστον τῶν ποταμῶν ὄντα, καὶ ἄλλως ἐπιφόρως ἔχων πρὸς τὸ τοῖς ποταμοῖς ἀφορίζεσθαι τοὺς τόπους, οὐδ' ἂν Κιμμερίους λέγων παρῆκε τὸν Βόσπορον ἢ τὴν Μαιῶτιν.

Ἐπὶ δὲ τῶν μὴ οὕτω σημειωδῶν ἢ μὴ τότε ἢ μὴ 27
πρὸς τὴν ὑπόθεσιν τί ἄν τις μέμφοιτο; οἷον τὸν Τάναϊν δι' οὐδὲν ἄλλο γνωριζόμενον ἢ διότι τῆς Ἀσίας καὶ τῆς Εὐρώπης ὅριόν ἐστιν· ἀλλ' οὔτε τὴν Ἀσίαν C.554
οὔτε τὴν Εὐρώπην ὠνόμαζόν πω οἱ τότε, οὐδὲ διῄρητο οὕτως εἰς τρεῖς ἠπείρους ἡ οἰκουμένη· ὠνόμασε γὰρ ἄν που διὰ τὸ λίαν σημειῶδες, ὡς καὶ τὴν Λιβύην καὶ τὸν λίβα τὸν ἀπὸ τῶν ἑσπερίων τῆς Λιβύης πνέοντα· τῶν δ' ἠπείρων μήπω διωρισμένων οὐδὲ τοῦ Τανάιδος ἔδει καὶ τῆς μνήμης αὐτοῦ. πολλὰ δὲ καὶ ἀξιομνημόνευτα μέν, οὐχ ὑπέδραμε δέ· πολὺ γὰρ δὴ

καὶ τὸ ἐπελευστικὸν εἶδος ἔν τε τοῖς λόγοις καὶ ἐν ταῖς πράξεσίν ἐστιν. ἐκ πάντων δὲ [τούτων καὶ] τῶν τοιούτων δῆλόν ἐστιν ὅτι μοχθηρῷ σημείῳ χρῆται πᾶς ὁ ἐκ τοῦ μὴ λέγεσθαί τι ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ τὸ ἀγνοεῖσθαι ἐκεῖνο ὑπ' αὐτοῦ τεκμαιρόμενος. καὶ δεῖ διὰ πλειόνων παραδειγμάτων ἐξελέγχειν αὐτὸ μοχθηρὸν ὄν· πολλῷ γὰρ αὐτῷ κέχρηνται πολλοί. ἀνακρουστέον οὖν αὐτοὺς προφέροντας τὰ τοιαῦτα, εἰ καὶ ταυτολογήσομεν· οἷον ἐπὶ τῶν ποταμῶν εἴ τις λέγοι τῷ μὴ ὠνομάσθαι ἀγνοεῖσθαι εὐήθη φήσομεν τὸν λόγον· ὅπου γε οὐδὲ Μέλητα τὸν παρὰ τὴν Σμύρναν ῥέοντα ὠνόμακε ποταμόν, τὴν ὑπὸ τῶν πλείστων λεγομένην αὐτοῦ πατρίδα, Ἕρμον ποταμὸν καὶ Ὕλλον ὀνομάζων, οὐδὲ Πακτωλὸν τὸν εἰς ταὐτὸ τούτοις ῥεῖθρον ἐμβάλλοντα, τὴν δ' ἀρχὴν ἀπὸ τοῦ Τμώλου ἔχοντα οὐ μέμνηται· οὐδ' αὐτὴν Σμύρναν λέγει, οὐδὲ τὰς ἄλλας τῶν Ἰώνων πόλεις καὶ τῶν Αἰολέων τὰς πλείστας, Μίλητον λέγων καὶ Λέσβον καὶ Τένεδον, οὐδὲ Ληθαῖον τὸν παρὰ Μαγνησίαν ῥέοντα οὐδὲ δὴ Μαρσύαν τοὺς εἰς τὸν Μαίανδρον ἐκδιδόντας, ἐκεῖνον ὀνομάζων καὶ πρὸς τούτοις „Ῥῆσόν θ' Ἑπτάπορόν τε Κάρησόν τε „Ῥοδίον τε,“ καὶ τοὺς ἄλλους, ὧν οἱ πλείους ὀχετῶν οὐκ εἰσι μείζους. πολλάς τε χώρας ὀνομάζων καὶ πόλεις τοτὲ μὲν καὶ τοὺς ποταμοὺς καὶ ὄρη συγκαταλέγει τοτὲ δ' οὔ· τοὺς γοῦν κατὰ τὴν Αἰτωλίαν καὶ τὴν Ἀττικὴν οὐ λέγει οὐδ' ἄλλους πλείους· ἔτι δὲ καὶ τῶν πόρρω μεμνημένος τῶν ἐγγὺς σφόδρα οὐ μέμνηται, οὐ δήπου ἀγνοῶν αὐτοὺς γνωρίμους τοῖς ἄλλοις ὄντας· οὐδὲ δὴ τοὺς ἐγγὺς ἐπίσης, ὧν τοὺς μὲν ὀνομάζει τοὺς δὲ οὔ, οἷον Λυκίους μὲν καὶ Σολύμους, Μι-

9. post ταυτολογήσομεν: τὸν λόγον· 18. post λέγων: καὶ Σάμον

λύας δ' οὔ, οὐδὲ Παμφύλους οὐδὲ Πισίδας· καὶ Παφλαγόνας μὲν καὶ Φρύγας καὶ Μυσούς, Μαριανδυνοὺς δ' οὔ, οὐδὲ Θυνοὺς οὐδὲ Βιθυνοὺς οὐδὲ Βέβρυκας· Ἀμαζόνων τε μέμνηται, Λευκοσύρων δ' οὔ, οὐδὲ Σύρων οὐδὲ Καππαδόκων οὐδὲ Λυκαόνων, Φοίνικας καὶ Αἰγυπτίους καὶ Αἰθίοπας θρυλῶν· καὶ Ἀλή- C.555
ιον μὲν πεδίον λέγει καὶ Ἀρίμους, τὸ δὲ ἔθνος ἐν ᾧ ταῦτα σιγᾷ. ὁ μὲν δὴ τοιοῦτος ἔλεγχος ψευδής ἐστιν, ὁ δ' ἀληθής, ὅταν δείκνυται ψεῦδος λεγόμενόν τι. ἀλλ' οὐδ' ἐν τῷ τοιούτῳ κατορθῶν ἐδείχθη, ὅτε γε ἐθάρρησε πλάσματα λέγειν τοὺς ἀγανοὺς ἱππημολγοὺς [καὶ] γαλακτοφάγους. τοσαῦτα καὶ πρὸς Ἀπολλόδωρον· ἐπάνειμι δὲ ἐπὶ τὴν ἑξῆς περιήγησιν.

Ὑπὲρ μὲν δὴ τῶν περὶ Φαρνακίαν καὶ Τραπε- 28
ζοῦντα τόπων οἱ Τιβαρηνοὶ καὶ Χαλδαῖοι μέχρι τῆς μικρᾶς Ἀρμενίας εἰσίν. αὕτη δ' ἐστὶν εὐδαίμων ἱκανῶς χώρα· δυνάσται δ' αὐτὴν κατεῖχον ἀεί, καθάπερ τὴν Σωφηνήν, τοτὲ μὲν φίλοι τοῖς ἄλλοις Ἀρμενίοις ὄντες τοτὲ δὲ ἰδιοπραγοῦντες· ὑπηκόους δ' εἶχον καὶ τοὺς Χαλδαίους καὶ Τιβαρηνούς, ὥστε μέχρι Τραπεζοῦντος καὶ Φαρνακίας διατείνειν τὴν ἀρχὴν αὐτῶν. αὐξηθεὶς δὲ Μιθριδάτης ὁ Εὐπάτωρ καὶ τῆς Κολχίδος κατέστη κύριος καὶ τούτων ἁπάντων, Ἀντιπάτρου τοῦ Σίσιδος παραχωρήσαντος αὐτῷ. ἐπεμελήθη δὲ οὕτω τῶν τόπων τούτων ὥστε πέντε καὶ ἑβδομήκοντα φρούρια ἐν αὐτοῖς κατεσκευάσατο, οἷσπερ τὴν πλείστην γάζαν * ἐνεχείρισε. τούτων δ' ἦν ἀξιολογώτατα ταῦτα, Ὕδαρα καὶ Βασγοιδάριζα καὶ Σινορία, ἐπιπεφυκὸς τοῖς ὁρίοις τῆς μεγάλης Ἀρμενίας χωρίον, διόπερ Θεοφάνης Συνορίαν παρωνόμασεν. ἡ γὰρ τοῦ Παρυάδρου πᾶσα ὀρεινὴ τοιαύτας ἐπιτηδειότητας ἔχει πολλὰς εὔυδρός τε οὖσα καὶ ὑλώδης καὶ ἀποτόμοις φά-

ραγξι καὶ κρημνοῖς διειλημμένη πολλαχόθεν· ἐτετείχιστο γοῦν ἐνταῦθα τὰ πλεῖστα τῶν γαζοφυλακίων, καὶ δὴ καὶ τὸ τελευταῖον εἰς ταύτας κατέφυγε τὰς ἐσχατιὰς τῆς Ποντικῆς βασιλείας ὁ Μιθριδάτης ἐπιόντος Πομπηίου, καὶ τῆς Ἀκιλισηνῆς κατὰ Δάστειρα εὔυδρον ὄρος καταλαβόμενος (πλησίον δ' ἦν καὶ ὁ Εὐφράτης ὁ διορίζων τὴν Ἀκιλισηνὴν ἀπὸ τῆς μικρᾶς Ἀρμενίας) διέτριψε τέως ἕως πολιορκούμενος ἠναγκάσθη φυγεῖν διὰ τῶν ὀρῶν εἰς Κολχίδα κἀκεῖθεν εἰς Βόσπορον. Πομπήιος δὲ περὶ τὸν τόπον τοῦτον πόλιν ἔκτισεν ἐν τῇ μικρᾷ Ἀρμενίᾳ Νικόπολιν, ἣ καὶ νῦν συμμένει καὶ οἰκεῖται καλῶς.

29 Τὴν μὲν οὖν μικρὰν Ἀρμενίαν ἄλλοτ' ἄλλων ἐχόντων, ὡς ἐβούλοντο Ῥωμαῖοι, τὸ τελευταῖον εἶχεν ὁ Ἀρχέλαος. τοὺς δὲ Τιβαρηνοὺς καὶ Χαλδαίους μέχρι Κολχίδος καὶ Φαρνακίας καὶ Τραπεζοῦντος ἔχει Πυθοδωρίς, γυνὴ σώφρων καὶ δυνατὴ προΐστασθαι πραγμάτων. ἔστι δὲ θυγάτηρ Πυθοδώρου τοῦ Τραλ-
C.556 λιανοῦ, γυνὴ δ' ἐγένετο Πολέμωνος καὶ συνεβασίλευσεν ἐκείνῳ χρόνον τινά, εἶτα διεδέξατο τὴν ἀρχήν, τελευτήσαντος ἐν τοῖς Ἀσπουργιανοῖς καλουμένοις τῶν περὶ τὴν Σινδικὴν βαρβάρων· δυεῖν δ' ἐκ τοῦ Πολέμωνος ὄντων υἱῶν καὶ θυγατρὸς ἡ μὲν ἐδόθη Κότυϊ τῷ Σαπαίῳ, δολοφονηθέντος δὲ ἐχήρευσε παῖδας ἔχουσα ἐξ αὐτοῦ· δυναστεύει δ' ὁ πρεσβύτατος αὐτῶν· τῶν δὲ τῆς Πυθοδωρίδος υἱῶν ὁ μὲν ἰδιώτης συνδιῴκει τῇ μητρὶ τὴν ἀρχήν, ὁ δὲ νεωστὶ καθέσταται τῆς μεγάλης Ἀρμενίας βασιλεύς. αὐτὴ δὲ συνῴκησεν Ἀρχελάῳ καὶ συνέμεινεν ἐκείνῳ μέχρι τέλους, νῦν δὲ χηρεύει, τά τε λεχθέντα ἔχουσα χωρία καὶ ἄλλα ἐκείνων χαριέστερα, περὶ ὧν ἐφεξῆς ἐροῦμεν.

30 Τῇ γὰρ Φαρνακίᾳ συνεχής ἐστιν ἡ Σιδήνη καὶ ἡ

Θεμίσκυρα. τούτων δ' ἡ Φανάροια ὑπέρκειται μέρος ἔχουσα τοῦ Πόντου τὸ κράτιστον· καὶ γὰρ ἐλαιόφυτός ἐστι καὶ εὔοινος καὶ τὰς ἄλλας ἔχει πάσας ἀρετάς, ἐκ μὲν τῶν ἑῴων μερῶν προβεβλημένη τὸν Παρυάδρην παράλληλον αὐτῇ κατὰ μῆκος, ἐκ δὲ τῶν πρὸς δύσιν τὸν Λίθρον καὶ τὸν Ὄφλιμον. ἔστι δ' αὐλὼν καὶ μῆκος ἔχων ἀξιόλογον καὶ πλάτος· διαρρεῖ δ' αὐτὴν ἐκ μὲν τῆς Ἀρμενίας ὁ Λύκος, ἐκ δὲ τῶν περὶ Ἀμάσειαν στενῶν ὁ Ἶρις· συμβάλλουσι δ' ἀμφότεροι κατὰ μέσον που τὸν αὐλῶνα, ἐπὶ τῇ συμβολῇ δ' ἵδρυται πόλις, ἣν ὁ μὲν πρῶτος ὑποβεβλημένος Εὐπατορίαν ἀφ' αὑτοῦ προσηγόρευσε, Πομπήιος δ' ἡμιτελῆ καταλαβών, προσθεὶς χώραν καὶ οἰκήτορας Μαγνόπολιν προσεῖπεν. αὕτη μὲν οὖν ἐν μέσῳ κεῖται τῷ πεδίῳ, πρὸς αὐτῇ δὲ τῇ παρωρείᾳ τοῦ Παρυάδρου Κάβειρα ἵδρυται, σταδίοις ἑκατὸν καὶ πεντήκοντά που νοτιωτέρα τῆς Μαγνοπόλεως, ὅσον καὶ Ἀμάσεια δυσμικωτέρα αὐτῆς ἐστιν· ἐν δὲ τοῖς Καβείροις τὰ βασίλεια Μιθριδάτου κατεσκεύαστο καὶ ὁ ὑδραλέτης καὶ τὰ ζωγρεῖα καὶ αἱ πλησίον θῆραι καὶ τὰ μέταλλα.

Ἐνταῦθα δὲ καὶ τὸ Καινὸν χωρίον προσαγορευ- 31
θέν, ἐρυμνὴ καὶ ἀπότομος πέτρα, διέχουσα τῶν Καβείρων ἔλαττον ἢ διακοσίους σταδίους· ἔχει δ' ἐπὶ τῇ κορυφῇ πηγὴν ἀναβάλλουσαν πολὺ ὕδωρ, πρός τε τῇ ῥίζῃ ποταμὸν καὶ φάραγγα βαθεῖαν· τὸ δ' ὕψος ἐξαίσιον τῆς πέτρας ἐστὶ * τοῦ αὐχένος, ὥστ' ἀπολιόρκητός ἐστι· τετείχισται δὲ θαυμαστῶς πλὴν ὅσον οἱ Ῥωμαῖοι κατέσπασαν· οὕτω δ' ἐστὶν ἅπασα ἡ κύκλῳ κατάδρυμος καὶ ὀρεινὴ καὶ ἄνυδρος, ὥστ' ἐντὸς ἑκατὸν καὶ εἴκοσι σταδίων μὴ εἶναι δυνατὸν στρατοπεδεύ-
σασθαι. ἐνταῦθα μὲν ἦν τῷ Μιθριδάτῃ τὰ τιμιώτατα C.557
τῶν κειμηλίων, ἃ νῦν ἐν τῷ Καπιτωλίῳ κεῖται Πομ-

πηίου ἀναθέντος. ταύτην δὴ τὴν χώραν ἔχει πᾶσαν ἡ Πυθοδωρὶς προσεχῆ οὖσαν τῇ βαρβάρῳ τῇ ὑπ' αὐτῆς κατεχομένῃ, καὶ τὴν Ζηλῖτιν καὶ Μεγαλοπολῖτιν. τὰ δὲ Κάβειρα Πομπηίου σκευάσαντος εἰς πόλιν καὶ καλέσαντος Διόσπολιν, ἐκείνη προσκατεσκεύασε καὶ Σεβαστὴν μετωνόμασε, βασιλείῳ τε τῇ πόλει χρῆται. ἔχει δὲ καὶ τὸ ἱερὸν Μηνὸς Φαρνάκου καλούμενον, τὴν Ἀμερίαν κωμόπολιν πολλοὺς ἱεροδούλους ἔχουσαν καὶ χώραν ἱεράν, ἣν ὁ ἱερώμενος ἀεὶ καρποῦται. ἐτίμησαν δ' οἱ βασιλεῖς τὸ ἱερὸν τοῦτο οὕτως εἰς ὑπερβολὴν ὥστε τὸν βασιλικὸν καλούμενον ὅρκον τοῦτον ἀπέφηναν „τύχην βασιλέως“ καὶ „Μῆνα Φαρνάκου.“ ἔστι δὲ καὶ τοῦτο τῆς σελήνης τὸ ἱερόν, καθάπερ τὸ ἐν Ἀλβανοῖς καὶ τὰ ἐν Φρυγίᾳ, τό τε τοῦ Μηνὸς ἐν τῷ ὁμωνύμῳ τόπῳ καὶ τὸ τοῦ Ἀσκαίου τὸ πρὸς Ἀντιοχείᾳ τῇ πρὸς Πισιδίᾳ καὶ τὸ ἐν τῇ χώρᾳ τῶν Ἀντιοχέων.

32 Ὑπὲρ δὲ τῆς Φαναροίας ἐστὶ τὰ Κόμανα τὰ ἐν τῷ Πόντῳ, ὁμώνυμα τοῖς ἐν τῇ μεγάλῃ Καππαδοκίᾳ καὶ τῇ αὐτῇ θεῷ καθιερωμένα, ἀφιδρυθέντα ἐκεῖθεν, σχεδὸν δέ τι καὶ τῇ ἀγωγῇ παραπλησίᾳ κεχρημένα τῶν τε ἱερουργιῶν καὶ τῶν θεοφοριῶν καὶ τῆς περὶ τοὺς ἱερέας τιμῆς, καὶ μάλιστα ἐπὶ τῶν πρὸ τοῦ βασιλέων, ἡνίκα δὶς τοῦ ἔτους κατὰ τὰς ἐξόδους λεγομένας τῆς θεοῦ διάδημα φορῶν ἐτύγχανεν ὁ ἱερεύς, καὶ ἦν δεύτερος κατὰ τιμὴν μετὰ τὸν βασιλέα.

33 Ἐμνήσθημεν δὲ πρότερον Δορυλάου τε τοῦ τακτικοῦ, ὃς ἦν πρόπαππος τῆς μητρὸς ἡμῶν, καὶ ἄλλου Δορυλάου, ὃς ἦν ἐκείνου ἀδελφιδοῦς υἱὸς δὲ Φιλεταίρου, καὶ διότι ἐκεῖνος τῶν ἄλλων τιμῶν παρὰ τοῦ Εὐπάτορος τῶν μεγίστων τυχὼν καὶ δὴ καὶ τῆς ἐν Κομάνοις ἱερωσύνης ἐφωράθη τὴν βασιλείαν ἀφιστὰς Ῥωμαίοις· καταλυθέντος δ' ἐκείνου συνδιεβλήθη καὶ

τὸ γένος. ὀψὲ δὲ Μοαφέρνης ὁ θεῖος τῆς μητρὸς ἡμῶν
εἰς ἐπιφάνειαν ἦλθεν ἤδη πρὸς καταλύσει τῆς βασι-
λείας, καὶ πάλιν τῷ βασιλεῖ συνητύχησαν καὶ αὐτὸς
καὶ οἱ ἐκείνου φίλοι, πλὴν εἴ τινες ἔφθησαν προαπο-
στάντες αὐτοῦ, καθάπερ ὁ πάππος ἡμῶν ὁ πρὸς αὐ-
τῆς, ὅς ἰδὼν τὰ τοῦ βασιλέως κακῶς φερόμενα ἐν τῷ
πρὸς Λεύκολλον πολέμῳ, καὶ ἅμα ἠλλοτριωμένος αὐ-
τοῦ δι' ὀργήν, ὅτι ἀνεψιὸν αὐτοῦ Τίβιον καὶ υἱὸν ἐκεί-
νου Θεόφιλον ἐτύγχανεν ἀπεκτονὼς νεωστί, ὥρμησε
τιμωρεῖν ἐκείνοις τε καὶ ἑαυτῷ, καὶ λαβὼν παρὰ τοῦ
Λευκόλλου πίστεις ἀφίστησιν αὐτῷ πεντεκαίδεκα φρού- C.558
ρια· καὶ ἐπαγγελίαι μὲν ἐγένοντο ἀντὶ τούτων μεγά-
λαι, ἐπελθὼν δὲ Πομπήιος ὁ διαδεξάμενος τὸν πόλε-
μον πάντας τοὺς ἐκείνῳ τι χαρισαμένους ἐχθροὺς ὑπέ-
λαβε διὰ τὴν γενομένην αὐτῷ πρὸς ἐκεῖνον ἀπέχθειαν,
διαπολεμήσας δὲ καὶ ἐπανελθὼν οἴκαδε ἐξενίκησεν
ὥστε τὰς τιμάς, ἃς ὑπέσχετο ὁ Λεύκολλος τῶν Ποντι-
κῶν τισι, μὴ κυρῶσαι τὴν σύγκλητον· ἄδικον γὰρ
εἶναι κατορθώσαντος ἑτέρου τὸν πόλεμον τὰ βρα-
βεῖα ἐπ' ἄλλῳ γενέσθαι καὶ τὴν τῶν ἀριστείων δια-
νομήν.

Ἐπὶ μὲν οὖν τῶν βασιλέων οὕτω τὰ Κόμανα διῴ- 34
κεῖτο ὡς εἴρηται, παραλαβὼν δὲ Πομπήιος τὴν ἐξου-
σίαν Ἀρχέλαον ἐπέστησεν ἱερέα καὶ προσώρισεν αὐτῷ
χώραν δίσχοινον κύκλῳ (τοῦτο δ' ἔστιν ἑξήκοντα στά-
διοι) πρὸς τῇ ἱερᾷ, προστάξας τοῖς ἐνοικοῦσι πειθαρ-
χεῖν αὐτῷ· τούτων μὲν οὖν ἡγεμὼν ἦν καὶ τῶν τὴν
πόλιν οἰκούντων ἱεροδούλων κύριος πλὴν τοῦ πιπρά-
σκειν· ἦσαν δὲ οὐκ ἐλάττους οὐδ' ἐνταῦθα τῶν ἑξα-
κισχιλίων. ἦν δ' οὗτος Ἀρχέλαος υἱὸς μὲν τοῦ ὑπὸ

---

5. post πρὸς: πατρὸς

Σύλλα καὶ τῆς συγκλήτου τιμηθέντος, φίλος δὲ Γα-
βινίου τῶν ὑπατικῶν τινος. ἐκείνου δὲ πεμφθέντος
εἰς Συρίαν ἧκε καὶ αὐτὸς ἐπ' ἐλπίδι τοῦ κοινωνήσειν
αὐτῷ παρασκευαζομένῳ πρὸς τὸν Παρθικὸν πόλεμον,
οὐκ ἐπιτρεπούσης δὲ τῆς συγκλήτου ταύτην ἀφεὶς τὴν
ἐλπίδα ἄλλην εὕρατο μείζω. ἐτύγχανε γὰρ Πτολεμαῖος
ὁ τῆς Κλεοπάτρας πατὴρ ὑπὸ τῶν Αἰγυπτίων ἐκβε-
βλημένος, θυγάτηρ δ' αὐτοῦ κατεῖχε τὴν βασιλείαν,
ἀδελφὴ πρεσβυτέρα τῆς Κλεοπάτρας· ταύτῃ ζητου-
μένου ἀνδρὸς βασιλικοῦ γένους ἐνεχείρισεν ἑαυτὸν
τοῖς συμπράττουσι, προσποιησάμενος Μιθριδάτου τοῦ
Εὐπάτορος υἱὸς [εἶναι], καὶ παραδεχθεὶς ἐβασίλευσεν
ἓξ μῆνας. τοῦτον μὲν οὖν ὁ Γαβίνιος ἀνεῖλεν ἐν πα-
ρατάξει κατάγων τὸν Πτολεμαῖον. υἱὸς δ' αὐτοῦ
τὴν ἱερωσύνην παρέλαβεν· εἶθ' ὕστερον Λυκομήδης,
ᾧ καὶ τετράσχοινος ἄλλη προσετέθη· καταλυθέντος δὲ
καὶ τούτου νῦν ἔχει Δύτευτος υἱὸς Ἀδιατόριγος, ὃς
δοκεῖ ταύτης τυγχάνειν τῆς τιμῆς παρὰ Καίσαρος τοῦ
Σεβαστοῦ δι' ἀρετήν. ὁ μὲν γὰρ Καῖσαρ θριαμβεύ-
σας τὸν Ἀδιατόριγα μετὰ παίδων καὶ γυναικὸς ἔγνω
ἀναιρεῖν μετὰ τοῦ πρεσβυτάτου τῶν παίδων (ἦν δὲ
πρεσβύτατος οὗτος), τοῦ δὲ δευτέρου τῶν ἀδελφῶν
αὐτοῦ φήσαντος εἶναι πρεσβυτάτου πρὸς τοὺς ἀπά-
γοντας στρατιώτας, ἔρις ἦν ἀμφοτέροις πολὺν χρό-
C.559 νον ἕως οἱ γονεῖς ἔπεισαν τὸν Δύτευτον παραχωρῆ-
σαι τῷ νεωτέρῳ τῆς νίκης· αὐτὸν γὰρ ἐν ἡλικίᾳ μᾶλ-
λον ὄντα ἐπιτηδειότερον κηδεμόνα τῇ μητρὶ ἔσεσθαι
καὶ τῷ λειπομένῳ ἀδελφῷ· οὕτω δὲ τὸν μὲν συναπο-
θανεῖν τῷ πατρί, τοῦτον δὲ σωθῆναι καὶ τυχεῖν τῆς
τιμῆς ταύτης. αἰσθόμενος γάρ, ὡς ἔοικε, Καῖσαρ
ἤδη τῶν ἀνθρώπων ἀνῃρημένων ἠχθέσθη, καὶ τούς

γε σωζομένους εὐεργεσίας καὶ ἐπιμελείας ἀξίους ὑπέλαβε δοὺς αὐτοῖς ταύτην τὴν τιμήν.

Τὰ μὲν οὖν Κόμανα εὐανδρεῖ καὶ ἔστιν ἐμπόριον 36 τοῖς ἀπὸ τῆς Ἀρμενίας ἀξιόλογον· συνέρχονται δὲ κατὰ τὰς ἐξόδους τῆς θεοῦ πανταχόθεν ἔκ τε τῶν πόλεων καὶ τῆς χώρας ἄνδρες ὁμοῦ γυναιξὶν ἐπὶ τὴν ἑορτήν· καὶ ἄλλοι δὲ κατ' εὐχὴν ἀεί τινες ἐπιδημοῦσι θυσίας ἐπιτελοῦντες τῇ θεῷ. καί εἰσιν ἁβροδίαιτοι οἱ ἐνοικοῦντες, καὶ οἰνόφυτα τὰ κτήματα αὐτῶν ἐστι πάντα, καὶ πλῆθος γυναικῶν τῶν ἐργαζομένων ἀπὸ τοῦ σώματος, ὧν αἱ πλείους εἰσὶν ἱεραί. τρόπον γὰρ δή τινα μικρὰ Κόρινθός ἐστιν ἡ πόλις· καὶ γὰρ ἐκεῖ διὰ τὸ πλῆθος τῶν ἑταιρῶν, αἳ τῆς Ἀφροδίτης ἦσαν ἱεραί, πολὺς ἦν ὁ ἐπιδημῶν καὶ ἐνεορτάζων τῷ τόπῳ· οἱ δ' ἐμπορικοὶ καὶ στρατιωτικοὶ τελέως ἐξανηλίσκοντο, ὥστ' ἐπ' αὐτῶν καὶ παροιμίαν ἐκπεσεῖν τοιαύτην „οὐ παντὸς ἀνδρὸς εἰς Κόρινθόν ἐσθ' ὁ πλοῦς.“ τὰ μὲν δὴ Κόμανα τοιαῦτα.

Τὴν δὲ κύκλῳ πᾶσαν ἔχει Πυθοδωρίς, ἧς ἥ τε 37 Φανάροια ἔστι καὶ ἡ Ζηλῖτις καὶ ἡ Μεγαλοπολῖτις. περὶ μὲν Φαναροίας εἴρηται· ἡ δὲ Ζηλῖτις ἔχει πόλιν Ζῆλα ἐπὶ χώματι Σεμιράμιδος τετειχισμένην, ἔχουσαν τὸ ἱερὸν τῆς Ἀναΐτιδος, ἥνπερ καὶ οἱ Ἀρμένιοι σέβονται. αἱ μὲν οὖν ἱεροποιίαι μετὰ μείζονος ἁγιστείας ἐνταῦθα συντελοῦνται, καὶ τοὺς ὅρκους περὶ τῶν μεγίστων ἐνταῦθα Ποντικοὶ πάντες ποιοῦνται· τὸ δὲ πλῆθος τῶν ἱεροδούλων καὶ αἱ τῶν ἱερέων τιμαὶ παρὰ μὲν τοῖς βασιλεῦσι τὸν αὐτὸν εἶχον τύπον ὅνπερ προείπομεν, νυνὶ δὲ ἐπὶ τῇ Πυθοδωρίδι πάντ' ἐστίν. ἐκάκωσαν δὲ πολλοὶ καὶ ἐμείωσαν τό τε πλῆθος τῶν ἱεροδούλων καὶ τὴν ἄλλην εὐπορίαν. ἐμειώθη δὲ καὶ ἡ παρακειμένη χώρα μερισθεῖσα εἰς πλείους δυναστείας,

ἡ λεγομένη Ζηλῖτις. τὸ παλαιὸν μὲν γὰρ οἱ βασιλεῖς οὐχ ὡς πόλιν ἀλλ' ὡς ἱερὸν διῴκουν τῶν Περσικῶν θεῶν τὰ Ζῆλα, καὶ ἦν ὁ ἱερεὺς κύριος τῶν πάντων· ᾠκεῖτο δ' ὑπὸ τοῦ πλήθους τῶν ἱεροδούλων καὶ τοῦ ἱερέως ὄντος ἐν περιουσίᾳ μεγάλῃ, καὶ * τοῖς περὶ αὐτὸν οὐκ ὀλίγοις χώρα τε ὑπέκειτο ἱερὰ καὶ ἦν τοῦ ἱερέως. C.560 Πομπήιος δὲ πολλὰς ἐπαρχίας προσώρισε τῷ τόπῳ καὶ πόλιν ὠνόμασε καὶ ταύτην καὶ τὴν Μεγαλόπολιν, συνθεὶς ταύτην τε εἰς ἓν τήν τε Κουλουπηνὴν καὶ τὴν Καμισηνήν, ὁμόρους οὔσας τῇ τε μικρᾷ Ἀρμενίᾳ καὶ τῇ Λαειανσηνῇ, ἐχούσας ὀρυκτοὺς ἅλας καὶ ἔρυμα ἀρχαῖον τὰ Κάμισα νῦν κατεσπασμένον· οἱ δὲ μετὰ ταῦτα ἡγεμόνες τῶν Ῥωμαίων τῶν δυεῖν πολιτευμάτων τούτων τὰ μὲν τοῖς Κομάνων ἱερεῦσι προσένειμαν, τὰ δὲ τῷ Ζήλων ἱερεῖ, τὰ δ' Ἀτεπόριγι, δυνάστῃ τινὶ τοῦ τετραρχικοῦ γένους τῶν Γαλατῶν ἀνδρί· τελευτήσαντος δ' ἐκείνου ταύτην μὲν τὴν μερίδα οὐ πολλὴν οὖσαν ὑπὸ Ῥωμαίοις εἶναι συμβαίνει καλουμένην ἐπαρχίαν (καὶ ἔστι σύστημα καθ' αὑτὸ τὸ πολίχνιον συνοικισάντων τὰ Κάρανα, ἀφ' οὗ καὶ ἡ χώρα Καρανῖτις λέγεται), τὰ δὲ λοιπὰ ἔχει Πυθοδωρὶς καὶ ὁ Δύτευτος.

38 Λείπεται δὲ τοῦ Πόντου [τὰ] μεταξὺ ταύτης τε τῆς χώρας καὶ τῆς Ἀμισηνῶν καὶ Σινωπέων, πρός τε τὴν Καππαδοκίαν συντείνοντα καὶ Γαλάτας καὶ Παφλαγόνας. μετὰ μὲν οὖν τὴν Ἀμισηνῶν μέχρι τοῦ Ἅλυος ἡ Φαζημωνῖτίς ἐστιν, ἣν Πομπήιος Νεαπολῖτιν ὠνόμασε κατὰ Φαζημῶνα κώμην, [πόλιν] ἀποδείξας τὴν κατοικίαν καὶ προσαγορεύσας Νεάπολιν. ταύτης δὲ τῆς χώρας τὸ μὲν προσάρκτιον πλευρὸν ἡ

1. post Ζηλῖτις: ᾗ ἔχει πόλιν Ζῆλα ἐπὶ χώματι

Γαζηλωνῖτις συγκλείει καὶ ἡ τῶν Ἀμισηνῶν, τὸ δὲ ἑσπέριον ὁ Ἅλυς, τὸ δ' ἑῷον ἡ Φανάροια, τὸ δὲ λοιπὸν ἡ ἡμετέρα χώρα ἡ τῶν Ἀμασέων, πολὺ πασῶν πλείστη καὶ ἀρίστη. τὸ μὲν οὖν πρὸς τῇ Φαναροίᾳ μέρος τῆς Φαζημωνίτιδος λίμνη κατέχει πελαγία τὸ μέγεθος ἡ Στιφάνη καλουμένη, πολύοψος καὶ κύκλῳ νομὰς ἀφθόνους ἔχουσα καὶ παντοδαπάς· ἐπίκειται δ' αὐτῇ φρούριον ἐρυμνὸν ἔρημον νῦν Ἰκίζαρι, καὶ πλησίον βασίλειον κατεσκαμμένον· ἡ δὲ λοιπὴ ψιλὴ τὸ πλέον καὶ σιτοφόρος χώρα. ὑπέρκειται δὲ τῆς τῶν Ἀμασέων τά τε θερμὰ ὕδατα τῶν Φαζημωνιτῶν ὑγιεινὰ σφόδρα, καὶ τὸ Σαγύλιον ἐπὶ ὄρους ὀρθίου καὶ ὑψηλοῦ πρὸς ὀξεῖαν ἀνατείνοντος ἄκραν ἔρυμα ἱδρυμένον ἔχον καὶ ὑδρεῖον δαψιλές, ὃ νῦν ὠλιγώρηται, τοῖς δὲ βασιλεῦσιν ἦν χρήσιμον εἰς πολλά. ἐνταῦθα δὲ ἑάλω καὶ διεφθάρη ὑπὸ τῶν Φαρνάκου τοῦ βασιλέως παίδων Ἀρσάκης, δυναστεύων καὶ νεωτερίζων, ἐπιτρέψαντος οὐδενὸς τῶν ἡγεμόνων· ἑάλω δὲ οὐ βίᾳ τοῦ ἐρύματος ληφθέντος ὑπὸ Πολέμωνος καὶ Λυκομήδους, βασιλέων ἀμφοῖν, ἀλλὰ λιμῷ· ἀνέφυγε γὰρ εἰς τὸ ὄρος παρασκευῆς χωρὶς εἰργόμενος τῶν πεδίων, εὗρε δὲ καὶ τὰ ὑδρεῖα ἐμπεφραγμένα πέτραις ἠλιβάτοις· οὕτω γὰρ διετέτακτο Πομπήιος, κατασπᾶν κελεύσας C.561
τὰ φρούρια καὶ μὴ ἐᾶν χρήσιμα τοῖς ἀναφεύγειν εἰς αὐτὰ βουλομένοις λῃστηρίων χάριν. ἐκεῖνος μὲν οὖν οὕτω διέταξε τὴν Φαζημωνῖτιν, οἱ δ' ὕστερον βασιλεῦσι καὶ ταύτην ἔνειμαν.

Ἡ δ' ἡμετέρα πόλις κεῖται μὲν ἐν φάραγγι βαθείᾳ 39
καὶ μεγάλῃ, δι' ἧς ὁ Ἶρις φέρεται ποταμός, κατεσκεύασται δὲ θαυμαστῶς προνοίᾳ τε καὶ φύσει, πόλεως τε ἅμα καὶ φρουρίου παρέχεσθαι χρείαν δυναμένη· πέτρα γὰρ ὑψηλὴ καὶ περίκρημνος κατερρωγυῖα ἐπὶ τὸν

ποταμόν, τῇ μὲν ἔχουσα τὸ τεῖχος ἐπὶ τῷ χείλει τοῦ ποταμοῦ καθ᾽ ὃ ἡ πόλις συνῴκισται, τῇ δ᾽ ἀνατρέχον ἑκατέρωθεν ἐπὶ τὰς κορυφάς· δύο δ᾽ εἰσὶ συμφυεῖς ἀλλήλαις πεπυργωμέναι παγκάλως· ἐν δὲ τῷ περιβόλῳ τούτῳ βασίλειά τ᾽ ἐστὶ καὶ μνήματα βασιλέων· αἱ κορυφαὶ δ᾽ ἔχουσιν αὐχένα παντάπασι στενόν, πέντε ἢ ἓξ σταδίων ἑκατέρωθεν τὸ ὕψος ἀπὸ τῆς ποταμίας ἀναβαίνοντι καὶ τῶν προαστείων· ἀπὸ δὲ τοῦ αὐχένος ἐπὶ τὰς κορυφὰς ἄλλη σταδιαία λείπεται πρόσβασις ὀξεῖα καὶ πάσης βίας κρείττων· ἔχει δὲ καὶ ὑδρεῖα ἐντὸς ἀναφαίρετα, συρίγγων τετμημένων δυεῖν, τῆς μὲν ἐπὶ τὸν ποταμὸν τῆς δ᾽ ἐπὶ τὸν αὐχένα· ἐπέζευκται δὲ γέφυρα τῷ ποταμῷ μία μὲν ἀπὸ τῆς πόλεως ἐπὶ τὸ προάστειον, ἄλλη δ᾽ ἀπὸ τοῦ προαστείου πρὸς τὴν ἔξω χώραν· κατὰ γὰρ τὴν γέφυραν ταύτην ἀπολήγει τὸ ὄρος τὸ τῆς πέτρας ὑπερκείμενον. αὐλὼν δ᾽ ἐστὶν ἀπὸ τοῦ ποταμοῦ διήκων οὐ πλατὺς τὸ πρῶτον τελέως, ἔπειτα πλατύνεται καὶ ποιεῖ τὸ Χιλιόκωμον καλούμενον πεδίον· εἶθ᾽ ἡ Διακοπηνὴ καὶ ἡ Πιμωλισηνὴ χώρα πᾶσα εὐδαίμων μέχρι τοῦ Ἅλυος. ταῦτα μὲν τὰ ἀρκτικὰ μέρη τῆς τῶν Ἀμασέων χώρας, μῆκος ὅσον πεντακοσίων σταδίων· ἔπειθ᾽ ἑξῆς ἡ λοιπὴ πολὺ ταύτης ἐπιμηκεστέρα μέχρι τοῦ Βαβανόμου καὶ τῆς Ξιμήνης, ἥπερ καὶ αὐτὴ καθήκει μέχρι πρὸς τὸν Ἅλυν· τοῦτο μὲν δὴ τὸ μῆκος, πλάτος δὲ τὸ ἀπὸ τῶν ἄρκτων πρὸς νότον ἐπί τε τὴν Ζηλῖτιν καὶ τὴν μεγάλην Καππαδοκίαν μέχρι τῶν Τροκμῶν. εἰσὶ δ᾽ ἐν τῇ Ξιμήνῃ ἅλαι ὀρυκτῶν ἁλῶν, ἀφ᾽ ὧν εἰκάζουσιν εἰρῆσθαι Ἅλυν τὸν ποταμόν. ἔστι δὲ καὶ ἐρύματα πλείω κατεσκαμμένα ἐν τῇ ἡμετέρᾳ χώρᾳ καὶ ἔρημος γῆ πολλὴ διὰ τὸν Μιθριδατικὸν πόλεμον. ἔστι μέντοι πᾶσα μὲν εὔδενδρος, ἡ δ᾽ ἱππόβοτος καὶ τοῖς ἄλλοις θρέμ-

μασι πρόσφορος· ἅπασα δ' οἰκήσιμος καλῶς. ἐδόθη δὲ καὶ ἡ Ἀμάσεια βασιλεῦσι, νῦν δ' ἐπαρχία ἐστί.

Λοιπὴ δ' ἐστὶν ἡ ἐκτὸς Ἅλυος χώρα τῆς Ποντικῆς 40
ἐπαρχίας ἡ περὶ τὸν Ὄλγασσυν, συναφὴς τῇ Σινωπίδι. C.562
ἔστι δ' ὁ Ὄλγασσυς ὄρος σφόδρα ὑψηλὸν καὶ δύσβατον· καὶ ἱερὰ τοῦ ὄρους τούτου πανταχοῦ καθιδρυμένα ἔχουσιν οἱ Παφλαγόνες. περίκειται δ' ἱκανῶς χώρα ἀγαθὴ ἥ τε Βλαηνὴ καὶ ἡ Δομανῖτις, δι' ἧς Ἀμνίας ῥεῖ ποταμός. ἐνταῦθα Μιθριδάτης ὁ Εὐπάτωρ τὰς Νικομήδους τοῦ Βιθυνοῦ δυνάμεις ἄρδην ἠφάνισεν, οὐκ αὐτὸς παρατυχὼν ἀλλὰ διὰ τῶν στρατηγῶν· καὶ ὁ μὲν φεύγων μετ' ὀλίγων εἰς τὴν οἰκείαν ἐσώθη κἀκεῖθεν εἰς Ἰταλίαν ἔπλευσεν, ὁ δ' ἠκολούθησε καὶ τήν τε Βιθυνίαν εἷλεν ἐξ ἐφόδου καὶ τὴν Ἀσίαν κατέσχε μέχρι Καρίας καὶ Λυκίας. κἀνταῦθα δ' ἀπεδείχθη πόλις ἡ Πομπηιούπολις· ἐν δὲ τῇ πόλει ταύτῃ τὸ σανδαρακουργεῖον οὐ πολὺ ἄπωθεν Πιμωλίσων, φρουρίου βασιλικοῦ κατεσκαμμένου, ἀφ' οὗ ἡ χώρα ἡ ἑκατέρωθεν τοῦ ποταμοῦ καλεῖται Πιμωλισηνή. τὸ δὲ σανδαρακουργεῖον ὄρος κοῖλόν ἐστιν ἐκ τῆς μεταλλείας, ὑπεληλυθότων αὐτὸ τῶν ἐργαζομένων διώρυξι μεγάλαις· εἰργάζοντο δὲ δημοσιῶναι μεταλλευταῖς χρώμενοι τοῖς ἀπὸ κακουργίας ἀγοραζομένοις ἀνδραπόδοις· πρὸς γὰρ τῷ ἐπιπόνῳ τοῦ ἔργου καὶ θανάσιμον καὶ δύσοιστον εἶναι τὸν ἀέρα φασὶ τὸν ἐν τοῖς μετάλλοις διὰ τὴν βαρύτητα τῆς τῶν βώλων ὀδμῆς, ὥστε ὠκύμορα εἶναι τὰ σώματα. καὶ δὴ καὶ ἐκλείπεσθαι συμβαίνει πολλάκις τὴν μεταλλείαν διὰ τὸ ἀλυσιτελές, πλειόνων μὲν ἢ διακοσίων ὄντων τῶν ἐργαζομένων, συνεχῶς δὲ νόσοις καὶ φθοραῖς δαπανωμένων. τοσαῦτα καὶ περὶ τοῦ Πόντου εἰρήσθω.

Μετὰ δὲ τὴν Πομπηιούπολιν ἡ λοιπὴ τῆς Παφλα- 41

γονίας ἐστὶ τῆς μεσογαίας μέχρι Βιθυνίας ἰοῦσι πρὸς δύσιν. ταύτης δὲ καίπερ ὀλίγης οὔσης μικρὸν μὲν πρὸ ἡμῶν ἦρχον πλείους, νῦν δ᾽ ἔχουσι Ῥωμαῖοι τοῦ γένους τῶν βασιλέων ἐκλιπόντος. ὀνομάζουσι δ᾽ οὖν τὴν ὅμορον τῇ Βιθυνίᾳ Τιμωνῖτιν καὶ τὴν Γεζατόριγος καὶ Μαρμωλῖτίν τε καὶ Σανισηνὴν καὶ Ποταμίαν· ἦν δέ τις καὶ Κιμιατηνή, ἐν ᾗ τὰ Κιμίατα, φρούριον ἐρυμνόν, ὑποκείμενον τῇ τοῦ Ὀλγάσσυος ὀρεινῇ, ᾧ χρησάμενος ὁρμητηρίῳ Μιθριδάτης ὁ κτίστης προσαγορευθεὶς κατέστη τοῦ Πόντου κύριος, καὶ οἱ ἀπ᾽ αὐτοῦ τὴν διαδοχὴν ἐφύλαξαν μέχρι τοῦ Εὐπάτορος. ὕστατος δὲ τῆς Παφλαγονίας ἦρξε Δηιόταρος, Κάστορος υἱὸς ὁ προσαγορευθεὶς φιλάδελφος, τὸ Μορζέου βασίλειον ἔχων τὰ Γάγγρα πολισμάτιον ἅμα καὶ φρούριον.

42 Εὔδοξος δ᾽ ὀρυκτοὺς ἰχθῦς ἐν Παφλαγονίᾳ λέ-
C.563 γων ἐν ξηροῖς τόποις οὐ διορίζει τὸν τόπον, ἐν ὑγροῖς δὲ περὶ τὴν Ἀσκανίαν λίμνην φησὶ τὴν ὑπὸ Κίῳ, λέγων οὐδὲν σαφές.

Ἐπεὶ δὲ καὶ τὴν ὅμορον τῷ Πόντῳ Παφλαγονίαν ἐκτιθέμεθα, τοῖς δὲ Παφλαγόσιν ὁμοροῦσιν οἱ Βιθυνοὶ πρὸς δύσιν, πειρασόμεθα καὶ τὰ τούτων ἐπελθεῖν· ἔπειτα λαβόντες ἀρχὴν ἄλλην ἔκ τε τούτων καὶ τῶν Παφλαγόνων τὰ ἑξῆς τούτων τὰ πρὸς νότον μέχρι τοῦ Ταύρου συνυφανοῦμεν τὰ παράλληλα τῷ Πόντῳ καὶ τῇ Καππαδοκίᾳ· τοιαύτην γάρ τινα ὑπογράφει τάξιν καὶ μερισμὸν ἡ τῶν τόπων φύσις.

4 Τὴν δὲ Βιθυνίαν ἀπὸ μὲν τῆς ἀνατολῆς ὁρίζουσι Παφλαγόνες τε καὶ Μαριανδυνοὶ καὶ τῶν Ἐπικτήτων τινές, ἀπὸ δὲ τῶν ἄρκτων ἡ Ποντικὴ θάλαττα ἡ ἀπὸ τῶν ἐκβολῶν τοῦ Σαγγαρίου μέχρι τοῦ στόματος τοῦ κατὰ Βυζάντιον καὶ Χαλκηδόνα, ἀπὸ δὲ δύσεως ἡ Προποντίς, πρὸς νότον δ᾽ ἥ τε Μυσία καὶ ἡ ἐπίκτητος κα-

λουμένη Φρυγία, ἡ δ' αὐτὴ καὶ Ἑλλησποντιακὴ Φρυγία καλουμένη.

2 Ταύτης δ' ἐπὶ μὲν τῷ στόματι τοῦ Πόντου Χαλκηδὼν ἵδρυται, Μεγαρέων κτίσμα, καὶ κώμη Χρυσόπολις καὶ τὸ ἱερὸν τὸ Χαλκηδόνιον, ἔχει δ' ἡ χώρα μικρὸν ὑπὲρ τῆς θαλάττης κρήνην *Ἀζαριτίαν, τρέφουσαν κροκοδείλους μικρούς· ἔπειτ' ἐκδέχεται τὴν τῶν Χαλκηδονίων ἠόνα ὁ Ἀστακηνὸς καλούμενος κόλπος, μέρος ὢν τῆς Προποντίδος, ἐν ᾧ ἡ Νικομήδεια ἔκτισται ἐπώνυμος ἑνὸς τῶν Βιθυνικῶν βασιλέων τοῦ κτίσαντος αὐτήν· πολλοὶ δ' ὁμωνύμως ὠνομάσθησαν, καθάπερ Πτολεμαῖοι διὰ τὴν τοῦ πρώτου δόξαν. ἦν δ' ἐν αὐτῷ τῷ κόλπῳ καὶ Ἀστακὸς πόλις, Μεγαρέων κτίσμα καὶ Ἀθηναίων καὶ μετὰ ταῦτα Δοιδαλσοῦ, ἀφ' ἧς καὶ ὁ κόλπος ὠνομάσθη· κατεσκάφη δ' ὑπὸ Λυσιμάχου· τοὺς δ' οἰκήτορας μετήγαγεν εἰς Νικομήδειαν ὁ κτίσας αὐτήν.

3 Τῷ δ' Ἀστακηνῷ κόλπος ἄλλος συνεχής ἐστιν, εἰσέχων μᾶλλον πρὸς ἀνίσχοντα ἥλιον, ἐν ᾧ Προυσιὰς ἔστιν ἡ Κίος πρότερον ὀνομασθεῖσα· κατέσκαψε δὲ τὴν Κίον Φίλιππος, ὁ Δημητρίου μὲν υἱὸς Περσέως δὲ πατήρ, ἔδωκε δὲ Προυσίᾳ τῷ Ζήλα, συγκατασκάψαντι καὶ ταύτην καὶ Μύρλειαν ἀστυγείτονα πόλιν, πλησίον δὲ καὶ Προύσης οὖσαν· ἀναλαβὼν δ' ἐκεῖνος ἐκ τῶν ἐρειπίων αὐτὰς ἐπωνόμασεν ἀφ' ἑαυτοῦ μὲν Προυσιάδα πόλιν τὴν Κίον, τὴν δὲ Μύρλειαν Ἀπάμειαν ἀπὸ τῆς γυναικός. οὗτος δ' ἔστιν ὁ Προυσίας ὁ καὶ Ἀννίβαν δεξάμενος ἀναχωρήσαντα δεῦρο μετὰ τὴν Ἀντιόχου ἧτταν, καὶ τῆς ἐφ' Ἑλλησπόντῳ Φρυγίας ἀναστὰς κατὰ συμβάσεις τοῖς Ἀτταλικοῖς, ἣν οἱ μὲν πρότερον ἐκάλουν μικρὰν Φρυγίαν, ἐκεῖνοι δ' ἐπίκτητον ὠνόμασαν· ὑπέρκειται δὲ τῆς Προυσιάδος ὄρος C.564

ὃ καλοῦσιν Ἀργανθώνιον. ἐνταῦθα δὲ μυθεύουσι τὸν Ὕλαν ἕνα τῶν Ἡρακλέους ἑταίρων συμπλεύσαντα ἐπὶ τῆς Ἀργοῦς αὐτῷ ἐξιόντα δὲ ἐπὶ ὑδρείαν ὑπὸ νυμφῶν ἁρπαγῆναι· Κίον δὲ καὶ τοῦτον Ἡρακλέους ἑταῖρον καὶ σύμπλουν ἐπανελθόντα ἐκ Κόλχων αὐτόθι καταμεῖναι καὶ κτίσαι τὴν πόλιν ἐπώνυμον αὐτοῦ. καὶ νῦν δ' ἔτι ἑορτή τις ἄγεται παρὰ τοῖς Προυσιεῦσιν καὶ ὀρειβασία θιασευόντων καὶ καλούντων Ὕλαν, ὡς ἂν κατὰ ζήτησιν τὴν ἐκείνου πεποιημένων τὴν ἐπὶ τὰς ὕλας ἔξοδον. πολιτευσάμενοι δὲ πρὸς Ῥωμαίους οἱ Προυσιεῖς εὐνοϊκῶς ἐλευθερίας ἔτυχον. οἱ δ' Ἀπαμεῖς ἀποικίαν ἐδέξαντο Ῥωμαίων. Προῦσα δὲ ἐπὶ τῷ Ὀλύμπῳ ἵδρυται τῷ Μυσίῳ, πόλις εὐνομουμένη, τοῖς τε Φρυξὶν ὅμορος καὶ τοῖς Μυσοῖς, κτίσμα Προυσίου τοῦ πρὸς * Κροῖσον πολεμήσαντος.

4 Διορίσαι δὲ τοὺς ὅρους χαλεπὸν τούς τε Βιθυνῶν καὶ Φρυγῶν καὶ Μυσῶν καὶ ἔτι Δολιόνων τῶν περὶ Κύζικον καὶ Μυγδόνων καὶ Τρώων· καὶ διότι μὲν εἶναι δεῖ ἕκαστον φῦλον χωρὶς ὁμολογεῖται (καὶ ἐπί γε τῶν Φρυγῶν καὶ τῶν Μυσῶν καὶ παροιμιάζονται „χωρὶς τὰ Μυσῶν καὶ Φρυγῶν ὁρίσματα“), διορίσαι δὲ χαλεπόν. αἴτιον δὲ τὸ τοὺς ἐπήλυδας βαρβάρους καὶ στρατιώτας ὄντας μὴ βεβαίως κατέχειν τὴν κρατηθεῖσαν, ἀλλὰ πλανήτας εἶναι τὸ πλέον ἐκβάλλοντας καὶ ἐκβαλλομένους. ἅπαντα δὲ τὰ ἔθνη ταῦτα Θρᾴκιά τις εἰκάζοι ἂν διὰ τὸ τὴν περαίαν νέμεσθαι τούτους καὶ διὰ τὸ μὴ πολὺ ἐξαλλάττειν ἀλλήλων ἑκατέρους.
5 ὅμως δ' ἐφ' ὅσον εἰκάζειν οἷόν τε, τῆς μὲν Βιθυνίας μέσην ἄν τις θείη καὶ τῆς ἐκβολῆς τοῦ Αἰσήπου τὴν Μυσίαν, ἁπτομένην τῆς θαλάττης καὶ διήκουσαν μέχρι τοῦ Ὀλύμπου σχεδόν [τι] παντός· κύκλῳ δὲ τὴν Ἐπίκτητον κειμένην ἐν τῇ μεσογαίᾳ, θαλάττης οὐδα-

μοῦ ἁπτομένην διατείνουσαν δὲ μέχρι τῶν ἑῴων με-
ρῶν τῆς Ἀσκανίας λίμνης τε καὶ χώρας· ὁμωνύμως
γὰρ τῇ λίμνῃ καὶ ἡ χώρα ἐλέγετο, καὶ ἦν αὐτῆς τὸ μὲν
Φρύγιον τὸ δὲ Μύσιον ἀπωτέρω δὲ τῆς Τροίας τὸ Φρύ-
γιον. καὶ δὴ καὶ οὕτω δεκτέον τὸ παρὰ τῷ ποιητῇ ὅταν
φῇ „Φόρκυς δ᾽ αὖ Φρύγας ἦγε καὶ Ἀσκάνιος θεοειδής,
„τῆλ᾽ ἐξ Ἀσκανίης," τῆς Φρυγιακῆς, ὡς οὔσης ἐγγυ-
τέρω ἄλλης Ἀσκανίας Μυσιακῆς τῆς πρὸς τῇ νῦν Νι-
καίᾳ, ἧς μέμνηται ὅταν φῇ „Πάλμυν τ᾽ Ἀσκάνιόν τε
„Μόρυν θ᾽, υἷ᾽ Ἱπποτίωνος, Μυσῶν ἀγχεμάχων ἡγή- C.565
„τορα, οἵ ῥ᾽ ἐξ Ἀσκανίης ἐριβώλακος ἦλθον ἀμοι-
„βοί." οὐ θαυμαστὸν δ᾽ εἰ τῶν Φρυγῶν εἰπών τινα
ἡγεμόνα Ἀσκάνιον καὶ ἐξ Ἀσκανίας ἥκοντα, καὶ Μυ-
σῶν τινα λέγει ἡγεμόνα Ἀσκάνιον καὶ ἐξ Ἀσκανίας
ἥκοντα· πολλὴ γὰρ ἡ ὁμωνυμία παρ᾽ αὐτῷ καὶ ἡ ἀπὸ
τῶν ποταμῶν καὶ λιμνῶν καὶ χωρίων ἐπίκλησις.

Καὶ τὸν Αἴσηπον δὲ τῶν Μυσῶν ὅριον παραδί- 6
δωσιν αὐτὸς ὁ ποιητής· τὴν γὰρ ὑπὲρ τοῦ Ἰλίου πα-
ρώρειαν τῆς Τροίας καταλέξας τὴν ὑπ᾽ Αἰνείᾳ ἣν Δαρ-
δανίαν ἐκάλεσε, τίθησιν ἐφεξῆς πρὸς ἄρκτον καὶ τὴν
Λυκίαν τὴν ὑπὸ Πανδάρῳ ἐν ᾗ ἡ Ζέλεια· καί φησίν
„οἳ δὲ Ζέλειαν ἔναιον ὑπαὶ πόδα νείατον Ἴδης, ἀφνει-
„οί, πίνοντες ὕδωρ μέλαν Αἰσήποιο Τρῶες." τῇ δὲ Ζε-
λείᾳ ὑποπέπτωκε πρὸς θαλάττῃ ἐπίταδε τοῦ Αἰσήπου
τὸ τῆς Ἀδραστείας πεδίον καὶ Τήρεια καὶ ἡ Πιτύα καὶ
καθόλου ἡ νῦν Κυζικηνὴ ἡ πρὸς Πριάπῳ ἣν ἐφεξῆς
καταλέγει, εἶτα ἀνακάμπτει πάλιν ἐπὶ τὰ πρὸς ἕω μέρη
καὶ τὰ ἐπέκεινα, ὥστε ἐμφαίνει τὴν μέχρι Αἰσήπου πέ-
ρας ἡγούμενος τῆς Τρῳάδος τὸ ἀρκτικὸν καὶ ἑῷον.
ἀλλὰ μὴν μετά γε τὴν Τρῳάδα ἡ Μυσία ἐστὶ καὶ ὁ
Ὄλυμπος.

Ἡ μὲν οὖν παλαιὰ μνήμη τοιαύτην τινὰ ὑπαγο-

ρεύει τὴν τῶν ἐθνῶν θέσιν. αἱ δὲ νῦν μεταβολαὶ τὰ πολλὰ ἐξήλλαξαν, ἄλλοτ' ἄλλων ἐπικρατούντων καὶ τὰ μὲν συγχεόντων τὰ δὲ διασπώντων. καὶ γὰρ Φρύγες ἐπεκράτησαν καὶ Μυσοὶ μετὰ τὴν Τροίας ἅλωσιν, εἶθ' ὕστερον Λυδοὶ καὶ μετ' ἐκείνων Αἰολεῖς καὶ Ἴωνες, ἔπειτα Πέρσαι καὶ Μακεδόνες, τελευταῖοι δὲ Ῥωμαῖοι, ἐφ' ὧν ἤδη καὶ τὰς διαλέκτους καὶ τὰ ὀνόματα ἀποβεβλήκασιν οἱ πλεῖστοι, γεγονότος ἑτέρου τινὸς μερισμοῦ τῆς χώρας. οὐ μᾶλλον φροντίσαι δεῖ τὰ νῦν οἷ' ἔστι λέγοντας, τῇ δὲ ἀρχαιολογίᾳ μετρίως προσέχοντας.

7 Ἐν δὲ τῇ μεσογαίᾳ τῆς Βιθυνίας τό τε Βιθύνιον ἔστιν ὑπερκείμενον τοῦ Τιείου καὶ ἔχον τὴν περὶ Σάλωνα χώραν ἀρίστην βουβοσίοις, ὅθεν ἐστὶν ὁ Σαλωνίτης τυρός, καὶ Νίκαια ἡ μητρόπολις τῆς Βιθυνίας ἐπὶ τῇ Ἀσκανίᾳ λίμνῃ (περίκειται δὲ κύκλῳ πεδίον μέγα καὶ σφόδρα εὔδαιμον, οὐ πάνυ δὲ ὑγιεινὸν τοῦ θέρους), κτίσμα Ἀντιγόνου μὲν πρῶτον τοῦ Φιλίππου, ὃς αὐτὴν Ἀντιγόνειαν προσεῖπεν, εἶτα Λυσιμάχου, ὃς ἀπὸ τῆς γυναικὸς μετωνόμασε Νίκαιαν· ἦν δ' αὕτη θυγάτηρ Ἀντιπάτρου. ἔστι δὲ τῆς πόλεως ἑκκαιδεκαστάδιος ὁ περίβολος ἐν τετραγώνῳ σχήματι· ἔστι δὲ καὶ τετράπυλος ἐν πεδίῳ κείμενος ἐρρυμοτομημένος
C.566 πρὸς ὀρθὰς γωνίας. ὥστ' ἀφ' ἑνὸς λίθου κατὰ μέσον ἱδρυμένου τὸ γυμνάσιον τὰς τέτταρας ὁρᾶσθαι πύλας. μικρὸν δ' ὑπὲρ τῆς Ἀσκανίας λίμνης Ὀτροία πολίχνη, πρὸς τοῖς ὅροις ἤδη τῆς Βιθυνίας τοῖς πρὸς ἕω· εἰκάζουσι δ' ἀπὸ Ὀτρέως Ὀτροίαν καλεῖσθαι * πρότερον.

8 Ὅτι δ' ἦν κατοικία Μυσῶν ἡ Βιθυνία πρῶτον μαρτυρήσει Σκύλαξ ὁ Καρυανδεὺς φήσας περιοικεῖν τὴν Ἀσκανίαν λίμνην Φρύγας καὶ Μυσούς, ἔπειτα Διονύσιος ὁ τὰς κτίσεις συγγράψας, ὃς τὰ κατὰ Χαλ-

κηδόνα καὶ Βυζάντιον στενά, ἃ νῦν Θρᾴκιος Βόσπορος καλεῖται, πρότερόν φησι Μύσιον Βόσπορον προσαγορεύεσθαι· τοῦτο δ' ἄν τις καὶ τοῦ Θρᾷκας εἶναι τοὺς Μυσοὺς μαρτύριον θείη· ὅ τε Εὐφορίων „Μυσοῖο „παρ' ὕδασιν Ἀσκανίοιο" λέγων, καὶ ὁ Αἰτωλὸς Ἀλέξανδρος „οἳ καὶ ἐπ' Ἀσκανίων δώματ' ἔχουσι ῥοῶν „λίμνης Ἀσκανίης ἐπὶ χείλεσιν, ἔνθα Δολίων υἱὸς Σι„ληνοῦ νάσσατο καὶ Μελίης," τὸ αὐτὸ ἐκμαρτυροῦσιν, οὐδαμοῦ τῆς Ἀσκανίας λίμνης εὑρισκομένης ἀλλ' ἐνταῦθα μόνον.

9 Ἄνδρες δ' ἀξιόλογοι κατὰ παιδείαν γεγόνασιν ἐν τῇ Βιθυνίᾳ Ξενοκράτης τε ὁ φιλόσοφος καὶ Διονύσιος ὁ διαλεκτικὸς καὶ Ἵππαρχος καὶ Θεοδόσιος καὶ οἱ παῖδες αὐτοῦ μαθηματικοὶ Κλεοχάρης τε ῥήτωρ ὅ [τε] Μυρλεανὸς Ἀσκληπιάδης [γραμματικὸς] ἰατρός [τε] ὁ Προυσιεύς.

10 Πρὸς νότον δ' εἰσὶ τοῖς Βιθυνοῖς οἱ περὶ τὸν Ὄλυμπον Μυσοὶ (οὓς Ὀλυμπηνοὺς καλοῦσί τινες, οἱ δ' Ἑλλησποντίους) καὶ ἡ ἐφ' Ἑλλησπόντῳ Φρυγία, τοῖς δὲ Παφλαγόσι Γαλάται· ἀμφοτέρων τε τούτων ἔτι πρὸς νότον ἡ μεγάλη Φρυγία καὶ Λυκαονία μέχρι τοῦ Ταύρου τοῦ Κιλικίου καὶ τοῦ Πισιδικοῦ. ἐπεὶ δὲ τὰ τῇ Παφλαγονίᾳ συνεχῆ παράκειται τῷ Πόντῳ καὶ τῇ Καππαδοκίᾳ καὶ τοῖς ἤδη περιωδευμένοις ἔθνεσιν, οἰκεῖον ἂν εἴη τὰ τούτοις γειτονοῦντα μέρη προσαποδοῦναι πρῶτον, ἔπειτα τοὺς ἑξῆς τόπους παραδεῖξαι.

5 Πρὸς νότον τοίνυν εἰσὶ τοῖς Παφλαγόσι Γαλάται· τούτων δ' ἐστὶν ἔθνη τρία, δύο μὲν τῶν ἡγεμόνων ἐπώνυμα, Τροκμοὶ καὶ Τολιστοβώγιοι, τὸ τρίτον δ' ἀπὸ τοῦ ἐν Κελτικῇ ἔθνους Τεκτόσαγες. κατέσχον δὲ τὴν χώραν ταύτην οἱ Γαλάται πλανηθέντες πολὺν χρόνον καὶ καταδραμόντες τὴν ὑπὸ τοῖς Ἀτταλικοῖς βασι-

λεῦσι χώραν καὶ τοῖς Βιθυνοῖς, ἕως παρ' ἑκόντων ἔλαβον τὴν νῦν Γαλατίαν καὶ Γαλλογραικίαν λεγομένην. ἀρχηγὸς δὲ δοκεῖ μάλιστα τῆς περαιώσεως τῆς εἰς τὴν C.567 *Ἀσίαν γενέσθαι Λεοννόριος. τριῶν δὲ ὄντων ἐθνῶν ὁμογλώττων καὶ κατ' ἄλλο οὐδὲν ἐξηλλαγμένων, ἕκαστον διελόντες εἰς τέτταρας μερίδας τετραρχίαν ἑκάστην ἐκάλεσαν, τετράρχην ἔχουσαν ἴδιον καὶ δικαστὴν ἕνα καὶ στρατοφύλακα ἕνα ὑπὸ τῷ τετράρχῃ τεταγμένους, ὑποστρατοφύλακας δὲ δύο. ἡ δὲ τῶν δώδεκα τετραρχῶν βουλὴ ἄνδρες ἦσαν τριακόσιοι, συνήγοντο δὲ εἰς τὸν καλούμενον Δρυνέμετον. τὰ μὲν οὖν φονικὰ ἡ βουλὴ ἔκρινε, τὰ δὲ ἄλλα οἱ τετράρχαι καὶ οἱ δικασταί. πάλαι μὲν οὖν ἦν τοιαύτη τις ἡ διάταξις, καθ' ἡμᾶς δὲ εἰς τρεῖς, εἶτ' εἰς δύο ἡγεμόνας, εἶτα εἰς ἕνα ἧκεν ἡ δυναστεία, εἰς Δηιόταρον, εἶτα ἐκεῖνον διεδέξατο Ἀμύντας· νῦν δ' ἔχουσι Ῥωμαῖοι καὶ ταύτην καὶ τὴν ὑπὸ τῷ Ἀμύντᾳ γενομένην πᾶσαν εἰς μίαν συναγαγόντες ἐπαρχίαν.*

2 *Ἔχουσι δὲ οἱ μὲν Τροκμοὶ τὰ πρὸς τῷ Πόντῳ καὶ τῇ Καππαδοκίᾳ· ταῦτα δ' ἐστὶ τὰ κράτιστα ὧν νέμονται Γαλάται· φρούρια δ' αὐτοῖς τετείχισται τρία, Τάβιον, ἐμπόριον τῶν ταύτῃ, ὅπου ὁ τοῦ Διὸς κολοσσὸς χαλκοῦς καὶ τέμενος αὐτοῦ ἄσυλον, καὶ Μιθριδάτιον, ὃ ἔδωκε Πομπήιος * Βογοδιατάρῳ τῆς Ποντικῆς βασιλείας ἀφορίσας, τρίτον δέ πω Δανάλα, ὅπου τὸν σύλλογον ἐποιήσαντο Πομπήιός τε καὶ Λεύκολλος, ὁ μὲν ἥκων ἐπὶ τὴν τοῦ πολέμου διαδοχὴν ὁ δὲ παραδιδοὺς τὴν ἐξουσίαν καὶ ἀπαίρων ἐπὶ τὸν θρίαμβον. Τροκμοὶ μὲν δὴ ταῦτ' ἔχουσι τὰ μέρη, Τεκτόσαγες δὲ τὰ πρὸς τῇ μεγάλῃ Φρυγίᾳ τῇ κατὰ Πεσσινοῦντα καὶ Ὀρκαόρκους· τούτων δ' ἦν φρούριον Ἄγκυρα ὁμώνυμος τῇ πρὸς Λυδίᾳ περὶ Βλαῦδον πολίχνῃ Φρυγιακῇ. Τολι-*

στοβώγιοι δὲ ὅμοροι Βιθυνοῖς εἰσι καὶ τῇ Ἐπικτήτῳ καλουμένῃ Φρυγίᾳ· φρούρια δ' αὐτῶν ἐστι τό τε * Βλούκιον καὶ τὸ Πήιον, ὧν τὸ μὲν ἦν βασίλειον Δηιοτάρου, τὸ δὲ γαζοφυλάκιον.

Πεσσινοῦς δ' ἐστὶν ἐμπόριον τῶν ταύτῃ μέγιστον, 3 ἱερὸν ἔχον τῆς μητρὸς τῶν θεῶν σεβασμοῦ μεγάλου τυγχάνον· καλοῦσι δ' αὐτὴν Ἄγδιστιν. οἱ δ' ἱερεῖς τὸ παλαιὸν μὲν δυνάσται τινὲς ἦσαν, ἱερωσύνην καρπούμενοι μεγάλην, νυνὶ δὲ τούτων μὲν αἱ τιμαὶ πολὺ μεμείωνται, τὸ δὲ ἐμπόριον συμμένει· κατεσκεύασται δ' ὑπὸ τῶν Ἀτταλικῶν βασιλέων ἱεροπρεπῶς τὸ τέμενος ναῷ τε καὶ στοαῖς λευκολίθοις· ἐπιφανὲς δ' ἐποίησαν Ῥωμαῖοι τὸ ἱερόν, ἀφίδρυμα ἐνθένδε τῆς θεοῦ μεταπεμψάμενοι κατὰ τοὺς τῆς Σιβύλλης χρησμούς, καθάπερ καὶ τοῦ Ἀσκληπιοῦ τοῦ ἐν Ἐπιδαύρῳ. ἔστι δὲ καὶ ὄρος ὑπερκείμενον τῆς πόλεως τὸ Δίνδυμον, ἀφ' οὗ ἡ Δινδυμηνή, καθάπερ ἀπὸ τῶν Κυβέλων ἡ Κυβέλη. πλησίον δὲ καὶ ὁ Σαγγάριος ποταμὸς ποιεῖται τὴν ῥύσιν· ἐπὶ δὲ τούτῳ τὰ παλαιὰ τῶν Φρυγῶν C.568 οἰκητήρια Μίδου καὶ ἔτι πρότερον Γορδίου καὶ ἄλλων τινῶν, οὐδ' ἴχνη σῴζοντα πόλεων, ἀλλὰ κῶμαι μικρῷ μείζους τῶν ἄλλων, οἷόν ἐστι τὸ Γόρδιον καὶ Γορβεοῦς, τὸ τοῦ Κάστορος βασίλειον τοῦ Σαωκονδάρου, ἐν ᾧ γαμβρὸν ὄντα τοῦτον ἀπέσφαξε Δηιόταρος καὶ τὴν θυγατέρα τὴν ἑαυτοῦ· τὸ δὲ φρούριον κατέσπασε καὶ διελυμήνατο τὸ πλεῖστον τῆς κατοικίας.

Μετὰ δὲ τὴν Γαλατίαν πρὸς νότον ἥ τε λίμνη 4 ἐστὶν ἡ Τάττα, παρακειμένη τῇ μεγάλῃ Καππαδοκίᾳ τῇ κατὰ τοὺς Μοριμηνούς, μέρος δ' οὖσα τῆς μεγάλης Φρυγίας, καὶ ἡ συνεχὴς ταύτῃ μέχρι τοῦ Ταύρου, ἧς τὴν πλείστην Ἀμύντας εἶχεν. ἡ μὲν οὖν Τάττα ἁλοπήγιόν ἐστιν αὐτοφυές, οὕτω δὲ περιπήττεται ῥᾳδίως

τὸ ὕδωρ παντὶ τῷ βαπτισθέντι εἰς αὐτὸ ὥστε στεφάνους ἁλῶν ἀνέλκουσιν, ἐπειδὰν καθῶσι κύκλον σχοίνινον, τά τε ὄρνεα ἁλίσκεται τὰ προσαψάμενα τῷ πτερώματι τοῦ ὕδατος παραχρῆμα πίπτοντα διὰ τὴν περίπηξιν τῶν ἁλῶν.

6 Ἥ τε δὴ Τάττα [τοιαύτη] ἐστί, καὶ τὰ περὶ Ὀρκαόρκους καὶ Πιτνισσὸν καὶ τὰ τῶν Λυκαόνων ὀροπέδια ψυχρὰ καὶ ψιλὰ καὶ ὀναγρόβοτα, ὑδάτων δὲ σπάνις πολλή· ὅπου δὲ καὶ εὑρεῖν δυνατόν, βαθύτατα φρέατα τῶν πάντων, καθάπερ ἐν Σοάτροις, ὅπου καὶ πιπράσκεται τὸ ὕδωρ (ἔστι δὲ κωμόπολις Γαρσαούρων πλησίον)· ὅμως δὲ καίπερ ἄνυδρος οὖσα ἡ χώρα πρόβατα ἐκτρέφει θαυμαστῶς, τραχείας δὲ ἐρέας, καί τινες ἐξ αὐτῶν τούτων μεγίστους πλούτους ἐκτήσαντο· Ἀμύντας δ' ὑπὲρ τριακοσίας ἔσχε ποίμνας ἐν τοῖς τόποις τούτοις. εἰσὶ δὲ καὶ λίμναι, Κάραλις μὲν ἡ μείζων ἡ δ' ἐλάττων Τρωγῖτις. ἐνταῦθα δέ που καὶ τὸ Ἰκόνιον ἔστι, πολίχνιον εὖ συνῳκισμένον καὶ χώραν εὐτυχεστέραν ἔχον τῆς λεχθείσης ὀναγροβότου· τοῦτο δ' εἶχε Πολέμων. πλησιάζει δ' ἤδη τούτοις τοῖς τόποις ὁ Ταῦρος ὁ τὴν Καππαδοκίαν ὁρίζων καὶ τὴν Λυκαονίαν πρὸς τοὺς ὑπερκειμένους Κίλικας τοὺς Τραχειώτας. Λυκαόνων τε καὶ Καππαδόκων ὅριόν ἐστι τὸ μεταξὺ Κοροπασσοῦ κώμης Λυκαόνων, καὶ Γαρσαούρων πολιχνίου Καππαδόκων· ἔστι δὲ τὸ μεταξὺ διάστημα τῶν φρουρίων τούτων ἑκατὸν εἴκοσί που στάδιοι.

2 Τῆς δὲ Λυκαονίας ἐστὶ καὶ ἡ Ἰσαυρικὴ πρὸς αὐτῷ τῷ Ταύρῳ ἡ τὰ Ἴσαυρα ἔχουσα κώμας δύο ὁμωνύμους, τὴν μὲν παλαιὰν καλουμένην, [τὴν δὲ νέαν,] εὐερκῆ· ὑπήκοοι δ' ἦσαν ταύταις καὶ ἄλλαι κῶμαι συχναί, λῃστῶν δ' ἅπασαι κατοικίαι. παρέσχον δὲ καὶ Ῥωμαίοις πράγματα καὶ τῷ Ἰσαυρικῷ προσαγορευθέντι Πουβλίῳ

Σερβιλίῳ, ὃν ἡμεῖς εἴδομεν, ὃς καὶ ταῦτα ὑπέταξε Ῥωμαίοις καὶ τὰ πολλὰ τῶν πειρατῶν ἐρύματα ἐξεῖλε τὰ C.569 ἐπὶ τῇ θαλάττῃ.

3 Τῆς δ' Ἰσαυρικῆς ἔστιν ἐν πλευραῖς ἡ Δέρβη, μάλιστα τῇ Καππαδοκίᾳ ἐπιπεφυκὸς τοῦ Ἀντιπάτρου τυραννεῖον τοῦ Δερβήτου· τοῦ δ' ἦν καὶ τὰ Λάρανδα· ἐφ' ἡμῶν δὲ καὶ τὰ Ἴσαυρα καὶ τὴν Δέρβην Ἀμύντας εἶχεν, ἐπιθέμενος τῷ Δερβήτῃ καὶ ἀνελὼν αὐτόν, τὰ δ' Ἴσαυρα παρὰ τῶν Ῥωμαίων λαβών· καὶ δὴ βασίλειον ἑαυτῷ κατεσκεύαζεν ἐνταῦθα, τὴν παλαιὰν Ἴσαυραν ἀνατρέψας. ἐν δὲ τῷ αὐτῷ χωρίῳ καινὸν τεῖχος οἰκοδομῶν οὐκ ἔφθη συντελέσας, ἀλλὰ διέφθειραν αὐτὸν οἱ Κίλικες ἐμβαλόντα εἰς τοὺς Ὁμοναδεῖς καὶ ἐξ ἐνέδρας ληφθέντα.

4 Τὴν γὰρ Ἀντιόχειαν ἔχων τὴν πρὸς τῇ Πισιδίᾳ μέχρι Ἀπολλωνιάδος τῆς πρὸς Ἀπαμείᾳ τῇ Κιβωτῷ καὶ τῆς παρωρείου τινὰ καὶ τὴν Λυκαονίαν ἐπειρᾶτο τοὺς ἐκ τοῦ Ταύρου κατατρέχοντας Κίλικας καὶ Πισίδας τὴν χώραν ταύτην Φρυγῶν οὖσαν ἐξαιρεῖν, καὶ πολλὰ χωρία ἐξεῖλεν ἀπόρθητα πρότερον ὄντα, ὧν καὶ Κρῆμνα· τὸ δὲ Σανδάλιον οὐδ' ἐνεχείρησε βίᾳ προσάγεσθαι, μεταξὺ κείμενον τῆς τε Κρήμνης καὶ Σαγαλασσοῦ.

5 Τὴν μὲν οὖν Κρῆμναν ἄποικοι Ῥωμαίων ἔχουσιν, ἡ Σαγαλασσὸς δ' ἐστὶν ὑπὸ τῷ αὐτῷ ἡγεμόνι τῶν Ῥωμαίων ὑφ' ᾧ καὶ ἡ Ἀμύντου βασιλεία πᾶσα· διέχει δ' Ἀπαμείας ἡμέρας ὁδόν, κατάβασιν ἔχουσα σχεδόν τι καὶ τριάκοντα σταδίων ἀπὸ τοῦ ἐρύματος· καλοῦσι δ' αὐτὴν καὶ Σελγησσόν· ταύτην δὲ τὴν πόλιν καὶ Ἀλέξανδρος εἷλεν. ὁ δ' οὖν Ἀμύντας τὴν μὲν Κρῆμναν εἷλεν, εἰς δὲ τοὺς Ὁμοναδέας παρελθών, οἳ ἐνομίζοντο

5. ante τοῦ: τὸ 19. post οὖσαν: καὶ Κιλίκων

ἀληπτότατοι, καὶ καταστὰς ἤδη κύριος τῶν πλείστων χωρίων ἀνελὼν καὶ τὸν τύραννον αὐτῶν ἐξ ἀπάτης ἐλήφθη διὰ τῆς τοῦ τυράννου γυναικός. καὶ τοῦτον μὲν ἐκεῖνοι διέφθειραν, ἐκείνους δὲ Κυρίνιος ἐξεπόρθησε λιμῷ καὶ τετρακισχιλίους ἄνδρας ἐζώγρησε καὶ συνῴκισεν εἰς τὰς ἐγγὺς πόλεις, τὴν δὲ χώραν ἀπέλιπεν ἔρημον τῶν ἐν ἀκμῇ. ἔστι δὲ ἐν ὑψηλοῖς τοῦ Ταύρου μέρεσι, κρημνοῖς ἀποτόμοις σφόδρα καὶ τὸ πλέον ἀβάτοις, ἐν μέσῳ κοῖλον καὶ εὔγεων πεδίον εἰς αὐλῶνας πλείους διῃρημένον· τοῦτο δὲ γεωργοῦντες ᾤκουν ἐν ταῖς ὑπερκειμέναις ὀφρύσιν ἢ σπηλαίοις, τὰ πολλὰ δ' ἔνοπλοι ἦσαν καὶ κατέτρεχον τὴν ἀλλοτρίαν ἔχοντες ὄρη τειχίζοντα τὴν χώραν αὐτῶν.

7 Συναφεῖς δ' εἰσὶ τούτοις οἵ τε ἄλλοι Πισίδαι καὶ οἱ Σελγεῖς, οἵπερ εἰσὶν ἀξιολογώτατοι τῶν Πισιδῶν. τὸ μὲν οὖν πλέον αὐτῶν μέρος τὰς ἀκρωρείας τοῦ Ταύρου κατέχει, τινὲς δὲ καὶ ὑπὲρ Σίδης καὶ Ἀσπένδου
C.570 Παμφυλικῶν πόλεων κατέχουσι γεώλοφα χωρία ἐλαιόφυτα πάντα, τὰ δ' ὑπὲρ τούτων ἤδη ὀρεινά, Κατεννεῖς ὅμοροι Σελγεῦσι καὶ Ὁμοναδεῦσι, Σαγαλασσεῖς δ' ἐπὶ τὰ ἐντὸς τὰ πρὸς τῇ Μιλυάδι.

2 Φησὶ δ' Ἀρτεμίδωρος τῶν Πισιδῶν πόλεις εἶναι Σέλγην Σαγαλασσὸν Πετνηλισσὸν Ἄδαδα Τυμβριάδα Κρῆμναν Πιτυασσὸν Ἄμβλαδα Ἀνάβουρα Σίνδα Ἀαρασσὸν Ταρβασσὸν Τερμησσόν· τούτων δ' οἱ μέν εἰσι τελέως ὀρεινοί, οἱ δὲ καὶ μέχρι τῶν ὑπωρειῶν καθήκοντες ἐφ' ἑκάτερα, ἐπί τε τὴν Παμφυλίαν καὶ τὴν Μιλυάδα, Φρυξὶ καὶ Λυδοῖς καὶ Καρσὶν ὅμοροι, πᾶσιν εἰρηνικοῖς ἔθνεσι καίπερ προσβόρροις οὖσιν. οἱ δὲ Πάμφυλοι πολὺ τοῦ Κιλικίου φύλου μετέχοντες οὐ τελέως ἀφεῖνται τῶν ληστρικῶν ἔργων, οὐδὲ τοὺς ὁμόρους ἐῶσι καθ' ἡσυχίαν ζῆν καίπερ τὰ νότια μέρη τῆς ὑπω-

ρείας τοῦ Ταύρου κατέχοντες. εἰσὶ δὲ τοῖς Φρυξὶν ὅμοροι καὶ τῇ Καρίᾳ Τάβαι καὶ Σίνδα καὶ Ἄμβλαδα, ὅθεν καὶ ὁ Ἀμβλαδεὺς οἶνος ἐκφέρεται πρὸς διαίτας ἰατρικὰς ἐπιτήδειος.

Τῶν δ' οὖν ὀρεινῶν οὓς εἶπον Πισιδῶν οἱ μὲν ἄλ- 3
λοι κατὰ τυραννίδας μεμερισμένοι, καθάπερ οἱ Κίλικες, λῃστρικῶς ἤσκηνται· φασὶ δ' αὐτοῖς τῶν Λελέγων συγκαταμιχθῆναι τινὰς τὸ παλαιόν, πλάνητας ἀνθρώπους, καὶ συμμεῖναι διὰ τὴν ὁμοιοτροπίαν αὐτόθι. Σέλγη δὲ ἐξ ἀρχῆς μὲν ὑπὸ Λακεδαιμονίων ἐκτίσθη πόλις, καὶ ἔτι πρότερον ὑπὸ Κάλχαντος· ὕστερον δὲ καθ' αὑτὴν ἔμεινεν αὐξηθεῖσα ἐκ τοῦ πολιτεύεσθαι νομίμως, ὥστε καὶ δισμυρίανδρός ποτε εἶναι. θαυμαστὴ δ' ἐστὶν ἡ φύσις τῶν τόπων· ἐν γὰρ ταῖς ἀκρωρείαις τοῦ Ταύρου χώρα μυριάδας τρέφειν δυναμένη σφόδρα εὔκαρπός ἐστιν, ὥστε καὶ ἐλαιόφυτα εἶναι πολλὰ χωρία καὶ εὐάμπελα, νομάς τε ἀφθόνους ἀνεῖσθαι παντοδαποῖς βοσκήμασι· κύκλῳ δ' ὑπέρκεινται δρυμοὶ ποικίλης ὕλης. πλεῖστος δ' ὁ στύραξ φύεται παρ' αὐτοῖς, δένδρον οὐ μέγα * ὀρθηλόν, ἀφ' οὗ καὶ τὰ στυράκινα ἀκοντίσματα, ἐοικότα τοῖς κρανεΐνοις· ἐγγίνεται δ' ἐν τοῖς στελέχεσι ξυλοφάγου τι σκώληκος εἶδος, ὃ μέχρι τῆς ἐπιφανείας διαφαγὸν τὸ ξύλον τὸ μὲν πρῶτον πιτύροις ἢ πρίσμασιν ἐοικός τι ψῆγμα προχεῖ, καὶ σωρὸς συνίσταται πρὸς τῇ ῥίζῃ, μετὰ δὲ ταῦτα ἀπολείβεταί τις ὑγρασία δεχομένη πῆξιν ῥᾳδίαν παραπλησίαν τῇ κόμμει· ταύτης δὲ τὸ μὲν ἐπὶ τὸ ψῆγμα πρὸς τῇ ῥίζῃ κατενεχθὲν ἀναμίγνυται τούτῳ τε καὶ τῇ γῇ, πλὴν ὅσον ἐπιπολῆς συστὰν διαμένει καθαρόν, τὸ δ' ἐν τῇ ἐπιφανείᾳ τοῦ στελέχους καθ' ἣν C.571

10. post δὲ: καὶ 29. post ὅσον: τὸ μὲν

ῥεῖ πήττεται, καὶ τοῦτο καθαρόν· ποιοῦσι δὲ καὶ ἐκ τοῦ μὴ καθαροῦ μῖγμα ξυλομιγές τι καὶ γεωμιγές, εὐωδέστερον τοῦ καθαροῦ, τῇ δ' ἄλλῃ δυνάμει λειπόμενον (λανθάνει δὲ τοὺς πολλούς), ᾧ πλείστῳ χρῶνται θυμιάματι οἱ δεισιδαίμονες. ἐπαινεῖται δὲ καὶ ἡ Σελγικὴ ἶρις καὶ τὸ ἀπ' αὐτῆς ἄλειμμα. ἔχει δ' ὀλίγας προσβάσεις [τὰ] περὶ τὴν πόλιν καὶ τὴν χώραν τὴν Σελγέων, ὀρεινὴν κρημνῶν καὶ χαραδρῶν οὖσαν πλήρη, ἃς ποιοῦσιν ἄλλοι τε ποταμοὶ καὶ ὁ Εὐρυμέδων καὶ ὁ Κέστρος ἀπὸ τῶν Σελγικῶν ὀρῶν εἰς τὴν Παμφυλίαν ἐκπίπτοντες θάλατταν· γέφυραι δ' ἐπίκεινται ταῖς ὁδοῖς. διὰ δὲ τὴν ἐρυμνότητα οὔτε πρότερον οὔθ' ὕστερον οὐδ' ἅπαξ οἱ Σελγεῖς ἐπ' ἄλλοις ἐγένοντο, ἀλλὰ τὴν μὲν ἄλλην χώραν ἀδεῶς ἐκαρποῦντο, ὑπὲρ δὲ τῆς κάτω τῆς τε ἐν τῇ Παμφυλίᾳ καὶ τῆς ἐντὸς τοῦ Ταύρου διεμάχοντο πρὸς τοὺς βασιλέας ἀεί· πρὸς δὲ τοὺς Ῥωμαίους ἐπὶ τακτοῖς τισι κατεῖχον τὴν χώραν· πρὸς Ἀλέξανδρον δὲ πρεσβευσάμενοι δέχεσθαι τὰ προστάγματα εἶπον κατὰ φιλίαν· νῦν δὲ ὑπήκοοι τελέως γεγόνασι, καί εἰσιν ἐν τῇ ὑπὸ Ἀμύντᾳ τεταγμένῃ πρότερον.

8 Τοῖς δὲ Βιθυνοῖς ὁμοροῦσι πρὸς νότον, ὡς ἔφην, οἱ περὶ τὸν Ὄλυμπον τὸν Μύσιον προσαγορευόμενον Μυσοί τε καὶ Φρύγες· ἑκάτερον δὲ τὸ ἔθνος διττόν ἐστι. Φρυγία τε γὰρ ἡ μὲν καλεῖται μεγάλη, ἧς ὁ Μίδας ἐβασίλευσε καὶ ἧς μέρος οἱ Γαλάται κατέσχον, ἡ δὲ μικρὰ ἡ ἐφ' Ἑλλησπόντῳ καὶ ἡ περὶ τὸν Ὄλυμπον ἡ καὶ Ἐπίκτητος λεγομένη. Μυσία τε ὁμοίως ἥ τε Ὀλυμπηνὴ συνεχὴς οὖσα τῇ Βιθυνίᾳ καὶ τῇ Ἐπικτήτῳ, ἣν ἔφη Ἀρτεμίδωρος ἀπὸ τῶν πέραν Ἴστρου Μυσῶν ἀπῳκίσθαι, καὶ ἡ περὶ τὸν Κάικον καὶ τὴν Περγαμηνὴν μέχρι Τευθρανίας καὶ τῶν ἐκβολῶν τοῦ ποταμοῦ.

2 Οὕτω δ' ἐνήλλακται ταῦτα ἐν ἀλλήλοις, ὡς πολ-

λάκις λέγομεν, ὥστε καὶ τὴν περὶ Σίπυλον Φρυγίαν οἱ παλαιοὶ καλοῦσιν, ἄδηλον εἴτε τῆς μεγάλης εἴτε τῆς μικρᾶς μέρος οὖσαν, ᾗ καὶ τὸν Τάνταλον Φρύγα καὶ τὸν Πέλοπα καὶ τὴν Νιόβην· ὁποτέρως δ' ἂν ἔχῃ, ἥ γε ἐπάλλαξις φανερά. ἡ γὰρ Περγαμηνὴ καὶ ἡ Ἐλαΐτις, καθ' ἣν ὁ Κάικος ἐκπίπτει, καὶ ἡ μεταξὺ τούτων Τευθρανία, ἐν ᾗ Τεύθρας καὶ ἡ τοῦ Τηλέφου ἐκτροφή, ἀνὰ μέσον ἐστὶ τοῦ τε Ἑλλησπόντου καὶ τῆς περὶ Σίπυλον καὶ Μαγνησίαν τὴν ὑπ' αὐτῷ χώρας· ὥσθ' ὅπερ ἔφην ἔργον διορίσαι „χωρὶς τὰ Μυσῶν καὶ Φρυ- C.572
„γῶν ὁρίσματα.“

Καὶ οἱ Λυδοὶ καὶ οἱ Μαίονες, οὓς Ὅμηρος καλεῖ 3
Μήονας, ἐν συγχύσει πώς εἰσι καὶ πρὸς τούτους καὶ πρὸς ἀλλήλους, ὅτι οἱ μὲν τοὺς αὐτοὺς οἱ δ' ἑτέρους φασί· πρὸς δὲ τούτους, ὅτι τοὺς Μυσοὺς οἱ μὲν Θρᾷκας οἱ δὲ Λυδοὺς εἰρήκασι, κατ' αἰτίαν παλαιὰν ἱστοροῦντες, ἣν Ξάνθος ὁ Λυδὸς γράφει καὶ Μενεκράτης ὁ Ἐλαΐτης, ἐτυμολογοῦντες καὶ τὸ ὄνομα τὸ τῶν Μυσῶν ὅτι τὴν ὀξύην οὕτως ὀνομάζουσιν οἱ Λυδοί· πολλὴ δ' ἡ ὀξύη κατὰ τὸν Ὄλυμπον, ὅπου ἐκτεθῆναί φασι τοὺς δεκατευθέντας, ἐκείνων δὲ ἀπογόνους εἶναι τοὺς ὕστερον Μυσούς, ἀπὸ τῆς ὀξύης οὕτω προσαγορευθέντας· μαρτυρεῖν δὲ καὶ τὴν διάλεκτον· μιξολύδιον γάρ πως εἶναι καὶ μιξοφρύγιον· τέως μὲν γὰρ οἰκεῖν αὐτοὺς περὶ τὸν Ὄλυμπον, τῶν δὲ Φρυγῶν ἐκ τῆς Θρᾴκης περαιωθέντων [ἀν]ελόντων τε τῆς Τροίας ἄρχοντα καὶ τῆς πλησίον γῆς, ἐκείνους μὲν ἐνταῦθα οἰκῆσαι τοὺς δὲ Μυσοὺς ὑπὲρ τὰς τοῦ Καΐκου πηγὰς πλησίον Λυδῶν.

Συνεργεῖ δὲ πρὸς τὰς τοιαύτας μυθοποιίας ἥ τε 4

1. post περὶ: τὴν

σύγχυσις τῶν ἐνταῦθα ἐθνῶν καὶ ἡ εὐδαιμονία τῆς χώρας τῆς ἐντὸς Ἅλυος, μάλιστα δὲ τῆς παραλίας, δι' ἣν ἐπιθέσεις ἐγένοντο αὐτῇ πολλαχόθεν καὶ διὰ παντὸς ἐκ τῆς περαίας, ἢ καὶ ἐπ' ἀλλήλους ἰόντων τῶν ἐγγύς. μάλιστα μὲν οὖν κατὰ τὰ Τρωικὰ καὶ μετὰ ταῦτα τὰς ἐφόδους γενέσθαι καὶ τὰς μεταναστάσεις συνέβη, τῶν τε βαρβάρων ἅμα καὶ τῶν Ἑλλήνων ὁρμῇ τινι χρησαμένων πρὸς τὴν τῆς ἀλλοτρίας κατάκτησιν· ἀλλὰ καὶ πρὸ τῶν Τρωικῶν ἦν ταῦτα. τό τε γὰρ τῶν Πελασγῶν ἦν φῦλον καὶ τὸ τῶν Καυκώνων καὶ Λελέγων· εἴρηται δ' ὅτι πολλαχοῦ τῆς Εὐρώπης τὸ παλαιὸν ἐτύγχανε πλανώμενα, ἅπερ ποιεῖ τοῖς Τρωσὶ συμμαχοῦντα ὁ ποιητής, οὐκ ἐκ τῆς περαίας. τά τε περὶ τῶν Φρυγῶν καὶ τῶν Μυσῶν λεγόμενα πρεσβύτερα τῶν Τρωικῶν ἐστιν· οἱ δὲ διττοὶ Λύκιοι τοῦ αὐτοῦ γένους ὑπόνοιαν παρέχουσιν, ἢ τῶν Τρωικῶν ἢ τῶν πρὸς Καρίᾳ τοὺς ἑτέρους ἀποικισάντων. τάχα δὲ καὶ ἐπὶ τῶν Κιλίκων τὸ αὐτὸ συνέβη· διττοὶ γὰρ καὶ οὗτοι· οὐ μὴν ἔχομέν γε τοιαύτην λαβεῖν μαρτυρίαν ὅτι καὶ πρὸ τῶν Τρωικῶν ἦσαν ἤδη οἱ νῦν Κίλικες· ὅ τε Τήλεφος ἐκ τῆς Ἀρκαδίας ἀφῖχθαι νομίζοιτ' ἂν μετὰ τῆς μητρός, γάμῳ δὲ τῷ ταύτης ἐξοικειωσάμενος τὸν ὑποδεξάμενον αὐτὸν Τεύθραντα ἐνομίσθη τε ἐκείνου καὶ παρέλαβε τὴν Μυσῶν ἀρχήν.

5 Καὶ οἱ Κᾶρες δὲ νησιῶται πρότερον ὄντες καὶ Λέ-
C.573 λεγες, ὥς φασιν, ἠπειρῶται γεγόνασι, προσλαβόντων Κρητῶν, οἳ καὶ τὴν Μίλητον ἔκτισαν ἐκ τῆς Κρητικῆς Μιλήτου Σαρπηδόνα λαβόντες κτίστην· καὶ τοὺς Τερμίλας κατῴκισαν ἐν τῇ νῦν Λυκίᾳ· τούτους δ' ἀγαγεῖν ἐκ Κρήτης ἀποίκους Σαρπηδόνα, Μίνω καὶ Ῥαδαμάνθυος ἀδελφὸν ὄντα, καὶ ὀνομάσαι Τερμίλας τοὺς πρότερον Μιλύας, ὥς φησιν Ἡρόδοτος. ἔτι δὲ πρότερον

Σολύμους, ἐπελθόντα δὲ τὸν Πανδίονος Λύκον ἀφ' ἑαυτοῦ προσαγορεῦσαι τοὺς αὐτοὺς Λυκίους. οὗτος μὲν οὖν ὁ λόγος ἀποφαίνει τοὺς αὐτοὺς Σολύμους τε καὶ Λυκίους, ὁ δὲ ποιητὴς χωρίζει· Βελλεροφόντης γοῦν ὡρμημένος ἐκ τῆς Λυκίας „Σολύμοισι μαχέσσατο „κυδαλίμοισι.“ Πείσανδρόν τε ὡσαύτως υἱὸν αὐτοῦ Ἄρης ὥς φησι „μαρνάμενον Σολύμοισι κατέκτανε.“ καὶ τὸν Σαρπηδόνα δὲ ἐπιχώριόν τινα λέγει.

Ἀλλά τό γε ἆθλον προκεῖσθαι κοινὸν τὴν ἀρετὴν 6
τῆς χώρας ἧς λέγω τοῖς ἰσχύουσιν ἐκ πολλῶν βεβαιοῦται [καὶ πρὸ τῶν Τρωικῶν] καὶ μετὰ τὰ Τρωικά· ὅπου καὶ Ἀμαζόνες κατεθάρρησαν αὐτῆς, ἐφ' ἃς ὅ τε Πρίαμος στρατεῦσαι λέγεται καὶ ὁ Βελλεροφόντης· πόλεις τε παλαιαὶ ὁμολογοῦνται ἐπώνυμοι αὐτῶν· ἐν δὲ τῷ Ἰλιακῷ πεδίῳ κολώνη τις ἔστιν „ἣν ἤτοι ἄνδρες „Βατίειαν κικλήσκουσιν, ἀθάνατοι δέ τε σῆμα πολυ„σκάρθμοιο Μυρίνης,“ ἣν ἱστοροῦσι μίαν εἶναι τῶν Ἀμαζόνων ἐκ τοῦ ἐπιθέτου τεκμαιρόμενοι· εὐσκάρθμους γὰρ ἵππους λέγεσθαι διὰ τὸ τάχος· κἀκείνην οὖν πολύσκαρθμον διὰ τὸ ἀπὸ τῆς ἡνιοχείας τάχος· καὶ ἡ Μύρινα οὖν ἐπώνυμος ταύτης λέγεται. καὶ αἱ ἐγγὺς δὲ νῆσοι ταῦτ' ἔπαθον διὰ τὴν ἀρετήν, ὧν Ῥόδος καὶ Κῶς ὅτι πρὸ τῶν Τρωικῶν ἤδη ὑφ' Ἑλλήνων ᾠκοῦντο καὶ ὑφ' Ὁμήρου σαφῶς ἐκμαρτυρεῖται.

Μετὰ δὲ τὰ Τρωικὰ αἵ τε τῶν Ἑλλήνων ἀποικίαι 7
καὶ αἱ Τρηρῶν καὶ αἱ Κιμμερίων ἔφοδοι καὶ Λυδῶν καὶ μετὰ ταῦτα Περσῶν καὶ Μακεδόνων τό [τε] τελευταῖον Γαλατῶν ἐτάραξαν πάντα καὶ συνέχεαν. γέγονε δὲ ἡ ἀσάφεια οὐ διὰ τὰς μεταβολὰς μόνον ἀλλὰ καὶ διὰ τὰς τῶν συγγραφέων ἀνομολογίας περὶ τῶν αὐτῶν οὐ τὰ αὐτὰ λεγόντων, τοὺς μὲν Τρῶας καλούντων Φρύγας καθάπερ οἱ τραγικοί, τοὺς δὲ Λυκίους Κᾶρας καὶ

ἄλλους * οὕτως. οἱ δὲ Τρῶες οὕτως ἐκ μικρῶν αὐξη-
C.574 θέντες ὥστε καὶ βασιλεῖς βασιλέων εἶναι, παρέσχον καὶ τῷ ποιητῇ λόγον τίνα χρὴ καλεῖν Τροίαν, καὶ τοῖς ἐξηγουμένοις ἐκεῖνον. λέγει μὲν γὰρ καὶ κοινῶς ἅπαντας Τρῶας τοὺς συμπολεμήσαντας αὐτοῖς, ὥσπερ καὶ Δαναοὺς καὶ Ἀχαιοὺς τοὺς ἐναντίους· ἀλλ' οὐ δήπου Τροίαν καὶ τὴν Παφλαγονίαν ἐροῦμεν· νὴ Δία, οὐδὲ τὴν Καρίαν ἢ τὴν ὅμορον αὐτῇ Λυκίαν. λέγω δ' ὅταν οὕτω φῇ „Τρῶες μὲν κλαγγῇ τ' ἐνοπῇ τ' ἴσαν," ἐκ δὲ τῶν ἐναντίων „οἱ δ' ἄρ' ἴσαν σιγῇ μένεα πνείοντες Ἀχαιοί." καὶ ἄλλως δὲ λέγει πολλαχῶς. ὅμως δὲ καίπερ τοιούτων ὄντων πειρατέον διαιτᾶν ἕκαστα εἰς δύναμιν· ὅ τι δ' ἂν διαφύγῃ τῆς παλαιᾶς ἱστορίας, τοῦτο μὲν ἐατέον (οὐ γὰρ ἐνταῦθα τὸ τῆς γεωγραφίας ἔργον), τὰ δὲ νῦν ὄντα λεκτέον.

8 Ἔστι τοίνυν ὄρη δύο ὑπερκείμενα τῆς Προποντίδος ὅ τε Ὄλυμπος ὁ Μύσιος καὶ ἡ Ἴδη. τῷ μὲν οὖν Ὀλύμπῳ τὰ τῶν Βιθυνῶν ὑποπέπτωκε, τῆς δὲ Ἴδης μεταξὺ καὶ τῆς θαλάττης ἡ Τροία κεῖται συνάπτουσα τῷ ὄρει· περὶ μὲν οὖν ταύτης ἐροῦμεν ὕστερον καὶ τῶν συνεχῶν αὐτῇ πρὸς νότον, νῦν δὲ περὶ τῶν Ὀλυμπηνῶν καὶ τῶν ἐφεξῆς μέχρι τοῦ Ταύρου παραλλήλων τοῖς προεφωδευμένοις λέγωμεν. ἔστι τοίνυν ὁ Ὄλυμπος κύκλῳ μὲν εὖ συνοικούμενος, ἐν δὲ τοῖς ὕψεσι δρυμοὺς ἐξαισίους ἔχων καὶ ληστήρια δυναμένους ἐκτρέφειν τόπους εὐερκεῖς, ἐν οἷς καὶ τύραννοι συνίστανται πολλάκις δυνάμενοι συμμεῖναι πολὺν χρόνον, καθάπερ Κλέων ὁ καθ' ἡμᾶς τῶν ληστηρίων ἡγεμών.

9 Οὗτος δ' ἦν μὲν ἐκ Γορδίου κώμης, ἣν ὕστερον αὐξήσας ἐποίησε πόλιν καὶ προσηγόρευσεν Ἰουλιόπολιν· ληστηρίῳ δ' ἐχρῆτο καὶ ὁρμητηρίῳ κατ' ἀρχὰς τῷ καρτερωτάτῳ τῶν χωρίων ὄνομα Καλλυδίῳ. ὑπῆρξε

δ' Ἀντωνίῳ μὲν χρήσιμος ἐπελθὼν ἐπὶ τοὺς ἀργυρολογοῦντας Λαβιηνῷ καθ' ὃν χρόνον ἐκεῖνος τὴν Ἀσίαν κατέσχε, καὶ κωλύσας τὰς παρασκευάς· ἐν δὲ τοῖς Ἀκτιακοῖς ἀποστὰς Ἀντωνίου τοῖς Καίσαρος προσέθετο στρατηγοῖς, καὶ ἐτιμήθη πλέον ἢ κατ' ἀξίαν, προσλαβὼν τοῖς παρ' Ἀντωνίου δοθεῖσι καὶ τὰ παρὰ τοῦ Καίσαρος, ὥστ' ἀντὶ λῃστοῦ δυνάστου περιέκειτο σχῆμα, ἱερεὺς μὲν ὢν τοῦ Ἀβρεττηνοῦ Διός, Μυσίου θεοῦ, μέρος δ' ἔχων ὑπήκοον τῆς Μωρηνῆς (Μυσία δέ ἐστι καὶ αὕτη, καθάπερ ἡ Ἀβρεττηνή), λαβὼν δὲ ὕστατα καὶ τὴν ἐν τῷ Πόντῳ τῶν Κομάνων ἱερωσύνην, εἰς ἣν κατελθὼν ἐντὸς μηνιαίου χρόνου κατέστρεψε τὸν βίον· νόσος δ' ἐξήγαγεν αὐτὸν ὀξεῖα, εἴτ' ἄλλως C.575
ἐπιπεσοῦσα ἐκ τῆς ἄδην πλησμονῆς εἴθ', ὡς ἔφασαν οἱ περὶ τὸ ἱερόν, κατὰ μῆνιν τῆς θεοῦ· ἐν γὰρ τῷ περιβόλῳ τοῦ τεμένους ἡ οἴκησίς ἐστιν ἥ τε τοῦ ἱερέως καὶ τῆς ἱερείας, τὸ δὲ τέμενος χωρὶς τῆς ἄλλης ἁγιστείας διαφανέστατα τῆς τῶν ὑείων κρεῶν βρώσεως καθαρεύει, ὅπου γε καὶ ἡ ὅλη πόλις, οὐδ' εἰσάγεται εἰς αὐτὴν ὗς· ὁ δ' ἐν τοῖς πρώτοις τὸ λῃστρικὸν ἦθος ἐπεδείξατο εὐθὺς κατὰ τὴν πρώτην εἴσοδον τῇ παραβάσει τούτου τοῦ ἔθους ὥσπερ οὐχ ἱερεὺς εἰσεληλυθὼς ἀλλὰ διαφθορεὺς τῶν ἱερῶν.

Ὁ μὲν δὴ Ὄλυμπος τοιόσδε, περιοικεῖται δὲ πρὸς 10
ἄρκτον μὲν ὑπὸ τῶν Βιθυνῶν καὶ Μυγδόνων καὶ Δολιόνων, τὸ δὲ λοιπὸν ἔχουσι Μυσοὶ καὶ Ἐπίκτητοι. Δολίονας μὲν οὖν μάλιστα καλοῦσι τοὺς περὶ Κύζικον ἀπὸ Αἰσήπου ἕως Ῥυνδάκου καὶ τῆς Δασκυλίτιδος λίμνης, Μυγδόνας δὲ τοὺς ἐφεξῆς τούτοις μέχρι τῆς Μυρλειανῶν χώρας· ὑπέρκεινται δὲ τῆς Δασκυλίτιδος ἄλλαι δύο λίμναι μεγάλαι ἥ τε Ἀπολλωνιᾶτις ἥ τε Μιλητοπολῖτις· πρὸς μὲν οὖν τῇ Δασκυλίτιδι Δα-

σκύλιον πόλις, πρὸς δὲ τῇ Μιλητοπολίτιδι Μιλητούπολις, πρὸς δὲ τῇ τρίτῃ Ἀπολλωνία ἡ ἐπὶ Ῥυνδάκῳ λεγομένη· τὰ πλεῖστα δὲ τούτων ἐστὶ Κυζικηνῶν νυνί.

11 Ἔστι δὲ νῆσος ἐν τῇ Προποντίδι ἡ Κύζικος συναπτομένη γεφύραις δυσὶ πρὸς τὴν ἤπειρον, ἀρετῇ μὲν κρατίστη μεγέθει δὲ ὅσον πεντακοσίων σταδίων τὴν περίμετρον· ἔχει δὲ ὁμώνυμον πόλιν πρὸς αὐταῖς ταῖς γεφύραις καὶ λιμένας δύο κλειστοὺς καὶ νεωσοίκους πλείους τῶν διακοσίων· τῆς δὲ πόλεως τὸ μὲν ἔστιν ἐν ἐπιπέδῳ τὸ δὲ πρὸς ὄρει· καλεῖται δ' Ἄρκτων ὄρος· ὑπέρκειται δ' ἄλλο Δίνδυμον μονοφυές, ἱερὸν ἔχον τῆς Δινδυμήνης μητρὸς θεῶν, ἵδρυμα τῶν Ἀργοναυτῶν. ἔστι δ' ἐνάμιλλος ταῖς πρώταις τῶν κατὰ τὴν Ἀσίαν ἡ πόλις μεγέθει τε καὶ κάλλει καὶ εὐνομίᾳ πρός τε εἰρήνην καὶ πόλεμον· ἔοικέ τε τῷ παραπλησίῳ τύπῳ κοσμεῖσθαι ὥσπερ ἡ τῶν Ῥοδίων καὶ Μασσαλιωτῶν καὶ Καρχηδονίων τῶν πάλαι. τὰ μὲν οὖν πολλὰ ἐῶ, τρεῖς δ' ἀρχιτέκτονας τοὺς ἐπιμελουμένους οἰκοδομημάτων τε δημοσίων καὶ ὀργάνων, τρεῖς δὲ καὶ θησαυροὺς κέκτηται, τὸν μὲν ὅπλων τὸν δ' ὀργάνων τὸν δὲ σίτου· ποιεῖ δὲ τὸν σῖτον ἄσηπτον ἡ Χαλκιδικὴ γῆ μιγνυμένη. ἐπεδείξαντο δὲ τὴν ἐκ τῆς παρασκευῆς ταύτης ὠφέλειαν ἐν τῷ Μιθριδατικῷ πολέμῳ. ἐπελθόντος γὰρ αὐτοῖς ἀδοκήτως τοῦ βασιλέως πεντεκαίδεκα μυριάσι καὶ ἵππῳ πολλῇ καὶ κατασχόντος τὸ ἀντικείμενον ὄρος ὃ καλοῦσιν Ἀδραστείας καὶ τὸ προάστειον, ἔπειτα καὶ διάραντος εἰς τὸν ὑπὲρ τῆς πόλεως
C.576 αὐχένα καὶ προσμαχομένου πεζῇ τε καὶ κατὰ θάλατταν τετρακοσίαις ναυσίν, ἀντέσχον πρὸς ἅπαντα οἱ Κυζικηνοί, ὥστε καὶ ἐγγὺς ἦλθον τοῦ ζωγρίᾳ λαβεῖν τὸν βασιλέα ἐν τῇ διώρυγι ἀντιδιορύττοντες, ἀλλ' ἔφθη φυλαξάμενος καὶ ἀναλαβὼν ἑαυτὸν ἔξω τοῦ

ὀρύγματος· ὀψὲ δὲ ἴσχυσεν εἰσπέμψαι τινὰς νύκτωρ ἐπικούρους ὁ τῶν Ῥωμαίων στρατηγὸς Λεύκολλος· ὤνησε δὲ καὶ λιμὸς τῷ τοσούτῳ πλήθει τῆς στρατιᾶς ἐπιπεσών, ὃν οὐ προείδετο ὁ βασιλεύς, ὥς ἀπῆλθε πολλοὺς ἀποβαλών. Ῥωμαῖοι δ' ἐτίμησαν τὴν πόλιν, καὶ ἔστιν ἐλευθέρα μέχρι νῦν καὶ χώραν ἔχει πολλὴν τὴν μὲν ἐκ παλαιοῦ τὴν δὲ τῶν Ῥωμαίων προσθέντων. καὶ γὰρ τῆς Τρῳάδος ἔχουσι τὰ πέραν τοῦ Αἰσήπου τὰ περὶ τὴν Ζέλειαν καὶ τὸ τῆς Ἀδραστείας πεδίον· καὶ τῆς Δασκυλίτιδος λίμνης τὰ μὲν ἔχουσιν ἐκεῖνοι τὰ δὲ Βυζάντιοι· πρὸς δὲ τῇ Δολιονίδι καὶ τῇ Μυγδονίδι νέμονται πολλὴν μέχρι τῆς Μιλητοπολίτιδος λίμνης καὶ τῆς Ἀπολλωνιάτιδος αὐτῆς, δι' ὧν χωρίων καὶ ὁ Ῥύνδακος ῥεῖ ποταμὸς τὰς ἀρχὰς ἔχων ἐκ τῆς Ἀζανίτιδος, προσλαβὼν δὲ καὶ ἐκ τῆς Ἀβρεττηνῆς Μυσίας ἄλλους τε καὶ Μέκεστον ἀπ' Ἀγκύρας τῆς Ἀβαειτίδος ἐκδίδωσιν εἰς τὴν Προποντίδα κατὰ Βέσβικον νῆσον. ἐν ταύτῃ δὲ τῇ νήσῳ τῶν Κυζικηνῶν ὄρος ἐστὶν εὔδενδρον Ἀρτάκη· καὶ νησίον ὁμώνυμον πρόκειται τούτου, καὶ πλησίον ἀκρωτήριον Μέλανος καλούμενον ἐν παράπλῳ τοῖς εἰς Πρίαπον κομιζομένοις ἐκ τῆς Κυζίκου.

Τῆς δ' ἐπικτήτου Φρυγίας Ἀζανοί τέ εἰσι καὶ Να- 12
κολία καὶ Κοτιάειον καὶ Μιδάειον καὶ Δορυλάειον πόλεις καὶ Κάδοι· τοὺς δὲ Κάδους ἔνιοι τῆς Μυσίας φασίν. ἡ δὲ Μυσία κατὰ τὴν μεσόγαιαν ἀπὸ τῆς Ὀλυμπηνῆς ἐπὶ τὴν Περγαμηνὴν καθήκει καὶ τὸ Καΐκου λεγόμενον πεδίον, ὥστε μεταξὺ κεῖσθαι τῆς τε Ἴδης καὶ τῆς Κατακεκαυμένης, ἣν οἱ μὲν Μυσίαν οἱ δὲ Μαιονίαν φασίν.

Ὑπὲρ δὲ τῆς Ἐπικτήτου πρὸς νότον ἐστὶν ἡ με- 13
γάλη Φρυγία, λείπουσα ἐν ἀριστερᾷ τὴν Πεσσινοῦντα

καὶ τὰ περὶ Ὀρκαόρκους καὶ Λυκαονίαν, ἐν δεξιᾷ δὲ Μαίονας καὶ Λυδοὺς καὶ Κᾶρας· ἐν ᾗ ἔστιν ἥ τε παρώρειος λεγομένη Φρυγία καὶ ἡ πρὸς Πισιδίᾳ καὶ τὰ περὶ Ἀμόριον καὶ Εὐμένειαν καὶ Σύνναδα, εἶτα Ἀπάμεια ἡ Κιβωτὸς λεγομένη καὶ Λαοδίκεια, αἵπερ εἰσὶ μέγισται τῶν κατὰ τὴν Φρυγίαν πόλεων· περίκειται δὲ ταύταις πολίσματα καὶ..............Ἀφροδισιὰς Κολοσσαὶ Θεμισώνιον Σαναὸς Μητρόπολις Ἀπολλωνιάς, ἔτι δὲ ἀπωτέρω τούτων Πέλται Τάβαι Εὐκαρ-
C.577 πία Λυσιάς.

14 Ἡ μὲν οὖν παρώρεια ὀρεινήν τινα ἔχει ῥάχιν ἀπὸ τῆς ἀνατολῆς ἐκτεινομένην ἐπὶ δύσιν· ταύτῃ δ' ἑκατέρωθεν ὑποπέπτωκέ τι πεδίον μέγα, καὶ πόλεις πλησίον αὐτῆς πρὸς ἄρκτον μὲν Φιλομήλιον, ἐκ θατέρου δὲ μέρους Ἀντιόχεια ἡ πρὸς Πισιδίᾳ καλουμένη, ἡ μὲν ἐν πεδίῳ κειμένη πᾶσα ἡ δ' ἐπὶ λόφου ἔχουσα ἀποικίαν Ῥωμαίων· ταύτην δ' ᾤκισαν Μάγνητες οἱ πρὸς Μαιάνδρῳ. Ῥωμαῖοι δ' ἠλευθέρωσαν τῶν βασιλέων, ἡνίκα τὴν ἄλλην Ἀσίαν Εὐμένει παρέδοσαν τὴν ἐντὸς τοῦ Ταύρου· ἦν δὲ ἐνταῦθα καὶ ἱερωσύνη τις Μηνὸς Ἀρκαίου, πλῆθος ἔχουσα ἱεροδούλων καὶ χωρίων ἱερῶν· κατελύθη δὲ μετὰ τὴν Ἀμύντου τελευτὴν ὑπὸ τῶν πεμφθέντων ἐπὶ τὴν ἐκείνου κληρονομίαν. Σύνναδα δ' ἐστὶν οὐ μεγάλη πόλις· πρόκειται δ' αὐτῆς ἐλαιόφυτον πεδίον ὅσον ἑξήκοντα σταδίων· ἐπέκεινα δ' ἐστὶ Δοκιμία κώμη, καὶ τὸ λατόμιον Συνναδικοῦ λίθου (οὕτω μὲν Ῥωμαῖοι καλοῦσιν, οἱ δ' ἐπιχώριοι Δοκιμίτην καὶ Δοκιμαῖον), κατ' ἀρχὰς μὲν μικροὺς βώλους ἐκδιδόντος τοῦ μετάλλου, διὰ δὲ τὴν νυνὶ πολυτέλειαν τῶν Ῥωμαίων κίονες ἐξαιροῦνται μονόλιθοι μεγάλοι, πλησιάζοντες τῷ ἀλαβαστρίτῃ λίθῳ κατὰ τὴν ποικιλίαν, ὥστε καίπερ πολλῆς οὔσης

τῆς ἐπὶ θάλατταν ἀγωγῆς τῶν τηλικούτων φορτίων
ὅμως καὶ κίονες καὶ πλάκες εἰς Ῥώμην κομίζονται θαυ-
μασταὶ κατὰ τὸ μέγεθος καὶ κάλλος.

Ἀπάμεια δ' ἐστὶν ἐμπόριον μέγα τῆς ἰδίως λεγο- 15
μένης Ἀσίας, δευτερεῦον μετὰ τὴν Ἔφεσον· αὕτη γὰρ
καὶ τῶν ἀπὸ τῆς Ἰταλίας καὶ τῆς Ἑλλάδος ὑποδοχεῖον
κοινόν ἐστιν. ἵδρυται δὲ ἡ Ἀπάμεια ἐπὶ ταῖς ἐκβολαῖς
τοῦ Μαρσύου ποταμοῦ, καὶ ῥεῖ διὰ μέσης τῆς πόλεως
ὁ ποταμὸς τὰς ἀρχὰς ἀπὸ τῆς πόλεως ἔχων· κατενε-
χθεὶς δ' ἐπὶ τὸ προάστειον σφοδρῷ καὶ καταφερεῖ τῷ
ῥεύματι συμβάλλει πρὸς τὸν Μαίανδρον, προσειλη-
φότα καὶ ἄλλον ποταμὸν Ὀργᾶν δι' ὁμαλοῦ φερόμενον
πρᾶον καὶ μαλακόν· ἐντεῦθεν δ' ἤδη γενόμενος Μαί-
ανδρος τέως μὲν διὰ τῆς Φρυγίας φέρεται, ἔπειτα διο-
ρίζει τὴν Καρίαν καὶ τὴν Λυδίαν κατὰ τὸ Μαιάνδρου
καλούμενον πεδίον, σκολιὸς ὢν εἰς ὑπερβολὴν ὥστε
ἐξ ἐκείνου τὰς σκολιότητας ἁπάσας μαιάνδρους κα-
λεῖσθαι· τελευτῶν δὲ καὶ τὴν Καρίαν αὐτὴν διαρρεῖ
τὴν ὑπὸ τῶν Ἰώνων νῦν κατεχομένην, καὶ μεταξὺ
Μιλήτου καὶ Πριήνης ποιεῖται τὰς ἐκβολάς. ἄρχεται
δὲ ἀπὸ Κελαινῶν, λόφου τινός, ἐν ᾧ πόλις ἦν ὁμώ-
νυμος τῷ λόφῳ· ἐντεῦθεν δ' ἀναστήσας τοὺς ἀνθρώ-
πους ὁ Σωτὴρ Ἀντίοχος εἰς τὴν νῦν Ἀπάμειαν τῆς C.578
μητρὸς ἐπώνυμον τὴν πόλιν ἐπέδειξεν Ἀπάμας, ἣ
θυγάτηρ μὲν ἦν Ἀρταβάζου δεδομένη δ' ἐτύγχανε
πρὸς γάμον Σελεύκῳ τῷ Νικάτορι. ἐνταῦθα δὲ μυ-
θεύεται τὰ περὶ τὸν Ὄλυμπον καὶ τὸν Μαρσύαν καὶ
τὴν ἔριν ἣν ἤρισεν ὁ Μαρσύας πρὸς Ἀπόλλωνα. ὑπέρ-
κειται δὲ καὶ λίμνη φύουσα κάλαμον τὸν εἰς τὰς γλώτ-
τας τῶν αὐλῶν ἐπιτήδειον, ἐξ ἧς ἀπολείβεσθαί φασι
τὰς πηγὰς ἀμφοτέρας τήν τε τοῦ Μαρσύου καὶ τὴν
τοῦ Μαιάνδρου.

16 Ἡ δὲ Λαοδίκεια μικρὰ πρότερον οὖσα αὔξησιν ἔλαβεν ἐφ' ἡμῶν καὶ τῶν ἡμετέρων πατέρων, καίτοι κακωθεῖσα ἐκ πολιορκίας ἐπὶ Μιθριδάτου τοῦ Εὐπάτορος· ἀλλ' ἡ τῆς χώρας ἀρετὴ καὶ τῶν πολιτῶν τινες εὐτυχήσαντες μεγάλην ἐποίησαν αὐτήν, Ἱέρων μὲν πρότερον, ὃς πλειόνων ἢ δισχιλίων ταλάντων κληρονομίαν κατέλιπε τῷ δήμῳ πολλοῖς τ' ἀναθήμασιν ἐκόσμησε τὴν πόλιν, Ζήνων δὲ ὁ ῥήτωρ ὕστερον καὶ ὁ υἱὸς αὐτοῦ Πολέμων, ὃς καὶ βασιλείας ἠξιώθη διὰ τὰς ἀνδραγαθίας ὑπ' Ἀντωνίου μὲν πρότερον ὑπὸ Καίσαρος δὲ τοῦ Σεβαστοῦ μετὰ ταῦτα. φέρει δ' ὁ περὶ τὴν Λαοδίκειαν τόπος προβάτων ἀρετὰς οὐκ εἰς μαλακότητα μόνον τῶν ἐρίων, ᾗ καὶ τῶν Μιλησίων διαφέρει, ἀλλὰ καὶ εἰς τὴν κοραξὴν χρόαν, ὥστε καὶ προσοδεύονται λαμπρῶς ἀπ' αὐτῶν, ὥσπερ καὶ οἱ Κολοσσηνοὶ ἀπὸ τοῦ ὁμωνύμου χρώματος πλησίον οἰκοῦντες. ἐνταῦθα δὲ καὶ ὁ Κάπρος καὶ ὁ Λύκος συμβάλλει τῷ Μαιάνδρῳ ποταμῷ, ποταμὸς εὐμεγέθης, ἀφ' οὗ καὶ ἡ πρὸς τῷ Λύκῳ Λαοδίκεια λέγεται. ὑπέρκειται δὲ τῆς πόλεως ὄρος Κάδμος, ἐξ οὗ καὶ ὁ Λύκος ῥεῖ καὶ ἄλλος ὁμώνυμος τῷ ὄρει. τὸ πλέον δ' οὗτος ὑπὸ γῆς ῥυεὶς εἶτ' ἀνακύψας συνέπεσεν εἰς ταὐτὸ τοῖς ἄλλοις ποταμοῖς, ἐμφαίνων ἅμα καὶ τὸ πολύτρητον τῆς χώρας καὶ τὸ εὔσειστον· εἰ γάρ τις ἄλλη, καὶ ἡ Λαοδίκεια εὔσειστος, καὶ τῆς πλησιοχώρου δὲ Κάρουρα.

17 Ὅριον δέ ἐστι τῆς Φρυγίας καὶ τῆς Καρίας τὰ Κάρουρα· κώμη δ' ἐστὶν αὕτη πανδοχεῖα ἔχουσα καὶ ζεστῶν ὑδάτων ἐκβολάς, τὰς μὲν ἐν τῷ ποταμῷ Μαιάνδρῳ τὰς δ' ὑπὲρ τοῦ χείλους. καὶ δή ποτέ φασι πορνοβοσκὸν αὐλισθέντα ἐν τοῖς πανδοχείοις σὺν πολλῷ πλήθει γυναικῶν νύκτωρ γενομένου σεισμοῦ συναφανισθῆναι πάσαις. σχεδὸν δέ τι καὶ πᾶσα εὔσειστός

ἐστιν ἡ περὶ τὸν Μαίανδρον χώρα καὶ ὑπόνομος πυρί τε καὶ ὕδατι μέχρι τῆς μεσογαίας. διατέτακε γὰρ ἀπὸ C.579 τῶν πεδίων ἀρξαμένη πᾶσα ἡ τοιαύτη κατασκευὴ τῆς χώρας εἰς τὰ Χαρώνια, τό τε ἐν Ἱεραπόλει καὶ τὸ ἐν Ἀχαράκοις τῆς Νυσαΐδος καὶ τὸ περὶ Μαγνησίαν καὶ Μυοῦντα· εὔθρυπτός τε γάρ ἐστιν ἡ γῆ καὶ ψαθυρὰ πλήρης τε ἁλμυρίδων καὶ εὐεκπύρωτός ἐστι· τάχα δὲ καὶ ὁ Μαίανδρος διὰ τοῦτο σκολιὸς ὅτι πολλὰς μεταπτώσεις λαμβάνει τὸ ῥεῖθρον, καὶ πολλὴν χοῦν κατάγων ἄλλοτ' ἄλλῳ μέρει τῶν αἰγιαλῶν προστίθησι· τὸ δὲ πρὸς τὸ πέλαγος βιασάμενος ἐξωθεῖ. καὶ δὴ καὶ τὴν Πριήνην ἐπὶ θαλάττῃ πρότερον οὖσαν μεσόγεων πεποίηκε τετταράκοντα σταδίων προσχώματι.

Καὶ ἡ Κατακεκαυμένη δέ, ἥπερ ὑπὸ Λυδῶν καὶ 18 Μυσῶν κατέχεται, διὰ τοιαῦτά τινα τῆς προσηγορίας τετύχηκε ταύτης· ἥ τε Φιλαδέλφεια, ἡ πρὸς αὐτῇ πόλις, οὐδὲ τοὺς τοίχους ἔχει πιστούς, ἀλλὰ καθ' ἡμέραν τρόπον τινὰ σαλεύονται καὶ διίστανται· διατελοῦσι δὲ προσέχοντες τοῖς πάθεσι τῆς γῆς καὶ ἀρχιτεκτονοῦντες πρὸς αὐτά. καὶ τῶν ἄλλων δὲ πόλεων Ἀπάμεια μὲν καὶ πρὸ τῆς Μιθριδάτου στρατείας ἐσείσθη πολλάκις, καὶ ἔδωκεν ἐπελθὼν ὁ βασιλεὺς ἑκατὸν τάλαντα εἰς ἐπανόρθωσιν, ὁρῶν ἀνατετραμμένην τὴν πόλιν. λέγεται δὲ καὶ ἐπ' Ἀλεξάνδρου παραπλήσια συμβῆναι· διόπερ εἰκός ἐστι καὶ τὸν Ποσειδῶ τιμᾶσθαι παρ' αὐτοῖς καίπερ μεσογαίοις οὖσι, καὶ ἀπὸ Κελαινοῦ τοῦ Ποσειδῶνος ἐκ Κελαινοῦς, μιᾶς τῶν Δαναΐδων, γενομένου κεκλῆσθαι τὴν πόλιν ἐπώνυμον, ἢ διὰ τῶν λίθων τὴν ἀπὸ τῶν ἐκπυρώσεων μελανίαν. καὶ τὰ περὶ Σίπυλον δὲ καὶ τὴν ἀνατροπὴν αὐτοῦ μῦθον οὐ δεῖ τίθεσθαι· καὶ γὰρ νῦν τὴν Μαγνησίαν τὴν ὑπ' αὐτῷ κατέβαλον σεισμοί, ἡνίκα καὶ Σάρδεις καὶ τῶν ἄλλων τὰς ἐπιφανεστάτας κατὰ πολλὰ μέρη διελυμήναντο· ἐπηνώρθωσε δ' ὁ ἡγεμὼν χρήματα ἐπιδούς, καθάπερ καὶ πρότερον ἐπὶ τῆς γενομένης συμφορᾶς Τραλλιανοῖς (ἡνίκα τὸ γυμνάσιον καὶ ἄλλα μέρη συνέπεσεν) ὁ πατὴρ αὐτοῦ καὶ τούτοις καὶ Λαοδικεῦσιν.

19 Ἀκούειν δ' ἔστι καὶ τῶν παλαιῶν συγγραφέων οἷά φησιν ὁ τὰ Λύδια συγγράψας Ξάνθος, διηγούμενος οἷαι μεταβολαὶ κατέσχον πολλάκις τὴν χώραν ταύτην, ὧν ἐμνήσθημέν που καὶ ἐν τοῖς πρόσθεν. καὶ δὴ καὶ τὰ περὶ τὸν Τυφῶνα πάθη ἐνταῦθα μυθεύουσι καὶ τοὺς Ἀρίμους, καὶ τὴν Κατακεκαυμένην ταύτην εἶναί φασιν· οὐκ ὀκνοῦσι δὲ καὶ τὰ μεταξὺ Μαιάνδρου καὶ Λυδῶν ἅπανθ' ὑπονοεῖν τοιαῦτα καὶ διὰ τὸ C.580 πλῆθος τῶν λιμνῶν καὶ ποταμῶν καὶ τοὺς πολλαχοῦ κευθμῶνας τῆς γῆς. ἡ δὲ μεταξὺ Λαοδικείας καὶ Ἀπαμείας λίμνη καὶ βορβορώδη καὶ ὑπονόμου τὴν ἀποφορὰν ἔχει πελαγία οὖσα· φασὶ δὲ καὶ δίκας εἶναι τῷ Μαιάνδρῳ μεταφέροντι τὰς χώρας ὅταν περικρουσθῶσιν οἱ ἀγκῶνες, ἁλόντος δὲ τὰς ζημίας ἐκ τῶν πορθμικῶν διαλύεσθαι τελῶν.

20 Μεταξὺ δὲ τῆς Λαοδικείας καὶ τῶν Καρούρων ἱερόν ἔστι Μηνὸς Κάρου καλούμενον τιμώμενον ἀξιολόγως. συνέστη δὲ καθ' ἡμᾶς διδασκαλεῖον Ἡροφιλείων ἰατρῶν μέγα ὑπὸ Ζεύξιδος, καὶ μετὰ ταῦτα Ἀλεξάνδρου τοῦ Φιλαλήθους, καθάπερ ἐπὶ τῶν πατέρων τῶν ἡμετέρων ἐν Σμύρνῃ τὸ τῶν Ἐρασιστρατείων ὑπὸ Ἱκεσίου· νῦν δὲ οὐχ ὁμοίως ἔτι συμμένει.

21 Λέγεται δέ τινα φῦλα Φρύγια οὐδαμοῦ δεικνύμενα, ὥσπερ οἱ Βερέκυντες. καὶ Ἀλκμὰν λέγει „Φρύγιον ηὔλησε μέλος τὸ Κερβήσιον.“ καὶ βόθυνός τις λέγεται Κερβήσιος ἔχων ὀλεθρίους ἀποφοράς· ἀλλ' οὗτός γε δείκνυται, οἱ δ' ἄνθρωποι οὐκέθ' οὕτω λέγονται. Αἰσχύλος δὲ συγχεῖ ἐν τῇ Νιόβῃ· φησὶ γὰρ ἐκείνη μνησθήσεσθαι τῶν περὶ Τάνταλον „οἷς ἐν Ἰδαίῳ πάγῳ Διὸς πατρῴου βωμός ἐστι.“ καὶ πάλιν „Σίπυλον Ἰδαίαν ἀνὰ χθόνα.“ καὶ ὁ Τάνταλος λέγει „σπείρω δ' ἄρουραν δώδεχ' ἡμερῶν ὁδόν, Βερέκυντα χῶρον, ἔνθ' Ἀδραστείας ἕδος Ἴδη τε μυκηθμοῖσι καὶ βρυχήμασι πρέπουσι μήλων, πᾶν δ' *ἐρεχθεῖ πέδον.“

Zeitschrift f. Alterthumswissenschaft 1848. Nr. 56:

„In der vorliegenden Ausgabe begrüssen wir die Frucht gewissenhaften Fleisses und inniger Befreundung mit den Schriften des Salust. Der Herr Herausgeber hat sich nirgends mit den Ergebnissen früherer Erklärer begnügt und diese ohne einzelne Prüfung in seine Ausgabe aufgenommen, sondern überall selbstständig geforscht und selbst da, wo die Untersuchung bereits als abgeschlossen erschien, diese von Neuem begonnen etc.“

Die vielfache Verbreitung, welche der Salust von Dietsch bereits gefunden hat, ist die beste Bestätigung des in den oben angeführten Recensionen ausgesprochenen Urtheils.

Für die Hand der Schüler ist ein blosser Textabdruck in meiner neuen Sammlung der griechischen und lateinischen Classiker bereits in mehreren Auflagen erschienen.

B. G. Teubner.

This book should be returned to the Library on or before the last date stamped below.

A fine of five cents a day is incurred by retaining it beyond the specified time.

Please return promptly.

Digitized by Google

Digitized by Google